रा·ला·मो·3-1-58 A
1/1

हिन्दी-प्रदीप

Rare Book

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरितन प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि०१७ सं०१-२ } प्रयाग { सितंबर, अक्टूबर १८९३

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

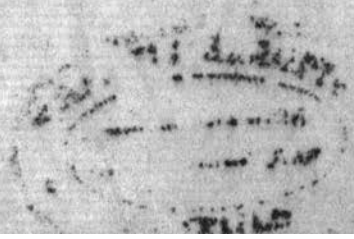
सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)
पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज १=)

95 cms
NATIONAL LIBRARY
NO.
DATE
CALCUTTA

SHELF LISTED.

Rare Book

J1. P.
891.4305
H 6171
V.8



हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १७ संख्या १–२ } प्रयाग { सितंबर अक्टूबर सन् १८९३ ई०

हमारा नयासाल ।

जितने वेगगामी इस अखण्डब्रह्माण्ड में हैं सबों को अपने पीछे करता समय के द्रुत वेग की भी क्या ही एक अकथ कहानी है–सोलह वर्ष का इतना लम्बा समय बीत जाना मानो अभी कल की बात है इस अरसे में हम पर जो कुछ हुआ और हमने जो २ बातें देखी भालीं उस का कुल दास्तान कह सुनावें तो कम से कम १६ सफे रंग जांय और वह हमारी सुख दुःख की कहानी सब रांड़ों का चरखा मालूम पड़े–पढ़ते २ आप का जी अलबत्ता ऊब उठे हम को क्या हमें तो किसी न किसी तरह पत्र की जगह लेकना–आज यही आल्हा ऊदल का खुराफात किस्सा सही–पर यहां तो ताज़े से ताज़ा टटका मज़मून भेंट करने की फिकिर रहती है–हम चाहो कितने ही पुराने पड़ गये हों किन्तु अपने अनन्य भक्त रसिक पढ़ने वालों को सदा नये मालूम होने का ठीका ले उतरे हैं–अस्तु एक वह भी समय था कि हम आरंभ शूर के ढंग पर नई समर का तकाज़ा जोश खरोश में भरे हुये इस चिन्ता में व्यग्र थे कि किसी तरह प्रगट हों दस पांच मित्रों की सहायता पाय कलियुग के प्रथम चरण के समान ज्यों त्यों किसी तरह जन्में–जन्मते ही पहले हमें प्रेस ऐक्ट का मुकाबिला करना पड़ा लार्डरिपन-महोदय को धन्यवाद है जिन की कृपा से उस मूंज़ी के चंगुल से हम सब संपादक-मात्र का जी छुटा-उपरान्त भी न हमें न हमारे मित्रों को विश्वास था कि हम इतने दिनों तक जीते रहेंगे किन्तु थोड़े से इने गिने सज्जन पाठकों की अमृतसंजीविनी कृपा ही हमारे अनियमित जीवन का हेतु है–"नहिं विद्या नहिं बाहुबल, नहिं खरचन की दाम। ऐसे पतित पतंग की, तुम पत राखो राम"–हमारे राम या रहीम जो कुछ कहो सब हमारे दयासागर पाठकजन हैं जो हम ऐसे अपाहिजों

को जो बरसों से ठीक समय पर उन की भेट सेवा के लिये कभी उपस्थित होते ही नहीं—सिवाय इसके और भी न जानिये कितनी भूल चूक और त्रुटि हम से बन पड़ती है तोभी सब अपराध क्षमा कर हमे सहारा दिये ही जाते हैं—हमारा कलेवर हिन्दी भाषा और देवनागरी अक्षरों में न होता तो यह कहना और हौसला रखना किसी तरह बड़बोल हिमाकत और पाप न समझा जाता कि हमारे भी हज़ार दोहज़ार गांहक हों किन्तु सब ओर से निरास हिन्दी अब इस लायक नहीं है कि अपनी और २ बहिनों के समान बड़भागिनियों की लिस्ट में अपना भी नाम लिखा सके तो लाचारी है—हमें केवल उतने ही पढ़ने वाले बहुत हैं जो रुचि और प्रेम के साथ हमें पूछें और आदर दें—अस्तु नादिहन्द मुफ्तखोरों का मुह काला उदारदानशील पढ़ने वाले यदि हमें स्नेह और छोह के साथ अपनाये रहें तो एक १६ वर्ष और बीत जाना कौनसी बड़ी बात है—ज़िन्दगी शर्त है "जीवन्नरो भद्रशतानि पश्यति"—भवतु—"प्रकृतमनु सरामः"—

नवां नेशनलकाङ्ग्रेस—

कानग्रेस के इतिहास में पञ्जाब का यह नवां नेशनलकानग्रेस भी बहुत दिनों तक याद रखने लायक रहेगा—अब तक जितने कानग्रेस हुये उन्में या तो इलाहाबाद का चौथा कानग्रेस अपनी पूरी ताकत और जोश के साथ हुआ था या लाहोर का यह नवां कानग्रेस हुआ—इस्से सिद्ध होगया कि पञ्जाब हिन्दुस्तान के और २ प्रान्तों की अपेक्षा अंगरेज़ी तालीम तरबियत पोलिटिकल बारीकियों के मर्म समझने में किसी से पीछे हटा हुआ नहीं है—जैसा शारीरिक बल में पञ्जाबी हिन्दुस्तान की हर एक कौमों में औवल हैं वैसा ही दिमाग़ की कूवत में भी किसी से पीछे हटे हुये नहीं हैं बल्कि शान्तिभाव के साथ मुंह से बहुत बिना बके करके दिखा देना यह गुण उन का हम सबों को सीखने और अनुकरण करने के लायक है—जिन का छिपा हुआ पोलिटिकल जोश मिस्टर दादा भाई नोरो जी के स्वागत सत्कार के समय एकबारगी निकल पड़ा आबालवृद्ध वनिता समस्त लाहोर का लाहौर दादाभाई का दर्शनोत्सुक हो ऐसा आटूटा जैसा बछड़ा सांझ को खेड़े के बाहर से आती हुई कामदुघा अपनी मा गऊ को देख अत्यन्त उत्सुक हो आटूटता है—लाहोर के बड़े बूढ़े लोग भी यह कह रहे हैं कि स्वागत सत्कार में आज तक ऐसा उत्सव कभी नहीं किया गया सड़कों

पर पुरुष और कोठे अटारियों पर स्त्रियां जयध्वनि के साथ फूल बरसाते हुये आनन्द में पुलकित थे बाल वृद्ध युवा सब यही कह रहे थे कि दादाभाई हमें राजकीय स्वच्छन्दता देने आये हैं—कहां गये कानग्रेस के विरोधी जो यह कह रहे हैं कि कानग्रेस थोड़े से उत्पाती पढ़े लिखों की जमात है वे ही यह विद्रोह मचाये हुये हैं—आकर देखें कि कितना लोग पोलिटिकल आन्दोलन की उमङ्ग में भरे हुए राजकीय विषयों में स्वतन्त्रता पाने के उत्सुक हैं—ग्यारहसौ डिलिगेट और पांच हज़ार दर्शकों के जमाव से कानग्रेस का पण्डाल चारों ओर से भरा हुआ था—स्वागतसत्कारिणी सभा के प्रेसिडेण्ट की स्पीच के उपरान्त ३ घण्टे तक धाराप्रवाही दादाभाई की अंगरेज़ी में वक्तृत्वशक्ति अचरज पैदा करती थी ऐसा मालूम होता था कि मानो सरस्वती जी जिह्वा के अग्रभाग पर नाच रहीं हैं और यह पण्डाल नहीं है मानो सरस्वती जी के नृत्य की नाट्यशाला है—दादाभाई की मुखच्छवि सच्चे देशहित की साक्षी दे रही थी उन की स्पीच से यह प्रगट हो गया कि यह महाशय विलायत में आमोद प्रमोद में आसक्त नहीं रहे किन्तु एक दिन भी इन का व्यर्थ नहीं गया जिस दिन कुछ न कुछ हमारे उपकार की चिन्ता में व्यग्र न रहे हों—इतना "सेल्फसेक्रिफइस" आत्मत्याग की वासना मन में जगह किये हो तो हम भी विलाइत जाने वालों से कभी द्रोहबुद्धि न रक्खें—किन्तु वहां के आमोद प्रमोद में मग्न रह शराबखोरी की खराब आदत में फंस मेम गले बांध हम लोगों को जानवर समझते जो यहां आय अपने सबज़कदम से भारत की पवित्र भूमि को कलुषित करते हैं उन्हें देख यही मन चाहता है कि इस्की हैट सिर से हटाय इतने कंटाप जमावें कि सौ तक गिन फिर भूल जांय जिस्में उन की बनाबटी साहबपने की सब कलई खुल जाय—सच है "नाम लखनचन्द मुह कुकरेकासा" "सिमलटेनिअस एकज़ामिनेशन" अर्थात् जज कलक्टर इत्यादि ओहदे हिन्दुस्तानियों को यहीं इमतिहान देकर मिला करें इतना अधिक खर्च कर विलाइत न जाना पड़े वहां अंगरेजों की बुराइयां सीख यहां साहब बन कर आना दादा भाई को भी नापसन्द है—इस लिये इस इमतिहान के यहीं होने की अज़हद्द कोशिश कर रहे हैं और बहुत दूर तक कृतकार्य भी हुये हैं इस बात को इन्हों ने बड़ी देर तक अपनी स्पीच में कहा—जितने रिज़ोल्यूशन अब तक कानग्रेस में पास हो चुके थे सबों की एक

सूक्ष्म समालोचना अपनी स्पीच में कर डाला स्पीच सुनने के उपरान्त यही मालूम हुआ कि अब कानग्रेस के और २ रिज़ोल्यूशनों पर विचार केवल पिष्ट-पेषणमात्र है—इस कानग्रेस में दो नये रिज़ोल्यूशन पास किये गये एक यह कि पंजाब के छोटे लाट के लिये भी कौंसिल हो दूसरे शिक्षा जो गवर्नमेंट ने इतनी महामहंगी कर दिया है जिस से सर्वसाधारण अपने बालकों को नहीं पढ़ा सकते सो सस्ती कर दी जाय स्कूल की फीस और किताबों का दाम घटा दिया जाय निस्सन्देह यह पिछला विचार हमारे बड़े उपकार का है—विलाइत में तालीम सस्ती से सस्ती करने की कोशिश हो रही है नये २ फ्रीस्कूल स्थापित हो रहे हैं हम लोगों पर इस कदर कड़ाई हो रही है यह अंगरेज़ी उदारशासन को शोभा नहीं देता—पंजाब के डिलेगेटों ने अपनी २ स्पीचें बहुत अच्छी तरह पर कहा इस से सिद्ध होता है कि पंजाब ने कैसी जल्दी विद्यावृद्धि में तरक्की की है—इस वर्ष सोशलकानफ्रेंस बड़ा दरिद्र हुआ बड़े खुशी की बात है कि इस का ज़ोर टूटता जाता है हम तो कई बार लिख चुके हैं कि इस बला को कानग्रेस के अधिष्ठाता नाहक कानग्रेस के पंडाल में स्थान दिये हुये हैं—दूसरे साल दसवां कानग्रेस मदरास में निश्चय किया गया है—कानग्रेस जैसा हमारा उपकारी है वैसा ही यह कानफ्रेंस हमारे समाज को हानि पहुंचा रहा है यह थोड़े से अदूरदर्शी नई रोशनी वालों का एक दल है इन अदूरदर्शी अविचार-कारियों का उत्साह भंग होना ही हमारे लिये कल्याण है—इन सबों की यही मनसा है कि हम किसी तरह अंगरेज़ हो जांय हिन्दूपन की गन्धि भी न रहने पावे इन पाखण्डियों से दूर ही रहना अच्छा ।

भगवत शङ्कराचार्य ॥

जिन २ महापुरुषों ने व्यासदेव के वेदान्त सूत्रों पर भाष्य किया है वे आचार्य कहलाये उन्में श्रीशंकराचार्य जी सब में मुख्य हैं और इन का शारीरक भाष्य सर्व-सम्मत समझा जाता है अतएव अद्वैतमत के मुख्य प्रवर्तक यही महानुभाव हुये—वैदिक धर्म को छिन्न भिन्न करते जिस समय मायावादी बौद्ध जैन चार्वाक् तथा लोकापत हिन्दुस्तान में एक छोर से दूसरे तक फैल गये थे बड़े २ राजा महाराजा शूरसामन्त सब बौद्ध या जैन हो गये थे सिवाय बौद्धधर्म और जैनधर्म के कापालिक क्षपणक वामाचार चक्राङ्कित शैव शाक्त आदि भिन्न २ मत के अनेक पाखण्ड

मत फैले हुए थे—ऐसे समय दक्षिण के केरलदेश में जो अब मालावार कहलाता है पूर्णा नदी के तट पर कालटि नाम का एक ग्राम जो मुख्यकर ब्राह्मणों ही की बस्ती थी उस में विद्याधिराज के पुत्र शिवगुरु नाम के एक वेदवेदाङ्ग पारङ्गत अग्निहोत्री ब्राह्मण हुये उन्हीं की पाणिगृहीती साध्वी भार्या में शंकराचार्य का जन्म हुआ—शिवपुराण के अनुसार यह साक्षात् सदाशिव के अवतार माने जाते हैं-पद्मपाद हस्तामलक तोटक उदंक आनन्दगिरि ये ५ शंकर के प्रधान षट् शिष्य भी जिन के द्वारा अद्वैतवाद समस्त हिन्दुस्तान में फैल गया इसी समय भिन्न २ देशों में उत्पन्न हुये—इसी समय साक्षात् वृहस्पति के अवतार मीमांसकों के कुलगुरु मण्डन मिश्र दक्षिणकी माहिष्मती नगरी में जन्मे—मण्डन मिश्र की धर्मपत्नी न केवल नाम ही में वरन गुण में भी सरस्वती के समान सोण नद के तट पर रहने वाले विष्णु-मित्र ब्राह्मण के घर में आ प्रगटी—शंकर दो वर्ष के थे तभी देवनागरी वर्णमाला का बोलना और लिखना दोनों अच्छी तरह सीख गये इनकी प्रतिभा कुछ ऐसी अद्भुत थी कि इसी उमर से काव्य पुराण इतिहास आदि की जो बातें इन से कही जाती या कहीं से ऐसी बातों को सुनते थे उसे तत्काल अपनी धारणाशक्ति के अन्तर्गत कर लेते थे तीन ही वर्ष के थे तभी इन के पिता सुरधाम सिधार गये इन की विधवा माता ने पंचम वर्ष में इन का यज्ञोपवीतसंस्कार शास्त्रविधान पूर्वक कराया—तैत्तिरीय संहिता की अध्याय की अध्याय वेद इनको पाठशाला में सुनते २ यज्ञोपवीत होने के पहिले ही कण्ठाग्र हो गये थे—यज्ञोपवीत संस्कार एक उपलक्षणमात्र था सप्तम वर्ष समाप्त होते २ निखिल वेद और वेदाङ्ग इन्हे सब आप से आप उपस्थित हो गया—साल वर्ष की उमर में समस्त विद्या में पारंगत हो गुरुकुल का वास समाप्त कर यह महायशस्वी माता की सेवा टहलमें तत्पर हुये नित्य वेद पाठ किया करते थे अग्नि और सूर्य की विधिवत् उपासना से घर में रहते हुए भी अखण्ड ब्रह्मचर्य में कहीं से चूक न होने पाई—इस तेजस्वी बालक को बड़े २ बूढ़े लोग भी आकर प्रणाम करते थे और इसे देख अपना आसन छोड़ देते थे अपने पुत्र के ये सब अलौकिक गुण देख मा इन की हर्ष निर्भर ही फूली नहीं समाती थी—एक दिन शंकर को साथ ले इन की माता समुद्रगामिनी नदी में स्नान करने को गई थी रास्ते में ग्रीष्म के सूर्य की तीखी किरणों से व्याकुल हो बेहोश गिर पड़ी शंकर इसे व्याकुल देख

समुद्रगा नदी की काव्य के उत्तम पद्यों से स्तुति कर समुद्रगा नदी को प्रसन्न किया तब नदी की अधिष्ठात्री देवता प्रसन्न हो इन्हे वर दिया कि मैं तुम्हारी स्तुति से अतिप्रसन्न हुई अब तुम्हारी मा को इतनी दूर आने का श्रम न करना पड़ेगा कल भोर को नदी तुम्हारे घर के पास ही बहने लगेगी—शंकर वीजन इत्यादि शीतलोपचार के द्वारा अपनी वृद्धा माता को किसी तरह चैतन्य कर घर लाये भोर को सबों ने नदी इन के घर के समीप बहते हुये देख बड़े अचंभित हुये—इत्यादि इन की अद्भुत करामातें सुन केरल देश के राजा राजशेखर ने अपना मंत्री इनके पास भेज दर्शन की प्रार्थना किया—श्रीचरणों के दर्शन की आज्ञा पाय दस सहस्र सुवर्ण मुद्रा और अपने बनाये हुये तीन उत्तमोत्तम नाटक बाल रामयण विद्धशालभंजिका नाटिका और प्राकृति भाषा का कर्पूरमंजरी नाम का सट्टक इन की भेट कर महाकवि की पदवी पाय सफल मनोरथ हो अपनी राजधानी को लौटा—शंकर अष्टम वर्ष में पहुंच संन्यास धारण की आज्ञा मा से मांगा और सुतवत्सला माता की इच्छा इसके प्रतिकूल पाय एकदिन प्रवाहवती नदी के जांघ तक पानी में खड़े नहा रहे थे कि एक घड़ियाल पांव पकड़ खीचने लगा—लोगों से इसका समाचार पाय मा नदी के तट पर आ विलख २ रोती हुई कहने लगी बेटा ! तुम अनाथा विधवां को छोड़ कहां चले जाते हो मैं अब किसकी डार लगूंगी—शंकर बोले मा घड़ियाल मुझे ग्रसे है यह छोड़ सक्ता है यदि तुम मुझे अब भी सन्यस्त हो जाने की आज्ञा दो—माने अपने पुत्र की लोकोत्तर शक्ति देख विचारा यदि यह जीता रहेगा तो संन्यासी होने पर भी इसका मुखचन्द्र देख नयनों की प्यास तो बुझाती रहूंगी सुरधाम सिधार गया तो उससे भी वंचित रहूंगी कहा तो लाचारी है जो तेरी इच्छा हो—संन्यास के लिये माता से आज्ञा पाय घड़ियाल से तुरन्त पांव छुटवा मा के समीप आय बोले—अम्ब ! कहो मैं अब तुम्हारा क्या प्रिय करूं ये बन्धु लोग जो मेरे पिता का धन लेंगे सब भांत तुम्हारी रखवाली करते रहेंगे और शरीर पात होने पर शास्त्र अनुसार तुम्हारी और्ध्वदैहिक सब क्रिया कर देंगे—मा ने कहा तुम्हारा संन्यासी होना तो मैं अङ्गीकार करी चुकी किन्तु मेरा शरीर पात होने पर जहां कहीं तुम रहो तुम्ही आकर मेरा सब क्रिया कर्म करो नहीं तुम्हारा जन्म देने से मुझे क्या लाभ—शंकर ने कहा मा निश्चय मानो जिस समय तुम मुझे याद करोगी रात हो चाहो दिन मैं चाहो जैसी अवस्था में रहूंगा तुरन्त आ उपस्थित

हूंगा और शरीरपात होने पर मैं ही तुम्हारी क्रिया कर्म भी कर दूंगा—यह कदापि मन में न लाओकि यह विधवा मा को छोड़ संन्यास धारण कर चला गया बरन तुम्हारे पास रह जो उपकार करता उस से सौगुना अधिक उपकार मैं करूंगा—आंसू बहाती हुई मा को इस तरह आश्वासन दे इस के सन्तोष के लिये घर से थोड़ी दूर पर एक विष्णुमन्दिर में संन्यासी हो जा रहने लगे—यहां कुछ दिन रह मा से आज्ञा पाय देशाटन के लिये केवल दण्ड और कमण्डलु अपने साथ ले रात ही को पश्चिमदिशा की ओर पधारे और अनेक देश नगर वन पर्वत में घूमते हुये जीवमात्र में ब्रह्म की बुद्धि रख गौड़पाद के शिष्य गोविन्दनाथ के आश्रम में पहुंचे—जहां के वृक्षों को देख मालूम होता था कि यह किसी महात्मा का आश्रम है वहां के संयमी मुनिजन इन्हे गोविन्दनाथ की गुफा के पास लेगये—शंकर तीनवार उस गुफा की परिक्रमा कर प्रणतांजलि हो गोविन्द-नाथ की स्तुति करने लगे—शेषशायी गरुड़ध्वज विष्णु भगवान् की पर्यङ्कता को धारण किये जो अपने शिष्य परंपरा पर कृपा कर जगत् के उपकार के लिये पतंजलि मुनि हुये उपरान्त अब इस शरीर में प्रगट हो व्यास पुत्र शुकदेव के शिष्य गौड़पाद से ब्रह्मविद्या का अभ्यास कर उस के संस्थापन को गोविन्द-नाथ कह लाये मैं आप को बार २ प्रणाम करता हूं—इन की यह स्तुति सुन समाधि से चित्त हटाय गोविन्दनाथ ने पूछा आप कौन हो—शंकर ने उत्तर दिया मैं न पृथ्वी हूं न जल हूं न तेज हूं न वायु हों न आकाश हूं न इन पांचो के गुण शब्द स्पर्शरूप रस गन्ध हूं न इन गुणों को ग्रहण करने वाली इन्द्रियां हूं इन सबों से जो बच गया वही शिवरूप शुद्ध चैतन्य मैं हूं—उपनिषद् और वेदान्त विद्या का सार यह इनका उत्तर सुन गोविन्दनाथ बोले हम समाधि दृष्टि से देख इस बात को जान गये कि तुम साक्षात् सदाशिव के अवतार शंकर नाम से प्रगट हुये हो—शंकराचार्य ने तब संप्रदाय के परिपालन निमित्त और ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के लिये इनके चरण कमलों की पूजा कर इन्हे अपना गुरू बनाया—गोविन्दनाथ ने भी इनकी गुरुभक्ति और सेवा से प्रसन्न हो चारो वेद का सार ब्रह्मविद्या का उपदेश किया और वेदान्त सूत्र पर भाष्य बनाने की आज्ञा दे काशी जाने के लिये कहा तब यह गुरू की आज्ञा पाय उनके चरण-पंकज को मन मानस में रख प्रणाम कर वहां से काशी को पधारे—

एक दिन मध्यान्ह के समय शिष्यों के साथ गंगास्नान को जाते हुये एक डोम को चार भयानक शिकारी कुत्तों को साथ लिये रास्ता रोके खड़ा हुआ देख उसका स्पर्श बचाने के लिये रास्ते से हट जाने को कहा—डोम बोला—"एकमेवाद्वितीयम्" "एष आत्मा अपहतपाप्मा" "निरवद्यं निरंजनम्" "असंङ्गोयं पुरुषः"—"सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म" "विज्ञानमानन्दम्" अर्थात् यह आत्मा एकही और अद्वितीय है—यह आत्मा पाप रहित है—अनिन्द्य और अविनाशी है—वह पुरुष संग रहित है—ब्रह्म जिसका अन्त नहीं है सत्य और ज्ञानरूप है—आत्मा ज्ञानमय आनन्दस्वरूप है इत्यादि सैकड़ों श्रुति वाक्यों के जागरुक रहते तुम ऐसे प्रसिद्ध वेदान्ती को ब्राह्मण और चाण्डाल में भेद की कल्पना आश्चर्य है—मुझे निश्चय हो गया कि दण्ड कमण्डलु धरे काषाय वस्त्र पहने बोलने में पटु पर ज्ञान का लेश भी नहीं रखते भेष मात्र से ये धूर्त गृहस्थों को ठगा करते हैं—जो तुमने कहा दूर हट सो यह देह को हट जाने के लिये कहा था आत्मा को जो देह में विद्यमान है—मैं पवित्र शुद्ध कुल में उत्पन्न ब्राह्मण हूं तू महानीच की जाति डोम है यह झूठा आग्रह तुम को क्यों है ?—इस बात को तुम क्यों नहीं देखते कि वह पुराण पुरुष एक ही है जो घट २ में व्याप्त है—अचिन्त्य अव्यक्त अनन्त निर्विकार उस परब्रह्म का स्वरूप मोह में आय भूले हुये इस क्षणिक कलेवर में अहंभाव तुम को क्यों है—विद्या पढ़कर भी मुक्ति का मार्ग छोड़ तुच्छ लोकैषणा तुम को क्यों लगी हुई है अचरज है कि उस परमेश्वर के माया जाल में महान् लोग भी फसे हुये हैं—

महानीच अंत्यज की ये बातें सुन शंकर विस्मित हो भेद बुद्धि त्याग बोले आत्मज्ञानी तुम्हारे में मैं अंत्यज की बुद्धि त्याग करता हूं—परमात्मा सब जीवमात्र में व्याप्त है जिसे यह दृढ़ निश्चय है वह चण्डाल हो या ब्राह्मण हो वन्दना के योग्य है—विष्णु से लेकर फतींगे तक में आत्मा व्याप्त है यह बुद्धि जिसे है वह डोम भी मेरा गुरू है—उपरान्त वह डोम साक्षात् सदाशिवरूप हो अनेक आशीर्वाद के उपरान्त कहने लगा मैं तुम से अत्यन्त प्रसन्न हूं तुम वेदान्त सूत्रों का भाष्य बनाय सांख्य और कणाद के मत के अनुयायी तथा दूसरे लोगों का जो भ्रम में पड़ वेदान्त सूत्रों का उलटा अर्थ करते हैं उनका खण्डन करने में सब भांत समर्थ होगे तुम्हारे भाष्य को मनुष्य की क्या देवता भी आदर करें गे—ब्रह्म और जीव में भेद अभेद वादी भास्कर, परम शाक्त अभिनव गुप्त, ब्रह्म और

जीव में भेद के मानने वाले महाशैव नीलकण्ठ, प्रभाकर, मीमांसकों के परमाचार्य मण्डन आदि पण्डितों को जीत अद्वैत महाविद्या का जगत् में प्रचार तुम्हीं कर सकोगे—यह कह सदाशिव अन्तर्ध्यान हो गये शंकर भी शिष्यगण सेवित गंगा स्नान को गये—उपरान्त मार्ग के सब तीर्थों की यात्रा करते हुये बदरिकाश्रम को पधारे तहां एकान्त स्थान में कुछ दिन बास कर वेदान्तसूत्र भगवद्गीता सनत्सुजातीय और नृसिंहतापिनी पर भाष्य रचा इस समय तक इन की १२ वर्ष की अवस्था हो गई थी—सिवाय इनके उपदेश सहस्री इत्यादि और बहुत से ग्रन्थ रचे जिन ग्रन्थों को पढ़कर या सुन कर अविवेक के बन्धन से मुक्त हो यती संन्यासी परमानन्द देने वाली शान्ति लाभ करते हैं—बदरिकाश्रम में एक वर्ष ठहर पद्मपाद आदि प्रधान शिष्यों को अपना बनाया शारीरक भाष्य तथा दूसरे ग्रन्थों को तीनवार पढ़ाय फिर काशी लौट आये और उस समय के काशी के प्रधान और प्रसिद्ध पण्डित भास्कर अभिनव गुप्त मुरारि मिश्र विद्येन्द्र प्रभाकर आदि दार्शनिकों को वाद में परास्त करते देख काशी के लोग इस बालक की लोकोत्तर बुद्धि पर अचरज में आये—एक दिन गंगा जी के तट पर शिष्यों को पढ़ा रहे थे अनेक शंकाओं का समाधान करते मध्यान्ह हो गया, थक भी गये थे उसीही उन २ शिष्यों की सन्धा पूरी कर उन्हे विसर्जन किया चाहते थे कि एक ब्राह्मण ने बूढ़े के रूप में शंकर से आकर पूछा तुम कौन हो और यह क्या पढ़ा रहे हो—शिष्यों ने उत्तर दिया यह हमारे पूज्यपाद गुरू हैं इन्हीं ने समस्त उपनिषदों का सार शारीरक सूत्रों का भाष्य रचा है वही हम लोगों को पढ़ा रहे हैं—बूढ़ा बोला शारीरक सूत्रों का भाष्य करना साधारण बात नहीं है हमें कैसे विश्वास हो अच्छा तो कुछ कहो हम सुनें कैसा भाष्य तुम्हारे गुरुने किया है—शंकर खुद आय बोल उठे शारीरक सूत्रों के अर्थ जानने वाले गुरुवरों को अनेक प्रणाम है उन सूत्रों का भाष्यकार होने का मुझे अभिमान नहीं है तथापि आप जो पूछें सो मैं कहूं—तब उस वृद्ध ने इन से तृतीय अध्याय के आरंभ में "तदन्तरप्रतिपत्तौ रंहति संपरिष्वक्तः प्रश्ननिरूपणाभ्याम्" इस सूत्र की व्याख्या करने को कहा—भाष्यकार शंकर ने उत्तर दिया—इन्द्रियों के नाश होने पर अर्थात् देहका जब विनाश हो जाता है तब आत्मा देह का बीज भूत सूक्ष्म से आवेष्टित हो देहान्तर में जाता है ताण्ड्य ब्राह्मण की श्रुति में गौतम और जाबालि के प्रश्नोत्तर से यह बात सिद्ध और प्रमाणित है—शंकर के

इस व्याख्यान को उस वृद्ध ब्राह्मण ने अपनी अद्भुत वाक्चातुरी शक्ति से सौ तरह से खण्डित किया शंकर ने भी इसके खण्डन में हज़ारों दोष निकाल अपने व्याख्यान का फिर मण्डन किया इस तरह पर इन दोनों में बराबर ८ दिन शास्त्रार्थ और खण्डन मण्डन होता रहा नवें दिन विवाद आरंभ होने पर पद्म पाद ने अपने गुरू को चेताया कि सम्पूर्ण वेदान्त के रहस्य जानने वाले ये व्यास देव हैं जो नारायण की अंशकाला हैं और आप भी शिव के अवतार शंकर हो तब यह विवाद कल्पपर्यन्त भी काहे को कभी समाप्त हो सक्ता है—पद्मपाद के चेताने पर शंकर भक्ति से पुलकित गात्र हो व्यासदेव की बहुतसी स्तुति कर बोले आप के शिष्य प्रशिष्य की योग्यता भी अपने में न रख जो मैंने आप के शारीरक सूत्रों के भाष्य करने का साहस किया इस मेरीधृष्टता को क्षमा कीजिये यह कह भाष्य उनके अर्पण किया—व्यास जी पुस्तक ले उसे प्रत्येक स्थल में जहां २ गूढ़ अर्थ रक्खे गये थे सब को अच्छी तरह देख और विचार कर बोले—कौन कहेगा कि यह तुमने साहस किया है तुम तो कोई महानुभाव महापुरुष मालूम होते हो हमारे गूढार्थों को विशद करने की पाण्डित्य शक्ति सिवाय तुम्हारे और किसमें थी जो उनको स्पष्ट करता अब तुम इसे पढ़ो पढ़ाओ और जगत में प्रचार करो यह तुम्हारा भाष्य सर्वसम्मत होगा तुम्हारा सब भांत मङ्गल हो अब मैं तुम से विदा होता हूं—शंकरविनीतभाव से प्रणाम कर फिर बोले—आपकी कृपा से यह भाष्य प्रचलित हो चला है और पण्डितमण्डली में सर्वसम्मत भी है इसका सहारा ले मैं अनेक वादियों को भी ध्वस्त कर चुका हूं अब एक यह प्रार्थना है कि आप मुहूर्तमात्र और यहां ठहरें जब तक मणिकर्णिका में मैं अपना शरीर आपके सामने त्याग आयुष्य का अन्त करूं—व्यासदेव ने कहा अभी यह अद्वैतवाद अपनी पूरी प्रौढ़ता को नहीं पहुंचा अभी इसकी अत्यन्त बाल्यदशा है इस लिये तुम जननी के समान हो इसका पोषण कुछ दिन तक और करो बहुत से अद्वैतवाद के प्रतिकूल वादी जन मत्तगयन्द से चिग्घार रहे हैं जब तक वे निरस्त न हों तब तक तुम्हारा इस पृथ्वी तल में वास करना अत्यन्त उपयोगी है तुम्हें १६ वर्ष हुये हैं अभी ९६ वर्ष आप और रहें और उपनिषदों का भी भाष्य रचें यद्यपि विद्वानों ने उनका भाष्य रचा भी है परन्तु जो मेरा हृदय है वह तुम्हीं उन्में प्रकाश कर सको गे हम आशीर्वाद देते हैं कि तुम्हारे किये भाष्य संसार में जब तक सूर्य चन्द्रमा रहैं तब तक प्रतिष्ठा पाते रहैं

यह कह वह वृद्ध अन्तर्ध्यान हो गया और शंकर ने भी इसके उपरान्त दिग्विजय की इच्छा से शारीरक सूत्र के वार्तिककार कुमारिल भट्ट से मिलने को दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान किया—पहले प्रयाग पहुंच गंगा और यमुना के संगम में स्नान किया यहां यह सुन कि कुमारिल ने शास्त्रार्थ में अपने गुरु को परास्त किया था इस लिये गुरू की अवज्ञाजनित दोष से मुक्त होने को तुषानल में प्रवेश कर रहे हैं— जल्द उस स्थान में गये जहां कुमारिल चिता के बीच बैठे हुये थे फूस की आग चारों ओर दधक रही थी और प्रभाकर मुरारि मिश्र इत्यादि तुषानल के सब ओर खड़े रो रहे थे कुमारिल का सर्वांङ्ग जल गया था केवल मुख मात्र खुला था—अत्यन्त प्रसन्न हो बोले आप ऐसे महात्मा का दर्शन विशेष कर मेरी मरण अवस्था में बड़े पुण्य का उदय है असारसंसारसागर में डूबते हुओं को आप सरीखे उदारचरित्र महात्माओं का सत्संग ही उसके पार जाने को नौका है—तब शंकर ने अपना भाष्य कुमारिल को दिखलाया—यह उसे देख बोले मैंने भी शारीरक सूत्रों के आठ सहस्र वार्तिक बनाये हैं यदि तुषानल में प्रवेश न किये होते तो उन वार्तिकों को आप के बनाये भाष्य में समावेशित कर देते आप का यह ग्रन्थ बहुत उत्तम रचा गया है कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्ड दोनों का विधिवत् निर्णय इसमें किया गया है और नैयायिकों की युक्ति का भी अच्छी तरह खण्डन इसमें है—बौद्धों से वेदमार्ग को लुप्त होता देख मैंने उनके शास्त्रों को पढ़ पीछे उन से शास्त्रार्थ कर वाद में उन्हें परास्त कर फिर से वेदमार्ग का प्रचार करवाया तो, किन्तु गुरुनिन्दा का पाप मेरे अन्तरात्मा को डंकसा मार रहा था दूसरे यह कि जैमिनिप्रणीत मीमांसा शास्त्र में अभ्यास कर मैंने ईश्वर का भी निराकरण किया—इन दो पापों के दूर करने को तुषानल में प्रवेश ही मैंने प्रायश्चित्त समझा पर अब आप का दर्शन पाय मैंने उन दोनों पापों से सहज ही में मुक्ति पाई तब यह तुषानल का प्रवेश निरर्थक है—मैंने जब सुना कि आपने भाष्य बनाया है तब मेरी इच्छा हुई कि शाबर भाष्य पर जैसा वृत्ति मैंने रचा है वैसा तुम्हारे शारीरक भाष्य पर भी रच पण्डितों में प्रतिष्ठा का अधिकारी हूं किन्तु अब उसका चरचा चलाना भी व्यर्थ है—शंकर कुमारिल की ये बातें सुन बोले यह हम जानते हैं कि बौद्धों के संहार के लिये साक्षात् स्वामिकार्तिक आप प्रगटे हो उन दोनों पातकों की कहीं सम्भावना भी तुम्हारे में नहीं है तब तुषानल में आप का प्रवेश केवल धर्म की शिक्षा के लिये है—यदि

आप कहें तो कमण्डलु के जल से सींच मैं आप को जिला दूं और आप की इच्छा है तो मेरे भाष्य पर वृत्ति रचिये कुमारिल ने फिर कहा—हे अर्हत्तम ! मैं जानताहूं आप अद्वैतवाद के स्थापन के लिये प्रगट हुये हो थोड़ा पहिले आये होते तो पाप से छुटकारा पाने को मैं तुषानल में प्रवेश न करता मेरे भाग्य में यह नहीं था कि शाबर भाष्य की भांत आप के भाष्य पर भी कुछ लिख प्रतिष्ठा पाता मैं जानता हूं आप महायोगी हो मरे हुये को भी जिला देने में समर्थ हैं तो मैं तो अभी सजीव हूं—अब ऐसा ही होने दीजिये मैं तुषानल में प्रवेश का संकल्प कर चुका हूं तो उसे मिथ्या नहीं किया चाहता अब आप तारकब्रह्म का उपदेश कर मुझे कृतार्थ कीजिये और दिगन्तविश्रान्त यंश मण्डन मिश्र को जाकर जीतिये—वह पृथ्वीतल में विश्वरूप इस नाम से प्रसिद्ध है वैदिककर्म में तत्पर कर्मकाण्ड के लिये बड़ा हठी है प्रवृत्तिशास्त्र में लगा हुआ बड़ा कर्मकाण्डी है—निवृत्तिमार्ग का बड़ा विरोधी है उसे किसी तरह अपने बश में लाइये उस की स्त्री सरस्वती साक्षात् सरस्वती महापण्डिता है उसे मध्यस्थ कर मण्डन को बाद में परास्त कीजिये थोड़ा ठहरिये अब तक मैं आप का चरण पंकज अपने हृदय में धारण कर आप का स्वरूप देखते हुये इन प्राणों का अन्त करूं—कुमारिल की इच्छा पूरी कर और तारक महामंत्र के उपदेश से वैष्णवों की गति उन्हें दे वहां से मण्डन की ओर सिधारे—

माहिष्मतीपुरी में पहुंच मण्डन मिश्र का पता पूछते हुये घर के समीप मार्ग में मण्डन की दासी को जल के लिये जाते हुये देख उस से पूंछा मण्डन का घर कहां है—दासी ने उत्तर दिया द्वार पर जहां पिंजड़ों में तोता मैंना परस्पर यह विवाद करते हों कि वेद स्वतः प्रमाण हैं या वेद का ईश्वरवाक्य होना किसी दूसरे प्रमाण की आकांक्षा रखता है—सुख दुःख आदि कर्म का फल मनुष्य को अपने कर्म के अनुसार मिलता है या उस का देने वाला कोई अजन्मा सर्वज्ञ कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ सर्वशक्तिमान् ईश्वरपद वाच्य है—यह जगत् कर्म की अनादि धारा के अनुसार प्रवाहरूप से नित्य है या कोई इस का उत्पन्न करने वाला है इत्यादि विवाद जहां तोता मैंना में होते देखो उसे मण्डन का घर जानो—

स्वतःप्रमाणं परतःप्रमाणं कीराङ्गना यत्र गिरं गिरन्ति ।
द्वारस्थनीडान्तरसन्निरुद्धा जानीहि तन्मण्डन पण्डितौकः ॥

फलप्रदं कर्मफलप्रदोऽजः कीराङ्गना यत्र गिरं गिरन्ति ।
द्वारस्थनीडान्तरसन्निरुद्धा जानीहि तन्मण्डन पण्डितौकः ॥
जगद् ध्रुवं स्याज्जगदध्रुवं स्यात्कीराङ्गना यत्र गिरो गिरन्ति ।
द्वारस्थनीडान्तरसन्निरुद्धा जानीहि तन्मण्डनपण्डितौकः ॥

दासी के बताये हुये पहिचान के अनुसार द्वार पर जा द्वार बन्द देख भीतर जाना सब भांत असम्भव जान योगबलद्वारा आकाशमार्ग से मण्डन के घर के अंगने में जा उतरे और मण्डन को श्राद्ध के लिये बैठा हुआ जैमिनि और व्यास को अवनेजन देता हुआ देखा—मण्डन श्राद्ध के समय गेरुआ वस्त्र पहिने संन्यासी का निषिद्ध दर्शन समझ क्रोध में भरा हुआ बोला—

कुतो मुण्ड्यागलान्मुण्डी पन्थास्ते पृच्छ्यते मया ।
किमाह पन्थास्त्वन्माता मुण्डेत्याह तथैव हि ॥

घर के द्वार का कपाट बन्द रहने पर भी श्राद्ध के समय अयोग्य दर्शन तू किस रास्ते से आया—

शंकर—"कुतः" इस पद का अर्थ बदल कर बोले (कुतः अर्थात् कहां तक तू ने मुड़ाया है) मैं गले तक मुड़ाकर मुण्डी हुआ हूं ॥

मण्डन—(यह जान कि इसने हमारे प्रश्न को नहीं समझा फिर बोला) मैं पूछता हूं किवाड़ बन्द थे तू किस रास्ते से आया ॥

शंकर—सब लोग इस संसार में किस रास्ते से आते हैं यह तुम अपनी मा से जाकर पूछ आओ ॥

मण्डन—(इनके उत्तर का मर्म न जान फिर बोला) मैं रास्ता पूछता हूं तू कहता है तेरी मा मुण्डी है ॥

शंकर—तेरी मा मुण्डी है तो हो ॥

मण्डन—अहो पीता किमु सुरा नैव श्वेतायतः स्मर ।
किं त्वं जानासि तद्वर्णमहं वर्णी भवान् रसम् ॥

क्या तू ने "सुरापीता" मद पिया है ?

शंकर—("पीता" इस शब्द पर आक्षेप कर उत्तर दिया) पीता अर्थात् पीली रंग की मद तूने पिया है श्वेत रंग की नहीं ? ॥

मण्डन—याद कर किस रंग की मद तू ने पिया ॥

शंकर—रंग हम जान सक्ते हैं पर उसका रस स्वाद तुम ॥

मण्डन—अरे ! एक गदहे का बोझ कन्था (गुदड़ी) तो लादे है शिखा और जनेऊ से तुझे कौनसा बोझ था जो उसे त्याग दिया ? ॥

शंकर—मूढ़ ! तेरे बाप से भी न उठ सके सो गुदड़ी तो मैं धारण किये हूं किन्तु शिखा और जनेऊ श्रुतियों को बोझ था नहीं तो श्रुति ने क्यों आज्ञा दिया जिस दिन वैराग्य मन में स्थान करले उसी दिन सिखा सूत्र त्याग संन्यास धारण लेकर ॥

"यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेत्" "ब्रह्मचर्याद्वा गृहाद्वा वनाद्वा" "न कर्मणा न प्रजया न धनेन वा त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः"—"अथ परिव्राड्विवर्णवासा मुण्डोऽपरिग्रहः"

मण्डन—सात भांवर की पाणिगृहीतीभार्या के भरण पोषण में सब भांत असमर्थ शिष्य बेचारों पर पुस्तक का बोझ लदवाने के लिये तू ब्रह्मज्ञानी हुआहै—

शंकर—चिरकाल तक गुरुकुल में बास और गुरुसेवा का अनेक क्लेश सहना दुर्घट समझ ब्रह्मचर्य जल्द समाप्त कर स्त्री की सेवा में तत्पर रहने ही से तू भी क्या कर्मकाण्डी हुआ है ॥

मण्डन—दरवाज़े के डेहुरीदार पहरुओं को धोखा दे तू क्यों यहां चोरों के समान घुस आया ॥

शंकर—तू भी भिक्षुकों को विना अन्न दिये चोरों की तरह क्यों भोजन करता है।

मण्डन—शान्त शील सूक्ष्मबुद्धि विरक्तों के योग्य कहां ब्रह्म का विचार कहां तू ऐसा चपल निपट अज्ञान—मैं समझता हूं जीभ के स्वाद के लिये तूने संन्यासी का भेष धर लिया है ? ॥

शंकर—श्रद्धालु और शुद्धचित्त वालों से करने योग्य स्वर्ग के साधन कहां यज्ञादिक वैदिक कर्म कहां महामदान्ध दाम्भिक कुटिल चित्त तेरा यह व्यर्थ का वाग्वाद—मालूम हुआ संसार के विषय सुखों के स्वाद के लिये यह सब ढङ्ग तूने रच रक्खा है ॥

मण्डन—विना बुलाये तू क्यों हमारे घर आया ? ।

शंकर—हम अतिथि के भेख में विष्णुरूप हो तुझे कृतार्थ करने आये हैं ॥

दोनों में इस तरह देर तक वाक् कलह के उपरान्त जैमिनि का इशारा पाय व्यासदेव बोले—मण्डन रागद्वेष विहीन इस महात्मा आत्मज्ञानी के प्रति तुम्हारा यह आचरण सर्वथा अयोग्य है—अभ्यागत विष्णुरूप होते हैं तुम इन्हें भिक्षा दे प्रसन्न करो और अपराध क्षमा कराओ—व्यासदेव की आज्ञा पाय मण्डन ने आदर के साथ शंकर से भिक्षा के लिये प्रार्थना किया—शंकर ने इसे शान्त और विनीत देख कहा मैं तुम से विवाद भिक्षा चाहता हूं और विवाद भी इस प्रण "शर्त" के साथ कि जो शास्त्रार्थ में हारै वह शिष्य होजाय ॥

मण्डन—मैं अपना अहोभाग्य मानता हूं जो आप मुझ से शास्त्रार्थ की प्रार्थना करते हैं कल मध्याह्न में हमारा और आप का शास्त्रार्थ होगा इस समय भिक्षा कर मुझे कृतार्थ कीजिये महर्षि व्यास और जैमिनि विवाद में हम दोनों के जय पराजय का निर्णय करने वाले हैं ॥

शंकर—हमारी ओर से सरस्वती जो सरस्वती का अवतार हो इस समय तुम्हारी धर्मपत्नी है विवाद का निर्णय करने वाली हो—

दूसरे दिन पण्डितों की सभा में शिष्य समेत मण्डन आ उपस्थित हुये और पति की आज्ञा पाय सरस्वती भी वहां आ सुशोभित हुई और फूलों का एक २ माला दोनों के गले में पहिनाय बोली जय पराजय की पहचान यही माला होगी मैं अपने पति और इस भिक्षुक के लिये भोजन सिद्ध करने जाती हूं पर नित्य इसी तरह माला पहिना दिया करूंगी माल के फूलों का कुम्हला जाना ही पराजय की पहिचान होगी—दिन २ पण्डितों की मण्डली बढ़ती ही जाती थी शास्त्रार्थ के समय दोनों पद्मासन होकर बैठते थे प्रसन्न मुखारविन्द एक दूसरे के हराने को क्रोध या वाक् कल को अलग कर दिया था—मध्याह्न होने पर सरस्वती दोनों को भोजन करा जाती थी पांच या छः दिन बराबर इसी क्रम पर दोनों में वाद होता रहा—अनेक भिन्न २ विषयों पर शास्त्रार्थ के उपरान्त मण्डन ने पूछा यतिराज ! आप जो जीव और ब्रह्म में अभेद मानते हैं और उसमें भी ब्रह्म को नित्य शुद्ध बुद्ध उदासीन मानते हो सो क्योंकर सङ्गत हो सक्ता है क्योंकि जब ब्रह्म में कर्तृत्व भोक्तृत्वगुण नहीं है तो कर्तृत्वभोक्तृत्वविशिष्ट जीव के साथ उसका अभेद कैसे सिद्ध सक्ता है जो श्रुतियां इसमें प्रमाण देते हो वे केवल भूतार्थ सत्य बात की प्रतिपादिका मात्र हैं भूतार्थ प्रत्यक्षादि प्रमाण सापेक्ष हैइस लिये जीव और ब्रह्म का अभेद युक्तिरहित होने से प्रमाण के योग्य नहीं है—

शंकर—"तत्त्वमसि श्वेतकेतो" इत्यादि श्रुतियों में जो उद्दालक आदि महर्षियोंने शिष्य श्वेतकेतु को उपदेश किया है कि हे श्वेतकेतो! वह आत्मा या ब्रह्म तुम्ही हो—ऐसा ही जनक के प्रति याज्ञवल्क्य ने भी कहा है—

अभयं वै जनक ! प्राप्तोसि तदा आत्मानमेवावेदहम्ब्रह्मास्मीति तस्मात्तत्सर्वमभवत्। तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः"—

हे जनक! जब तुम को यह ज्ञान होगया कि हमी वह हैं तब तुम को फिर किसी तरह का भय न रहा—जो सबको एक देखते हैं उनको मोह या शोक कहां—प्रत्यक्ष प्रमाण के अतिरिक्त शाब्द प्रमाण न मानने में कौनसी तुम्हारी हानि है—

मण्डन—यद्यपि तत्त्वमसि इत्यादि वाक्यों से सिद्ध होता है कि ब्रह्म और जीव में अभेद है किन्तु यह अभेद केवल स्तुति के ढंग पर है—

शंकर—यह क्रम कर्मकाण्ड का है ज्ञानकाण्ड का नहीं निन्दा और स्तुति से जब तक ग्लानि और प्रसक्तता लगी है तब तक ज्ञान का प्रकाश होना दुर्घट है जब पूर्णज्ञान मन में स्थान पाता है तब मनुष्य जीव और ब्रह्म में अभेद समझने का अधिकारी हो सक्ता है—इस प्रकार शंकर मण्डन को बराबर बाद में परास्त करते रहे शंकरदिग्विजय में जो दोनों का विवाद विद्यारण्य ने लिखा है उस्से निश्चय होता है कि यह शंकराचार्य ही की सामर्थि रही कि मण्डन को बाद में परास्त किया—विद्यारण्य ने इस प्रकरण को ऐसे ढंग से लिखा है कि मीमांसा और वेदान्त में जिसे जितना ही अधिकार हो उसे उतना ही दोनों शास्त्रों के पाण्डित्य का रस मिल सक्ता है—अस्तु छठवें दिन सरस्वती आकर मण्डन के गले के हार का फूल कुम्हालाया हुआ देख जैसा शंकर को भिक्षा के लिये नित्य कहा करती थी उसी तरह मण्डन को भी उस दिन भिक्षा के लिये बुलाया और शंकर से कहने लगी दुर्वासा के शाप से मुझे मृत्युलोक में जन्म लेना पड़ा था मैं अब ब्रह्मलोक में जाती हूं आप का कल्याण हो मण्डन के सदृश पृथ्वी पर दूसरा पण्डित इस समय नहीं है इसे तुम ने बाद में परास्त किया मानों समस्त भूमण्डल को जीत चुके—

सरस्वती की ये बातें सुन शंकर ने अरण्य दुर्गा के मन्त्रों से उसे बांध बोले भगवती मैं जानता हूं आप साक्षात् सरस्वती हो किन्तु यह सेवक जब तक आप को जाने के लिये न कहे तब तक आप ठहरें—

मण्डन बाद में अपने को हारा जान हठ छोड़ फिर बोला योगीराज। मीमांसा का खण्डन आप करते हैं तो जैमिनि महामुनि उस शास्त्र के निर्माण में क्यों प्रवृत्त हुये महर्षियों के वाक्य क्यों कर झूठ हो सक्ते हैं—ऐसा सन्देह करता हुआ मण्डन को देख शंकर फिर बोले जैमिनि महर्षि का वाक्य कहीं पर मिथ्या नहीं है किन्तु हम लोग उन वाक्यों का आशय न समझ उन का उलटा अर्थ कर रहे हैं—पटुबुद्धियों को भी ब्रह्म के सूक्ष्म विचार में असमर्थ जान ब्रह्म के प्राप्ति का साधन केवल सुकृत और पुण्यातिशय जान कर्मकाण्डों का विधान जैमिनि ने मीमांसाशास्त्र बनाया—कर्मकाण्ड के सम्यक् विधान करने से जब अन्तरात्मा पवित्र होता है तो उस के लिये ब्रह्म की प्राप्ति फिर दुर्घट नहीं रह जाती इस लिये मीमांसाशास्त्र वेदान्त का अधिकारी कर देने का अंग है न कि प्रधानशास्त्र जैसा तुम लोगों ने अब तक समझ रक्खा था—इस विषय में मण्डन ने जो २ शंकायें कीं उन सबों का शंकर बराबर समर्थन करते गये—कई एक प्रश्नों में मण्डन का एक यह भी प्रश्न था कि यदि जैमिनि को परमेश्वर का सच्चिदानन्द होना स्वीकार था तो परमेश्वर से भिन्न कर्म को सुख दुःख आदि शुभ अशुभ कर्म का फल देने वाला मान परमेश्वर नहीं है ऐसा कह उस का निराकरण उन्हों ने क्यों किया—शंकर ने कहा कार्यकारणवादी कणाद का मत है कि जैसा घट देख हम उस घट के बनाने वाले का अनुमान कर लेते हैं इसी तरह कार्यरूप इस जगत् को देख कारणरूप इस के बनाने वाले परमेश्वर का हम अनुमान करते हैं—जैमिनि ने इस तरह पर परमेश्वर का सत्ता या अस्तित्व मानने वाले वैशेषिक के आचार्य कणाद को उत्तर दिया है न कि श्रुतियों में प्रतिपादित ईश्वर के निराकरण में उन का तात्पर्य है—उपनिषदों के अभ्यास से वह ब्रह्म जाना जाता है अवेदवित् उसे किसी तरह नहीं जान सक्ते इसी तात्पर्य को पुष्ट करने वाली श्रुति भी है "तंत्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि—मावेदवित् मनुते तं बृहन्तम्"—तो सिद्ध हुआ कि केवल अनुमानगम्य ईश्वर के खण्डन में जैमिनि का अभिप्राय है—इस गूढ़ अभिप्राय को न समझने वाले ही जैमिनिप्रणीत पूर्वमीमांसा शास्त्र को अनीश्वरवाद कहते हैं—जैमिन के हृदय का अभिप्राय शंकर के इस समाधान पर मण्डन सरस्वती और सभा में जितने लोग बैठे थे सब प्रसन्न हुये और उन की गंभीर बुद्धि की प्रशंसा करने लगे—मण्डन पण्डिताई का सब अभिमान त्याग शंकर का शिष्य हो घर गृहस्थी

त्याग संन्यासी होने लगा सरस्वती तब बोलीं मैं मण्डन की अर्द्धांङ्गिनी हूं जब तक मुझे भी आप वाद में न हरा लें तब तक मेरा पति अभी आधा हारा है इस लिये हमें भी जीत तब पति को आप संन्यासी कर सकते हैं ॥

शंकर—स्त्रियों के साथ विवाद सदाचार के विरुद्ध है किन्तु अपना सिद्धान्त खण्डन करने में प्रवृत्त स्त्रीजाति हो वा दूसरा कोई हो उस से भी वाद करना अनुचित नहीं है—इसी लिये ब्रह्मविद्या के विचार में याज्ञवल्क्य ने गार्गी से विवाद किया जनक राजर्षि सुलभा के साथ कलह में प्रवृत्त हुये—विचित्र उक्ति युक्तियों में दोनों का सात दिन तक बराबर शास्त्रार्थ होता रहा—सरस्वती ने शास्त्रों के जालजाल में इन्हें कहीं पर किसी अंश में कच्चा न पाय सोचा कि यह बाल्य अवस्था ही से संन्यासी हुये हैं इस लिये सर्वज्ञ होकर भी ये रस का विषय काम शास्त्र में सब भांत अपरिपक्व हैं तो उस विषय में इन से वाद करने में पार ले जा सकती हूं—पूछा बताइये पुष्पधन्वा कामदेव की कितनी कलायें हैं और उन का क्या २ स्वरूप है कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष में काम की कला पुरुष के किस अंग में रहती है और स्त्री के किस अंग में रहती है—शंकर ने सोचा यदि मैं इस प्रश्न का उत्तर देने से इनकार करता हूं तो अल्पज्ञ होने का कलंक मुझे लगता है यदि उत्तर देता हूं तो यह संन्यासियों के धर्म के विरुद्ध होता है बोले सुन्दरी एक महीने की अवधि यदि मुझे दो तो मैं कामशास्त्र में भरपूर निपुण हो इस का भी उत्तर आप को दे सकूंगा—तथास्तु ऐसा सरस्वती के अङ्गीकार करने पर शंकर योगबल से खेचरी मुद्रा के द्वारा शिष्य समेत आकाश में उड़ गये और आखेट को गया वृक्ष के नीचे वन में मोहवश बेहोश मृतक अमरु राजा को पड़ा हुआ ऊपर से देख पद्मपाद नामक अपने शिष्य से कहा—यह अमरु राजा सौन्दर्य सौभाग्य और रसिकता की सीमा है इस के सौ रानियां हैं जिस से सिद्ध होता है कि यह कहां तक कामी है—मैं चाहता हूं कि इसी के शरीर में योगबल से प्रवेश कर कामशास्त्र की सप्रयोग कला सीखूं ॥

यह कह एक पर्वत की रमणीक शिलातल पर जा उतरे जहां स्वच्छ जल से भरा सरोवर और हरे भरे वृक्ष चारो ओर उस पर्वत की शिला को अधिक सोहावनी कर रहे थे अपने शिष्यों को आज्ञा दिया मैं अब कामकला सीखने को अमरु राजा के शरीर में प्रवेश करता हूं तुम लोग मेरे शरीर की सावधानी से रक्षा करते रहो इस के उपरान्त शंकर की वह देह मृतक होगई—

अमरू तत्क्षण जी उठा रानियां सब बड़ी प्रसन्न हुईं मन्त्री लोग और पुरवासियों को बड़ा आनन्द हुआ सब बड़े अचरज में आये—अमरूशतक नाम का छोटासा एक खण्डकाव्य इस समय में इन्हीं ने रचा था जो मानो इस कथानक के सत्य होने की गवाही दे रहा है—

हारोऽयं हरिणाक्षीणां लुठति स्तनमण्डले ।
मुक्तानामप्यवस्थेयं के वयं स्मरकिङ्कराः ॥
दम्पत्योर्निशि जल्पतोर्गृहशुके नाकर्णितं यद्वच-
स्तत्प्रातर्गुरुसन्निधौ निगदतस्तस्योपहारं वधूः ॥
कर्णालङ्कृतिपद्मरागशकलं विन्यस्य चञ्चूपुटे ।
व्रीडार्ता प्रकरोति दाडिमफलव्याजेन वाग्बन्धनम् ॥
एकत्रासनसंस्थितिः परिहृता प्रद्युम्नमादूरत-
स्ताम्बूलानयनच्छलेन रभसा श्लेषोऽपि संविग्नितः ।
आलापोऽपि न विश्रुतः परिजनं व्यापारयन्त्यन्तिके,
कान्तं प्रत्युपचारतश्चतुरया कोपः कृतार्थीकृतः ॥
सा पत्युः प्रथमापराधसमये सख्योपदेशं विना,
नो जानाति स विभ्रमाङ्गबलना वक्रोक्तिसंसूचनम् ।
स्वच्छैरच्छकपोलमूलगलितैः पर्यस्तनेत्रोत्पला,
बाला केवलमेव रोदिति लुठल्लोलैश्चलैरश्रुभिः ॥
सा बालामप्यप्रगल्भमनसः सा स्त्री वयं कातराः,
सा पीनोन्नतिमत्पयोधरयुगं धत्ते सखेदा वयम् ।
सा कान्ता जघनस्थलेन गुरुणा गन्तुं न शक्ता वयम्,
दोषैरन्यगुणाश्रितैरपटवो जातास्म इत्यद्भुतम् ॥
कोपस्त्वया यदि कृतो हृदि पङ्कजाक्षि,

सोऽस्तु प्रिये तव किमत्र विधेयमन्यत् ।
आश्लेषमर्पय मदर्पितपूर्वमुच्चैर्मह्यं समर्पय मदर्पित चुम्बनं च ॥

इत्यादि थोड़े से उदाहरण इन की प्रौढ कविता के यहां पर हम इसलिये उद्धृत किये हैं कि इससे संस्कृतसाहित्यविदग्ध जान सक्ते हैं कि कैसी सर्वाङ्ग सुन्दर कविता अमरूशतक की है गोवर्द्धनाचार्य्य और विहारी कवि ने इसी की छाया लेकर अपने २ काव्य रचे हैं बल्कि नैषध में श्रीहर्ष ने भी कई जगह अमरूशतक की छाया लिया है—रसनिरूपण के और नायिका नायक भेद के ग्रन्थों में सबों ने उदाहरण में इसी के श्लोक दिये हैं—

इस समय अमरू के राज्य भर में कलियुग भी त्रेतायुग के समान मालूम होने लगा और अब राजकाज में तथा कामकेलि में अमरू की लोकोत्तर असाधारण पटुबुद्धि मन्त्री लोग और सब रानियां भी देख जान गईं कि कोई प्राप्तैश्वर्य सिद्ध योगी ने इसके शरीर में प्रवेश कर इसे जिला दिया है—अमरूशतक बनाने का जिकिर शंकरदिग्विजय में माधवाचार्य विद्यारण्य ने भी किया है ॥

वात्स्यायनप्रोदितसूत्रजातं तदीयभाष्यं च निरीक्ष्य सम्यक् ।
स्वयं व्यधत्ताभिनवार्थगर्भं प्रबन्धमेकं नृपवेशधारी ॥

वात्स्यायन का कामसूत्र और उसका भाष्य अच्छी तरह देख भाल नवीन अर्थ गर्भित एकप्रबन्ध राजा के भेख में रचा—

मन्त्री और रानियों ने अपने प्रबन्धकर्त्ताओं को आज्ञा दे दी और जसूसों को सब ओर भेज दिया कि तुम जहां कहीं मृतक शरीर पृथ्वी में पाओ उसे ढूंढ कर जला दो—एक महीने से पांच छः दिन अधिक बीत गये पर गुरु को अपने निज शरीर में प्रवेश होते न देख शिष्य सब बड़े सोच में आय विलाप करने लगे तब पद्मपाद उन सबों को समझाय बोला कि दुःख और विषाद त्याग एक चित्त हो यत्न करने से क्या २ नहीं होता बराबर विघ्न पर विघ्न होने पर भी देवता लोग समुद्र मथने के प्रयत्न में लगे रहे अन्त में अमृत पीने में कृतकार्य हो ही गये इसलिये हम सब लोग एक मन हो चल कर गुरु को ढूंढें—यद्यपि उन का मिलना अतिकठिन है किन्तु मनुष्यों में वे जहां कहीं होंगे अपने लोकोत्तर गुणों से न छिपे रहेंगे जहां वे होंगे वहां की प्रजा अतिप्रसन्न रोग शोकरहित सब भांत सुखी होगी चारो वर्ण अपने २ वर्ण के काम में तत्पर होंगे पृथ्वी

M. P. 891.4305 / H 6121, V.8
National Library

यहां की कामधेनु के समान फलती हुई मालूम होगी—पद्मपाद के इस परामर्श को सबों ने पसन्द किया और भेख बदल २ शिष्य सब अनेक बन पर्वत देश ढूंढ़ते हुये अमरू के राज्य में जा पहुंचे यहां अमरू के फिर जी जाने की किंवदन्ती सुन औरौ अमरू को पृथु दिलीप समान प्रकाशमान देख जान गये कि यही हमारे पूज्यपाद गुरु हैं—तरुणी में आसक्त गान सुनने के बड़े रसिक इन्हे पाय वीणा ले गाने वाले के भेख में अमरू की सभा में जा पहुंचे और निर्विघ्न राजसभा में प्रवेश पाय सौ रानियों के मध्य में तारागणों के बीच चन्द्रमा के समान भासमान् देखा—राजा की आज्ञा पाय भैंरे पर छोड़ मारफत की गीत गाने लगे—

नेति नेत्यादिनिगमवचनेन निपुणं निषिध्य मूर्तामूर्तराशिम् ।
यदशक्यनिह्नवं स्वात्मरूपतया ज्ञानकोविदास्तत्त्वमसि तत्त्वम्—

मूर्त अमूर्त यावत् पञ्चभूतात्मक जो इस संसार में शरीरवान् या अशरीरी हो कर इन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष हो सक्ते हैं अथवा जो इन्द्रियगोचर पदार्थ नहीं हैं—उन सबों में नेतिनेति कह श्रुति जिस्का निषेध काती है पर जगन्मात्र में जो विद्यमान् रहता हुआ निवारण नहीं किया जा सक्ता इसलिये विद्वान् लोग जिसे अपने स्वरूप में देख कर जान लेते हैं वह तत्त्व परमार्थ वस्तु तुम्ही हो—इस तरह पर वीणा में शिष्यों ने गाया—"तत्त्वमसि तत्त्वम्" प्रत्येक श्लोकों के अन्त में रख सकल वेदान्त और तत्त्वज्ञान का सारभूत सात श्लोक विद्यारण्य ने ऐसे लिखे हैं जिन्हें पढ़ ज्ञान का उद्गार हो आता है—

जिस्में परमार्थ तत्त्व वर्णन किया गया है ऐसी वीणा की गीत का तात्पर्य समझ और जिस प्रयोजन से राजा के देह में आये थे उसे भी सिद्ध देख तत्काल अमरू के शरीर को छोड़ दिया और वह देह फिर पहिले कासा मृतक होगया—यहां इन का शरीर जी उठा पर राजा के दूतों से चिता में उसे जलता पाय नृसिंह की स्तुति करने लगे—

लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो वैकुण्ठ कृष्ण मधुसूदन पुष्कराक्ष ।
ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव देवेश देहि कृपणस्य करावलम्बम् ॥

इत्यादि १२ श्लोक बड़े ललित पदों में नृसिंह की स्तुति के हैं—नृसिंह जी की कृपा से चिता की आग तत्काल शान्त होगई—शंकर अपने निज के शरीर में प्रवेश कर शिष्य समेत योगबल से आकाशचारी हो मण्डन के स्थान में जा पहुंचे—मण्डन ने इन को आया देख प्रसन्न चित्त हो इन के चरणकमलों पर साष्टाङ्ग प्रणामपूर्वक गेह देह सब इन के अर्पण कर दिया—सरस्वती बोली आर्य! मैं आप के पाण्डित्य और योगबल को सब भांत जानती थी फिर भी जो मैंने आप के साथ यह विडम्बना किया उसे क्षमा कर अब मुझे निज धाम में पधारने की आज्ञा दीजिये ॥

शंकर ने सरस्वती को प्रणामपूर्वक विधिवत् पूजन कर कहा जगदम्ब ऋष्य शृङ्ग के स्थान में मैंने जो २ स्थान आप के कल्पित किये हैं उन में आप सदा सन्निधि रह शारदा के नाम से पूजकों के मनोरथ पूर्ण करती रहो—सरस्वती तथास्तु कह अन्तर्ध्यान होगई—मण्डन भी यज्ञ में जो कुछ पास था सब ब्राह्मणों को दे इन के शरण में आया और इन्हों ने इसे तत्त्वमसि महावाक्य का उपदेश कर संन्यस्त किया—इस तरह मण्डन को विवाद में परास्त और ब्रह्मवेत्ता कर अनेक बन और पर्वतों की शोभा देखते हुये कामाक्षा में पधारे वहां से महाराष्ट्र आदि देशों में अपने ग्रन्थों का प्रचार करते और मतमतान्तर का खण्डन करते हुये शिष्य समेत श्रीशैलनामक स्थान में गये वहां से फिर मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग की यात्रा करते हुये कृष्णानदी के प्रान्त देशों में गये और वहां पाशुपत वैष्णव तथा दूसरे २ चक्राङ्कित शूलाङ्कित जुदे २ शिव वा विष्णु के उपासक आये उन सबों को सुरेश्वर और पद्मपाद आदि शिष्यों ने परास्त कर शारीरक भाष्य का उन में प्रचार करवाया—कितने अपना मत छोड़ शंकर के शिष्य होगये कितने मलिनचित्त इन को सब तरह पर क्लेश पहुंचाने के फिकिर में लगे—वहां से समुद्र के तट पर गोकर्णनाथ के स्थान में गये—उपरान्त दो सहस्र कुलीन वेदपारग शुद्ध ब्राह्मणों की बस्ती श्रीवलिनामक ग्राम में पहुंचे वहां प्रभाकर नाम का एक ब्राह्मण विख्यात कीर्त्ति शंकर को आया हुआ जान अपने तेरहवर्ष के एक बालक को लाय इन के चरण कमलों पर लुटा दिया—यह बालक राख में छिपी हुई आग के समान आकृति और चेष्टा में महाजड़ गूंगा और बहिरा था पर स्वरूप और सौन्दर्य में प्रत्यक्ष कामदेव के समान क्षमा और शान्ति में पृथ्वी का सा दया और मार्दव आदि गुण विभूषित अपने मुख चन्द्र के प्रकाश से देदीप्य

मान था—शंकर अपना हाथ इस बालक के शरीर के अङ्ग प्रत्यङ्ग पर फेर कृपा पूर्ण दृष्टि से देखते हुये बालक के पिता से इस लड़के का सब वृत्तान्त पूछा पिता तब कहने लगा—स्वामिन् यह १३ वर्ष का हुआ यज्ञोपवीत संस्कार तो हम ने किसी तरह इसका कर दिया पर यह अब तक एक अक्षर भी नहीं जानता न बोल सक्ता है—साथ के खेलवाड़ी लड़के खेल के लिये बुलाते हैं और जब नहीं जाता तो इसे बहुतसा पीटते हैं तौ भी इसे कभी क्रोध नहीं होता—मनमौजी है जो मन में आया उसे कर गुज़रता है किसी के कहे सुने का नहीं है खाने लगता है तो बराबर खाता ही रहता है रूठ गया तो कई दिनों तक बिना आहार के रह जाता है—ब्राह्मण की ये बातें सुन शंकर ने उस बालक से पूछा तुम कौन हो ? शंकर के प्रश्न का उत्तर इस आजन्म मूक बालक ने जो जब से पैदा हुआ आज तक कभी नहीं बोला था बारह श्लोकों में दिया और प्रत्येक श्लोकों के अन्त में "सनित्योपलब्धिः स्वरूपोहमात्मा" बराबर कहता गया अर्थात् मैं वही आत्मा हूं जो सदैव चैतन्य स्वरूप है—यह १२ श्लोक हस्तामलकीय बोध के नाम से प्रसिद्ध हैं जिसका गूढ़ अर्थ समग्रवेदान्त और उपनिषदों का सारांश है—

शंकर ने तब कहा जैसा हाथ पर रक्खा हुआ औरे का फल समूचा सब का सब एक साथ देखाई देता है वैसा ही इस बालक के उत्तर में समग्रवेदान्त का तत्त्व प्रकाशित है इसलिये ये श्लोक हस्तामलकीय कहलावेंगे और इस बालक का नाम आज से हस्तामलक होगा—विप्रवर ! यह बालक पूर्व जन्म का योगी है घर गृहस्थी के कोई काम का नहीं है—यह कह हस्तामलक को अपने साथ ले वहां से चल दिये और शृङ्गगिरि पर्वत पर पहुंचे जहां मतङ्ग ऋष्य शृङ्ग आदि मुनि तपस्या कर सिद्ध हुये हैं—जहां से तुंगभद्रा नदी प्रगटी है जो मनुष्यों को स्पर्शमात्र से संपूर्ण "भद्र" कल्याण की देने वाली है—शृङ्गगिरि में कुछ दिन ठहर वहां के विद्वानों को अपना बनाया भाष्य और दूसरे २ ग्रन्थ पढ़ाय अद्वैत मत के सिद्धान्त का प्रचार इन लोगों में कराया—यह वही शृङ्गेरीपुर है जहां आज तक शंकर की स्थापित शारदा देवी की मूर्ति है जिस मूर्ति में सरस्वती पहले की हुई प्रतिज्ञा के अनुसार सदा सन्निधि रहती हुई अपने भक्तों की मनोकामना पूरी किया करती हैं—वहां विद्यापीठ नाम का मठ बनवाय भारतीसंप्रदाय का प्रचार किया जो पुरी गिरी इत्यादि इन की स्थापित दस संप्रादाय में एक संप्रदाय है—यहां तोटक नाम परमविनीत गुरुभक्ति में बड़ा दृढ़ शिष्य को अपने शरण में ले समग्र

विद्यापारङ्गत इसे कर दिया शिष्य ने भी पीछे से महाविद्वान् हो तोटकाचार्य की उपाधि पाई—यह देह की छाया के समान तन मन से दिन रात गुरू की सेवा किया करता था—भूतमात्र पर दया करने वाला अत्यन्त विनीत पहले यह गिरि नाम का महानन्द बुद्धि था एक दिन अपना अंचला धोने के लिये नदी में जल लेने गया था शिष्यों को सन्था देने का समय था किन्तु तोटक को अनुपस्थित जान गुरू ने कहा ठहरो जब तक गिरि भी आ जाय—इस पर पादपद्म को अपने सपाठी गिरि की मन्दबुद्धि और गुरू की समदर्शिता पर मुसकिराते देख और पादपद्म को अपनी तीक्ष्णबुद्धि का घमण्ड समझ मन से गिरि का स्मरण कर चौदहो विद्यानिधान इसे कर दिया—गिरि जो पहिले निपट मन्द बुद्धि था नदी से लौट दूर ही से तोटकछन्दों में गुरू की स्तुति करता हुआ आया॥

भगवन्नुदधौ मृति जन्मजले सुखदुःखझषे पतितं व्यथितम्।
कृपया शरणागत मुद्धरमा मनुशाध्युपसन्न मनन्यगतिम्॥

मरण जननरूप भवसागर में डूबता सुख दुःख महामगर के मुह में गिर कर पीडित अनन्यगति मुझ को हे अशरण शरण गुरो अपनी कृपा का करावलम्ब दै उबारिये—तोटक छन्द में ५ श्लोक वैराग्य और आत्मज्ञान का निचोड़ गिरि के मुख से सुन गुरू ने इसे तोटकाचार्य की उपाधि दी—पद्मपाद आदि शिष्यों ने गुरू की महिमा का यह प्रताप जान अचरज में आय अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का सब अभिमान दूर कर दिया—तोटकाचार्य का बनाया तोटक नाम का एक छोटा सा प्रकरण वेदान्त का अति उत्तम ग्रन्थ अब तक संसार में प्रचलित है—उपरान्त पद्मपाद को देशाटन के लिये आज्ञा दे सुरेश्वरार्य हस्तामलक आनन्दगिरि आदि शिष्यों के साथ कुछ दिन ऋष्य शृङ्ग पर्वत पर निवास करते रहे॥

योगबल से अपनी माता का अन्तसमय जान आकाशमार्ग से तत्क्षण वहां पहुंच मा को आतुरदशा में देख उस के चरणों को प्रणाम कर सब भांत उसे आश्वासन दिया—माता ने भी अपने प्रियपुत्र को देख प्रसन्न हो चिरकाल तक पुत्र के वियोग को सब ताप दूर किया—शंकर इसे निर्गुण अद्वैत ब्रह्म का उपदेश देने लगे तब यह बोली बेटा निर्गुण अद्वैतब्रह्म को मैं ने आज तक कभी नहीं सोचा विचारा इस लिये इस अन्तदशा में इन सूक्ष्मविचारों की ओर मेरा

मन नहीं जाता मुझे साकार सगुणब्रह्म का मार्ग बतलाओ तब "अनाद्यन्तनाद्यं परं तत्त्वमर्थं चिदाकारमेकं तुरीयं त्वमेयम्। हरिब्रह्ममृग्यं परब्रह्मरूपं मनो वागतीतं महः शौवमीडे"—इत्यादि भुजंगप्रयातछन्द के १४ श्लोकों में इन्हों ने शिव की स्तुति किया—शिव जी इस स्तुति से प्रसन्न हो अपने दूतों को भेजा शूल और पिनाक हाथ में लिये दूतों को देख यह बोली मैं इन के साथ नहीं जाना चाहती जन्म से आज तक मैंने कभी शिव की आराधना नहीं किया इससे मुझसे इन का कोई परिचय नहीं है—तब "भुजगाधिपभोगतल्पभाजं कमलाङ्कस्थ-लकल्पितांघ्रिपद्मम्" इत्यादि श्लोकों में विष्णु की स्तुति इन्हों ने किया—इस तरह पर अपने पुत्र से इन सरस श्लोकों को पढ़ते हुये सुन पद्मनयन विष्णु भगवान् का हृदय में ध्यान करती हुई योगियों के समान इस ने तन त्याग दिया—यद्यपि संन्यासी के लिये मृतक की दाह क्रिया शास्त्र निषिद्ध है कुटुम्ब के लोग भी इस बात से असन्तुष्ट हुये किन्तु माता से उस्की समस्त और्द्धदैहिक क्रिया की प्रतिज्ञा करचु के थे इसलिये अपने हाथ पिण्डदान इत्यादि सब कर्म किया—प्रार्थना करने पर भी इन के बन्धुजन जब अस्थि संचयन आदि कर्म में शरीक न हुये तब उन को इन्हों ने आप दिया कि तुम आज से वेद बहिष्कृत हुये यती संन्यासी तुम लोगों की भिक्षा भी न ग्रहण करेंगे और तुम्हारे घर के पास ही श्मसान होगा—तब से उस देश के ब्राह्मण वेद नहीं पढ़ते न उन के घर संन्यासी भिक्षा करते हैं—इस तरह पर माता को स्वर्गगति दै भगवत् शंकराचार्य अनेक पाखण्डमतों को दूषित करने के प्रयत्न में लगे किन्तु इसमें अपने मुख्य शिष्य पद्मपाद की सहायता की आकांक्षा से कुछ दिनों तक वहीं ठहरे रहे—

पद्मपाद अगस्त्याश्रम पुण्डरीपुर आदि स्थानों में यात्रा करते रामेश्वर को गये रास्ते में अपने मामा के घर बोझ समझ पुस्तक सब छोड़ गये थे लौट कर आये तो सुना कि घर में आग के लग जाने से पुस्तक जिसे यह छोड़ गये थे सो भी उसी में भस्म हो गई—मामा इन का द्वैतवादी था घर में आग लग जाने का एक बहानामात्र था वास्तव में उस्का प्रयोजन शारीरकसूत्र पर जो इन्होंने टीका बनाया था उस्को जला देने का था—पद्मपाद को यह वृत्तान्त सुन बड़ा दुःख हुआ बड़े उदासीन हुये—तीर्थ यात्रा से लौट गुरु को आ कर प्रणाम किया और अपने बनाये टीका के जल जाने का शोक प्रकाश किया—शंकर ने कहा मैं योगबल से यह वृत्तान्त जान गया था सुरेश्वराचार्य से कह भी दिया था

तुम ने बहुत उत्तम तिलक बनाया था—अस्तु पद्मपादी तक जो तुम ने मुझे ऋष्यशृङ्ग पर्वत पर सुनाया था मुझे प्रत्यक्षर याद है लिखलो उस्के उपरान्त जो तुम ने रचा वह अलबत्ता अब नहीं मिल सक्ता—यह कह पद्मपादी तक प्रत्यक्षर वैसा ही लिखा दिया गुरु की इस अद्भुत धारणाशक्ति पर शिष्य सब बड़े विस्मित हुये—अपने भाष्य पर टीका बनाने को पहले गुरु ने सुरेश्वराचार्य को कहा था इस्पर पद्मपाद और चितसुख आदि शिष्यों ने एकान्त में प्रार्थना किया गुरो! सुरेश्वराचार्य वही मंडन है जिसे आपने बाद में परास्त कर अपना शिष्य बना लिया है जन्म से यह प्रवृत्तिमार्ग में रत रहा इसलिये कर्मकाण्ड में जैसी इस्की निष्ठा होगी वैसी ज्ञानकाण्ड में नहीं—इस कारण इसे यदि आप भाष्य का तिलक बनाने की आज्ञा देंगे तो यह उस्का अर्थ बिगाड़ कर कर्म-काण्ड की ओर झुका लावेगा—संन्यास भी इसने बुद्धिपूर्वक नहीं ग्रहण किया किन्तु शास्त्रार्थ में परास्त हो लाचारी से इस ने संन्यास ग्रहण किया है इस्से यह हम लोगों को विश्वासपात्र नहीं जंचता इस्को अपने भाष्य का टीका करने की आज्ञा न दीजिये—पद्मपाद आनन्दगिर दोनों बड़े योग्य शिष्य हैं इन्में से एक को इस्के लिये आज्ञा दीजिये—सनन्दन ने कहा हस्तामलक भी इसमें सर्वथा समर्थ हैं आप के भाष्य पर इन का वार्तिक बड़ा उत्तम होगा करस्थ आमलक के समान यह आप के सिद्धान्त को अच्छी तरह जानते हैं इसीलिये आपने इन को हस्तामलक की उपाधि दी है—

गुरू ने हंस कर कहा हस्तामलक बाल्य अवस्था में गुरुमुख से एक अक्षर भी नहीं पढ़ा न गुरू के द्वारा इस का उपनयनसंस्कार विधिवत् किया गया है न परमार्थ निष्ठ हो इस ने वेदों को पढ़ा है—पिता इसे पिशाचग्रस्त समझ मेरे पास लाया था यह जन्म ही से आत्मज्ञान में लीन चित्त है इस की प्रवृत्ति इस में अच्छी तरह न होगी—यमुना के तट पर संसारिकविषयों से अत्यन्त निवृत्त साधुवृत्त कोई सिद्ध तपस्या कर रहा था एक ब्राह्मण की कन्या दो वर्ष का अपना बालक उस सिद्ध को तकाय आप स्नान करने चली गई बालक घुटनों से चलता हुआ कगारे से गिर यमुना में डूब गया तब वह विप्रकन्या रोती हुई मृतक बालक को ले सिद्ध के पास आई सिद्ध ब्राह्मणी को रोते देख दयार्द्र हो उसी बालक के शरीर में प्रवेश कर गये वही यह हस्तामलक है—यही कारण है कि इसे कोई पदार्थ अज्ञात नहीं है यह बाह्यवृत्ति से सर्वथा निवृत्त है बाह्य

प्रपंच का तत्व समझने वाला मण्डन के समान दूसरा नहीं है–अस्तु यदि तुम लोगों की इच्छा नहीं है तो सुरेश्वर वार्तिक न बनावेगा तुम सब लोग वार्तिक बनाओ–सुरेश्वर से गुरू ने एकान्त में कहा ये शिष्य सब बड़े मत्सरी हैं तुम्हे नये भिक्षुक समझ इन्हे सन्देह है कि तुम्हारी प्रवृत्तिमार्ग से वासना नहीं हटी इस लिये तुम अपना अलग कोई स्वतंत्रग्रन्थ रच मुझे दिखाओ–तिलक बनाने के लिये गुरू की आज्ञा न पाय सुरेश्वर बड़े उदासीन हुये और नैष्कर्मसिद्धि नाम का एक स्वतंत्रग्रन्थ बनाय गुरू के अर्पण किया–आदि से अन्त तक मनोहर पदों में इस ग्रन्थ को देख गुरू अत्यन्त प्रसन्न हुये और शिष्यों को भी दिखलाया गुरू ने आशीर्वाद दिया कि यह तुम्हारा ग्रन्थ सबों से आदर के योग्य होगा–सुरेश्वर ने कहा मैं आचार्य की पदवी पाने के लिये वार्त्तिक नहीं बनाया चाहता था न मुझे संसार में ख्याति पाने का लोभ था गुरू की आज्ञा का उलंघन न हो इस लिये मैं ने यह परिश्रम किया है–(शिष्यों से-) मेरे प्रति जो तुम्हे सन्देह था कि यह तत्वज्ञान में पूर्ण नहीं है इस लिये मैं शाप देता हूं कि तुम लोगों में किसी के बनाये वार्तिक संसार में प्रचार न पावेंगे–क्या बालक तरुण नहीं हो जाता तरुण पीछे वृद्ध नहीं होता बन्धन और मोक्ष में विरक्ति होना चाहिये गृहस्थ या भिक्षुक हो जाना कोई हेतु इस का नहीं है–सुरेश्वर को अनमन और उदासीन देख गुरू ने तैत्तिरीय बृहदारण्यक नृसिंहतापिनी पंचीकरणवार्तिक और अपने बनाये दक्षिणामूर्तिस्तोत्र पर वार्तिक रचने की आज्ञा दी–सनन्दन बने भी गुरू की आज्ञा पाय शारीरकभाष्य का टीका रचा जिस का पूर्व भाग पंचपादी के नाम से विख्यात हुआ जो उत्तरभाग का टीका बना वह वृत्ति के नाम से प्रसिद्ध हुआ–सुरेश्वराचार्य से गुरू ने कहा तुम दूसरे जन्म में वाचस्पति होकर मेरे भाष्य का टीका रचोगे वह सनन्दन के भाष्य की समता पाय सब देशों में पण्डितों के बीच आदरणीय होगा इसी तरह पर आनन्दगिरि आदि शिष्यों को भी पृथक् ग्रन्थ रचने की आज्ञा गुरू ने दी—

सहस्त्रों शिष्यों को साथ लिये सुधन्वा राजा पर सबों की रक्षा का भार रख और उसे भी अपने साथ ले श्रीशंकर दिग्विजय की इच्छा से सेतुबन्धरामेश्वर की ओर पधारे—शैव शाक्त चक्राङ्कित क्षपणक बौद्ध सौगत चार्वाक जैन कापालिक आदि अनेक मत के जो २ लोग आये सबों को वाद में परास्त करते और उन के बीच अद्वैत मत का स्थापन करते रामेश्वर पहुंचे तहां रामेश्वर

की पूजन आराधन के उपरान्त पांड्यचोल द्रविड़ आदि देश के लोगों को विजय कर कांची पहुंचे यहां शिवकांची का पृथक् निर्माण किया—विनीतभाव से आये हुये अन्ध्रदेश वालों को अपनाय वेंकटाचल को पधारे—वहां से विदर्भदेश में गये तहां भैरवतंत्र में प्रवीण लोग शास्त्रार्थ करने को आये उन को शंकर के शिष्यों ने बाद में निरस्त कर उन्हें अद्वैतमतावलम्बी कर दिया—वहां से कर्णाट देश में जाने की इच्छा करते हुये शंकर से विदर्भ देश के राजा ने विनयपूर्वक निवेदन कर कहा गुरो ! कर्णाटदेश कपालिकों से इतना पूर्ण है कि आप सरीखे महात्माओं के जाने योग्य नहीं है वे सब वेदमार्ग के बड़े द्वेषी हैं जाने से वे आप का अनिष्ट करेंगे—सुधन्वा तब बोला योगीराज ! धनुष बाण लिये मैं आप की सेवा करने को सब भांत सन्नद्ध हूं तब कापालिक पामर आप क्या कर सक्ते हैं—शंकर वहां से उन कापालिकों को शास्त्रार्थ में जीतने के लिये कर्णाट देश में पधारे इन को आया हुआ सुन कापालिकों का झुण्ड साथ लिये चिता की राख देह भर में पोते त्रिशूल और मनुष्य की खोपरी हाथ में लिये मदपान से लाल नेत्र क्रकच नाम का कापालिक बड़े अभिमानपूर्वक आकर इन से पूछा—भस्म तुम धारण किये हो सो तो उचित ही है किन्तु पवित्र शिरः कपाल त्याग मिट्टी का करवा हाथ में लिये क्यों डोलते फिरते हो—मनुष्य का सिर और रुधिर में मिला हुआ मद्य श्रीभैरवनाथ को चढ़ाय भक्ति श्रद्धा से उन का पूजन क्यों नहीं करते—इस तरह बकता हुआ क्रकच को धिक्कारते हुये सुधन्वा ने गुरू के पास से हटा दिया—तब यह मूर्ख क्रोध से भौं चढ़ाय त्रिशूल तान बोला जो मैं इस त्रिशूल से तुम सबों का सिर काट भैरव का पूजन न कर सका तो मैं क्रकच कैसा—अपनी सेना समेत सहसा आटूटा—इन कापालिकों की सेना में कितनों को सुधन्वा ने युद्ध में मार गिराया कितनों को शंकर ने हुंकार ध्वनि से यमपुरी का पाहुना कर दिया—इस तरह अपनी समग्र सेना का संहार देख झुंझलाया हुआ क्रकच शंकर के समीप आय बोला—ऐ मूढ ! तू मेरे प्रभाव को नहीं जानता देख मैं क्या करता हूं—यह कह मनुष्य की खोपड़ी मद्य से भर आधा पी आधा पृथ्वी पर धर नेत्र मूंद भैरों का ध्यान करने लगा—तत्क्षण मनुष्य के सिर का माला पहिने जलते हुये अंगारे के समान त्रिशूल हाथ में लिये अट्टहास ध्वनि करते भैरवनाथ प्रगट हो क्रकच ही का सिर त्रिशूल से काट शंकर को बहुत

सा आश्वासन दै अन्तर्ध्यान हो गये—इस तरह पर वामाचारी चार्वाक बौद्ध इत्यादि अनेक पाखण्ड मत वालों का सुधन्वा राजा के द्वारा संहार कराते पश्चिम समुद्र के तट पर द्वारिकापुरी में जा पधारे—यहां महेश नीलकण्ठ को परास्त कर अपना शिष्य बनाया और गुजरात देश भर में विजय पताका स्थापित किया—पञ्चरात्र के मत पर चलने वाले वैष्णव आये उन्हें भी जीत अद्वैतदीक्षा का अधिकारी किया—वहां से यात्रा कर उज्जैनी को गये तहां महाकाल का दर्शन और पूजन कर भट्टभास्कर के पास पद्मपाद को भेज कहलाया—या तो मेरे भाष्य को स्वीकर करो नहीं तो हम से शास्त्रार्थ करो—यह भास्कर भेदवादी था जीव और ब्रह्म में भेद इसका सिद्धान्त था और मण्डन के समान इसे भी अपने पाण्डित्य का बड़ा अभिमान था बाद में हार जाने पर उज्जैनी भर में इसकी चर्चा फैल गई और वहां के विद्वान् आय शंकर को सविनय प्रणाम कर इन की सर्वज्ञता सबों ने स्वीकार किया—उपरान्त जैनमतावलम्बी कई एक आये उन्हें भी बाद में इन्हों ने निरस्त किया—प्रभाकर न्यायभाष्य के वार्तिककार उदयन खण्डनखाद्य कर्ता श्रीहर्ष के पाण्डित्य का गर्व दूर कर उन्हें अपना अनुयायी बनाते कामरू देश में पहुंचे—तहां अभिनव गुप्त जिसने वेदान्तसूत्र के भाष्य का अर्थ शक्तिपरत्व किया था विना शास्त्रार्थ ही के लोक में अप्रतिष्ठा की डर से इन का शारीरकभाष्य स्वीकार कर इन का शिष्य हो गया—इसके उपरान्त कोशलदेश मिथिलादेश वङ्गदेश उड़ैसा आदि देशों में घूमते रहे और जहां गये वहीं इन की प्रतिष्ठा की गई—गौड़ देश में मुरारि मिश्र और धर्मगुप्त मिश्र को शास्त्रार्थ में जीत वहां अपना यश स्थापित किया इस तरह पर सब देशों में अपना यश स्थापन करने से समस्त हिन्दुस्तान में अद्वैत मत चक्रवर्त्ती राज्य के समान निष्कण्टक होगया—अनेक देशों में भ्रमण करने से जुदे २ देशों का जल वायु सेवन के विकार से शंकर को भगन्दर रोग होगया दूर २ देश के वैद्य आये किसी से रोग अच्छा न हो सका शंकर भी शरीर में ममता त्याग परलोक यात्रा के लिये सन्नद्ध हो गये थे—तब पद्मपाद प्रणवमन्त्र का जप गुरू की आयुष्य वृद्धि के संकल्प से करने लगे—शंकरदिग्विजय वाले ने लिखा है कि इन को भगन्दर रोग इसलिये हुआ कि अभिनवगुप्त जिसे इन्हों ने परास्त कियाथा वह तांत्रिक और शाक्त था उसी ने कोई ऐसा मारण प्रयोग किया कि इन्हें भगन्दर हो गया प्रणव के जप से शंकर अच्छे हो गये अभिनव गुप्त मर गया—रोग मुक्त होने पर गौड़पाद इन से मिलने को आये—ये गौड़पाद वही हैं जिन के शिष्य गोविन्दनाथ थे इसलिये गौड़पाद शंकर के दादा गुरू हुये शंकरने गौड़पाद की भक्ति

श्रद्धापूर्वक यथोचित पूजा कर अपना भाष्य जिसमें गौड़पाद की शारीरक सूत्रों पर कारिका का विषद अर्थ किया गया था तथा माण्डूक्य उपनिषद् का भाष्य और माण्डूक्य पर जो गौड़पाद की कारिका थी उसका भी भाष्य इन्हें दिखलाया—गौड़पाद यह सब देख बड़े प्रसन्न हुये और अनेक वरदानदे अपने स्थान को पधारे—उपरान्त यह काश्मीर को गये तहां शरदा नाम का मठ है जिसके चारों दिशा में चार फाटक लगे थे और वे फाटक सदा बन्द रहते थे जिस दिशा का मनुष्य सर्वज्ञ हो वही उस दिशा के फाटक को खोल भीतर जा सकता था—शंकर दक्षिण द्वार पर पहुंच भीतर जाने लगे तो अनेक विद्वान् हर एक विषय के आय उपस्थित हुये और इन्हे भीतर जाने से रोकने लगे उन सबों को बाद में हराय आप भीतर जाय मठ के मध्यभाग की वेदी पर सुशोभित हुये सबों ने जय ध्वनि के साथ इन की सर्वज्ञता स्वीकार कर लिया—इस तरह पर ३२ वर्ष की अवस्था तक अपने योगबल और अद्वितीय अनुपम पाण्डित्य से बौद्ध और जैनियों के हाथ से भारत का उद्धार कर कैलाश को सिधार गये—शंकर किस समय हुये इस पर जुदे २ लोगों का जुदा २ मत है पर विक्रमार्क के छठवें शताब्द के अन्त में और सातवें शताब्द के प्रारम्भ में इन की स्थिति संसार में अधिक प्रमाण के योग्य मालूम होती है—सिवाय शंकरदिग्विजय के कोई दूसरा जरिया हम को इन के जीवन के वृत्तान्त जानने का नहीं है दिग्विजय वाले ने जो कुछ लिखा है वह पुराणों का ढंग ले निरी कविता किया है और ग्रन्थकार माधवाचार्य को शास्त्र के प्रत्येक विषय में कहां तक गम्य था सो भी शंकर के जीवनचरित्र में उन्हों ने प्रगट किया है—जो हो! शंकराचार्य हिन्दुस्तान के एक अनुपम रत्न हुये हैं और क्षतिग्रस्त हिन्दूधर्म का बहुत कुछ उद्धार किया और ऐसे ढंग से किया कि सर्वसम्मत और सर्वमान्य हुये—अब इस समय ऐसे एक संशोधक की बहुत आवश्यकता है—स्वामी दयानन्द कुछ हुये थे किन्तु कई बातों में ऐसे चूके कि सर्वसम्मत न होसके—यद्यपि दिग्विजयकार ने अपने ग्रन्थ में कई ठौर चक्राङ्कितों से शंकर के शास्त्रार्थ की चर्चा की है किन्तु रामानुजाचार्य और पूर्णप्रज्ञदर्शन के प्रवर्तक मध्व दोनों इन के उपरान्त हुये हैं—जिस का खण्डन शंकर ने किया है वैष्णवों की उस चक्राङ्कितसंप्रदाय के प्रवर्तक बोधायन ऋषि और नारदपंचरात्र है उसी को रामानुज और मध्व ने पल्लवित किया है—दिग्विजय से आकर ग्रन्थ के पूर्ण पाण्डित्य को तो वही कह सकता है जो मीमांसा न्याय कणाद पातञ्जल वल्कि बौद्ध और जैनियों के सिद्धान्त से भी जानकार हो किन्तु शंकर के जीवनचरित्र में ऐतिहासिक भाग को संग्रह करने में मैंने कहीं से त्रुटि नहीं की—आशा है पढ़ने वालों को कुछ न कुछ इस से चित्तविनोद हो ही गा इति ॥

कुम्भमेला ।

इस बार का यह मेला और कुम्भों की अपेक्षा ढीला हुआ जैसी पहले से धूम धाम थी उस से बहुत कम मेला हुआ—नागे, खाकी, वैरागी, उदासी सब मिलाय फकीर अलबत्ता १५ हज़ार से कम न रहे होंगे—अच्छे विरक्त विद्वान् और तपस्वी भी उन में सौ सवा से के लगभग देखने में आये बाकी तो वही लड्डू और मालपुआ छकने वाले इकट्ठे थे—लोग नाहक कहते हैं कि नई रोशनी ऐसी छा गई है कि धर्म कर्म उठा जाता है मैं तो समझता हूं धर्मधुरीण धर्म-ध्वजियों का इन फकीरों के भण्डारे में जितना उठा होगा समझ को दखल दे यदि वह रुपया उठाया जाता तो न जानिये कितना देश की भलाई का काम उस से होता सारांश यह है कि इस मेले में गुलछर्रे दोही के रहे एक फकीरों को दूसरे रेल वालों को और रेल के मुलाज़िमों को ॥

अफीमकमिशन ॥

बनारस के अफीम कमीशन में प्रयाग के पण्डित शिवराम पांडे, वैद्य की गवाही—जिस्के पढ़ने से अच्छी तरह मालूम हो जायगा कि यह अफीम कमिशन क्या है और इस्के होने से हम लोगों को क्या हानि या लाभ होने की संभावना होसक्ती है ।

प्रश्न—अफीम का प्रचार किस हद्द तक और इस्के नतीजे के बारे में पहिला प्रश्न यह है कि तुम को किस जाति के लोगों में या फिरकों में इस्का तजरिबा है—

उ०—ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र तथा उन से भी नीच जाति के हिन्दुओं में—अमीर या गरीब सब किस्म के मुसल्मानों में—हिन्दुस्तानी इसाई—कुछ अंगरेज़—साधू—फकीर—मज़दूरे इत्यादि—

प्र०—कै वर्ष का तजरिबा है ?

उ०—१५ वर्ष का ।

प्र०—अफीम के गुण दोष देखने के तुम को कौन २ खास मौके मिले हैं ?

उ०—महक्मे के लोगों में—मुलाकातियों में बहुत से इस्के आदी हैं—अपने पेशे के तजरिबे से मुझ को अफीम के गुण दोष देखने का बहुत मौका मिला है—सिवाय इस्के नशे की चीज़ों के असर को जानने की मैंने खास तौर पर कोशिश की है—

प्र०—किस हद्द तक उन्में अफीम का खाना जारी है—

उ०—१०० में ७५ मुसल्मान ३० कसबियां ८० फकीर और बदचलन १ अंगरेज़ क्लोरोडइन और मर्फिया के आकार में—

प्र०—अफीम खाने का अभ्यास लोग बहुधा किस उमर से करने लगते हैं—

उ०—सुस्त और बदचलन १८ से २८ वर्ष के बीच में—दूसरे लोग किसी रोग के कारण अफीम खाने वालों की सलाह से ४५ से ६० के बीच में—

प्र०—किन २ कारणों से लोग इस्का अभ्यास डाल लेते हैं—

उ०—नौजवान प्रायः अफीम इस लिये खाने लगते हैं कि स्त्री का साथ करने में स्तंभन शक्ति बढ़े—सुस्त या बदचलन बिना किसी खास मतलब के इस्का अभ्यास डाल लेते हैं—

प्र०—अफीम खाने की आदत सहज में मिट सक्ती है या नहीं ? मिटती है तो एकबारगी या धीरे २।

उ०—यह आदत सहज में नहीं मिट सक्ती और एक बारगी तो किसी तरह नहीं छुट सक्ती नित्य खाने वालों को समय पर इस्की मामूली खोराक न मिले तो वैसा ही तकलीफ होती है जितनी बिच्छू के डंक मारने से होती है—

प्र०—उचित मात्रा से अधिक खाने वालों में कुछ अन्तर रहता है और है तो उन की तादात किस कदर सैकड़ा पीछे है—

उ०—१०० में ७५ ऐसे हैं जो उचित मात्रा से अधिक खाते हैं—

प्र०—जिन को अफीम खाने की आदत है उन के आमदनी का कितना हिस्सा इस्में खर्च होता है—

उ०—धनवानों के पास अधिक धन होने से नहीं मालूम होता किन्तु कम-हैसियत वाले छोटे दरजे के मज़दूर इत्यादि का कुल आमदनी के आधा के लगभग अफीम में उठ जाता है—

प्र०—शरीर पर, दिमाग पर और चालचलन पर अफीम का क्या असर होता है—

उ०—अफीम खाने वालों को धातुक्षीण हो नामर्दी आ जाती है—पहले यह काम को बढ़ाती है किन्तु पीछे से उस्का जोश कम कर देती है—अफीम खाने वालों को मिठाई पर रुचि बढ़ जाती है प्यास बहुत लगती है—भूख को घटा देती है—मेदा खुश्क हो जाता है अन्त को पेचिश और दस्त की बीमारी अफीमची के लिये सहज ही में हो जाती है और बीमारी उस्की मुशकिल से दूर होती है—

अफीमची बहुधा इन्हीं बीमारियों में मरते हैं कब्ज़ होजाता है तब बवासीर का रोग पैदा हो जाता है—अफीमचियों को तमाखू पीने की बहुत खाहिश होती है यहां तक कि बहुत से लोग अपना हुक्का पाखाने में भी लिये जाते हैं—अफीमची को पिछली रात में नींद आती है—अफीम नींद नहीं आने देती खून खराब कर देती है—शरीर काला पड़ जाता है चेहरे पर सियाही ज़ाहिर होने लगती है—पसीना बहुत निकलता है पेशाब कम होती है अफीमची को कामोत्तेजना पहले बढ़ती है पर पीछे से घट जाती है—थोड़ी अफीम खाने से स्त्रियों का मासिकधर्म बढ़ता है पर अधिक मात्रा के बढ़ जाने से मासिकधर्म रुक जाता है इस की आदत पड़ जाने से स्त्रियां बांझ हो जाती हैं—गर्भवती को अफीम खिलाने से गर्भ का बालक बहुधा मर जाता है नहीं तो कुछ न कुछ नुकसान तो गर्भ को अवश्य पहुंचता है—जवान और बूढ़ों की अपेक्षा लड़कों को यह बहुत नुकसान पहुंचाती है—उन को बाढ़ मारी जाती है दिमाग की कूबत घटाती है कभी को बिलकुल कमज़ोर कर देती है—अफीम खाने वाले अकसर दुबले और पीले पड़ जाते हैं उन की पलकें सदा झुकी रहती हैं हरवक्त पीनक में मालूम होते हैं उन को दिमागी कूबत औसत से बहुत कम होती है—आदमियों के चाल चलन पर यह बहुत बुरा असर पैदा करती है—डरपोक होजाते हैं अपने बस में नहीं रहते अफीम मिलने के लिये बुरे से बुरा काम कर डालते हैं।

प्र०—अफीम ज्वर के लिये कुछ लाभकारक है ?

उ०—अफीमची ऐसा समझते हैं पर सब लोग नहीं—बल्कि अफीमची को बुखार आता है तो कठिन में छूटता है।

प्र०—उन ज़िलों में जहां जल वायु के खराब होने से मेलीरिया ज्वर फैलता है उस को खास कर यह गुणदायी है।

उ०—यद्यपि अफीमची इसे सब प्रकार के रोगों से बचाने वाली समझते हैं किन्तु उन ज़िलों में जहां जूड़ी इत्यादि मेलेरिया ज्वर फैलता है अफीम से कोई लाभ नहीं होता।

प्र०—अफीम कारीगर या मज़दूरों को उन के काम में लगाने को क्या ज़रूरी चीज़ है ?

उ०—सिर्फ अफीमची ऐसा खयाल करते हैं किन्तु वास्तव में यह हर एक अंग को शिथिल कर देती है और उन्हे सुस्त बना देती है।

प्र०—क्या अफीम के अभ्यास को लोग बुरा समझते हैं।

उ०—हां यहां तक कि अफीमची भी नहीं पसन्द करते कि उन्हे अफीमची या चंडूबाज़ के नाम से कोई पुकारे।

प्र०—अफीम बेचने के लिये लइसेन्स का तरीका जैसा इन दिनों राइज है अफीम खोरी की आदत को बढ़ाता है या कम करता है।

उ०—तरीका राइज अफीम खोरी की आदत को बढ़ाता है।

प्र०—अफीम की बिक्री बिल्कुल रोक देना चाहिये या दवाके ढंग पर रखना चाहिये।

उ०—दवा के ढंग पर इस की बिक्री रहे न सिर्फ अफीम ही वरन नशे की जितनी चीज़ें सब दवा के ढंग पर बेची जांय—अकेली अफीम की सुमानियत से लोग अलकहल के इस्तेमाल पर आमादा हो जांयगे जो इस देश के लिये अधिक हानिकारक है।

प्र०—अफीम का दवा के ढंग पर विकना सब लोग पसन्द करेंगे।

उ०—हां।

प्र०—अफीम उठा देने से सरकारी आमदनी में घाटा पूरा करने का सब से उमदा तरीका क्या होगा।

उ०—कपड़े और दूसरी आराम की चीज़ें जो बाहर से यहां आती हैं उन पर महसूल लगाया जाय—तमाखू पर टिकस लगे—फौज के खर्च में कमी की जाय विलायत के खर्च में कमी की जाय—फौजी और मुल्की बड़े २ ओहदों पर जिस पर अब तक सिर्फ अंगरेज़ होते हैं हिन्दुस्तानी किये जांय—जो काम गवर्नमेंट का अंगरेज़ों को लम्बी २ तनखाहों से होता है वह हिन्दुस्तानियों को मुकर्रर करने से थोड़े खर्च में हो जायगा—सरहद्द के मामिलों में इंगलैण्ड और हिन्दुस्तान दोनों से खर्च लिया जाय क्योंकि सरहद्द के झगड़ों में ग्रेटब्रिटेन की भी इज्ज़त और बड़ाई शामिल है—विलाइत वालों को बट्टे का खरचा जो अभी मंजूर किया गया है मंसूख किया जाय।

प्र०—अफीम के बारे में यह कानून मुनासिब होगा कि उन लोगों के लिये कोई खास इन्तिज़ाम किया जाय जिन को इस की आदत पड़ गई है क्या उन के लिये एक रजिस्टर तैयार होना मुनासिब जिस में अफीम खाने वालों का ज़िक्र हो।

उ०—हां जैसा बरमा में किया गया है।

प्र०—अफीम को दवा के तौर पर बेचने के लिये सब से उमदा तरीका क्या होगा ?

उ०—तमाम वैद्य और हकीमों के नाम दर्ज रजिस्टर किये जांय और उन का नाम और पता हर एक अफीम बेचने वालों के पास भेज दिया जाय कि वे केवल उन्हीं के हाथ बेंचें जो उन वैद्य या हकीमों का सार्टिफिकेट रखते हों।

प्र०—चूस का बेचना किस के सिपुर्द किया जाय।

उ०—वही तरीका अमल में लाया जाय जो संखिया या दूसरे ज़हरों के बेचने के लिये है।

प्र०—क्या बहुधा खिलाफ़ कानूनी भी अफीम मंगाई जाती है।

उ०—चुरा के बेचना किसी कदर जारी है।

प्र०—इसको चुरा कर लाने का क्या तरीका है—

उ०—जिस तरह से चुरा कर ला सक्ते हैं लाते हैं कभी २ अफीम को हींग से चुपर लेते हैं जिस्में इसकी बू छिप जाय॥

प्र०—अफीम का खिलाफ कानून मंगवाना कैसे बन्द होसक्ता है—

उ०—पुलिस की चौकसी से—

प्र०—तुम को अफीम की काश्तकारी का तजरिबा किन २ ज़िलों का है—

उ०—सिर्फ इलाहाबाद का—

प्र०—अफीम बोना खेतिहरों को क्यों पसन्द है—

उ०—गवर्नमेंट खेतिहरों को पेशगी बिना सूद रुपया देती है—जिस्से बिया बोआई सिचाई इत्यादि खर्च के लिये उन्हें सुभीता पड़ता है—पैदा होने के बाद गवर्नमेंट तमाम अफीम और पोस्ता के फूल की रोटी खेतिहरों से मोल लेलेती है—अफीम पांच रुपये सेर के हिसाब से और पोस्ते की रोटी तीन या चार आने सेर के हिसाब से—इस तरह खेतिहर मालगुज़ारी आसानी से अदा कर सक्ते हैं और सूदखोर महाजनों के पंजे में नहीं फंसते—इस्में सन्देह नहीं अफीम की काश्तकारी बन्द होने से खेतिहरों को बड़ा नुकसान पहुंचावेगी पर यह उन का घाटा "अग्रिकलचरल" अर्थात् खेती का बैंक खोल देने से सर्कार सहज में पूरा कर दे सक्ती है जिस बंक से खेतिहरों को उन के काम के लिये रुपया पेशगी मिला करे—

प्र०– क्या गवर्नमेंट के अफसर जिले के हाकिम खेतिहरों पर इस्के बोने के लिये किसी तरह का दबाव छोड़ते हैं–

उ०–वह आसानियां जिन का चरचा पहिले हो चुका है खेतिहरों को पोस्त की काश्तकारी के लिये काफ़ी है–

प्र०–जिस खेत में पोस्ता बोया जाता है उसी में उसी साल कोई दूसरे किस्म की खेती हो सक्ती है–

उ०–नहीं–

प्र०–इस्की पैदावरी का कुछ हिस्सा खेतिहर अपने वास्ते चोरी से बेचने को या अपने निज के इस्तेमाल के लिये क्या रख छोड़ते हैं—

उ०–बड़ी जात वाले इस्का कोई हिस्सा नहीं रख छोड़ते छोटी कौम के लोग शायद ऐसा करते हों–

प्र०–चोरी से अफीम बेचने की वजह क्या है इस्से क्या २ नुकसान हैं–

उ०–अफीम जो बाज़ार में विकती है निखालिस नहीं होती–कंकर कत्था कभी २ कुचिला उस्में मिला रहता है–कलट्टरी में जो अफीम विकती है खालिस होती है–उस्में पोस्त के फूल और पत्तियां अलबत्ता मिली रहती हैं—जो अफीम चोरी से विकती है बिल्कुल खालिस होती है—अफीम आत्मघात करने वालों को बहुत आसानी पहुंचाती है यह उन के दिलों को मज़बूत करती है जो किसी तरह का बुरा काम किया चाहते हैं—अफीम से लुटेरे लोगों को बेहोश कर उन का माल असबाब लूटलेते हैं–इस्का बुरा असर आइन्दा औलाद पर भी होता है–दूसरी चीज़ों में मिलाय कर भी अफीम खाने वाली स्त्रियां १० में ८ बांझ होती हैं–ऐयाश लोग इसे ऐयाशी के लिये भी खाते हैं–

प्र० —दवा में इस्का प्रयोग करने के सिवाय कोई दूसरा तरीका भी इस्के उठाने के लिये उमदा हो सक्ता है–

उ०–केवल यही एक ऐसा तरीका है जिस्का असर कुछ दिन रह सक्ता है अर्थात् अफीम केवल दवा के लिये बेची जाया करे इस्से बढ़ कर इस्के रोकने का कोई दूसरा तरीका नहीं हो सक्ता–

प्र०–आप की राय शराब के बारे में क्या है–

उ०–शराब अफीम से बहुत अधिक हानिकारक है किन्तु शराब की बुराइयां अफीम की बुराइयों से जुदी २ तरह की हैं–

प्र०—क्या अफीम को आप मज़हबी और सामाजिक वजहों से बुरा समझते हैं ?।

उ०—हां धर्म और समाजशिक्षा के अनुसार अफीम बुराइयां पैदा करने वाली है सही—पर मैंने अपनी राय केवल वैद्यक के अनुसार दी है।

प्र०—क्या केवल अफीम ही ऐसी वस्तु है जिसे नौजवान लोग कामोद्दीपन के लिये प्रयोग करते हैं।

उ०—१०० में ९९ नौजवान इसीलिये अफीम खाते हैं कि यह न केवल कामोद्दीपक है वरन स्तम्भन के लिये एक ही ओषधी है।

एडिटर—हिन्दी—प्र०—माना कि अफीम में सब ऐगुण ही हैं किन्तु शराब उठाने के बाद यह उठाई जाय तो उचित है नहीं तो अफीम कमिशन का यह सब आन्दोलन व्यर्थ की टांय २ है—दूसरे यह कि गवर्नमेंट ६ करोड़ रुपये साल का नुकसान अफीम उठा देने से काहे को कभी बरदाश्त कर सकेगी—किसी दूसरेढंग से वसूल करे ही गी वह हम लोगों को बहुत अखर आवेगा—।

इसे शिक्षाविभाग कहें या—
प्रजा के धन निचोड़ने की कल।

हम बार २ चिल्लाते ही रहे कि शिक्षाविभाग में बालकों के पढ़ाने में जो हम लोगों का बेहद्द खर्च पड़ता है उसे गवर्नमेंन्ट हम लोगों पर दयादृष्टि रख कम कर दे—वहां घाव पर घाव के समान तालीम का खर्चा बढ़ता ही जाता है और यह खर्चा यहां इलाहाबाद के ज़िला स्कूल में ओर छोर को पहुंच रहा है—शायद यह मनमानी पश्चिमोत्तर भर के किसी स्कूल में न होगी—डेढ़ रुपये से अधिक माहवारी स्कूलिङ्ग फीस किसी स्कूल में नहीं है यहां साढ़े तीन रुपया माहवारी फीस इनट्रेन्स क्लास में है पंखा और क्रिकेट का भी दो आना मिला देने से ३॥=) हुआ जो साधारण गृहस्थ कम आमदनी वाले के लिये बहुत कठिन हो रहा है—अस्तु इस तरह की गीत हम कई बार गा चुके, अब जो विद्यमान संकट आ पड़ा है जिसे हम घाव पर घाव कहेंगे वह यह है कि इन्ट्रेन्स और मिडिल में पढ़ने वालों से कुल सेशन अर्थात् जून तक की फीस वसूल कर तब हेडमास्टर साहब इम्तिहान के लिये भेजते हैं—म्योर सेन्ट्रलकालेज में भी केवल एप्रिल तक की फीस ली जाती है दो तीन साल पहले बाबू रामरूप के समय

तक यहां के ज़िलास्कूल में भी यही चलन था—उचित भी यही है कि अपरैल में जब विद्यार्थी ने इमतिहान दे दिया तो स्कूल से उस का फिर कोई सम्बन्ध न रहा पास हो गया तब स्कूल से उस का सरोकार ही क्या रहा इमतिहान में दूर न आया तो फिर से नाम लिखवा लेगा टैक्स के रूप में दोमहीने की ज़ियादह फीस क्यों लीजाती है—कौन न कहेगा यह सरासरबेजां है—इलाहाबाद का ज़िला स्कूल नहीं है «मनीस्क्वीज़िंग मेशीन» रुपया निचोड़ने की कल है—हम नहीं समझते गवर्नमेंटस्कूल के हेडमास्टर क्यों इस तरह पर स्वच्छन्द और खुद मुखतार कर दिये गये हैं और इस कदर रुपया निचोड़ने की क्यों उन्हे इजाज़त दे दीगई है—कालिजों में फीस हद्द से ज़ियादह कर देने से इनट्रेन्स के बाद लड़कों की तालीम कायम रख उन्हे उत्तम शिक्षा देने से निरास हो साधारण शिक्षा भी अब क्या हम अपने बालकों को न दे सकैं—यदि यह कहा जाय कि और स्कूल भी तो हैं औसत दरजे वाले उन स्कूलों में अपने लड़कों को पढ़ाया करैं—मसल है खरबूज़े को देख खरबूजा रंग पकड़ता है गवर्नमेंटस्कूल शिक्षाविभाग में सब से अधिक माननीय और प्रतिष्ठित समझा गया है जब उस ने यह क्रम निकाला तो छोटे २ एडेड और ग्रैन्ट वाले स्कूलों में भी ऐसा हुआ ही चाहे—पहले स्कूलों में यही क्रम था कि जिस महीने में रुपया इमतिहान के लिये जमा होता था उस महीने तक की फीस ले ली जाती थी उचित भी यही मालूम होता है—नेसफील्डसाहब भी इस पर कुछ खयाल नहीं करते सो क्यों—क्या सर्वथा यही मंजूर है कि हम लोग मूर्ख रहैं तालीम का खर्चा नित २ बढ़ता ही जाता है तो अन्त में इस का परिणाम और क्या होसक्ता है ।

सहायार्थदान ।

हम बांकीपूरनिवासी राजकुमार बाबू रामदीनसिंह को अनेक धन्यवाद देते हैं जिन्हों ने हमारे पत्र की सहायता के लिये १०) रु० हमे दान दिया—यह दान बिना कुशोदक के किया जाता है इस में देश और काल का कुछ खयाल नहीं किया जाता केवल पात्र को विवेकपूर्वक दिया जाता है अन्धपरंपरा वाले दान से कहां बढ़ कर है—जिस के अक्षय और अनन्त पुण्य की गीत हम कहां तक गावैं देश का उद्धार इसी तरह के दान से है अफसोस कि ऐसे दानी हमारे देश में अब तक बहुत कम उपजे हैं—अस्तु उक्त दानी का हम बार २ गुन गाते हैं और असंख्य धन्यवाद देते हैं ।

देवताओं से हमारी बातचीत ॥

आज अर्द्धोदय महोदय महापर्व है बड़े से बड़ा कुम्भ आ उपस्थित हुआ है काश्मीर से कन्याकुमारी तक और कलकत्ता से पेशावर तक के लोग इस माघ मेले में आये हैं न जानिये कहां कहां के सन्त, महन्त, साधु, विरक्त, खाकी, बैरागी, नागे, निर्मले स्वर्गद्वार की सीधी रास्ता देखलाने को यहां प्रयाग में आये हुये हैं—आज श्रीगंगा जी में गोता लगाते ही बैकुण्ठ अवश्य मिलेगा—इन्हीं सब बातों को सोच विचार न जानिये कहां की शामत सवार हुई कि मुझे भी गंगा स्नान की श्रद्धा चर्राई—कुछ तो शामत कुछ मैंने यह भी सोचा कि आज के दिन थोड़ा सा क्लेश उठाने ही मात्र से जो जनसमाज में मैं भी श्रेष्ठ हिन्दू समझा जा सक्ता हूं और नास्तिक तथा क्रिस्तान कहलाने से बचता हूं तो क्यों न इस थोड़े से क्लेश को गवांरा करूं—भीतर मेरे चाहो जो हो पर कुटिल कपटी ज़ाहिरदारों में आदर पाने लायक रहूंगा—यही सब सोच समझ चार बजे के तड़के ही घर से चल निकला उधर शीत भी वह सुरखी पकड़े हुई थी कि पगर में छट्ठी का दूध याद आता था बूट और मोज़ा कसे हुये था पर तोभी कदम २ पर यही बोध होता था मानो केदारनाथ के हैंवार में गलने को जा रहा हूं सरांटे की हवा कान को बेधे डालती थी कलेजा कांपता था—खैर ज्यों त्यों कर गंगातट पर पहुंचे उधर सूर्य नारायण का आधा बिम्ब सान पर चढ़े शुद्ध मानिक समान रक्त या यों कहिये रेल की इञ्जिन के आगे वाली लालटेन के मा फिक अपनी किरिन की बढ़नी से रात के अन्धकार से मैले आसमान को बटोरता पृथ्वी के नीचे से निकलता हुआ देख पड़ा—मुझे माघ माहात्म्य का यह श्लोक याद आया—

माघे मासि रटन्त्यापः किञ्चिदभ्युदितेरवौ ।
ब्रह्मघ्नं वा सुरापं वा कम्पतन्तं पुनीमहे ॥

मैंने सोचा तब यही तो समय पुण्य लूटने का है चट कपड़ा उतार गंगा के ठिठिरते पानी में कूद पड़ा कूदने के पहिले तक की तो मुझे बाखूबी होश है उपरान्त मैं फिर नहीं जानता कि मुझे क्या हुआ और मैं कहां हूं—मैं नहीं समझता इसे बेहोशी कहूं या स्वप्न कहूं या उसी तरह की एक "विज़न" कहूं जैसा मूसा को सीनियाई पहाड़ पर हुई थी—अस्तु मुझे ऐसा मालूम हुआ कि पृथ्वी से

आकाश गोलक तक बे ओर छोर लम्बी लाखों किरोड़ों हड्डे की एक सीढ़ी लगी हुई है जिस पर से लाखों किरोड़ों देवयोनि कोई श्यामवरण चतुर्भुज आकंठलम्बिनी वनमाला और पीतपट पहने किरीट मुकुट धरे कोई कर्पूर पूरोज्वल शरीर सर्वाङ्गभस्मोद्भूलित त्रिनेत्र अक्ष और स्फटिक की मालाकण्ठ से पांव तक धारण किये सिर पर जटा और भालपट्ट में चन्द्रमा से सुशोभित था—कोई ऊपर से उतरते हुये कोई नीचे से ऊपर को चढ़ते हुये देख पड़े—उन्हीं में के कई एक मेरी ओर झुक पड़े और ज्योंहीं मेरा हाथ पकड़ना चाहा त्योंहीं हाथ का इशारा कर मैं बोला ठहरो ठहरो आप मुझे कहां ले जाइयेगा वहां पहुंच मुझे कहां जाना पड़ेगा कैसे रहना होगा वहां की रहन सहन नशिस्त बरखास्त का क्या कायदा है कैसे लोग मेरे साथी और पासी परोसी होंगे—क्या वहां रेल नहीं है कि उसी पर बैठाय आप चट मुझे वहां पहुंचा दें इस सैकड़ों कोस की लम्बी सीढ़ी चढते २ तो मैं थक जाऊंगा पांव दूखने लगेंगे—सनातनधर्म और आर्यसमाज का झगड़ा सुनते २ मेरा कान फूट गया क्या वहां भी तो मुझे यही न सुनना पड़ेगा—बेशरमी और बेहयाई के खान ये नागे क्या ऐसा ही वहां भी मेरे नेत्रों को क्लेश पहुंचावेंगे और जी कुढावेंगे—और मुझे याद नहीं मैंने क्या २ बातें उन से पूछीं—वे देवयोनि मेरी यह बात सुन अचरज में आये और आपस में कहने लगे मनुष्य कीट में यह कोई अद्भुत पुरुष देख पड़ा—जिस स्वर्ग के लिये लोग ललचाते हैं कठिन तपस्या अनेक नियम व्रत दान तीर्थ करते हैं वहां जाने से यह आगा पीछा कर रहा है—उन में से एक जो उन की फौज का अध्यक्ष था बोला नहीं २ ये सब बातें तुम वहां एक भी न पावोगे तुम कहो तो पहले मैं उन्हीं का दृश्य दिखला कर तब मैं तुम्हें उस विमलस्थान में लेचलूं जहां लेजाने के लिये मैं नियत किया गया हूं—तुम समझते हो इसी तरह की सीढ़ी उन कुमार्गियों के लिये भी तैयार की गई हैं जो विवेक को मन में बिना स्थान दिये अन्ध परंपरा के सूत्र के भरोसे गंगा में केवल चूतर बोर लेने ही से स्वर्ग का सीधा मार्ग समझते हैं—इतने में सूर्यदेव की गरम २ किरनें मेरे अंग प्रत्यङ्ग में शीत में डूबे मरणासन्न को चन्द्रोदय के समान बेधने लगीं गङ्गा के ठिठरते पानी का असर जाता रहा होश आया देखा तो न वह लम्बी सीढी है न वे देवदूत हैं भेड़ियाधसन का हुल्लड़ अलबत्ता चारो ओर मच रहा है—मनः पूतं समाचरेत्" "शुचिर्मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्" इत्यादि वाक्यों के गम्भीर अर्थ को सोचता हुआ मैंने भी अपने घर की राह ली—

गुर्जरभाषा प्रबोधिनी ॥

फर्रुखाबाद निवासी पं०—कन्हैयालाल शर्मा सहस्रावदीच्यकृत—हिन्दी अक्षरों में गुजराती भाषा के शब्द और उन के अर्थ तथा गुर्जरभाषा के मुहाविरे बड़ी उमदी रीति पर लिखे गये हैं साथ ही एक छोटा सा रूपक भी इस्में सम्मिलित है—गुजराती सीखने वालों के लिये यह पुस्तक बहुत अच्छा है मूल्य ।) धार्मिकयन्त्रालय प्रयाग में यह पुस्तक मुद्रित हुई है—

चित्रांगदा ॥

नाट्यकाव्यनामक शहमरनिवासी बाबू—गोपालरामकृत यह एक नये ढंग का लेख है ग्रन्थकार ने इस्में कौनसी अनोखी बात और क्या लालित्य सोंच परिश्रम किया है मेरी समझ में कुछ नहीं आता—

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरितन प्रगट है आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० १७ सं० ३-४ } प्रयाग { नवंबर, दिसंबर १८९३

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०००— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्दमैपोस्टेज १=)

हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १७ संख्या ३–४ } प्रयाग { नवंबर दिसंबर सन् १८९३ ई०

आत्मनिर्भर ॥

आत्मनिर्भर "अपने भरो से पर रहना" ऐसा श्रेष्ठ गुण है जिस्के न होने से पुरुष में पौरुषेयत्व का अभाव कहना अनुचित नहीं मालूम होता––जिन को अपने भरोसे का बल है वे जहां होंगे वहां जल में तूंबी के समान सब के ऊपर रहैंगे–ऐसों ही के चरित्र पर लक्ष कर महाकवि भारवि ने कहा है–"लघयन्खलु तेजसा जगन्न महानिच्छति भूतिमन्यतः" तेज और प्रताप से संसार भर को अपने नीचे करते ऊंची उमङ्ग वाले दूसरे के द्वारा अपना वैभव नहीं बढ़ाना चाहते– शारीरिक बल; चतुरङ्गिणी सेना का बल, प्रभुता का बल, ऊंचे कुल में पैदा होने का बल, मित्रता का बल, मन्त्र तन्त्र का बल, इत्यादि जितने बल हैं निज बाहु बल के आगे सब क्षीण बल हैं वरन आत्मनिर्भर की बुनियाद यह बाहुबल सब तरह के बल को सहारा देने वाला और उभाड़ने वाला बल है–यूरोप के देशों की जो इतनी उन्नति है अमरिका वाले जो इस समय मनुष्यजाति के सिरताज हैं उस्का यही बायस है कि उन २ देशों में लोग अपने भरोसे पर रहना या कोई काम करना अच्छी तरह जानते हैं–हिन्दुस्तान का जो सत्यानाश है इस्का यही कारण है कि यहां के लोग अपने भरोसे पर रहना भूल ही गये हैं–इसी से सेबकाई करना यहां के लोगों से जैसी खूबसूरती से बन पड़ता है वैसा स्वामित्व नहीं–अपने भरोसे पर रहना जब हमारी खमीर नहीं है तब क्योंकर संभव है कि हमारे में प्रभुत्वशक्ति को अवकाश मिले–मातहत तहसीलदार और डिपटीकलट्टर जिले भर का इन्तिज़ाम कर डालते हैं फिर भी कलट्टरों को गवर्नमेण्ट इतनी ऊंची तनख़ाह जो देती है वह उसी प्रभुत्वशक्ति के लिये जिस्में हम अभी तक पीछे हटे हैं–अंगरेज़ों में इन्तिज़ाम की अकिल ज़ियादह है हिन्दुस्तानियों से

नहीं इस्का कारण यही आत्मनिर्भर है—समाज में ऐसे २ कुसंस्कार और निन्दित रीतें चल पड़ी हैं कि आत्मनिर्भर पास नहीं फटकने पाता—बहुत तरह के समाज बन्धन खान पान आदि भांत २ की कैद जो हमारे पीछे लगा दी गई हैं उस सब का यही तो परिणाम हुआ कि आज़ादगी जिस्पर आत्मनिर्भर या किसी दूसरे पौरुषेयगुण की लम्बी चौड़ी इमारत खड़ी हो सक्ती है शुरू ही से न आने पाई—जब कि यूरोप के भिन्न २ देशों में बाप मा अपने लड़कों को तालीम देने के साथ ही साथ अपने भरोसे पर जिन्दगी की कश्ती को किस तरह पर खे ले जाना चाहिये लड़कपन से सिखाते हैं यहां दूधमुहे बालक बालिकाओं का व्याह कर अपने से अपना भरण पोषण तथा अन्य समस्त पौरुषेयगुण की जड़ पर कुल्हाड़ा चलाने का प्रयत्न किया जाता है—वहां के लोग अपने भरोसे पर अपनी जिन्दगी पार करना न सीखें तो करें क्या क्योंकि इंगलेंड आदि देशों में कानून के मुताबिक सिवाय जेठे लड़के के एक बाप के कई लड़के बराबर से पिता के धन के रिक्थभागी नहीं होते-दूसरे यह कि पिता वहां पुत्र के लिये केवल इतना ही करता है कि शक्ति भर उत्तम से उत्तम शिक्षा दे उसे तैयार कर दे जिस्में वह अपने आप अपना निर्वाह कर ले—वहां के बाप मा हम लोगों के बाप मा की तरह अपने पुत्र के मित्र मुख शत्रु नहीं हैं कि बिना सोचे समझे लड़कपन से चक्की का पाट गले में बांध उस बेचारे को सब तरह पर हीन दीन और लाचार कर डालें और आप भी चिता पर पहुंचने तक लड़कों की फिकिर से सुचित्त न रहें—इतिहासों से पूरा पता लगता है कि जब से यहां ब्रह्मचर्य की प्रथा उठा दीगई पूर्ण वेदवेदाङ्ग में विद्वान् हो बिना समावर्तन के दूधमुहों का व्याह जब से जारी करदिया गया तब से आज तक बराबर हमारी घटती ही होती जाती है—हम तो यही कहेंगे फिर भी जैसा इन से पाप बन पड़ता है उस्के मुकाबिले इन्हें कुछ भी दण्ड नहीं मिला दस या बारह वर्ष की कन्याओं का विवाह महापाप की इतनी सज़ा मिली तो कुछ न हुआ इन पापियों का देश से उच्छेद भगवान् क्यों नहीं कर देता—अन्न वस्त्र का क्लेश जैसा वर्तमान समय में इन पर बीत रहा है केवल इतने ही से हमारे कुढ़े कलेजे को सन्तोष नहीं होता—अस्तु हमारे में आत्मनिर्भर न होने का बाल्यविवाह प्रथम कारण है—इसी का यह फल है कि हम नया कुआं खोद नया पानी पीना जानते ही नहीं जो कापुरुषों का लक्षण है "तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षारं जलं कापुरुषाः

पिबन्ति"—हमारे देश में कुल आबादी के दस हिस्से में आठ हिस्सा ऐसा है कि लोग केवल बाप दादों की कमाई या परम्परा प्राप्त जीविका अथवा वृत्ति से निर्वाह करते हैं—सौ में एक ऐसे निलेंगे जो अपने निज बाहुबल और पुरुषार्थ के भरोसे हैं सो भी उनके सब पुरुषार्थ, करतूत या सपूती का निचोड़ केवल इतना ही है जैसा किसी कवि ने कहा है "अन्नपानजितादारा सफलं तस्य जीवनम्"—सफल जीवन उसी का है जिसने अन्न वस्त्र से अपने लड़के और स्त्री को प्रसन्न रक्खा—अर्थात् इतना जिसने किया वह पक्का सपूत और महापुरुषार्थी है—

जब कि और २ देश वाले इसी आत्मनिर्भर पर ज़ोर दे हमारे समान लड़कपन से गृहस्थी का जुआ कन्धे पर न रख कर एक छोर से दूसरे तक समग्र पृथ्वी खूंद आते हैं और ऐसे २ पुरुषार्थ के काम कर दिखाते हैं जिस्का फाइदा दूसरे २ देश के लोग उठाते हैं मनुष्य जीवन को सफल मानते हैं—हम लोग स्वच्छन्दता न पाय गृहस्थी के बोझ से पिस बहुत कर सके स्त्री पुत्र का भरण पोषण करने लायक हुये मानो पुरुषार्थ और सपूती की सीमा तक पहुंच गये—सो ऐसे भी हमारे बीच कहीं दस में एक हैं नहीं तो आत्मनिर्भर को स्थान न मिलने के पूर्व ही बाल्यविवाह कुसंस्कार हिन्दू जातिमात्र को ऐसा अश्लील कमकदर अकर्मण्य और जघन्य कर रहा है कि याद कर रोंघटे खड़े होते हैं—हम कहते हैं भाग के मन्द काम के मन्द बुद्धि के मन्द कच्चे वीर्य वाले इतने पिल्लों की सृष्टी बढ़ाकर होगा क्या ?—यही कहावत चरितार्थ हुई" सहैव दशभिः पुत्रैर्भारं बहति गर्दभी"—इधर पचास साठ वर्ष से अंगरेज़ी राज्य के अमन चैन का फाइदा पाय हमारे देश वाले किसी भलाई की ओर न झुके वरन दस वर्ष की गुड़ियों को ब्याह पहले से सवाई डेढ़ुड़ी सृष्टि अलबत्ता बढ़ाने लगे इतना न सोचे कि गेहूं भी तो विलाइत ढोया चला जाता है ये अपाहिज पैदा हो क्या खाकर जीवेंगे—अन्न विलाइत ढोजाने के सिवाय देश में जो हमेशा कहद और मंहगी बनी रहती है उस्का एक कारण बाल्यविवाह भी है जिस्की कृपा से यहां जन संख्या इतनी बढ़ी हुई है कि देश की पैदावरी इतने आदमियों को भरपूर भोजन देने को काफी नहीं हो सकती यद्यपि पहले से डेढ़ुड़ी खेती अब होती है फिर भी बढ़ती हुई जनसंख्या के लिये परिपूर्ण नहीं होती—हमारे देश की जनसंख्या अवश्य घटनी चाहिये और उस्के घटाने की सुगम उपाय

केवल बाल्यविवाह का रुकजाना है—गवर्नमेंट यदि शुद्ध भाव से हिन्दुस्तान का उपकार सोचती हो तो सहवास बिल के समान बाल्यविवाह को जुर्म में दाखिल कर पूरे सिन पर आने के पहिले जो अपने कन्या या पुत्र का विवाह करे उसके लिये कोई भारी सज़ा या जुरमाना कायम करदे तब कदाचित यह बुराई हम लोगों में से दूर हो नहीं तो सीधी तरह से ये कभी राह पर नहीं आने वाले हैं—आत्मनिर्भर में दृढ़ अपने कूबत बाज़ू पर भरोसा रखने वाला पुष्ट वीर्य पुष्टबल भागवान् एक सन्तान अच्छा कूकर सूकर से निकम्मे रग २ में दासभाव से पूर्ण परभाग्योपजीवी दस किस काम के "एकेनापि सुपुत्रेण सिंहीस्वपति निर्भयम्"

आदमी के लिये आज़ादी एक बेश कीमत मोती है वह आज़ादी तभी हासिल हो सक्ती है जब हम अनेक तरह की फिकिर और चिन्ता से निर्द्वन्द हों और आत्मनिर्भर ने तबियत में दखल कर लिया हो इस दशा में बड़ी से बड़ी चिन्ता और फिकिर हमें उतनी असह न मालूम होगी कि हमारी स्वच्छन्दता को जड़ से उखाड़ सके किसी वस्तु का जब बीज बना रहता है तो उसको फिर बढ़ा लेना सहज है—आत्मनिर्भर की योग्यता सम्पादन किये बिना ही हम लोगों में बाप ना लड़कपन में व्याह कर यावज्जीव के लिये स्वच्छन्दता का बीज नष्ट कर देते हैं उपरान्त उसका शेष जीवन बोझ और अपाढ़ हो जाता है—इंगलैंड और अमेरिका जो इस समय उन्नति के शिखर पर चढ़े हैं सो क्यों वहां की यही चलन है कि गृहस्थी करना वहां हर एक आदमी की इच्छा पर है बाप ना को कोई अधिकार नहीं रहता कि निरे नाबालिग का व्याह कर दें—यही सबब है कि उन २ देशों में प्रायः सभी बड़प्पन का दावा करसक्ते हैं—हमारे यहां भी शंकर, नाङ्क, कबीर, कृष्ण, चैतन्य, बुद्धदेव हाल में स्वामीदयानन्द ही जिन का बड़प्पन हम लोग मुक्तकण्ठ हो स्वीकार करते हैं और जिन का नाम लेते चित्त गद्गद हो जाता है सब के सब गृहस्थी के बोझ से स्वच्छन्द थे और आत्मनिर्भर इन महापुरुषों में पूरा प्रभाव रखता था—किसी का मत है मुल्क की तरक्की औरतों की तालीम से है, कोई कहता है विधवाविवाह जारी होने से भलाई है, कोई कहता है खाने पीने की कैद उठादी जाय तो हिन्दू लोग स्वर्ग में पहुंच इन्द्र का आसन छीन लें, कोई कहता है विलाइत में जाय मेम वहां से अपने साथ लिये आवें बस जगत् विजेता बन जांय, कोई कहता है फजूल खर्ची कम कर दीजाय तो मुल्क अभी तरक्की की सीढ़ी पर लपक के चढ़ जाय,

हम कहते हैं इन सब बातों से कुछ न होगा जब तक बाल्यविवाह कोढ़ हमारा साफ न होगा—हम जानते हैं हमारा यह रोना झीखना केवल अरण्यरुदनमात्र है फिर भी गला फाड़ २ चिल्लाते रहेंगे कदाचित् किसी की तबियत पर कुछ असर पैदा होजाय और आत्मनिर्भर श्रेष्ठ गुण को हम लोगों के बीच भी प्रगट होने का अवकाश मिले—

आत्मत्याग ॥

आत्मनिर्भर के समान आत्मात्याग भी देशके कल्याण का प्रधान अङ्ग है—हमारे देश में आत्मत्याग का बीज भी वैसा ही क्षीण होगया है जैसा आत्मनिर्भर का—अचरज है जहां के इतिहासों में दधीचि, शिबि, हरिश्चन्द्र, बलि, करण इत्यादि महापुरुषों के अनेक उदाहरण से आत्मत्याग की कैसी उत्कर्षता दिखलाई गई है जिन महात्माओं ने दूसरों के लिये अपने अमूल्यजीवन को भी कुछ माल न समझा वहां के लोग अब कहां तक स्वार्थपरायण पाये जाते हैं कि जिसकी हद्द नहीं है बहुधा बेटा भी बाप के मुकाबिले तथा बाप बेटे के मुकाबिले किसी बात में ज़रा अपना नुकसान नहीं बरदाश्त किया चाहता—इस अंश में सीधे सादे हमारे पुराने ढर्रे वाले फिर भी सराहना के लायक हैं जिन्में शील संकोच से कभी को धर्म के खयाल से किसी न किसी रूप में आत्मत्याग की जड़ नहीं टूटी बरन कुछ न कुछ इस्की बासना एक तरह पर घिसलती हुई चली जा रही है—नई तालीम तो आत्मत्याग के लिये मूलोच्छेदी कुठार हुई—हुआ चाहे जो इस्के बानी मुबानी हैं उन में जब यहां तक स्वार्थपरता है कि स्वार्थ के पीछे अन्धे दया सहानुभूति और न्याय को बहुत कम आदर दे हमारे नस २ का रस निकाले लेते हैं तो उन की दी हुई तालीम में आत्मत्याग का वह गुण कहां से आ सक्ता है जिस्के उदय होने से अपना पनका नीचा खयाल या तो जाता ही रहता है या यह इस हद्द को पहुंचता है कि जगत् भर उसे सब अपना ही दीखता है पराया उस्को कोई रही नहीं जाता "उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्"

हम लोग जो इस समय सब भांत क्षीण होगये हैं इसलिये "क्षीणा नराः निष्करुणा भवन्ति" इस वाक्य के अनुसार हम में आत्मत्याग की बासना हम में बहुत कम होगई है—किन्तु वहां और के मुकाबिले खुदगर्ज़ी को अलबत्ता बेहद्द

दखल है आपस में आत्मत्याग और सहानुभूति ज्यों की त्यों कायम है—लंकेशायर वालों की बड़ी हानि के खयाल से रुई के माल पर "इम्पोर्टड्यूटी का" न लगना गवर्नमेंट की हाल की कारवाई इस बात की गवाही है—इस खुदगर्ज़ी के लिये जो सरासर अन्याय और धर्मनीति के विरुद्ध है अंगरेज़ी गवर्नमेंट को दुनियां की और सलतनतें नाम रखती हैं पर वहां—"स्वार्थभ्रंशो हि मूर्खता" का सिद्धान्त सब को दबा रहा है—हमारे यहां नई तालीम ने कुछ निराला ही रंग दिखलाया ज़बान से कहो आत्मत्याग "सेल्फसे क्रिफइस" दिन भर चिल्लाया करें काम पड़ने पर एक दूसरे के लिये छूरी तेज किये ताका करते हैं—पुराने ढ्रस वाले धर्म और ईश्वर के भय से बहुत से अनुचित कामों से अपने को बचाते हैं यहां सो भी नहीं है क्योंकि तालीम पाकर जो ईश्वरमें श्रद्धा और धर्म की ओर झुकावट हुई तो समझना चाहिये उसे पूरी २ तालीम नहीं दीगई—समाज के बन्धन से छुटकारा स्वच्छन्दाचार बेरोक टोक स्वच्छन्द आहार विहार इत्यादि कई एक बातें नई तालीम के सूत्र हैं—आर्यसमाज ब्रह्मसमाज आदि भिन्न २ समाजों में जो ये कपटी घुसा करते हैं और उन २ समाजों के बड़े पक्षपाती हैं सो इसीलिये कि ये समाज उन को आत्मसुखरत होने के लिये ढाल का काम दे रही हैं—यद्यपि इन समाजों के प्रवर्त्तक महापुरुष आत्मत्याग के नमूना होगये हैं उन का कभी यह प्रयोजन नहीं था कि केवल आत्मसुखेच्छा और समाजबन्धन से छुटकारा पाने के लिये तथा यत्किञ्चित् बचे बचाये आत्मत्याग के वसूलों का तहस नहस करने के लिये उनकी समाज में लोग दाखिल हों—अस्तु हमारे दिन अभी अच्छे नहीं है दैव हम से प्रतिकूल है जो कुछ पाप हिन्दूजाति से बनपड़ा है और बराबर बनता जाता है जब तक उसका भरपूर मार्जन न होलेगा तब तक जो कुछ उपाय भी इस बिगड़ी कौम के बनानेका किया जायगा उसका उलटा ही फल होगा—जब कभी हमारे सुदिन आवेंगे आत्मत्याग आत्मगौरव आत्मनिर्भर आदि श्रेष्ठगुण सभी यहां आय बसेरा करने लगेंगे—

यह आत्मत्याग के अभाव का बाइस है जिस्से हम अपने लोगों में किसी का विलाइत जाना पसन्द नहीं करते—आत्मत्याग मन में जगह किये हो तो कभी सम्भव है कि हम वहां के आमोद प्रमोद में फस बिगड़ कर वहां से लौटें और वहां से आय अपने देशी भाइयों को जानवर समझ उन से घिन करने लगें—सच तो यों है कि यदि आत्मत्याग के सिद्धान्त पर हम दृढ़ हों तो विलायत जाने की आवश्यकता ही क्या रहे—

"पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषधि निसेवणैः।
पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषधि निषेवणैः" ॥

पथ्य से रहने वाले रोगी को दवा के सेवन से क्या—पथ्य से न रहने वाले रोगी को दवा से क्या——जो कौम हम पर इस समय हुकूमत कर रही है उस्से हम किस बात में हेठे हैं बुद्धि, विद्या, परिश्रम, उद्यम, व्यवसाय, अध्यवसाय, योग्यता, क्षमता क्या हम में नहीं है बल्कि काम पड़ने पर हरएक बातों में सबकत ले गये और उन्हें अपने नीचे कर दिया एक आत्मत्याग की ऐसी भारी कसर लगी चली आ रही है कि जिस्से हमारे यावत् अच्छे २ गुण सब फीके मालूम होतेहैं—जैचन्द और पृथ्वीराज आपस में लड़ न जानिये किस कुसाइत से इस की जड़ उखाड़ कर फेंक दिया कि यह बिरवा फिर यहां न पनपा——स्नेह—मैत्री, दया, वात्सल्य, श्रद्धा, अनुराग की पुण्यमयी प्रतिमा आत्मत्याग के पूजने वाले ये ही भाग्यवान् नर हैं जिन पर दयालु परमात्मा की कृपा है—भाग्यहीन भारत सब सौख्यमूर्त्ति के पूजन में रुचि और श्रद्धा न रख सब गुन आगर होकर भी दुःख सागर में डूबता हुआ निस्तार नहीं पाता——हमारे पूर्वजों ने ४ वर्ण की प्रथा इसी आत्मत्याग के मूल पर चलाया था—ब्राह्मण जो निर्लोभ हो कठिन से कठिन तपस्या और उत्कृष्टविद्या उपार्जन करते थे सो इसी लिये कि वे अपनी तपस्या और विद्या के द्वारा प्रजा के कल्याण की सामर्थि प्राप्त करैं—अब वे ही ब्राह्मण निपट स्वार्थ लम्पट हो आत्मत्याग की गन्ध भी अपने में नहीं रखते और जैसा कदर्य और स्वार्थान्ध ये होगये वैसा चार वर्ण में दूसरे नहीं—आत्मत्याग की वासना से दूसरे का उपकार सोचना कैसा—यही चाहते हैं कि प्रजा को मूर्ख किये रहैं जिस्में इन के नेत्र न खुलने पावें नहीं तो हमारे दम्भ की सब कलई खुल जायगी—इसी तरह पहिले क्षत्री प्रजा की रक्षा के लिये शत्रु के सामने जा कूदते थे और युद्धक्षेत्र में अपना जीवन होम कर देते थे अब क्षत्री भी वैसे नहीं देखे जाते जिन में आत्मत्याग की वासना बच रही हो—सारांश यह कि देश के कल्याण के लिये आत्मत्याग हमारे लिये वैसा ही आवश्यक है जैसा आत्मनिर्भर—जातीयताभिमान या कौमीयत का होना इन्हीं दोनों की युगल जोड़ी के आधीन है बिना जिन के हम और २ गुणों से भरे पूरे होकर भी भीरु कायर क्रूर कुचाली अशक्त असमर्थ आदि बदनामी की माला पहिने हैं जब कि

और २ लोग अनेक निन्दित आचरण के रहते भी सभ्यता की राह दिखलाने वाले हमारे गुरु बनते हैं सो इसी युगल जोड़ी के प्रताप से—

हिन्दुस्तान और इङ्गलिस्तान के सयाने सन्तान

एक रूपक—

हिन्दुस्तान (मन में) अपने मन की वेदना किस्से कह सुनावे "पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं" विधाता ने हमारे लिलाट में स्वाधीनता का सुख नहीं लिखाया तो ऐसों के हाथ में हमें क्यों छोड़ दिया जिन में कोई २ ऐसे निपट स्वार्थान्ध हैं जो किसी बात में किसी मौके पर अपने मतलब से नहीं चूकते पराये की पीर क्या बात है इस्पर कभी ध्यान ही नहीं देते सच है "जिस्के पांव न जाय बेवाई—सो क्या जानै पीर पराई"—आशा थी लार्ड इलगिन महोदय हमारी बात पर कुछ ध्यान देंगे इन की दयालुता न्याय और सत्य में प्रीति आदि शुभ गुणों की बहुत कुछ प्रशंसा सुनी गई थी परन्तु अफसोस ये भी दूर के ढोल सुहावनी निकले इन्होने हम को कोरा जबाब दे दिया और कहा हम सेक्रेटरी अफ स्टेट की आज्ञा के विरुद्ध नहीं कर सकते स्टेट सेक्रेटरी पार्लियामेंट की आज्ञा से बद्ध हैं पार्लियामेंट मेनचेस्टर और लंकेशायर के जुलाहों के आधीन हैं काहे को हमारी सुनैंगे फिर यत्नतो करना चाहिये "यत्नेकृते यदि न सिध्यति कोत्र दोषः"—तो एक बार वहां तक पहुंच अपने दुःखका निवेदन तो करना ही उचित है (प्रस्थान)

भयङ्कर भेख में भारत दुर्दैव का प्रवेश ॥

दुर्दैव—हमारा नाम दुर्दैव है कुशल तभी तक है जब तक हम तक न लें काले नाग का डंसा चाहो बच भी जाय पर हम जिसे तक लें उस्का निस्तार फिर कहां—हा हा हा (हंसता है) बचा ने समझा था लिबरल गवर्नमेंट अधिकार में है अब हमारे लिये भलाई होगी—यह न समझे शनि की दृष्टि के समान हम ताक लगाये बैठे हैं कभी हो सकता है हम जब तक प्रतिकूल रहैं सोना छूते मिट्टी न हो—बट्टे की कसर का ऐसा भारी अड़ंगा लगा दिया कि बचा को सब भूल गई साढ़े तीन कोरड़ का घाटा पुरै देने में कांख रहे हैं अकिल गुम है विलाइती माल पर ५) सैकड़ा ऐसा भारी महसूल धौक दिया गया कि चूर ढीला हो रहा है—तब भी तो दो करोड़ का घाटा अभी है—हतभाग्य का कण्ठगत प्राण

है घटका लग रहा है कहीं से सांस नहीं है कि एक फूटी कौड़ी भी अब और अधिक पुरे सके तो दो करोड़ तो बहुत होता है--यह वही "इम्पोर्टडूटी" है जिस्के लिये लार्ड नार्थब्रूक को इस्तीफा दै चले जाना पड़ाथा सो कैसी आसानी से लग गया कि किसी को मालूम भी न हुआ--हा हा हा--बचा गये हैं कि जाकर स्टेट सेक्रेटरी को कायल करैंगे और कपड़े पर महसूल बढ़वाय बंबई की कल के बने कपड़े विलायती कपड़ों से दर में सस्ता करावेंगे--ः निरी हिमाकत और गाउदीपन है कभी मुमकिन है कि घर में दिया न जलाय मसजिद में जलावे--लंकेशयर वाले अपने भाई बन्धु से वे मुलाहिज़े हो इस सिड़ी की बात कभी मानी जायगी--ऐसा सोना किस कामका कि कान फटने लगै ऐसा न्याय और इनसाफ हो क्या कि अपनी निज की हानि हो--अस्तु चल कर हम भी कुछ विघ्न करैं जिस्में इसे वहां से निराश हो लौट आना पड़े (नाता है)--

द्वितीय दृश्य,

इंगलैंड और हिन्दुस्तान ॥

एक ओर से इङ्गलैण्ड दूसरी ओर से हिन्दुस्तान का प्रवेश-

इङ्ग०--आइये आइये आज हमारे बड़े भाग जो आप ऐसे महर्षि ने हमारे घर को अपने चरण कमलों से पवित्र किया--कहिये क्या आज्ञा है कैसे आप का यहां आना हुआ (स्वगत) क्या विलाइत जाना अब इनके धर्मशास्त्रों में पाप नहीं समझा जाता--आये हैं तो एक मेम तो इनके गले मिढ़ी दूंगा और शराबखोरी की आदत से आज़ाद इन्हें न रक्खूंगा (प्रकाश) आपके शुभागमन से मेरा घर पवित्र होगया और मैं कृतकृत्य हुआ--जो कुछ कार्य मेरे योग्य हो कहिये--मन बचन कर्म से आपकी आज्ञा मानने को मैं प्रस्तुत हूं (मन में धीरे से) यदि हमारे सन्तान सब राजी हों तो--क्योंकि मैं खुद मुखतार हूं नहीं--उन्हीं लड़कों की बदौलत मेरी सब बात और प्रतिष्ठा है उन्हीं के किये मैं आज दिन अपने सब भाई और बहिनों से छोटा भी होकर सबों का महामान्य हो रहा हूं कहां तक कहैं हमारे बड़ों के भी बड़े यह हिन्दुस्तान भी आज हमें अपना स्वामी मान रहे हैं--(प्रकाश) विना किसी संकोचके जो कुछ अभीष्ट हो आज्ञा कीजिये--"यूयानुपैतु प्रणयादभीरुत्वो भवन्ति वा पुरुषकृतां मनीषिणः"

हिन्दुस्तान—महामान्य यह आप की बड़ी कृपा है जो आप अपने सेवक को इतना आदर देते हैं—आप का शील सुभाव ऐसा है तब तो आप आज दिन जगत् भर के माननीय हो रहे हैं—मैं आप के पास अपने बालबच्चों की ओर से यह निवेदन करने आयाहूं कि सेक्रेटरी आफ स्टेट ने अगले वर्ष का जो हिसाब हुज़ूर में पेश किया है उस्में साढ़े तीन करोड़ का घाटा दिखलाया गया है—आप जानते हैं बट्टे की दर के सबब अब हमें पहले से सवाया खर्च करना पड़ता है—हमारे लड़के बाले कभी २ अपने मन को विनोद और हर्ष पहुंचाने के लिये जो कुछ खर्च करते थे उसे भी बन्द करते जाते हैं—क्या करैं जब पेट को भरपूर नहीं जुरता तब तुम्हारे सन्तानों की तरह फजूल खरची के लिये कहां से आवे फिर भी हमारे लड़के फज़ूलखर्च बदनाम हैं—परस्पर संमिलन सुख उठाने को विवाह आदि उत्सवों में जो अपने भाई बिरादरी को जमा करते थे और इष्ट मित्रों को बुलाय उन का सन्मान करते थे अपने सेवकों को जो केवल ऐसे हीं अवसरों की आशा पर उमर भर उन की सेवा किया करते हैं इनाम और पारितोषिक की भांत कुछ देते थे सो सब को फजूल खर्च समझ बन्द करते जाते हैं—तुमने ऐसे २ जाल फैलाये हैं कि अब उन के पास कुछ रहा ही नहीं भोजन की भी संकीर्णता है तो फजूल खरची के लिये कहां से आवै—तीर्थयात्रा कभी २ धर्मसम्बन्धी उत्सवों में भी ये लोग खर्च कर डालते थे सो पास न रहने से यह भी घटता जाता है—तीर्थों में हर तरह के टैक्स लगा दिये गये—मेलों में केवल चोर और उठाईगीरे तो अलबत्ता टिक्कस से बचे हैं नहीं तो क्या यात्री क्या पंडे क्या दुकानदार कोई भी भारी टिक्कस के बोझ से नहीं बचते—इतना टिक्कस लगने पर भी हमारे निपट मूर्ख लड़के अपना हठ नहीं छोड़ते न मज़हबी जोश कम करते हैं—तुम्हारे सयाने सन्तान उन के इस हट और जोश का भरपूर फाइदा उठारहे हैं और मूर्ख समझ उन पर हंसते भी हैं—आप की दी हुई अंगरेज़ी शिक्षाने हमारे लड़कों में धर्मसम्बन्धी जोश बहुत कम कर दिया है परन्तु एनीबिसेंट नाम की एक आप ही की सन्तान वहां जाय उन को धर्म की वृद्धि करना सिखला रही हैं—आर्यसमाज बहुत यत्न कर रही है कि धर्म की हठ जाती रहे तो बहुत सा धन बच रहे—हमारे यहां तो यह सब किफाइत हो रही है बहुत तरह के सुख से हाथ धो बैठे हज़ार कोशिश और मेहनत से किसी तरह लोग अपना पेट पालते हैं पर तब भी भांत २ के टैक्स और हिकमतों से जो

हमारा सब धन आप छीने लेते हैं सो इस्की कुछ हद्द भी है कि कहां तक आप हमें दुहते जायंगे—बहुधा लोग हमें सलाह देते हैं कि तुम फौज घटादो तो यह खर्च बच रहे सरहद्द के खर्च में कमी करो सिविलियन साहब लोगों की तनखाह घटाओ सो यह सब आप के आधीन है हम कर क्या सकते हैं—इतनी अलबत्ता मन में खटक होती है कि सेना का खर्च तोड़ वालंटियर न रख छोड़ें सरहद्द को किलेबन्दी से मजबूत न किये रहें तो रूस ऐसे प्रबल शत्रुओं के आने पर क्या करेंगे—फिर फौज को अप्रसन्न भी नहीं कर सकते क्योंकि मुलकमें अमन आमान उन्हीं के आधीन है सिविलियन साहब लोगों की तनखाह कम करते हैं तो वे कहते हैं हमारा खर्च न चलेगा और अपने काम में हम को बेइमानी करना पड़ेगा—हमारे लड़के वालों को बड़े २ ओहदे आप दिया नहीं चाहते कहते हो इन से इनतिज़ामी करते बनेगा नहीं न उन का विश्वास आप को है—अपने सन्तान सिविलियनों को खुश रखने के लिये हमारे कोश में घटा रहने पर भी बट्टे की कमी का भावज़ा हम से आपने ज़बरदस्ती दिलवाया और हमें देना ही पड़ा—शिक्षाविभाग जिस्से हमारा बहुत कुछ उपकार था उसे आपके सन्तान कम करना चाहते हैं फीस इत्यादि ऐसी बढ़ादिया है कि हमें अब अपने बालकों को पढ़ा कर रोटी कमाने लायक करना महाकठिन हो रहा है और उन की नीयत ऐसी ही मालूम होती है कि उस्का कुल बोझ हमारे ही ऊपर छोड़दें—पबलिकवर्क्स में रेलों को बन्द नहीं कर सकते कहद पड़ने पर अन्न एक जगह से दूसरी जगह लेजाने में सुबीता रहता है—वाटरवर्क्स तथा पबलिकवर्क्स को तो आप भी बन्द करना पसन्द न करेंगे क्योंकि उसमें जो खर्च होता है वह किसी न किसी बहाने रुपये में बारह आने तो आप ही के घरमें आते हैं कुछ थोड़ा सा ईंट चूना और मजदूरों में अलबत्ता हमारे ही यहां रह जाता है—अब इस्पर भी साढेतीन करोड़ का जो घाटा हमारे खज़ाने में है उस्के पूरा करने को स्टेटसेक्रेटरी साहब ने बाहर से हमारे यहां आने वाली चीज़ों पर पांच रुपये सैकड़ा महसूल लगाया है यद्यपि यह भी एक प्रकार का टैक्स है क्योंकि बाहर से आई मंहगी चीज़ों के बिना खरीदे काम न चलैगा—अस्तु इतना करने पर भी केवल आधा घाटा पुरता है शेष आधा घाटा पुरने का क्या प्रबन्ध हो कुछ समझ में नहीं आता—रुई के कपड़ों पर भी जो आप महसूल लगाने की आज्ञा देदेते तो सब काम बन जाता—बड़े लाट की कौंसिल में इस के लिये बहुत

कुछ कहा गया पर लाट साहब की इतनी हिम्मत कहां कि पार्लियामेंट की आज्ञा के विरुद्ध कुछ कर सकें इस लिये हम आप ही से फरियाद करने आये हैं कि रूई के माल पर भी महसूल की आज्ञा देदें–

इङ्गलैण्ड–आपकी दशा सुन हमें बड़ा खेद है परन्तु क्या करें मेनचेस्टर के लोग किसी तरह इस बात पर राज़ी नहीं होते––आप जाने रहिये हम अपने लड़कों को अप्रसन्न कर तुम्हारी सी दशा भुगतना नहीं चाहते–आप जानते हैं मेरा जो कुछ वैभव है वह इन्हीं सुयोग्य सन्तानों का किया है तब चाहो कोई निन्दा करे चाहो स्तुति न्याय हो चाहो अन्याय मैं उन के विरुद्ध कुछ करने की सामर्थि नहीं रखता––तुम्हारे ही सत्पुत्र दादाभाई यहां इस समय विद्यमान् हैं जो तुम्हारी भलाई की बहुत फिकिर कर रहे हैं तथा अपने मित्र मिस्टर केन से जा मिलो वे जो लंकाशायर वालों को समझा सकें तो मुझे कोई उज्र नहीं है–

हिन्दु–(स्वगत) आगत स्वागत तो ऐसा किया था कि मालूम हुआ कि अब धन लक्ष्मी सब पुरै देंगे अन्त को कोरा जवाब दे दिया जब इन्हीं का किया कुछ न होसका तो केन बेचारा क्या कर सकेगा––खैर आये हैं तो केन से भी मिलते चलैं (प्रकाश) हुज़ूर तो मैं अब जाता हूं–

इंगलैंड–आलरवट (एक उंगली से सलाम कर हाथ मिलाता है) (दोनों गये)

तृतीय दृश्य ॥

पालिसी और विचार का प्रवेश–

विचार–बीबी पालिसी आज तो हमारा तुम्हारा नदी नांव संयोग से साथ होगया नहीं तो कहां तुम कहां हम–जहां तुम्हारा अधिकार रहेगा वहां मेरा कदम नहीं जम सकेगा जहां मेरा दखल होगा वहां की हवा तक तुम बरका-ओगी–आज तो जो दूर देशी एक गरीब पाहुना तुम्हारे यहां आया है कुछ उसकी पहुनाई के खयाल से––कुछ तुम्हे समझाना अपना धर्म मान, कुछ उस दीन दुखिया के दुःख और दीनता के खयाल से तुम से मिलने आया हूं कि कुछ तो उसपर रहम और तर्स को मन में जगह दो–ज़रा सोचो समझो बहती धारा में हाथ धोलो सदा सब के दिन एक तरह पर नहीं बीतते–

पालिसी–उः तुम भी योगी वैरागियों का कहां का किस्सा गा रहे हो (हंस कर स्वगत) क्या दोनों मिल बजे "राम मिलाई जोड़ी कोई अन्धा कोई कोढ़ी"–

सच है बुढ़ापे में ज्यों२ ताकत घटती जाती है अक्किल भी कम होती जाती है अक्किल के गोठिल होने पर ज़रा२ सी बात में आगा पीछा विवेक शान्ति हर सबी आकर पांव फैलाते हैं और बूढ़े को अपने चंगुल में करते हैं–नई उमङ्ग नया जोश विचार को कहां२ घिरोंये फिरै " आकबत की खुदा जानै अब तो आराम से गुज़रती है"–(प्रकाश) जैसे आप बूढ़े वैसा ही हिन्दुस्तान बूढ़ा इसी लिये आप उस्की शिफारिस कर रहे हैं मेरे स्वरुप और ढंगको जान कर भी जो आप रहम के लिये कह रहे हैं सो यह आप की बूढी अक्किल का बाइस है– आज भारत दुर्दैव भी मुझे मिला था उस ने कुछ और ही कहा तो मैं अब किस्का कहा मानूं–

विवेक–(स्वगत) हा वह शैतान यहां भी उस्का दामन पकड़े चला आया दुर्दैव और पालसी इन दोनों में पवन और आग का साथ है–हा विधाता जीर्ण भारत का क्या होनहार है अस्तु ईश्वरेच्छा (प्रकाश) आप को मेरी बात पसन्द नहीं तो मैं आप के पास से विदा होता हूं (स्वगत) मिस्टर केन से भी मिलता चलूं (सब गये)–

चौथा दृश्य ॥

मिस्टर केन और हिन्दुस्तान (दोनों परस्परमिल)

केन–कहिये अफीम कमिशन यहां से गया है उस्का आपने क्या किया–

हिन्दु–(स्वगत) रोज़े को गये नमाज़ गले बंधी यह दूसरी आफत हमारे ऊपर आने वाली है–हम तो इस तीन ही करोड़ के लिये रो रहे हैं वहां अफीम उठ जाने से सात करोड़ का घाटा कैसे पुरवैंगे (प्रकाश) मिस्टर केन इसमें हमारी बड़ी हानि है अब हमारे में दम बाकी नहीं है कि हम इस्के उठ जाने से जो घाटा होने वाला है उसे बरदाश्त कर लेंगे–

केन–उः यह आप क्या कह रहे हैं चाहो कितना ही घाटा हो अफीम का उठ जाना बहुत ही ज़रूरी बात है–अफीम भयङ्कर विष है उचित नहीं कि आप अपने फाइदे के लिये संसार भर को विष दै लोगों को मृतक तुल्य कर दें आप तो सदा से परम दयालु अपना सर्वस्व खोकर दूसरों का भला करने वाले प्रसिद्ध हैं–बुढ़ापे में अब आप को कहां का लोभ आ घेरा कि उचित अनुचित का विचार छोड़ निहायत मक्खीचूस हुआ चाहते हैं–यह नई बात देख पड़ी–

हिन्दु—(स्वगत) " पर उपदेश कुशल बहुतेरे „ दूसरों की भलाई करने ही का तो यह नतीजा है कि हमारी तीस करोड़ प्रजा एक जून खाकर दिन काट रही है तिस्पर हमी को लोभी कहते हैं—(प्रगट) भाई केन तुम यह क्या कह रहे हो तुम्हारे ही देश वाले बहुत से डाक्तरों ने कमिशन में गवाही दी है कि अफीम से कोई हानि नहीं है—आपही के भाई बन्धु मेनचेस्टर वाले तो इतना भी अपना नुकसान पसन्द नहीं करते कि बट्टे के कारन जो हमे घाटा हो रहा है उसे रुई के कपड़ों पर टिक्कस लगाय पूरा करने देते तो अफीम उठा देने से जो सात करोड़ का हमें घाटा होगा वह क्योंकर पूरा हो सकेगा—हां इंगलैंड से अफीम दूसरे देश में जाती तब उठा देने को कहते तो जानते—फिर चीन वाले जिन के हित के लिये आप यह सब उधम कर रहे हैं वे तो अफीम के इतने आदी हो गये हैं कि उन से यह कभी छूट नहीं सक्ती उन्हों ने अपने देश ही में इसकी खेती शुरू कर दिया है—अफीम उठा देने से हमें दोहरा घाटा है एक यह कि इसके व्यौपार से जो लाभ होता है सो गया दूसरे यह कि जिस धरती में अफीम बोई जाती है उसका लगान सब से अधिक लगाया गया है किसी दूसरी जिन्स के बोने से पूरा नहीं हो सकता—बस तो जितनी अफीम बोने की ज़मीन है उसका लगान हम को घटाना पड़ेगा—हां रुई के माल पर जो यहां से जाता है टिक्कस लगा दिया जाय तो हमारा घाटा पूरा हो जाय और इंगलैंड का भी कोई नुकसान न हो—पर शोक है आप ही के भाई मेनचेस्टर वाले इसका बड़ा विरोध कर रहे हैं—आप मेरे बड़े खैरख्वाह समझे जाते हैं आपही उन लोगों को समझाइये—

केन—(स्वगत) यह बुद्धू तो बड़ा कानूनिया जान पड़ता है इसको किसी तरह यहां से टालना चाहिये—इसकी अकल मारी गई है हम से कहता है मेनचेस्टर वालों को समझा दो एक तो वैसे ही बंबई वालों के मारे हमारा परता नहीं पड़ता जब यहां के माल पर ५) सैकड़ा और बढ़ जायगा तो मेनचेस्टर वाले फिर किसी काम ही के न रह जांयगे—मेनचेस्टर वाले पार्लियामेंट के प्रधान मेम्बर हैं उन के आगे हमारी हकीकत क्या है तब हम क्यों दूसरे के लिये उन से विरोध करें—आपस में फूट यह हिन्दुस्तान ही का दस्तूर है (प्रगट)—भाई हिन्दुस्तान हम को अपने ही मुल्की मामिलों से फुरसत नहीं तब तुम्हारे लिये कौन सिर पचावे यही कारण है कि पार्लियामेंट में जब हिन्दुस्तान का

बजट पेश किया जाता है तब हम लोग उठ जाते हैं–यदि अपनी निज की आमदनी से खर्च नहीं चलता तो बहुत से खर्च तोड़ दीजिये बहुत से फिजूल क्लर्क और चपरासियों को क्यों दफ्तरों में रक्खे हुये हो उन को क्यों नहीं छुड़वादेते– यदि उन की जगह यहां से आदमियों को लेजाके रखिये तो तनख्वाह तो अलबत्ता दूनी चौगुनी देना पड़ेगा परन्तु यहां का एक आदमी ६ हिन्दुस्तानियों के बराबर काम करेगा इस तरह पर आपको न जानिये कितनी बचत हो जायगी–फिर हमें विश्वास नहीं कि हमारा कहना वे लोग मान लेंगे यदि मानते तो हम शराब यहां से उठा देने की कोशिश न करते जिस्से देशका देश सत्यानाश होरहा है–फिर हिन्दुस्तान के लिये हम चाहो जो हों इंगलैंड वालों के बीच हम किस गिनती में हैं इसी से हम को सदा उन की रुचि के अनुकूल काम करना पड़ता है–हमारे भाई मेनचेस्टर वाले कभी राजी न होंगे जब तक बंबई के माल पर भी वैसा ही कोई टिकस न लगाया जायगा–तुम्हारे ही शरपुत्र दादाभाई इस समय यहां सबके प्यारे और आदरणीय हो रहे हैं उन से कहो इसका आन्दोलन करैं संभव है कदाचित् उन का कहा वे लोग मानलें हमारा किया यह न होगा कि जल में रह मगर से वैर वैसा है–अच्छा तो अब "गुडबाई" मैं अपना वख्त फजूल नहीं खोया चाहता (हाथमिलाय बिदा करता है)–

हिन्दु–यहां से भी कोरा जवाब मिला–जब केन ऐसे साहसी मेनचेस्टर वालों से डरते हैं तो दादाभाई बेचारा क्या कर सकेगा अपनी असाधारण वक्तृत्व शक्ति और योग्यता से किसी तरह उसने ऐसे आप स्वार्थी लोगों के बीच इतनी बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त किया कि पार्लियामेंट की मेम्बरी उसे मिलगई अब वह इंगलैंड वालों के विरोध में कुछ कहे तो इस पद पर रह सकैगा–हमें निश्चय होगया इंगलैंड पालिसी में बड़ा उस्ताद है–सच है स्वार्थी लोगों को शील संकोच दया न्याय सब तभी तक है जब तक उन की थैली में कोई हाथ न लगावे–हाय हम अपना दुःख किस्से कहैं हमारी करोड़ों प्रजा को आधे पेट भी खाने को नहीं मिलता न उन के लिये कोई रोजगार बाकी रहा एक खेती अकेली बचगई है सो उस्में भूमिकर ऐसा कस लिया गया है कि उसका भी सारांश इंगलैंड खींच लेता है–अस्तु पैदावरी ठीक २ होती रहे तो भूमिकर देने पर भी कुछ न कुछ बचा रहे प्रजा हमारी भूखों तो न मरैं सो भी न जानिये यह किस पाप का फल है कि कोई साल अतिवृष्टि से खेती का विनाश होगया कभी अनावृष्टि

ने सब सत्यानाश किया पैदा भी हुआ तो रेलीब्रादर जी का काल हो रहा है सब गेहूं खींच कर लोहा लक्कड़ हमारे माथे पटकता है—हा हम इङ्गलैण्ड को बड़ा उदार और न्यायी समझ यहां आये थे परन्तु अवजान गये अपने पुरुषार्थ का भरोसा मुख्य है जिन को अपने निज का कुछ बल है उन का देव भी सहायक होता है—

"दैवमेव हि साहाय्यं कुरुते सत्व शालिनाम्"—

सच है "अपना दाम खोटा तो परखवैये का कौन दोष" हमारी प्रजा हमारे कहे की नहीं है इस्का हमे बड़ा शोक है जो यही लोग समझ को काम में लावें तो हमे क्यों इतना दीन होना पड़े—जो मनुष्य ये वही हम तब जो हम सब भांत परबस मृतकतुल्य हो रहे हैं सो क्यों केवल अपने लक्षणों से—खैर मुल्की मामिलों में जो कुछ इङ्गलैण्ड कहे करना ही पड़ता है क्योंकि हाथ इस्के नीचे दबा है बड़ी बड़ी तनखाह देकर इङ्गलैण्ड से लोगों को बुलाना पड़ता है उन का मन रखने के लिये जो कुछ वे कहैं सो करना पड़ता है—न्याय अन्याय जो कुछ कानून ये बनादें उसे भी मानना ही पड़ता है लाचार परबश ठहरे—किन्तु जिन बातों में हम स्वच्छन्द हैं जिस्में हम बिना इन से किसी तरह का सरोकार रक्खे अपने आप बहुत कुछ कर सक्ते हैं उस्में भी तो कुछ नहीं करते—हम किस तरह इन्हें समझावें कि ये मूर्ख अपना सब धन विदेशी वस्तु के प्रेम से फंस क्यों दिये डालते हैं—मूर्ख बेचारों को क्या समझावैं सभ्यता और उत्तम शिक्षा में दम भरने वाले और भी महानष्ट और पतित हो रहे हैं जिन्हों ने अपनी सभ्यता को कुछ ऐसे ढंग पर मोड़ रक्खा है कि एक मिनिट बिना बिलायत के इन का नहीं चल सक्ता—अरे और सब एक ओर रहे एक बिलाइती कपड़ा ही जो ये लोग पहिनना छोड़दें तो हम बिलाइती कपड़ों पर टिक्कस लगाने के लिये क्यों इतना गिड़गिड़ांय—इन मूर्खों को कैसे समझावें बिलाइती चीज़ों के प्रेम में इन को दोहरा घाटा होता है एक तो यह कि बिलाइत की बनी चीज़ खरीद अपना धन उन के हाथ फेंके देते हैं दूसरे वे उस्का दाम सोने में लेते हैं १७) जब दें तो १००) के दाम की चीज़ उन से पावें इस तरह पर सिवा खर्च के आमद की कोई सूरत न रही—हमारे शरीर का सारांश खिचते २ इस बुढ़ापे में अंग २ ढीला पड़ता जाता है तौ भी इन अन्धों की आंख नहीं खुलती—

हाय ये अब हमें कहां तक सतावेंगे कौन २ सी यातना हमें अभी भोगावेंगे हा! अशरण शरण प्रणतपाल क्या तू झूठ ही दयालु प्रसिद्ध है या दया और रहम का खाता तू ने बन्द ही कर दिया रोता और बिलखता हुआ मूर्च्छित हो गिर पड़ता है—

पांचवा दृश्य—

(भारतदुर्दैव का पुनः प्रवेश)

दुर्दैव—हा हा हा—क्यों हमने कहा था हम जिसे तकलें उसका निस्तार फिर कहां न कि इस गर्भ दास को—हज़ार वर्ष से इसे हम दांत पर चढ़ाये हैं और ज़ेर कर रहे हैं—अच्छा फिर मुझे भी तो कहीं रहने का अवकाश मिलना ही चाहिये—अब इस समय पृथ्वी का कोई खण्ड न बच रहा जहां मैं प्रवेश पा सकूं यूरोप और अमरिका की कौन कहे उन की तो कुछ बात ही निराली है क्या इमकान कि हमारे अङ्ग की हवा भी उधर जा सके—अफरिका के नितान्त असभ्य हूस भी आगे को पैर बढ़ाते जाते हैं—यह सब देख महाप्रभु कालकृतान्त की मुझे यही आज्ञा हुई कि हिन्तुस्तान को तुम आचन्द्रतारक अपना घर बना कर सुख से रहो क्योंकि सनातन और परंपरा का हिन्तुस्तान बड़ा भक्त है हज़ार वर्ष के ऊपर यहां मुझे रहते होगया तो अब मैं वहां सनातन और परम्परा के नाम से परमपूज्य देवता होगया हूं मैं कभी हटाये हट सक्ता हूं—अच्छा अब चल कर काल कृतान्त महाप्रभु को अपनी कामयाबी का सुसमाचार सुनाओं जाता है—हरदेवप्रसाद—

चलतापुरजा ॥

अखबारों में चलतापुरजा बंगवासी—झूठी सच्ची गपशप लिख लिखाय तेली तमोली से लेकर कोतवाल तक को चेला मूड़े है जिन्में इसकी टूटी फूटी हिन्दी का पारायण पुस्तपाठ में दाखिल है "यस्य देवस्य यद्रूपम्"—

साहब लोगों की भलाई का चलतापुरजा पायोनियर—सिविलियन चाहो जैसा अन्याय करें यह उसे न्याय बतलावेगा—कृतघ्न यहां तक कि हिन्दुस्तान ही की बदौलत लाल गुलाल है वहीं जन्मा है फिर भी हिन्दुस्तानियों ही की जड़ उखाड़ता है—"कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः"—

समाजों में चलतापुरज़ा आर्यसमाज–रक्त बीज के सन्तान बढ़ते ही जाते हैं नित्य नई समाज बनती हैं और टूटा भी करती हैं पर इसकी बेल बढ़ती ही जाती है—इसके संस्थापक की अच्छी नीयत का फल है—"न हि कल्याण-कृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति"–

दम्भ और मक्कारी का चलतापुरज़ा महामण्डल–उठा ऐसे आडम्बर से कि मानो एक छोर से दूसरे तक धर्म की पताका फहराने लगेगी सतयुग अब आने ही चाहता है किन्तु स्वार्थसाधक दाम्भिकों की सब पोल खुल गई अन्त में टांय २ फिस–"बक उघरहिं तत्काल"–

पुस्तकालयों में चलतापुरज़ा भारतीभवन,–जिसकी तरक्की दिन दूनी रात चौगुनी होती ही जाती है जिस जून जाइये भवन को पढ़ने वालों से खाली न पाइये–"पुण्य की जड़ पाताल तक"–

पार्लियामेंट में हिन्दुस्तान की भलाई का चलतापुरज़ा मिस्टर केन–"कुदेशेपि हि जायन्ते क्वचित्केचिन्महाशयाः" –

सर्कारी इन्तिज़ाम का चलतापुरज़ा पुलिस–अदना हाकिम से बड़े तक सब जानते हैं कि इससे प्रजा को जितना कष्ट है उतना उन की जान माल की हिफाज़त नहीं, फिर भी विना पुलिस एक घड़ी हुकूमत का इन्तिज़ाम नहीं चलता–"इन्तिज़ाम की खूबी है"–

अदालतों में चलतापुरज़ा खफीफा की कचहरी "न नौ नगद न तेरह उधार" इधर नालिश दायर उधर डिगरी "क्या खूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले"–

मलिकुल मौत का चलतापुरज़ा हैज़े की बीमारी–दो दस्त एक कै काफी है उधर चन्द्रोदय की पुड़िया लेने गये इधर चन्द्रा लग गया "एक दो तीन"–

अपढ़ ब्राह्मणों का चलतापुरज़ा सत्यनारायण की कथा–"विशेषतः कलियुगेनान्यो पाथोस्ति भूतले"

मूर्ख ज्योतिषियों का चलतापुरज़ा काशीनाथ का शीघ्रबोध–"अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी–अतऊर्द्ध रजस्वला"–अफसोस हम उस समय न रहे नहीं तो चिलंटा गरम कर इस पाजी की तिल २ मांस नुचवा लेते–

हिन्दुस्तान की सुस्ती और काहिली का चलतापुरज़ा "विधि का लिखा को मेटन हारा–को करितर्क बढ़ावै शाखा"–

हम लोगों के दासभाव का चलतापुरजा "कोउ नृप होय हमें का हानी। चेरी छोड़ न होउब रानी"—

हमारी बदकिस्मती का चलतापुरजा सनातनधर्म की पैरवी—आंख में पट्टी बांध कोल्हे अकिल बुद्धों की लकीर पर चलना सिद्ध—"लीक २ गाड़ी चले लीकै चलहिं कुपूत"—

लड़ावर के कपड़ों में चलतापुरजा रफल—मेहतर से लेकर ऊंचे दरजे तक के लोग जिसे ओढ़ते हैं—"सब धान बारह पसेरी"—

महाकवि क्षेमेन्द्र ॥

महाकवि क्षेमेन्द्र जिसकी दूसरी उपाधि व्यासदास है काश्मीर देश के राजा अनन्तदेव के समय में हुये—सुवृत्त तिलक तथा कई एक ग्रन्थों के अन्त में अनन्तदेव की प्रशंसा के कई एक पद्य इन्हों ने लिखे हैं इससे निश्चय होता है अनन्तदेव से क्षेमेन्द्र का कुछ अवश्य लगाव था—उसी समय मालवा की धारा नगरी में भोजदेव राज करते थे जैसा राज तरंगिणी का यह श्लोक है—

"स च भोजनरेन्द्रश्च दानोत्कर्षेण विश्रुतौ।
सूरी तस्मिन्क्षणे तुल्यं द्वावास्तां कवि बान्धवौ"—

काश्मीर में राजा अनन्तदेव और मालवा में राजा भोजदेव ये दोनों अत्यन्त दान के लिये प्रसिद्ध थे और दोनों विद्यारसिक नरेन्द्र एक ही समय बराबर कवियों को सहारा देने वाले बन्धु के समान थे—इससे प्रगट है क्षेमेन्द्र ऐसे समय में हुये हैं जब संस्कृत की कविता हिन्दुस्तान के हर एक प्रान्त में पूरी उत्कर्षता को पहुंची हुई थी—किसी वस्तु की अधिकाई हो जाने पर वही सब से अधिक प्रतिष्ठा पाने के योग्य होता है जो मामूल से ज़ियादह कोई असामान्य गुण अपने में रखता हो—इसमें सन्देह नहीं क्षेमेन्द्र के काव्य में सब तरह का रस पाया जाता है और सब तरह का वर्णन इसमें है—बोधिसत्वावदान कल्पलता जिसमें बुद्धदेव और बौद्धमतावलम्बी प्रधान पुरुषों का जीवनवृत्तान्त लिखा गया है तथा कलाविलास दर्पदलन चारुचर्या आदि ग्रन्थ में उपदेशात्मक कविता पढ़ यही मन में आता है कि न जानिये कैसी प्रतिभा इस कवि की थी कि जो इसे सूझी उसका ढंग और कवियों की अपेक्षा बिलकुल

निराला था—ग्रन्थ भी जितने इन्हों ने लिखे किसी कवि ने इतने नहीं लिखे—दार्शनिकों में जैसा वाचस्पति मिश्र व्यापक पण्डित थे कि कहो शास्त्रों पर इन्हों ने ग्रन्थ लिखे हैं वैसा ही कवियों में क्षेमेन्द्र थे काव्य का कोई अंश नहीं बच रहा जिस पर इन्हों ने अपनी प्रतिभा को ज़ोर न दिया हो—बोधिसत्वावधान तथा दूसरे इन के आज़ादाना ढंग के लेख से मालूम होता है कि क्षेमेन्द्र की बौद्धमत पर विशेष श्रद्धा थी इसी से इन के ग्रन्थ कम प्रचलित हुये—आश्चर्य है ऐसा प्रतिभाशक्तिसम्पन्न उत्तम श्रेणी के कवि का नाम भी किसी ने अपने ग्रन्थ में नहीं दिया—इन्हीं के समकालीन और काश्मीर ही के रहने वाले विल्हण कवि का बहुधा ग्रन्थों में नाम पाया जाता है किन्तु क्षेमेन्द्र का ज़िकर कहीं पर किसी ने नहीं किया—न इसी की कुछ टोह लगती है कि यह किस जाति के थे—जैसा भट्टार हरिचन्द्र धर्मशर्माभ्युदय नाम का काव्य रच अपनी प्रतिभा का परिचय जैन मत में दिखलाय कवियों के बीच राजा की पदवी के अधिकारी हुये—"भट्टारहरिचन्द्रस्य पद्यवन्धो नृपायते"—पर जाति के कायस्थ थे वैसा ही क्षेमेन्द्र भी किसी अन्य जाति के थे ब्राह्मण न थे—

सम्पादक काव्यमाला को अनेक धन्यवाद है जिन्हों ने छिपे छिपाये रत्न समान क्षेमेन्द्र सरीखे कवियों का उद्धार कर उन २ कवियों की अनूठी उक्ति युक्ति का रस चिखाय काव्य रसिकों के मन को एकान्त विनोद का हेतु हुये—काव्यमाला में छोटे बड़े सब मिलाय क्षेमेन्द्र के किये २८ ग्रन्थों के नाम दिये गये हैं उन्में चारुचर्या—चतुर्वर्गसंग्रह—दर्पदलन—बोधिसत्वावधान कल्पलता—कलाविलास—सेव्यसेवकोपदेश—नीतिकल्पतरु ये उपदेशात्मक काव्य हैं—इन्में भी कलाविलास और दर्पदलन की कविता अत्यन्त उत्कृष्ट है—कलाविलास में धूर्तों का स्वरूप और धूर्त लोग संसार को किस तरह पर ठगते हैं यह सब धूर्त चक्रवर्ती मूलदेव और स्वार्थवाह चन्द्रगुप्त के सम्वाद में बहुत अच्छी तरह दिखलाया गया है—जिस २ मौके पर जिन ढंगों से धूर्त मक्कार सीधे सरल मनुष्यों को ठगते हैं उसका उदाहरण कलाविलास के १० सर्गों में ऐसी खूबी के साथ दिखलाया है कि उसे लखे रहे तो धूर्तों के चंगुल में न आवें—

कलाविलासः क्षेमेन्द्रप्रतिभाम्भोविनिर्गतः ।
शशीव मानसानन्दं करोतु सततं सताम् ॥

केलीमयः स्मितविलासकलाभिरामः सर्वाश्रयान्तर-
कलाप्रकटप्रदीपः । लोकोपदेशविषयः सुकथाविचित्रो
भूयात्सतां दयित एष कलाविलासः"

ये दो पद्य ग्रन्थ के अन्त में दिये गये हैं–

सुनार बनिये कायस्थ गाने वाले इन सबों से क्षेमेन्द्र न जानिये क्यों चिढ़े थे कि कलाविलास में इन सबों की बड़ी जौट उड़ाया है–

गाने वालों के सम्बन्ध में यह किस्सा बांधा है कि एक समय नारद पृथ्वी में घूमते हुये स्वर्ग में पहुंचे वहां इन्द्र ने नारद का आगत स्वागत के उपरान्त पृथ्वी के राजाओं का हाल पूंछा––नारद ने पृथ्वी के राजाओं के दानधर्म की बड़ी प्रशंसा कर कहा उन लोगों के पास इतना धन है कि धनाधिप कुबेर को तुच्छ समझते हैं और इतने यज्ञ किये हैं कि शतक्रतु "सौ यज्ञ करने वाला" इन्द्र की इस उपाधि पर हंसते हैं–यह सुन इन्द्र को बड़ा द्वेष हुआ और क्रोध में भर पिशाचों की सेना को पृथ्वी पर जाने की आज्ञा दी––वही सेना यहां आय राजा तथा धनवानों का धन मुह बगार २ अनेक नाम रूप से लूटने लगी और राजा लोग गाने के व्यसनी हो यज्ञ दान आदि काम में शिथिल पड़ गये–ये पिशाच गान के बहाने कान के रास्ते राजाओं के भीतर पैठ उन का मन हर लेते हैं–कान के द्वारा मन के भीतर जाते हैं इस्से इन का नाम कर्णपिशाच है–इस लिये मन में विकार पैदा करने वाले इन धूर्तों को जो राजा अपने राज्य में प्रवेश नहीं करने देता उस्का वैभव दिन २ बढ़ता जाता है और पृथ्वी यज्ञ के योग्य हो उस्के आधीन रहती है–ये धूर्त दांत बगार २ गाते नहीं वरन अन्य परम्परा पर चलने वालों का धन छीन उन्हें हंसते हैं–

"एते हि कर्णविवरैः प्रविश्य गीतच्छलेन भूपानाम् ।
सहसा हरन्ति हृदयं कर्णपिशाचा महाघोराः ॥
तस्मादेषां राष्ट्रे न ददाति विकारिणां प्रवेशं यः ।
तस्य सकलार्थसम्पद्यज्ञवती भूमिराधीना ॥
नैतत्प्रकटितदशनागायनधूर्त्ताः सदैव गायन्ति ।

एते गतानुगतिकान् हसन्ति धूर्ता गृहीतार्थान् ॥
गायनसङ्घस्यैक्यादुत्तिष्ठति गीतनिःस्वनः सुमहान्
अस्थाने दत्ताया लक्ष्म्याइव सम्भ्रमाक्रन्दः ॥
नटनर्तकचक्रचराः कुशीलवाश्चारणविटाश्चैव ।
ऐश्वर्यशालिशालभाश्चरन्ति तेभ्यः श्रियं रक्षेत् ॥

इसी तरह सुनार कायस्थ और बनियों के सम्बन्ध में एक २ किस्सा बांध उन की जीट उड़ाया है—

सुनारों के सम्बन्ध में भी ऐसा ही एक हंसी का किस्सा बांधा है—देवासुर-संग्राम में जो असंख्य दैत्य मरे वे सब चूहे होगये—करोड़ों चूहों की सेना सुमेरु पर्वत के नीचे घुस अपने तेज नाखून से खोद २ सोने का पर्वत सुमेर को भीतर ही भीतर पोला करडाला सुमेर गिरने पर हो डगडगाने लगा और बड़ी २ बिल के खोदने से जो गर्द उड़ी वह आठो दिशाओं में छा गई सूर्य को ढांक लिया कल्पान्त का सा अन्धकार होगया—तब देवता सब व्याकुल हो अगस्त्य के शरण में गये और इसका कारण पूछा तो अगस्त्य ने ध्यान कर कहा देवासुरसंग्राम में मरे हुये दैत्य चूहे हो सुमेर को खोदकर ढहाया चाहते हैं इनके नाश की जल्द कोई उपाय न की जायगी तो ये प्रलय कर डालेंगे—देवता सब अगस्त्य की आज्ञा पाय चूहों की बिलों में धुआं भर सब चूहों को मारडाला वे ही मर कर अब सुनार हुये हैं—पूर्व जन्म के अभ्यास के कारण सुमेर सोने का था इस लिये यहां भी फिर जन्म ले वही सोने को रात दिन चूर किया करते हैं—

सहसैव दूषयन्ति स्पर्शे न सुवर्णमुपहतच्छायम् ।
नित्याशुचयः पापाश्चाण्डालाहेमकाराश्च ॥
सारं सकलधनानां सम्पत्सु विभूषणं विपदि रक्षा ।
एते हरन्ति पापाः सततं तेजः परं हेम "—

इस ढंग पर दंभ लोभ अहंकार आदि दुर्गुणों पर एक २ किस्से बांध उन २ दुर्गुणों का उपहास कलाविलास में क्षेमेन्द्र ने अनूठे ढंग की कविता में किया है—दो श्लोकों में दम्भ की किस्में और दम्भ का कुटुम्ब बहुत अच्छा बांधा है—

मुण्डो जटिलो नग्नश्छत्री दण्डी कषायचीरी च ।
भस्मस्मेरशरीरो दिशिदिशिभोगी विजृम्भते दम्भः ॥
लोभः पितातिवृद्धो जननीमाया सहोदरः कूटः ।
कुटिलाकृतिश्च गृहिणी पुत्रो दम्भस्य हुंकरः ॥

दंभ की उत्पत्ति इस तरह पर लिखी गई है—एक समय ब्रह्मा सब सृष्टि रच स्वस्थचित्त बैठे हुए बड़ी देर तक ध्यानकर दिव्यदृष्टि से देखा तो मर्त्यलोक में लोगों को बिना किसी अवलम्ब के पाया और अत्यन्त ऋजु और सीधे होने के कारण सबों को धन और विभव के भोग से वंचित भी पाया यह सोचते ही थे कि अकस्मात् एक पुरुष ब्रह्मा के आगे खड़ा हुआ जिसके एक हाथ में कुशा का मुट्ठा दूसरे में जल से खाली कमण्डलु था—दण्ड और कृष्णाजिन धारण किये बगल में पुस्तक दबाये हुये था रुद्राक्ष और स्फटिक की माला पहने सर्वाङ्ग में भस्म पोते था मौन था पर जप कर रहा था इससे ओट फरक रही थी—ब्रह्मलोक में भी पवित्रता के लिये दूसरों का स्पर्श बचाता हुआ इस बातकी आकांक्षा में रहा कि ब्रह्मा उठके हमें अभ्युत्थान करें तो हम बैठें—ब्रह्मा की सभा के ऋषि सब इसके आडम्बर से क्षोभ में आय खड़े हो गये ब्रह्मा भी इसके दंभ से दंग हो बोले—पुत्र तुम अपने अनेक गुणों के कारण सब भांत सुयोग्य हो—तुम मेरे गोद आ बैठो—पिता की आज्ञा मानना उचित समझ संकोच में आय जल से तीन बार ब्रह्मा की गोद धोकर बैठ तो गया पर हाथ से इशारा करता ही रहा कि हाथ का आड़ कर बोलो जिसमें मुख की हवा अंग में न लगने पावे नहीं तो नहाना पड़ेगा—इसका यह सब ढंग देख ब्रह्मा हंस कर बोले हम जान गये तुम दंभ हो तुम हमारा मनोरथ पूरा करोगे तुम मर्त्यलोक में जा समुद्र पर्यन्त सम्पूर्ण पृथ्वी भर में जहां चाहो वहां विचरो तुम्हारे भेद को देवता लोग भी न जान सकेंगे—तुम्हारा मान्य सब ठौर होगा—तीर्थों में, देवस्थान में, तपस्वी और भिक्षुकों के समाज में, तान्त्रिकों के दल में, तुम बड़ा आदर पाओगे—वेदपाठी, पुराण बाचने वाले, वृत्ति से जीने वाले ब्राह्मण, पंडे पुजेरी वैद्य ज्योतिषी राज दरबार में रहने वालों का तो बिना तुम्हारे काम ही नहीं चलेगा—दंभ इस वरदान से निहाल हो उठ खड़ा हुआ और ब्रह्मा से विदा हो उन के बताये हुये स्थानों में मन मानता विचरने लगा—

इसी तरह लोभ के प्रकरण में कृपण बनियों का बहुत अच्छा चित्र उरेहा है—काम के प्रकरण में स्त्रीजित् कामियों का भी वैसा ही चित्र क्षेमेन्द्रने खीचा है—

"दानोपभोगरहितहिरण्यरक्षा कृतक्षणाः सततम् ।
संसारजीर्णमन्दिरविषममहामूषिका वणिजः ॥
क्रयविक्रयकूटतुला लाघवनिःक्षेपरक्षणव्याजैः ।
एते हि दिवसचौरा मुष्णन्ति मुदा धनं वणिजः ॥
आख्यायिकानुरागी व्रजति सदा पुण्यपुस्तकं श्रोतुम् ।
दष्टइव कृष्णसर्पैः पलायते दानधर्मेभ्यः ॥
दत्वा दिशि दिशि दृष्टिं याचकचकितोऽवगुण्ठनं कृत्वा ।
चौरइव कुटिलचारी पलायते विकटरथ्याभिः ॥
हादश्यां पितृदिने सङ्क्रमणे सोम सूर्ययोर्ग्रहणे ।
सुचिरं स्नानं कुरुते न ददाति कपर्दिकामेकाम् ॥
हृत्वाधनं जनानां दिनमखिलं कूटमायाभिः ।
वितरति गृहे किराटः कष्टेन वराटिका त्रितयम् " ॥

ये सब श्लोक बनियों के उपहास के और अत्यन्त सामयिक हैं—इसी तरह स्त्री जितों का उपहास नीचे के श्लोकों में किया गया है—

दीर्घव्यसननिरुद्धो भ्रूभङ्गज्ञो विधेयतां जातः ।
विषयविवशो मनुष्यः केलिशिखण्डीव नृत्यते स्त्रीभिः ॥
रक्ताकर्षणशक्ता मायाभिर्मोहतिमिररजनीषु ।
नार्यः पिशाचिका इव हरन्ति हृदयानि मुग्धानाम् ॥
जातः स एव लोके बहुजन हृद्याविलासकुटिलाङ्गी ।
धैर्यध्वंसपताका यस्य न पत्नी प्रभुर्गेहे ॥
निजपतिचपलतुरङ्गी परतरुभृङ्गी स्वभावमातङ्गी
मिथ्याविभ्रमभृङ्गी कुटिलभुजङ्गी निजाकस्य ॥

नयनविकारैरन्यं वचनैरन्य विचेष्टितैरन्यम् ।
रमयति सुरतेनान्यं स्त्रीबहुरूपा स्वभावेन ॥

कलाविलास के उपरान्त दूसरा ग्रन्थ क्षेमेन्द्र का दर्पदलन है जिस में कुल, विद्या, रूप, वीरता, दान, तपस्या, धन, इन सात तरह के अभिमान का उपहास किया गया और ये ही सात बातें हैं जो खास कर आदमी में विशेष अभिमान पैदा करने वाली होती हैं–उपदेशमिश्रित दर्पदलन की सरस कविता का स्वाद दिलाने को नमूने के ढंग पर यहां हम कुछ थोड़ासा दिखलाते हैं–पहिला प्रकरण कुलाभिमान का है–हकीकत में कितने लोग गुण का लेश भी न रख केवल ऊंचे कुल में पैदा होने के अभिमान में उन्मत्त रहते हैं वे अवश्य उपहास के योग्य हैं– यहां पर क्षेमेन्द्र ने इसे कई एक युक्तियों से सिद्ध किया है कि कुल की प्रतिष्ठा केवल गुण से है इसलिये ऊंचे कुल में जन्म कुछ नहीं है तब कुलाभिमान कैसा–

गुणाधीनं कुलं ज्ञात्वा गुणेष्वाधीयतां मतिः । और भी–

"गुणवत्कुलजातोपि निर्गुणः केन पूज्यते ।
दोग्ध्री कुलोद्भवा धेनुर्वन्ध्या कस्योपयुज्यते"–

जिस कुल में बराबर गुणवान् होते आये हैं उस कुल में पैदा होकर भी निर्गुणी हुआ तो कौन उसकी प्रतिष्ठा करेगा—थान की अच्छी दुधार गऊ बांझ हुई तो कौन उसे बांध सक्ता है–कुल स्त्रियों के आधीन है स्त्रियां स्वभाव ही की चंचल और नीचप्रवृत्ति की होती हैं तब कुलाभिमान कैसा–

"कुलाभिमानः कस्तेषां जघन्यस्थानजन्मनाम् ।
कुलकूलङ्कषा येषां जनन्यो निम्नगाः स्त्रियः"—

कुलाभिमान के प्रसङ्ग में कई श्लोक ऐसे यहां पर दिये गये हैं जिन्में उपदेश टपक रहा है जैसा–

"एतदेव कुलीनत्वमेतदेव गुणार्जनम् ।
यत् सदैव सतां सत्सु विनयावनतं शिरः ॥

यही कुलीनता है यही गुणवान् होने का फल है कि भले लोगों के प्रति विनीतभाव से शिर झुकाये रहे–

दयैव विदिता विद्या सत्यमेवाक्षयं धनम् ।
अकलङ्कविवेकानां शीलमेवामलं कुलम् ॥

दया ही एक प्रसिद्ध विद्या है—सत्य ही अक्षय धन है—कलंक रहित विवेकियों के लिये शील पालन करना ही विमल कुल है—

द्वेषः कस्य न दोषाय प्रीतिः कस्य न भूतये ।
दर्पः कस्य न पाताय नोन्नत्यै कस्य नम्रता ॥

द्वेषबुद्धि किस्को बुराई के लिये नहीं होती—सबों से प्रीति जिस्को सम्पत्ति बढ़ाने का हेतु नहीं है—अभिमान जिस्को नीचे गिराने का बाइस नहीं होता—नम्र हो कौन उन्नति नहीं पाता—

त्यागिना किं दरिद्रेण किं कुलीनेन पापिना ।
तुष्टेन किं कदर्येण दर्पान्धेन बुधेन किम् ॥

जिस्को देने की टेव पड़गई है वह कैसा ही दरिद्र होगया हो तौ भी देना नहीं कम करेगा—पापी हुआ तो कुलीन घराने में जन्मलेने से क्या—कदर्य रीझा भी तो क्या दे देगा—अभिमान में अन्धा विद्वान् हुआ तो क्या—

वैरायते सुहृद्भावः प्रदानं हरणायते ।
दर्पभूताभिभूतस्य विद्या मूर्खशतायते ॥

अभिमानी का मैत्रीभाव बैर मालूम देता है—देना छीन लेने के बराबर है—उस्का विद्वान् होना सौ मूर्ख के समान है—

गुणिनां मत्सरः शत्रुर्लुब्धानामतियाचकः ।
सर्वएव सदर्पाणां न कश्चित् प्रियवादिनाम् ॥

गुणवान् को डाह रखना शत्रु के समान है—लोभी को मांगने वाला शत्रु है—अभिमानी के सबी शत्रु हैं—प्रियवादी का कोई भी शत्रु नहीं है—

नीचे के दो श्लोक वर्णशङ्कर और कुलीन की पहचान के लिये बहुत अच्छे हैं—

दयादरिद्रं हृदयं वचः क्रकचकर्कशम् ।
योनिशंकरजातानामेतत्प्रत्यक्षलक्षणम् ॥
नवनीतोपमा वाणी करुणा कोमलं मनः ।
एकबीजप्रजातानां भवत्यवनतं शिरः ॥

विद्या विवादाय धनं मदाय प्रज्ञाप्रकर्षः परवंचनाय ।
अत्युन्नतिर्लोकपराभवाय येषां प्रकाशस्तिमिरं हि तेषाम् ॥

जिन को विद्या विवाद के लिये–धन मद के लिये–बुद्धि का प्रकर्ष दूसरों को ठगने के लिये—जिन की अधिक बढ़ती औरों को दबाने के लिये है उन को प्रकाश भी अन्धकार के समान है–

दूसरा प्रकरण धनाभिमान का है जिसमें पहिले धन की थोड़ी सी प्रशंसा कर पीछे फिर यह दिखलाया है कि धन से यदि कोई भला काम न बन पड़ा तो यह एक तुच्छ पदार्थ है–नन्दनाम का एक सार्थवाह के किस्से में धनाभिमान का बड़ा ही उपहास किया गया है–जैसा–

तृप्तिदं दर्शनेनापि जन्तोर्जीवितजीवितम् ।
द्रविणं ये न रक्षन्ति स्वकायं भक्षयन्ति ते ॥

देखने ही से तृप्ति पहुंचाने वाला आदमी के जीवन की जीवनी शक्ति धन को जिन्हों ने न रक्खा वे मानो अपनी देह को आप खा रहे हैं–

पण्डिताः कवयः शूराः कलावन्तस्तपस्विनः ।
वैद्यस्येव सवित्तस्य वीक्ष्यन्ते मुखमातुराः ॥

पण्डित, कवि, योद्धा, वीर, अनेक कला में निपुण, तपस्वी, ये सब धनी का मुह वैसे ही जोहते रहते हैं जैसा रोगातुर वैद्य का मुह जोहता है–

सन्तः कुर्वन्ति यत्नेन धर्मस्यार्थे धनार्जनम् ।
धर्माचारविहीनानां द्रविणं मलसंचयः ॥

भले लोग धर्म के लिये धन बटोरते हैं–धर्म का काम बिना किये धन मानो मल का ढ़ेर है–

मलिनस्य कुवस्त्रस्य स्वल्पाशनपरस्य च ।
दारिद्र्याधिककष्टस्य कदर्यस्य धनेन किम् ॥

कदर्य को धन भी हुआ तो उसे उस धन से क्या सुख–जो खर्च हो जाने के डर से पेट भर खाता भी नहीं तो अच्छा खाना अच्छा पहिनना कहां रहा–ऐसे को धन दरिद्र से भी अधिक दुखदायी है–

निर्द्धनाः सुखिनो दृष्टाः सधनाश्चातिदुःखिताः ।
सुखदुःखोदये जन्तोर्दैवाधीने धनेन किम् ॥

निर्द्धनी सुखी देखे गये धनवान् बड़े दुखी—जब सुख दुख मनुष्य को दैवाधीन है तो धन से क्या—

इस तरह धन के उपहास के बहुत से श्लोक अनूठी उक्ति युक्ति के दिये हैं—विद्याभिमान रूपाभिमान दान तथा तपस्या के अभिमान का स्वरूप एक एक मनोरंजक इतिहास के साथ दिखलाय उन का उपहास बड़ी अच्छी युक्ति के साथ किया गया है—दर्पदलन का अभ्यास करने वाला अभिमान में अन्धा नहो परम शान्ति के सुख का अधिकारी हो सकता है—दर्पदलन के उपरान्त तीसरा ग्रन्थ क्षेमेन्द्र का चारुचर्या और सेव्यसेवकोपदेश है ये दो ग्रन्थ भी उपदेश के हैं चारुचर्या के सौ श्लोक में सौ उपदेश दिये हैं जैसा—

"जन्मावधि न तत्कुर्यादन्ते सन्तापकारि यत् ।
सस्मारैकशिरःशेषः सीताक्लेशं दशाननः„ ॥

अन्त में जो क्लेश दाई हो उसे जीवन पर्यन्त न करै—दशानन मरते समय जब नौ शिर उसके कट गये उस समय सीता के हरलाने के अन्याय को याद कर पछताया—

"जराशुभ्रेषु केशेषु तपोवनरुचिर्भवेत् ।
अन्ते वनं ययुर्धीराः कुरुपूर्वा महीभुजः„ ॥

जब बुढ़ापे के कारण बार सफेद हो जांय उस समय तपोवन में वास करने की रुचि करे—कुरुवंशी राजा सब अन्त में तपःशील हो जाय वन में बसे—

बन्धूनां वारयेद्वैरं नैकपक्षाश्रयो भवेत् ।
कुरुपाण्डवसंग्रामे युयुधे न हलायुधः ॥

भाइयों में आपस के वैर को प्रोत्साहित न करे न किसी एक का पक्ष ले कौरव पाण्डव के युद्ध में बलदेव जी सब से अलग रहे—

परोपकारं संसारसारं कुर्वीत सत्ववान् ।
निदधे भगवान् बुद्धः सर्वसत्वोद्धृतौ धियम् ॥

दूसरे का उपकार जो संसार में सार पदार्थ है बुद्धिमान् उसे करता रहे भगवान बुद्धदेव ने जीव मात्र के उपकार में दृष्टि रख अहिंसा श्रेष्ठ धर्म का उपदेश दिया—

"बिभृयाद्बन्धुमधनं मित्रं त्रायेत दुर्गतम् ।
बन्धुमित्रोपजीव्यो भूदर्थिकल्पद्रुमो बलिः ॥

जिस्के पास धन न हो ऐसे अपने भाई का भरण पोषण करता रहे और मित्रको दुर्गति से बचावे—राजा बलि इन्ही बातों से दानियों में अगुआ कहलाये

न त्यजेद्धर्ममर्यादामपि क्लेशदशां श्रितः ।
हरिश्चन्द्रो हि धर्मार्थी सेहे चाण्डालदासताम् ॥

क्लेशमें पड़कर भी धर्म न छोड़े हरिश्चन्द्र ने डोम की सेवकाई केवल सत्यधर्म के पालन के लिये किया—

कुर्वीत सङ्गतं सद्भिर्नासद्भिर्गुणवर्जितैः ।
प्राप राघवसङ्गत्या प्राज्यं राज्यं विभीषणः ॥

भले लोगों की संगति में रहे निर्गुणी बुरों का साथ कभी न करे—विभीषण रामचन्द्र के साथी हो लंका के समृद्ध राज्य के स्वामी हुये ।

न सत्यव्रतभङ्गेन कार्यं धीमान् प्रसाधयेत् ।
ददर्श नरकक्लेशं सत्यनाशाद्युधिष्ठिरः ॥

सत्य को छोड़ कर लाभ होता हो तो उस्की इच्छा न करे युधिष्ठिर को धर्म के छोड़ने से नरक देखना पड़ा—

हितोपदेशं श्रुत्वा तु कुर्वीत च यथोचितम् ।
विदुरोक्तमकृत्वा तु शोच्योऽभूत्कौरवेश्वरः ॥

हित की बात सुन जहां तक होसके उसे करे धृतराष्ट्र विदुर के कहने को न कर पीछे पछताया—

स्त्रीजितो न भवेद्धीमान् गाढरागवशीकृतः ।
पुत्रशोकाद्दशरथोजीवं जायाजितोऽत्यजत् ॥

गाढ़ी प्रीति के वश में पड़ बुद्धिमान् स्त्री के आधीन न हो—दशरथने स्त्री जित होने से पुत्र शोक में प्राण त्यागा—

कुर्यान्नीचजनाभ्यस्तां न याच्ञां मानहारिणीम् ।
बलियाच्ञापरः प्राप लाघवं पुरुषोत्तमः ॥

नीच लोगों के समान याचना न करै–विष्णु को याचना ही के कारण वामन होना पड़ा–इत्यादि थोड़े से उदाहरण चारुचर्या के देने से ग्रन्थ की उत्तमता का परिचय पढ़ने वालों को हो सकता है–

सेव्य सेवकोपदेश–इस छोटे से ग्रन्थ में स्वामी और सेवक दोनों की भरपूर जीट उड़ाया है–सेवा धर्म की बड़ी निन्दा की है जिस २ तरह पर आधीन और सेवक को मालिक की बात सह दीन होना पड़ता है उसका बहुत उत्तम चित्र क्षेमेन्द्रने इस ग्रन्थ में दिया है ॥

अदैन्यपुण्यमनसां यशस्तेषां विराजते ।
सेवापङ्ककलङ्कानां यैर्न पात्रीकृतं शिरः ॥

दीनता का दुःख न सहने वाले पुण्यात्मा धन्य हैं जिन्हें सेवा के कीचड़ से अपने को मैलाकर किसी के आगे सिर नहीं झुकाना पड़ा–

सेवाध्वजोऽञ्जलिर्मूर्ध्नि हृदि दैन्यं मुखे स्तुतिः ।
आशाग्रहगृहीतानां कियतीयं विडम्बना ॥
भूमिशायी निराहारः शीतवातातपक्षमः ।
मुनिव्रतोपि नरकक्लेशमश्नाति सेवकः ॥
कणवृत्तिपरिक्लिष्टः कष्टं सेवकचातकः ।
घनाशानिरतो नित्यमुद्वीवः परिशुष्यति ॥ इत्यादिः–

किरानी गीरी के बाबुओं को क्षेमेन्द्र का सेव्यसेवकोपदेश घोखाय दियाजाय तो बड़ा उपकार हो और बहुत जल्द गुड़ सरविस के मुश्तहक हो जाया करैं–

सुवृत्ततिलक–हम पहिले लिख आये क्षेमेन्द्र साहित्य के सर्वांश में व्यापक थे काव्य का कोई हिस्सा नहीं बचा जिस्में इन्हों ने अपनी असामान्य प्रतिभा की बिच्छित्ति न दर्शाया हो–सुवृत्ततिलक छन्दोमञ्जरी और वृत्तरत्नाकर के समान छन्द का ग्रन्थ है–इस्में अभ्यास करने से केवल छन्द बनाने में प्रवीणता होती हो सो नहीं वरन सुवृत्ततिलक के दूसरे विन्यास में प्राचीन कवियों के छन्द में

गुण दोष दिखलाये हैं–इससे कालिदास आदि कवियों के पद्य में कहां पर दोष है कहां पर गुण है इसका पता भी लगजाता है–जैसा कि तीन २ अक्षर पर विराम दोधक वृत्तको अत्यन्त उत्तम करता है जैसा नीचे के इस पद्य में दिखलाया गया है

सज्जन पूजन शीलन शोभा मर्जय वर्जय दुर्जन संगम् ।
दुस्तर संसृति सागर वेगो मज्जन कारण वारण मेतत् ॥

सज्जनों को प्रतिष्ठा देने का शील रखने से जो शोभा होती है उसे उपार्जन करो–दुर्जन का साथ छोड़ो–दुस्तर संसारसागर के वेग में डूबने के कारण के वारण का उपाय यही है–

इसके तीसरे हिस्से में किस कवि का कौन छन्द अतिशय रमणीक है इस बात को दिखलाया है—जैसा शार्दूलविक्रीडित राजशेखर का प्रशंसनीय है—मन्दाक्रान्ता कालिदास का—भवभूति की निरर्गल कविता शिखरिणी छन्द के लिये प्रशंसनीय हैं–भारवि का वंशस्थवृत्त—पाणिनिकवि का उपजाति छन्द–इत्यादि–दूसरी बात इसमें बड़ी उत्तम यह दिखलाई गई है कि किस छन्दमें किस प्रकार का वर्णन सोहावना लगता है—जैसा शृङ्गार का अवलम्बन नायिका के रूप का वर्णन ऋतु वर्णन उपजाति छन्द में सोहता है–किसी विस्तृत कथा का वर्णन का आरंभ अनुष्टुप् छन्द में भला मालूम होता है–चन्द्रोदय वर्णन रथोद्धता वृत्त में–नीति सम्बन्धी सन्धि विग्रह आदि वंशस्थवृत्त में–वीर और रौद्र रस का जहां संकर हो वहां वसन्ततिलक और अन्त में मालिनी छन्द–उदारता का वर्णन हरिणी छन्द में–आक्षेप क्रोध धिक्कार पृथ्वी छन्द में—वर्षा में प्रवास वर्णन मन्दाक्रान्त छन्द में–वीरता तेज प्रताप शार्दूलविक्रीडित छन्द में इत्यादि—

औचित्यविचार चर्चा—इसमें क्षेमेन्द्र ने पद में वाक्य में प्रबन्ध में काव्य के प्रसाद माधुर्य आदि गुण में–उपमा आदि अलंकार में–क्रिया में कारक में लिंग में वचन में विशेषण में जहां पर जैसा उचित होना चाहिये सो दिखाया है—जहां कहीं पद वाक्य प्रबन्ध आदि में पुराने कवियों ने कुछ अनुचित किया है उसे शोधा भी है–संस्कृत के साहित्य को जो सांगोपांग जानते हैं वेही इस ग्रन्थ के पठन पाठन के अधिकारी हो सकते हैं–अल्पज्ञ कुछ भी न जान सकेगा कि कविने इसमें क्या कारीगरी किया–

कविकण्ठाभरण–यह अलंकार का एक ग्रन्थ है सत्य २ यह कवियों के कण्ठ का आभरण है अलंकार के और ग्रन्थों को पढ़ जो काव्य वासना परिपक्व हैं वास्तव में यह उन के कण्ठ का आभरण है—

समय मातृका—यह ग्रन्थ दामोदर गुप्त रचित कुट्टिनी मत के परतो पर बनाया गया है ऐसा मालूम होता है क्षेमेन्द्र ने दामोदर गुप्त का इसमें प्रत्यक्षर अनुकरण किया है–कुट्टिनी मत के कर्ता दामोदर गुप्त काश्मीराधिप जयापीड़ के मंत्री थे और ईसवी सन् की आठवीं शताब्दी में हुये हैं–समयमातृका की बड़ी मनोहर कविता में यह दिखलाया है कि वेश्यासक्त विषय लम्पट अपना सब धन इस दुर्व्यसन में नष्ट कर पीछे से क्या २ दुर्दशा भोगते हैं और वेश्याओं में जो नायिका होती हैं वे कामुकों को किस तरह पर अपने जाल में फंसाती हैं–इस ग्रन्थ के पढ़ने से दो बातें हो सक्ती हैं या तो इसका पढ़ने वाला यदि लंपट हुआ तो अपने लंपटता के काम में ताक और उस्ताद हो जायगा नायिकाओं के जाल में न फसेगा–या यदि इस बात पर उसका ध्यान गया कि ये पिशाची वेश्यायें किस २ तरह ढंग पर लाय कामी का सर्वस्व हर लेती हैं यह बुरा काम है इससे दूर ही रहना अच्छा ऐसा गिल्यान मन में आया तो वह आदमी इस दुर्व्यसन से मुक्त हो यावज्जीव के लिये शिष्ट सम्मत सुचाल भी हो जायगा—शेष ग्रन्थ क्षेमेन्द्र के–असततरङ्ग काव्य–कनकजानकी–चतुर्वर्गसंग्रह—चित्रभारत नाटक–दशावतारचरित काव्य–देशोपदेश–नीतिकल्पतरु। पद्यकादम्बरी–पवनपंचाशिका—वृहत्कथामंजरी–बोधिसत्वावधानकल्पलता–भारतमञ्जरी—मुक्तावली–राजावली–रामायणमंजरी–लावण्यवती–लोकप्रकाश कोष—वात्स्यायनसूत्रसार–व्यासाष्टक–शशिवंश महाकाव्य–हस्तिजनप्रकाश–अवसरसार–मुनिमत मीमांसा–ललितरत्नमाला–नीतिलतावितयवल्ली—क्षेमेन्द्र के जो ग्रन्थ अब तक काव्यमाला में प्रकाशित हो चुके हैं उन की सूक्ष्म समालोचना यहां पर हमने कर दी जिससे पढ़ने वाले को क्षेमेन्द्र की प्रतिभा की कुछ टटोल हो सक्ती है—केवल हिन्दी जानने वालों से प्रार्थना है वे इसे व्यर्थ न समझें हम ने बड़े परिश्रम से इसे संग्रह किया है–यदि उन्हें यह लेख न रुचे तोभी पत्र की फहल में पड़ा रहेगा तो कभी को उपकारी होगा–अनन्तराज जिन के समय क्षेमेन्द्र हुये हैं इसवी सन् की १०२८ से १०८० तक राज करते रहे वही समय क्षेमेन्द्र का भी है—औचित्य विचार चर्चा के अन्त में कवि ने अपने पिता प्रकाशेन्द्र का भी कुछ थोड़ा सा हाल दिया है–"आसीत्प्रकाशेन्द्र इति प्रकाशः–काश्मीरदेशेत्रिदशेश्वराभः।

अभूदृगृहे यस्य पवित्रसत्रमच्छिन्नसमग्रासनसमग्रजानाम् ॥"

ग्रन्थप्राप्ति

गणरत्नमहोदधिः ।

पाणिनीय महामुनिने अपने व्याकरण में जिन शब्दों में एकसा प्रत्यय या कोई दूसरी बात उन शब्दों के सिद्ध करने में आपेक्षित समझा या जिस शब्द की उन्हों ने कोई दूसरी गति न देखा उसे गण में समावेशित कर अष्टाध्यायी के समान एक गणपाठ अलग रचा है—वर्द्धमान नाम के कोई प्राचीन पण्डित ने उसी गणपाठ को श्लोकबद्ध कर अपनी निज की बनाई वृत्ति समेत गणरत्नमहोदधि नामका एक ग्रन्थ रचा जो पहिले एकबार छपा—अब अप्राप्यथा—उसे श्रीपण्डित भीमसेन शर्मा ने बड़े परिश्रम से अपने निज के सरस्वतीयन्त्रालय में फिर से मुद्रित किया है—अब की वार फिर से छपी इस पुस्तक में बड़ी तारीफ की बात यह है कि उक्त पण्डित जी ने ग्रन्थ के अन्त में अकारादि क्रमसे गण में पठित शब्दों की शब्दानुक्रमणिका दी है जिस्से शब्द बहुत सहज में पढ़ने वाला निकाल सक्ता है—इस प्रकार की अनुक्रमणिका या सूची बनाने में केवल परिश्रम ही दरकार नहीं है किन्तु पण्डित जी की व्याकरण में कैसी उत्कृष्ट योग्यता है यह भी इस्से प्रकट होता है—ग्रन्थ यह बहुत उत्तम है वर्द्धमानने गणरत्न की वृत्ति में जो वेद पुराण धर्मशास्त्र तथा काव्यों से छांट २ गण में पठित शब्दों के उदाहरण दिये हैं बहुत उत्तम हैं जिस्से यह मालूम हो जाता है कि कौन शब्द को किस तरह पर किस अर्थ में प्रयोग करना उचित है—ग्रन्थ यह शुद्ध पुष्ट अक्षरों में छपा है वैयाकरणों के लिये यह ग्रन्थ वैसा ही उपयोगी है जैसा अष्टाध्यायी और भाष्य है—मूल्य २) सरस्वतीयन्त्रालय के मालिक पण्डित भीमसेन शर्मा को लिखने से यह ग्रन्थ यहां इलाहाबाद में मिलेगा ॥

पातञ्जलदर्शनप्रकाश

निखिल शास्त्र निष्णात श्रीमत्परमहंस उदासीन यतीन्द्र स्वामी बालराम कर्तृक महामुनि पतञ्जलिकृत योगसूत्रों का भाषानुवाद—इस ग्रन्थ को पढ़ ग्रन्थकार श्री स्वामी जी के अथाह पाण्डित्य का खयाल कर मन चकित होता

है कि एक ही मनुष्य में कैसे इतनी विद्या समाय गई—अपूर्व पुण्योदय से इस कुंभ मेले में स्वामी जी महाराज का हमें भी साक्षात्कार हुआ और शास्त्रों के जिस विषय पर चर्चा चली उस्में इन्हें सब भांत पूर्ण पाय जी में ढाढस बन्धा कि अभी भारत से भारती का लोप नहीं हुआ—उपरान्त इस ग्रन्थ को पढ़ जो यही कहता है कि सत्संग की जो ऐसी महिमा बहुधा ग्रन्थों में गाई गई है सो सत्संग ऐसे ही प्रमाता अधिकारी का करना उचित है—अस्तु इस ग्रन्थ में वाचस्पति मिश्र कृत तत्त्ववैशारदि नामक व्याख्या और महर्षि वेदव्यास के योग भाष्य का भी भावार्थ संग्रह किया गया और जिस ढंग से इन दोनों का समावेश इस्में किया गया है वह ऐसे ही विद्वान् का काम है जैसे स्वामी बालराम जी—यह ग्रन्थ महाराज कुमार बाबू रामदीन सिंह महोदय की प्रार्थना से खड्गविलास प्रेस बांकीपुर में छपा है इस लिये विद्यारसिक सौजन्यसागर उक्त बाबू साहब को भी इसका अनेक धन्यवाद है जिन को रत्न के संग्रह की धुन बंधी हुई है—

गंगास्थितिसमयमीमांसा ॥

यह ग्रन्थ भी उक्त स्वामी जी कृत है इस्में गङ्गा जी की स्थिति कब तक रहेगी इसका विचार किया गया है पांच सहस्र वर्ष कलियुग में गंगा रहेंगी यह जो मूर्खों में एक प्रवाद चल पड़ा है इसका भरपूर खण्डन इस्में है—इतिहास सम्बन्धी बहुतसी बातें इस्में बड़े उपकार की दीगई हैं—यह पुस्तक भी खड्गविलासप्रेस में छपी है—

अवोधध्वान्तमार्तण्ड—

प्रतिमापूजन श्राद्ध में पिण्डदान इत्यादि हिन्दू मत की अनोखी बातें जिस्के पीछे स्वामी दयानन्दसरस्वती व्यर्थ लट्ठीतान दौड़े हैं उसका बहुत अच्छा जवाब इस्में दिया गया है—इस्में सन्देह नहीं कि वाद युद्ध में पण्डितों के बीच दयानन्द का यदि कोई प्रति मल्ल है तो यही बालराम हैं—दयानन्द केवल आर्ष ग्रन्थों ही में अभ्यास कर अपनी योग्यता को सीमा बद्ध कर रक्खा था हाल के पण्डितों ने अपनी प्रखर बुद्धि से शास्त्र के प्रत्येक विषयों पर जो कुछ बारीकी और उन २ सूक्ष्म बातों का मर्म तिलक टिप्पणी के द्वारा निकाला उस्से सर्वथा

अनभिज्ञ और नावाकिफ थे—बालराम प्राचीन ऋषि और नवीन पण्डित दोनों के बुद्धि के सारांश निचोड़े हुये हैं—मूल्य इस पुस्तक का ॥।) है खड्गविलास प्रेस में छपी है—

हरिश्चन्द्रकला

पांच जिल्द में सुगृहीतनामधेय श्रीमान् बाबू हरिश्चन्द्र के लेख का पूरा संग्रह—हरिश्चन्द्र के उत्तम लेख को कौन नहीं जानता हम सब लोग जो इस समय हिन्दी के सुलेखक होने का बड़ा अभिमान रखते हैं बाबू हरिश्चन्द्र ही के दिखलाये मार्ग पर चल रहे हैं और जो इस अहङ्कार में फूले नहीं समाते कि हम मरती हुई हिन्दी को करावलम्ब दिये हैं सो यह भी निरी हिमाकत है "स तु तत्र विशेषदुर्लभः सदुपन्यस्यतिकृत्यवर्त्म यः" जब घाट बन कर तैयार हो गया तब वहां आकर नहाने का मन सभी करते हैं दुर्घट तो घाट का बनवाना है—उक्त बाबू साहब ने हिन्दी के लिये क्या नहीं किया अपनी कई लाख की पूंजी हिन्दी ही के पीछे खोय बहाय आप दरिद्र हो गये पर उर्दू के मुकाबिले इसे प्रचलित करी तो दिया और ऐसी शुभ घड़ी से इसकी नेह दिया कि इतने नैराश्य पर भी हिन्दी की बेल अब तक बढ़ती ही जाती है—अस्तु बाबू हरिश्चन्द्र के उपरान्त हिन्दी के उद्धार की दीक्षा लिये हुये अब इस समय महाराज कुमार बाबू रामदीन सिंह हैं—ईश्वर इन्हें चिरायु करे और हिन्दी के उद्धार का उत्साह भी इन का ऐसा ही बढ़ाता जाय——कला के प्रथम भाग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के मुद्राराक्षस इत्यादि नाटक रूपक और प्रहसनों का संग्रह है—मूल्य मै डाक महसूल ४।≡) है—इतने थोड़े मूल्य में १९ नाटकों का संग्रह हो जाता है—

दूसरे भाग में इतिहास समुच्चय अर्थात् प्राचीन इतिहास और शंकर, मध्व, वल्लभ, जैदेव, आदि महापुरुषों के जीवनचरित्र का संग्रह है—मूल्य मय डाकव्यय ३।-) है—

तीसरा भाग सच्ची राजभक्ति—इसमें राजभक्ति के उद्गार से भरे हुये अनेक तरह के पद्यों में राजकीयविषयक लेख का संग्रह है जिसे बाबू हरिश्चन्द्र ने समय २ प्रकाशित किया था—मूल्य मै डाकव्यय २।)

चौथा भक्तरहस्य—गद्य पद्यात्मक भक्तिसम्बन्धी लेख का संग्रह—मूल्य ४।=) मै डाक महसूल—इसमें १८ पुराण की संक्षिप्त समालोचना बड़ी उत्तम है—

पांचवां भाग—काव्यामृतप्रवाह—उक्त बाबू साहब की फुटकर कविताओं का संग्रह मूल्य मै डाकव्यय ४।=)

उपदेशकुसुमाकर ॥

बाबू शीतलप्रसाद सिंह रचित—भाई भाई की प्रीति माता और पिता की भक्ति इत्यादि १३ विषय के उपदेशात्मक अनूठे लेख का संग्रह इस पुस्तक में है मूल्य ॥) खड्गविलास प्रेस में छपी है—

सुचलशिक्षा प्रथमभाग ॥

ब्राह्मणपत्र के सम्पादक पण्डित वर प्रतापनारायण मिश्र की बनाई—मूल्य।) नित्यकर्म—समय पर दृष्टि—मनोयोग लोकलज्जा—इत्यादि २१ बात २१ पाठ में बहुत अच्छी तरह इसमें दरसाई गई हैं—ये दोनों पुस्तकैं बालकों को बड़े उपकार की हैं—नेसफील्ड साहब की झोली न भरैगी इसका खयाल न हो तो गवर्नमेंट उन पुस्तकों को यदि इन ज़िलों के स्कूल में जारी कर दे तो बालकों का बड़ा उपकार हो—शिकारिसी टट्टुओं की जो रद्दी किताबें हमारे स्कूलों में प्रचलित हैं उससे इन पुस्तकों का दाम भी बहुत कम है—

रामहोरी रहस्य ॥

श्रीरामनाथ प्रधान कृत—क्षत्रियपत्रिका सम्पादक श्रीमहाराज कुमार बाबू रामदीन सिंह द्वारा संगृहीत कविता इस ग्रन्थ की बड़ी मीठी और सुहावनी है—

रामकलेवा रहस्य ॥

यह पुस्तक भी वैसी ही मधुर कविता में उसी कवि की बनाई था—रामदीन सिंह द्वारा संगृहीत की गई है—

नानकविनय ॥

ज्ञान वैराग्य भक्ति रसमय भजनों का संग्रह ग्रन्थसाहब से उद्धृतकर उक्त बाबू साहबने प्रकाशित किया है—

साहित्यसुधानिधि ॥

इस मासिक पुस्तक की दो जिल्द हमारे पास और आई हैं—इसके स-

म्पादक बाबू देवकीनन्दन को धन्यवाद है जो अपने मनोहर लेख से हिन्दी के उज्जीवन में हमारा साथ दे रहे हैं–

रामचरितमानस ॥

बाबा तुलसीदास जी के हाथ की लिखी पुस्तक का फोटो तथा बाबा तुलसीदास और कई एक दूसरी दूसरी फोटो समेत बड़े पुष्ट शुद्ध अक्षरों में–ऐसा रामायण अब तक कहीं नहीं छपा आदि में गुसांई जी का जीवनचरित्र भी दिया है मूल्य मै फोटो और जीवनचरित्र के ६) बिना फोटो की ४) बाबू रामदीन सिंह को इस पुस्तकप्राप्ति का अनेक धन्यवाद है–यह पुस्तक खड्गविलास प्रेस में मिलेगी–

शिकारी और सिंह की कहानी ॥

एक बड़ा चतुर शिकारी शिकार के खोज में पहाड़ों में गया। उस के वहां पहुंचते ही उस देश के सारे पशु इधर उधर भाग गये। परन्तु सिंह अकेला वहां रहकर उस से लड़ने की चेष्टा की। इस पर शिकारी ने झटपट एक बाण सिंह की ओर चलाया और उस से कहा कि मैं तुम को अपना दूत भेजता हूं ताकि तुम इस से यह शिक्षा सीख सको कि अगर मैं आप तुम्हारे ऊपर धावा करूं तो क्या कुछ होगा। सिंह घाव खाके भयातुर हो दौड़कर भागा और जब एक लोमड़ी ने उस को उपदेश देकर कहा कि हे मित्र? ढाड़स बांध पहिली चढ़ाई पर मत भाग। तब उस ने जवाब दिया कि तुम व्यर्थ उपदेश देते हो क्योंकि जब कि वह ऐसा भयङ्कर दूत भेजता है तो मैं उस के आप चढ़ाव का विरोध किस रीति करूंगा। जो शत्रु तेरे घर में और तेरे हृदय के पास पालन किया जाता है वह एक प्राणनाशक राक्षस है॥

अब यह मान लो कि तुम बाज़ार में या मैदान में फिर रहे हो और उस समय एक मच्छर उड़कर तुम्हारे कांधे पर आ बैठे तो क्या तुम उस मच्छर का बोझ मालूम कर सकोगे कि नहीं?। तुम मेरे इस ध्यान पर हंसोगे। अच्छा। अब देखो? मच्छर अपने सापेक्ष परिमाण के विषय सब जीवजन्तुओं में से एक बहुत ही हलका जन्तु है। यदि वह तुम को देख न पड़े तो तुम कभी न जानोगे कि वह तुम्हारे कांधे पर बिना किराए किये सवारी कर रहा है। अब

किसी वस्तु की हलकाई तुम्हारी निर्बलता पर और उस स्थल की पीठ पर कि जिस पर वह वस्तु का बोझ पड़ता है अवलम्बित है। सुनो अब मैं तुम को एक मनुष्य की कहानी सुनाता हूं जिस ने यह कहा कि किसी समय हर एक वस्तु मुझ को बोझ मालूम देती थी। वह तुम को अपने ही शब्दों में सारा वर्णन करेगा। वह कहता है कि १८८६ ई० तक मैं भला चंगा और बलवान् मनुष्य था और उस समय से ले मैं अस्वस्थ होने लगा। पहिले पहिल मैं अपने को बोझल और डरपोक और उंघासासा मालूम करने लगा। मेरा सब बल जाता रहा और हर एक बात मेरे लिये दुःख मालूम देती थी। मेरे मुंह में कुस्वाद था। मेरी जीभ बहुत ही मैली थी। और लसलसी काट से मेरा मुंह और दांत मलीन रहते थे। मेरी भूख जाती रही और खाने के पीछे हमेशह छाती और पहलूओं के इधर उधर बहुत पीड़ा और कसाला रहता था। बतास मुझे बहुत दुःख देती थी और अन्तरियों में सूजन हो गई थी और वे फूल भी गई थीं। मेरे हाथ पांव कभी कभी ठंडे और चिपचिपे रहते थे। और मेरा सारा बदन ठंडे पसीने से भींगा हो जाता था। और मुझे ऐसा मालूम होता था कि लोहू का एक बूंद भी मेरे बदन में नहीं रहा मेरा दिल धड़कता था और सांस लेने में बड़ा कष्ट होता था। इस पर बहुत पीड़ा होने लगती थी। कुछ काल के पीछे मैं डरपोक और घबराहट में हो गया और निपट ही कष्ट से अपने आप को शान्त कर सकता था। मैं अपने कमरे से बाहर निकलने पर बहुत डरता था। और सदा मेरे मन में यह भय रहा कि क्या कुछ होगा। मैं उदास और निरुपाय हो गया और अब मैं ऐसा डरपोक हो गया था कि मुझे न तो रात ही को नींद आती थी और न दिन को। क्योंकि अगर नींद मुझे सताती तो मैं भयङ्कर स्वप्न से अचानक चौंक पड़ता। मैं सारी रात लेटा रहता परन्तु कुछ भी नींद नहीं आती थी। और एक पूरा वर्ष तक महीने महीने लगातार मेरी यह हालत रही। मेरी दशा पर तरस आता था। मेरे दोनों पांव और सारा बदन प्रायः स्पर्श इन्द्रियज्ञान रहित होगये थे। और डरता था कि कहीं मैं दीवाना न हो जाऊं। इस दुःख से मुक्ति पाने के लिये मैं प्रति दिन दिलोजान से मृत्यु की इच्छा करता था मैं यहां तक बीमार था कि मैं कपड़े भी नहीं पहिन सकता था और इस वास्ते कि मैं निर्बल और लाचार था मेरी स्त्री कपड़े पहिनाती थी। मैंने बड़े ज्ञानी डाक्टरों से उपाय करवाया परन्तु

दिनबदिन अधिक बीमार होता गया। मैं दो वर्ष से ऊपर तक यह दुःख उठाता रहा और क्रम क्रम अधिक बीमार होता गया और यहां तक दुर्दशा में हो गया कि मुझ में बिस्तरे में से उठने का भी बल न रहा था। निदान मैं ने औषधियों को काम में लाना छोड़ दिया क्योंकि इन पर से मेरा सम्पूर्ण भरोसा उठ गया। मेरा दुःख अतिभयङ्कर हो गया परन्तु जीवन की सांस लिये जा रहा था। इतने में एक दिन मैं ने सीगलज़ क्यूरेटिव सिरोप नाम एक दवा के बाबत सुना। तब मैं ने उसकी एक बोतल मोल लेकर पीने का आरम्भ किया उस की एक बोतल पीने के पीछे मैं ने मालूम किया कि पिछले साढ़े चार वर्षों की अपेक्षा अब मेरा आहार कहीं बिहतर पच जाता है और अपने आप को बलवान् भी मालूम करने लगा। मैं लगातार इस दवा को काम में लाता रहा और जब मैंने उस की चार बोतलें पीडालीं तब मैं किसी की सहाय के बिना चलने फिरने लगा और क्रम २ मेरा सब कादरपन और पीड़ा दूर होगई। मेरे अङ्ग कोमल हो गये और मैं लड़के के समान दौड़ सकता था। मैं अब अपने को ऐसा बलवान् पाता हूं जैसा कि मैं कभी पहिले था और सब लोग जो मुझे जानते थे मेरी यह अच्छी दशा देख कर अचम्भा करते थे सीगलज़ क्यूरेटिव सिरोप ने मेरा जीव बचा दिया और मैं चाहता हूं कि और लोग भी इस दवा के बारे में जिस ने मुझे निपट लाभ पहुंचाया है समाचार पावें ॥

अब देखो कि यह अचम्भे की कहानी है। तुम ने और मैं ने कदाचित् ही कभी पहिले ऐसी कहानी पढ़ी होगी। ये बातें क्या तात्पर्य रखती हैं। और ये हमें क्या शिक्षा देती हैं। इस ऐसी भयङ्कर बीमारी का क्या कारण हो सकता है। पीछे हटकर कुछ पहिले थोड़ी पङ्क्तियों को देखो और तब तुम सत्य को ढूंढके निकालने का सूत्र पा लोगे अर्थात् बदहज़मी और अजीर्णता। और केवल इसी एक से इस मनुष्य के सब दुःख पैदा हुए थे। लोहू में विषमय रस पैदा हो ऐसी दशा कर दी थी जिस्से में दो वर्ष मन की और बदन की यातना से पूर्ण रहा। अचरज की बात है कि सीगलज़ क्यूरेटिव सिरोप ने उस को अच्छा कर दिया। और यह एक ऐसी दवा कि जो इस रीति मनुष्य को ठीक मृत्यु के द्वार में से पीछे को खींच लावे अवश्य करके योग्य है कि वे सब लोग कि जिन्हों ने अन्य २ उपायों से सुख व्यर्थ ढूंढा किया एक बार तो इस को भी

परीक्षा करें। अब बिलम्ब बत करो और उस रोग को कि जो तुच्छ बातों से पैदा होता है अपने में जड़ पकड़ने मत दो। याद रक्खो कि सिंह जो कि ऐसा साहसी था एक बहुत बड़ी जोखिम को पास आते देखकर झट पट चम्पत हो गया। मोस की नाक पर चुटकी काटना एक बहुत सहज सा काम है।

सीगलज क्यूरेटिव सिरोप में उद्भिज्ज के सिवाइ और कोई पदार्थ नहीं है और वह अच्छी से अच्छी और ताज़ी से ताज़ी ओषधियों की बनी हुई है। इस बात पर संपूर्ण प्रतीति की जा सकती हैं।

मोल फी बोतल—एक रुपया। दो रुपया। चार रुपये है। इस दवा के काम में लाने के आदेशों का कागद हर एक बोतल के गिर्द लपेटा हुआ मिलेगा।

यह दवा हिन्दुस्तान के सारे मुख्य बजारों में पाई जा सक्ती है या सीधे दवा के मालिकों से जिन का पता यह है कि. ऐ. जे. उवाइट. लिमीटेड। ५ फोर्बज़ स्ट्रीट। बम्बई।

यह विज्ञापन हमारे पास विलाइत से आया है—कहीं२ पर इसकी हिन्दी बेमुहाविरे है सही तोभी विलाइत में रह जिन्हों ने कभी हिन्दुस्तान का मुख भी न देखा हो ऐसा लिख लें तो क्या कुछ कम प्रशंसा की बात है ॥

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरितन प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप समथिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि०१७सं०५-६-७ } प्रयाग { जन०फर०मार्च १८९४

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्दमैपोस्टेज १=)

हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १७ संख्या ३-४-५ } प्रयाग { जनु-फर-मार्च सन् १८९४ ई०

गयायात्रा ॥

जीवितो वाक्यकरणात्क्षयाहे भूरि भोजनात् ।
गयायां पिण्डदानेन त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता ॥

सपूत लड़के की तीन पहचान ग्रन्थकारों ने लिखा है जीते जी पिता की आज्ञा के बाहर न होना—क्षयाह के दिन बहुत लोगों को खिलाना पिलाना और गया में जाय पिण्डदान करना—जिन के मत में परलोक ईश्वर तथा स्वर्ग नरक कुछ हई नहीं उन की तो बात ही निराली है गये घर का ज़िकिर क्या, पर हां! आस्तिक कोटि वाले जिन के अकुटिल सरल सीधे चित्त में श्रद्धा बुद्धि का उद्गार है, परमेश्वर का अस्तित्व, उस्में भक्ति भावना सुकृत दुष्कृत का परिपाक स्वर्ग नरक आदि समस्त पारलौकिक बातें जिन को सरदर्द का बाइस नहीं है, उन बालबच्चे वाले गृहस्थों का गया श्राद्ध एक अवश्य कर्तव्य कर्म है—

शमीपत्रप्रमाणेन पिण्डं दद्यात्तया शिरे ।
उद्धरेत्सप्तगोत्राणि कुलमेकोत्तरं शतम्— "यन्नाम्ना पात-
येत् पिण्डं तन्नयेद्ब्रह्मशाश्वतम् "

शमी के पत्र बराबर भी पिण्ड गया शिर में दिया हुआ सात गोत्र के एकोत्तर सत कुल का उद्धार कर देता है—अपना गोत्र, नाना का गोत्र, श्वसुर का, बहन का, कन्या का, बाप की बहिन का, मा की बहिन का, ये सात गोत्र समझे गये हैं इन्में जिस्के नाम से पिण्ड दिया जाता है उसे शाश्वत ब्रह्म पद के प्राप्ति का हेतु होता है— यस्या बहवः पुत्रा यद्येकोपि गयां व्रजेत् ।

शास्त्र की आज्ञा है बहुत से पुत्र उत्पन्न करै कदाचित् उन्में कोई एक भी ऐसा श्रद्धालू निकलै कि गया यात्रा से पितरों का उद्धार करने वाला हो—पितृ-भक्त पुत्र की गया यात्रा में श्रद्धा पैदा करा देने वाले ऐसे २ अनेक रोचक प्रशंसा वाक्य पाये जाते हैं—जगन्नाथ श्रीनाथ द्वारिका इत्यादि आधुनिक तीर्थों के समान गयाक्षेत्र थोड़े दिन का प्रचलित तीर्थ नहीं है किन्तु इसका मान कब से है और यह कितना पुराना तीर्थ है इसकी कदामत के सुबूत में डाक्टर राजेन्द्र लाल मित्र ने जिल्द की जिल्द लिख डाला है—तीर्थ की बुद्धि अलग भी कर दी जाय तो गया की भूमि "ऐंटीक्वेरियन्" पुरानी बात की खोज करने वालों के लिये पुरानी बात के तलाश का यह एक ऐसा भारी मैदान है जिसके मुकाबिले हिन्दुस्तान में दो ही एक ऐसे स्थान पाये जाते हैं जो प्राचीनता में गया की बराबरी कर सकैं—दूसरे यह कि यह तीर्थ किसी विशेष संप्रदाय या मत का नहीं है कि किसी खास फिरके के लोग इसे मानते हों बरन वेदोक्त कर्म के करने वाले शैव शाक्त वैष्णव चाहो जिस मत का हो सबों को गया में पिण्डदान अभीष्ट है—

बांकीपूर से गया तक जो रेल की शाख गई है उसपर सवार हो कर चलो तो दूसरा स्टेशन पुनपुना मिलता है—पुनपुना एक छोटी सी पहाड़ी नदी है किन्तु पवित्रता में समुद्रगामिनी बड़ी नदियों से किसी अंश में कम नहीं है।

कीकटेषु गया पुण्या पुण्यं राजगृहं वनम् ।
च्यवनस्याश्रमं पुण्यं नदी पुण्या पुनः पुनः ॥

कीकट ऐसे अपवित्र देश में गया पुण्यभूमि है—राजगृह वन पवित्र है—यह स्थान गया से १० कोस पूर्व को है किसी समय जरासिन्ध की राजधानी थी पर्वतों के बीच पुराने खंडहर "ऐंटीक्वेरियन" प्राचीन विवरण विवेचक के लिये अनेक प्राचीन बातों के जानने का अद्भुत स्थान है—च्यवन का आश्रम पुण्यभूमि है यह आश्रम सोन नदी के तट पर है कहां पर है इसका ठीक पता नहीं लगता—नदियों में पुनपुना पवित्र है—पुराणकर्ताओं ने कीकट या मगध देश को ऐसा अपवित्र क्यों माना इसका कोई विशेष कारण मन में नहीं आता कदाचित् यह कारण हो कि यह देश बौद्धों का अनादि काल से निवास स्थान था बुद्ध देव यहीं जन्मे और अहिंसामूलक श्रेष्ठ बौद्धधर्म का प्रचार भी पहले पहल यहीं

हुआ उपरान्त बुद्धधर्म समस्त हिन्दुस्तान में फैल गया वेदोक्त धर्म सकुंचित् हो कहीं २ रह गया था—कीकट देश में वेदोक्त कर्म करने वाले केवल उन्हीं स्थानों में रह गये थे जिन का नाम ऊपर के श्लोक में दिया गया है इसी से गया पुनपुना राजगृह अब तक पवित्र माने जाते हैं—

यहां पर इतना और विचार करने के योग्य हैकि गया बौद्धों के पहिले से वेदोक्त कर्म करने वालों का तीर्थ है कि बौद्धों के निराकरण के उपरान्त आर्यों का यह एक मुख्य तीर्थ मान लिया गया—हमारे मन में तो कुछ ऐसा आता है कि यह प्रान्त जो हिन्दुस्तान के प्राचीन भूगोल में कीकट के नाम से प्रसिद्ध है बौद्धों का मुख्य स्थान है न केवल उतना ही देश जो अब सूबे बिहार कहलाता है बरन उड़ीसा तक बौद्धों के अधिकार की मुख्य भूमि थी क्योंकि जगन्नाथ पुरी तो बौद्धों का मुख्य तीर्थ था बहुत लोग जगन्नाथ को बुद्धावतार ही मानते हैं—दूसरे यह कि यहां बौद्ध भिक्षुकों के इतने मठ चैत्य या विहार थे कि पीछे से समस्त देश का देश बिहार कहलाने लगा उपरान्त जब बौद्ध परास्त किये गये और देश से निकाले गये और वेद का फिर से प्रचार किया गया तब गयाक्षेत्र वैदिक कर्म करने वालों का प्रधान तीर्थ कर लिया गया—दस्तूर है जीता गया शत्रु जिस बात से चिढ़ता है विजेता उसके चिढ़ाने को वह बात वहां अवश्य करते हैं जैसा मुसल्मान हमारे चिढ़ाने को गोवध करते हैं—वैसा ही उन बौद्धों को श्राद्ध आदि वैदिक कर्म की बड़ी चिढ़ थी इस लिये विजेता वैदिकधर्मावलम्बियों ने गया में श्राद्ध ही का विशेष अधिकार रक्खा और तीर्थों में स्नान दान आदि अनेक धर्म के काम का अनुष्ठान लिखा है गया में केवल पिण्डदान का विधान जो मुख्य है उसका यही कारण है—गयासुर का वृत्तान्त जैसा गयामाहात्म्य में लिखा है उसे पढ़ मन में आता है कदाचित् गयासुर भी उन्हीं बौद्धों में कोई रहा हो तो क्या अचरज है—गया में ४५ स्थानों में श्राद्ध करना पड़ता है उनमें बोधिगया भी एक स्थान है जिसका विशेष वृत्तान्त हम आगे लिखेंगे यहां पर इतना सूचित करना उचित जान पड़ता है कि बोधिगया में पहुंच "बोधिवटं नत्वा" ऐसा लिखा है इससे निश्चय होता है कि गया बौद्धों का प्राचीन स्थान है—

वाचस्पति मिश्रकृत गयापद्धति में जिस क्रम से इन ४५ वेदियों का विधान

लिखा है तदनुसार यहां पर हम एक २ वेदीका खुलासा हाल और कृत्य लिखते हैं।

ततो गयां प्रवेशे तु पूर्वतोस्ति महानदी ।
तत्र तोयं समुत्पाद्य स्नातव्यं विमले जले ॥

गया में पहुंचते ही पहले दिन का कृत्य फल्गू में स्नान और पार्वणश्राद्ध के विधान से पिण्डदान करना उचित है दाक्षिणात्य गया में जितनी श्राद्ध करते हैं सब में खीर या भात का पिण्ड देते हैं पर हम लोग एतद्देशियों में कुछ ऐसी ही प्रथा चल पड़ी है कि फल्गू विष्णुपद और अक्षयवट तीन स्थान में पार्वण-श्राद्ध की विधि से खीर के पिण्ड की पूरी श्राद्ध करते हैं बाकी स्थानों में जवा के पिसान का पिण्ड केवल तीर्थश्राद्ध मात्र करते हैं–फल्गू एक अद्भुत नदी देखने में आई इसकी दरदरी मोटी बालू ऊपर से मरू भूमि मालूम होती है किन्तु चार अंगुल का गहरा गड्ढा खोद देने से पानी का चश्मा प्रगट हो आता है चाहो जितना पानी ले लो–ऐसा मालूम होता है इसके नीचे पहड़ीचट्टाने हैं बरसात का पानी जो दरदरी बालू में रह जाता है मिट्टी न रहने से नीचे पृथ्वी में नहीं सोखता हवा और घाम लगनेसे ऊपर का बालू सूख जाता है पर नीचे बालू के बीच पानी बना रहता है–दूसरा स्थान पिण्डदान का बस्ती से ४ या ५ मील की दूरी पर प्रेतपर्वत नाम का एक खड़ा पहाड़ है नीचे इसके अत्यन्त गंदले और सड़े पानी का ब्रह्मसरोवर नाम का एक कुण्ड है यहां श्राद्ध करना होता है हमें गया की म्युनिसिपालिटी के कुप्रबन्ध तथा महादुराचारी गया के उन्मत्त पण्डों पर बड़ा खेद होता है कि वे सिवाय यात्रियों को मनमाना दुहने के तीर्थ स्थानों की कुछ फिकिर नहीं करते वरन उन्हे निपट बेमरम्मत और बरबाद कर रक्खा है–जो धन इन कुमार्गी पण्डों का कुचलन में असत् व्यय होता है उस के शतांश में भी इन तीर्थों की रौनक और मरम्मत अच्छी तरह हो सक्ती है बंगाल गवर्नमेण्ट को हम सविनय चिताते हैं कि गया की म्युनिसिपालिटी को इन तीर्थों के सुधार तथा जो यात्री वहां जांय उन के आराम और आशाइश के लिये लाचार करे और जो म्युनिसिपालिटी गवर्नमेंट के हिदायत को अमल में न लावें तो गवर्नमेण्ट खुद उन तीर्थों की सफाई और मरम्मत करा दे खर्च उस का इन्हीं पण्डों से लिया जाय जिन्हे बिना मेहनत का इतना असंख्य धन यात्रियों से मिलता है–रास्ता प्रेत पर्वत का बड़ा खराब है

अचरज है जिस रास्ते से सौ पचास आदमी का नित्य गुज़र होता हो और मेलों में कई हज़ार आदमियों की भीर जिस रास्ते से नित्य आती जाती है वहां की रास्ता इतनी निकम्मी हो—यह महारूखा पर्वत २५० फुट के ऊपर उंचाई में होगा सेंधिया के किसी अधिकारी की बनाई ४०० के ऊपर इसमें सीढ़ी हैं—ऊपर पहुंच वहां फिर श्राद्ध करना पड़ता है उसी पहाड़ में एक जगह बालसी पतली और फुट भर की लम्बी सोने की एक रेखा है—वहां से चल रास्ते में प्रेतशिला नाम का एक दूसरा पर्वत है ३०० सीढ़ी इसमें भी है यह पहाड़ प्रेतपर्वत की अपेक्षा अधिक रमणीक है सीढ़ियां भी इस पर्वत की अधिक चौड़ी हैं—इस पर्वत पर पितरों की तृप्ति के लिये तिल में मिलाय सत्तू उड़ाना होता है—नीचे उतर रामसरोवर नाम का एक कुण्ड है ब्रह्मसरोवर के समान यह तालाब भी महागंदला और मैला है ऐसा मालूम होता है प्रेत पर्वत के अधिष्ठाता प्रेत लोग गया के पण्डों के कुचरित्र पर और वहां की म्युनिसिपलिटी के प्रबन्ध पर खिन्न हो रोया करते हैं उन्हीं के आंसू और आंख की कीचड़ बह २ कर जमा हो रामकुण्ड के जलरूप में परिणत होगया है—यहां पिशाच कीसी आकृति धरे और पिशाच की सी कुछ बोली बोलता हुआ प्रेतपर्वत का पण्डा आ कर यात्रियों को सताता है और १) कर लेता है—वहां से थोड़ी दूर चल नग पर्वत पर यमराज धर्मराज को तिलमिश्रित दो पिण्ड देना होता है—तीसरे दिन का कृत्य पञ्चतीर्थी है पहिले उत्तर मानस में उदीची तीर्थ है यह कुण्ड बस्ती के मध्य में निपट गंदला और मैला है तालाब से ऐसी बदबू उड़ती है कि वहां बैठ पिण्डदान करते समय नाक सड़ती है साल में एकवार भी यह तालाब साफ कर दिया जाय तो यात्रियों को पिण्डदान के समय इस कदर बदबू न सहना पड़े यहां उत्तर मानस के अधिष्ठाता आदित्य जनार्दन का दर्शन पूजन कर मौन हो दक्षिण मानस तीर्थ में आना पड़ता है दक्षिण मानस और कनखल तीर्थ दोनों एक ही स्थान में हैं—यहां जो तालाब है सो इतना गन्दला नहीं है हाल में कोटेलाल गयावाल ने निज खर्च से इस की सफाई करवा दिया था इसलिये इस कुण्ड में बदबू को उतनी तकलीफ से आज़ाद रहे—यहां दो बार पिण्डदान करना होता है—एक दक्षिण मानस में दूसरा कनखल तीर्थ में और दक्षिणायन आदित्य का दर्शन कर मौनव्रत का विसर्जन होता है—वहां से थोड़ी दूर पर फल्गू के किनारे गदालोल तीर्थ है यहां पिण्डदान और पितामहेश्वर का

दर्शनकर पञ्चतीर्थीकृत्य समाप्त हो जाता है—चौथे दिन गया से ३ मील पर सरस्वती कुण्ड है यह कुण्ड फल्गू ही में है यहां स्नान के उपरान्त सन्ध्योपासन से प्रमादात् किसी दिन सन्ध्या न करने का दोष जाता रहता है—स्नान के उपरान्त सरस्वती की बड़ी प्राचीन मूर्त्ति का दर्शनकर आगे चलना पड़ता है सरस्वती की उग्र मूर्त्ति का दर्शन कर चित्त में अद्भुत शान्ति आती है—यह मठ बोधिगया के महान्तों के अधिकार में है गयावाल पण्डों का इसमें कोई अधिकार नहीं है ये महन्त शङ्करमतावलम्बी नाममात्रके संन्यासी बड़े समृद्धि वाले राजाके समान हैं—मालूम होता है शङ्कराचार्य ने जब बुद्धमतावलम्बियों को परास्त किया तब से अपना अधिकार यहां जमा रक्खा कदाचित् पहिले बन्मे महात्मा रहे हों अब तो निरे प्रमादी देखे गये—एक मील चल कर धर्मारण्यतीर्थ है धर्मराज ने यहां यज्ञ किया है एक ओर पत्थर का डेढ़ हाथ ऊंचा खम्भा अब तक गड़ा है दूसरी ओर धर्मकूप है पिण्डा उसमें पड़ते २ यह कुंआ पटगया है थोड़े ही खर्च में साफ हो सकता है—गयावालों के प्रमाद से भ्रष्ट और बेमरम्मत पड़ा है यूप अर्थात् खम्भा और धर्मकूप के बीच में पिण्डदान करना होता है मालूम होता है इस खम्भे को हाल में किसी ने गाड़ दिया है यूप और कूप का बीच ४ या ५ गज का उत्तर से दक्षिण को है—स्थान यह बड़ा विमल है—यहां पहुंचते ही चित्त की वृत्ति बदल जाती है—उपरान्त पास ही मतङ्ग बापी है यहां पिण्डदान और मतङ्गेश्वर का दर्शन करना होता है—यहां से आध मील चल कर फल्गू का बालू तै करना महादुर्घट हो जाता है गरमी के दिनों में इस तचे बालू पर चलने से पग २ में छट्ठी का दूध याद आता है किन्तु बोधिगयामें पहुंचते ही और यहां की प्राचीनता का विवरण देख फल्गू के तचे बालू में चलने का सब क्लेश भूल जाता है और इस स्थान की रम्यता तथा प्राचीनता पर जीदंग होता है—बुद्धदेव का यहां एक बड़ा प्राचीन मन्दिर है वहां जो लोग पुजेरी थे उन से पूछने से मालूम हुआ कि यह मन्दिर दो सहस्र वर्ष से भी अधिक प्राचीन है बिल्कुल ढै गया था बंगाल के लफ्टिनेंट गवर्नर सर ऐसलीईडिन के समय कई लाख रुपया खर्च कर चीन का रहने वाला किसी बौद्ध महाजन के खर्च से इसकी फिर से मरम्मत की गई है—जो मूर्तियां पत्थर मन्दिर की मरम्मत करने समय इसके नेह में निकले सब वहीं गोल अठ पहल चौखुंटे चबूतरों पर चुन दिये गये हैं—मन्दिर के बीच में बुद्धदेव की बड़ी भारी विशाल मूर्त्ति रक्खी

हुई है जिस्के देखने से अद्भुत शान्ति मन में स्थान पाती है—इसमें की एक २ बात जांचने और जानने के लिये कई दिन चाहिये आध घंटे में हम वहां की प्राचीन बातों को क्या समझ सक्ते थे—बुद्धदेव की मूर्त्ति इसमशगतराशी की कमालक प्रगट करती है ऐसी सुडौल मूर्त्ति बहुत कम देखने में आई है—अम्बई की खोह इल्लोरा इलिफेंटा के समान यहमन्दिर भी बुद्धधर्म की प्राचीनता के विवरण का एक ही स्थान है—पुराने कट्टर जाहिलों की तो बात ही निराली है पढ़ा लिखा गया की यात्रा कर हिन्दूधर्म की हठ में आय बुद्धदेव को न देखा और इस मन्दिर की प्राचीनता का यत्किंचित् अवलोडन न किया उसने मानो बड़ाभारी मौका खो दिया—अस्तु वहां से पांच या छ मील चल गया में लौट ब्रह्मसरोवर में स्नान तर्पण और श्राद्ध करना होता है—यह तालाब बस्ती के बाहर होने से औरों से कुछ साफ और स्वच्छ है पास ही २ या ३ हाथ का लम्बा पहाड़ का एक टुकड़ा एक गड्ढे में निकला हुआ है निहायत बदशकल एक मूर्ति भी उसमें खुदी हुई है यहां पर काग और श्वान के नाम दो पिण्ड देना होता है इस स्थान को कागवलि कहते हैं—

पंचम दिन का कृत्य विष्णुपद पर श्राद्ध है यहां पिण्डदान करने से यही बोध होता है मानो पितृ ऋण से आज हमारा उद्धार हुआ एक ऐसा आनन्द और सन्तोष सच्चे पितृ भक्त के मन में स्थान पाता है जिस्को लिख कर बतलाना कुछ दुर्घटसा मालूम होता है—चित्त में यही भाव उत्पन्न होता है मानो जीवन की सार्थकता यही थी और हम अब अपना कर्तव्य कर्म कर चुके—अहिल्या बाई का बनवाया काले पत्थर का एक बड़ाभारी मन्दिर है उचाई में काशी के विश्वनाथ के मन्दिर से कम नहीं है बीच मन्दिर में अठपहल कुण्ड के बीच १८ अंगुल का पूरा चरण पूर्व से पश्चिम को लपटा हुआ है—कई करोड़ आदिमियों का विश्वास परिणत हो इस स्थान को प्रकाशित कर रहा है यदि इसे कृत्रिम भी कहें तो न जानिये किस समय यह बनाया गया इस का कुछ पता नहीं लगता चरण यदि कृत्रिम भी हो तो इस स्थान में अवश्य कोई ऐसी बात है जिससे हिन्दूमत के विश्वास के अनुसार पितरों की सद्गति का यह एक मात्र परमोत्तम द्वार है—इसमें कुछ सन्देह नहीं गया प्रयाग और काशी ३ स्थान तब से तीर्थभूमि में शामिल किये गये हैं तब

पुराणों का प्रचार हिन्दुस्तान में प्रारम्भ हो चला था वेद तथा षट्दर्शन जीर्ण दशा में आ चले थे और यह समय बौद्धों के हाथ से भारत के उद्धार का था—यहां पार्वणश्राद्ध करना होता है और पिण्डदान खीर का होता है —विष्णु-पद से लगी हुई एक दूसरी पत्थर की चौकोर चटान है पत्थर के मोटे २ खम्भों के सहाड़े ऊपर से पटी हुई है यहां रुद्रपद—ब्रह्मपद—कार्तिकेय—दक्षिणाग्नि—गार्हपत्याग्नि—अग्नसत्याग्नि—सभ्याग्नि—आहवनीयाग्नि—गणेशपद—चन्द्रपद—इन्द्रपद—सूर्यपद—दधीचपद-मातङ्गपद-कण्वपद-क्रौञ्चपद—अगस्त्यपद—कश्यपपद—इन स्थानों में अलग २ पिण्डदान करना होता है यहां चाहो पार्वण-श्राद्ध विधिसे पिण्डदान करै चाहो केवल तीर्थश्राद्धमात्र करै उपरान्त गजकर्णिका में केवल तर्पणमात्र करना होता है—यह चट्टान १५ या २० गज लम्बी चौड़ी है इसी मेंसब तीर्थ हैं—सब १८ तीर्थ हैं इन्में चाहो १८ वेदी एक दिन में करडाले किन्तु ३ दिन में करने से विधि में कोई अन्तर नहीं होता और आसानी होती है ॥

उपरान्त फल्गू के उस पार सीताकुण्ड में स्नान और मातृ सौभाग्यदान करना होता है—ऊपर चढ़ एक छोटासा पर्वत है यहां रामगया के नाम से पिण्डदान होता है—राम और सीता की अलग२ मूर्त्तियां हैं उन का दर्शन करना होता है ये सब मूर्तियां आधुनिक हैं यहां कोई ऐसी बात नहीं देखी गई जो विशेष लक्ष्य के योग्य हो ती—सीताकुण्ड में बालू का पिण्ड देना होता है यहां से चलकर फल्गू के इस पार गयाशिर में पिण्डदान करना होता है यह एक पर्वत थोड़ी उचाई का बड़ा रमणीक नहीं हैं—पास ही दूसरा चटानमुण्डपृष्ठा नाम का है यहां भी पिण्डदान होता है—नीचे उतर गया कूप है यह बिल्कुल कृत्रिम तीर्थ है इस कुआं में लोग नारियर फेंकते हैं किन्तु इसका लेख कहीं नहीं है गया कूप भी कृत्रिम मालूम हुआ—उपरान्त धौतपद में पिण्डदान होता है तीन या चार हाथ लम्बा मैले शङ्खमर्मर के रंग का पर्वत का एक टु-कड़ा यहां निकला हुआ है स्थान यह रमणीक है यहां से चल कर आदि गया तीर्थ है यहां जनार्दन की मूर्ति बड़ी प्रकाशमान् और पुरानी मालूम हुई और पर्वत पर खुदी हुई है—विष्णुपद के पास जो गदाधर की मूर्ति है उस्से इस मूर्ति में कुछ विशेष विचित्रता मालूम हुई—बीच में मंगला गौरी की प्राचीन मूर्ति का दर्शन कर भीमगया में पिण्डदान होता है—भीमसेन ने गदाधर

विष्णु को प्रणाम किया है उसका चिह्न अब तक बना है किन्तु यह स्थान महा-मैला और बेमरम्मत पड़ा है—वहां से चल कर थोड़ी दूर पर गोप्रचारण तीर्थ है १० या १२ गज लम्बी ३ या ४ गज चौड़ी सफेद मटीले पत्थर की एक चट्टान है बराबर चट्टान भर में गौ का खुर उपटा हुआ है जो कृत्रिम किसी तरह नहीं मालूम होता यहां पिण्डदान करने से चित्त अत्यन्त विमलभाव ग्रहण करता है—वहां से थोड़ा चल गदालोल तीर्थ है पास ही अत्यन्त मैला और बेमरम्मत रुक्मिणी कुण्ड नाम का एक तालाब है—गदालोल तीर्थ भी अत्यन्त मैला और बेमरम्मत है यहां पिण्डदान होता है—पास ही इस के अक्षयवट तीर्थ है एक बरगत का वृक्ष यहां पर है पर वृक्ष बहुत पुराना नहीं मालूम होता जो प्रकाश विष्णुपद में है सो यहां नहीं है न यहां जाने से चित्त की वृत्ति में कोई अन्तर होता है हमें यह तीर्थ बिल्कुल कृत्रिम मालूम हुआ कोई बात भी प्राचीनता की न मालूम हुई—गयावालों ने इसे सुफल बोलने का एक स्थान नियत कर लिया है यहां पार्वणश्राद्ध विधि से खीर का पिण्डदान होता है गयावाल यहां मनमाना यात्रियों को दुहते हैं जिन का विश्वास है कि गयावाल जब तक पीठ न ठोकेगा गया सुफल न होगी पितर न तरेंगे किन्तु यह सर्वथा कच्ची समझ है असंख्य धन जो इन पण्डों को दिया जाता है वही इन तीर्थों की रौनक और मरम्मत में लगाया जाय तो विशेष उपकार हो—दान के प्रकरण में शास्त्रानुसार पात्र मुख्य अंग है वह पात्रता गया के पण्डों में कहीं किसी में भी न पाई गई तब इनको इतना अधिक देने से क्या लाभ ?—इन को लोग समझ कर दिया करें तो ये अवश्य अपने को पात्र बनाने की चेष्टा करें—केवल गया पर क्या ! हम समस्त तीर्थ के सम्बन्ध में यही कहते हैं कि तीर्थ का स्नान, यात्रा आदि जितने संविधान हैं सब किये जांय पण्डों को मामूली से अधिक न दिया जाय तो ये पण्डे सुधर जांय और अपने को दानपात्र बनाने की भी चेष्टा करें नहीं तो इस रोशनी के ज़माने में स्वामी दयानन्द की कृपा से तीर्थ सब डगमगा रहे हैं उनका माहात्म्य अब जाया चाहता है जो हिन्दूधर्म के लिये बड़ी हानि का हेतु होगा " सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः "—जब देखते हैं पण्डों के कुढंग से शिष्ट विवेकी पढ़े लिखे लोगों की रुचि तीर्थ की ओर से हटती जाती है तो इन पण्डों का मान पूजन कम कर बाकी सब तीर्थ

के कृत्य कायम रहें तो कौनसी हानि है—स्वामी दयानन्द ने भी तीर्थों को इसी से बढ़ाया चाहते थे कि प्रजा का असंख्य धन जो पण्डों की देने से असद्व्यय होता है वही देश की भलाई के काम में लगाया जाय तो कितना उपकार हो पर यह उन की भूल थी—अक्षयवट के पास ही ३०० सीढ़ी का ऊंचा ब्रह्मयोनि नाम का पर्वत है यह कोई तीर्थ नहीं है केवल एक तिलिस्मात है पहाड़ के दो शृङ्ग एक जगह आकर मिल गये हैं दो गज लम्बी गोलाई में हाथ भर की एक बिलसी मांद के माफिक है—इसके भीतर जाने वाला तिरछा होकर छाती के बल घुसने से आसानी में पार चला जासक्ता है—दूसरा रुद्रयोनि नाम का एक ढलुआ दर्रा है इसके भीतर भी उसी हिकमत से घुसने में आसानी होती है—यहां से चल कर ब्रह्मसरोवर के पास वैतरणी नाम का मैले गन्दे पानी का एक पुखरा है यहां श्राद्ध तर्पण और गोदान करना होता है—अक्षयवट में श्राद्ध के उपरान्त फल्गू में गायत्रीकुण्ड है इसमें स्नान दही और चावल का पिण्ड-दान गायत्री का दर्शन कर गयायात्राकृत्य की समाप्ति होती है—गयायात्रा गृहस्थ मात्र के लिये उचित और अवश्य कर्त्तव्य कर्म है हमने वाचस्पति मिश्र कृत गया-पद्धति के अनुसार जहां जो कृत्य करना चाहिये सब लिख दिया इसे अपने पास रख यात्रा करने वाले को पूरी सहायता मिल सक्ती है औरजो गया नहीं गये उनको यात्रा का क्लेश बिना उठाये गया का सब हाल हस्तामलक हो सक्ता है—इस लिये पढ़ने वालों से प्रार्थना है कि इस लेख को निरा भरती और फीका न समझेंगे—अन्त में बंगाल गवर्नमेण्ट से फिर प्रार्थना है कि गया के बेमरम्मत बिगड़े तीर्थों के सुधार की ओर ध्यान दे क्योंकि बिना गवर्नमेण्ट के हस्तक्षेप के वहां के अनेक कुण्डों की सफाई तथा टूटे फूटे स्थानों का सुधार और मरम्मत असम्भव है यहां के पण्डों को इसका खयाल होता तो हम कभी गवर्नमेण्ट को क्लेश न देते—जिस कदर आमदनी इन तीर्थों की बदौलत इन पण्डों को है उस हिसाब से यह कोई बड़ी बात नहीं है बहुत ही थोड़े धन में यह काम हो सक्ता है किन्तु क्या करें जब देखते हैं सीधी अंगुली घी नहीं निकलता तो अंगुली को टेढ़ी कर घी निकालना होता है—

कर्त्तव्याकर्त्तव्य का भेद-

ईश्वर ने मनुष्यमात्र को एक ऐसी शक्ति दी है जिस्से वह शुद्ध विचार के द्वारा कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य में भरपूर विवेक कर सक्ता है—कर्त्तव्य से हमारा अभिप्राय उन कामों से नहीं है जिन का परिणाम प्रत्यक्ष में सुखदायक हो न अकर्त्तव्य से अभिप्राय उन कर्मों से है जिन का प्रत्यक्ष परिणाम दुःखदायक है—चोरी मनुष्यवध आदि बहुत से काम यदि राजभय न हो तो बहुधा बहुत ही सुखदायक और लाभकारक हो सक्ते हैं किन्तु शास्त्र और विद्वानों के मत के अनुसार अकर्त्तव्य ही हैं—इसी तरह बहुत से काम जो प्रत्यक्ष में लाभदायक नहीं कहे जा सक्ते पर वास्तव में कर्त्तव्य हैं जैसा दान आदि कर्म—हमारा अभिप्राय इन कर्त्तव्य अकर्त्तव्य कर्मों से यही है कि जो कर्म वेद या शास्त्र में साधारण रीति पर विहित या निषिद्ध हों—कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य के विचार की शक्ति जो हम को दी गई है वह कर्मों के प्रत्यक्ष गुण वा दोष पर निर्भर नहीं है विद्या और तर्क के द्वारा उस्की पुष्टता अलबत्ता होती है—मन की चञ्चलता और राग द्वेष आदि की प्रबलता के कारण यद्यपि निषिद्ध कर्मों का आचरण तुच्छ बुद्धि के सद्विद्याहीन पुरुषों से होता ही रहता है किन्तु ऐसों को भी अन्तरात्मा का उपदेश उन निषिद्ध कर्मों के अनुष्ठान के पहिले ही हो जाता है उस उपदेश का मानना या न मानना अलबत्ता उन के आधीन है—जैसा चोर जब चोरी करने का विचार करेगा तो उसी समय एक गुप्त वाणी उस्के आत्मा में पहिले ही यह कह देगी कि यह कर्म अच्छा नहीं है अब यदि मन उस्का विकार रहित है तो इस उपदेश को मान लेगा यदि मन शुद्ध नहीं है और धन के लोभ की अतिशय प्रबलता उस में समाई हुई है तो अन्तरात्मा के उस उपदेश का उल्लङ्घन कर जायगा उस्का मन अपने पक्ष की पुष्टता के लिये उस्से अनेक मिथ्या कल्पना करावेगा—इस तरह बार २ उस्के उल्लङ्घन से आत्मा का उपदेश भी जिस्को परमेश्वर सद्धर्म पर उसे चलाने के लिये करता है मन्द होता जाता है यहां तक कि जब मनुष्य का मन बहुत मलीन होजाता है तो अन्तरात्मा के उस उपदेश का शब्द भी वह नहीं सुन सक्ता—इसी तरह कुछ दिनों तक जब मनुष्य इन्द्रियों के वेग को रोककर आत्मा के उपदेशानुसार कर्म करने में तत्पर रहता है तो अभ्यास

पड़ते २ उसमें कुछ ऐसी शक्ति आजाती है कि मन और इन्द्रियों को रोक आत्मा की व्यवस्था के अनुसार चलने में उसे कुछ भी परिश्रम नहीं होता और न इन्द्रियों में इतनी प्रबलता ही जाती है कि मन को उद्विग्न कर दे—इससे यह विचार ठीक नहीं कि अकर्त्तव्य के आचरण से उस ईश्वरीय शक्ति का सर्वथा नाश हो जाता है—कितना ही पापात्मा क्यों न हो यदि वह किसी समय अपने चित्त को स्थिर और राग द्वेषादि से रहित कर अपने पहिले किये हुये कर्मों का विचार करे तो अवश्य उसे अपने पूर्वकृत असत्कर्मों से पश्चात्ताप हो और उन्हीं कर्मों को कर्त्तव्य मानें जिन को ऐसे विचार के समय मन की एकाग्र अवस्था में सब लोग कर्त्तव्य कर्म मानते हैं—यद्यपि अविद्या के कारण कर्मों के दोष और गुण उसे न भी प्रगट हों किन्तु अनायास वह कर्त्तव्य को कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य को अकर्त्तव्य अवश्य समझेगा—सिद्धान्त यह कि कर्त्तव्य अकर्त्तव्य विवेकशक्ति परमेश्वर ने हरएक मनुष्य को दी है और जो काम उस विचारशक्तिके अनुकूल होते हैं वही धर्म हैं उन्हीं के करने की आज्ञा भी परमात्मा की है जो उस विचारशक्ति के प्रतिकूल हैं वही निषिद्ध और पाप हैं—धर्म का अनुष्ठान और अधर्म का परित्याग मनुष्यमात्र का मुख्य कर्त्तव्य है इसलिये धर्म और अधर्म का भेद जानने में हमें अपनी प्रकृति इस तरह सुधारनी चाहिये कि हमारी विचारशक्ति में विप्रकारी कोई अड़चन न हो सके—केवल परमार्थ में नहीं किन्तु लौकिक व्यवहार में भी विवेकशक्ति का अनुशरण उचित है योगशास्त्र में परमार्थ साधन के अंग जो यम नियम लिखे गये हैं उनका प्रयोजन भी यही है कि मन और इन्द्रियों के निग्रह द्वारा शान्ति और स्थिरता को अवकाश मिले क्योंकि विना शान्ति और स्थिरता के कर्त्तव्य अकर्त्तव्य में भेद का अधिकारी होना असम्भव है। शेष—

पुनर्जन्म ॥

प्रत्येक देशके इतिहास पढ़नेसे यह स्पष्ट ज्ञात होताहै कि सम्पूर्ण भूमण्डल के प्राचीन तथा नवीन मतके मानने वाले आस्तिक अथवा नास्तिक पुनर्जन्म को सनातन से मानते चले आये हैं इस मानने में अन्तर केवल इतना ही है कि हर एक मतमतान्तर वाले अपनी स्वाभाविक बुद्धि के अनुसार इसे स्वीकार करते हैं किन्तु इसका सार केवल उन्हीं लोगोंको मालूम होसकता है जो ईश्वर के वाक्यपर

विश्वास रखने वाले हैं– जो वाक्य उस ने मनुष्य मात्र के हित के लिये सृष्टि के आदि में उपदेश किया है––और वे उपदेश अनेक दूसरे २ मताङ्गरियों की कपोलकल्पित बहुतसी शिक्षाओं की भांत नहीं हैं जो स्वाभाविक बुद्धि की कसौटी पर कदापि नहीं कसी जा सकतीं बल्कि ये तो वे अनमोल मोती हैं जिन्हें जहां चाहे वहां परखवा लीजिये हर एक मनुष्य जो पक्षपात रहित ज्ञान की कनियों का व्यौपार करने वाले जौहरी हैं इन्हे अपनी तीव्र बुद्धि के घन पर चढ़ा अवश्य ही सच्चा ठहरावेंगे–अस्तु फिर भी यहां यह उचित नहीं मालूम होता कि "बाबा वाक्यं प्रमाणम्" की तरह पुनर्जन्म को इसलिये मान लें कि ईश्वरवाक्य में पुनर्जन्म होताहै ऐसा लिख दिया गयाहै और तर्क को जगह न दें––किन्तु उत्तम यही होगा कि हम लोग अपनी बुद्धि की कसौटी पर रख इसे कसें और समझें कि वास्तव में इस का क्या अभिप्राय है और कहां तक इसके बारे में प्रत्येक मतावलम्बियों का कथन सच्चा ठहर सकता है–तहां पहिले नास्तिकों का इस में क्या सिद्धान्त है यह जानना अतिआवश्यक है––ये लोग ईश्वर का होना बांझ के पुत्र के समान मानते हैं और जीव को पृथिवी आदि ५ तत्व के संयोग से अनायास उत्पन्न हुआ मानते हैं–ये लोग कहते हैं जीव वास्तव में कोई पदार्थ नहीं है केवल पञ्चतत्व सत्य और अनादि काल से है उन्हीं तत्वों का संयोग किसी खास हालत में जीव में परिणत हो भासने लगता है तो मृत्यु इन के कहने के अनुसार पदार्थों का उस खास हालत में न रहना है–जब जीवसंज्ञा पुनः अपनी पञ्चतत्वता को प्राप्त हुई तो उसके अवयव पृथक् हो गये कुछ कुत्ते और शृगालों के आहार हुये; कुछ मछली कछुओं के उदर में जा समाने, कुछ चील कौओं ने निगला, उन २ जीवों के आहार होकर शुक्रशोणित में परिणत हुये और मैथुनी सृष्टि के क्रम पर उन २ जीवजन्तुओं के अण्डे बच्चे हुये–यदि गाड़ दिये गये तो सड़गल पहिले कीड़े बने शेष भाग चिरकाल तक मिट्टी के नीचे पड़े २ चूर और मिट्टी हो गये साने और रौंदे जा कर उन के ईंट और गारे बने और किसी राजा या धनवान् की महल में लगाये गये अथवा पायखाने की खुड्डियों में चुने गये–यह गति तो इन के मत में उत्तम और मध्यम कर्म करने वालों की हुई अब निकृष्ट मत वालों की निकृष्ट गति को सुनिये––निकृष्ट मतिवाले इन की समझ में वे हैं जो उस वन्ध्यापुत्र अर्थात्

ईश्वर को अपना सेव्य मानते हैं और आप उस के सेवक बनते हैं और अनेक प्रकार के व्रत नियम संयम कर शरीर को भांत २ की ताड़ना देते हैं–ऐसे लोग जब पञ्चतत्त्व के वियोग को प्राप्त होते हैं तो न मछलियों के आहार हों कि उत्तम गति पावें न गाड़े जाते हैं कि मध्यम गति के अधिकारी हों बल्कि यहां तक जला दिये जाते हैं कि उन का संपूर्ण शरीर अत्यन्त सूक्ष्म परमाणु को प्राप्त हो लाखों वर्ष तक उसी परमाणु की दशा में भ्रमण किया करता है कल्पकल्पान्तर के उपरान्त संभव है तत्त्वों के संयोग से फिर दूसरी दशा में प्राप्त हो–यह कथन पुनर्जन्म के सम्बन्ध में नास्तिकों का है हम नहीं जानते साधारण मनुष्यों की स्वाभाविक बुद्धि इसे कहां तक स्वीकार करे गी–ईश्वर परलोक तथा स्वर्ग नरक का होना न मानने वाले नास्तिकों का इस प्रकार का पुनर्जन्म नास्तिकों ही को भाता है–आस्तिकों का तो यही निश्चय है कि जीव कोई स्वतन्त्र पदार्थ है प्राचीन दार्शनिकों का ५ तत्त्व और आधुनिक वैज्ञानिकों का धातु अधातु के भेद से ६३ तत्त्व सब एक दूसरे की आपेक्षा स्वतन्त्र और जड़ पदार्थ हैं—जो स्वतन्त्र पदार्थ हैं उन का संयोग कैसा ? यदि कारण पाय उन का संयोग भी हो जाय तो जड़ में चैतन्य के उत्पन्न करने का गुण कहां से आवेगा जो जड़ हैं वे तीनों काल में जड़ बने रहें गे जब तक उस महाचैतन्य की सत्ता उन में न आवेगी ये जड़ पदार्थ कभी चैतन्य होहींगे नहीं—केवल इतना ही नहीं वरन पदार्थों मे से जो उन के संपूर्ण गुण निकाल लिये जांय जिन गुणों ही का ज्ञान हम सबों को होता है तो अन्त में कोई पदार्थ शेष रहे ही गा नहीं जैसा अग्नि का गुण जलाना और प्रकाश है ये दोनों गुण अग्नि में से निकाल लिये जांय तो अग्नि का ज्ञान केवल भ्रम और स्वप्न मात्र रहेगा–ये नष्ट भ्रष्ट होटलों में अखाद्य उच्छिष्ट मांस का मज़ा चखने वाले और शराब का प्याला ढलकाने वाले यदि पुनर्जन्म का चरखा ओटने लगें तो उन के मैले कामों का परिणाम कूकर शूकर योनि जो उन्हें अन्त को लेना ही पड़ेगा इस का अन्देशा उन के ऐश और आराम में महाविघ्नकारी हो इस लिये उन्हे यही पसन्द आया–

" जब अजल से चलबसे रही सज़ा व जज़ा की खबर किसे ।
हैं सब मुआहिसे यहीं के न अज़ाब है न सवाब है " ॥

जब देखते हैं इन कुचरित्रों का चरित्र लिखने से सूखी लकड़ी की बनी

लेखनी का मुंह काला पड़गया और इतनी घृणा उसे हुई कि इनके बारे में जो कुछ वह जानती थी बमन कर दिया तब इसके पढ़ने से सच्चे धर्मिष्ठ पुरुषों को अवश्य ही घृणा हुई होगी—अस्तु यहां तक नास्तिकों का पुनर्जन्म के बारे में क्या मत है सो लिखा गया अब आस्तिकों का इसके सम्बन्ध में क्या कथन है उसे दिखाते हैं—

पहले उस मत की व्यवस्था लिखना उचित मालूम होता है जिसके आदि मतप्रवर्त्तक स्वयं तो बड़े ज्ञानवान् न थे किन्तु अपने देश के निपट असभ्य दुराचारियों की दारुण दुःख दशा देख दयार्द्र हो उन्हें उस दुःख से छुटाने को ईश्वरीय ज्ञानवाली विद्या की खोज में अपनी मातृभूमि छोड़ निकलना पड़ा—बड़े२ भयंकर जीवजन्तु सांप बीछू सिंह व्याघ्र संकुल मरुस्थली तथा अनेक दुर्गम पहाड़ों को नांघते डांकते असंख्य नदी नालों में बहते उतराते लगातार चार२ छ २ दिन बल्कि एकबार ४० दिन निराहार रह ईश्वर की प्रेरणा से वहां पहुचे जहां उस सर्वव्यापी की आज्ञा सब भांत पूर्ण रीति पर मानी जाती थी—वहां के पुराने ऋषि मुनि विद्वानों से उपनिषद् प्रतिपाद्य ईश्वरीय विद्या का गुप्त ज्ञान सीख अपने देश को लौट आये और वहां के असभ्य दुराचारियों को ईश्वर की आज्ञा के सिखलाने का प्रयत्न किया—क्यों कर सम्भव था कि वे असभ्य जाति वाले ईश्वर की उन गूढ़ आज्ञाओं का मर्म समझ सक्ते तथापि इस सच्चे पुरुषार्थी ने अपने भरसक इन्हें समझाया और लिख कर भी छोड़ गया—यह धर्मज्ञ महात्मा जीतेजी पुनर्जन्म तथा ईश्वरीय ज्ञान की दूसरी२ सूक्ष्म बातें अपने शिष्यों को बराबर समझाया किया जैसा कि उसके उपदेश की पुस्तकों से प्रत्येक पक्षपातरहित बुद्धिमानों को ज्ञात हो सक्ता है—संसार का यह एक क्रम चला आता है कि इस तरह के महात्मा कालवश हो जब स्वर्ग को सिधार जाते हैं तब उन के शिष्य सम्प्रदाय वाले एक हाथ ककरी एवा हाथ बिया के समान उसके दिये हुये सूक्ष्म उपदेशों में नई गढ़न्त मिलाय अपने देश के लोगों को समझाते रहते हैं—यह सदा का नियम है कि पहिले तो उपदेशक सूक्ष्म बातों के मर्म गढ़न्त से बिगाड़ देते हैं उपरान्त उस उपदेश के जानने वाले उसमें अपनी ओर से नोन मिर्च लगाते हैं अन्त में परिणाम यह होता है कि जो उस उपदेश से लाभ होता उसके बदले हानि होने लगती है—

जब अत्यन्त हानि होने लगी तो स्वर्ग को सिधारे हुये महात्मा पुनः संसार में जन्मधारण कर अपने उपदेश में जो कुछ बिगाड़ हो जाताहै उसे फिर सुधारते हैं—इस तरह परमात्मा से प्रेरित हो उन महात्माओं को बार २ आना पड़ता है और देश काल के अनुसार जब जैसा वे देखते हैं तब तैसा सुधार अपने उपदेश में किया करते हैं वही उपदेश भिन्न २ मत और सम्प्रदाय बन जाते हैं—इस तरह के महात्मा मूसा ईसा और महम्मद हैं मूसा के मत पर चलने वाले यहूदी, ईसा के पैरोकार ईसाई और महम्मद के कहने के अनुसार चलने वाले मुसलमान हैं—यद्यपि इन के आदि आचार्यों ने पुनर्जन्म का उपदेश दिया है पर उन पैरोकारों ने अपनी बुद्धि के अनुकूल उस्को माना और मानते हैं—इन का विश्वास है आदि में ईश्वर ने आदम नाम के एक पुरुष को सृजा और उस्की नासिका के दोनों नथुनों में फूकमारा ईश्वर के फूंक मारते ही आदम के शरीर में जान आगई तब से जीवधारी सृष्टि हुई इस्के पहिले सजीव कोई न थे—उपरान्त ईश्वर ने आदम को अकेला देख उस्के मन में आया कि आदम का एक जोड़ा बनावें—एक दिन आदम सो रहा था ईश्वर ने उस्की बांई पसुली को निकाल लिया और उस्की एक स्त्री बनाई जिस्का नाम हौवा रक्खा—बहुत दिनों तक यह जोड़ा खुदा की बाग अदन में अज्ञान नंगा घूमता रहा—कुछ दिन के उपरान्त शैतान जिसे खुदा ने लड़ाई में हराया था और जहन्नुम में भेज दिया था अपना बदला चुकाने को खुदा के बाग अदन में घूमता हुआ आया और आदम की स्त्री हौवा को बहकाया हौवा ने आदम को बहकाया और दोनों ने खुदा की आज्ञा के विरुद्ध ज्ञान के वृक्ष का फल खाया जिस्से इन को ज्ञान हुआ तब खुदा इन से खफा हो दोनों को बाग अदन से निकाल दिया और ज़मीन पर फेंक दिया—पृथिवी पर आने के उपरान्त इन के लड़के वाले हुये और इन की औलाद चली यहां तक कि सारे संसार में आदम के औलाद फैल गये—हम कहते हैं आदम में तो जीव ईश्वर के फूंकने से आया उस्के सन्तानों में जीवनी शक्ति कहां से आई ? बायबिल या कुरान इस बारे में कुछ नहीं कहते किन्तु इस्के उपरान्त जो किताबें बनी जिन को शरह कहते हैं उन्में बालांकों ने यह लिख दिया कि खुदा रोज़ नये जीव पैदा करता जाता है अस्तु यह तो जीवों के पैदा होने का हाल हुआ अब मरने के उपरान्त उन का क्या होता है लाखों आदमी नित्य मरते हैं उनकी आत्मा कहां इकट्ठी मंगो रहती है इस्का

उत्तर इन के यहां कुछ नहीं है—उस्की सृष्टि में इतनी विषमता क्यों है इस्का भी कुछ जवाब नहीं है इत्यादि दोष का परिहार केवल हिन्दुओं के शास्त्र में है जिसे हम दूसरे अंक में प्रकाश करेंगे। शेष—

भिन्न २ देशों में लोगों कि भिन्न २ आचरणपद्धति ॥

जिस तरह प्रत्येक देश के लोगों में और २ सब बातें पहिनाव व ओढ़ाव रहन सहन आदि एक दूसरे से अलग २ हैं उसी तरह सभ्यता के नियम नित्य का सामाजिक बर्त्ताव और आचरण भी अलग २ हैं—जवान कन्या या बहन का मुह चूमना हम लोगों में अत्यन्त निन्दनीय और कुत्सित कर्म है वही इङ्गलेण्ड तथा दूसरे २ यूरोप के देशों में स्नेह वात्सल्य और प्रेम प्रगट करने की एक प्रचलित रीति है वे लोग इस में कोई दोष नहीं समझते—यहां इस विषय पर कुछ तर्क वितर्क करना ही व्यर्थ है कि कौन उचित करता है कौन बेजा—उनके इस आचरण को असभ्य और दुराचार के नाम से पुकारना ऐसा ही भूल होगी जैसा उन का हमारी किसी रीति या आचरण को बदनाम करना—हमारी राय में सभ्यता असभ्यता का सरोकार किसी विशेष आचारण से नहीं रखता जो लोग वास्तव में साधुवृत्त हैं उनका आचरण भी उत्तम होगा और मानसिक उन्नति भी उनमें भरपूर होगी—एक चोर उचक्का बदमाश और एक सीधा सादा पण्डित तथा एक लम्पट परस्त्रीगामी और एक रेवरेंड पादरी साहब के आचरण कभी एक न होंगे किन्तु सभ्य जाति और सभ्यदेश में पैदा होने का अभिमान दोनो को एकसा होगा केवल इस अभिमान मात्र से क्या वह उचक्का और लंपट परस्त्रीगामी वास्तव में सभ्य कहलाने योग्य होगा? कभी नहीं—मैं समझता हूं कि सभ्य वही है जो मानसिक उन्नति में और सदाचार पालन में सावधान है—बोलचाल में शौनकाफ की झिलावट भड़कीली चटकीली पोशाक असंख्य धन मात्र से मनुष्य सभ्य नहीं कहा जा सकता—

वित्तं यत्नेन संरक्षेद्वित्तमायाति जाति च ॥
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ॥

प्रत्येक व्यक्ति के चित्त के भाव अनेक और विविध हैं शोक हर्ष क्रोध ईर्षा

आदि जिन्हे वह अपने आचरण और वर्त्ताव में प्रगट करता है कभी एक से न होंगे और यह बात केवल मनुष्य ही के हिस्से में नहीं पड़ी किन्तु जन्तुमात्र हर्ष शोक आदि मनोगत भाव के चिन्ह प्रगट करते हैं–जैसा कुत्ता अपने मालिक को देख दुम हिला कर हर्ष प्रगट करता है बिल्ली दुम हिला कर क्रोध प्रगट करती है इत्यादि–शोक से मनुष्य की मुखच्छवि मैली पड़ जाती है मन की प्रफुल्लता जाती रहती है शोक के उद्वेग में लगातार टपकती हुई मोतीसी आंसू की बून्द बिन गुन का हार उस के लिये होता है–इसी तरह हर्ष के प्रगट करने के भी अनेक अद्भुत प्रकार हैं मित्र या प्रिय जन के समागम में मनोमुकुल का विकसित और प्रफुल्लित हो जाना मुख पर मुसकिराहट और ईषत्हास्य के कारन दमकते दांतों की किरन से अधर पल्लव की रक्तिमा का विकाश पुलकावली का प्रगट हो जाना इत्यादि–कोई हमारा उपकार करता है तो रोमर से उसे अशीसते हुए इन्द्र वरुण को भी उस के यश के सामने तुच्छ कर दिखाते हैं–यदि कहो यह अतिशयोक्ति और झूठी प्रशंसा एक प्रकार की निन्दा है तो ऐसा समझना ही निपट अज्ञानता है क्योंकि कृतज्ञता का प्रादुर्भाव इस मान का नहीं है कि वह किसी के रोके रुके–

इस तरह अनेक मनोगत भावों के प्रगट करने के प्रकार का नाम आचरण "एटिकेट" या अदब कायदा है जिस को न जानिये कितनी किसमें हैं–शोक हर्ष भय क्षमा या क्रोध किसे नहीं होता जड़ अलबत्ता नहीं वरन चेतना वाले सभी इन मनोगत भावों का अनुभव करते हैं और उन भावों के साथ उन के बोधक चिन्हों का होना भी आवश्यक होता है––इस लिये उन २ भावों के साथ उन के बोधक चिन्हों को नियमित रखना एक बड़ाभारी गुण है–दो मनुष्यों को लीजिये दैववश कोई बड़ाभारी दुःख उन दोनों पर आ पड़ा है जैसा पुत्रमरण या किसी दूसरे अपने प्रिय जन का वियोग इत्यादि––एक ईश्वरेच्छानुवृत्ति धारण कर सन्तोष के साथ अपने शोकावेग को दबाता है दूसरा निरर्गल शोक के वेग में व्याकुल हो उठता है––शोक दोनो को है पर सर्वसाधारण अधिकतर सहानुभूति उसी के साथ प्रगट करें गे जिस में शान्तिभाव के साथ शोक के सह लेने की तितिक्षा है सन्मान भी अधिकतर उसी का सब लोग करें गे––इस से विदित होता है कि पहिले में मानसिक उन्नति

"मारेल करेज" विशेष है दूसरा उसमें बहुत पीछे हटा हुआ है इस लिये पहिले को हम सभ्य कोटि में रक्खेंगे दूसरे को असभ्यता की कोटि में—

अब हम यह दिखला चुके कि बाहरी आचरण की चमत्कारी से सभ्यता की पदवी नहीं मिलती वरन मानसिक उन्नति से—जिन लोगों का आचरण अच्छा हो उन्हें जान लेना चाहिये कि ये सभ्य जाति के हैं और मानसिक उन्नति भी उनमें है—जैसा विद्वान लोगों का जो अरब के एक महाअसभ्य जाति वाले हैं और उन्नति के शिखर पर चढ़े हुये इंगलैण्ड निवासी के शोकभाव के प्रगट करने का तरीका जल्द बतला देगा कि कौन सभ्य जाति हैं कौन असभ्य जाति के हैं—किसने मानसिक उन्नति प्राप्तकी है किसने नहीं—इसी तरह हर्ष को हम लोग साधारण रीति से प्रगट करते हैं किन्तु अफरिका देश के राक्षसों में एक भिन्न रीति है—मिस्टर प्रियरिक जो ब्रिटिशगवर्नमेण्ट की ओर से अफरिका के सुडान देश में नियुक्त थे उन का बयान है कि एक बार जब वह साहब नील नदी के उद्गम स्थान की खोज में लगे थे वहां सुडान के असभ्य जङ्गलियों के बीच होकर गुज़रे तो उनमें खलबली पड़ गई—उन लोगों ने ऐसा अद्भुत जन्तु अर्थात् सुफैद रंग का मनुष्य कभी नहीं देखा था और इस अचम्भा देखने को हरएक जङ्गली ने अपनी २ मांद से जिसमें वे लोग रहा करते थे सिर निकाला—विस्मयाकुल चकित जंगलियों की इनके चारो ओर भीर लग गई ऐसा कि बड़ी मुशकिलों से यह वहां से अपने साथी समेत आगे बढ़ सके दो चार शीशे की गोलियां प्रेयरिक साहब से पाकर ये जङ्गली ऐसे खुश हुए कि कई एक बैल उन्हों ने साहब को दिये जिस्की कीमत हिन्दुस्तान में की बैल ३० या ४० रुपये से कम न हो—साहब इन लोगों के बीच खेमा डाल टिक गये खेमे के चारो ओर बन्दूक तलवार आदि रक्खे हुये थे—दूसरे दिन इन जंगलियों का सरदार प्रेयरिक से मिलने को आया और बन्दूक तलवार आदि सामान देख चकित हो आंखें फाड़२ ताकने लगा—थोड़ी देर चुप बैठा रहा उपरान्त उसके मुख पर हर्ष के चिह्न प्रगट होने लगे साहब का हाथ उस ने पकड़ लिया और इन का हाथ उलट हथेली पर थूक दिया उपरान्त फिर साहब के मुंह पर भी इसने थूंका उसके इस आचरण पर प्रेयरिक को क्रोध तो बहुत आया पर अपने को रोका और इन्हों ने भी उसके मुंह पर थूक दिया—इससे उस जंगली सरदार का हर्ष और

अधिक होगया तब प्रेषरिक ने जाना कि इन जंगलियों में हर्ष और मित्रता प्रगट करने की यही रीति है--इसी तरह न्यूज़ीलेण्ड के जंगलियों में यह एक अद्भुत रीति है कि जब किसी प्रियजन की मुलाकात होती है तो निराले ढंग से वे अपने मनोभाव को प्रगट करते हैं-संसार के सब देशों के मनुष्यों की यह रीति है कि जब मित्र मित्र से मिलता है तो प्रसन्न हो हंसता मुसकिराता है पर इन का ढंग ही निराला है-दो बहुत दिन के बिछुरे दोस्तों में मुलाकात हुई कि एक दूसरे की ओर पीठ कर बैठ जाते हैं चटाई एक प्रकार के पेड़ की छाल जिसे ये वस्त्र के काम में लाते हैं उससे सम्पूर्ण शरीर और मुंह ढांप लेते हैं केवल आंख मात्र खुली रहती है और रोना चिल्लाना शुरू कर देते हैं-इस अवसर में यदि खाने की कोई वस्तु सामने रख दीगई तो थोड़ी देर के लिये रोना चिल्लाना छोड़ खाने पर टूटते हैं और खूब ही हत्थे साफ करते हैं क्यों-कि रोने में परिश्रम होता है उससे भूख भी अधिक बढ़ जाती है जहां खाना खा चुके कि फिर वही रोना चिल्लाना आरम्भ कर दिया अचरज है कि न जानिये इतना आंसू कहां जमा रहता है कि जब चाहा बहाना आरम्भ कर दिया-यूरोप के प्रायः समस्त देशों में दस्तूर है कि मुलाकातियों में भेंट होते ही परस्पर एक दूसरे को चूमने लगते हैं और यह कारवाई दस २ मिनिट तक जारी रहती है फ्रान्स जर्मनी प्रूशिया सबी जगह यह दस्तूर है किन्तु रूस देश में सब से अधिक है-इङ्गलैण्ड के लोगों को इससे बड़ी चिढ़ है-हिन्दुस्तान का कोई आदमी रूस में जाय और सेण्टपीटर्सबर्ग की गलियों में दो मुकैलों को आपस में मुंह चूमते देखे तो मारे हंसी के पेट उसका फूल उठै-

डाक्टर लिविंगस्टन अफ्रिका के सियाह का बयान है कि अफ्रिका के जंगली इन का बड़ा आदरभाव करते थे--इस का एक कारण यह था कि उक्त साहब हथियार अपने साथ लिये थे इस से भयंकर मालूम होते थे जंगली सब डरते थे-दूसरे लिविंगस्टन ने इनका बहुत कुछ उपकार किया था इसलिये जब कभी इस से उन जंगलियों की मुलाकात होती थी तो वे डाक्टर साहब का बड़ा सन्मान करते थे-हिन्दुस्तान में आदर देने की रीति है कि अपने बड़े को देख खड़े हो जाते हैं सलाम बन्दगी कोर्निश नमस्कार प्रणाम आदि उसका उपचार करते हैं-अफ्रिका के जंगलियों की उस जाति में जिसका नाम बटाकान है यह

रीति है कि अपने पूज्य पुरुष को देख धरती पर लोटने लगते हैं और पैर उठाय जांघों को दोनों हाथों से पीटना और "किनावोम्बा" चिल्लाना आरम्भ कर देते हैं—डाक्टर लिविंगस्टन लिखते हैं कि कई बार यह देख उन को अत्यन्त घृणा हुई उन्हों ने इन जंगलियों को बहुत कुछ डांटा पर कुछ असर न हुआ—फीजी नामक जाति के जंगलियों की यह रीति है कि जब वे अपने किसी सरदार को देखते हैं तो उस्के सामने गिर पड़ते हैं और अपना मुंह ढांप लेते हैं—सरदार के हाथ में एक डण्डा होता है जिसे वह हिला देता है मानो यह प्रगट करता है कि प्रजा का प्रणाम स्वीकार हुआ—

बंकुबेर द्वीप के रहने वालों में रीति है कि जब कोई बड़े दरजे का आदमी किसी छोटे दरजे वाले से मिलता है तो वह एक अद्भुत प्रकार का चेहरा मुंह पर लगा लेता है इस चेहरे के ऊपर बहुतसा बकुले का पर गंजा रहता है और दो नौकर पीछे एक टोकरी में लिये रहते हैं—जब उस्से मुलाकात होती है तो सरदार नाचना और सिर को हिलाना शुरू कर देता है पर झड़ २ कर आदृत पुरुष के ऊपर गिरता है और वह चुप खड़ा रहता है पीछे से नौकर लोग और पर लादते जाते हैं जितना अधिक पर से वह लदजाय उतना ही मानो उस छोटे दरजे के पुरुष का विशेष आदर किया गया—इस तरह खयाल कर देखा जाय तो विदित होगा कि कि हर्ष शोक भय ईर्षा आदि चित्त के भाव जन्तुमात्र को होते हैं और किसी न किसी चिह्न या इशारे से उसे प्रगट भी सब ही करते हैं—किन्तु शिक्षित अशिक्षित अर्द्धशिक्षित समाज के प्रपञ्च से उस के प्रगट करने के अनेक प्रकार हैं—शिक्षितसमाज वाले अपने मानसिक भावों को ऐसे ढंग से प्रगट करते हैं कि वही सभ्यता के आचरण के नाम से प्रसिद्ध होता है अर्द्धशिक्षित या अशिक्षित के वे ही मानसिकभाव ऐसे आचरण के साथ प्रकाशित किये जाते हैं कि जिन्हें देख घृणा होती है—सरदार या आदरणीय पुरुष को देख सन्मानार्थ गिर पड़ना या लोट जाना या भीरु डरपोक के समान हाथ जोड़ना मानसिक उन्नति में बहुत आगे बढ़े हुये यूरोप निवासियों को तुच्छ मालूम होगा उसी सन्मान को सलाम बन्दगी टोपी या रुमाल हिलाना इत्यादि क्रम से प्रगट करना सभ्य समाज के आचरण में दाखिल किया जाता है—इस्में सन्देह नहीं बाहरी आचरण निरी टीमटाम है सही भिन्न २ समाज में भिन्न २ रूढि है पर वास्तव में सभ्यता का यह पूरा मानदण्ड है—

समाज के नियमों का पालनआचरण-पद्धति की दूसरी सीढ़ी है ॥

हम ऊपर कह चुके हैं कि शिक्षित अशिक्षित अर्द्धशिक्षित के भेदसे समाज तीन तरह की है—इन तीनों तरह की समाज में जो नियम चल पड़े हैं उन का पालन आचारण पद्धति की दूसरी सीढ़ी हम इस लिये कहते हैं कि आप मानसिक उन्नति " मारेलकरेज " में कितना ही आगे बढ़े हों समाज यदि अशिक्षित या अर्द्धशिक्षित होतो आपकी मानसिक उन्नति कुछ नहीं कर सक्ती पिंजरे में बन्द पक्षेरू के समान भीतरी ही भीतर फड़फड़ाया करो अन्त को तुम भी उसी समाज के अनुसार चलने को बाधित होगे समाज पर तुम अपना कुछ असर नही पहुंचा सक्ते—शिक्षित और अशिक्षित समाज में भेद इतना अलबत्ता रहता है कि शिक्षित समाज के नियम इतने कड़े और स्वतंत्रता के विरोधी नहीं होते जितना अशिक्षित मण्डली के—इस्में सन्देह नहीं प्राणीमात्र की यही इच्छा रहती है कि सुख की प्राप्ति हो और दुःख की निवृत्ति और सब लोग सदा इसी यत्न में लगे भी रहते हैं तथापि सुखी कोई लाखों में दो एक देख पड़ते हैं इस्से दो बात प्रत्यक्ष है एक तो यह कि वे जानते ही नहीं कि वास्तव में सुख क्या है किस्में और कैसे सुख प्राप्त हो सक्ता है इसी अज्ञानता के कारण अन्धों के माफिक टटोलते फिरते हैं और वही काम करते हैं जिस्में सुख के बदले उलटा दुःख मिले—दूसरे वे हैं जिन्हे वास्तविक सुख दुःख से पूर्ण परिचय है और अपनी स्वतंत्रता को काम में ला सकें तो टटोलने वाले उन अन्धों के समान दुख के पास कभी न जांय और वही काम करें जिस्में निरन्तर सुखही सुखहै—पर समाज के प्रचलित आचरण के विरुद्ध होता है इस्से बेबश हैं—यूरोप के भाग्यवान् देशों की तो बात ही निराली है भारत के अस्त का महाकारण इस समय केवल समाज के कड़े नियमों का पालन है जिस ने हमें ऐसा जकड़ रक्खा है कि ज़रा भी हील ड़ोल नहीं सक्ते वरन उन नियमों के पालन में हमारी यावत् योग्यता और कमाई का छोर हो जाता है फिर भी उन कड़े नियमों का भरपूर पालन किसी न किसी अंश में रही जाता है—यूरोप की सभ्य समाज के इनेगिने दो चार नियम हैं जैसा साली से व्याह न करना इत्यादि तब इन का पालन भी कोई बड़ा कठिन काम नहीं

है हमारे यहां के सामाजिक नियमों की लिस्ट सब लिखी जाय तो एक छोटीसी पुस्तक तैयार हो और फिर आगे बढ़कर यदि उन एक २ नियमों की पूरी तसरीह की जाय कि क्यों वे नियम गढ़े गये उन की बुनियाद क्या है जुदे जुदे हाद से कशानक और गल्पें जो उन २ नियमों के साथ अन्तर्गर्भित हैं उन का सब हाल लिखा जाय तो कई एक जिल्द तैयार हो फिर भी कदाचित् उन का सिलसिला न टूटै—स्वच्छन्दतापहारक सहामंत्र का जप या पुण्यपाठ के समान यदि हम यहां पर उन्हे गिनाने लगें तो सिवाय व्यर्थ की कुढ़न पैदा होने के लाभ कुछ नहीं है—चतुर चालांक के लिये ज़रा सा इशारा बहुत होता है कई बार कई तरह पर प्रत्यक्ष करा दिया गया कि सामाजिक नियमों की कड़ाई हमें आगे बढ़ने से रोक रही है पर यह घस्सड़ कौम दस्तूर रिवाज या «कसटम्» के पुराने सगड़ को हांकने से बाज़ नहीं होती—संशोधक और «रिफारमर» बेचारे अनेक तरह की व्यर्थ चेष्टा इन्हे राह पर लाने की कर अपना सा मुह लिये रह जाते हैं ये बाल बराबर भी उस पुराने ढर्रे से इधर उधर नहीं हटा चाहते इसी से हम कहते हैं सामाजिक नियम आचरण की दूसरी सीढ़ी है—

सौ अजान एक सुजान

उपन्यास

जि० १५ नं० १० के आगे से

पढ़ने वाले कहैं गे कहां का पुराना चरखा इतने दिनों बाद इसने फिर ओटना आरंभ किया जैसा कोई सोता हो एक बारगी चौंक उठै और ऊंघता हुआ बेसिर पैर की बातें बरांने लगे—पाठकगण हकीकत हाल यों है कि किस्से कहानियों में मैं आप को बहुत दिनों तक रमाये रहा कहावत है कुछ धुन कुछ धुन कुछ रामचर्चा सुन रामचरचा की भांत जी चाहता है अब आप को अच्छेर उपदेश सदुपदेशिक्षा के ढंग पर महात्माओं के जीवनचरित्र तथा दूसरी २

परमार्थ साधन की बातें सुनाऊं और संसार के जंजाल से अलग कर परमार्थ की ओर आप को रुजू करूं—मेरे भी अन्त के दिन आये हैं " अन्ते मतिः सा गतिः " इसी किस्से कहानी में फंसा हुआ एक दिन टांय से मुंह बाय रह गया रामचरचा से विमुख हिन्दू धर्म के अनुसार दूसरा जन्म लेना पड़ा तो अक्षर पिशाच हुआ—दूसरे यह कि इस उपन्यास का नाम ही सौ अजान एक सुजान है सुजान संसार में कहीं सौ में एक दो हों गे अजान की कमी नहीं—अजानमण्डली का चरित्र उद्घाटन निपट भयका स्थान न भी हो तो जल के बीच रह मगर से विरोध के समान चरित्र उद्घाटन करने वाला संसार में सर्वसंमत क्योंकर हो सक्ता है—" ज्यों २ भीजै कामरी त्यों २ भारी हो " ज्यों २ हम आगे बढ़ते जायंगे त्यों २ अजान लोगों के कुचरित्र का पत्रा खुलता जायगा—इस लिये इसका प्रस्तार आगे बढ़ाने से उत्तम यही समझा कि भीन गहें किन्तु क्या करें हमारे कई एक पढ़ने वाले जिन्हें इसका रस भीन गया है उन के बार २ तकाज़े ने अन्त को हमें ऐसा लाचार किया कि हमें फिर इसे शुरू करना पड़ा—

११ प्रस्ताव—

"नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव ।
शनैरावर्तमानस्तु कर्त्तुर्मूलानि कृन्तति । मनुः

अधर्म करने का फल अधर्मकारी को वैसा जल्दी नहीं मिलता जैसा पृथ्वी में बीज बो देने से उसका फल बोने वालेको थोड़े ही दिन के उपरान्त मिलने लगता है किन्तु अधर्म का परिपाक धीरे २ पलटा खाय जड़ पेड़ से अधर्मी का उच्छेद कर देता है—

अनन्तपुर से आधमील पर सेठ हीराचन्द का बनाया हुआ नन्दन उद्यान नाम का एक बाग है हीराचन्द के समय यह बाग सच २ नन्दन वन की शोभा रखता था सब ऋतु के फल फूल इस में भरपूर फलते फूलते थे ठौर २ सुहावनी लता और कुञ्ज विन्द्रावन की शोभा का अनुहार करते थे शङ्गमर्मर की रविशों पर जगह २ फौहारे जेठ वैशाख की तपन में सावन भादों का आनन्द बरसा रहे थे—एक ओर इस बाग के बड़ी लम्बी चौड़ी बारहदुआरी थी जिस्में हीराचन्द नित्य

अपने कामकाज से सुचित्त हो सन्ध्या को यहां आते थे पण्डित साधु अभ्यागत तथा गुणी लोगों से यहीं मिलते थे और अपने वित्त के अनुसार सबों का थोड़ा या बहुत जो कुछ हो सक्ता सत्कार सन्मान करते थे अस्तु हीराचन्द की बात उन्हीं के साथ गई अब उसको गाईगीत के माफिक फिर २ गाने से लाभ क्या ? "आगे के दिन पाछे गये हरि से कियो न हेत। अब पछताये क्या भया चिड़िया चुग गईं खेत" जिस फलवन्त धरती में अमृतरस दाखफल और केसर उपजते थे उसी में कालपाय ऊंठकटारे और अनेक कटैले पेड़ जम आये तो इसमें अचरज की कौनसी बात हैं कालचक्र की चक्रगति सदा एकसी रहे तो वह चक्र क्यों कही जाय "नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण"

बरसात का आरम्भ है रिमझिमरिमझिम लगातार पानी की छोटी २ फूही ग्रीष्मसन्तापतापित वसुधा को सुधादान के समान होने लगीं कालीर घटायें सब ओर उमड़ २ बरसने लगीं मानो नववारिद घन उपवन स्थावर जंगम जीवजन्तुमात्र को बरसात का नया पानी दे जीवनदान से जितने दानी और वदान्य जगत् में विख्यात हैं उन्में अपना औवल दरजा कायम करने लगे—या यों कहिये ज़ालिम कमबख्त जेठ माह के ज़ुल्म से तड़फते हांफते पानी २ पुकारते जीवों को देख दया से पिघल खिन्न हो आंसू बहाने लगे—नदी नाले उमड़ २ अपना नियमित मार्ग छोड़ वैसा ही स्वतन्त्र बहने लगे जैसा हमारे इस कथानक के मुख्य नायक दोनों बाबू बेरोक टोक विवेक के मार्ग को छोड़ शरम और हया से मुह मोड़ दुस्सङ्ग के प्रवाह में वह निकले—विमल जल वाले स्वच्छ सरोवर जिन में पहिले हंस सारस चक्रवाक कल ध्वनि करते हुये विचरते थे उन के मटीले गंदले पानी में अब मेढ़क वैसही टर २ करने लगे जैसा इन बाबुओं के दरबार में जहां पहिले चन्दूसा मतिमान् सुजान महामान्य था वहां नन्दू तथा रग्घू सरीखे कई एक ओछे छिछोरे बाबू को दुर्व्यसन के कीचड़ में फसाय आप कदर के लायक हुये—सूर्य चन्द्रमा तारागण सबों का प्रकाश रात दिन मेघ से ढंप मन्द पड़जाने से जुगनू कीड़ों की कदर हुई जैसा दुर्दैवदलितभारत की इस आरत दशा में चारो ओर जब अज्ञानतिमिर की घटा उमड़ आई तो साधु सदाचारवान् सत्पुरुष कहीं दर्शन को भी न रहे झूठे पाखण्डी दुराचारी भक्कार पुजवाने लगे—असती जारिणी के कटाक्ष के समान सौदामिनी अभ्रपटल में चमक २ छिपती हुई मानो इस बात

को प्रगट करती है कि चरित्र में दाग लगजाना ऐसी ही बुरी बात है कि मुह छिपाना पड़ता है—अथवा यह बिजुली की चमक मानो बादलों के नेत्र हैं जिन के द्वारा निशा अभिसारिका नायिका का मुख देख उन्हें यह भ्रम होता है कि निरन्तर की धारापात में चन्द्रबिम्ब आकाश से पृथिवी पर गिरगया क्या? हाय गज़ब हुआ! यही शोच में भर बड़ी ज़ोर से चिल्लाने लगते हैं यह गरजने का शब्द उन्हीं बादलों का चौंक कर चिल्लाना है—दिन में सूर्य का रात में चन्द्रमा का दर्शन किसी २ दिन घड़ी दो घड़ी के लिये वैसेही घुणाक्षर न्यायसा होगया जैसा अन्यायी राजा के राज्य में न्याय और इनसाफ कभी २ बिना जाने अकस्मात् हो जाता है—पृथ्वी पर एकाकार जल छाजाने से भूभाग का सम विषम भाव तत्त्वदर्शी शान्तशील योगियों की चित्तवृत्ति के समान जाता ही रहा—हिन्दुस्तान में बरसात का मौसिम बड़े आमोद प्रमोद का समझा जाता है और उस समय जब इस उन्नीसवीं सदी की आसाइशें और आराम रेल तार इत्यादि कुछ न थे सबी लोग बरसात के सबब अपना २ कामकाज छोड़ देने को लाचार हो जाते थे यही कारण है कि जितने तिहवार और उत्सव सावन भादों के दो महीनों में होते हैं उतने साल भर के बाकी दस महीनों में भी नहीं होते—उद्यमी और कामकाजी लोग भी जिन को बिना कुछ उद्यम और परिश्रम किये केवल हाथ पर हाथ रख बैठे रहने की चिढ़ है और एक क्षण भी ऐसा व्यर्थ नहीं गवाया चाहते जिसमें वे अपने पुरुषार्थ का कुछ नमूना न दिखलाते हों वे भी वर्षा ऋतु में शिथिल और ढीले पड़ जाते हैं तो आवारगी और व्यसन के हाथ में अपने को सौंपे हुये इन दोनों बाबुओं का क्या कहना जिनको हरदम कोई नईदिल्लगी नये शगल की तालाश रहती है मसल है "एक तो तितलीकी दूजे चढ़ी नीम"—

"कपिरपि च कापिशायन मदमत्तो वृश्चिकेन संदष्टः।
अपि च पिशाचग्रस्तः किम्ब्रूमो वैकृतं तस्य"—

रईस और प्रतिष्ठित लोगों में बरसात के दिनों में बहिरी और बागबगीचों में आमोदप्रमोद का एक आम दस्तूर हो गया है सुबीते वाले सबी अपने इष्टमित्रों को साथ ले बहुधा बगीचों में जाय नाचरंग खाना पीना दो एक बार अवश्य करते हैं—ये दोनों बाबू तो जब से बरसात शुरु हुई तब से रातो दिन

बगीचे ही में जा रहे कभी आठवें दसवें घड़ी दो घड़ी के लिये घर आते थे—एक दिन सांझ हो गई थी घटा चारो ओर छाई हुई थी राह बाट कुछ नज़र न पड़ती थी बगीचे के बाहर खेतों की मेड़ पर ठौर २ खद्योत माला हरी २ घासों पर हीरा सी चमक रही थी छिन २ पर गरजने के उपरान्त काली २ घटाओं में दामिनी क्रोधित कामिनी सी दमक रही थी—सब ओर सन्नाटा छाया हुआ था केवल नवबारि समागम प्रफुल्ल भेकमण्डली नाऊ की बरात के समान सब के सब अलग २ ठाकुर बने टर २ ध्वनि से कान की चैलियां फाड़ रहे थे—एक ओर झींगुर अलग २ अपनी बाघाट बक्तृता से दिमाग चाटे डालते थे—पानी की छोटी २ बूंद के गिरने से पेड़ के पत्तों पर जमा हो गये प्रच्युत वर्षा के जल का टप २ शब्द भी सुनाई देता था कभी २ पेड़ पर बैठे पखरुओं का ओदे पंख फारने का फड़ २ शब्द कान में आता था—बारह दुआरी भीतर बाहर सजी और फानूसों से आरास्ता थी रोशनी की जग मगाहट से चकाचौंधी हो रही थी जशन की तैयारी थी नन्दू हुमा और हकीम तीनों बैठे प्याले पर प्याला ढल का रहे थे—दोनों बाबुओं की हुसन परस्ती में धूम थी इस लिये तमाम लखनऊ और दिल्ली के हसीन यहां आ जुड़े थे—बुद्धू पांड़े अफीम के झोंक में ऊंघता तलवार की मुठिया हाथ में कस के गहे डेहुड़ी पर बैठा हुआ मानो बरोय रहा था—"कहां कहां के चौपट चरन इकट्ठे भये हैं असमन ह्वात है कि इन हराम खोरन का अपन बस चलत तो काली पानी पठै देतेन—हाय! यह वही बाग और बारह दुआरी है जहां इन्हीं बरसात के दिनन मा नित्य वेदपाठ और बसन्त पूजा ह्वात रही अनेकन गुनी जनन केर भीर की भीर आवत रही और बड़े सेठ सबन केर पूजा सन्मान करतु रहे तहां अब भांड भगतिये रंडी मुंडी पलटन की पलटन आय जुरी हैं—एक बार एक मुसलटा बारह दुआरी के भीतर घुस गवा रहा तब बड़े सेठ साहब सगर बारह दुआरी धोआइन रहा वही अब निरे मुसल्मानै मुसल्मान भरे हैं—न जानिये इन दोनों बाबूअन का का ह्वै गवा नन्दुआ का सत्यानास होय कैसा जादू कर दिहिस है कि चन्दू महाराज और सेठानी बहू हज़ार २ उपाय कर थकीं कोउनी भांत राह पर नहीं आवते—बादिना बाबू बुद्धदास का बुलाइन रहा हम रात के बहिके घर गहन पर इसका कुछ म्याद न खुला ओकर बाबू से पिट्ट पिट्ट अच्छी नहीं ऊ तो बड़े

जालिया है" हम ने अपने पढ़ने वालों को इस सच्चे स्वामिभक्त का परिचय एक बार और दिलाना इस लिये उचित समझा कि यह मनुष्य भी हमारे इस किस्से का एक प्रधान पुरुष है यह आगे बड़ा काम देगा इसलिये इसे हमारे पाठक याद रक्खें—अब और एक नये आदमी का परिचय यहां पर देना मुनासिब जान पड़ता है क्योंकि बिना ऐसे दो एक और लोगों को बिना भरती किये हमारे कथानक की शृंखला न जुड़ेगी—वयक्रम इस पुरुष का ३५ और ४० के भीतर था नाम इसका पञ्चानन था—पंचानन के जोड़ का दिल्लगीबाज़ और रसीली तबियत का आदमी कम किसी ने देखा या सुना होगा—यह मनुष्य चालचलन का किसी तरह बुरा न था बल्कि चन्दू सरीखे शुद्ध चरित्र की मैत्री के भरपूर लायक था और कसौटी के समय चालचलन की शिष्टता भी इसमें चन्दू ही के टक्कर की थी इसी से चन्दू से इसकी पटती भी थी और अनन्तपुर की छोटी सी बस्ती में दोनों का घर भी एक ही जगह बरन सटा २ था—दोनों के घर के बीच केवल एक दीवाल मात्र का अन्तर था पर गम्भीरता या संकोच का यह जानी दुश्मन था—मुनसिफी तक की मुख्तारी एक मामूली दर्जे पर कर लेना और जो कुछ मिले उतने ही से अपने लड़के बालों को खाने पीने से सब भांत प्रसन्न रखना न ऊधो के देने न माधो के लेने और सांझ को निश्चिन्त लम्बीतान सो रहना केवल इतने ही को यह अपने जीवन का सार समझता था—अच्छा खाना अच्छा पहनने का इसे हद्द से ज़ियादह शौक था तेहवार और कचहरी में तातील का बड़ा मुश्ताक था—किसी के यहां ज़ियाफत में शरीक होने का इसे बड़ा हौसिला था किसी के यहां कुछ काम पड़ने पर दावत खाना या उसको बेवकूफ बनाय ज़ियाफत दिलवाने में यह बहुत कम फर्क समझता था—सारांश यह कि इसका मुख्य उद्देश्य यही था कि जिसमें कुछ हंसी या दिल लगाव हो वही करना साथ ही इसके यह भी था कि दूसरे के घर खाने की इसे लालच या चाट पड़ गई हो सो नहीं—हरहाल में खुश रहना और दूसरों को खुश रखना इसका सिद्धान्त था इसी से क्या छोटे क्या बड़े सब उमर के लोगों से मिलता था उचित और योग्य बरताव से सबों को प्रसन्न रखता था जिस तरह अपने हम उमर वालों से मिलता था उसी तरह कम उमर वाले लड़कों से भी मिल उन को राज़ी कर देता था बरन इसके मसखरेपन से बूढ़े लोग भी खुश रहते थे और कोई

इसे बुरा पहुंचने से न कहता था—यह बात तो कभी इसके मन में आती ही न थी कि ऊंचे पद पर और रुपये के कारण मनुष्य की प्रतिष्ठा और इज्ज़त में कुछ अन्तर आसक्ता है इस लिये जहां कहीं कुछ चुटकी लेने का अवसर मिलता था बिना कुछ बोले नहीं रहता था चाहो वह आदमी कौड़ी २ को मुहताज हो या करोड़पती क्यों न हो—संसार में यदि किसी से दबता था या बुजुर्गी करता था तो केवल चन्द्रशेखर की—पञ्चानन के मन में चन्द्रशेखर का ऐसा रोब जमा हुआ था जिसे खयाल कर अचरज होता था—यद्यपि चन्दू से भी कभी २ यह दिल्लगी छेंड़ बैठता था किन्तु किसी के कहने सुनने से दो एक गम्भीर विचार की भावना कभी को कुछ देर के लिये इसके मन में अवकाश पाती थी तो चन्दू ही के बार २ की नसीहत और उपदेश से—मसखरापन का बर्त्ताव यह साधारण रीति पर सब के साथ रखता था किन्तु मन में सोंचता था कि हम बड़े गौरव के साथ लोगों से वर्त्तते हैं—इस तरह यह लोगों के बीच अपने को खिलौना बनाये था सही पर सबों का सेवक और सब से छोटा अपने को मानता था सर्वसाधारण में यह परोपकारी विदित था और अपने इखतियार भर जो किसी का कुछ भला हो सके तो उससे मुह नहीं मोड़ता था—घमण्ड का इसमें कहीं लेश भी न था सूरत भी भगवान् ने इसकी ऐसी गढ़ी थी कि इसे देख हंसी आती थी—बड़ी लम्बी नाक नीचे को झुके हुये छोटे २ मोछे पस्त कद पेट के ऊपर दोनो छाता खड्डेदार जैसा किसी गहरी नदी के ऊपर आगे की ओर झुका हुआ कगारा हो, बाल सुफैद हो चले थे पर जुल्फ सदा कतराये रहता था—अस्तु आज के जलसे में यह भी शरीक था—" हुमा को देख " बाबू ऋद्धिनाथ तुम ने ऐसा चुम्बकपत्थर अपने पास रख छोड़ा है कि किस पर इसकी कोशिश का असर नहीं पहुंच सक्ता ठीक है ऐसी सोने की चिड़िया आप के हाथ लगी है तभी तो आपने हम लोगों को बिलकुल भुला दिया—

ऋद्धिनाथ—खैर गड़े मुरदे न उखाड़िये बतलाइये अब आप लोगों की क्या खातिरदारी की जाय (जूही का एक २ गजरा सबों के गले में छोड़) चलिये आप लोगों को बाग की सैर करा लावें—(एक बड़ी भारी सन्दूक दो कुलियों के सिर पर लदाये हुये रघू को दूर से आता देख) लाओ २ अच्छे वख्त से लाये ॥

सब लोग—यह क्या है यह क्या है—सन्दूक खोल सबलोग एक २ बाजा उठा

लेते हैं–वाह रे! रग्घू महाराज अच्छी जून यह तुहफा तुम लाये और क्या हिसाब से लाये कि डेढ़ कोड़ी बाजे और यहां डेढ़ ही कोड़ी बाजन के बजवइये भी–

नन्दू (ऋद्धिनाथ से) बाबू साहब हमने कहा था ये बाजे हरगिज़ ज़ियादह न होंगे बल्कि हुमा का हाथ फिर भी बाजन से खाली ही रहा–

पंचानन–अच्छा आप लोग अपना २ बाजा ले चुके हों तो हम "प्रोपोज" करते हैं कि हुमा हम सब लोग बाजन बजाने वालों को "बैंडमास्टर" की जाय–

नन्दू–मैं आपके इस प्रोपोज़ल को सेकंड करता हूं–(मन में) हुमा या ये दोनो बाबू सब इस वख्त मेरे कब्जे में हैं हुमा में हुमापन पैदा करने वाला भी मैं ही हूं–आज यह पुराना चण्डूल पञ्चानन अच्छा आ फसा यह उस गवार पण्डित का ज़िगरी दोस्त है–यहभी मेरे दल में आज आ शरीक हुआ इस बात की मुझे बड़ी खुशी है–बुद्धदास के ज़रिये मैंने जो कारस्वाई की थी उस्में भी मैं भरपूर कामयाब हुआ सच है ऐब करने को भी हुनर चाहिये–बुद्धू पांडे अफीम के झोंक में एकबारगी चौंक पड़ा और अपने सामने पुलिस के दो आदमियों को बात चीत करते देख चौकिन्ना हो पूछने लगा तुम कौन हो किस्के पास आये हो–

सेठ हीराचन्द के वली अहद ऋद्धिनाथ व नन्दू व बुद्धदास तीनो कहां हैं ? उन के नाम का वारेंट है तीनो फौज़दारी सिपुर्द हुये हैं साथ हथकड़ी के तीनो को अदालत में हाज़िर करने का हुक्म हमे है–

बुद्धू–(मन में) हमने तो पहले ही सोचा था कि इन चौपटहों का साथ हमारे बाबू को किसी न किसी दिन खराब करे गा जो बात आज तक इस घराने में कभी नहीं भई उस्की नौबत पहुंची तो अब बाकी क्या रहा–सच है बुरे काम का बुरा अंजाम–देखिये आगे अब और क्या २ होता है–शेष–

हम अपने पढ़ने वालों से निवेदन करते हैं कि पुरानी फाइल निकाल इस कथानक की सब शृंखला बैठालें तो इस्के पढ़ने में यथोचित रस मिलेगा–

हमारे एक विलाइत से लौटे हुए के खयालात

हम अपने लोगों का विलाइत जाना किसी तरह नहीं पसन्द करते या तो पहिले अपने देश की समाज के लोगों को आप विलाइत की समाज के जोड़ का

बिलकुल करडालिये या थोड़े ही से लोगों में उस्का नमूना कर दिखलाइये नहीं तो हम ऐसे चोखी तबियत वालों के सामने बिलाइत का नाम न लीजिये—हम ने जब तक जहाज़ पर पांव न रक्खा था क्या २ बेवकूफी के मनसूबे जीमें गठे थे कि उन्हें अब याद करते हंसी आती है—हम सोचते थे कि किसी तरह बिलाइत में साल दो साल गुज़रान कर यहां आते ही वे २ बातें कर दिखावेंगे जिन से हमारे देशी भाइयों को पूरा फाइदा पहुंचे किन्तु जिब्रालटर और मालटा की सैर करते ही घरबार भूलना शुरू होगया और यहां तक बिलाइत की एक २ बातों में जी चुभ गया कि अपना देश अपना वतन नरक अपने देश की समाज निपट पशुसमाज जचने लगी और मित्रों को उन के पत्र का उत्तर देना अखरने लगा—हम तो अपने अनमोल समय को काम में लाने का गुण उनको सिखलाया चाहते थे पर इसे उन लोगों ने समझा कि बिलाइत में पांव रखते ही हमारे मिज़ाज में शेखी और खुदी समाय गई—हम अपने यहां के बी—ए—एम—ए—की तालीम पर अफसोस करते हैं न जानिये कैसी तालीम यहां इन लोगों को होती है कि ज़रा भी हम उन्में उच्चशिक्षा का फल नहीं देखते—माना कि अंगरेज़ी की ज़बानदानी हमारी और उन की एकसी है पर मिज़ाज हमारा और उन का एकसा न रहा—बिलाइत के नशिस्त बरखास्त के सब काइदे सीख नया जन्म पाये हुये हम न आप के पुराने बर्ताव को समझ सक्ते हैं न आप ही हमारे सुलूक की कदर कर सक्ते हैं—लोग कहते हैं चालचलन में रूखापन ठंडे मुल्क की तासीर है हिन्दुस्तान ऐसे गरम मुल्क में जहां हर एक बातें आशाइस और आराम की हैं बनावट थोड़ी बात का बहुत बिस्तार करना मुबालिगानुमाइश और दरोग को इतना फरोग है कि हम से बरदाश्त नहीं होती—

बिलाइत में रह क्यों कर मुमकिन है कि वहां की आदतें कोई न सीखे और सीखा तो इस्से बढ़ कर कोई दूसरा महापाप इस जन्म में उस्से क्या बन पड़ा—क्योंकि वहां से लौटने पर जब हिन्दुस्तान ऐसे नरक के कुण्ड में ढकेला जायगा और बिलाइत के सब सुख की याद उसे आवेगी तब एक २ क्षण उस्का अपाड़ हो जायगा—आज एक साल के करीब हम को बिलाइत से आये हुये परन्तु जब २ कोई बात वहां की याद आती है तब २ यही जी चाहता है कि घर द्वार लोग कुटुम्ब सब छोड़ बिलायत ही सिधारें—इंगलैंड छोड़ते समय यह खयाल न

था कि हिन्दुस्तान में पहुंच हमें वहां के असभ्य गवारों की तरह फिर रहना पड़ेगा हमने तो यही समझा था कि हम अब देवयोनि में दाखिल होगये यहां की अन्धी समाज के बन्धन से मुक्त हुये कर्तव्य अकर्तव्य से अब हमें कुछ सरोकार न रहा किन्तु यहां पहुंच देवयोनि छोड़ नरयोनि में ज़बरदस्ती फिर ग्रहण करना पड़ता है नर क्या बल्कि इसे असुर और राक्षस योनि कहैं तो कुछ अनुचित नहीं है—अब हम सोचते हैं कि जब हाज़िरी खा चुकते थे तब अपने से बढ़ कर साथियों को संग ले कैसे २ लोगों से मिलते थे जिन की दिलचस्प बातें सुनना छोड़ पढ़ने में मन लगाने का जी नहीं चाहता था उन सुसभ्य लोगों के मुकाबिले यहां के असभ्य अर्द्ध शिक्षित लोगों को देख घिन होती है तब यही कहने का मन होता है हे ईश्वर ! तू ही इस भारत भूमि का कुशल कर—हज़ारों बातें हैं जिन का अनुभव हमने वहां से लौट यहां किया और जब उन के टक्कर की बातों को कौन कहे बरन उन का शतांश व सहस्त्रांश भी यहां दुर्लभ है तो बतलाइये क्यों न जी अकुलाय—यद्यपि हम वहां बहुत नहीं घूमते थे बल्कि इसी लिये हमारे दोस्त हमें किताब के कीड़े कहा करते थे तो भी वहां के समाज का चलन और बर्ताव वहां की स्त्रियों की दशा और अपने देश की स्त्रियों की दशा का तारतम्य देख भाल यही कहने का मन होता है कि यदि स्वर्ग कोई वस्तु है तो विलायत ही है—यदि सच २ मनुष्य का फिर जन्म होता है तो हम दूसरे जन्म में विलायत के नीच से नीच योनि में पैदा हों पर इस नरक भूमि हिन्दुस्तान में ऊंचे से ऊंचे कुल में जन्म न पावैं—बाहर तो हम भरसक खूब शेर बने रहते हैं पर अपने घर के दुर्बुद्धि लोगों से ऐसा हैरान परेशान हैं कि जी चाहता है किसी तरह इन से अलग हो कर रहैं और अब पैदा होने वाली औलाद को जो "ब्रिटिशबार्न सबजेक्ट" की पदवी नहीं दिला सक्ते तो अपने बड़े लोग मा बाप चाचा ताऊ आदि को तो पकड़ २ किसी तरह बिलायत भेज दें जिसमें उन का जन्म भी शुद्ध हो जाता इंगलैंड की हवा खा आने से तबियत की गन्दगी दूर हो जाती—हमारे इस महान् उद्यम पर लोग हसैंगे पर क्या करैं सिवाय इसके कोई दूसरी तदबीर उन के सुधारने की तो है नहीं—हमारे यहां के नागरिक और सुसभ्यों से इंगलैंड के दिहाती अपढ़ गवारों का आचरण और बरताव कहीं बढ़ कर हमें मालूम हुआ मुरौवत का ईश्वर सत्यानाश

करे जिन से लड़कपन से जान पहचान और घिट्टपिट्ट है उन से अब हम नया जन्म पाय कैसे बेमुरौवत हों—खैर खुशी की बात है कि हमारे भी दो चार चुने २ सच्चे दोस्त हैं—उन्हे सच्चे हम इस लिये कहते हैं कि वे हमारी अंगरेज़ियत को समझते हैं और लोगों की हमारे निस्बत क्या राय है हम से ठीक २ बतला देते हैं—संसार में भिन्न २ दल की भिन्न २ पद्धति है हमारे वर्ग की यही पद्धति है कि अपने को किसी तरह किसी बात में हिन्दुस्तानी न ज़ाहिर करें—अस्तु खेद तब होता है जब देखते हैं कि कौवे ने बड़े यत्न से अपनी तबियत अपनी आदत सब मोरों कीसी कर ली पर मोर जब उस कौवे को मोर समझें तब न इस बात का हमें बड़ा खेद है पर क्या करें लाचारी है—

जागतीज्योति ॥

प्रतापवती महाराणी भारतेश्वरी जागती ज्योति—दुर्दैवदलित भारत के आरतदशा की जागती ज्योति—दुर्भिक्षपीड़ित प्रजा के बीच टैक्स और चुंगी की जगमगाती ज्योति—गौ और शेर को एक घाट पानी पिलाने, इन्साफ और राज के सुप्रबन्ध के बहाने धीरे २ प्रजा का धन खीचने वाली सर्कारी कानून की जागती ज्योति—अविद्याध्वान्तेद्वितकुसंस्कार में फसी हुई हमारी समाज के लिये तालीम और नई रोशनी की जागती ज्योति—इस महामूर्ख पुराने खयाल वालों में एक ज्ञानवान् विद्वान् आधुनिक सभ्यता के सिद्धान्त और वसूलों को समझने वाला जागती ज्योति है—संशोधन केवल ज़बान से बकने वालों में संशोधन की बातों पर अमल करने वाला बल्कि करके दिखा देने वाला जागती ज्योति है—हैटबूटकोटपतलूनधारी कोइला से सौ काले किरदों में एक गोरे चमड़े वाला जागती ज्योति है—हिन्दुस्तानियों से घिन करने वाले ईर्षी सिविलियनों में मिस्टर ह्यूम जागती ज्योति हैं—हिन्दी की इस समय की सड़ी घुनी लिखावटों में हरिश्चन्द्र का कोई एक भी पुराना लेख जागती ज्योति है—देश की बनी भद्दी कारीगरी में नफासत की नाक विलाइत की बनी चीज़ें जागती ज्योति हैं—विलाइत गये हिन्दुस्तानियों में दादा भाई नौरोजी जागती ज्योति हैं—पार्लियामेंट के मेम्बरों में लंकेशयर के जुलाहे जागती ज्योति हैं—कपणों के दल में हाथ का कुशादा एक भी उदार जागती ज्योति है—इस समय की प्रचलित

बोलचाल की विविध भाषाओं में अंगरेज़ी जागती ज्योति है–मंत्रों में गायत्री जागती ज्योति है–स्तोत्रों में चण्डी पाठ जागती ज्योति है––इसी तरह दिनों में बड़ा दिन–साहबों में लाट साहब––सवारियों में रेल––पण्डों में गया के पंडे–गुसाइयों गोकुलस्थी––आचार्यों में शंकराचार्य–सब जागती ज्योति हैं–जागती ज्योति का सूत्रमात्र यहां पर हमने लिख दिया है ये सब जागती ज्योति क्यों हैं ? इसका विवरण और व्याख्यान पढ़ने वाले अपने आप अपनी समझ के अनुसार कर लेंगे–

साढ़े तीन ३ ॥—

साढ़े तीन ३॥ दिग्विजयी—सिकन्दर—जूलिस सीज़र—नेपोलियन बोना पार्ट आधे में रनजीत सिंह—

३॥–संशोधक–कबीर–नान्हक–राजा रायमोहन आधे में स्वामी दयानन्द–

३॥—ज़ालिम—तैमूर शाह—नादिर शाह—औरंगज़ेब आधे में नाना साहब और सन् सत्तावन के बलवाई तिलंगे सिपाही—

३॥–महात्मा प्रातःस्मरणीय––रामचन्द्र—बुद्धदेव—प्रभु ईसा—मुहम्मद—तथा महाप्रभु कृष्ण चैतन्य—

३॥–वावदूक वक्ता—डिमास्थनीज़–सिसिरो—वर्क— आधे केशवसेन–

३॥–हिन्दी के सुलेखक–बाबू हरिश्चन्द्र–ब्राह्मणपत्र के संपादक–राधाचरण गोस्वामी आधे साहित्याचार्य संपादक पीयूषप्रवाह–

३॥–गवर्नमेंट के खुशामदी–अलीगढ़ के सैयद्–बनारस के भेड़राज–लखनऊ के मुन्शी साहब– आधे में इधर उधर के खून लगाय शईदों में दाखिल होने वाले—

३॥–खुदा के वजूद को काटने वाले–डारविन–काम्प्टी–स्पेन्सर आधे आज कल के नेचरिये–

३॥–पुराने महाकवि–व्यास या वाल्मीकि–होमर–वरजिल आधे कालिदास–शेक्सपियर–यामिलटन–

३॥–भाषा के प्रसिद्ध कवि–सूर–तुलसी–बिहारी–आधे केशव–

३॥–कोटिकन्दर्प लजावन–भगवान् कृष्णचन्द्र––नल–पुरूरवा–आधे में इन दिनों के फेशनेबुल छोकड़े–

३॥–हिन्दुस्तान की सच्ची भलाई करने वाले गवर्नर जेनरल––लार्ड कार्नवालिस–लार्ड नार्थब्रूक–लार्ड रिपन–आधे लार्डलाइव–

३॥–हिन्दुस्तान की बद किस्मती के नमूद–लार्ड डालहौसी–लार्ड लिटन–लार्ड डफरिन–आधे में कई एक लफ्टिनेंट गवर्नर–

३॥–महर्षि–ईश्वरचन्द्र विद्यासागर–स्वामी दयानन्द–मिस्टर ह्यूम–आधे में देशहित का दम भरने वाले बाकी सब–

३॥–कानग्रेस के प्रधान पुरुष–मि०–ह्यूम–दादाभाई–पं०–मदनमोहन आधे में पं०–अयोध्यानाथ–

अंगरेजी राज्य की ३॥ बरकतें–टैक्स–चुंगी–कहद आधे में बेरोज़गारी–

तालीम के ३॥ फाइदे–मिज़ाज में बाबूपन–तुर्श रूई–ईश्वर और परलोक में अविश्वास आधे में सफाई हर एक बात में–इत्यादि

महाकवि क्षेमेन्द्र की उक्ति––

अवदान कल्पलता से–

बन्धुच्छेदादपि नृणां धनच्छेदो हि दुःसहः––

मनुष्य के लिये धन का नाश बन्धु के नाश से भी अधिक दुःखदायी होता है–

श्रीयुतानामिव नतिः स्त्रीजितानां मतिः कुतः ? ––

धनाढ्य में नम्रता के समान स्त्रीजित में बुद्धि कहां ?–

नोपकारैर्न वा प्रीत्या निजतां याति दुर्जनः––

दुर्जन को न उपकार करने से न स्नेह प्रगट करने से कोई अपना नहींकर सक्ता–

तेषामकार्यं किमिवास्ति येषां क्रोधान्धरुद्धानि विलोचनानि।
दयादरिद्राणि मनांसि नित्यं नैर्घृण्यघोराणि च चेष्टितानि–

ऐसे लोग कौनसा ऐसा बुरा काम है जिसे वे न कर डालें जो क्रोध में अन्धे रहते हैं मन में जिनके दयाका दरिद्र है काम जिन का निठुराई के कारण भयंकर है–

निःसारविरसः कायः सापायोयं क्षणक्षयी।
परोपकारलेशेन याति संसारसारताम्––

शरीर जो सर्वथा निःसार और क्षण में क्षय हो जाने वाला है केवल परोपकार के लेशमात्र से संसार में सारवान् हो जाता है—

कुले जन्मगुणावाप्तिर्विवेकालंकृता मतिः ।
सर्वभूतदया मैत्री लक्षणं पुण्यकर्मणाम्—

ऊंचे कुल में जन्म, गुण की प्राप्ति, विवेक से अलंकृत बुद्धि, प्राणीमात्र पर दया, सब के साथ मैत्री भाव, पुण्य कर्म करने वालों के ये लक्षण हैं—

विशेषार्तः परस्यार्तौ विरलो जायते जनः—

दूसरे को पीड़ितदशा में देख दुःखी कोई विरले होते हैं—

मैत्रीपवित्रमविकारमुदारसत्वं सौजन्यपुण्यतटिनीभुवनेषु कीर्तिः।
भव्यात्मनां भवति भूतहितस्वभावं स्वाधीनदीनकरुणा भरणं च चेतः॥

चमत्कारकविता में गंभीर अर्थयुक्त भाव ऊपर के पद्य में है—अनुवाद में वह बात किसी तहर नहीं आ सक्ती—

नास्ति तद्व्यसनं लोके तीर्यते न धनेन यत्—

संसार में ऐसा कोई क्लेश नहीं है जिस्के पार मनुष्य धन के द्वारा न जा सके—

शास्त्रोपदेशैः परिमृज्यमानः प्रसन्नतां याति न नाम जात्मः ।
कर्पूरपूरैः परिपूरितोऽपि नोद्धन्यसह्यं लशुनः स्वगन्धम्—

नीच मनुष्य कितना ही शास्त्र के उपदेश से मांजा जाय फिर भी उस्में स्वच्छता नहीं आती—कपूर के ढ़ेर में रक्खा हुआ लशुन अपनी दुर्गन्धि नहीं त्याग सक्ता—

मूढाःस्पृशन्ति न विवेकलवं कदाचित्—

मूढ़ लोगों के मन में विवेक का लेश भी नहीं छू जाता—

सर्वभूतसमाः सन्तः कृपां नैकत्र कुर्वते ।

प्राणीमात्र पर समदृष्टि रखने वाले सन्त लोग सबों पर एकसी कृपा करतेहैं—

न हि शय्यासनाभ्यासा मोदन्ते मोदकैर्मृगाः—

घासखाने का अभ्यास जिन्हें है वे मृग लड्डू खा कर तृप्त नहीं होते « ये गांहक करवीन के, तुम लीनी कर बीन »—

तद्भुक्तं सुखमाधत्ते यदन्येद्युर्न दुर्लभम्–

उसी वस्तु का भोजन सुखदायी है जो दूसरे दिन भी दुर्लभ न हो–

रसोदाराहारैर्नहि परिचितोऽश्नाति विरसं न तिष्ठत्येकाकीबहुपरिजनारंभपतितः । रथारूढः पद्भ्यां गमनसमये शोचतितराम्–

जिसे स्वादिष्ट भोजन की चाट पड़ गई है उसको फीका और रूखा भोजन नहीं रुचता—बहुत लोगों के समूह में जो रह रहा है उससे अकेला नहीं रहा जाता जो सदा सवारी पर चल रहा है उसको पैदर चलने में क्लेश होता है–

दर्पः प्रमादः परवित्तवाञ्छापापानुबन्धी विषयाभिलाषः ।
एतानि जन्तोर्विनिपातकाले द्वाराण्यपायस्य निर्गलानि ॥

अभिमान, असावधानी, दूसरे के धन की इच्छा, संसार की विषयवासना में पापयुक्त अभिलाषा, ये सब बातें मनुष्य के विनाश के खुले द्वार हैं–

धनेन किं दानपराङ्मुखाणां श्रुतेन किं हेषवशीकृतानाम् ।
रूपेण किं सद्गुणवर्जितानां कुलेन किं शीलविनाशकानाम्–

दान के बिना धन से क्या ? द्वेषयुक्त को विद्या से क्या ? कोई अच्छा गुण न हो तो रूप से क्या ? शीलसंकोच न हुआ तो ऊचे कुल में जन्म से क्या?–

देशे स्खलन्निर्झरशीतलेपि भवन्ति तप्तानि मरुस्थलानि ।
रागातुराणामुदयेपि भानोर्घोरान्धकाराणि दिगन्तराणि–

जो किसी के प्रेम में फसा है उसे प्रेमी के वियोग में शीतल झरने वाला देश मरुस्थल मालूम होताहै–सूर्योदय में भी उसे सब ओर घोर अन्धकार जान पड़ता है–

सन्तापितानां व्यसनातुराणां निषिद्धकार्येष्वपि को विचारः–

सन्तापित और व्यसनातुर को निषिद्ध काम के करने में भी कुछ विचार नहीं रहता–

धर्मार्थ एवार्थपरिग्रहोयं धर्मस्य कामं फलमग्र्यमाहुः–

धर्म अर्थ और काम इन तीनों में बुद्धिमानों का ऐसा निश्चय है कि अर्थ अर्थात् धन का संचय धर्म के लिये है और धर्म का श्रेष्ठ फल कामना का पूरा होना है–

न निर्जने पापमुपैति गुप्तिमन्तर्हितः स्वर्गिगणोत्र साक्षी ।

निर्जन स्थान में भी पाप नहीं छिपा रहता स्वर्ग के रहने वाले देवता सब देखते रहते हैं–

जात्या स्त्रियः पापनिमित्तभूतास्तत्रापि घोरः परदारसंगः ।

स्त्रियां जाति ही से पाप कर्म की निमित्तकारण हैं उस्में परदाराभिमर्षण घोरपाप है–

मनोनियमशिक्षायां मुनयोपि न पण्डिताः ।

मन को वश में किस तरह लाना चाहिये इस बात के सिखाने में मुनि लोग भी पण्डित नहीं है–

शक्या दमयितुं देवसिंहव्याघ्रगजादयः ।

न तु रागासवच्छीवविषयाभिमुखं मनः ॥

सिंह बाघ मतवाले हाथी जिन को बस में लाना महाकठिन है आदमी चाहे तो उन्हें अपने ताबे कर ले किन्तु मन जो किसी के प्रेम में फस इश्क की शराब पी कर मत वाला हो गया है उसे ताबे में लाना बड़ा दुश्वार है–"सौदा सराब इश्क कहते थे हमने पी–आखिर मज़ा न पाया अब उस्के खुमार का"

ते जयन्ति जगत्यस्मिन्पुण्यचन्दनपादपाः ।

छेदनिर्घर्षदाहेपि ये परार्थेपि निर्व्यथाः ॥

सुकृत के चन्दन वृक्ष समान ऐसे ही लोग संसार में सब के ऊपर रहते हैं जो काटे जाने पर घिसने पर, और जलने पर भी दूसरे का उपकार करने में कभी अपने को पीड़ित दशा में नहीं मानते ।

परस्य पूर्णगुणतामात्मनस्तद्विहीनताम् ।

दृष्ट्वा को नामना याति मात्सर्यस्य विधीयताम् ॥

दूसरे को पूर्ण गुणी और अपने को उस्में हीन देख कौन ऐसा होगा जो डाह के परवश न हो–

देहीति वादिषु गिरो निषेधपरुषा क्षराः ।

स्फुरन्ति वचने येषां सजीवास्ते गतासवः ॥

इदमस्मादवाप्स्याभीत्याधाय हृदि याचकः ।
प्रातः प्रयाति वैमुख्यं यस्मिन्किं तेन जीवता ॥

ऊपर के दोनों श्लोक संगता और दाता के सम्बन्ध में अत्युत्तम हैं—

धिग् जन्मपुण्यहीनस्य तस्य निष्करुणात्मनः ।
यस्यार्तजनसन्तापश्रवणे शीतलं मनः ॥

उस निठुर पुण्यहीन पुरुष के जन्म को धिक्कार है क्लेश में पड़े हुये का क्लेश सुन कर जिस्का मन ठंडा रहता है ।

एतदर्थमयं कायः सापायोपि सतां प्रियः ।
यत्कस्यचित्क्वचिद् याति कदाचिदुपकारताम् ॥

क्षण में नाश होने वाले इस देह पर भले लोगों का इस लिये प्रेम और ममत्व है कि कदाचित् किसी का कभी कुछ उपकार इस्से हो—

शीलं केचित् धनं केचित् धर्मं केचित्तपः परे ।
लज्जां केचित्तनुं केचित्त्यजन्ति योषितां कृते ॥

स्त्रियों के प्रेम में कव कोई शील से कोई धन से कोई तपस्या से कोई शरीर से कोई शरम से हाथ धो बैठते हैं—

अहोऽत्र निर्विचाराणां सन्मार्गविमुखं मनः ।
असंयमासवक्षीवमपथेष्वेव धावति ॥

आश्चर्य है कि अविवेकी का सन्मार्ग की ओर से विमुख मन असंयम में मत वाला हो कुपथ की ओर धावता है—

प्रायेण स्वसुखान्वेषी परार्थविमुखो जनः—

बहुधा अपना आराम ढूंढने वाले दूसरे का प्रयोजन देखने में विमुख रहते हैं—

अमन्दानन्दसुहृदो हरिचन्दनशीतलाः ।
हरन्ति सन्तः सन्तापं दक्षिणाः पवनाइव ॥

सुहृद् के समान अत्यन्त आनन्द के देने वाले कल्पवृक्ष की छाया के सदृश शीतल दक्षिण की मलयसक्रान्ति वायु के तुल्य सुजन सन्ताप दूर कर देने वाले हैं—

पूर्णेन्दुसुन्दरादस्मादुदिता वदनात्तव ।
ज्योत्स्नेव जीवयत्येव वाणी पीयूषवर्षिणी ॥

वाणी की प्रशंसा में इससे बढ़ कर और क्या कविता हो सकेगी —

हारैस्तुषारैः कमलैर्मृणालैरिन्दुचन्दनैः ।
निवर्त्ततेऽन्तःसन्तापो नार्थिवैमुख्यदुःखजः ॥

हार तुषार कमल मृणाल चन्द्रमा चन्दन जितने ठंडक पहुंचाने वाले प्रसिद्ध हैं वे उस सन्ताप को दूर करने में कोई कारगर नहीं होते जो अर्थी को याच्ञा भंग से होता है—

दुःखिताः परदुःखेषु निर्लोभा दुर्लभेषु च ।
विपक्षेषु क्षमावन्तः सन्तः सुकृतसेतवः ॥

दूसरे को दुःखी देख दुःखी होने वाले, जो पदार्थ दुर्लभ है उसमें निर्लोभ, शत्रु को भी क्षमा करने वाले भले लोग सुकृत के सेतु हैं—

स्नेहान्ताः सुजनैः स्नेहा निःस्नेहान्ताश्च मध्यमैः ।
दुर्जनैर्घोरवैरान्ता भवन्ति प्राणहारिणः ॥

अच्छे लोगों की मैत्री अन्त तक रहती है मध्यम लोगों की मैत्री का अन्त मैत्री के अभाव हो जाने से है पर दुर्जनों की मैत्री का अन्त भयंकर वैर है जो अन्त में प्राण का ग्राहक होता है—

स्वसुखायैव धावन्ति नृशंसचरिता धियः—

कट्टर कलेजे वालों की बुद्धि अपना ही आराम ढूंढती है—

स्वैरनिर्झरझङ्कारकीर्णसन्तोषशीकराः ।
विविक्तकाननोद्देशाः शमिनामेव वल्लभाः—

कोमल अक्षरों में शान्ति रस का उद्गार इस श्लोक में है—

दुःखावसानो विरसः सर्वोयं भोगविभ्रमः—

संसार की सब भोग वाली वस्तु का अन्त दुःख और फीकापन है—

इमा मुहूर्त्तनर्तक्यः कालमेघतडिल्लताः ।
संसारसर्परसना विलासचपला श्रियः ॥

विभव की अस्थिरता क्या अच्छे ढंग से देखाया है—

सर्वोपजीव्याकरुणा न लक्ष्मीः धर्मप्रकाशः सततं न दीपाः ।
यशांसि रम्याणि न यौवनानि स्थिराणि पुण्यानि न जीवितानि ॥

जिस्से सब को फाइदा पहुंच सक्ता है वह करुणा का भाव है लक्ष्मी नहीं—धर्म प्रकाश पहुंचाने वाला है दीपक नहीं—यश संसार में सोहावना है यौवन नहीं—पुण्य सदा स्थिर रहता है जीवन नहीं—

भोगक्षणो नैव वियोगरोगाः विभूतयः स्वप्नविवाहतुल्याः ।
वाताहता दीपशिखा सुखश्रीरुन्मत्तनृत्यं भववृत्तमेतत् ॥

यह पद्य भी पहिले ही कासा शान्ति रस का प्रकाशक है—

तएव दीनोद्धरणव्रतानां प्राणाः परित्राणपणे तृणानि—

दीन दुखिया की रक्षा करना जिन का व्रत है वे अपने प्राणों को तृण के तुल्य मानते हैं—

जयत्यद्भुतसंसारभूमिः सा भवितव्यता—

अद्भुत बात के प्रकाश करने की भूमि भवितव्यता सब के ऊपर रहती है—

किन्तपोभिः सकोपानां विप्लुतानां बलेन किम् ।
विभवैः किं सलोभानां दुर्वृत्तानां श्रुतेन किम् ॥

क्रोधी को तपस्या से क्या ?—डरपोक बलवान् हुआ तो क्या ?—लोभी के पास धन होने से क्या ? पढ़ा लिखा बदचलन हुआ तो उस्के पढ़ने से क्या ?।

घनोदयसमुत्सिक्ता सौजन्यतटपातिनी ।
लोलं कलुषयत्येव मानसं श्रीतरङ्गिणी ॥

नदी के रूपक में श्री का वर्णन बहुत अच्छा निबाहा है ।

हन्ति विद्यामनभ्यासः श्रियं हन्ति मदोदयः ।
विद्वेषः साधुतां हन्ति हन्ति लोभः समुन्नतिम् ॥

अभ्यास न करने से विद्या नष्ट हो जाती है—मद से धन, विद्वेष से साधुता, लोभ से उन्नति—

कृतज्ञः सरलः स्वामी सद्भृत्यो भक्तिनिर्भरः ।
सुकृतप्रभवेणैव भाग्ययोगेन लभ्यते ॥

किये उपकार का समझने वाला—सीधे स्वभाव का स्वामी—स्वामिभक्ति से पूर्ण सेवक—दोनो का संयोग बड़े सुकृत का फल है—

अहो वतास्मिन् संसारे निःसारे साररूपिणः ।
जायन्ते मणयः केचित्परचिन्तापरायणाः ॥

बड़े आनन्द की बात है कि असार संसार में साररूप ऐसे रत्न उपज आते हैं जो दूसरे को किसी न किसी तरह कुछ लाभ पहुंचाने की चिन्ता में व्यग्र रहते हैं—

परार्थे जीवितस्यापि व्ययो लाभशतैः समः—

दूसरे के लिये प्राण की हानि भी सौ लाभ के बराबर है—

विद्वेषः कस्य पीयूषे चन्दने कस्य चारुचिः ।
इन्दौ मन्दादरः को वा साधुः कस्य न सम्मतः ॥

कौन ऐसा मूर्ख है जिसे अमृत से वैर, चन्दन में अरुचि, चन्द्रमा में मन्दादर और साधु से विरोध होगा—

पैशून्या सत्यपारुष्यभिन्नवादोज्झितं वचः ।
सदैव वदने येषां तेषां सर्वाशिषा दिशः ॥

जिन की बोलचाल में चुगली चवाई झुठाई रुखाई नहीं है वे जहां जाते हैं वहीं उन के लिये भलाई होती है—

शीलं सतामाभरणं वदन्ति—

सुजनों के लिये शील ही ज़ेवर है—

धीरेव धन्यं, धनमुन्नतानां, विद्यैव चक्षुर्विजितेन्द्रियाणाम् ।
दयैव पुण्यं पुरुषोत्तमानां, आत्मैव तीर्थं शुचिमानसानाम् ॥

उदार चित्त ऊंची तबियत वालों के लिये बुद्धि ही बड़ा धन है—जितेन्द्रिय को विद्या ही नेत्र है—श्रेष्ठ पुरुषों को दया ही पुण्य है—जिन का मन पवित्र है उन को आत्मा ही तीर्थ है—

अधिकालोकनेनैव दर्पः शाम्यति देहिनाम्—

अनुभव के अधिक होने से अभिमान जाता रहता है—

सेवाविक्रीतकायानां स्वेच्छाविहरणं कुतः—

सेवा के लिये जिन्हों ने अपने को बेच डाला है उन्हें स्वेच्छा विहार कहां ?

सेवा जगति जन्तूनां दुःखे दुःखपरम्परा—

दुःखमय जगत् में ताबेदारी दुःख परंपरा है—

इतने से क्षेमेन्द्र के कविता की कारीगरी की टटोल हमारे पढ़ने वालों को भर पूर हुई होगी इनकी उक्ति युक्ति में विशेष कारीगरी जैसा दूसरे २ ग्रन्थों में पाई जाती है फिर लिखैं गे—

जीवन-मरण ॥

जीवधारी स्थूलपिण्ड का इस संसारमें विद्यमान रहना जीवन है उसी का इन्द्रियों के अगोचर होजाना मरण है और ये दोनों पृथिवी आदि ५ भौतिक पदार्थों के संयोग वियोग का मुख्य कारण हैं—तरह २ के काम जो हमारे शरीर के भीतर हुआ करते हैं जिन्हें हम प्रत्यक्ष नहीं देख सक्ते उन्में एक अर्थात् संयोजन का परिणाम जीवन और दूसरे अर्थात् वियोजन का नतीजा मौत है और ये दोनों काम सर्जित पदार्थ मात्र में अहर्निश बराबर हुआ करते हैं—यह कहना कि हम इतने दिनों तक जीते रहे इसके साथ ही यह भी समझना चाहिये कि हम तब

तक मरते भी रहे क्योंकि हमारे श्वास प्रश्वास के द्वारा उन्हीं भौतिक पदार्थों का जो हमारे जीवन के हेतु हैं उन का क्षय भी बराबर होता रहा है—इस तरह विचार कर देखो तो मौत ज़िन्दगी का एक हिस्सा है और वे सब आभ्यन्तरिक कार्य जो क्षय के उपयोगी हैं वैसे ही आवश्यक और लाभदायक हैं जैसे वे जिन के बराबर लगातार जारी रहने से हम जीते रहते हैं—और इन दोनों में एक भी यदि कुछ देर के लिये बन्द रहे तो रोग पैदा होजाने की सम्भावना हो जाती है—इस लिये इन दोनों का मानो सहोदर भाई कासा रिश्ता है पर जीवन का सभी आदर करते हैं और मरने से सभी घिनाते हैं और परिणाम में प्राकृतिक नियमों का विरोध करने से दुःख पाते हैं—इसी का तत्त्व समझ पूर्ण ज्ञानियों को जीने में हर्ष और मरने में विषाद नहीं होता—अनात्मवादी इन दिनों के नेचरिये तथा शून्यवादी बौद्धदर्शन का भी यही निचोड़ है कि संसार में जीवन या मरण वास्तव में कुछ नहीं है किन्तु आविष्कार और अन्तर्धान के नाम से पदार्थों की दो दशा है—ज्ञानदृष्टि को काम में लाय इन दोनों के तत्त्व को समझे रहे तो सुख या दुःख के वेग में न पड़ भवसागर की भयङ्कर लहरों से बचा रहे। इसी लिये मनु महाराज ने शान्त वृत्ति मुनि और संन्यासियों के लिये यह सिद्धान्त किया है ॥

नाभिनन्देत मरणं नाभिनन्देत जीवितम्—
कालमेव प्रतीक्षेत निर्देशं भृतको यथा—

न मरण को अच्छा समझे न जीवन को—समय की प्रतीक्षा करता रहे जैसा सेवक महीने भर के उपरान्त वेतन की आशा पर रखता रहता है—सच है जीवन या मरण अपने वश की बात नहीं है तब उसके लिये हर्ष विषाद क्या ?

शान्तिरक्षा—

हमें यह लिखते बड़ा हर्ष होता है कि इस साल बकरीद के भयङ्कर दिनों में शान्तिरक्षा भरपूर रही और कई एक पहिले २ वर्षों के समान कहीं पर किसी तरह का कोई उपद्रव सुनने में न आया—यद्यपि कलहप्रिय धूर्त फसादियों ने तो बहुत कुछ चाहा था और बड़े उत्सुक थे कि किसी तरह का कोई फसाद

बरपा हो तो हम अपना हौसिला प्रगट करें किन्तु स्थान२ के राजकर्मचारी ऐसे सावधान और इन्तिज़ाम में मुस्तैद रहेकि जघन्य दुराचारी अपढ़ों की न चली—कुछ तो कर्मचारियों की सावधानी और कुछ प्रजा के बीच शिक्षा का विशेष प्रचार भी शान्तिरक्षा का कारण है—जो पढ़े लिखे हैं वे अच्छी तरह समझ सक्ते हैं कि शान्तिरक्षा से देश का क्या२ उपकार है और शान्तिरक्षा में विघ्न होने से कैसी२ दुर्गति सहना पड़ा है जिसे यादकर रोंघटे खड़े होते हैं—हमें अफसोस है कि तालीम का इतना गुण देख कर भी गवर्नमेण्ट उस्की ओर से उदासीन भाव ग्रहण करती जाती है और साधारण शिक्षा तथा उच्चशिक्षा दोनों के घटाने पर लक्ष्य इन दिनों है—हम समझते हैं कि यदि सर्कार जी खोल के हम लोगों को पढ़ावे और फीस का अधिक कर देना तथा किताब का दाम बढ़ा देना इत्यादि अड़चन दूर कर दे तो गरीब अमीर सब के लिये तालीम का खर्च एक सा होजाय—जो थोड़ा बहुत फसाद जहां तहां अपढ़ लोग कर शान्तिरक्षा में बाधा डाला करते हैं वह कभी न हो और देश में सदा के लिये शान्ति स्थिर रह अंगरेज़ी राज्य की स्थिरता को बढ़ाती जाय—तालीम का ज़ियादह होना न सिर्फ हमारे ही फाइदे का है बरन गवर्नमेण्ट का भी इस्से बड़ा उपकार है "प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्" इस्पर भी सर्कार के नेत्र न खुलें तो लाचारी है ॥

आंसू ॥

मनुष्य के शरीर में आंसू भी गड़े हुये खज़ाने के माफिक है जैसा कभी को कोई नाज़ुक वख्त आ पड़ने पर सञ्चित पूंजी ही काम देती है उस तरह हर्ष शोक भय प्रेम इत्यादि भावों को प्रगट करने में जब सब इन्द्रियां स्थगित और हार मान बैठती हैं तब आंसू ही उन२ भावों को प्रगट करने में सहायक होता है—चिरकाल के वियोग के उपरान्त जब किसी दिली दोस्त से मुलाकात होती है तो उस समय हर्ष और प्रमोद के उफान में अंग२ ढीले पड़जाते हैं वाष्प-गद्गद कण्ठ रुंध जाता है जिह्वा इतनी शिथिल पड़जाती है कि उस्से मिलने की खुशी प्रगट करने के एक२ शब्द में मानों मनों बोझ उस्पर आ टूटता है—पहिले इस्के कि शब्दों से वह अपना असीम आनन्द प्रगट करे सहसा आंसू की नदी उमड़ आती है, और नेत्र के पवित्र जल से अपने प्राणप्रिय को नहलाता

हुआ उसे बगलगीर करने को हाथ फैलाता है—सच्चे भक्त और उपासक की कसौटी भी इसी से हो सक्ती है—अपने उपास्यदेव के नाम सङ्कीर्त्तन में जिसे अश्रुपात न हुआ मूर्त्ति का दर्शन कर प्रेमाश्रुपात से जिस ने उनके चरण कमलों का अभिषेक न किया उस दाम्भिक को भक्ति के आभासमात्र से फल क्या ?—सरस कोमल चित्त वाले अपने मनोगत सुखदुःख के भाव को छिपाने की हज़ार २ चेष्टा करते हैं कि दूसरा कोई उन के चित्त की गहराई को न थहा सके पर अश्रुपात भाव गोपन की सब चेष्टा को व्यर्थ कर देता है—मोतीसी आंसू की बूंद जिस समय सहसा नेत्र से झरने लगती हैं तो उसे रोक लेना बड़े२ गम्भीर प्रकृति वालों की भी शक्ति के बाहर होता है—भवभूति ने जिन को प्रकृति का चित्र अपनी कविता में खींच देना खूब मालूम था कई ठौर अश्रुपात का बहुत उत्तम वर्णन किया है जिस्में यही आशय निकलता है—

"अयन्ते वाष्पौघस्त्रुटित इव मुक्तापरिसरो,
विसर्पन् धाराभिर्लुठतिधरणीं जर्जरकणः ।
निरुद्धोष्णावेगः स्फुरदधरनासापुटतया,
परेषामुन्नेयो भवति विरसाध्मांतहृदयः ॥"

विलुलितमतिपूरैर्वाष्पमानन्दशोक,
प्रभवमवसृजन्ती तृष्णयोत्तानदीर्घा ।
क्षपयति हृदयेऽशं स्नेहनिष्यन्दिनी ते,
धवलबहुलमुग्धादुग्धकुल्येव दृष्टिः ॥

अत्यन्त शोक में अश्रुपात को सृष्टिकर्त्ता यदि प्राकृतिक न कर देता तो वज्रपात सम दारुण दुःख के वेग को कौन सम्हाल सक्ता—इसी भावार्थ का पोषक भवभूति का नीचे का यह श्लोक उचित जान पड़ता है—

पूरोत्पीडेतडागस्य परीवहः प्रतिक्रिया,
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते—

बरसात में तालाब जब लबालब भर जाता है तो बांध तोड़ उस्का पानी

बाहर निकल देना ही सुगम उपाय बचाव की होती है--इसी तरह अत्यन्त शोक से क्षोभित व्याकुल को प्रलाप में अश्रुपात ही हृदय को विदीर्ण होने से बचा लेने की उपाय है-बल्कि ऐसे समय रोना ही राहत है-जैसा भवभूति ने लिखा है—

"प्रियाशोको जीवं कुसुममिव घर्मः क्लमयति,
स्वयं कृत्वा त्यागं विलपनविनोदोप्यसुलभ-
स्तदद्याप्युच्छ्वासो भवति ननु लाभो विरुदितम्"-

सूरबीर जिस्को रणचर्चामात्र सुन जोश आ जाता है जो लड़ाई में गोली और बाण की वर्षा को फूल की वर्षा मानता है बीरता के उमंग में भरा हुआ युद्धयात्रा के लिये प्रस्थान कर चुका है विदाई के समय विलाप करते हुये अपने कुनबा वालों के आंसू की एक २ बूंद की क्या कीमत है यह वही जान सक्ता है-शस्पंज में पड़ा आगे को पांव रख फिर हटा लेता है बीर और करुणा दो विरोधी रस अपनी २ ओर से उमड़ २ देर तक इसे किं कर्तव्यता मूढ़ किये रहते हैं-आंख में पसेव उन्हीं अकुटिल सीधे सत्पुरुषों के आता है जिन के सच्चे सरल चित्त में कपट और कुटिलाई ने स्थान नहीं पाया निठुर निर्दयी मक्कार जिस्के कट्टर कलेजे ने कभी पिघलना जाना नहीं उस्की आंख दुखिया के दुःख पर क्यों पसीजे-प्रकृति ने चित्त का आंख के साथ कुछ ऐसा सीधा सम्बन्ध रख दिया है कि आंख चित्त की वृत्तियों को चट पहचान लेती है और तत्काल तदाकार अपने को प्रगट करने में देर नहीं करती तो निश्चय हुआ जो बे कलजे हैं उन की बैल सी बड़ी २ आंख केवल देखने ही को हैं चित्त की वृत्तियों का उन पर कभी असर होता ही नहीं-चित्त से आंख के सीधे सम्बन्ध को बिहारी कवि ने कई दोहों में प्रगट किया—

"कोटि यतन कीजै तऊ नागरि नेह दुरै न-
कहे देत चित चीकनौ नई रुखाई नैन"-
"दृहैं निगोड़े नैन ये गहैं न चेत अचेत।
हौं कसिकै रिस को करौं ये निरखत हंसि देत"-इत्यादि-

मृतक के लिये लोग हज़ारों लाखों खर्च कर आलीशान रौज़े मकबरे कबरें संगमरमर संगमूसा की बनवा देते हैं कीमती पत्थर मानिक ज़मुर्रद से आरास्ता उसे करते हैं पर वे मकबरे क्या उस्की रूह को उससे ज़ियादह राहत पहुंचा सक्ते हैं जितना उस्के दोस्त आंसू के क़तरे टपका कर पहुंचाते हैं—

इस आसू में भी भेद है कितनों का पनीला कपार होता है बात कहते रो देते हैं——अक्षर मुख से पीछे निकलेगा आसुओं की झरी पहले ही शुरू हो जायगी—स्त्रियों को जो बहुत आसू निकलता है रोना मानो उन के पास गिरो रहता है इस्का कारण यही है कि वे नाम ही की अबला और अधीरा हैं दुःख के बेग में आसू को रोकने वाला केवल धीरज है उस्का टूटा यहां हरदम रहता तब इन के आसू का क्या ठिकाना—सत्वशाली धीरज वालों को आसू कभी आता ही नहीं कड़ीसी कड़ी मुसीबत में दो चार कतरे आसू के मानों बड़ी बरकत है—बहुत मौकों पर आसू ने गज़ब कर दिया है सिकन्दर का कौल था कि मेरी मा के आंख का एक कतरा आसू की कीमत मैं बादशाहत से भी बढ़ कर मानता हूं—रेणुका के अश्रुपात ही ने परशुराम से २१ वार क्षत्रियों का संहार कराया—कितने ऐसे लोग भी हैं जिन्हें आसू नहीं आता इस लिये जहां पर बड़ी ज़रूरत आसू गिराने की हो उन के लिये प्याज़ का गट्ठा पास रखना बड़ी सहज तरकीब निकाली गई है प्याज़ जरासा आंख में छू जाने से आसू गिरने लगता है—"किसी को बैगन बाय ले किसी को बैगन पथ्य" बहुधा आसू का गिरना भलाई और तारीफ में दाखिल है हमारे लिये आसू बड़ी बला है—नज़ले का ज़ोर है दिन रात आंख से आसू टपकता रहता है ज्यों २ आसू गिरता है त्यों २ बीनाई कम होती जाती है सैकड़ों ततवीर कर चुके आसू का टपकना बन्द न हुआ क्या जानिये बंगाल की खाड़ी वाला समुद्र हमारे ही कपार में आ कर भर रहा है क्या?—आंख से तो आसू चला ही करता है आज हम ने लेख में भी आसू ही पर कलम चला दी पढ़ने वाले इसे निरी नहूसतकी अलामत न मान हमें क्षमा करैं गे—

मांसभोजन ॥

इन दिनों आर्यसमाजों में इस विषय पर बड़ा वादविवाद हो रहा है जिस्के दो दल होगये हैं एक कहते हैं कि मांसभोजन वेदविहित है दूसरे कहते हैं वेदों में मांसभोजन का कहीं विधान नहीं है वरन निषेध अलबत्ता पाया जाता है—इस्में सन्देह नहीं मांसभोजन निषिद्ध काम और परमार्थ तथा मोक्ष-साधन का विरोधी अवश्य है किन्तु मांसभोजन वेदों में निषिद्ध किया गया है और लोक में अनुपकारी है इसे कोई न माने गा—वेद के २ हिस्से हैं ज्ञान-काण्ड और कर्मकाण्ड ज्ञानकाण्ड में विधान की कौन कहे मांसभोजन का निषेध सैकड़ों स्थान में पाया जायगा—पर कर्मकाण्ड के एक दो मंत्रों का नहीं वरन अध्यायकी अध्याय इसी के सम्बन्ध में हैं—स्वामीजी ने अपने बुद्धि वैभव और अद्भुत पाण्डित्य से केवल उन २ मन्त्रों के अर्थ पलटे हैं सही पर वह उन की युक्ति निष्पक्ष जिज्ञासू और जांच करने वाले के मन में नहीं समाती—मसल है आसमान फटा है कोई कहां तक पैवन्द लगावे एक या दो स्थान में होता तो अर्थ और तात्पर्य की उलट पुलट फब जाती सैकड़ों जगह एक ही बात के लिये पुनःपुनः उद्धरणी सी की गई है तो कहां तक तोपताप की जाय—ब्राह्मण अलबत्ता मांसभोजन करने वाला ब्राह्मण काहे को तब रहा ब्राह्मण से इतर दूसरे लोग भी जो केवल निवृत्ति मार्ग में रह परमार्थसाधन की ओर रुजू हों उन के लिये भी इसका भोजन उन के मुख्य उद्देश में बड़ा बाधक है पर आर्य जाति की समष्टि निरामिष भोजी हो यह लोक शास्त्र दोनो के विरुद्ध है बल्कि कौम को निहायत कमज़ोर और पस्त कर देने की एक उमदा कारगर तदबीर है—आर्यजाति जो इस समय पृथ्वी भर की जितनी जाति हैं सब से निर्बल और हतोत्साह है उस्का एक कारण मांस भोजन से परहेज़ का होना है—पहिले बौद्ध और जैन पीछे वैष्णवों ने दया २ रट ऐसा चौका लगाया कि

जोश और हिम्मत कहीं नाम को न रही समस्त जाति की जाति लटू डरपोक और प्रबल विदेशियों के मुकाबिले गिड़गिड़ाने वाली होगई उन विदेशियों को अपना पाहुना बनाया उन की पूजा सत्कार यहां वाले न करते तो करते क्या किसी लायक के तो रही नहीं गये थे—हमें अचरज है कि स्वामी दयानन्द से देशोद्धारक जिन के चलाये हुये आर्यमत का वसूल केवल कौम की तरक्की है और जिस्की नस २ में राजकीय बातों में आर्य जाति का प्रबल होना भरा हुआ है सो मांसभोजन के इतने विरुद्ध क्यों होगये—नये प्रचलित मत और संप्रदायों में यदि मुल्की तरक्की का कुछ जोश पाया जाता है तो आर्यसिद्धान्तों में नहीं तो जितने हाल के चले मत हैं उन्में सिवाय माला जपने और परलोक सुधारने के और कुछ हई नहीं—हमारे मतप्रवर्तकों को यही खयाल सूझता जैसा इस तालीम के ज़माने में मुल्क के तरक्की की धुन लोगों को सवार है सो क्या हिन्दुस्तान कभी अपनी स्वाधीनता खो बैठता—हमें अफसोस है इन फुजूल झगड़ों में पड़ आर्यसमाजी भी अन्त में उन्हीं माला जपने वालों के दल के समान गबुचर और पागुर करने वाले हो जांयगे संशोधन और मुल्क की तरक्की के जितने वसूल स्वामी जी ने सोचे थे एक भी न रह जांयगे—दुनिया की जितनी कौम हैं कोई मांसभोजन करने वाली न होती तो हम भी मांस को दूषित भोजन कहते—जब देखते हैं जो लोग हमारे चारो ओर हैं वे सेरों मांस नित्य भोजन कर अत्यन्त दृढांग और बलिष्ठ हो रहे हैं हम लोगों को चुटकी में मींज कर फेक देने की ताकत रखते हैं तब हम घास पात खाकर कमज़ोर बने रहें सो क्यों ? दूसरे २ देश और जाति के लोगों से मुकाबिला करने पर जितने मनुष्य अल्पायु हिन्दुओं में मरते हुये पाये जाते हैं उतने और २ जाति के लोग नहीं औसत मौत हमलोगों में ४० पा ४५ है इस्का कारण यही है कि हिन्दू लोगों को इस समय हर एक बातों में आगे निकल जाने की स्पर्द्धा उनके साथ करना पड़ता है जो मांसभोजी हैं—घास पात भोजन कर ये उन के आगे तो निकल

जाते हैं किन्तु सामर्थ्य के बाहर अपनी दैहिक या मानसिक शक्तियों को जो काम में लाते हैं उस्का परिणाम यही होता है कि अन्त में अल्पायु होते हैं—खोजो तो काशीनाथत्र्यम्बक तैलंग ऐसे कितने इस्के उदाहरण पाओगे—दूसरे यह कि भोजन तो आप हमें ऋषियों कासा करने को कह रहे हैं ऋषि लोग मांस नहीं खाते थे तुम भी न खाया करो पर और सब बातों में आप दैत्य और राक्षसों को भी अपने नीचे किया चाहते हैं ऋषियों का संयम केवल भोजनमात्र में न था बरन काम क्रोध आदिको भी दबाने में निपट दमनशील थे आप लोगों के बीच बाल्यविवाह प्रचलित हुई है फिर काम सेवा में मांसभोजियों से कभी किसी हालत में आप कम नहीं हुआ चाहते जिस्का परिणाम सिवाय निर्बलता के और क्या हो सकता है—माना हमने कि घी दूध में मांसभोजन के बराबर की ताकत है गोधन की अधिकाई अपने देश में देख पहिले के ऋषियों ने मांसभोजन को राक्षसी भोजन समझ मना कर दिया सो बात भी इस समय न रही बिदेशियों की कृपा से गोधन क्षीण हो जाने से घी दूध अब इतना मंहगा है कि साधारण लोग कम आमदनी वाले अच्छी तरह घी दूध नहीं खासक्ते जिन को भूरी रोटी मिलना दुर्घट हो रहा है तो घी दूध की कौन कहे—किसी देश या जाति की समष्टि को लीजिये तो उस्के एक २ अंग अपने २ काम में भरपूर उपयुक्त और समर्थ होंगे तभी समष्टि की उन्नति बनी रहेगी हिन्दु जाति में सब लोग निरामिषाशी हो सतोगुणी दयासागर बन बैठे अब और कहां तक इन्हे आप निःसत्व किया चाहते हैं—मांसभोजन से तमोगुणी भी थोड़ा हिस्सा उस समष्टि का होना ही उचित है इसी बुनियाद पर हमारे देश में ४ वर्ण की व्यवस्था पहिले के लोगों ने स्थिर किया था और सबों के अलग २ काम भी बांट दिये गये थे ब्राह्मणों को शुद्ध सतोगुण में लगाया और आध्यात्मिक उन्नति के द्वारा उस समष्टि को लाभ पहुंचाना इन का काम स्थिर किया इसी से हम कहते हैं कि ब्राह्मण हो कर जिसने मांस खाया वह ब्राह्मण कैसा—?इसी

तरह पर क्षत्रियों का एक दल अलग करदिया तामसी तेजीयान हिम्मती किसी बात में किसी तरह की अपनी और अपने जाति की हेठी न होने पावे शारीरिक बल और वीर्य में पुष्ट रह समष्टि को लाभ पहुंचाते रहैं उन का कर्तव्य कर्म स्थिर कर दिया—यों ही वैश्य और शूद्रों का दल भी अलग कायम हो हिन्दू जाति की समष्टि सर्वांङ्गसुन्दर और बलवत्तर रह अपने आस पास की विदेशी जातियों से काम पड़ने पर युद्ध में सब तरह सक्षम और समर्थ रहे—शुरू ही से यदि भगत बन बैठते और केवल साग पात खाकर दिन बिताते तो कभी संभव था कि युगान युग तक अपने आस पास की मांसभोजी मुगल अफगान कम्बोज इत्यादि ज़र्रार तर्रार कौमों के बीच बत्तीस दांत में जीभ के समान रह कर अपना औबल दरजा कायम किये रहते और उन्हे हर तरह पर दबाये रहते—हम तो कहते हैं कि वेदों में और उपरान्त स्मृतियों में "वैदिकी हिंसा" हिंसा नहीं है ऐसा लिख मांसभोजन से जो प्रजा की प्रवृत्ति को रोका सो भी अच्छा न हुआ जिस्का यही तात्पर्य हुआ कि केवल मांस खाने के लिये वृथा पशुहिंसा न करे और सिवाय यज्ञ के नित्य मांस न खाया करे—अस्तु यह निषेध भी उस समय तक उचित और मानने के योग्य था जब तक हमारे देश में गोधन पूर्ण था और दूध घी आदि पोषकद्रव्य बहुतात से मिलते थे पर अब इस समय बल का बढ़ाने वाला इस्से बढ़ कर कोई भोजन नहीं देखा जाता खास कर उस्के लिये जो "स्पिरीचुअल" आध्यात्मिक उन्नति में प्रवृत्त नहीं है—पहिले स्वामी दयानन्द का भी यही मत था यज्ञ इत्यादि वैदिककर्मकाण्डों का भरपूर समर्थन करते थे और वैदिकी हिंसा को हिंसा नहीं मानते थे पीछे उन्हे न जानिये क्या ज़िद्द हो गई कि इस नये मत का समर्थन करने लगे और इस्के करने में उन को बड़ा तूमार बांधना पड़ा और इतना खण्डन मण्डन में प्रवृत्त हुये कि देश का संशोधन और उद्धार जो उन का मुख्य उद्देश्य था उस्के केन्द्र भाग से वे स्वयं अलग हो गये—अथवा स्वामी जी दूरदर्शी अवश्य थे उन्हों

ने सोचा इन दिनों के पतित दुराचारी यों ही सर्वभक्षी होरहे हैं इन को जो अभीष्ट है उसका अनुमोदन करते रहैं गे तो इन को अपने दुराचार के लिये ढाल मिल जायगी इस लिये मांसभोजन की जड़ कटी रहे तो इसी में देश का कुछ कल्याण है—साथ ही गोरक्षा के लिये भी तन मन से उद्यत हुये इस हालत में मांस का निषेध भी अनुचित नहीं जान पड़ता और जब उन के उलट पुलट को देखते हैं और पुराने महानुभाव ग्रन्थकारों के खण्डन मण्डन से हज़ारों वर्ष की चली पद्धति को अस्तव्यस्त कर बनी बनाई सुन्दर महल को ढहाय नई नेह खड़ी करते देखते हैं तब यही मन में आता है कि कौन इनके घनचक्कर में पड़े—दूसरे यह कि बौद्ध और जैनियों का हमारे देश में ज़ोर पकड़ना इस बात का पक्का सबूत है कि वेद में मांसभोजन का विधान है—मनु ने भी मांसभोजन पर बहुतसा कह अन्त में सिद्धान्त वाक्य लिख दिया—

"न मांसभक्षणे दोषो न मद्ये न च मैथुने ।
प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिस्तु महाफला ॥
फलमूलाशनैर्मेध्यैर्मुन्यानां च भोजनैः ।
न तत्फलमवाप्नोति यन्मांसपरिवर्जनात् ॥
वर्षेवर्षेऽश्वमेधेन यो यजेत शतं समाः ।
मांसानि च न खादेद्यस्तयोः पुण्यफलं समम् ॥
समुत्पत्तिं च मांसस्य बधबन्धौ च देहिनाम् ।
प्रसमीक्ष्य निवर्त्तेत सर्वमांसस्य भक्षणात् ॥
यो बन्धनवधक्लेशान् प्राणिनां न चिकीर्षति ।
स सर्वस्य हितप्रेप्सुः सुखमत्यन्तमश्नुते ॥"

इत्यादि इस सब का सारांश और निचोड़ यही हुआ कि लौकिकदृष्टि

से देखिये तो मांसभोजन सर्वथा विषेय है पारमार्थिक साधन के लिये इस्का भोजन सब तरह त्याज्य और घृणित है परलोक सुधारा चाहे तो इस्से परहेज करता रहे—

सृष्टि के आदि में जब मनुष्य जाति बन्य और असभ्य दशा में थी उस समय आखेट ही इन का प्रधान जीवनोपाय था खेतीबारी करना तो इन लोगों ने बहुत दिन के उपरान्त सीखा ज्यों २ इन की अकिल तेज़ होती गई और सभ्यता इन्में आती गई त्यों २ इन के भोजन आदि में भी परिवर्तन होता गया बहुत से टापू अब भी ऐसे पड़े हैं जहां के लोग नितान्त असभ्य हैं और आखेट ही से अपना पेट भरते हैं—दूसरे यह कि प्रकृति "नेचर" में जीवधारियों के अंग की बनावट इत्यादि से कहीं से यह नहीं सबूत होता कि आदमी इस्के भोजन से परहेज़ करे—साहस और हिम्मत पैदा करने के लिये इस्का भोजन एक अद्वितीय उपाय है—हाथी की अपेक्षा शेर कितना छोटा और दुर्बल होता है किन्तु हिम्मत में हाथी से यह कितना अधिक बढ़ा हुआ है कि उस्का इतना भारी शरीर देख ज़रा भी क्षोभित न हो सहसा इस्पर आ टूटता है—इन्हीं सब युक्तियों को सोच विचार बुद्धिमानों ने इस्का भोजन प्रचलित रक्खा पर जब पर मार्थ और परलोक की ओर उन की दृष्टि गई तो दया को उस्के साधन का प्रधान अंग समझ इस्से उन को घिन आई और इस्का निषेध कर दिया—इत्यादि शास्त्र और युक्ति दोनों को हमने निष्पक्ष हो कर दिखलाया हमारे पाठकों में जिस्को जो रुचै अलग २ अपने लिये ग्रहण कर लें औ उन की रुचि के जहां कहीं कुछ प्रतिकूल हमारी लेखनी से निकल गया हो उसे क्षमा करैं—यह विषय ऐसा नाज़ुक है कि पक्षपातरहित विवेचक तटस्थ रह इस्पर अपना विचार प्रगट किया चाहे तो दोनों दल वालों को प्रसन्न नहीं रख सक्ता एक उन्में अवश्य रूठ बैठैंगे क्या किया जाय लाचारी है—

——

कृषकवन्दना—

प्रजा के बीच सदा सुभिक्ष स्थिर रखने वाले प्रत्यक्ष देवता स्वरूप हे शान्तशील कृषक! हम तुम्हारी वन्दना करते हैं—तुम शीत उष्ण बात वर्षा का महाक्लेश सब अपने ऊपर सह दुर्भिक्ष के दुःख से सबों को बचाते हो तो तुम्हारे समान उपकारी और जीवमात्र के प्राण का रक्षक दूसरा कौन है—अन्न जिस्के आधीन हम सबों का जीवन है वह अन्न तुम्हारी दिन रात की कड़ी मेहनत का फल है तब हे जीवन मूल के भी मूल प्रत्यक्ष देवता! कौन कृतघ्न तुम्हारे उपकार को भूल नरक में भी अपने लिये ठिकाना न रक्खेगा—रणभूमि में सम्मुख लड़ने वाले योद्धाओं को अपनी कृपाण का अभिमान है कृपाण तुम्हारी ही करतूत है—पान खाये गाल फुलाये अमीरों की अमीरी भी तुम्ही निभाते हो—रोज़गारियों का रोज़गार ज़िमीदार तअल्लुकेदारों का सब कारबार तुम्ही चलाते हो—सर्कार गवर्नमेंट को तुम्ही आधार हो तुम धरती को सुधार अन्न न उपजाओ तो इन सबों में एक का भी कहीं ठिकाना न लगे न सिपाहियों को लड़ना सूझे न अमीरों को अमीरी सुहाय न रोज़गारियों का रोज़गार चले अतएव हे सर्वाधार! तुम्हारी अद्भुत महिमा का पार कौन पा सक्ता है—तुम रूई न उपजाओ तो सुहर्रमी ढोलसी बड़ी २ मिल किसके भरोसे चलैं सुथरे बारीक कपड़ों की कौन कहे टाट ओढने को भी न मिले—हे कुचैलधारी! कदन्न भोजी तुम मोटे कदन्न से एक जून किसी तरह पेट भर और मोटे कपड़े गजीगाढ़े से तन ढांप हम सबों को उमदे से उमदा जियाफत खिलाते हो और बारीक से बारीक कपड़े मुहैया करते हो सो यह तुम्हारी कृपा और उपकार का कभी स्मरण न कर समाज में किसान दिहाती देहाकानी गंवार इत्यादि कुवाच्य शब्दों से तुम्हें पुकारने वाले औरतों ही की नज़र से देखने वाले भगवान् के यहां किसतरह निस्तार पावेंगे—अचरज है तुम ऐसे भोलेभाले साधुसत्पुरुष मुनिवृत्ति

रह जीवन पार करने वाले का बेनिरादर करैं—और हिकारत से देखैं जो सब तरह की बुराइयों में पगे हुये हैं—कुटिलाई कपट जाहिरदारी के पुतले हैं कहां तुम कहां ये किन्तु क्या किया जाय झूठे को जगपतियाता है सीधे सच्चे बेकदर होते हैं—हे कृषक ! इस कुढंगे राज में तुम्हारी वर्तमान दीनदशा देख किस कट्टर के जी में रहम और तरस न आता होगा तुम्हारा एक जून का कदन्न भोजन जिमीदार भूखामियों का तुम पर असह्य अत्याचार याद कर रोंघटे खड़े होते हैं—हे सहनशील तुम्हारी तितिक्षा बड़े २ तितिक्षू योगियों को भी नमूना है तब हम सब संसारी जीवों के लिये तो अपनी सहनशीलता के सिखाने को आप महामान्य गुरुगुरु हैं—उद्धव के प्रति भगवान् ने मुनियों की पहचान के जो २ चिन्ह बतलाये हैं वे सब तुम्हारे में देखे जाते हैं—

कृपालुरकृतद्रोहस्तितिक्षुः सर्वदेहिनाम् ।
सत्यसारोऽनवद्यात्मा समः सर्वोपकारकः ॥
कामैरहतधीर्दान्तो मृदुः शुचिरकिंचनः ।
अनीहो मितभुक्शान्तो स्थिरो मच्छरणो मुनिः ॥

कृपालु आप ही हो आप की कृपा ही का यह फल है जो हम लोगों को अन्न खाने को मिलता है किसी से द्रोह और शत्रुता आप की हो यह भी हम क्यों कर विश्वास करैं क्योंकि शत्रुता तो तब होती है जब किसी बात में किसी को कोई हानि लाभ की शंका हो आप तीन लोक से मथुरा न्यारी ऊधो के देने न माधो के लेने अपने गाढ़े पसीने की दिनभर मेहनत से कर साग पात जो कुछ जुरा उससे पेट भर रात को टांग पसार सुख की नींद सोये थोड़ी चाह थोड़ी ही में बुझजाने वाली—तितिक्षा और सहन इन दिनों में पृथ्वी देवी के सच्चे सन्तान आप ही हैं क्योंकि पृथ्वी के सहन गुण का अनुहार तुम्हीने किया है—मुनियों का एक चिन्ह सत्यसार होना है सो आपके सच्चरित्र से किसे प्रकट नहीं

है—सम अर्थात् जो तुम्हे नुकसान पहुंचावे उसके लिये भी तुम्हारा वही भाव जो तुम्हे लाभ पहुंचावे उसके प्रति भी वही बात—सर्वोपकारता आप की बार २ लिखना पिष्टपेषण है सब के ऊपर एक बड़ा भारी मुनियों का गुण तुम्हारे में यह है कि बिल्कुल निष्किंचन हैं—इतनी कड़ी मेहनत के उपरान्त भी जो कुछ खेती में पैदा होता है वह मुशकिल से सर्कारी मालगुज़ारी पुरे देने में काफ़ी होता है—मालगुज़ारी दे दिवाय तुम कोरे के कोरे बने रह जाते हो—मुनिजन पंचाग्नि तापा करते थे आप जेठ बैशाख की कड़ी धूप सब अपने ऊपर सह खेत से अन्न उपजाते हो—मुनिजन वर्षा अपने ऊपर सहते थे आप बरसते हुए कमर भर पानी में धस जब खेत गोड़ने लगते हैं उस समय मुनियों के भी छक्के छूट जाते हैं—इत्यादि वर्षातप सहिष्णुता से आप की मुनिवृति से कौन इनकार कर सकता है अतएव हे महर्षिवृन्दवृन्दायित ! तुम अपने कुशल कर्मों से सदा हमारे देश और जाति की वृद्धि करते रहो—और जो तुम्हारी इस कृषकवन्दना को समय २ पढ़ता रहे उसके धनधान्य की बढ़ती किया करो—

नई गढ़न्त के नये सूत्र—

श्रेष्ट कुल में जन्म का सूत्र—धन—"यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः„—

पण्डिताई का सूत्र—चपलता—"पाण्डित्ये चापलं वचः„—बोल चाल में चपर हो चाहो अक्षर से भेट न हुई हो—

साधुता का सूत्र—दरिद्रता—"अनाढ्यतैव साधुत्वे„ खाने तक को मुहताज हैं इस लिये लाचार साधुता धारण किये हैं—

सचाई का सूत्र—धृष्टता—"सत्यस्वेवार्ष्टयमेवहि„—कलेदराज़ हो कभी किसी से किसी बात में दबे नहीं—सच्चा बनने के लिये क्या ही सहज सटका है—

चतुराई और लियाकत की पहचान का सूत्र—कुटुम्ब के लोग स्त्री पुत्र का भरण पोषण कर लेता हो—"दाक्ष्यं कुटुम्बभरणम्„ तमाम लियाकत का ओर छोर हो गया मनुष्य का चोला बार २ नहीं मिलता इतना कर लेना क्या थोड़ी बात है—"अन्नपान जितादारा सफलं तस्य जीवितम्„—

परं पुरुषार्थसाधन का सूत्र—के वल पेट पाल लेना मात्र "उदरं भरतास्वार्थे„—

ब्राह्मणता का सूत्र–तीन धागे का जनेऊ–"विप्रस्त्वे सूत्रमेविहि„–

व्यवहार में कुशल होने का सूत्र–अनेक तरह की माया में प्रवीण चालाक हो–"मायैव व्यावहारिके„–सच है रोज़गार में बिना एच पेच निरी सिधाई और सचाई रख कहां निबाह खास कर अब इस कानून के ज़माने में–

धर्मसम्बन्धी कामों का सूत्र–जग में तारीफ और नाम न हुआ उस धर्म के काम से लाभ क्या ?–"यशोर्थं धर्मसेवनम्„–वह कोई और ही युगथा जब धर्म और पुण्य के काम छिपाय के किये जाते थे जिस्में कोई जान न सके कि क्या धर्म का काम इन से बन पड़ा–

इसी तरह उमदा सलतनत का सूत्र–टिक्कस की भरमार–प्रजा में इमानदारी का सूत्र–कानून की बारीकी–नई रोशनी का सूत्र नास्तिवाद–पुराने हिन्दू बुद्धों के सिद्धान्त का सूत्र बाल्यविवाह–पुरानी लकीर की फकीरी आदि–हिन्दुस्तान में नाइत्तिफाकी और फूट का सूत्र अनेक मत और संप्रदायों का चल पड़ना–इत्यादि–इत्यादि–इत्यादि––

बणिक और उस का बहिरा दोस्त ॥

किसी बणिक का एक बहिरा दोस्त था अकस्मात् बणिक बीमार पड़ा और बहिरा मनुष्य कृपा करके उस की दशा के विषय सवाल पूछने को गया । ज्यों ज्यों वह रस्ते में चला जाता था त्यों त्यों वह अपने मन में यह बोलचाल बनाता था कि नमस्कार करने के पीछे पहिले पहिल मैं उस से यह सवाल पूछूंगा कि "हे मित्र तुम्हारा कुशलक्षेम कैसा है„ । वह यह उत्तर देगा कि "कुछ बिहतर हूं„ । और मैं कहूंगा कि "बहुत अच्छा„ । जब मैं पूछूंगा कि "आप किस प्रकार का खाना खा सक्के हो„ तब वह कहेगा कि "भात और दूध„ । और मैं यह उत्तर दूंगा कि "वह आप की सेवा में उपकारी हो„ । उस के पीछे मैं यह सवाल पूछूंगा कि "आप का वैद्य कौन है„ । बिना शङ्का वह कहेगा "अमुक साहेब

जी मेरा वैद्य है"। और मैं निधड़क यह कह सकूंगा कि "परमेश्वर करे कि उस के सारे उपाय सफल होंगे"। अन्त में बहिरा मनुष्य यह कल्पना बांधकर बणिक के घर को गया और नमस्कार करने के पीछे बीमार के पास बैठकर पूछा कि "हे मित्र आप का कुशलक्षेम कैसा है"। रोगी ने जवाब दिया कि "क्या तुम नहीं देखते हो कि मैं मरता हूं"। यह सुन के इसने कहा कि "बहुत अच्छा। आशा है कि परमेश्वर तुम को उसी दशा में रख छोड़े"। बेचारा रोगी उस समय तक रोग के कारण बहुत चिड़चिड़ा था और यह बात सुनकर अधिक चिड़चिड़ा हुआ। फिर बहिरे मनुष्य ने पूछा कि "हे मित्र तुम क्या खाना खाते हो"। रोगी बोला कि "लोहू और भस्म"। इसने कहा "आप की सेवा में यह भोजन उपकारी हो"। फिर पाहुन ने पूछा कि "कृपा कर कहिये आप का वैद्य साहेब कौन है"। उस ने क्रोध कर कहा "शोक और सन्ताप"। बहिरे मनुष्य ने कहा कि "धन्य धन्य वह बहुत निपुण वैद्य है। आशा है कि ईश्वर उस के उपाय सफल करे"।

कहावत है कि अगर किसी के सावधान मित्र आज्ञाकारी पुत्र विनीत पत्नी और रोगरहित शरीर है तो ये चारों सुखकारी और दुख हरण हैं। अगर अनाज्ञाकारी दास अविनीता पत्नी और शरीर रोगी हों तो ये चारो हरणसुख और दुःखकारी होंगे। बहुत ही थोड़े लोगों के पास सब प्रकार के अच्छे पदार्थ हैं। कौन लोग आज्ञाभंगकारी नौकर के सेवन करने पर विश्वास कर सके। कौन मनुष्य मित्र की खराई पर प्रतीति कर सके। कौन पति अविनीता पत्नी के प्रेम पर प्रत्यय लासके। रोगी शरीर के लिये क्या भोग है।

बणिक के मित्र की बहिराई असाध्य हो तो हो परन्तु हो सकता था कि बीमार का रोग हटाया गया होता। सम्भव है कि तुम भी ऐसी दुर्दशा में हो कि जिस दुर्दशा में बणिक था। परन्तु उस के बहिरे मित्र के अनुरूप मैं तुम से ये प्रश्न पूछने चहता हूं कि क्या तुम्हारे छेवर पर बहुत सी भूरी छिट्टियें हैं। क्या तुम को कोष्ठबद्ध है। क्या पहलू और कांधे में धीमी धीमी पीड़ है। क्या

कभी कभी छेवर गरम और रूखा रहता है। क्या जीभ का स्वाद बिगड़ा है। क्या तुम्हारे हाथ पांव लसलसे हैं। क्या कुछ घुमरी है। क्या भूख मारी गई है। क्या लोहू गंदला और अचल है क्या आंखों के सफेद भाग पीले रंग के हैं। क्या तुम खाने के टुकड़ों को मुंह से थूक कर फेक देते हो। क्या हृदय कभी तड़पता है। क्या पेट में दर्द है। क्या तुम्हारा पेट ऐसा है कि मानो उस में भारी बोझ है। क्या तुम उदास हो। क्या तुम को बुरी पूर्व सूचनायें हैं। क्या तुम पर उदासी का प्रभाव लगता है। क्या दृष्टि कभी कभी ऐसी धुन्धली है कि मान आंखों के सामने खिड़ियें हैं क्या तुम को कमज़ोरी या निर्बलता है।

ये लच्छन एक ही समय नहीं दिखाई देते परन्तु जब लोहू और जिगर रोगी हैं तब ये लच्छन बारी बारी एक दूसरे के पीछे देख पड़ते हैं। अगर तुम्हारे इन लच्छनों में से कोई दो तीन लच्छन भी हों तो निश्चय करके जिगर और लोहू तुम्हारे रोग की ठांव हैं। अब बणिक के बहिरे मित्र के असदृश जिस ने कुछ भी उपदेश न दिया मैं तुम को सुखकारी और आनन्ददायक वचन सुनाता हूं। सीगलज़ क्यूरेटिव सिरोप निश्चय करके तुम को संपूर्ण रूप से अरोग करेगा। यह दवा चतुर लक्ष्यवेधी के सदृश जो बल के एक सूत से एक लटकी हुई कौड़ी को मार सकता है उस रोग की जड़ को मारता है और उस को मूल और शाखों समेत बदन से उखाड़ डालता है। हज़ारों लोग इस दवा के द्वारा अरोगी हो गये हैं और वह तुम को भी अरोग करेगा॥

सीगलज़ क्यूरेटिव सिरोप में उद्भिज्ज के सिवाय और कोई पदार्थ नहीं है और वह अच्छी सी अच्छी और ताज़ा की ताज़ा ओषधियों की बनी हुई है। इस बात पर संपूर्ण प्रतीति की जा सकती है।

बोल फ़ी बोतल—एक रुपया। दो रुपये। चार रुपये हैं। इस दवा के काम में लाने के आदेशों का कागद हर एक बोतल के गिर्द लपेटा हुआ मिलेगा।

यह दवा हिन्दुस्तान के सारे मुख्य बाज़ारों में पाई जा सकती है या सीधे दवा के मालिकों से जिन का पता यह है कि. ऐ. जे. उवाईट. लिमीटेड। (५ फोर्बज़ स्ट्रीट। बम्बई। M.F.

1403

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० १७सं० ८-९-१० } प्रयाग { एप्रिल-मे-जून १८९४

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०००— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्दमैपोस्टेज १=)

नमूने की कापी का =)॥

हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १७ संख्या ६–७–८	प्रयाग	एप्रिल–मे–जून सन् १८९४ ई०

धर्म का महत्व ॥

इस विषय पर पहले हम कई बार लिख चुके हैं आज जीर्णोद्धार की भांत उसी की फिर उद्धरणी जो किया चाहते हैं इस्का हेतु यह है कि इस रोशनी के ज़माने में धर्म जैसी दुर्बलदशा में आ रहा है वैसा दूसरा विषय नहीं कदाचित् हमारा यह लेख धर्म की दुर्बलता को दूर हटाने में कुछ सहायक हो–दूसरे यह कि धर्म का विषय इतना वृहत् और निर्भय है कि इसपर जहां तक चाहो कलम की कारीगरी झलकाते रहो कभी चुकै ही गा नहीं–निर्भय इतना कि एड़ी बेड़ी कलम चल जाय तो न राजा की ओर से कुछ डर न प्रजा की ओर से किसी तरह की ठांय ठांय–धर्म से हमारा यह प्रयोजन नहीं है कि हम किसी एक खास धर्म की प्रशंसा करैं और न यही हमारा तात्पर्य है कि हम यह दिखलावैं कि अमुक धर्म की बातें बड़ी उत्तम हैं इससे उसी खास धर्म पर चलना चाहिये–हम को भिन्न २ संप्रदाय और मतमतान्तरों के झगड़ों से कुछ सरोकार नहीं–झगड़े की रास्ते को छोड़ हम उस तत्व का अन्वेषण किया चाहते हैं जो यावत् धर्ममात्र की नेव है जिस्पर सोने चांदी के पत्तरों से जड़े ऊंचे २ मन्दिर धौरहरे आलीशान मसजिदैं और गिरजे खड़े किये गये हैं–इन मसजिद मकबरे मन्दिरों को एक २ कर अलग २ परखैं तो कदाचित् संभव है हमारे पढ़ने वालों को यह सन्देह होगा कि अमुक धर्मसम्बन्धी सिद्धान्त को इस ने अवश्य मान लिया है तब तो उन की जांच और निर्ख कर रहा है किन्तु हमारा प्रयोजन यह नहीं है–धर्म जितने हैं उन की नेव विश्वास पर है तर्क पर नहीं–धर्म केवल

मानलेने की बात है आंख मूंद धर्मसम्बन्धी बातों को मानते रहो इसी में कल्याण है बल्कि हम यह भी कहेंगे कि तर्क को सर्वथा स्थान न दे यह बात सदा ध्यान में रहे कि धर्म सब बड़े २ बुद्धिमानों के बुद्धि तत्त्व का निचोड़ हैं सुतराम् उसको बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ मनन करना चाहिये—पहली बात जिसपर मनुष्य की झुकावट किंचिन्मात्र ज्ञानोदय और समझ के आने पर होती है वह धर्म ही है प्रत्येक जाति और समाज की सामयिक तथा बीती हुई दशा पर खयाल करने से यही बात मन में आती है कि आदि में जब भांत २ के विज्ञान और अनेक पदार्थ विद्याओं का कहीं लेश भी न था उस समय धर्मसम्बन्धी विषयों पर बड़े २ ग्रन्थ बनकर तैयार हो गये थे—बहुत लोगों का सिद्धान्त है कि सुनीतिशिक्षा "मोरालिटी" जो कि सुगठित समाज से सम्बन्ध रखती है पहले पूरी उन्नति को पहुंच तब धर्म या आध्यात्मिक विषय पर देश या समाज की झुकावट होती है किन्तु यह उन का कहना हमें ठीक नहीं मालूम होता—सुनीतितत्त्व के फैलने के पहले आध्यात्मिक विषयों पर मनुष्य की बुद्धि स्थिरता ग्रहण कर तब सामाजिक विषयों पर दौड़ी—बल्कि यों कहा जाय तो उचित है कि धर्म या परलोक का भय न हो तो सुनीतितत्त्व की एक बात भी न चल सके—समाज में सुनीतिजनक बातें एकत्रित जन समूह से सम्बन्ध रखती हैं और यह समाज का एकत्रित होना युगानयुग के उपरान्त जब सभ्यता अपने पूरे ज़ोर को पहुंच चुकी तब हुआ किन्तु परमात्मा परलोक स्वर्ग नरक आदि अदृष्ट बातों पर लोगों का ध्यान सृष्टि के आरम्भ ही में गया और तब से आज तक लोग उसके ढूंढने से विरत नहीं हुये—जुदे २ धर्म और एक २ धर्म की इतनी अलग २ शाखा प्रशाखायें उसी का परिणाम है—यह प्यास लोगों की आज तक न बुझी और सम्भव है कदाचित् सृष्टि के अन्त तक न बुझै इसी से "नमो धर्माय महते" इस वाक्य में धर्म को महत् का विशेषण दियागया है—हां! यह अलबत्ता कह सक्ते हैं कि "मारलरूल्स" समाज में सुनीति तत्त्व के जुदे २ कायदे और क्रम धर्म के पोषक और अध्यात्म विद्या के उन्नति के हेतु हैं—सुनीति तत्त्व के प्रतिपालन से जब समाज पुष्ट पड़ जाती है तब अध्यात्मविद्या की गूढ़ बातों को लोग समझ सक्ते हैं उसी समझ का निचोड़ जुदे २ दर्शन और फिलासोफी के नाम से प्रचलित हुये—जिन में न सदसत् विवेक वाली बुद्धि है न विद्या केवल अपना पेट पाल लेना ही जिन को जीवन का मुख्य उद्देश्य है उन को हमारे इस लेख से कोई लाभ नहीं है—

ऐसों को समाज के नियम का पालन केवल इसी प्रयोजन से है जिस्में सुख चैन से ज़िन्दगी कटै समाज के नियम का परिपालन धर्म और परलोक का बड़ा भारी साधन है इसे वे कभी न मानैंगे–तब वे सुनीतितत्व से धर्म को अलग क्यों न मानै किन्तु हम तो यही कहेंगे कि जिन को धर्म और ईश्वर पर पूरा विश्वास है वे ही सचाई ईमानदारी दृढ़ता परस्त्री को मा बहन के तुल्य समझना भ्रातृ स्नेह इत्यादि सामाजिक नियमों के पालन में दृढ़ और अटल होंगे सुतराम् समाज में सर्वसम्मत और दूसरों के लिये उदाहरण भी वे ही होंगे–

धर्मसम्बन्धी विषय पर यदि सच्चे जी से सोचो ऊपर की व्यर्थ की बकवाद और दांतकिट्टन तथा दुनियादारी या लोकरञ्जना को दूर कर धर्म का ठीक पता लगाना चाहते हो और धर्मसम्बन्धी झगड़ों को केवल इतनी ही बात से तै किया चाहते कि मोक्ष या परम्पद ऊर्द्धपुण्ड्र लगाने से बनता है त्रिपुण्ड्र और भस्म रमाये से नहीं या यह कि जो रुद्राक्षधारण करने वाले हैं वे ही स्वर्ग में जांयगे तुलसी या गोपीचन्दन तथा तप्तमुद्रा धारण करने वाले पतित हैं–कैलाश या मुक्तिपद त्रिपुण्ड्र की आड़ी रेखा में गिरों होगया है तब तो बात ही निराली है–इस तरह की ठांय २ में श्रेणी और समूह की कौन कहे समझदार दो आदमी भी एक मत के होते हुए कम पाओगे–हम उन २ महापुरुषों को धन्यवाद देते हैं कि उन्हों ने लोगों के लिये एक २ राह निकाल दिया कि चित्त में कुटिलता को बिना स्थान दिये उस राह पर चला जाय तो अन्त में ठिकाने लगी जाय पर साथ ही हम अपना शोक भी प्रकट करते हैं कि हम उन के साथ सहमत नहीं हो सक्ते–भिन्न २ दर्शन का भी मूल यही मत भेद है थोड़ा सोचने वाले नाहक़ इस बात में अपना अमूल्य समय नष्ट करते हैं कि आप साङ्ख्यदर्शन के अनुसार चलते हैं आप द्वैतवाद के सिद्धान्त के मानने वाले हैं आप अद्वैतवादी हैं–सच पूछिये तो हम सब दर्शनों को एक मानते हैं क्या भया जो एक की बात दूसरे से नहीं जोड़ खाती—जब यह निश्चय है कि सब एक ही बात की खोज में लगे हैं तो एक दूसरे के सहायक हैं और एक के बिना दूसरा खण्डित हो सक्ता है—दो बटोहियों का इस बात के लिये लड़ना निरा छिछोरापन है कि उन का रास्ता एक नहीं है–इसी बात को पुष्पदन्ताचार्य ने अपने महिमनस्तोत्र में बहुत अच्छे ढंग से दिखलाया है–

"त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति,
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदःपथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां,
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥"

त्रयी अर्थात् तीन वेद ऋग्, यजु, साम, सांख्य, योग, पशुपतिमत, वैष्णवमत ये सब जुदे २ रास्ता उस रास्ते पर चलने वाले की रुचि के अनुसार टेढ़े या सीधे निश्चित किये गये हैं किन्तु जलमात्र को समुद्र के समान मनुष्यों के लिये तुम्ही एक ठिकाना हो—

लोग बहुधा पूछते हैं आप ईश्वर को मानते हैं या नहीं— हम जानते हैं इससे बढ़कर व्यर्थ का प्रश्न दूसरा न होगा और यदि है तो इसी प्रश्न का उत्तर क्योंकि इसका उत्तर केवल हां या नहीं इन दो शब्दों में होना असम्भव है—न एक या दो दिन में इस प्रश्न को हम समझ सकेंगे बरसों तक लोगों ने इसके एक २ खण्ड को सोचा किया है हमारे यहां के पहिले के ऋषियों से पूछिये तो कहेंगे सैकड़ों वर्ष और कई जन्म इसके लिये काफी नहीं है—«बहूनां जन्मनाम-न्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते» तो स्पष्ट है उस अचिन्त्य अपरिमेय अलख अगोचर की किञ्चित् झलक का मिलना भी मनुष्यजीवन की सफलता और मुख्य उद्देश्य है—

धर्म का विस्तार और उसका महत्त्व कुछ हिन्दुस्तान ही की धरती के हिस्से में आया जिस समय एक २ देश या जाति के लिये अलग २ गुणकर्म का विभाग किया जाता था और हिकमत विज्ञान विद्या की बारीकी, राजनीति की गूढ़ बातों के मर्म समझने की अकिल, मुल्क के तरक्की का जोश, स्वत्वाभिमान इत्यादि यूरोप अमरिका आदि देशों को दिये गये उस समय धर्म की बारीकी और धर्मसम्बन्धी विषयों के सूक्ष्मतत्त्वों के अनुसन्धान की बारीक बीनी इस अभागे हिन्दुस्तान को सौंपी गई जिस ने धर्म के सूक्ष्मतत्त्वों का अनुसन्धान करते २ उसके सैकड़ों टुकड़े कर डाले और यहां तक यह धर्म के पीछे पड़ा कि इस ने अपनी ज़िन्दगी का हीर केवल धर्म ही को माना—खाना पीना उठना बैठना सोना जागना सब में धर्म का दखल कर दिया यहां तक कि चलने में एक पांव पृथ्वी में धर दूसरा पांव उठाया चाहो तो धर्म को «कनसल्ट» विचार लो—

अत्यन्त दुर्दशादलित इस हीन दीन हालत में आजाने पर भी यह अब तक धर्म का पिण्ड नहीं छोड़ा चाहता—हम नहीं जानते इस हतक हिन्दुस्तान की हवा में क्या विष मिल गया है कि हिन्दू तो धर्म की छान करते २ गर्द खोरे हो ही गये थे ज़र्रार तर्रार मुसलमान भी यहां आकर तस्बी हाथ में ले छार हो गये—धर्म और परमार्थ पर दृष्टि रखना बहुत अच्छा और मनुष्य के जीवन की सफलता है पर ऐसा धर्म जैसा हमारे हिन्दू जाति के लोगों में प्रचार पा रहा है केवल घिन और ऊब पैदा करता है—मा के पेट से निकलते ही जब तक चिता पर न पहुंचेंगे केवल एक धर्मसाधन के अलावा और कुछ जानते ही नहीं—हमारे अपढ़ पुराने खयाल वालों के मन में यह कभी घसता ही नहीं कि दुनिया के और २ हिस्सों में क्या हो रहा है लोग क्या २ तरक्की कर रहे हैं धर्म की डर और परलोक को लात मार खुदाई का दावा बांधे हुये हैं—वही ये पग २ में धर्म-भ्रष्ट होने की डर से व्याकुल गोबर ही पाथते रहे माला और तस्बी को ऐसा गहि के पकड़ा कि उलटी सीधी सब तरह की बात इन्हे चिताओ इन के मन में एक भी न घसै गी—धूर्त स्वार्थ लम्पट जो मज़हब की आड़ से खातिरख़ाह अपना मतलब गाठते हैं ॥

"जोषयेत् सर्वकर्माणि विद्वान् युक्तः समाचरन्"

इत्यादि अपने प्रयोजन के ऐसे २ बचन गढ़ के रख दिये हैं कि जिस्से जो कुछ समझ भी रखता हो वह चुप रहे ज़रा हीले डोले नहीं जो गुमराह हों उन्हें गुमराह बना रहने दे टोकै नहीं—इसी से हमने कहा धर्म की जड़ केवल विश्वास है तर्क नहीं और यही धर्म का महत्व है—आंख में पट्टी बांध एक डगै पर ढुलकते हुये जब तक चले जाओ तभी तक खैरियत है धर्म में सब महत्वही महत्व पाओ गे ज़रा आंख खुली कि वही महत्व धर्म में निरी पोल हो जायगी—या यह महत्व नहीं है बल्कि इस बात की गवाही है कि हिन्दू की कौम कहां तक "डिजेनेरेट" पतित और नष्ट भ्रष्ट हो गई है कि त्रिदेव और पंचायतन पूजन की कौन कहे शीतला भवानी से लेकर भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी वाले मियां गाजी मियां इमामहुसेन तक को पूजती है और फिर भी अपने धर्म के महत्व के घमण्ड में हम फूले नहीं समाते—सच मानिये जब तक इस नासमझी से हम अपना गला न छुटावेंगे तब तक पस्त होते ही जायंगे—ऐसा क्लेश जैसा इस समय हम भुगत रहे हैं कोई दूसरी कौम होती तो न जानिये क्या कर डालती पर हम उसे भी सुख से झेलते जाते हैं—हर तरह की चपकुलिशों में पड़

कांख रहे हैं सही पर उस बंधी लकीर के बाहर न होंगे—तीस या चालीस वर्ष पहिले जो बात जैसी पाते थे वे सब आज के दिन तक यथा स्थित जैसी की तैसी बनी हैं ज़रा तबदील की गन्धि भी किसी में नहीं पाते—हमारी पतित समाज की नीचे को गिरने की झुकावट आगे से अब इक्कीस बिस्वे है उन्नीस नहीं हुई—कितनों का मत है स्त्रीशिक्षा इस के सम्बन्ध में उपकारी है पर हम पूछते हैं क्या इसी तरह की स्त्रीशिक्षा हमारे लिये कारगर होगी जैसा आज तक हुई और होती जाती है ? कभी नहीं—जैसी शिक्षा अब तक हुई उसे देख हमें शरम होती है और हंसी आती है—ज़ियादहतर तो मीरहसन की मसनवी या कोई दूसरे इश्कबाज़ी के किस्से सत्यानाश की जड़ गजलें हमारी स्त्रियां घोखती और पढ़ती है कोई २ जिन की मज़हब और धर्म पर श्रद्धा चर्राई उन्होंने विष्णुसहस्र नाम घोखा पुराण के किस्से कहानियों में अधिक रुचि बढ़ी प्रेम-सागर ब्रजविलास या शुकसागर पढ़ा मानो औरतों की तालीम का छोर हो गया—टट्टी के आड़ से शिकार करने वाले धूर्तों की बन पड़ी किस मत खुली घर बैठे माल कटने लगा झाड़ फूक टोनाटनमनवालों की बाज़ार गरम हुई कौम का नीचे को गिरना इक्कीस होता गया उन्नीस होने की कौन कहे—इन को अब तालीम की ज़रूरत है तो उस तरह की तालीम होनी चाहिये जिस्में इनके नेत्र खुलें—भूगोल इतिहास भांत २ के विज्ञान इन्हें सिखाये जांय जिस्के पढ़ने से इनकी विवेक शक्ति बढ़े हिन्दू धर्म की सब पोल खुल जाय और यह ठीक २ मन में इन के बैठ जाय कि जो हम कर रही हैं और अब तक करती आईं वह धर्म का आभास मात्र निरा अधर्म है अपनी वर्तमान पतित गिरी दशा का पूरा २ बोध हो जाय और यह जानने लगें कि हमें निपट भोली और सीधी समझ अनेक नाम रूप और भेख से धूर्त लोग हम से पुजाते हैं और धर्म का महत्व दिखलाय नित्य २ हमें बिगाड़ते जाते हैं—ये धूर्तप्रतारक बहाना तो स्वर्ग की राह दिखलाने का करते हैं पर वास्तव में हमें नरक के कुण्ड में झोंके हुये हैं—स्त्रियों की दशा का सुधरना कौम की तरक्की की पहिली सीढ़ी है और वह तभी संभव है जब इन में विवेक आवे जो केवल उत्तम शिक्षा के द्वारा हो सक्ता है—उत्तम शिक्षा का फल नीति तत्व के सिद्धान्तों में दृढ़ता "मारेलकरेज" है जो धर्म सम्बन्धी बातों का प्रधान अंग है इस लिये पुरुष हो चाहो स्त्री जिन में "मारेलकरेज" नहीं है उनकी धर्म की ओर झुकावट फीकी और व्यर्थ है—

इसी महानुभूति के भरोसे हम आगे बढ़ने का हौसिला कर रहे हैं ॥

सिविलसरविस की परीक्षा हिन्दुस्तान और इंगलैंड दोनों जगह हुआ करे जिस्के लिये दादाभाई नोरोजी बिलाइतमें बड़ा उद्योग कर रहे थे सेक्रेटरी आफस्टेट के यहां से उस्की नामंजूरी का जवाब जैसा मिस्टर फौलर के भेजे हुये डिसपेच से प्रगट है उसे हमारे देशी भाई चुपचाप पीकर बैठ रहे—कौम की तरक्की का दम भरने वाले सब सो रहे ऊपर से दिखाने मात्र का जो कुछ जोश था वह भी न ज़ाहिर हुआ—डिसपेच में जुदे २ कर्मचारियों की जो कुछ राय ज़ाहिर की गई वह ऐसी बेहूदी और बेबुनियाद है कि अगर ऐसा डिसपेच हिन्दुस्तानियों को छोड़ किसी दूसरे मुल्क के आदमियों को लिखा जाता और हिन्दुस्तान की सी सहनशील घस्सड़ कौम न होती तो चाहो वे जैसी दशा में होते सर्वथा शान्त हो न बैठ रहते—सिविल सरविस का आन्दोलन २० वर्ष से हो रहा है—यद्यपि यहां अनेक जुदे २ मत के लोग हैं और २ बातों में उन का चाहो मत भेद भी हो पर इस्में सब सहमत हैं—गवर्नमेंट भी भरपूर जान गई है कि इन की योग्यता इस ओहदे के लिये किसी अंश में यूरोपीय सरकारी कर्मचारियों से कमनहीं है कई बार कई तरह पर परख और कसौटी भी इनकी करली गई—सिविल सरविस में भरती होने को हमारे हिन्दुस्तानी कहां तक सरसुक हैं यह भी छिपा नहीं है तौ भी हमारे शासनकर्ता जब हम रोटी पाने के लिये प्रार्थना करते हैं तो हम पर पत्थर ही फेकते हैं—पहले लार्डलिटन ने हमारा मुह बन्द करने को स्टेचुअरी सिविल सरविस हमें दिया पर वह क्रम सिविलसरविस का ऐसा न निकला कि हमारा सन्तोष होता और हमारा मुह बन्द हो जाता—तब यही स्टेचुअरी सरविस प्रोविन्शियल सिविलसरविस कर दी गई पर यह भी अंगरेज़ी गवर्नमेंट के उदार शासन में जो धब्बा लग रहा है उसे न दूर कर सकी—गवर्नमेंट अच्छी तरह जानती है कि हम ने इन का मनोरथ नहीं पूरा किया और जो कुछ अब तक किया गया वह केवल फुसलाने के ढंग की बातें हैं—अच्छा तो गवर्नमेंट जो यह सब टालबटाल करती आई इस्में उस्का कोई कुसूर है ? कभी नहीं बल्कि यह सब दोष हमी लोगों का है—

हमारे मुल्क की आबादी के दो बड़े हिस्से हिन्दू और मुसल्मान हैं और ये दोनों गोवध के मामिले में व्यर्थ लड़ रहे हैं जिस्से सिवाय नुकसान के फाइदा कोई नहीं है आपस की फूट से कौम में कमज़ोरी अलबत्ता आती जाती है हमारे कर्मचारीगण देख २ हंस रहे हैं भीतर २ इस आग को और भड़काते जाते हैं—अफसोस राजकीय विषयों में या इस तरह के पोलिटिकल आन्दोलन में शरीक हो हमारे देश वाले हिन्दू तथा मुसल्मान अपना जोश ज़ाहिर करते जैसा गोवध तथा दूसरे २ धर्मसम्बन्धी विषयों में प्रकाश करते हैं तो अब तक न जानिये क्या हो जाता—पर इधर तो किसी की झुकावट होती ही नहीं—किसी दूसरे मुल्क में एक या दो बार का कानग्रेस अपना स्वत्व और हक्क पहचान ने को काफी था यहां दस वर्ष से कानग्रेस हो रहा है किसी की नस में जान न आई बल्कि कानग्रेस ही को दिन २ जोफ और कमज़ोरी आती जाती है कानग्रेस के विरोधी हंस रहे हैं और ताना मारते हैं—देश के बड़े २ सौदागर प्रतिष्ठित महाजन तअल्लुकेदार इज्ज़त और नाम के पीछे मरते हुये केवल निज स्वार्थ चाहते हैं देश और कौम की हानि लाभ क्या बात है सर्वहित "पबलिक इनूटरेस" क्या है जानते ही नहीं कभी खाब में भी इस किस्म के खयाल उन के मन में न उठते होंगे—उठें भी तो स्थानीय कर्मचारियों की रुचि और पसन्द के विरुद्ध इतनी हिम्मत उन्में नहीं कि राजकीय प्रबन्ध के किसी आन्दोलन में सिर उठा सकें या शरीक भी हों—रहे थोड़े से पढ़े लिखे सुशिक्षित उन्हे अपने पेट के धन्धे से इतनी छुट्टी नहीं कि ऐसे २ काम में लगें—महाजन या सौदागरों के समान पास धन ठहरा नहीं सुबह से सांझ लौ जिस काम में जो लगे हुये हैं उस्में सख्त मेहनत न करें तो निर्वाह न हो पूरा २ सुबीता न रहने से संकुचित से येन केन निर्वाह करते हैं—तो ऐसे कामों के लिये कहां उन का हौसिला बढ़ सक्ता है—उन्में भी जो सर्कारी नौकर हैं उन्हों ने मानो अपना जीवन बेच डाला ऐसे २ मामिलों में दखल देही नहीं सक्ते—इस दशा में किसे उम्मेद हो सक्ती है कि इस मृतक भारत में फिर से जीवन आवेगा—हम लोग उन्ही पूर्वजों के कमवख्त बदकिस्मत हतभाग्य सन्तान हैं जो सांसारिक सुख और धन दौलत को लात मार दूर हटाते थे आत्मनिर्भर आत्म त्याग "सेल्फ सेक्रिफइस" परोपकार के उदारता थे वही हम उन के सब सत्यानाश अयोग्य पुत्र हैं जो केवल स्वार्थ को अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं—आदमी अपने भरोसे पर रह

स तरह अपनी तरक्की कर सक्ता है जानते ही नहीं सब को अलग २ अपनी ही अपनी पड़ी है सर्वसाधारण के लाभ के लिये अणुमात्र भी अपनी हानि करना नहीं चाहते—ऐंगलो इन्डियन्स तथा दूसरे लोग हमें ज़रा भी आगे बढ़ते देख डाह की आग में झुलस ने वाले हमारी नस २ में भरी सुस्ती और स्वार्थ-परता देख आनन्द में मग्न फूले नहीं समाते—देश की यह दशा शुभचिन्तक सच्चे मन से देश का हित चाहने वाले देशहितैषियों के एक दल को पुकार रही है जो अपना सब कुछ देश के हित की अग्नि में हवन कर कमर बांध मुस्तैद हो—समय वह अब आ गया पर माई के लाल ऐसे नहीं कोई देख पड़ते—

पुनर्जन्म पहिले के आगे से—

यहां तक विदेशीय लोगों में जो ईश्वर का अस्तित्व मानने वाले हैं उन की पुनर्जन्म में क्या सम्मति है उसे दिखलाया अब अपने देश के आस्तिक लोग पुनर्जन्म को कैसा मानते हैं सो दिखलाया चाहते हैं—और यह भी कि कहां तक इन्हों ने ईश्वरीय ज्ञान को अपनी गढन्त के साथ मिलाय साधारण लोगों को भुलावा दै अपने मतलब का उसे बना कर मान रक्खा है—ये लोग विदेशियों के समान पुनर्जन्म मानने से रहे क्योंकि इन को उन आचार्यों से काम पड़ा जिन्में ईश्वरदत्त ज्ञान परम्परा से प्राप्त था और सभ्यजाति के अग्रणी थे तब क्योंकर सम्भव था कि अरब और यहूदी के जंगली फिरकों की तरह जो कुछ उन से कह दिया जाता मान लेते—यही कारण हुआ कि यहां के नये २ आधुनिक मत के प्रचारक भी जहां तक हो सका ईश्वरदत्त ज्ञान को मनुष्य की साधारण बुद्धि में जितना आ सका उतना ही माना और जो ईश्वर का ज्ञान बिना पूर्ण अधिकारी हुये और माया को बिना मिथ्या अनुभव किये बुद्धि में नहीं आ सक्ता उसको या तो कपोलकल्पना कहा या धूर्तों की गढन्त बतलाया—ऐसे लोगों में पहिले बुद्ध हुये जिन्हों ने बौद्धमत चलाया उपरान्त अर्हन्त या जिन हुये जिन्हों ने जैनमत की बुनियाद डाली—बौद्ध लोग पुनर्जन्म कर्मानुसार

मानते हैं आदमी अच्छा काम करेगा तो उत्तम पद पावेगा कुत्सित कर्म करेगा तो निकृष्ट योनि पावेगा—यहां तक इन का सिद्धान्त ठीक २ ईश्वरदत्त ज्ञान के अनुसार है—अन्तराय केवल इतना ही है कि इन के सिद्धान्त के अनुसार कर्म एक सजीव वस्तु है जो मनुष्य को मरने के पीछे उसको उसके कर्म के अनुसार प्रेरित कर सक्ता है कि वह भली या बुरी दशा प्राप्त कर सके—इसमें ये यह युक्ति देते हैं कि सजीव निर्जीव को प्रेरित कर सक्ता है निर्जीव सजीव को क्योंकर प्रेरित करेगा काष्ठ पत्थर आदि अचेतन पदार्थ सजीव मनुष्य से प्रेरित होते हैं मनुष्य उन से प्रेरित हुआ हो ऐसा कभी न देखा गया न सुना गया इसलिये कर्म सजीव पदार्थ है—पर कर्मको चेतन और सजीव मानना प्रत्यक्ष प्रमाण के विरुद्ध है कर्म जो जड़ पदार्थ है उसमें उस प्रकार की शक्ति नहीं है जैसा सजीव में है तब यह सजीव का प्रेरक क्यों कर हो सक्ता है—मीमांसकों के समान कर्म की अनादि धारा ये भी मानते हैं और कर्म को अविनाशी कहते हैं—सिवाय जीव और कर्म के कोई तीसरी वस्तु इसके साथ नहीं है परन्तु साथ ही ये यह भी कहते हैं कि जीव जब निर्वाण को प्राप्त करता है तो कर्म का नाश होता है—इसका उदाहरण ये यह देते हैं कि जैसा अन्न जब भूंजा जाता है तो फिर नहीं जमता वैसा ही जीव निर्वाण पद प्राप्त होगया तो कर्म "भ्रष्टबीज" भूंजे बिये के समान हो जाता है—सोचने की बात है इन लोगों का यह कथन और उदाहरण कहां तक न्याय के अनुकूल है—सब जानते हैं अन्न को भूंजने के लिये एक प्रेरक की आवश्यकता है बिना जिसके अन्न किसी तरह नहीं भूंजा जासक्ता—यदि कहा जाय अन्न आप ही आंच पाय अग्नि में जा पड़ता है इसी तरह कर्म भी जीव को निर्वाण प्राप्त करने पर स्वतः नाश हो जाता है—ऐसा मानने से सिद्ध हुआ कि कर्म का गुण है कि वह जीव के संयोग के बिना नाशभाव को प्राप्त हो जब कर्म का गुण यह है तो वह अवश्य ही निर्वाण के उपरान्त एक दिन नाश होगा—इत्यादि सब अस्त व्यस्त इन के सिद्धान्त की बातें जीव और कर्म दोनों का प्रेरक और कारण एक ईश्वर के मानने से दूर हो सक्ती है—इस लिये बौद्धों का पुनर्जन्म एक परमात्मा के न मानने से अधूरा है—शेष—

प्रेम के बाग का सैलानी ॥

इसे हम प्रेम का बाग इस लिये कहते हैं कि इस बाग में सब भांत प्रेम ही प्रधान है प्रेम ही इस बाग का माली है प्रेम ही की सुगन्धित कली हृदय के आलवाल में खिल इस बगीचे के सैलानी को प्रमुदित करती है–इस प्रेम वृक्ष की जड़ बहुत नीचे है इसकी प्रस्फुटित कली वियोग की एकान्त चिन्ता ओस से सिंचित हो सुरझाने पर भी अपनी महक नहीं छोड़ती किन्तु बार २ की सुधा-रूपी प्रातःसमीरण से अधिक २ पुष्ट पड़ती जाती है और अपने प्रेमी से मिलने की प्रखर इच्छा के सूर्योदय से आशारूप पखुरियां खुलती जाती हैं–इसके चारो ओर भांत २ के मनोरथ के वृक्ष हैं जिन्में कोई २ फूलते फलते हैं किसी में केवल पत्ते ही पत्ते देख पड़ते हैं किसी के अंकुरमात्र निकल कर रह गये हैं–इस प्रेम वृक्ष की सुकुलित दशा सौन्दर्य है जिसकी अनिर्वचनीय शोभा आदि से अन्त तक वर्णन कर कौन पार पा सक्ता है–मन गुलाब प्रफुल्लित हो इच्छा वायु के झोके से प्रेरित हो बार २ इसके चुम्बन को झुकता है—इसके स्वर्गीय बीज को सौन्दर्य का चोखा परखने वाला पक्षी उस स्थल से उठा लाया है जिसको वैकुण्ठ भवन का सार प्रदेश कह सक्ते हैं–विषयी कामीजन जो नित्य नई जारिणी ललनाओं के विलास लालसा में लालाइत रहते हैं और झूठी चाह दिखला पाकदामन सावित्रीसी सती कुलाङ्गनाओं को बहकाना जिन का काम है बल्कि इस फनमें अपने को एकता और उस्ताद मानते हैं कभी इसकी पवित्रता का अनुभव कर सक्ते हैं ? कभी नहीं—इसको तो वही जान सक्ता है जो अपने आराम और सुख से हाथ धो दूसरे के सुख में प्रसन्न होने वाला है—इस प्रेम की धारा का प्रवाह यद्यपि भोगवती गंगा की भांत पाताल में गुप्त है किन्तु उदारभाव के साथ जो प्रेम के सच्चे पुजेरी हैं उनके लिये इस की प्रच्छन्न विमलधारा में गोते मारना बहुत सहज है–इससे निश्चय हुआ कि निश्छलता अकुटिलभाव सचाई प्रेम के बड़े पक्के सहवर्ती हैं ॥

अहा ! प्रेम यह शब्द ही कैसा कोमल और मधुर है सब पुस्तकों के सिद्धान्त का सारांश इस दो अक्षर की एक मात्रा में रख दिया गया है—दो ही

आखर प्रेम का पढ़ै सो पण्डित होय—प्रेमासक्त वियोगी की एक ही ठण्ढी सांस एक साथ चारो समुद्र के उमड़ आने से प्रलयकाल की आंधी का नमूना है—संयोग और वियोग में अनन्त कोटि स्वर्ग और नरक के सुख दुःख की झलक दिखलाता है—प्रेमी के संयोग के स्मरणमात्र में विद्युत् के समान हृदय को स्पर्श करते ही इसका आनन्द प्रत्येक शिराओं में व्याप्त हो जाता है—प्रेम महामोह का सारभूत, निश्चलता का लौहस्तम्भ, करुणा का अपार समुद्र, नैराश्य का गगन स्पर्शी उच्च पर्वत, सहिष्णुता का जनक, मन की गति का सीमा चिह्न, सुख और दुःख दोनों का निश्चित सिद्धान्त है—भय और निर्भयता, लालसा और वैराग्य ढिठाई और शरम नैराश्य और आशा शोक और हर्ष दोनों विरुद्ध धर्माश्रयी भी परस्पर प्रतिस्पर्धी हो अपनी पूरी ताकत के साथ इसके साथ लगे रहते हैं—यह हृदय के उस तहखाने के खोलने की कुंजी है जिसके भीतर अनन्त आनन्द रत्न राशि का आकार सुगम है—यह एक विचित्र ऐनक है जिसको आंख पर रखते ही जुदे २ रंग की वस्तु सब एक रंग दीखने लगती हैं यह अपना है यह पराया है इस द्वैविध्य की जड़ कट जाती है तब यह पृथ्वी भर को अपना ही समझता है ॥

"अयं निजः परो वेत्ति गणनालघुचेतसाम् ।
उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् " ॥

प्रेम की अकथ कहानी को आद्योपान्त वर्णन कर कौन पार पा सक्ता है यदि कुछ भी हम इसका वर्णन किया चाहें तो केवल इतना ही कह सक्ते हैं कि ये सब भाव भक्ति आदर ममता आनन्द वैराग्य करुणा जो प्रतिक्षण मनुष्य के चित्त में उठा करते हैं सबों के मूलतत्व को एक में मिलाय उसका अतर निकाला जाय तो उसे हम प्रेम इस पवित्र नाम से पुकार सकैं गे—तो निश्चय हुआ इस प्रेम के बाग का सैलानी हुआ चाहे तो पहिले इन पूर्वोक्त गुणों में अपने को भरापुरा कर ले तब इस बाग के भीतर जाने का मन करे संसार में ऐसे इनेगिने दो चार भाग्यवान् पुरुष होंगे जो प्रेम की कसौटी में कसे जाने पर ठहर सकें और उन्हीं के लिये प्रेम की वाटिका का विस्तार यहां हमने दिखलाया—

हमारी ललनाओं की शोचनीय दशा ॥

इस्में सन्देह नहीं अंगरेज़ी राज्य की कृपा से हम अब वह निरे मिट्टी के लोंदा नहीं है जो ५० वर्ष पहले रहे यद्यपि हिन्दुस्तान की परिवर्तन विमुखता अनादि काल से प्रसिद्ध है हमारे इर्दगिर्द के लोगों में चाहो जो परिवर्तन हुआ हो और आकाश पाताल का अन्तर उन्में आ गया हो पर हमें अपना पुरानापन अपने में से हटाते जैसा अखरता है और असह्य मालूम होता है वैसा कोई दूसरी बात नहीं तौ भी काजल की कोठरी के भीतर जाकर दाग न लगने से कोई कहां तक बच सक्ता है—कट्टर परिवर्तन विमुख हम लोगों का सरोकार इस समय उन से आ पड़ा जो क्षण २ में नये होते रहते हैं—जो ढंग और तर्ज़ आज उन का है वही कल तक बना रहे तो इस्से बढ़ कर ऊब पैदा करने वाली घिनौनी दूसरी बात जिन को और कुछ हुई नहीं तब क्योंकर संभव था कि हम इस नये तर्ज़ की तराश खराश के शौकीन न होते और अपनी पुरानी परिवर्तन विमुखता को जुगये रहते—यद्यपि जो परिवर्तन हमारे में देखा जाता है वह उस तरह का नहीं है जिसे हम वास्तविक परिवर्तन "मेटीरियलचेंज" कह सकें और जो हमें स्वच्छन्द या आज़ाद कौम बनाने के लिये कुछ उपकार कर सके—हां! हमारी ललनाओं को शोचनीय दशा में लाने के लिये यह परिवर्तन विमुखता अलबत्ता गहि के पकड़े हुये है—बाबू साहब छँदान तोड़ विलाइत की राह सिधारने के लिये कदम उठाये हुये हैं बबुआइन घर बैठी गोबर ही पाथती रहीं—बाबू साहब, लाला साहब मिस्टर सेा ऐन्ड सेा कहे जाने की उमंग में फूले नहीं समाते ललाइन कौआ हकनी ही रही आईं—बाबू साहब आर्यसमाजी और ब्रह्मसमाजी हैं थियोसोफी में अपना औवल दरजा कायम करते हैं घर में बहू जी भूतपूजनीसमाज की प्रिसीडेंट हैं—बाहर पण्डित जी साहब विधवाविवाह बाल्यविवाह समाजसंशोधन पर जोश खरोश में भरे नये २ लेक्चर झाड़ा करते हैं

घर में पण्डित जी साहब के पांच वर्ष की एक कन्या है पण्डिताइन को पानी नहीं पचता कन्या ५ वर्ष की होगई सगाई कहीं पक्की अब तक न हुई—मियां के बदन में तनज़ेब और आबरवां भी चुभता है सनातनी तक चाहो बिकजाय पर दस्तरखान में ज़रदा पोलाव और शीरमाल के प्याले ज़रूर रहैं घर में बीबी साहबा चक्कियां पीस मोटा झोटा खा किसी तरह दिन काटती हैं—बाहर बाबू साहब एक ब्रह्म का ज्ञान सिखलाते हैं नेचिरिये बन नास्तिकता की टांग तोड़ते हैं—घर डफलची गाज़ी मियां की गीत गाया करता है—पाधा जी पण्डा जी पुजेरी जी गोसांई जी बहू जी को चंगुल में फसाय तन मन धन अर्पन कराय सर्वस्व अपनाय लेते हैं इत्यादि—अंगरेज़ी राज्य की महिमा से अंगरेजी नई सभ्यता का असर हमारी कोई ऐसी बात न बच रही जिसपर न पहुंचा हमारे खयाल हमारी रहन सहन बोलचाल नशिस्त वरखास्त के तरीके सबों में परिवर्तन पाया जाता है किन्तु हमारी स्त्रियों की दशा में कुछ अन्तर न हुआ वे ५० वर्ष पहले जिस हालत में रहीं वैसी ही आज तक हैं—उन्हें ऐसी हीन-दशा में रखने का परिणाम अनेक तरह का क्लेश हम उठा रहे हैं सही पर हमारी आख नहीं खुलती कि इस के सम्बन्ध में कभी खयाल भी करते हों—बाल्यविवाह आदि समाज की प्रचलित बुराइयों के हटाने के लिये हम हज़ार ततवीर सोचा करें कभी सफल मनोरथ न होंगे जब तक हमारी मूढ़ ललनाओं के मन में यह बात घसी हुई है कि कन्या ८ वर्ष की विनब्याही बैठी रहे गी तो सात पुरखे नरक में जांय गे अथवा शीतला भवानी को न पूजैं गी तो लड़कों को शीतला भख लेंगी—सनातन जो होता आया है चाहो उस सर्वनाशकारी सनातन की रीति अब सर्वथा हमारी हानि कर रही है आगे बढ़ने में हमारे रास्ते में एक बड़ा भारी पहाड़ खड़ा हुआ है हम किसी तरह तरक्की करी नहीं सक्ते जब तक पुरखों की उस सनातन रीति को कालामुह कर विदा न करें गे—पर क्या इम-कान कि हम उन रीतों में किंचित् हेर फेर करने में ज़रा ज़बान ढ़ीला सकें कट्टर «कंसरवेटिव» परिवर्तन विमुख होना इसी का नाम है मक्षिकास्थाने मक्षिका इसी को कहैं गे—बाहर हम कितनी ही तरक्की करें बड़े से बड़ा इमतिहान पास कर उशना और वृहस्पति के प्रतिनिधि हो जांय स्त्रियों की दशा में जब तक परिवर्तन न होगा कुछ न हो सकेगा—

मांसभक्षण ॥

मांसाशन और मांसाशननिषेध दोनों पक्ष शास्त्र में पाया जाता है जैसा कि हिन्दीप्रदीप के पूर्वांङ्क में प्रकाशित किया जा चुका है इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि मांसभक्षियों के दल की प्रबलता पूर्वकाल से आज तक लगातार बढ़ती हुई पाई जाती है समीचीन इतिहास और पुराणों से स्पष्ट है कि पूर्वकाल के दैत्यदानव, असुरगणों के जीवन आधार की मुख्यता मद्यमांस ही के ऊपर थी जैसा कि बाल्मीकीय रामायण सुन्दरकांड में लिखा है कि श्री राम दूत हनुमान जी जिस राजभवन किम्वा मन्त्रिभवन में जाते थे मद्य मांस ही का उपचार अधिक देखते थे वन्यहिंसक जन्तु समान राक्षसगण कोई मांसमात्र नहीं छोड़ते थे जैसा कि अन्तिम कवि तुलसीदास ने लिखा है—

"खर महिष मानव धेनु खच्चर गो निशाचर भक्ष ही ।

यह लागि तुलसीदास इन की कथा संक्षेपहि कही ॥

पूर्वकाल में भी केवल यही बात न थी कि राक्षसों के समान सब मनुष्य मांसभक्षी रहे हों या दैत्यों, असुरों के व्यतिरेक सब निरामिषाशी न थे सो नहीं पूर्वकाल के क्षत्रिय लोग मांस खाते थे यह बात बाल्मीकीय रामायण और महाभारत की कथाओं से स्पष्ट विदित होती है—महाभारत में यह भी लिखा है कि जब राजा युधिष्ठिर वनवास करते थे उस समय उन के यहां सहस्रों स्नातक ब्राह्मण भोजन करते थे क्या खाते थे ? (पूड़ी कचौड़ी पेड़ा जलेबी अमिरती) तो वहां मिल नहीं सक्ती थी केवल वही आखेट किये हुये हरिणादि पशुओं का मांस और यत्किञ्चित् प्राप्त कन्दमूल फलादि—अन्नादि पदार्थ तो वहां मिली नहीं सक्ता था—इस के सिवाय मांस के पिण्डदान का विधान भी शास्त्र में पाया जाता है। सो इस लिये कि जब पूर्वकाल में खेती की आरम्भावस्था में अन्न दुर्लभप्राय था प्रजा के प्राण की रक्षा और यज्ञादि कृत्य की रक्षा बहुत आवश्यक बात थी तो उस समय के सात्त्विक प्रकृति दयालु लोग अपनी देवपितृक्रिया को अन्नाभाव में कन्दमूल फलादि के द्वारा निवृत्त करते थे और राजस तामस प्रकृति वाले अपनी रुचि के अनुकूल मांस का बन्दोबस्त करते थे किसी समय थोड़े से मांसाहारियों के होने से यह न समझना चाहिये कि अमुक समय या युग या शताब्दी

में मांसाहारी लोग अधिक थे अच्छेर दयालु विवेकसम्पन्न महर्षि लोग हिंसा-मूलक मांससेवन और प्रमादमूलक मद्यपान से सदैव घृणा करते थे और अच्छे शिष्ट विज्ञानशील उक्त पदार्थों के सेवन से बराबर बचाव करते आते हैं ॥

यदि पूर्वकाल के दूरदर्शी महर्षिगण अपनी दयालुता और सर्वज्ञता से मांस भक्षण का निषेध स्तम्भ न स्थापन करते तो पूर्वकाल में जब खेती करने की विद्या का प्रचार न था अल्प प्रायः और प्राणरक्षकमात्र मांसभक्षण का यह क्रम अधिक बढ़ने से इतना बिगड़ जाता कि मांसभक्षी मनुष्यों और राक्षसों में कुछ अन्तर न रह जाता और भक्ष्य पशुओं के समुदाय के विशेष होने से ऐसे उपकारी पशुओं का दल कहीं दृष्टिगोचर न होता जिस के कारण भारतवर्ष रसगोरस का अखण्ड समुद्र बना हुआ था जो अब भी इस अन्तिम सहस्राब्दी में मांसभोजियों की उत्तरोत्तर वृद्धि के दोष से एक छोटासा कुण्ड जान पड़ने लगा और यह नहीं कहा जा सक्ता कि रसगोरस के प्रकरण में ह्रास किस अन्तिम सीमा को पहुंचेगा—अछे तार्किक विद्वान् इस अनुमान से विरुद्ध मत नहीं होसक्ते कि यदि मद्य मांस के लोलुप मनुष्यों की चाट उक्त पदार्थों में अत्यन्त बढ़ जाय और किसी कारण से उनमेध्य और भक्ष्य पदार्थों की दुर्लभता और अलभ्यता की अवस्था आ जाय तो निस्सन्देह उन की निरङ्कुश चाट और दुर्निवार लोलुपता उन्हें अमेध्य और भक्ष्य पदार्थों की लालसा गर्त में ढकेलेगी—जैसा चीन और ब्रह्मा देश के मनुष्यों में अब भी पाया जाता है कि कुत्ता बिल्ली तक नहीं बचने पाते—बुद्धि प्रद्योतक शास्त्र और शिक्षानुलब्ध सभ्यता चाहे जो कुछ बचाव करे नहीं तो इस मद्य मांसाशन की प्रगाढ़ रुचि सामर्थ्य भर अच्छे सुशील प्रकृति मनुष्यों को भी राक्षसाचार के सीखने और असभ्यभावधारण में बाधित करेगी प्रत्यक्ष में प्रमाण की क्या आवश्यकता हमारे शासक महाप्रभु अंगरेज़ तथा उन के चेले नई रोशनी वाले हिन्दुस्तानी या बाबू लोग इस के उदाहरण मौजूद हैं—कौन इसे न मानेगा कि प्रद्योत और बिद्वत्ता में इनका औवल दरजा है किन्तु पान दोष इन्हें नष्ट कर रहा है और यही एक ऐसा दोष है जो किसी समय इनको बड़ी ही हानि पहुंचावेगा और कमज़ोरी का बाइस होगा—यदि इसी भारतवर्ष में जैनमतावलम्बियों और हिंसाविमुख वैदिकधर्मियों का समुदाय न होता तो आज छागमेषादि भक्ष्यपशुओं का घटता हुआ वर्तमान स्वल्पदल भी न दिखाई पड़ता जिस महाभारत की कथा में मांसभक्षण का प्रमाण पाया जाता है उसी में यह

भी लिखा है कि भक्ष्य पशु या पक्षी के पुरुष संज्ञक (नर) का मांस खाना और स्त्रीसंज्ञक अर्थात् मादे का नहीं उस समय के मांसभक्षियों को भी देशप्रबंध और लोकस्थिति के लिये इस बात का डर लगा हुआ था कि यदि भक्ष्य पशु पक्षियों की स्त्री जाति का वधबन्धन प्रचलित हो जायगा तो थोड़े ही कालान्तर में न केवल पशुपक्षियों का प्रलय कल्प और मांस का अनिवार्य्य दुर्भिक्ष उदय होगा किन्तु बहुतसा लौकिक प्रबंध के बिगड़ने से मनुष्यों के लिये अत्यन्त हानि हो जायगी—जैसा कि इस समय देखा जाता है कि चालिस पचास वर्ष पहले देहातों में भेड़ियों और बकरिओं का झुंड हज़ारों के हिसाब से दिन को जंगलों में चरा करता था रात में खेतिहरों के खेत में बैठता था एक एक रात में सैकड़ों हज़ारों बीघा खेत उन के मलमूत्र की खाद पांस से अत्यन्त बलवान् हो जाता था—यही कारण था कि आगे बीसमन पचीसमन की उपज होती थी सो उन भेड़ बकरियों का झुंड क्षीण होते २ अब सहस्र की जगह सौ पचास के हिसाब से चलता है किसी को बकरी भेड़ी की खाद पांस नहीं मिल सक्ती बहुत हुआ तो ऊख वाले वा धान वाले अधिक खर्च देकर उन्हें कई रात अपने खेत में बैठवाते हैं कारण यही कि मांसभक्षियों ने उक्त पशु समुदाय को खा डाला और मादा जाति को भी खा डाला नहीं तो उन का दल भी न घटता और मांस भी खाते जैसा कि भारतवर्ष के मांसभक्षियों का क्रम था कि नर पशु का मांस खाते थे मादे का नहीं—यही विधि वेद और तन्त्र क्रिया में लिखी है जहां तक बलिप्रदान के विन्ध्येश्वरी प्रभृतिदेव स्थान हैं वहां सर्वत्र बकरे भेड़े का बलिप्रदान होता है बकरी भेड़ी नहीं मारी जाती और जितने सच्चे हिन्दू राजा और क्षत्रिय राजपूत मांसभक्षी हैं वे नरसंज्ञक भक्ष्य पशु को खाते हैं—और २ राजनीति के विषय में चाहे हिन्दू अल्पज्ञ कहे जांय पर इस विषय में उन का मुकाबिला करने वाला कोई नहीं है—सोचने की बात है कि यदि हिन्दुओं के धर्मशास्त्र और स्मृतिमूलक रीति अब तक बनी होती तो वही भेड़े बकरे का मांस जो अब अत्यन्त मंहगा और दुर्लभप्राय होगया है साग तकारी के भाव बिकता और उक्त पशु दल की संख्या न घटती—साल में बकरियां दो बार बच्चे जनती हैं यदि सौ बकरियां न मारी जांय तो पांच सौ बच्चे एक साल में दे सक्ती हैं जिन में से नरसंज्ञक बच्चे मांसाहारियों के बर्त्ताव में आते उन की मादा जिन्हें अदू-

रदर्शी समुदाय के लोग खाडालते हैं वे मानो पांच छःसौ उक्त खादित बकरियों के पुत्र पुत्री और उन के भविष्य पौत्र पौत्री और प्रपौत्र प्रपौत्री का संहार कर डालते हैं—इस तरह पर उन के वृहत् दल का नित्य २ उच्छेद् होता जाता है—क्योंकि यदि सौ बकरियों और भेड़ों में एक सांड़ बकरा या भेड़ा वीर्य प्रदान के लिये रक्षित रहेगा तो बारी २ उन सबों किम्बा उन से अधिक बकरियों और भेड़ियों में गर्भाधान कर सकेगा—हम निन्दा नहीं करते किन्तु यह यथार्थ बात है कि हिन्दू जाति को पराजित और हीन दशा में जान आज कल के कानून कर्ता लोग उन के पुरखों के विचार रत्न को भी तुच्छ समझते हैं जिस्का परिणाम यह देख पड़ता है कि उन के अधिकृत और हस्तगत राज्य की समृद्धि और धरती की उपजाऊ शक्ति इन पशुओं की क्षीणता से लय को प्राप्त होती जाती है—हमारे वैष्णव और जैनसंप्रदायवालों ने इन्ही बातों को ध्यान में रख मांस-भोजन को सर्वथा निषेध किया—राजकीयसम्बन्धी और २ विषयों में चाहो वे पूर्ण अभिज्ञान भी रहे हों किन्तु धरती को किस तरह उर्वरा कर सकें और धरती की उपजाऊ शक्ति अधिक हो कर राज्य तथा उस राज्य की प्रजा को क्या लाभ पहुंचा सक्ती है इन सब बातों में वे लोग पूर्ण पण्डित थे—मुसल्मान हमारे देश के शासनकर्ता और उन का हमारे देश में इतना बढ़ जाना जहां हमारी और सब बातों को छार में मिलाया वहां सादा जाति के पशुओं के भोजन की प्रथा भी बड़ी ही हानिकारक हुई—अंगरेज़ी राज्य जैसा हमे लाभ पहुंचा रहा है वैसा ही मुसल्मानों की सलतनत से हमारा सत्यानाश भी हुआ और अब तक होता ही जाता है—कर्मचारी गण भी इन को सरहंग समझ इन्ही के मन की बहुधा कर गुज़रते हैं हिन्दू कुछ अपनी सिधाई से कुछ इज्ज़त हुर-मत बचाये रखने के खयाल से कुछ डर और अपनी कमज़ोरी देख दब निकलते हैं और अन्त को परिणाम यह होता है कि इन्ही के माथे बिसाती है और यही पीसे जाते हैं—अस्तु इन सब अप्रासंगिक बातों की यहां पर चर्चा व्यर्थ है—प्रक-रण मांसभोजन के गुण दोष के विचार का है जिस्का निचोड़ हम फिर भी यही तै करते हैं कि हमारी सामाजिक तथा धर्मसम्बन्धी उन्नति सर्वथा मांसभोजन से सुसाध्य है किन्तु शारीरिक बल तथा और २ राजकीयविषयों में हम आगे बढ़ा चाहें तो मांसभोजन के निषेध की ओर से कान मून्द लें और इस्का निषेध करने वालों की एक बात भी न सुनें निःशंक इस्के भोजन में प्रवृत्त हों ॥

प्रेरित ॥

मांसभोजन पर विवाद बहुत दिनों से ठन रहा है उभय पक्ष वाले अनेक उक्ति युक्ति से इस्का निषेध और प्रतिपादन कर रहे हैं हम नहीं समझते बड़े २ विद्वान् भी क्यों इस्पर इतना हठ कर रहे हैं—साधारण बुद्धि वाला भी जान सक्ता है मांसभोजन विना जीवहिंसा के नहीं हो सक्ता और हिंसा बड़े २ पापो में गिनी गई है हिंसा चाहो वैदिकी हो चाहो अवैदिकी हो हिंसा फिर भी हिंसा ही है क्या बुरा काम जो सभ्यता और चतुराई के साथ किया जाय तो वह बुरा काम न कहलावे गा—कितनों की यह भी युक्ति है कि मांसभोजन बल वीर्य का पोषक होने से देश के सम्बन्ध में बड़ा लाभदायक है कि जिस देश के मनुष्य मांस भोजी हैं वे बलवान् होते हैं और दिमाग की कूवत उन्में निरामिषाशियों की अपेक्षा अधिक होती है—यूरोप की भिन्न २ जाति इस्का उदाहरण हैं पर यह उनकी युक्ति पुष्ट नहीं प्रतीत होती यूरोप की प्रत्येक जाति की उन्नति का हेतु उन्में ऐक्य अध्यवसाय विद्या परिश्रम इत्यादि है मांसभोजन नहीं—अफ्रिका के जंगली फिरके मांस तो बहुत खाते हैं पर अध्यवसाय इत्यादि गुण उन में नहीं है तो क्यों नही उन्नति करते इस्से यह कहना कि मांस भोजन हमारी उन्नति का एक साधन है सर्वथा भ्रममूलक है—मांस के छोड़ने से सब लाभ ही लाभ है हानि कुछ नहीं—अब यहां पर विचार इस बात का है कि यह संसार विद्वानों के चलाये चलता है सो विद्वान् दोनों पक्ष को अपनी २ उक्ति युक्ति से पुष्ट करते हैं ऐसे स्थल में क्या करना चाहिये—मेरी समझ से मांसभोजन में जो हिंसा होती है उस्का पाप उन्हीं लोभी स्वार्थलम्पट उपदेशकों को होना चाहिये जो इस्के भोजन को अनुमोदन करते हों—क्या जगद्विख्यात शंकराचार्य जी व स्वामी दयानन्द सरस्वती सरीखे विद्वान् सूक्ष्मदर्शिता इत्यादि गुणो में किसी से कम थे बल्कि स्वामी जी को देश के उद्धार का जैसा सच्चा प्रेम था ऐसा बहुत कम लोगों में पाया जाता है मांस से परहेज़ में यदि देश का अकल्याण समझते तो कभी इस्के निषेध के पक्ष का अनुमोदन न करते तस्मात् निषेध का पक्ष हमें अत्यन्त समीचीन प्रतीत होता है—व्यासदेव ने भी अठारहों पुराण का

सारांश यही निश्चय किया है कि भूतमात्र पर दया करना इससे बढ़ कर कोई पुण्य नहीं है और जिसमें दूसरे को पीड़ा पहुंचे उसके समान कोई पाप नहीं।

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापायपरपीडनम् ॥ इत्यलं पल्लवितेन

कामताप्रसाद शर्मा—प्रयाग

महाकवि क्षेमेन्द्र की उक्तियुक्ति का संग्रह ॥

हमारे पढ़ने वाले कहेंगे कई नंबरों से यह बराबर क्षेमेन्द्र का चरखा ओट रहा है कोई और विषय इसे नहीं मिलता मालूम—सच है हमे क्षेमेन्द्र की अनूठी युक्तियों पर कुछ ऐसा ही आग्रह है और हम समझते हैं पढ़ने वालों को भी इस तरह का लेख अरोचक न होता होगा यदि संस्कृत होने से ऊब पैदा करने वाला हो तो संस्कृत अनभिज्ञ पाठक हमें क्षमा करें गे—क्षेमेन्द्र ने दर्पदलन में कुलीनता के अभिमान पर बड़ा ही उपहास किया है ठीक भी है बिना किसी तरह की योग्यता और गुण अपने में रक्खे निरा कुलीनता का अभिमान आक्षेप ही के योग्य है—यथा

गुणवत्कुलजातोपि निर्गुणः केन पूज्यते ।
दोग्ध्री कुलोद्भवा धेनुर्वन्ध्या कस्योपयुज्यते ॥

जिस कुल में बराबर गुणवान् होते आये हैं वैसे कुल में पैदा हो कर भी निर्गुणी हुआ तो कौन उसकी प्रतिष्ठा करेगा—थान की अच्छी गऊ भी बांझ किसके काम की हो सक्ती है—

लोके कुलं कुलं तावद्यावत्पूर्वसमन्वयः ।
गुणप्रभावे विच्छिन्ने समाप्तं सकलं कुलम् ॥

संसार में कुल तभी तक कुल की गणना में रहता है जब तक पहिले हुये लोगों की पद्धति के अनुसार गुणवान् कुल में पैदा होते रहें जिस गुण के कारण कुल की प्रतिष्ठा की जाती थी जब वह बात ही न रही तब कुल को समाप्त सम-

झना चाहिये—सच है हींग निकल गई तो महक उसकी कै दिन रह सक्ती है—"गुणाधीनं कुलं ज्ञात्वा गुणेष्वाधीयतां मनः" तो निश्चय हुआ कुल गुण के आधीन है इसलिये गुण के उपार्जन में चित्त दे—कुलीन और गुणवान् होने का सारांश क्या है सो आगे के श्लोकों में दिखलाया है—

एतदेव कुलीनत्वमेतदेव गुणार्जनम् ।
यत्सदैव सतां सत्सु विनयावनतं शिरः ॥

यही कुलीनता है यही गुण के उपार्जन का फल है कि सदा सज्जनों के सामने नम्र रह सिर झुकाये रहे—

दयैव दयिता विद्या सत्यमेवाक्षयं धनम् ।
अकलङ्कविवेकानां शीलमेवामलं कुलम् ॥

दया ही मनुष्य के लिये दयिता के समान प्यारी विद्या है—सत्य ही ऐसा धन है जिस्का क्षय नहीं होता विवेकी जो सर्वथा निर्दोष हैं उन को शीलपाल नहीं विमल कुल है अर्थात् कुलीनता की यही शोभा है कि शीलवान् और नम्र हो—जिस्का फाइदा आगे के श्लोक में दिखलाया है—

द्वेषः कस्य न दोषाय प्रीतिः कस्य नभूतये ।
दर्पः कस्य न पाताय नोन्नत्यै कस्य नम्रता

द्वेष बुद्धि का होना किस्को दूषित नहीं करता सब से प्रीति किस्को संपत्ति का हेतु नहीं है—अभिमान से कौन नीचे को नहीं गिरता और नम्र होकर कौन ऊपर को नहीं उठता

त्यागिना किं दरिद्रेण किं कुलीनेन पापिना ।
तुष्टेन किं कदर्येण दर्पान्धेन बुधेन किम् ॥

जिसे देने की टेव है वह कितना ही दरिद्र हो गया हो देही गा—पाप का काम करने वाला कुलीन हुआ तो क्या—कदर्य रीझा भी तो क्या दे देगा अभिमान में अन्धा विद्वान् हुआ तो क्या—

वैरायते सुहृद्भावः प्रदानं हरणायते ।
दर्पभूताभिभूतस्य विद्यामूर्खशतायते ॥

अभिमान् जिन पर भूत सा सवार रहता है उन का मैत्रीभाव बैरभाव के तुल्य है देना छीन लेने के बराबर है उनका विद्वान् होना सौ मूर्ख के बरबर है—

गुणिनां मत्सरः शत्रुर्लुब्धानामतियाचकः ।
सर्व एव सदर्पाणां न कश्चित्प्रियवादिनाम् ॥

गुणवानों को डाह का होना शत्रु है—लोभी कृपण को बार २ मांगने वाला—अभीमानी सबी का शत्रु है—प्रिय बोलने वाले का कोई शत्रु नहीं है—

इसी तरह धन के अभिमान् को दिखलाने में नई २ उक्तियुक्ति का पाण्डित्य और कवित्व शक्ति का ओर कर दिया है— यथा

यदर्जितं परिक्लेशैरर्जितं यन्न भुज्यते ।
विभज्यते यदन्तेऽन्यैः कस्यचिन्मास्तु तद्धनम् ॥

जिस धन को इकट्ठा करने में बड़ा क्लेश उठाना पड़ा है—और जिस धन के जुड़ जाने पर उसका भोग न कर सके अन्त में जिसे कोई दूसरा बांटलेता है वैसा धन किसी के न हो—सच है दान भोग रहित धन का अन्त में नाश ही होता है "दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य । यो न ददाति न भुंक्ते तस्य तृतीयागतिर्भवति" —श्रीमद्भागवत में भी कहा है—

प्रायेणार्थाः कदर्याणां न सुखाय कदाचन ।
इहचात्मोपतापाय मृतस्य नरकाय च ॥

बहुधा कदर्यों को धन सुख का कारण नहीं होता—इस संसार में अपने आत्मा ही को दुःख दे कदर्य धन इकट्ठा करता है और धन पाय जो इस ने बुरे काम कर रक्खे हैं उससे नरक भोगता है—

विद्याविवादाय धनं मदाय प्रज्ञाप्रकर्षः परवञ्चनाय ।
अत्युन्नतिर्लोकपराभवाय येषां प्रकाशस्तिमिरं हि तेषाम् ॥

विद्या जिन को विवाद के लिये—धन मद के लिये—बुद्धि की उन्नति दूसरे को ठगने के लिये—और बढ़ती दूसरों को दबाने के लिये—जिसको है उसको प्राकश भी अन्धकार है—धन के संचय के सम्बन्ध में क्षेमेन्द्र की उक्ति भी नये ढंग की है—

तृप्तिदं दर्शनेनापि जन्तोर्जीवितजीवितम् ।
द्रविणं ये न रक्षन्ति स्वकायं भक्षयन्ति ते ॥

जो केवल देखने से तृप्ति पहुंचाता है जीवधारी के जीवन का जीवन है—उस धन को जो नहीं रखते वे मानो अपने देह को खाते हैं—

दारिद्र्यं मरणं लोके धनमायुः शरीरिणाम् ॥

दरिद्रता संसार में मरण है और धन आयु है—

पण्डिताः कवयः शूराः कलावन्तस्तपस्विनः ।
वैद्यस्येव सवित्तस्य वीक्ष्यन्ते मुखमातुराः ॥

पण्डित कवि शूरवीर अनेक कला के जानने वाले तपस्वी ये सब धनी का मुख वैसे ही जोहते रहते हैं जैसा रोगी वैद्य का—ऐसे धन को अच्छे लोग धर्म के लिये संग्रह करते हैं जिस से धर्म नकिया गया वह धन नहीं किन्तु मल का सङ्ग्रह है—

सन्तः कुर्वन्ति यत्नेन धर्मस्यार्थे धनार्जनम् ।
धर्माचारविहीनानां द्रविणं मलसञ्चयः ॥
मलिनस्य कुवस्त्रस्य स्वल्पाशनपरस्य च ।
दारिद्र्याधिकजुष्टस्य कदर्यस्य धनेन किम् ॥

कदर्य का बहुत अच्छा स्वरूप ऊपर के श्लोक में दिखाया है—

निर्द्धनाः सुखिनो दृष्टाः सधनाश्चातिदुःखिताः ।
सुखदुःखोदये जन्तोर्दैवाधीने धनेन किम् ॥

निर्द्धनी सुखी देखे और धनी दुःखी—सुख दुःख दैव की इच्छा से मनुष्य को मिलता है तो धन से क्या ? —

यथावत्तोपयुक्तार्थनिश्चिन्तस्य विपश्चितः ।
अत्यल्पपरितुष्टस्य सन्तुष्टस्य धनेन किम् ॥

ऊपर के श्लोक में सन्तुष्ट का अच्छा स्वरूप दिखलाया है ॥

प्राणाधिकस्य सुहृदस्तरुणीजनस्य, पुत्रस्य वा गुणनिधेः
सहसा वियोगे। शोकेन शोचति यदा विवशः शरीरी,
रत्नावलैरपि तदा वद किं करोति ॥

प्राण से भी अधिक प्यारे मित्र के तरुणी स्त्री के गुण की खान पुत्र के सहसा वियोग में जब मनुष्य सोच करता है उस समय रत्न का पर्वत भी उसको क्या सुख पहुंचा सक्ता है—धन का वैयर्थ कैसे एक अनोखे ढंग से दिखाया है—और भी

निश्चेतनः काष्ठसमानकायस्त्यक्तः क्षणात्पुत्रकलत्रमित्रैः ।
शुभाशुभप्राक्तनकर्मभागी यत्नान्तरत्नैर्वद किं करोति ॥
अलङ्कृतः काञ्चनकोटिमूल्यैर्महार्हरत्नैर्गजवाजिवाहैः ।
निमेषमात्रं लभते न जीवं कालेन काले शिखयागृहीतः ॥

इत्यादि धन का वैयर्थ कई तरह पर दिखलाय धन के कारण अभिमान कितना व्यर्थ है इसे कई तरह पर प्रगट किया है—ऐसा ही विद्या के कारण जो घमण्ड मनुष्य को हो जाता है उसका भी बहुत उत्तम चित्र खींचा गया है ॥

सा विद्या या मदं हन्ति सा श्रीर्यार्थिषु वर्षति ॥

विद्या वही जो अभिमान को दूर करे, धन वही जो दूसरे के काम में आवे।

धर्मानुसारिणी या च सा बुद्धिरभिधायते ॥

जो धर्म के काम में लगावे वही बुद्धि —

यो विद्यागुरुरायाति लघुताशीलविप्लवात् ।
तस्मै पण्डितमूर्खाय विपरीतात्मने नमः ॥

विद्या के पढ़ने में गुरु होकर जो अपने काम में लघुता [हलकाई] प्रगट करे उस पण्डित मूर्ख को नमस्कार है—

विद्याश्रीरिव लोभेन द्वेषेणायाति निन्द्यताम् ।
भाति नम्रतयैवैषा लज्जयैव कुलाङ्गना ॥

जैसा श्री लोभ के होने से वैसा ही विद्या द्वेष के कारण निन्दनीय होती है—जैसा कुलाङ्गना लज्जा से वैसा ही विद्या नम्रता ही से शोभा पाती है ॥

शीलं परहिता शक्तिरनुत्सेकः क्षमा धृतिः ।
अलोभश्चेति विद्यायाः परिपाकोज्ज्वलं फलम् ॥

शीलपालन, दूसरे का हित करना, अभिमान का न होना, क्षमा, धैर्य, अलोभ ये विद्या के परिपाक के उज्ज्वल फल हैं ।

विवेकरहिता विद्या द्वेषरोषोष्मतापिता ।
दर्पाशनिनिपातेन हता वल्लीव निष्फला—

विवेक से रहित द्वेष और क्रोध से उपतापित अभिमानरूप बिजली के गिरने से विद्या लता के समान निष्फल है ॥

उपकाराय या पुंसां न परस्य न चात्मनः ।
यत्र सञ्चयसम्भारैः किं तया भारविद्यया—

जिस्से न दूसरे का उपकार है अपना ही—अनेक ग्रन्थों के अवलोकन का भार अपने ऊपर लादे हुये उस विद्या से क्या लाभ जो केवल भारमात्र है ॥

अन्यायः प्रौढवादेन नीयते न्यायतां यया ।
न्यायश्चान्यायतां लोभात्किन्तया क्षुद्रविद्यया—

अपने प्रौढवाद से लोभ में आय अन्याय को न्याय और न्याय को अन्याय साबित करने वाले क्षुद्र की विद्या से क्या—

अनुष्ठानेन रहिता पाठमात्रेण केवलम् ।
रञ्जयत्येव या लोकं किन्तया शुकविद्यया—

पढ़े हैं पर पढ़ने का जो फल कि उस के समान वर्त्ताव सो न किया तो उस तोतारटन विद्या से लाभ क्या—

गोप्यते या श्रुतज्ञस्य मूर्खस्याग्रे प्रकाश्यते ।
न दीयते च शिष्येभ्यः किन्तया शठविद्यया ॥

जो विद्वान् के सामने छिपाई जाय मूर्ख के सामने प्रकाश की जाय और शिष्यों को न दी जाय शठ की उस विद्या से क्या—सब है—यत्र शाब्दिकास्तत्र तार्किका यत्र तार्किकास्तत्र शाब्दिका यत्र चोभयोस्तत्र नोभयो यत्र नोभयोस्तत्र चोभयोः—

न विवेकोचितां बुद्धिं न वैराग्यमयं मनः ।
संपादयति या पुंसां किन्तया जडविद्यया ॥

जिस विद्या के अभ्यास से न विवेक आया न मन में वैराग्य जड़तुल्य की उस विद्या से क्या—

परमात्सर्य शल्येन व्यथा सञ्जायते यया ।
सुखनिद्रापहारिण्या किन्तया शूलविद्यया ॥

विद्या पढ डाह बाण के समान जिस्के मन में चुभा करती है सुखरूपी निद्रा की नाश करने वाली उस विद्या से क्या लाभ—

पर सूक्तापहारेण स्वसुभाषितवादिना ।
उत्कर्षः ख्याप्यते यस्याः किन्तया चौरविद्यया ॥

दूसरे की कोई उक्ति युक्ति चुराय अपनी बतलाय जो संसार में उत्कर्ष सिद्ध करने वाले हैं उन चोरों को उस विद्या से क्या—जैसा हमारे कई एक कृतघ्न पत्र-सम्पादक जिन्हें अपनी कोई नई उक्ति युक्ति गढ़ने का शऊर नहीं दूसरे के पत्र से समूचा लेख उठा लेते हैं और नाम तक नहीं देते न जानिये ये चाण्डाल किस घोर कुम्भीपाक में ढकेले जायंगे—"अर्थं कुकविः पदानि चाण्डालः" ॥

अनभ्यासहतोत्साहपरेण परिभूयते ।
या लज्जाजननी जाड्यात्किन्तया मन्दविद्यया ॥

पढ़ा बहुत पर गुना नहीं हतोत्साह रहने से दूसरे से दबा लिये जाते हैं लज्जा की पैदा करने वाली ऐसे मन्द की विद्या से क्या—

लोभः प्रभूतवित्तस्य रागः प्रव्रजितस्य च ।
न यया शान्तिमायाति किन्तया लोकविद्यया ॥

धन पास बहुत है पर और अधिक धन हो यह लोभ जिस्को विद्या पढ़ने पर भी न गया—मूड़मुड़ाय संन्यासी हुये विद्या पढ़ा पर रागद्वेष न छुटा ऐसों की झूंठी विद्या से क्या—

वीणेव श्रोत्रहीनस्य लोलाक्षीव विचक्षुषः ।
व्यसोः कुसुममालेव विद्यास्तब्धस्य निष्फला ॥

बहिरे को बीन अन्धे को कामिनी मृतक को फूलों का हार जैसा व्यर्थ है वैसा ही कटूर कलेजे को विद्या—

द्वेषदर्पहता विद्या कामक्रोधहता मतिः ।
लोभमोहहता वृत्तिर्येषां तेषां किमायुषा ॥

द्वेष और दर्प के कारण जिन की विद्या नष्ट है—काम और क्रोध से जिन की बुद्धि भ्रष्ट है—जिन की जीविका लोभ और मोह को बढ़ाने वाली है ऐसों के जीवन से क्या फल—

क्व विद्याविदिताशेषकार्याकार्यविमर्शधीः ।
मूढता क्व च दुष्कर्ममहापापकुटुम्बिनी ॥

मूर्खता और विद्या में कैसा अच्छा अंतर दिखलाया है—

धिग्धियं किं विवेकेन दूरे विश्राम्यतु श्रुतम् ।
धार्यते यैर्न संसारविकारस्खलितं मनः ॥

सच है ऐसों की विद्या धिक्कार ही के योग्य है जो संसार के विषय की ओर गये हुये मन को नहीं रोकते—

सौन्दर्य के मद का स्वरूप दिखलाने में भी दो चार उक्ति युक्ति बिलकुल नई और सराहने के योग्य हैं यथा—

जराजीर्णानि रूपाणि रोगार्तानि वपूंषि च ।
आयूंषि काललीढानि दृष्ट्वा कस्य भवेन्मदः ॥

रूप के साथ बुढ़ापे को, देह के साथ रोग की भय को, आयुष्य को काल का कलेवा देख सौन्दर्य का मद किस को हसी का कारण नहीं है—

केशग्रहेणेव जरा जनानां वेश्येव वित्तं कवली करोति ।

बुढ़ापे की वेश्या के साथ क्या ही अच्छी उपमा दी गई है बुढ़ापा का पहिला लक्षण बालों का पकना है—कवि कहता है यह बुढ़ापा क्या है मानो वेश्या के सदृश है बालों को पकड़ मनुष्य के रूप खज़ाने को निगल लेती है—वेश्या भी तो कामुक जब तक ज़रा दमदार रहता है नहीं छोड़ती—

पुंसामवस्थात्रितयत्रिभागे रूपप्रदं यौवनमेव नान्यत् ।
तस्मिन्मदोन्मादगदाङ्गभङ्गव्यङ्गादिदोषोपहते क्व रूपम् ॥

मनुष्य की बाल्य यौवना स्थविर इन ३ अवस्थाओं में रूप की बढ़ाने वाली केवल जवानी होती है उस जवानी में उन्माद और चढ़ती उमर के जोश में जलभुन कोई राजरोग गाठ बांध लिया गठिया हो गई कूबर निकल आया लुंज हो गये तरहदारी और खूबसूरती का सब घमण्ड खाक में मिल गया ज़िन्दगी का दिन पूरा करने लगे–

पद्मोपमानां दिनसुन्दराणां कोयं नृणामस्थिररूपदर्पः ।
रूपेण कान्तिः क्षणिकैव येषां हारिद्ररागेण यथां शुकानाम् ॥

मनुष्य में रूप वैसा ही अस्थिर है जैसा कमल में सुहावनापन जो केवल दिन भर के लिये है उधर सूर्य छिपे इधर यह मुकुलित हुआ–रूप में सुहावनापन या कान्ति हल्दी के रंग में रंगे कपड़े के समान क्षणिक रहती है––हल्दी का रंग जैसा जल्द चढ़ता है वैसा कोई दूसरा रंग नहीं–

अलोमशं पूर्णशशाङ्कशोभं मुखं तु यूनां कतिचिद्दिनानि ।
जाते ततः श्मश्रुविशालजाले शैवाललीनाब्जतुलां बिभर्ति ॥

रेख भीनते २ पूर्णचन्द्र सदृश चढ़ती जवानी में मुख की शोभा के दिन के लिये है जिसपर अभिमान किया जाय–डाढ़ी मूछों के निकलते ही जो मुख पूर्णचन्द्र सा शोभा देता था वह उस कमल के समान हो गया जिसे सिवार ने सब ओर से बढ़ कर छिपा लिया है–सिवार की उपमा डाढ़ी मूछ की कवि के कवित्व शक्ति की अतिशय प्रौढता प्रगट करती है–

रूप के घमण्ड की कलई चित्त के उद्विग्न या दुःख की दशा में खुलती है जैसा नीचे के पद्यों में दरसाया है–

यदा नरः शोचति दुःखतप्तस्त्यक्ताशनः शोकविवर्णवर्णः ।
न स्नाति नोत्तिष्ठति नैव शेते तदा क्व रूपं क्व च यौवनश्रीः ॥
यदा स्थितः प्रेत इवास्थिशेषः कारागृहे धूसरितोर्ध्वकेशः ।
प्रकीर्णयूकामलकालकायस्तदा क्व रूपस्य गतोभिमानः ॥

इत्यादि–दान के प्रकरण में कवि ने उत्तम दान का लक्षण यह दिया है–

परार्तिशमनं वित्तमज्ञातमनुदीरितम् ।
अफलाकांक्षया युक्तं प्रायेणाल्पमनल्पताम् ॥

दूसरे के दुःख का दूर करने वाला बिना पहिले से जताये फल की इच्छा न रख गुप्त थोड़ा दान भी अनन्त है—

यत्संत्यक्तफलस्पृहं यदुचितं सर्वस्वभूतं च यत्-
नान्यायेन यदर्जितं परधनस्पर्शेन शप्तं न यत् ।
आपन्नार्तिविलोकने करुणया श्रद्धासुधापूरितम्
सत्वोत्साहसमन्वितं तृणमपि त्रैलोक्यदानाधिकम् ॥

बदले में फल पाने की इच्छा से रहित जो उचित अर्थात् अपने वित्त के बाहर न हो और जो निज कमाई का सर्वस्व हो—जिसे अन्याय से न इकट्ठा किया हो—जो ऐसा धन न हो कि किसी को सताय के ले लिया गया हो और उस धन का मालिक दांत किरकिरता हुआ कोसता हो—विपत्ति में पड़े हुये को देख करुणा के कारण श्रद्धा सुधा से पूरित उत्साह के साथ दिया गया हो ऐसा तिनके के बराबर दान तीनों भुवन को दान में दे देने के बराबर है—इस तरह का दान ऐसे ही किसी भाग्यवान् उदारसत्व वाले से बन पड़ता है—अब तो पुरोहित गुरू या स्वस्तिवाचन करने वालों को उन से मजदूरी करवाय दिया जाता है और इतनी भारी एहसान की गठरी उन के सिर पर लाद कर जो कदाचित् उन के सात पुरखों के उठाये भी न उठे—जैसे कदर्य देने वाले वैसे दुनिया भर के कूड़े निकम्मे लालची दान लेने वाले "लोभी गुरू लालची चेला। दोनों नरक में ठेलिं ठेला" और ये दोनों अपने २ उन्माद और दुराचरण से भारत को कुम्भीपाक के कर्दम में सेंदते हुये रसातल में गेर रहे हैं ऐसों ही पर लक्ष्य कर क्षेमेन्द्र ने दर्पदलन की रचना की है—तपोभिमान का वैयर्थ भी कवि ने कई तरह पर दिख लाया है यथा—

सर्वात्मनाशुद्धधिया विधेयः संसारदोषप्रशमाय यत्नः ।
कोपोपतप्तं घनरागदिग्धं करोति तीव्रं न तपः प्रशान्तिम् ॥

शुद्धचित्त वाले को मन वच कर्म से संसार के राग द्वेष आदि दोषों के दबाने का यत्न करना उचित है—मन जो क्रोध की आग से जलता रहा अथवा

राग द्वेष की कीच में फसा हुआ महामलिन बना रहा तो तपस्या का क्या फल-सच है "मन न रंगाये तू रंगाये कपड़ा"—

चित्तं विरक्तं यदि किन्तपोभिश्चित्तं सरागं यदि किन्तपोभिः।
चित्तं प्रसन्नं यदि किन्तपोभिश्चित्तं सकोपं यदि किन्तपोभिः॥

चित्त में विराग हुआ तो तपस्या से क्या—चित्त में यदि राग द्वेष लगा है तो तपस्या से क्या—तपः सम्पत् का मुख्य फल चित्त का मुदित वृत्तिधारण करना सो यदि स्वभाव ही से चित्त में है तो तपस्या से क्या—चित्त क्रोध की आग से दधक रहा है तब भी तपस्या से क्या—

क्षमाशमःशासनमिन्द्रियाणां मनःप्रसक्तं करुणारसेन।
तपोर्हमेतत्सजने बने वा कायस्य संशोषणमन्यदाहुः॥

तपस्या के द्वारा शरीर का सुखाना दूसरी बात है—क्षमा, शान्ति, इन्द्रियों का दमन, मन का करुणा से आर्द्र रहना जो सब गुण तपस्वी में होने चाहिये दूसरी बात है—जिसे हम जन समूह के बीच में भी रह कर वैसे ही कर सक्ते हैं जैसा बन में रह कर—तब दम्भार्थ जो यह जटावल्कल धारण कर गेरुआ कपड़ा रंगाना है बिल्कुल व्यर्थ है—यह सब केवल जीविकार्थ है जिस्से कभी जीविका चल जाती है कभी को नहीं भी चलती जैसा श्रीमद्भागवत के इस श्लोक में प्रगट किया है—प्रह्लाद का वाक्य श्रीनृसिंह जी के प्रति—

मौनव्रतश्रुततपोऽध्ययनस्वधर्मव्याख्यारहोजपसमाधयआपवर्ग्याः।
प्रायःपरंपुरुषतेत्वजितेन्द्रियाणांवार्ताभवन्त्युतनवाऽत्रतुदाम्भिकानाम्
प्रायेण देवमुनयोखविमुक्तिकामामौनंचरन्तिविजनेनपरार्थनिष्ठाः।
नैतान्विहायकृपणान्विमुमुक्षएकोनान्यंत्वदंघ्रिशरणंभवतोनुपश्ये॥
बनप्रवेशैर्नियमैरशेषैः क्रियाविशेषैः कृतकायशोषैः।
न निर्विकारं पदमाप्नुवन्ति कोपेन कामेन च कृष्यमाणाः—

इस तरह पर क्षेमेन्द्र ने रूप, धन, कुल, विद्या, तपस्या, इत्यादि के घमण्ड की बड़ी उत्तम उक्ति युक्ति के साथ जीट उड़ाया है जिसे पढ़ चित्त बार २ इस महाकवि के अक्षरों पर लोटपोट होता है—यही कारण है कि हम कई नम्बरों से

इस कवि की विलक्षण कविता का उदाहरण अपने पाठकों को दे रहे हैं अभी शायद क्षेमेन्द्र के गंभीर उपदेशात्मक सरस काव्य की बानगी हम आगे के नम्बर में और भी देंगे आशा है हमारे पढ़ने वाले इसे संस्कृत समझ माफ करेंगे यदि यह लेख उन्हें कड़ुआ व कसैला मालूम हो तौ भी दवा के माफिक एकबार इसे पढ़ लेंगे तो कुछ गुन ही करे गा—

कौआ परी और आशिकतन ॥

आज हमारे पञ्चमहाराज गोपियों में कन्हैया के परतो पर कौआपरियों के बीच आशिकतन बनने की ख्वाहिश मन में ठान भोर ही को घर से चल खड़े हुये—"मन लगा गधी से तो परी क्या चीज़ है"—यह मत समझो हमारे पञ्च-महाराज आशिकतनी में किसी से पीछे हटे हुये हैं घर में चाहो भूंजी भांग न हो दिल दिमाग तो सात ताड़ की उंचाई से भी अधिक ऊंचा है—नेउले कासा मुह, सूरत में साक्षात् छाया सुत, किन्तु सौन्दर्य और हुस्न में कोटि कन्दर्प लजावन, तरहदारी में मटियाबुर्ज़ के नौवाब किस हकीकत में—अबेओ खड़ूंदार बुझे क्या तुझे भी आशिकतन बनने का हौसिला चर्राया क्या? सूरत लंगूर मगर तुम की कसर है—तुम न हो दुमदार सितारे की नोच कर लगा दूं—अरे ओ बीचुड्डो अञ्जनगिरि पर्वत की श्यामता का अनुहार करने वाले तुम्हारे अङ्ग प्रत्यङ्ग की छवि पर तन मन सब वारेंये मुफलिस कङ्गांच होकर भी आशिकतनों में नाम लिखाये तुम्हारे पीछे खराबखस्ता हैं तुम्हारे लिये बेकल हैं इश्क के फन्दे में गिरफ्तार बेवस हैं असीर हैं—बेकल इतने कि कलकत्ता की कौन कहे कालापानी छान आने पर भी तुम उन्हें अपना दासानुदास चरणसेवक कर लेने को राज़ी हो तो उन्हें कोई उज़र नहीं है—अब तो इस कूचे में पांव रख चुके आशिकों की फिहरिश्त में नाम दर्ज होगया लोकनिन्दा और बदनामी को कहां तक डरें—ओखली में सिरदै मूसलों की धमक से कहां कोई बच सक्ता है—शरम को शहद समझ चाट बैठे—बिना बेहयाई का जामा पहिने आशिक के तनज़ेब नहीं—गाढ़े इश्क के हैं हम आशिक—तेरी जुदाई में मलमल के हाथ रहते हैं—हाय मेरी कौआपरी—कौआपरी—कौआपरी—अफसोस ज़र दिया ज़नानों को पास माल न हुआ नहीं तो कौआपरियों की पलटन खड़ी कर हम उसके कपतान बनते या तो शाह वाजिदअली किसी ज़माने में हुये थे या अब हमी इस वक्त देख पड़ते—अच्छा तो क्या बिलाई के भैंस लगती है किसी मालदार को चल कर फंसावैं—ओ हो

आप हैं पण्डित अमुक–अमुक–अमुक–बाबू फलां–फलां–फलां–मिस्टर सो ऐण्ड सो–सो ऐण्ड सो–लाला साहब वगैरह–वगैरह–वगैरह–ओः खोः आप क्या हैं बला हैं करिश्मां हैं–तिलिस्मां हैं–किनामिनां है––आश्चर्य और अद्भुत तथा लोकोत्तर वस्तु का सन्दोह हैं–उठती उमर और जगजानी जवानी के जोश के उफान में बीबी लेकगोहिना के नवासे हैं–चुल बुल चालाक चतुर चरपर छिन छिन में होत–छैले छबीले छिछोरे और छोर के–क्या कहना आप ही तो हैं भला यह तो कहिये आप ने कितने कण्टाप और पदाघात के पश्चात् पदाधिरूढ हो अनङ्ग के अखाड़े की पहलवानी प्राप्त की—"सदा शठः शठापालं मल्लो मल्लाय शत्यति"– सींक से पतले आप के भुजदण्ड आप की पहलवानी की गवाही दे रहे हैं–मुरछल आप हाथ में क्यों लिये रहते हैं नहीं २ यह तो नीम की टेहनी है क्या कौआपरियों में नवधा भक्ति के साधन का योगसिद्ध हो गया " स्मरणं कीर्तनं विष्णोरर्चनं पादसेवनम् " धनुषाकार कमानसी झुकी हुई कमर से भी बोध होता है आप की तपस्या सिद्ध होगई महाप्रसाद पाय गये—

"लक्षाणामब्दमेकन्तु धूम्रपानमधोमुखी"—

"उमेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम"—

सुमुखी नहीं सुमुखो कहिये–सुमुख, दुर्मुख, कृष्णमुख, घोड़मुख, लोखरीमुख, बीघमुख, मुख के जितने विशेषण जोड़ते जाइये हम सब का एक २ उदाहरण आप को देते जांयगे—गरज़ कि पञ्चमहारज आशिकतनी के महकमे को नीचे तक टटोल इसे अथाह और बेओरछोर पाय ऊब गये और यह निश्चय किया कि इन कौआपरियों के फन्दे में पड़ तन और धन दोनों का तहस नहस है–ईश्वर शत्रु को भी इन से बचाये रक्खे यही सब सोचते बिचारते घर लौटे ॥

भक्ति ॥

भक्ति यह शब्द भजधातु से तिप्रत्यय के लगने से बना है–आहा भक्ति भी संसार को चलाने वाली अनेक शक्तियों में शरीर के धारण पोषण करने वाली रक्त वहा अनेक नाड़ियों में जीविनी नाड़ी के समान प्रधान जीवन शक्ति है–ज़िन्दगी का नमक है–प्रेम के परिवार की पुरन्ध्री है–वात्सल्य शृङ्गार और करुणा रस की प्रसविनी जननी सदृश है–यह वह तारवरकी है कि दूर से दूर के प्रेमी और हितू को खींच बुलाना कैसा ईश्वर तक को " अहंभक्तयधीनः " कर देने वाली है–जिस्से रहित ज्ञान और वैराग्य मानो बिना नोन की खिचड़ी है जिसे कोरे ब्रह्मज्ञानी दिन रात बैठे २ पकाते रहते हैं और बड़े परिश्रम

से यम नियम प्राणायाम आदि हज़ार डंडे की सीढ़ी के ऊपर तक चढ़ निमेषमात्र में नीचे गिर पड़ते हैं:—

येऽन्येरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः।
आरुह्य कृच्छ्रेण परम्पदं ततः पतन्त्यधोनादृतयुष्मदंघ्रयः ॥

यह आबहयात का वह चश्मा है जिसे अघाय कर पीना अलग रहा समाधियोग में जिस्का कणमात्र आबागमन का बीज भी नहीं रहने देता—

त्वय्यम्बुजाक्षाखिलसत्वधाम्नि समाधिनावेशितचेतसैके।
त्वत्पादपोतेन महत्कृतेन कुर्वन्ति गोवत्सपदं भवाब्धिम् ॥ अन्यच्च
त्वच्चरणारविन्दयोराविष्टचेता न भवाय कल्पते—

दूसरे यह कि भक्ति का मार्ग ऐसा सहज नहीं है जिस्पर निकृष्ट से निकृष्ट पामर जन भी आंख मूंद चले जांय—दो ही इस्पर चलने के अधिकारी हो सक्ते हैं या तो वे जिन पर उस अनादि अमेय की कृपा हो जिसे उस ने कृपा कर अपनाय लिया हो या वह जो लोक वेद सब से हाथ धो साधनकोटि में अपने को रख तन्मय हो गया हो अच्छा किसी ने कहा है—

लोक लाज की गाठरी पहिले देइ डुबाय।
भक्ति सरोवर पग्य में पाछे राखे पांय ॥
जिन पावन सों चलत तुम लोक बेद की गैल।
सो न पांव या सर धरो जल ह्वै जैहै मैल ॥

यह सहज भी इतनी है कि भक्ति के तन्तु का कुछ ऐसा ताना बाना है कि इस्से जीवमात्र कोई नहीं बचे—मनुष्य मनुष्य में, पशु पशु में, पशु और मनुष्य में, भक्ति की महिमा पाई जाती है एक २ का उदाहरण दिया जाय तो एक छोटी सी पुस्तक तैयार हो जाय—इस्के अनेक नाम और भेद भी हैं देवभक्ति, पितृभक्ति, मातृभक्ति, गुरुभक्ति, स्वामिभक्ति, राजभक्ति, भार्याभक्ति, हमारे पढ़ने

वालों में उन की तो हम नहीं कहते जो रँडुआ होंगे नहीं तो कौन हैं जो भार्या भक्ति क्या है कैसे की जाती क्या २ इस्के साधन हैं क्या इस्का पुरुष और क्या इस्से फल मिलता है न जानते हों—अपने घर की अधिष्ठात्री देवता जीवन की प्रेरकशक्ति समझ चरणकमलों पर तन मन सर्वस्व अर्पण कर अहर्निश सेवा में भावितात्मा वशम्वद हो आज्ञापालन में चौकसी इस भक्तिका लक्षण और स्वरूप है—गौराङ्ग महाशयों में इस लक्षण की पूर्ण अभिव्याप्ति है हिन्दुस्तानी अर्द्धशिक्षित होते हैं इस लिये उन्में कहीं २ इस्की झलकमात्र पाई जाती—इस तरह के अनन्य भक्त को मन्त्र उपदेष्टा गुरू कहो तो वही भार्या—अन्धे को लकड़ी के समान रहनुमा करने वाली भी वही जिस्का कोप कषायित दृष्टिपात जिन के लिये प्रलय है, मृत्यु है, निरययातना का नमूना है—ईषत्हास्य प्रसन्नमुख सस्पृह कटाक्ष निरीक्षण जिन को भाग्यवानी की सीमा है, जीवन का साफल्य है, स्वर्ग सुख का एक छोटासा उदाहरण है—किम्बहुना भार्यातन्मय इन कदर्य कापुरुषों की निराली ही दुनिया है जिस्में वे विचरते हैं—अब रहा इस तन्मय भार्याभक्ति के साधन का फल सो किसी कवि ने इस तरह पर दिखलाया है—

"व्यापारान्तरमुत्सृज्य वीक्षमाणो बधूमुखम् ।
यो गृहेष्वेव निन्द्राति दरिद्राति स दुर्मतिः "

सब काम काज छोड़ जो दिन रात अपनी स्त्री का मुह ताकता हुआ घर में पड़ा २ सोया करता है वह मूढ़ अवश्य दरिद्र भोगता है—सम्पादक महाशय आप तो देश भर के संशोधन और सुधार का दम भर रहे हैं इन स्त्रीजित् "हेनपेक्ड हसबेंड" भार्याभक्तों के सुधार का भी कोई लटका आप के पास है ? मैं समझता हूं आप की क्या हकीकत है इस कार्य में "धातापि भग्नोद्यमः"—

आप की लेखनी का एक नया भक्त एक नौसिखिया—

नृपतिचरितावली ॥

करालकाल की कुटिल करतूत से बचे बचाये भारत के भावी भाग्योदय के बीजरूप संम्राट् तथा भूम्यधिकारी जिन्में शासन या हुकूमत की वासना अभी सर्वथा अस्त नहीं हुई उन का पुराना हाल तथा वर्त्तमान समय में उन की क्या दशा है कितनी और किस तरह की भूमि अब उन के अधिकार में है किस तरह के लोगों पर वे राज करते हैं और उन के राजकाज का क्या ढंग है इन सब बातों के जानने या सुनने की किसे उत्कण्ठा न होगी—आज हम यावत् बुद्धिबलोदय जहां तक अपने देशी राजा महाराजा तथा नौवाब और बेगमों का हाल हमें मिल सका अपने पाठकों को सुनाते हैं—हमारे पढ़ने वालों में जिन को इस्के सम्बन्ध में जिन राजा महाराजाओं का जो कुछ हाल मालूम हो हमें लिख भेजें तो हम उन के बड़े उपकृत और कृतज्ञ होंगे और उस लेख के साथ उन का नाम भी रख देंगे–

यद्यपि इस समय हमारे देश में प्रभुत्व और राज्यशासन के अधिकारी ब्राह्मण से लेकर शूद्र और अन्त्यज तक हैं राजा महाराजा की उपाधिधारी भी ब्राह्मण से लेकर शूद्र और अन्त्यज तक हैं किन्तु हम यहां पहले उन्हीं का कुछ भूत या वर्त्तमान चरित्र लिखा चाहते हैं जो क्षत्रियों में नृपतिपदारूढ़ हैं पीछे औरों का भी वृत्तान्त लिखेंगे—क्षत्रियों में भी उदयपुर के राणाओं के चरित्र का चित्र हमारा पहिला उद्देश्य है–यद्यपि राज्यसीमा और भूमिकर की आमदनी में उदयपुर की रियासत राजपुताने की दो एक दूसरी रियासतों से कम है किन्तु गौरव और प्रतिष्ठा में उदयपुर के राणा सब से प्रथम हैं–राणाओं की श्रीरामचन्द्र से सीधी वंश परम्परा क्षत्रियों में कुलीन भी मुक्तकण्ठ हो स्वीकार करते हैं–उस्में उदयपुर के घराने की बराबरी तो किसी में हई नहीं दिल्ली के मुगल खानदान के बादशाह अकबर आदिकों ने कोई बात उदयपुर के घराने के साथ नहीं छोड़ रक्खा जैसा इन राणाओं को तङ्ग किया ऐसा किसी राजवंश को नहीं पर

राणाओं ने मुगलों की इतात न कबूल की और अपनी बेटी उन्हें न दी—टाड-राजस्थान के पढ़ने से इस घराने के साथ मुगलों के अत्याचार पर रोंघटे खड़े होते हैं—टाड साहब ने जैसा प्रेम उदयपुर के साथ अपने लेख में प्रगट किया और जैसी तारीफ इस घराने की उन्हों ने लिखा है वैसा किसी दूसरे की नहीं—

उदयपुर का राज्य राजपुताने के दक्षिण और अरवली पर्वत के पूर्व है—कोटा बूंदी डूंगरपुर इत्यादि कई एक छोटी २ रियासतों से घिरा हुआ है—इसका मील मुरब्बा १२,६७० मील है आबादी इस राज्य की १,८३२,४२० के लगभग है—मालगुजारी ३,७५०,००० है—राजपुताने की और २ रियासतों के मुकाबिले मेवाड़ का राज्य तीसरी श्रेणी का समझा जाता है—अर्बली पर्वत की उपत्यका के जङ्गल मेवाड़ का प्रधान भाग हैं जो पर्वतस्थली कहीं २ पर ६० मील चौड़ी है—मेवाड़ के उत्तर और पूरब के ज़िले उत्तर पूरब की ओर ढालुआ हैं दक्षिण पश्चिम इसका घने जङ्गल की चट्टान और पहाड़ियों से ढँका हुआ है—अर्बली पर्वत की कई एक छोटी २ बरसाती नदियां बनास नदी में जा मिली हैं जो इस राज्य की प्रधान बड़ी नदी है—राज्य भर में तालाब और झीलें बहुत हैं कोई २ झील मीलों लम्बी चौड़ी हैं—उदयपुर से २० मील एक झील ९ मील लम्बी और ५ मील चौड़ी है—बाजरा चना आदि मोटे अन्न कपास तेलहन ऊख अफीम और तमाखू की इस राज्य में बहुत अच्छी फसल तैयार होती है—जैनी जो अधिकतर बड़े धनी महाजन हैं और राजपूत यहां की खास आबादी के हिस्से हैं—जङ्गलों में भील बहुत हैं जिन का पेशा लूटने का है—महाराणा साहब की ओर से मील २ पर चौकियां सड़कों पर मुकर्रर हैं जो मुसाफिर और उन के खटले की भरपूर चौकसी रखते हैं—बकरी और मेढ़े यहां बहुत अच्छे और मज़बूत होते हैं—सवारी इस राज्य में ऊंट और साड़नी की बहुत है जिस्को जितना ही अधिक सुबीता है वह उतने ही अधिक ऊंट रखता है—सौदागर अपनी सौदागरी की चीजें भी ऊंट ही पर लाद एक स्थान से दूसरे में ले जाते थे पर अब रेल के हो जाने से बहुत सुबीता हो गया है—राजपुताना मालवा रेलवे मेवाड़ के पूरब होकर गई है—विक्रमी संवत्

९० वर्ष के लगभग बीतने पर श्रीरामचन्द्र की वंशपरम्परा में प्राप्त महाराज कनकसेन उदयपुर के घराने की बुनियाद डालते हुये—संवत् ११३६ में चित्तोर जो इस राजवंश की उस समय राजधानी थी किसी कारण से छोटे भाई को दे दी गई और वही राजा किये गये जेठे भाई ने तब राज्य श्री से वञ्चित हो डूंगरपुर के घराने की नेह डाली—राज के आधीन १९ सिरदार या ठाकुर औवल दरजे के हैं और ३२ दोयम दरजे के—ये सिरदार भी अपनी २ जागीरों में वैभव और प्रभुत्व का सब आडम्बर वैसा ही रखते हैं जैसा महाराणा साहब अपनी निज राजधानी उदयपुर में—यह एक छोटा सा शहर रमणीयता में हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध नगरों के बराबर का है—इसकी जन संख्या १८८१ ईस्वी में ३८००० थी—१५६८ ईस्वी में जब दिल्लीपति अकबर ने मेवाड़ की पहिली राजधानी चित्तोर को आक्रमण कर लिया तो महाराणा उदयसिंह यहीं आकर छिपे और अपने आने के पूर्व ही उदयसागर नाम का एक बड़ा तालाब इन्हों ने यहां बनवा रक्खा था—उसी के ठीक किनारे कई फुट की उचाई पर शंगमर्मर का एक बड़ा रमणीक राजभवन बना हुआ है सागर और यह भवन दोनों का अद्भुत दृश्य पथिक के मन को हरे लेता है—१३०३ ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तोर का आक्रमण किया राजा रत्नसेन और इन के साथी क्षत्री बीरों ने बड़ी बीरता के साथ अलाउद्दीन से लड़े किन्तु जब बादशाह की फौज से अपने को न बचा सके तो सब के सब कट मरे—भीतर एक भारी चिता जला दी गई जिसमें रानी पद्मावती अपनी सैकड़ों सहेलियों के साथ उसी चिता में जलभुन खाक हो गई किले का द्वार तब खोल दिया गया क्षत्री सब मै अपने स्वामी के मुसलमानों की सेना से लड़ कर जूझ गये—रानी पद्मावती की रूप माधुरी की प्रशंसा सुन अलाउद्दीन धोखा दै राजा को कैद कर लिया था और हुक्म दै दिया कि जब तक यहु अपनी रानी न मंगा दे कैद से रिहाई न पावे—रानी ने चालाकी की, कहला भेजा, मैं आती हूं मेरी सखी सहेलियों और बांदियों के लिये डोलियां भेजो इस ढंग से सात सौ डोलियों में हथियारबन्द सिपाही छिपा लाई आप भी

सही सलामत निकल गई और अपने पति को भी निकाल लाई—उस समय तो बादशाह से कुछ न बनपड़ा पर डाह की आग से भीतर ही भीतर सुलगता रहा—किन्तु अब चितोर के किले को फतह करने पर जब भीतर गया और चाहा कि पद्मावती का साथ पाय अपना कलेजा ठंढा करे तो उसके बदले रानी का रनवास चिता के धुआं से भरा हुआ पाया—मन्दिर और महलें जो चित्तोर में थीं सब को ढहा डाला केवल उस भवन को छोड़ दिया जो पद्मावती का रनवास था—भाट और कवियों ने इस वृत्तान्त को बड़ी रसीली वीर और करुणा रस की कविता में बांधा है जिसे सुन कट्टर कलेजे वाले के भी आख में आंसू ढबढबा आता है—जिसमें यह सब हाल बांधा गया है उस ग्रन्थ का नाम पद्मावत है—

हम इस घराने के राणाओं की जो बार २ प्रशंसा कर रहे हैं इसका कारण यही है कि इन्हों ने अपना महत्व स्थिर रखने में बड़ा २ क्लेश उठाया है—अलाउद्दीन से लेकर सुबल बादशाहों के समय तक बराबर मुसलमानों से लड़ते रहे और कभी उन के वशम्वद न हुये जब कि और २ घराने के लोग मुगलों की दी हुई ऊंची पदवी ऊंचे अधिकार के लालच में आय मुसलमानों की इतान हरतरह पर कुबूल कर ली—न केवल दिल्ली के बादशाहों के मुकाबिले दृढ़ रहे अरन दिल्ली में खिलजी घराने के बादशाहों के बिगड जाने पर तैमूर के हमला के समय जो मालवा गुजरात बिहर बिरार की ४ आज़ाद सलतनतें कायम हुई उन से भी बराबर लड़ते रहे और अपना पूरा जोर कायम किये रहे—जिस समय मालवा में सुलतान हुशंग जिसने हुशंगाबाद बसाया हुकूमत कर रहा था राना कुम्भू ५० वर्ष तक बराबर मालवा के बादशाहों से लड़ते रहे और हुशंगाबाद के जोड़ पर एक नगर इन्हों ने भी बसाया जिसका नाम कमलनीर रक्खा—१४६१ इस्वी में गुजरात का बादशाह कुतुबशाह और मालवा का हाकिम महमूद दोनों मिल गये और चाहा कि मेवाड़ को फतह कर आपस में बाट लें किन्तु युद्ध में विजय राणाओं की ही हुई जिसके स्मारक चिह्न कई एक विजय स्तम्भ चित्तोर में बनाये गये—

ईस्वी सन् की पन्द्रहवीं सदी में मेवाड़ की राजवंश परम्परा में राणा सांगा अपनी असाधारण बुद्धि और वीरता से मेवाड़ के राज्य की बड़ी उन्नति की:—इस समय मेवाड़ सेना में ८०००० घोड़सवार और जङ्गी ५०० हाथी थे सात बड़े २ राजा और ११३ छोटे राजा इसके आधीन थे—और ये सब लड़ाई में राणा साङ्गा का साथ देते थे—क्षत्रीमात्र सब इस समय राणा को अपना मुखिया और अग्रणी मानते थे जैपूर और मारवाड़ के राजाओं ने भी इसके महत्व को स्वीकार किया और मेवाड़ राज्य के आधीन अपने को माना—१५२७ ईस्वी में राना सांगा ने बाबर का मुकाबिला फतहपूर शीकरी में एक लाख फौज के साथ किया और बाबर को पूरी तरह पर हराय सिन्धु नदी के पार भगा दिया—किन्तु दूसरी बार बाबर ने चित्तोर का आक्रमण दोगुनी तिगुनी फौज के साथ किया और चित्तोर को ले लिया—तब से मुगल बादशाहों का जब तक दिल्ली में ज़ोर रहा उदयपुर के राणा फिर न उभड़े बरन बड़ा २ क्लेश सहते रहे और अत्यन्त संकुचित दशा से अपना समय बिताया—मुगलों के उपरान्त महराठों ने जब ज़ोर पकड़ा तो उन्हों ने भी इस घराने को बड़ा २ दुःख दिया सेंधिया और हुलकर पारी २ रियासत को लूटते पाटते रहे अन्त को १८१७ ईस्वी में अंगरेज़ी गवर्नमेंट और मेवाड़ राज्य के बीच सन्धि स्थिर की गई जिस्से नित्य का क्लेश दूर हुआ और तब से आज तक यह रियासत बराबर तरक्की कर रही है—चित्तोर मेवाड़ की पुरानी राजधानी ७२८ ईस्वी से १५६८ ईस्वी तक रही अब यह सात हज़ार आदमियों की बस्ती है और राजपुताना मालवा रेलवे का एक बड़ा स्टेशन है—यहां ढये हुये पुराने मन्दिर महलें तथा कई—एक तालाब जो चित्तोरगढ़ की पहाड़ी पर हैं देखने लायक हैं और पुरानी बातों के खोजने वाले "एंटीक्वेरियन" के लिये बहुत अच्छी जगह हैं—जुबली" उत्सव का स्मार विक्टोरिया हाल नामक स्थान महाराणा के खर्च से राजधानी उदयपुर में जो हाल में बनवाया गया है उसके तीन हिस्से हैं एक में अजायब घर है दूसरे में पुस्तकालय तीसरा रीडिंग रूम है—स्थान यह भी देखने लायक है—स्वर्गवासी महाराणा सज्जनसिंह

इस घराने में हाल में बड़े विद्यारसिक होगये हिन्दी को उन्हों ने बहुत सहारा पहुंचाया भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के बड़े भक्तथे और बहुत से लोकोपकारी काम उन्हों ने किये—सज्जनसिंह महाराज का बनवाया एक अस्पताल भी वहां है—अब इस समय सर्वगुणसंपन्न महाराणा फतेसिंह जी बहादुर "ग्रेटकमेंडर स्टार आफ इण्डिया" राज करते हैं ४२ वर्ष की इन की उमर है—जो महाराणा कुल कल्पपादप के अंकुर स्वरूप हैं ईश्वर इस अंकुर को चिरजीवी किये रहे—

मारवाड़ या जोधपुर ॥

राजपुताना की रियासतों में मारवाड़ बहुत बड़ी रियासत है और आबादी में इसका नम्बर दोयम है—मील मुरब्बा में यह ३७००० मील है जन संख्या इस राज्य की कुछ ऊपर २५ लाख के है—भूमिकर ४२॥ लाख है और राजपुताने के नैऋत्यकोण की ओर स्थित है—मारवाड़ का देश अधिक तर रेगिस्तानी मैदान है जिसके बीच २ कई एक नोकीली पहाड़ियां हैं—इसकी दक्षिण पूरब की सीमा अरवली पर्वत है उत्तर की ओर यह देश ढालू ऊंची नीची मरू भूमि है जो दूर से पथिक को पानी से भरा हुआ समुद्र का भ्रम दिलाती है—वर्षा यहां बहुत कम होती है—मारवाड़ को दो छोटे और बड़े हिस्सों में विभाग करते हुये लूनी नदी अजमीर की झील से निकली है—और लूनी इसका नाम सरस्वती के संगम के उपरान्त पड़ा जो पुष्कर झील से निकली है—इसके कछारों में बहुधा कुआयें खुदी हुई हैं जिससे उन ज़िलों की सैलाबी को बहुत फाइदा होता है—नदी का पानी बहुधा खारी है किन्तु कुआयें जो इसके कछारों में खुदी हुई हैं उनका पानी नदी के पानी से मीठा है—सांभर की प्रसिद्ध झील मारवाड़ और जैपूर की सरहद्द के बीच में है—और २ झीलें जोधपुर के राज्य में हैं जिसमें बहुत अधिक नोन पैदा होता है—दाल गेहूं जवा बाजरा इत्यादि की यहां अच्छी फसल होती है—लूनी के कछारों में गरमी के दिनों में तरबूज बहुत बड़े २ अधिक पैदा होते हैं—जैनी यहां भी बहुत हैं और बड़े धनी हैं यहां के मारवाड़ी बनिये बहुधा बड़े धनी और रोजगारी होते हैं जो सिवाय हिन्दुस्तान के चीन बरमा रंगून और सीलोन और विलाइत तक फैले हुये हैं—कलकत्ता और

बंबई में तो आधे रोज़गारी माड़वारी हैं तो आधे में और सब पारसी भाटिये लुहाने यहूदी ईरानी आदि हैं—रोज़गार में एका इन माड़वारियों में बहुत है जिस्से दूसरा कोई इन के मुकाबिले पार नहीं पा सकता—आधे से अधिक माड़वारी सराओगी या ओसवाल होंगे—जोधपुर में पगड़ी और पीतल के बर्तन अच्छे बनते हैं और दूर २ जाते हैं—यहां के राठौर राजपूत सूर्यवंशी क्षत्रियों में श्री रामचन्द्र से अपने को परम्परा प्राप्त मानते हैं सन् ११९४ ईस्वी में कन्नौज के आखिरी राठौर राजा शिवाजी के पौत्र पहले पहल कन्नौज से मारवाड़ में जा बसे और मानद्वार को अपनी राजधानी किया—१५६१ ईस्वी में अकबर ने मारवाड़ को आक्रमण किया उपरान्त महराठों ने इसे कई बार लूटा सेन्धिया ६ लाख वार्षिक कर जोधपुर की रियासत से लेते रहे—१८१८ ईस्वी में अंगरेज़ी गवर्नमेंट के साथ सन्धि होने से यह नित्य के लूटपाट के क्लेश से मुक्त हुआ—और तब से आज तक यह घराना बराबर अपनी सब तरह की उन्नति कर रहा है—राजभर में ५ बड़े दवाखाने हैं जिन में महाराजा साहब की ओर से असमर्थ और गरीबों को दवाइयां दी जाती हैं—राजधानी जोधपुर में दो बड़े स्कूल हैं एक में केवल ठाकुर और राजवंश के नवयुवक पढ़ते हैं दूसरा सर्वसाधारण की शिक्षा के लिये से—राजधानी में तालीम की बड़ी तरक्की देखी जाती है सिवाय इस्के महाराजा के निज खर्च से राजभर में ५ स्कूल और भी हैं—मारवाड़ी जो एक प्रकार की हिन्दी ही है यहां बोली जाती है—बड़े २ गांव और कस्बों में जैनियों के स्थापित पाठशाले भी हैं जिन्में जैनमत के गुरु या जैनसंन्यासी अपने धर्म की बातें सिखलाते हैं—राजपुताना मालवा स्टेटरेलवे से एक शाख रेल की महाराज के खर्च से राजधानी तक गई है—१४५९ ईस्वी में महाराज जोधासिंह ने जोधपुर बसाया और मानद्वार से हटाय इसी को अपनी राजधानी किया—यहां बड़ा रमणीक मज़बूत और देखने योग्य स्थान किला है जो निराले बकुले मैदान में बनाया गया है किले के भीतर महाराज के रहने की महले हैं शहर के चारोओर ६ मील के गिर्द में दीवार दिवाली है जिस्में ठौर २ सब मिलाय ७० फाटक हैं—सिवाय कई एक मन्दिर और तालाबों के पत्थर के बने संगीन महाजन और ठाकुरों के भी बहुत से मकान हैं—१८९१ ई० की मर्दुमशुमारी में इस्की आबादी ६२००० आदमी की गिनी गई थी—शहर से ३ मील उत्तर पुरानी राजधानी मानद्वार के उजाड़ खंडहर

हैं—एक रेल जोधपुर से बीकानेर को दोनो रियासतों के खर्च से बन रही है जिस्के बनजाने पर दोनो राज को आपस में तिजारत का बड़ा फाइदा है—यह राज्य विस्तार में २५० मील लम्बा और १५० मील के अनुमान चौड़ा है यह देश मरुभूमिमय है इसी से इसका मारवाड़ नाम पड़ा है—जैसा उदयपुर में लोहा तांबा जस्ता और गन्धक की खान है वैसा ही शीसा और संगमर्मर की खान यहां भी है—मारवाड़ में ऊंट और बैल बहुत अच्छे होते हैं दो सौ रुपये तक की बैल की जोड़ी यहां मिलती हैं—ऊंट यहां वालों के लिये एक बड़ी नियामत है सवारी की कौन कहे बहुधा हल में भी ऊट को जोतते हैं लोग यहां अफीम बहुत खाते हैं पान इलाइची की जगह मेहमानदारी और आतिथ्यसत्कार का शिष्टाचार अफीम की गोलियों से करते हैं—जन संख्या में १५ लाख के अनुमान यहां हिन्दू हैं १८६००० मुसलमान और १७२००० जैनी हैं—गांव के लोग झोपड़ियों में रहते हैं गांव चारोओर कटीले पेड़ों से रूंधा रहता है जिस्में जंगली जानवर या चोर ठग भीतर न जा सकें—अकबर ने हिन्दुओं को मिला रखने की जो नीति चलाई थी वह उस्के पुत्र जहांगीर और पौत्र शाहजहां के समय तक बराबर चली गई एक उदैपुर के घराने को छोड़ जोधपुर जैपुर तथा और २ राजपूत राजा सब मुगलों के बड़े भारी सहायक रहे किन्तु औरंगज़ेब ने उस पलिसी को तोड़ दिया और इन राजपूतों को बहुत सताने लगा तब राजपुताने के सब रजवाड़े उस्के शत्रु हो गये और मुगल घराने की सलतनत देखते देखते छिन्न भिन्न हो गई—महाराज जसवन्तसिंह इस घराने में बड़े नामी और बीर पुरुष हुये हैं और दिल्ली दरबार के अमीरों में एक यह भी थे—महाराजा जसवन्तसिंह जिस मुहिम पर भेजे गये वहीं विजयी हुये यदि औरङ्गज़ेब जसवन्त और जयसिंह से राजपूत बीरों की भरपूर कदर करता रहता जैसा उस्के बाप शाहजहां और दादा जहांगीर करते रहे तो कभी सम्भव था कि मुगलानी सलतनत हिन्दुस्तान से टारे टरती—अब इस समय महाराज सर जसवन्तसिंह बहादुर जी—सी—एस—आई—राज करते हैं और इन के प्रधान मन्त्री सर प्रतापसिंह बहादुर हैं महाराजा साहब के छोटे भाई हैं हाल में विलाइत गये थे और राज का बहुत उत्तम प्रबन्ध कर रहे हैं—इस समय जो कुछ तरक्की जोधपुर और जयपुर की रियासतों में है वैसी राजपुताना की किसी रियासत में नहीं है—

जयपुर ॥

राजपुताने की रियासतों में जयपूर सब से अधिक उर्वरा और आबाद है और राजपुताना के उत्तर स्थित है—पूरब की ओर इसके भरतपूर के इलाके हैं—पश्चिम की ओर अजमीर के सरकारी ज़िले किशनगढ़ और जोधपुर की रियासतें हैं—उत्तर और दक्षिण टोक बूंदी कोटा करौली बीकानेर और अलवर की रियासतें हैं—यह राज्य लम्बाई में १७५ मील और चौड़ाई में १०० मील है मील मुरब्बा १४४६५ है—सन् १८९१ ई० की मरदुमशुमारी में इस राजकी जनसंख्या २,८२४,४८० थी—इसकी कुल मालगुज़ारी ८५ लाख है उसमें १९ लाख ज़ागीरदारों में बंटी है ४ लाख कृष्णार्पण है ६१ लाख महाराज के खज़ाने में आता है—धरती यहां की रेतली और बहुधा लोनी है—देश यह समथर दक्षिण पूरब की पृथ्वी बड़ी ही उर्वरा है—उत्तरभाग में शेखावाटी का इलाका रेगिस्तान है और कई एक छोटी २ पहाड़ियां भी हैं—आब हवा यहां की बहुत अच्छी और नीरोग है तांबा और फिटकरी की खान भी इसमें है—जयपुर की अशरफियां निहायत चोखे सोने की होती हैं—सब से बड़ी नदी बनास है दूसरी बाणगङ्गा है जो यमुना में मिली है—सांभर झील यहां की प्रधान झील है—यह देश प्राचीन समय में विराट राजा की भूमि थी—बबूल और नीम यहां बहुत हैं जङ्गलों में खैर भी होता है—गेहूं जवा बाजरा ऊख कपास अफीम तेलहन और तमाखू यहां की पैदावरी है—५० हज़ार का साल महाराजा का आवपाशी में खर्च होता है—राज्य में २३ लाख के ऊपर हिन्दू बसते हैं ५० हज़ार के अनुमान जैन होंगे २ लाख के लगभग मुसलमान हैं—राजपूत जाट और मारवाड़ी बनिये ब्राह्मणों में गौड़ यहां बहुत हैं हरियाना देश जयपूर के राज्य से मिला हुआ अग्रवाल बनियों का उत्पत्ति स्थान है—शरीफ महाजनों की बड़ी२ कोठियां यहां बहुत हैं शङ्गमर्मर का काम मूरतें आदि यहां बहुत उमदा बनती हैं—राजा श्रीरामचन्द्र के वंश परम्पार से अपना पता लगाते हैं— विक्रमाब्द के ९१० में धौलाराव ने जयपुर राज्य की बुनियाद डाली अम्बर या अमरपुर इसकी प्राचीन राजधानी थी १७२८ ईस्वी में महाराज जयसिंह सवाई ने अपने नाम का जयपुर या जयनगर बसाया १८९१ में इसकी जनसंख्या १६०,००० थी—शहर पक्की शहरपनाह के भीतर बसा हुआ है अपने किला और ढंग का

निराला है सिवाय दक्षिण के तीन ओर पहाड़ों से घिरा है और उन पहाड़ों पर किले बने हुये हैं दक्षिण ओर भी जिधर मैदान पड़ता है थोड़ी दूर पर मोतीडूंगरी का किला बड़ा मज़बूत है—शहर ३ मील लम्बा २ मील चौड़ा बालू के समधर मैदान में बसा है—बाज़ार चौपड़ का बहुत चौड़ा और सीधा चला गया है सकेती गलियां भी ऐसी कोई नहीं हैं जिस्में गाड़ी न जा सके—दूकाने ऊंची और एकसी घर सब गुम्बज़दार जिस पर सुनहरे काम की कलसियां लगी हुई अस्तरकारी उन पर ऐसी सुफैद साफ और चमकदार कि शङ्गमर्मर रद्द है—सीधी कतार में लैनडोरी छोड़ कर बनाई गई हैं ठाकुर द्वारे कई एक बड़ी लागत के इस्में हैं गोविन्ददेव जी का मन्दिर सब में प्रधान है—महाराजा साहब के महल साफ सुथरे और चौड़े मुसाफिरों को अचरज पैदा करते हैं—गोविन्ददेव जी का मन्दिर भी उन्ही महलों के बीच में है—सुनते हैं महाराज जयसिंह ने इटली से कारीगर बुलाय जयपुर बनवाया था कई एक बाग चिड़ियाखाना अजायब घर यहां का आर्टस्कूल सब देखने योग्य स्थान हैं—औरतें यहां की हसीन तो नहीं होतीं पर शौकीन और मर्दों को फंसा लेने में बड़ी चतुर—बाज़ारों में दल्लालों की बड़ी कसरत प्रायः बड़े झूठे बाहरी मुसाफिरों के वस्त्रमोचन में बड़े प्रवीण घर और दूकानों पर कबूतरों के झुण्ड के झुण्ड उड़ा करते हैं—बरसात में जयपुर बड़े बहार और आराम की जगह है चाहो कितना ही पानी बरसे बालू में सब सोख जाता है—कीचड़ कहीं नाम को नहीं नंगे पांव शहर भर में घूम आइये मानो फर्श पर चल रहे हैं—गरमी में यह बालू तपता भी ऐसा है कि एड़ी तक झुलस जाती है—बरसात में यहां कई स्थान ऐसे हैं जो बड़े रमणीक सोहावने और सैर के लायक हैं—शहर से ४ मील पहाड़ों के बीच आमेर इसकी पुरानी राजधानी है—यहां भी महाराज का शीशमहल बड़ा उत्तम बना है किला आमेर का पहाड़ी पर बड़ा मज़बूत है—परदेशी कोई उस किले के भीतर नहीं जाने पाता साहब लोगों ने भी अब तक उस किले को नहीं देखा—खूंटेदार पगड़ी देने की यहां बड़ी रिवाज़ है नौकर से लेकर मालिक तक सब वही एक फेशन की पगड़ी बांधते हैं—शहर की खास २ गलियां फर्शदार हैं गेस की रोशनी शहर भर में है—महाराज की महलें बीचोबीच में हैं—ड्रेन और पानी की कल का प्रबन्ध यहां बहुत अच्छा है गरीब अमीर सब को मुफ्त में पानी मिलता है एक पैसा भी महसूल

नहीं लिया जाता–४ मील की दूरी से स्टीमइंजीन के द्वारा साफ हो एक नदी से पानी आता है–क्या कहें महाराजा ने कालब्रिन साहब की सलाह न ली कि ७॥) रुपैया सैकड़ा आमदनी पर पानी का टैक्स चाँक देते और विलायत के लोहा लक्कड़ से अपना पेट भी भर लेते–शिक्षा विभाग यहां बड़ी उन्नति पर है तालीम की तरक्की जैसी इस राज्य में है वैसी राजपुताने की किसी रियासत में नहीं है–राज्य भर में छोटे बड़े ४१० स्कूल हैं ४५ स्कूल ऐसे हैं जिन का खर्च महाराज के खज़ाने से दिया जाता है–स्त्रीशिक्षा में भी कई हज़ार रुपया खर्च किया जाता है सन् ८२ ईस्वी में ६१५० रुपया खर्च हुआ महाराज की ओर से जो कालेज है उसमें ६०० के अनुमान छात्र पढ़ते हैं–मेओ अस्पताल बहुत उमदी इमारत बनी है–रामनिवास बाग हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध बगीचों में एक है–महाराज जैसिंह जो शिल्प और कारीगरी की उन्नति कराने में मानो दूसरे विश्वकर्मा थे १७२८ ईस्वी में वेधशाला अपने शहर में बनवाई और एक २ वेधशाला दिल्ली उज्जैन मथुरा और बनारस में भी बनवाई बनारस का मान मन्दिर इन्ही का बनवाया है जो काशी के कई एक प्रसिद्ध स्थानों में एक है–जैसिंह ब्रजभाषा के बड़े रसिक थे भाषा के कवियों की बड़ी कदर करते थे बिहारी कवि इन्ही के समय में हुये–सुनते हैं एक दोहे का एक अशरफी देते थे–सतसई के ७०० दोहे एक २ अमूल्य रत्न के समान हैं––सूर और तुलसी के उपरान्त बिहारी ही भाषा के कवियों की श्रेणी में रखने लायक हैं–कितने लोग केशव को तुलसी के उपरान्त रखते हैं पर केशव का क्लिष्ट काव्य बिहारी की प्रसाद गुणविशिष्ट सरस कविता के मुकाबिले मिसरी और दाख की मिठाई के अन्तर की भांत है–मिसरी के टोरों को कूचने में दांत को कितना क्लेश उठाना पड़ता है दाख जीभ पर रक्खा कि घुल कर गले के नीचे गया–जैपुर के महाराज कच्छवाहा क्षत्री हैं मानसिंह इस राजवंश में बड़े प्रतापी और बीर हुये–सिन्धुपार इन्हों ने अफगान और पठानों के मुकाबिले कई मुहिम सर की अकबर के बड़े कृपापात्र थे–सुनते हैं मानसिंह का नाम सुन अफगनान मुसलमानों की स्त्रियों का गर्भपात हो जाता था इस घराने को बादशाह की ओर से सवाई का खिताब मिला है––सन् ५७ के बलवे में महाराजा सवाई रामसिंह ने सर्कार की सब तरह पर सहायता की और दूसरी २ खैरख्वाही की बातों से महाराज

रामसिंह को सलामी २१ तोप की कर दी गई और जागीर इनाम में दी गई—इस समय महाराज सवाई माधोसिंह बहादुर जी—सी—एस—आई राज करते हैं—नौ जवान ३० वर्ष की उमर है राजकाज में इन की पटुबुद्धि से मालूम होता है कि जैपुर रियासत की दिन २ तरक्की होती रहेगी—किले इस राज में बहुत हैं सब से प्रसिद्ध किला रनथंभोर "रणस्तंभ" है राजधानी से ७५ मील अग्निकोण को यह किला स्थित है—ऐतिहासिक दृश्य की प्रधानभूमि है—चौहान क्षत्री हम्मीर की वीरता का प्रकाशक चिह्न रणस्तंभ इसका बहुत सार्थक नाम है—इसका विशेष वृत्तान्त हम आगामी अंक में प्रकाश करेंगे—हमीर राहिसा तथा जैनमतावलम्बी नयचन्द्रसूरिकृत हम्मीरमहाकाव्य में हमीर का पूरा हाल दिया गया है सिवाय इसके "तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार" इत्यादि कहावतों को कौन नहीं जानता—श्लोक भी है—

सत्वैकवृत्तेः किल यस्य राज्यश्रियो विलासा अपि जीवितं च।
शकायपुत्रीं शरणागताश्चाऽप्रयच्छतः किं तृणमप्यभूवन् ॥

इत्यादि प्रशंसा के पद्य से प्रगट है कि हमीर का मनोरंजक वृत्तान्त अवश्य हमारे पढ़ने वालों को रोचक होगा किन्तु अब इस अङ्क में अवकाश न रहने से हम दूसरी संख्या के लिये रख छोड़ते हैं पढ़ने वालों की लौ लगी रहे तो अब न सही फिर के—शेष—

बाल्यविवाह और हमारी अन्धीसमाज

इसके बारे में कई बार कई तरह पर जिसे जो कुछ उपज मन में आई लिखने वाले लिख चुके हैं यहां तक कि इस विषय पर अब कलम उठाना निरा पिष्टपेषण है—किन्तु किसी के चित्त पर इसका कुछ असर हुआ हो सौ में हज़ार में कोई एक भी नहीं पाये जाते क्या पढ़ क्या अपढ़ क्या सभ्य क्या असभ्य इस बुराई को यथास्थित रखने में सब एकसे हैं—इस लिये इसमें संशोधन के लिये उन से कुछ कहना वैसा ही है कि अन्धे के आगे रोवै अपना दीदा खोवै—अस्तु अपढ़ असभ्यों से तो हमें कुछ कहना ही नहीं है न हमारा मतलब है कि हम उन्हे कुंआ में गिराने से रोक स्वर्ग में लेजाय बैठाय दें किन्तु हमारी निराली

पालसी हमें यही सिखाये देती है कि ऐसे लोग जो कुआ में गिरते हों तो उन्हे जाय अंधेरे खन्धक में गेर दें जिस्में सौजन्म तक वे उस्में से न निकल सकें बरन हम को कहना उन से है जो खुदगरज़ी और नुमाइश के पुतले हैं—बाहर ऐसे २ लेक्चर झाड़ते हैं कि मानो देश अब उन्नति के शिखर पर चढ़गया यावत् क्लेश और दरिद्र दूर हुये धरती सोने फूल फूलने लगी सात स्वर्ग अपवर्ग सुख अब हमारे आगे पानी भरता है किन्तु यह सब तभी तक जब तक हज़ारों आडियेन्स के आगे उन की वक्तृता की बाबदूकता नहीं समाप्त हुई—घर में वही दुःख रोना कि बतसिया सात बरष की हो गई अभी तक बर का ठीक न भा मुनीआ बारह बरष का भा कहूं की सगाई पक्की न भई—बाबू साहब के लेक्चर के समय के खयाल न जानिये किस तहखाने में बन्द कर दिये गये कि इन बातों पर ज़रा हीलते भी नहीं बल्कि जैसा कुछ हौसिला इन को दूधमुहे बालकों के ब्याहने का है वैसा हमारे उन अपढ़ पुराने खयाल वालों को शायद न होगा और क्यों न हो क्या बाबू साहब उस अन्धीसमाज के बाहर हैं जहां राधाकृष्ण की जोड़ी को ब्याह देना आंख के सुख को सीमा है—बरन घर में चिराग जलाय तब मसजिद में जलाना यह माकूला हमारे पण्डित जी साहब या बाबू जी साहब का नहीं है—वे पोलिटिकल तरक्की को श्रीवत्स बात मानते हैं—घर में कोई देखने आता है कि हम किस तरह रहते हैं कौन २ कोढ हमारे पीछे लगे हैं जिन्हे बिना साफ किये आगे बढ़ने की चेष्टा ऊषर की वर्षा के समान है—शोक!! जिस समाज के पढ़े लिखे लोगों की समाजशोधन के सम्बन्ध में अनपेक्षा है वहां हम अपनी तरक्की की क्या उम्मैद करसक्ते हैं—अस्तु बहुत बक गये अब और कुछ कहना छोटे मुह बड़ी बात है आशा है आप इसे बालभाषित समझ माफ करेंगे—

आप का सुधार चाहने वाला—एस—डी—पी—

क्यू—आर—कुवार या क्वार—

—वाह! रे अंगरेज़ी तेरी भी क्या ही अनोखी महिमा है कि तू हर एक बात में टांग अड़ाये रहती है हमारी बोल में चाल में पहनाव में रहन में सहन में

रंग ढंग में कोई बात बच न रही जिस्में तूने अपना पल्ला न फैला रक्खा हो अब हमारे महीने के नाम में भी तू ने आकर टांग अड़ाया दालभात में मूसलचन्द बन आ कूदी—क्यू—आर—ये अंगरेज़ी वर्णमाला के दो अक्षर क्या ही पास २ रक्खे गये हैं कि जिन को हम मिला के कहैं तो थोड़े ही हेरफेर में यह कुवार बन जाता है—जैसा क्यू में य् का निपात के द्वारा लोप कर दें और उ को भिन्न स्वरवर्ण को परे रहते व् में बदल क् और व् दोनों को आ में मिला दें तो क्वार सिद्ध हो गया शब्द तो बन गया साधनिका भी सटीक बैठ गई तब अर्थ की फिकिर हुई सोचते २ मन में आया कि क्यू "क्विक्" का लघु किया गया है जिस्के माने जल्द या तेज़ हैं ॰ वार ॰ के माने युद्ध के हैं अर्थात् तेज़ या जल्द लड़ाई—क्वार के दोनों पाख में दो जुदे२ किस्म की लड़ाई लड़ी जाती हैं—पहले पक्ष में ब्राह्मणों के पेट की पूरी कचोरी दुधलपसी के साथ तेज़लड़ाई ठनती है पेट कहता जाता है बस यहां अब ठांव नहीं है पर चटोरी जीभ नहीं मानती उस्में ठूंसती चली जाती है और पुकार २ उसे चिताती है—

"परान्नं दुर्लभं लोके शरीरं तु पुनः पुनः"

दूसरे पाख में राम रावण के युद्ध की धूम मचती है बड़े २ नगरों में तो इस्का अभिनय होता ही है दिहातों के छोटे २ कस्बों में भी रामलीला विस्तार के साथ की जाती है—या हमारे शहर में दलाल और बनियों के दोनों दल की तेज़ लड़ाई ठनती है दोनों दलवाले अपना २ वैभवोन्माद और शानशौकत देख लाने में जहां तक बन पड़ता है पीछे पांव नहीं रखते—क्वार का दूसरा नाम आश्विन भी है आश्विन अश्व शब्द से बना है अश्व के माने घोड़े के हैं घोड़े की शीघ्रगति प्रसिद्ध ही है यहां पितृपक्ष में ब्राह्मण की शीघ्रगति घोड़े को मात करती है जहां यजमान के घर से निमन्त्रण आया कि घोड़े से जा कूदे—या इस्का नाम आश्विन इसलिये पड़ा कि पहिले पाख के १५ दिन ऐसा जल्द बीत जाते हैं मालूम नहीं होता कि कब पाख आरम्भ हुआ और कब समाप्त होगया—पड़ीवा लगी नहीं कि चट पितर सौदनी आपहुंची—भोर हुआ कि सीधा और पैसा बटोरते २ सांझ होगई कुल १२ घंटे का दिन यजमान ७२ गण्डा बारह छांग बहत्तर—की घण्टे छः गण्डा पड़े कहां तक कलेदराज़ी को काम में लावें और लपसी सा

मन्त्र चाटैं–इधर दूसरा पाख भी नित्य मेले तमाशों में ऐसा चट बीत जाता है कि आश्विन यह नाम इस महीने का सब तरह पर अर्थानुगत मालूम होता है–यह एक दूसरा छोटासा चुटकला आप के अर्पण है कृपा कर मेरी बालबुद्धि पर आप मुझे माफ करेंगे और इसे निरा रद्दी न समझ एक बार पढ़ मेरे उत्साह को अधिक बढ़ावें गे–

वही–एम्–डी–पी–

सौ अजान एक सुजान ॥

१२ प्रस्ताव ॥

छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति

मेरे मन कुछ और है कर्ता के कुछ और–

सब लोग अपनी २ पसन्द के माफिक स्वच्छन्द आमोद प्रमोद में लगे हुये थे–एक ओर प्याले पर प्याला चल रहा था–दूसरी ओर पी छक्के का शगल शुरु था–एक ओर सारंगी और सरोद का सुर मिलाया जाता था–दूसरी ओर घुमा और आशिकतन फूलने फूल रहे थे–कि अचानक इस खबर के ज़ाहिर होते कानो कान सब आपस में कहने लगे–एक बारगी सन्नाटा छा गया नन्दू का चेहरा ज़र्द पड़ गया वहां से निकल जाने की ततबीर सोचने लगा–दोनों बाबू भी घबड़ा गये और इस खयाल में थे कि नन्दू उन का दिली खैरख्वाह है अपने ऊपर सब ओढ़ले गा उन दोनों पर आंच न आवेगी–इधर नन्दू इस फिकिर में लगा कि जिस इलजाम पर वारेंट आया है वह इन बाबुओं पर थाप दें तो हम साफ बरी रहें सच है "आपत्सु मित्रं जानीयात्" और इसी यत्न में हुआ कि किसी तरह यहां से चंपत हों–अस्तु और सब लोग किसी न किसी बहाने वहां से खिसकने लगे पर नन्दू की कोई घात निकलने की नहीं लगती थी इतने में घर से एक दूसरी खबर आई सरस्वती बहुत बीमार हो गई है उलटी सांस चल रही है जल्दी घर चलो–

छोटे बाबू की दो वर्ष की लड़की सरस्वती दोनों बाबुओं को बहुत हिली थी घर में कोई छोटा लड़का न रहने से सब उसे बहुत प्यार करते थे और घर भर की खिलौना थी–बाबू को दोचन्द तरद्दुद में पड़े देख सब लोग बड़े

फिकिर में हुये किन्तु नन्दू के आकार और चेष्टा से मालूम होता था कि इसे बाबुओं के साथ कोई सहानुभूति नहीं है केवल अपने बचाव के प्रयत्न में अलबत्ता लग रहा है—पंचानन जो कभी बाबुओं के किसी जल से और नाच रंग में आज तक शरीक न हुआ था और बाबू के दल के लोग जिन्हें बाबू अपने दिली दोस्त समझते थे उन से इसकी ज़ियादह रब्तज़ब्त न रहने से अच्छी तरह उन के गुप्त चरित्र और छिपे चालचलन से वाकिफ न हो नन्दू की उस समय की रुखाई से अचरज में आया—यद्यपि पंचानन तरद्दुद और फिकिर से कोसों दूर हटता था पर इस समय बाबुओं को अत्यन्त उदास व्याकुल और चिन्ता मग्न देख यह भी सन्नहटे में आ गया—कुछ इस कारण भी कि चन्दू जिसे यह सब से अधिक मानता था उसका सेठ के घराने से बहुत लगाव समझ दोनों के साथ इसे हमदर्दी हो आई और नन्दू पर इसे क्रोध भी आया कि यह धूर्त नमकहराम इस मुसीबत और चबकुलिश से किसी तरह रिहाई न पा सके और इसके फसाने की फिकिर में हुआ—पंचानन मुनसफी तक की वकीलत की सनद हासिल किये था इस लिये कानून की बारीकियों को भी भरपूर समझता था—चन्दू को बातों में फसाय बाबुओं को आंख के इशारे बाग के पिछवाड़े की खिरकी से बाहर निकाल दिया—

पंचानन—नन्दू से—बाबू नन्दलाल आप ऐसे सयाने कौआ इन बगुलों के दल में कैसे फसे? आप को तो अपनी चालाकी का दावा था?—क्या खूब फसा कफस में यह पुराना चग़दूल—लगी गुलशन की हवा दुम का हिलाना गया भूल—सच है सयाना कौआ ज़रूर गलीज़ खाता है—खैर अब बतलाओ उस्तादों को क्या नज़र करोगे हम इसमें पैरवी कर तुम्हें इस मुसीबत से रिहा करें—

नन्दू—आप यकीन न लावेंगे मेरा इसमें कोई कुसूर नहीं है इन बाबुओं ने मुझे भी फसाय खराब किया—

पंचानन—जी! आप ठीक कह रहे हैं—भला किसे शामत सवार है कि आप की बात पर यकीन न लावे—हम क्या हमारे बाप दादा अपने २ वक्त में सब आप पर यकीन लाये हुये थे—वल्लाह ऐसे नये नवी पर यकीन जो न लाया तो कौन दूसरे पैगम्बर आवेंगे जो हम ऐसे गुनहगारों का गुनह माफ करेंगे—हाल में हमारे प्रपितामह की भेजी हुई यहां से हमारे नाम की एक चिट्ठी आई है कि बाबू नन्दलाल जो कहें उसमें एक शोशा भी गलत न समझो—तब भला मुमकिन है कि हम आप की बात का यकीन न करें—

नन्दू—आप तो हमें ठट्ठों में उड़ाते हैं यह मौका दिल्लगी का नहीं है—

पंचानन—जी नहीं दिल्लगी की इसमें कौनसी बात है उस वक्त दिल्लगी अलबत्ता थी जब खूब गुलछर्रे उड़े—खैर बाबुओं के बवाल की सूरत बिलफेल किसी न किसी ढंग से हो जायगी—बाबू दोनों चंपत भी हो गये अब आप अपनी कहिये—

नन्दू—(सब ओर देख) (स्वगत) हाय! बाबू क्या चले गये तो अब यह सब बला हमी को सहना पड़ेगा—पंचानन चलाकी में हम से भी दना ज़ाहिर होता है और हम को फसाने के लिये इस ने मन में गांठ लिया है तो अब हमारा निस्तार कठिन मालूम होता है खैर अब इसी की खुशामद करें (प्रगट) बाबू पंचानन आप चाहें तो मुझे भी यहां से निकाल सक्ते हैं मैं आप का बड़ा एहसानमन्द हूंगा—

पंचानन—आप कुछ सन्देह न करें मैं आप की भरपूर खबर लूंगा (वारंट वालों को बुला कर) बाबू ऋद्धिनाथ तो यहां नहीं हैं और यहां आये भी नहीं—बाबू नन्दलाल अलबत्ता हाज़िर हैं इन्ही से बुद्धुदास का भी पता आप को लग जायगा (नन्दू से) बाबू नन्दलाल अब कहिये जो कुछ आप को कहना हो—बुद्धुदास के गिरफ्तारी के ज़िम्मेदार भी आप ही हैं—(दारोगा से) दारोगा जी साहब बाबू नन्दलाल बड़े रईस हैं इन के साथ किसी तरह की रियायत हो सक्ती हो तो मैं सिफारिस करता हूं कर दीजिये—क्यों जी बाबू नन्दलाल यही आप का मतलब न था कि मैं अपनी ओर से आप के लिये न चूकूं—खैर मैं अब जाता हूं दारोगा साहब और आप दोनों आपस में यह निपटते रहिये—

हम ने नन्दू ऐसे कुचरित्र दुरात्मा का यहां इशारामात्र देदिया पहले के पले निकाल पढ़ने वाले भी इससे निपट लें और इसके चालचलन से परिचित हो जांय तब हम आगे बढ़ेंगे—दूसरे यह कि इस पंचानन को भी आप न भूलिये यह हमारे उस सुजान का बड़ा भारी साथी है ज्यों २ आप चलेंगे कथानक के भेद खोलने में यह बड़ा काम देगा—शेष—

ब्राह्मणसंपादक पं० प्रतापनारायण—

नागरी हिन्दी के संकुचित समाज में ऐसा कौन होगा जिसे कान्यकुब्जकुलकेतु पण्डित प्रताप मिश्र का सन्ताप न व्यापा हो—प्रातः स्मरणीय बाबू हरिश्चन्द्र को जो दीन हिन्दी का जन्मदाता कहें तो प्रतापमिश्र को निःसन्देह उस स्तनन्धया दूध मुही बालिका का पालनपोषणकर्त्ता कहना ही पड़ेगा क्योंकि

हरिश्चन्द्र के उपरान्त इसे अनेक रोग दोष से सर्वथा नष्ट न हो जाने से बचा रखने वाले यही देख पड़े और गद्यपद्यमय अपने सरस लेख से यत्किञ्चित् इसका भण्डार उसी तरह पर भरते रहे जिस ढंग से उक्त बाबू साहब ने आरंभ किया था—पं०—प्रतापनारायण में बड़ी तारीफ की बात यह थी कि ये निस्पृह और निज लाभ की किञ्चिन्मात्र इच्छा न रख हिन्दी की उन्नति में लगे हुये थे जो बात इस समय के स्वार्थ तत्पर लोगों की चलन के विरुद्ध है—देखते हैं जिन्हें कुछ भी गूं गां करने आगया टूटे फूटे दो चार जुमले लिखने लायक हो गये हैं वे केवल रुपये कमाने की किकिर में तत्पर हुये हैं किन्तु हिन्दी की इस कदर चाह नहीं कि इसके द्वारा कुल फायदे की सूरत निकले तो हिन्दी लेखकों की फिहिरिश्त में नाम ही सही—चार पन्ने की अण्डबण्ड खुराफात से भरी दो चार किताब बनाय मुसन्निफ या ग्रन्थकर्त्ता अपने को मान बैठे—ग्रन्थों के लम्बे चौड़े नामों से अखबारों के कालम के कालम लेकने लगे—किसी को अपना जीवनचरित्र लिखने का हौसिला चर्राया कोई समाज या मण्डल के प्रधान बन रुपया और नाम दोनों के बटोरने में तत्पर हुये—रद्दी अखबारों की एडीटरी तो कुछ बात ही नहीं है "तेली भुजवा कोहिन हाट गई बजाजी बारह बाट" अस्तु हमारे मित्र जी में यह कोई बात न थी यह आत्मत्याग मिश्रित उदारभाव के नमूना थे—हिन्दी साहित्यार्णव के बढ़ाने वाले थे—विमल सौहार्दभाव के आदर्श थे—ऐसे सत्पुरुष का अल्पायु होना निःसन्देह हमारी आर्यभाषा का अभाग्य नहीं तो इसे फिर क्या कहना चाहिये—धन्य हैं ऐसे बड़भागी पुरुष जिन के लिये आज इतने लोग शोकप्रकाश कर रहे हैं—बड़भागी हमने इस लिये इन्हें कहा कि साल में न जानिये कितने बड़े से बड़े धनी और ऊंचे पद वाले भी अपने असारजीवन से गुज़र जाते हैं किसी को खबर तक नहीं होती कि कब जन्मे कब राकस भये—प्रतापनिश्र परमनिष्किञ्चन जनसमाज में किसी ऊंचे पद पर नहीं पहुंचे हुये थे जीते जी कोई इन्हें जानता भी न था अब उन के लिये लोग इतना शोक प्रगट कर रहे हैं सफ़हे के सफहे इन के नाम के सियाही से रंग दिये गये यहां तक कि कोई नई युक्ति न बच रही कि हम उसे काम में लाते—जिन्हों ने पहिले इन का शोकसंवाद लिखा वे मीर रहे हमें फरमी होना पड़ा अब इन का जीवनचरित्र लिखने की तैयारी हो रही है सच है "कद्र मर्दुम बाद मरदुम" बड़भागी होने के लिये और क्या चाहिये—ऐसे स्वर्गीय जीव

सदा अमर हैं—"स जीवति यशो यस्य कीर्त्तिर्यस्य स जीवति। अयशोऽकीर्त्तिसंयुक्तो जीवन्नपि मृतोपमः"—एक हम ऐसे नार्किकों का जीवन है कि निस्सार भारभूत हो जीवन को ठेल रहे हैं और ज़िन्दगी अषाढ़ होगई काटे नहीं कटती—"काकोपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते" अस्तु—

प्राप्तग्रन्थ ॥

आह्लारामायण—उत्तर और किष्किन्धा काण्ड ॥

हेड पण्डित माडेल स्कूल जोरी ज़िलह हज़ारी बाग पं० चतुर्भुज मिश्र कृत खड्गविलास प्रेस बांकीपुर में मुद्रित—मूल्य ॥≡) उक्त पण्डित जी की कवित्वशक्ति का परिचय देने वाले इस ग्रन्थ को हम धन्यवादपूर्वक स्वीकार करते हैं इसके बारे में एक बार हम लिख चुके हैं इस लिये आह्लारामायण के सम्बन्ध में फिर कुछ लिखना केवल पिष्टपेषणमात्र है—

साहित्यलहरी सटीक ॥

श्रीसूरदासकृत साहित्यलहरी का तिलक—भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रसङ्कलित—हिन्दीभाषा के एकमात्र जीवनदाता क्षत्रियपत्रिका सम्पादक राजकुमार बाबू रामदीनसिंहप्रकाशित—बांकीपूर खड्गविलास प्रेस में मुद्रित मूल्य २) यह ग्रन्थ हमें बाबू रामदीनसिंह ने निज कृपापात्र समझ अर्पण किया है—सूरदास के दृष्टिकूट का भावार्थ इसमें बहुत सुगम किया गया है ॥

श्रीहरिश्चन्द्रकौमुदी—

विविधविषयभूषित मासिकपत्रिका क्षत्रियकुमार बाबू पंचमसिंह द्वारा संपादित—हाल में जो इसका नम्बर आषाढ और श्रावण का आया है निस्सन्देह चटकीला है—यदि बराबर इसके नम्बर ऐसे ही निकलते रहैं तो हिन्दी के साहित्य की यह पत्रिका एक अंग हो सकेगी—इसका एक लेख हम यहां उद्धृत करते हैं उसी से पढ़ने वालों को इसके लेख की टटोल हो जायगी—वार्षिक मूल्य १।) पता मेनेजर श्रीहरिश्चन्द्रपुस्तकालय जमोर ज़िलाह गया—

कंजूस मक्खी चूस ॥

भाई सुनो लक्ष्मी जी हम से ऐसी रीझी हैं कि हम निहाल हैं हमारे यहां लाखों रुपये तायखाने में पड़े हैं परन्तु हम उन्हें खोते खींसते नहीं बहुत से रुपये धरती माता की चौकसी में रख छोड़ा है हम मोटे से मोटा अन्न खाते हैं मोटे से मोटा कपड़ा पहिनते हैं चटक मटक हम पसंद नहीं करते इतर गुलाब के नाम से प्राणराम कांप उठते हैं मैला कपड़ा बदन पर पड़ा रहे मक्खी भूलती रहें कोई परवाह नहीं पर बाबू बनना तो हम महज़ खराब समझते हैं जब कभी हमारा मन रेवड़ी मलाई चाटने को चलता है रेशमी पट पहिनने को प्रबल होता है तब हम रुपये की झांकी कर लेते हैं बस हमारी भूख भाग जाती है सबप्रकार से मन तृप्त हो जाता है बस यही चाहता हूं "सूरत तेरी देखा करूं" और यही कलमा भी मुख से बार बार निकलता है—किसी को अपना पुत्र प्यारा होता है कोई अपनी स्त्री ही को गृहदेवता मानता है कोई अपने यार आशनाओं ही को सर्वस्व जानता है यहां तो प्यार करते हैं तो रुपये को पूजते हैं तो रुपये को—रुपये के सिवाय न तो किसी को यार समझते हैं न आशना क्योंकि यार आशना भी तो बहुधा इसी के लिये होते हैं हम तो "बाप सगो ना भैया। सब सों सगो रुपैया" यही मूल मन्त्र मानते हैं घर भर चाहे जलजाय स्त्री चाहे बिलगहो जाय पर हम अपने प्यारे धनको छिन भर के लिये भी अलग होना नहीं देख सक्ते हैं और सबतो दूर रहे यदि हमें कोई मार डालने

के लिये आवे तब भी "प्राण देहिं पै देहिं न पैसा,, फजूल खर्ची फक्कड़ों का काम है दानी मानी जन तो लक्ष्मी को गणिकाओं की भांति रखते हैं जो कोई चाह बाज़ आया तनिक हंसा हंसाया उस के संग कर दिया हम उसे कुल बधू के समान कोने में छिपाये रखते हैं भला कभी कोई परछाहीं तो देख ले इसी से तो लक्ष्मी भी हम से हित करती हैं कि हम उन की बेइज्जती नहीं करते अपना तो सिद्धान्त ही यह है "मरि जइबो खइबो न खबइबो,, पुरोहित जी हम से बहुधा कहा करते हैं कि "ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये कुछ पुण्य दान करो,, भला वह मूर्ख हैं या नहीं जब हम लक्ष्मी ही का सत्कार करते हैं तो लक्ष्मी पति भगवान् क्या हम से प्रसन्न नहीं होंगे ? जब मेम साहिबा हम से राज़ी हैं तो साहब बहादुर स्वयम् राज़ी हो जावेंगे फिर काहे के लिये पुण्यदान करें ! जो कहो कि दान से नामवरी होती है तो हम सैहकड़ों गालियां याचकों को दिया करते हैं इस लिये हम भी दाता हैं हमारा भी मानधाता के समान नाम होना चाहिये भेद केवल इतना ही है कि दाता लोग तो अपने हाथों से दान देते हैं हम मुह से (गालीप्रदान) करते हैं और भी अंगरेज़ी बाजों से एक बात गंव की सीख रक्खी है वह यह है कि कोई कैसा ही उपकार क्यों न करे हम केवल उस को थैंकस् दे देते हैं बस निप्टेरा हो गया दयानन्दियों का एक मत हम को बहुत पसंद है श्राद्ध करना गप्प है, ठीक है क्यों वृथा धन नष्ट करें इसी तरह से समस्त यज्ञों में हम को जप यज्ञ करना पसंद है समस्त धर्म्म कर्म में निराहार

उपवास अच्छा लगता है इस से ब्राह्मण लोग हम से चिढ़े रहते हैं प्रथम तो थोड़ा भोजन करने से हम कभी बीमार नहीं पड़ते यदि दैवयोग कभी पड़ भी गये तो लंघन करते हैं यह तो सभी जानते हैं कि "लंघनम् परमौषधिः„ इस हेतु से विचारे वैद्य भी हमारे पास नहीं फटकने पाते हैं बस हम तो इसी प्रकार धनसंचय करते हैं और इस से विपरीत कर्म को पाप समझते हैं क्योंकि जगत् पिता पुरातन पुरुष परमात्मा की स्त्री लक्ष्मी जब जगत् माता है तो फिर पुत्र को यह कब उचित है कि अपने सुख के लिये अपनी बूढ़ी माता को घर से बाहर निकाले या कष्ट दे ।—अर्थप्रेमी

दूध का दूध पानी का पानी ॥

स्वामी आत्माराम पर जो यहां के एक सम्पादक ने हतकइज़्ज़ती का अभियोग किया था और आत्माराम पर १००) जुर्माना नीचे की अदालत से किया गया था उसका निपटारा होगया आत्माराम निरपराधी ठहराये गये और जज्ज साहब ने जुर्माना फिरवा दिया—यह इन्साफ़ सब को पसन्द आया अभियोगकर्त्ता के मुकाबिले आत्माराम पर दण्ड के लिये सब लोग आहि २ कर रहे थे इस्का जो कुछ कारण हो—हम को भी—"यद्यपि का नो हानिः परकीयां रासभो चरति द्राक्षाम् । असमञ्जसमिति मत्वा तथापि नः खिद्यते चेतः „—

डइरेक्टर पवलिक इस्ट्रक्शन नेसफील्ड साहब की विदाई ॥

उक्त साहब बहादुर खूब मालामल होकर यहां से विदा हुये—लाख रुपये के करीब अपनी बनाई किताबों का सत्व "कापीराइट" साहब ने बेचा बस इसी से मालूम कर लेना चाहिये डइरेक्टर साहब ने कहां तक ईमानदारी से अपने ओहदे के काम का अंजाम दिया—भूतपूर्व डइरेक्टर मिस्टर ह्वइट ने भी शिक्षाविभाग को इतना तहस नहस नहीं किया जैसा नेस्फील्ड साहब कर गये—खयाल करने की बात है जिस देश से एक २ अदना हाकिम इतना रुपया बटोर ले जाते हैं वहां से बड़े२ हाकिम लाट सिकत्तर प्रभृति कितना ढो ले जाते होंगे—धन्य इण्डिया तू ढार होते२ भी विदेशियों को कामदुघा सौरभेयी हो ही तो जाती है—

हिन्दी-प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी
इत्यादि हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहि टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० १७ सं० ११-१२ } प्रयाग { जुलाई—अगस्त १८९४

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक की आज्ञानुसार
सरस्वतीयन्त्रालय—प्रयाग में मुद्रित हुआ ॥

मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा सर्वसाधारण से अग्रिम १॥=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्दमैपोस्टेज १=)

नमूने की कापी का =)॥

हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द १७ संख्या ११-१२ | प्रयाग | जुलाई—अगस्त सन् १८९४ ई०

राजा

राजा यह शब्द राज धातु से बना है जिस्के अर्थ हैं कि राजा अपनी प्रभुता की शक्ति से सबों को दबाता हुआ सब पर प्रकाशमान् है—राजा की प्रभुत्वशक्ति के सम्बन्ध में मनु ने लिखा है कि इन्द्र अग्नि वरुण यम आदि आठों लोकपालों का अंश राजा अपने में धारण कर इस धरातल का शासन करता है—सच है राजा में समस्त राजकीय प्रभुता के गुण ऐसे ही उद्दण्ड हैं जिन का खयाल भी मन में आने से कपकपी पैदा होती है—सोचते हैं तो वे सब गुण अब कहां मिलें ताकि राजा शब्द की [illegible]कता हो सके—जो कहो अब राजा हई नहीं राजा तो सतयुग में होते थे तभी मनु ने भी राजा के गुण कर्म के कोड़ियों श्लोक गढ़ डाले—सो नहीं बल्कि इस समय तो राजा बड़े सस्ते हो गये हैं बहुत ही थोड़े खर्च में आदमी राजा हो जाता है किसी बड़े हाकिम की सिफारिस के दो चार जुमले नेकनामी और खैरख्वाही के काफी हैं—अस्तु नाम के राजा तो साग भाजी के माफिक अजा देखे जाते हैं पर वे सब गुण कर्म किस कन्दरा में जा छिप रहे मनु सरीखे महर्षियों का लिखना क्या झूठ ही है इन सब बातों को खयाल कर दिल में बड़ी खलबली पैदा हो गई—सोचते २ खयाल दौड़ा नहीं २ बड़े लोग जो लिख गये हैं वह व्यर्थ नहीं है अब इस समय के राजा हमारे कलट्टर लोग हैं इन में ठीक २ वे सब गुण मिल जाते हैं जिन्हें मनु महाराज लिख गये हैं—राजा की प्रसन्नता में लक्ष्मी वास करती हैं—सच है कलट्टर साहब किसी तरह प्रसन्न हो जांय तो क्या अन्न धन की कमी रह सकती है ऊंचे दरजे की नौकरी ऊंचा अधिकार मिलना कौन बड़ी बात है नायब तहसीलदारी मिलना तो कुछ हई नहीं डिपटीकलट्टरी तक हासिल हो जाती है—कैसा ही नाखांदा ज़ालिम

मिज़ाज हो आनरेरीमेजिष्ट्रेट और म्युनिसिपलकमिशनर फौरन कर दिया जाता है—"यस्य प्रसादे कमला विजयश्च पराक्रमे" कमला कलट्टर साहब की प्रसन्नता में किस तरह बास करती हैं सो दिखाया अब दूसरी बात भी कि पराक्रम में विजय है बहुत ही स्पष्ट है—राजा तो तोप तुपक अस्त्र शस्त्र से सज्जित हो बड़ी भारी सेना ले जाता था तब विजय लाभ करता था यहां कलट्टर साहब के नाम लेने से विजय होती है—मालगुज़ारी वसूल करने में पहले दांतों पसीने आते थे एक २ ज़मीदार ऐसे सरकश और सरहंग थे कि बिना लोहा बजाये और फौज़कशी के किसी तरह मालगुज़ारी नहीं देते थे अब एक साधारणसा ४ रुपये महीने का प्यादा लाखों रुपया ८ दिन के बीच वसूल कर लाता है और विजय अब किसे कहैं गे—हमारे देश के मज़हबी झगड़ों में कलट्टर लोग बहुधा मुसलमानों के पक्ष में रहते हैं हिन्दू हरचन्द चिल्लाते और सिर धुनते हैं उन की एक नहीं चलती जीत मुसलमानों ही की होती है—तीसरी बात "मृत्युश्च वसति क्रोधे" भी बहुत साफ है छोटे साधारण लोगों की कौन कहे बड़े राजा और तअल्लुकेदार रईसों का भी कलट्टर साहब की ज़रा नाराज़गी में निस्तार नहीं मृत्यु अब किसे कहैं गे—मृत्यु के दूत पुलिस सो इन के बशम्बद कलट्टर साहब का जरासा इशारा काफी है ये मृत्यु के दूत कहो क्षणभर में प्रलय मचाय दें—राजा में ध[illegible] यक्षराज कुबेर का भी एक अंश रहता है ज़िले भर की मालगुज़री कलट्टर के आधीन है खज़ाना कलट्टरी के साथ ही रहता है परगने परगने के अधिकारी तहसीलदार अधिकृत यक्ष के समान नियत समय पर कौड़ी २ उगाह कर यक्षराज कलट्टर के पास भेज देते हैं किसान के घर में चाहो एक दाना न हो ज़मीदार भूखों मरता हो पर सरकारी लगाबन्दी ज़रूर अदा करे घर बिकजाय ज़मीदारी बिलट जाय ज़ेवर गिरों रक्खे मालगुज़ारी अदा करै—दूसरा काम इन यक्षों का यक्षराज के दौरा के समय अपने राजा की सेवा टहल और आतिथ्य सत्कार है—अलावे रसद के अपने २ परगने की जो कुछ सोहदा हो अवश्य भेंट दे और शिकार खेलने का सब सामान मुहैया रक्खे—जो यक्ष इन बातों में प्रवीण हैं और तलवार की धार को जीभ से चाटने के समान महाकठिन राजसेवा व्रत में पारङ्गत हैं वे यक्षराज की सेवा टहल में कहीं से त्रुटि नहीं होने देते परगनह भर में चाहो ज़ालिम और अत्याचारी प्रसिद्ध हों पर यक्षराज उसे बड़ा कारगुज़ार और ईमानदार सर्कारी नौकर मानते हैं उसकी तरक्की के लिये सिफारिस करते हैं—यक्षराज के दो एक

दौरा के उपरान्त चटपट तरक्की हो जाती है—जो यत्न कोई भोंदूदास हुये चालाकी में चूक गये रसद पहुंचाने में ढिलाई की किसान और ज़मीदारों को पैदावार न होने से दुःखी देख उन पर मालगुज़ारी वसूल करने में सख्ती करने से हिचकिचाने दया को चित्त में दखल दिया वे पड़े २ सड़ा किये—रहे वरुणदेव उन का भी अंश हमारे कलट्टर साहब में पाया जाता है वरुण न होते तो अपने ज़िले की नदी आदि छोटे बड़े जलाशयों पर अपना प्रभुत्व क्यों कर रख सक्ते नदी और तालाब आदि के घाट सब इन्हीं के आधीन हैं बिना इन की आज्ञा चिड़िया जल में टोंट नहीं बोर सक्ती—स्वच्छन्दचारी हैवान पशु पक्षी तक जब उन की आज्ञा के डोर से बंधे हुये हैं तब हम सबों की क्या जो इनसान कहलाते हैं और हिन्दुस्तान ऐसे पराधीन देश में इसी लिये पैदा किये गये हैं कि मन वच कर्म से राजभक्ति में न चूकैं सर्वस्व समर्पण कर राजस्व के मुकाबिले अपना कोई हक़ रखना महापाप समझैं—इस तरह पर "स्वाम्यमात्यसुहृत् राष्ट्र कोशदुर्गबलानि च" इस श्लोक में कहे सातो अंग से पूर्ण आठो दिक्पाल का तेज धारण किये कलट्टर राजा का पूर्ण वैभव प्रकाश करते हुये सतयुगी राजाओं की राजाई को प्रगट करते हुये मनु के कहे लक्षण को व्यर्थ नहीं होने देते—

पुनर्जन्म पहिले के आगे से ॥

बुद्ध और जैन के पीछे भारतवर्ष में जो ईश्वरदत्त ज्ञान को साक्षी न मान सर्वसाधारण को नई उक्ति युक्ति पर झुका लाये वे कबीर और नानक हैं—कबीरपन्थ और नानकपन्थ जिसे सिक्खमत भी कहते हैं संसार के सीधे सादे मनुष्यों को भुलाने के लिये प्रचलित किये गये—ये दोनों मत बाप बेटे हैं इन की पवित्र पुस्तक आदिग्रन्थ है जिन्हों ने इस पुस्तक को पढ़ा है वे जान सक्ते हैं कि इस्में कहीं पर नियमानुसार न तो ज्ञान है न वैराग्य न भक्ति न उपासना ही का कहीं पर वर्णन है किन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थ का ग्रन्थ इन दोनों मतों के प्रचारकर्त्ता तथा दूसरे २ बड़े लोगों के जीवनचरित्र की कथायें अठारह पुराणों की भांत बहुतसी कपोलकल्पना की बातें बालिश मूर्खों का मन रिझाने वाली मूर्खों की गढ़न्त से भरा हुआ है और वे ग्रन्थ भी केवल कबीर और नानक के लिखे तो हैं नहीं कि जिस्से उन का निज सिद्धान्त क्या था उस्का पता लगे बरन जितने गुरु हुये सबों ने अपनी २ डेढ़ चावल की खिचरी जुदा ही पकाई है जो कुछ चित्त में आया

गवांरी बोली में लिख डाला—इन के पन्थ में बहुधा दूसरों के खण्डन मण्डन के इतने जुदे २ मत भेद हैं जितने इन के महन्तों की गुदड़ी में रंगबरंगे वस्त्र के टुकड़े होते हैं—जहां तक जाना गया है कबीर के मत की यही चार बातें मुख्य हैं जातिपांति उठा देना मूर्तिपूजन बन्द कर देना हिन्दू और मुसल्मान को एक करना वेद और कुरान को एक समझना—पहिली बात जातिपांति उठादेने के सम्बन्ध में बिचारे कबीर से हम और क्या आशा कर सक्ते हैं—यह एक जुलाहे के लड़के थे अपने लड़कपन की नीच जाति के बालकों के बीच काटा और उन्ही कीसी सब आदतें सीखीं बड़े होने पर जब मत चलाया और देखा कि बहुत से जनेऊधारी भी उन के चेले हो गये तब कबीर ने सोचा कि जब मुझ को दूसरे लोगों के साथ खानाखाने में और पानी पीने में घृणा नहीं होती तो दूसरों को भी ऐसी ही घृणा न होती होगी संसार का क्रम है मनुष्य जिसे आप नहीं बुरा समझता उसे मानता है दूसरे भी न समझते होंगे—यदि कबीर किसी कुलीन द्विज के घर में जन्मे होते तो कदाचित् जातिपांति के तोड़ने की आज्ञा न देते—दूसरी बात मूर्तिपूजन का खण्डन सो भी कबीर के सिद्धान्तों में होना कुछ अचरज न था क्योंकि कबीर जन्म के मुसल्मान थे मूर्त्ति को तोड़ना तो उन के पैगम्बर का खास हुक्म है—खेद की बात है कि मथुरा में विराजमान मणिमय मनोहर मूर्ति श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द की मूर्ति के पूजन का तो खण्डन किया और भट्टी कुडौल गुरू जी की चरणपादुका तूंबा सोंटा आदि के पूजन की आज्ञा दी—मूर्तिपूजन का खण्डन तो मनुष्य जाति के स्वभाव के विरुद्ध है—मनुष्य का स्वभाव प्रकृति ने कुछ ऐसा बनाया है कि वह अपने से बड़े की अवश्य ही पूजन करेगा चाहो जीते जी उस्के चरणकमलों की पूजा करे चाहो मरने पर उस्की हड्डी दांत वस्त्र आदि अथवा सूली जिस्पर वह फांसी दिये गये हैं अथवा कबर या मज़ार की जिस्में उन की मुर्दालाश गाड़ी गई है पूजे या सब से बढ़ कर आधुनिक प्रचलित मत सत्गुरू पूजने वाले लोगों की भांत सत्गुरू के पीकदान या उन के प्राखाने के बचे हुये पानी की सादर पूजा करै—मूर्तिपूजा किसी न किसी दशा में मनुष्यमात्र के लिये जब तक यह प्रपंचमय संसार है तब तक स्थिर रहैगी—

अब कबीर साहब की तीसरी बात कि हिन्दू और मुसल्मान दोनों एक हो जांय अत्यन्त पोच बात है जुलाहे हज्जाम नद्दाफ मोची चाहो भले ही एक

हो जांय यद्यपि यह भी होना अतिकठिन है पर उंची जाति के हिन्दू या कट्टर मुसल्मान जो खास हज़रत की औलाद से हैं कैसे एक हो सक्ते हैं—अब रही चौथी बात कि वेद और कुरान एक है यह कहना भी इन का वैसा ही है जैसा कोई अज्ञानी यह कहे कि सर्कारी बंकों का नोट और जाली नोट दोनों एक से हैं क्योंकि दोनों एक ही प्रकार की सूरत के हैं दोनों बाज़ार में भुनाये जाते हैं पर यह कहना तभी तक सच है जब तक चालाक भुनाने वाला मूर्ख व्यौपारियों को धोखा दै रहा है किन्तु अन्त में पकड़े जाने पर कठिन दण्ड पाता है—वेद और कुरान दोनों कैसे एक हो सक्ते हैं पहले तो वेद अनादि काल से है अर्थात् कम से कम इस पृथ्वी के इस वर्तमान दशा में आने के पहिले से है और कुरान केवल १३ सौ वर्ष से है तो यह प्रश्न उठ सक्ता है कि क्या ईश्वर १३ सौ वर्ष के पहले सोता था और महम्मद साहब ने उन के पहले जो लोग हो गये उन को मुक्ति पाने योग्य नहीं समझा—इस लिये कुरान को ईश्वरवाक्य कहना ईश्वर को पक्षपाती और अन्यायी बनाना है—कुरान में महम्मद साहब का पयम्बर लिख दिया जाना महम्मद साहब की आत्मश्लाघा प्रगट करता है इन बातों से प्रगट है कुरान ईश्वरदत्त पुस्तक नहीं है न वेद की बराबरी उस्की हो सक्ती है—कबीर साहब को इस्से क्या प्रयोजन था कि कौन पुस्तक वेद की बराबरी कर सक्ती है कौन नहीं उन को तो अपना मत चलाना था जब तक कोई बात नई मनुष्य नहीं कर दिखाता तब तक प्रसिद्धि नहीं पाता उस समय यही नई बात थी कि हिन्दू और मुसल्मान दोनों एक हो जांय वेद और कुरान एक समझा जाय जिस्से कबीर का नया मत चल निकलै—कबीर ने मुख्य बात जो हर एक मत का अन्तिम परिणाम है उसी को भुना दिया अर्थात् मुक्ति क्या है और कैसे मिल सक्ती है—इस्का सोचना बड़े विज्ञ का काम है जो कुछ उस समय सर्वसाधारण मुक्ति के बारे में जानते थे वही कबीर ने भी कहा कि मुक्ति भक्ति से मिलती है पर भक्ति का क्या प्रकार है कबीरदास कैसे जान सक्ते थे क्योंकि संस्कृत के ग्रन्थ न तब तक किसी दूसरी भाषा में उल्था हुये थे न ब्राह्मणों ने सब जात को पढ़ाना स्वीकार किया था—इस लिये कबीर ने गवांरों के ढंग पर भक्ति का प्रचार करना आरंभ कर दिया—अब कबीर के मत के सच्चे अनुयायी बहुत कम हैं हां ! नानक का मत जो कबीर के मत की एक शाख

है अलबत्ता अधिकतर फैला है पर ये सिक्ख लोग हिन्दुओं से उतने प्रतिकूल नहीं है जितने कबीर के सच्चे अनुयायियों को होना चाहिये—नानक का अभिप्राय नया मत के प्रचलित करने से न था बल्कि जब मुसल्मानों ने हिन्दुओं को अत्यन्त दुःख दिया तो नानक जी ने एक नये प्रकार की राजकीयसम्बन्धी सभा कर मुसल्मानों के राज्य को नष्ट करने का उद्योग किया इसलिये काम निकालने के लिये जिन बातों की आवश्यकता थी उन्हें प्रचलित रक्खा जैसा गऊ की रक्षा ब्राह्मण को मानना नाम का सुमिरन इत्यादि—होते २ यह सिक्खमत अन्त में इतना फैला कि मुसल्मानी राज्य को जड़ पेड से उखाड़ डाला आज कल के सिक्ख और साधारण हिन्दुओं में केवल इतना ही अन्तर है कि अपढ़ हिन्दू तुलसीकृत रामायण ही को ईश्वरवाक्य मानते हैं और चौका लगा कर खाने ही से स्वर्ग में जायंगे—सिक्ख लोग ग्रन्थसाहब को ईश्वरवाक्य का भण्डार मानते हैं और कपड़ा पहिने खाना खाते हैं—मूर्तिपूजन तथा दूसरी हिन्दू धर्म की बातों में समय या रुपया लगाना व्यर्थ समझते हैं गुरू की अरदास इन के मत में गायत्री के समान मुख्य मन्त्र और प्रधान प्रार्थना है जिस बात के आचरण से मुसल्मानों को क्लेश पहुंचे और उन का जी दुखे वही इन के मज़हब का खास वसूल है—वेद अपढ़ हिन्दू तथा सिक्ख दोनों के लिये एक अन्धकूप सा है—सारांश यह कि नानक मत के लोग वेदोक्त कर्मकाण्ड की ओर से तो निरपेक्ष हैं वरन और सब बातों में कबीरपन्थियों की अपेक्षा अच्छे खासे हिन्दू हैं—अब पुनर्जन्म के संबन्ध में कबीरपन्थियों का मत है कि मनुष्य कर्मानुसार उत्तम या निकृष्ट योनि में बारम्बार पैदा होता है परन्तु जो कबीर को सच्चा गुरू मानते हैं और उन के उपदेश के अनुसार चलते हैं वे गगनगुफा आदि १० गुफाओं को प्राप्त होते लोकानुलोक की सैर करते उस सब से ऊंचे लोक को प्राप्त होते हैं जहां पर स्वतः कबीर गुरू और दूसरे सन्त लोग विराजमान हैं और फिर उन का आवागमन वहां से नहीं होता—ऐसा ही नानकपन्थी भी मानते हैं पर इन दोनों में अन्तर केवल इतना ही है कि नानकपन्थी हिन्दुओं के देवलोक और स्वर्ग नरक को भी मानते हैं और कहते हैं कर्मानुसार मनुष्य हिन्दुओं के इन देवलोकों को भी प्राप्त हो सक्ता है—और नानक जी भी उन्हीं देवलोक में गये हैं कबीर का सा सन्त लोक कोई निराला इन के मत में नहीं है—शेष—

नृपतिचरितावली ॥

पहिले के आगे से ॥

रनथम्भोर जिस्का संस्कृत नाम रणस्तम्भ है प्रसिद्ध किला इसी जयपुर के अधिकार में अब है—रनथम्भोर के सुप्रसिद्ध क्षत्री वीर चौहान कुल उजागर हम्मीर के चरित्र का पूरा वर्णन न्यायचन्द्रसूरि ने अपने हम्मीरवध महाकाव्य में किया है—१४ सर्ग में सङ्कलित यह ग्रन्थ संस्कृत कविता का एक बहुत अच्छा नमूना है—न्यायचन्द्रसूरि जैन थे और विल्हणकविकृत विक्रमाङ्कदेवचरित्र तथा बाणभट्टकृत श्रीहर्षदेवचरित्र के ढंग पर इस ग्रन्थ को इन्हों ने रचा है—हिन्दू-जाति में कौन ऐसा होगा जिस्से हम्मीर के साथ सहानुभूति न होगी जिस ने मुसल्मान अत्याचारियों से युद्ध में अपनी गरदन दे दी पर चौहान क्षत्रियों की स्वच्छन्दता में धब्बा न लगने दिया—सकुटुम्ब सपरिवार अलाउद्दीन के मुकाबिले कट मरा और शरणागत को न छोड़ा बादशाह से कहला भेजा कि सूरज चाहो पश्चिम में उगे और सुमेर अपनी उंचाई से ढै कर पृथ्वी के बराबर होजाय पर मैं शरणगत के साथ विश्वासघात न करूंगा—इसपर अलाउद्दीन बड़ी फौज साथ ले चढ़ आया रणथम्भोर को सब ओर से घेर लिया हम्मीर कई दिनों तक लड़ कर युद्ध में कट मरा इस्की सात रानियां चिता लगाय भस्म होगईं—इसी किस्से को कवि ने १४ सर्ग के सुललित मधुर काव्य में गाया है—जिस्का नाम हम्मीर-मर्दन या हम्मीरवध महाकाव्य है—

बीकानीर ॥

यह राज्य जोधपुर के उत्तर की ओर है राजपुताने की रियासतों में विस्तार में यह द्वितीय श्रेणी का है और आबादी में इस्का दरजा चौथा है—इस्का जील मुरब्बा २२३४० मील है सन् ८१ की मरदुम शुमारी में इस्की जन संख्या ८३१२१० थी मालगुज़ारी १८ लाख साल की है—पृथ्वी इस राज्य की प्रायः समभूमि है कहीं २ पर मिट्टी बड़ी कड़ी और पथरीली है यहां बालू के मैदान किसी २ स्थान में २० से १०० फुट तक ऊंचे हैं दूर से छोटी पहाड़ी समान मालूम होते हैं और यह बालू उड़ा करते हैं जहां आज समभूमि थी वहां कल बालू की पहाड़ी बन गई—आज जहां बालू का टीला है कल वहां समथर मैदान हो गया—जंगल या

हरियाली कहीं नाममात्र को भी यहां नहीं है बरसात के दिनों में या बरसात के कुछ दिन उपरान्त तक भी देश भर में सोहावनी हरियाली छाय जाती है—नदी इस राज्य में कोई नहीं है कुआं कहीं ३०० फुट गहरी है कहीं २० फुट की गहराई के भीतर ही पानी निकल आता है किसी २ कुआं का पानी मीठा है बहुधा तो खारी ही पानी की कुआ हैं—लोग बरसात का पानी जमा कर रखते हैं उसी को साल भर पीते हैं अन्न में बाजरा यहां की मुख्य उपज है चौपायों के चरने को घास यहां बहुत होती—घोड़े भेड़ बकरी और भैंसे बीकानीर के बहुत अच्छे होते हैं—बीकानेर की लोई हाथी दांत की चूड़ियां बहुत अच्छी होती हैं और सौदागरी के लिये दूर २ जाते हैं—जैनी इस राज्य में भी बहुत हैं खेतिहर सब जाट हैं गौड़ ब्राह्मण इस देश में बहुत अधिक हैं पर निपट मूर्ख और निरक्षर खेती से अपनी जीविका करते हैं—इस राज्य की दक्षिण सीमा जोधपुर और जयपुर की अमलदारी है उत्तर की ओर बहावलपुर का राज और पटियाला है पूरब की ओर हरियाने के सरकारी ज़िले हैं—बीकानीर जैसलमीर और बहावलपुर की रियासतों के बीच बड़ा भारी रेगिस्तानी मैदान पड़ा है—सैकड़ों कोस तक कहीं नाम को भी बस्ती नहीं है बालुओं में बड़े भारी २ तरबूज़ होते हैं—उसी के जल से बटोही अपनी प्यास बुझा लेते हैं ईश्वर की अद्भुत महिमा है जहां एक बूंद पानी मयस्सर नहीं वहां ऐसे रसीले फल पैदा कर दिये हैं—करील मदार झड़बेरी बहुत यहां पैदा होते हैं लम्बान इस राज्य का १५० मील चौड़ान प्रायः १२५ मील होगा—राठोरकुलभूषण महाराज जोधासिंह जिन्हों ने जोधपुर बसाया था उन के छठवे पुत्र महाराज बीकासिंह विक्रमी सम्वत् की तेरहवीं शताब्दी के अन्त में इस राज्य की बुनियाद डाली और बीकानीर बसाया जो पथरीली भूमि पर बसा हुआ है शहर चारोओर पक्की शहर पनाह से घिरा है एक क़िला भी बड़ा मज़बूत और देखने लायक यहां है गलियां बड़ी सकेती टेढ़ी मेढ़ी अत्यन्त मैली हैं—राजा की महल और महाजनों के कई एक पक्के मकान अलबत्ता सुथरे और साफ बने हुये हैं जिन्में पत्थर पर जाल और बेलबूटे बहुत सफाई के साथ खुदे हुये हैं जन संख्या अनुमान ४३००० के होगी राठौर कुल उजागर महाराजा श्रीगंगासिंह बहादुर यहां राज करते हैं महाराज की यद्यपि अभी बाल्य अवस्था है किन्तु होनहार मालूम होते हैं—शहर में डूंगरसिंह कालेज है और राज भर में कई एक स्कूल हैं—

जैसलमीर ॥

यह राज्य जोधपुर के पश्चिम है—पूरब की ओर बीकानेर पश्चिम की सीमा सिन्ध—उत्तर की ओर बहावलपुर की रियासत है—विस्तार वर्ग भूल १६४४७ मील है—आबादी सन् ८१ की मर्दुम शुमारी में १०८१४३ थी मालगुज़ारी अनुमान दो लाख साल के लग भग है—विस्तार में राजपुताने के और २ राज्यों की अपेक्षा यह चौथी श्रेणी का है किन्तु आबादी में सब से कम है—बस्ती फी मील मुरब्बा सात आदमी की भी औसत से नहीं पड़ती इसमें बीकानीर से भी बढ़ कर रेगिस्तान हैं रास्ते में तीन मंज़िल तक बिलकुल पानी नहीं मिलता बटोही मशकें भर कर ऊटों पर अपने साथ रख लेते हैं—हिन्दुस्तान को जो महाद्वीप "कान्टिनेंट" की एक छोटी सी नकल मानो तो जैसलमीर को अरब देश का एक टुकड़ा कहना पड़ेगा राजधानी के इर्दगिर्द तो अलबत्ता थोड़ीसी पर्वतस्थली है नहीं तो समस्त देश का देश सैकड़ों कोस तक मरुभूमि है—पानी यहां अत्यन्त दुर्लभ है ढोल ऐसे तर्बूज़ यहां भी पैदा होते हैं उन्हीं के पानी से लोगों का काम चलता है—कुआ में दो सौ ढाई सौ हाथ की गहराई पर पानी निकलता है सो भी बहुधा खारी बड़े यत्न और प्रयास से—केवल बरसाती अन्न यहां उपजते हैं बालुएमैदानों के बीच कहीं पर जहां दो चार कोस कुछ अच्छी पृथ्वी आगई है उसमें गांव बसे हैं—मुसलमान इस राज्य में कुल आबादी में चौथाई से अधिक हैं—ऊट भेड़ी बकरी तथा दूसरे चौपायों के झुण्ड के झुण्ड लोग यहां पालते हैं ऊन घी ऊट भेड़ी बकरी की सौदागरी भी यहां होती है—विक्रमी सम्वत् के सातवें शताब्दी में महाराज देवराज ने इस राज्य की बुनियाद डाली ११५६ ईस्वी में जैसलमीर का नगर बसाया गया १२२४ ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी ने जैसलमीर का आक्रमण किया था किन्तु इसे मरुभूमि समझ छोड़ दिया इसी कारण मरहठों के लूटपाट से भी यह बचा रहा प्रजा यहां की अत्यन्त निश्चिंत हैं और राज भाई बन्धुओं में बहुत बटा है इसी लिये मालगुज़ारी इतनी थोड़ी है—राजा की ओर से यहां कोई स्कूल नहीं है ऊट ही के द्वारा खेती तथा वनिज व्यापार इत्यादि के सब काम किये जाते हैं—सड़क इस राज्य में नहीं है पगडंडी के द्वारा रास्ता का पता लगता है—जैसलमीर का शहर ११००० आदमी की बस्ती है एक पहाड़ी चट्टान पर बसा हुआ है जिसके चारोओर गढ़ है जिसमें बालू भरा

हुआ है किला के चारोओर मजबूत दीवाल है महाराज की महल पीले बलूले पत्थर की बनी है धनी महाजनों के घर भी उसी पत्थर के बने हैं जिन्में सुथरी सोहावनी नक्काशी की हुई है—राजा यहां के महारावल कहलाते हैं और यदु भट्टी राजपूत है—

किशनगढ़ ॥

विस्तार इस राज्य का ७२४ मील वर्गमूल है राज्य की जन संख्या सन् ८१ में ११२६३३ थी भूमि कर चार लाख के अनुमान सालाना है—पूरब और दक्षिण की सीमा इसकी जयपुर के इलाके हैं उत्तर और पश्चिम जोधपुर और अजमेर के सरकारी ज़िले हैं—अन्न की उपज इस राज्य में अच्छी होती है राजपूताना मालवा रेल राज्य के उत्तर हो कर गई है बल्कि किशनगढ़ इस रेल का एक प्रधान स्टेशन है—यह नगर एक छोटीसी झील के तट पर बसा हुआ है और बहुत रमणीक मालूम होता है शहर के बीचोबीच महाराजा साहब का बाग अति ही मनोहर है महाजनों की कोठियां शहर में कई एक हैं जिन के घर भी जयपुर की इमारतों के ढंग पर बहुत साफ और सुथरे बने हैं महाराजा साहब का महल भी बहुत सुन्दर बना है—जोधपुर के छोटे राजा उदैसिंह महाराज के पुत्र कृष्णसिंह जी ने सन् १५९४ में इस राज्य को स्थापित किया और अपने नाम का कृष्णगढ़ बसाया विद्यमान महाराज श्रीमान् श्री १०८ शार्दूलसिंह जी—सी—एस—आई—की महाराज कृष्णसिंह से पन्द्रहवीं पुश्त है—उक्त महाराजा साहब विद्या के बड़े रसिक हैं और प्रधान आमात्य बाबू श्यामसुन्दरलाल रायबहादुर की सहायता से राज्य का बहुत उत्तम प्रबन्ध कर रहे हैं शहर में सफाई आदि का इन्तिज़ाम भी बहुत अच्छा है—ऐंगलोवरनाकुलर स्कूल जिसे महाराज ने १८८२ में स्थापित किया है अब बाबू नाथूलाल हेडमास्टर के प्रबन्ध से बहुत अच्छी दशा में है—राठौरकुलभूषण श्रीमहाराधिराज शार्दूलसिंह अपने पूर्ण वय में प्राप्त सब भांत सुयोग्य मालूम होते हैं इस कारण आशा होती है कि इस राज्य की प्रतिदिन उन्नति होती रहेगी—

कोटा

यह राज्य राजपुतना के पूर्व और बून्दी के अग्निकोण को है कोटा और बून्दी इन दोनों राज्यों को चम्बल नद बीच में आय जुदा करता है—विस्तार

इस्का ६ हजार मील मुरब्बा है आमदनी अनुमान ४५ लाख साल की है पर इसमें से तिहाई गवर्नमेंट ने वहां के दीवान राजराना ज़ालिमसिंह की औलाद को दिलवा दिया क्योंकि दीवान ने लाड़इयों में सर्कार की बड़ी खैरख्वाही की थी और दीवान झालरापाटन में रहते हैं जो कोटा से ५० कोस अग्निकोण को है—इस लिये अब कोटा की आमदनी केवल २४ लाख साल की है आबादी इस राज्य की सन् ८१ में ५२६२६० थी—यह राज्य उत्तर की ओर ढलुआ है और चम्बलनदी के कारण पृथ्वी यहां की बहुत उर्वरा है हरतरह के अन्न रूई अफीम की उपज अच्छी होती है—खेतिहर यहां बड़े गरीब हैं—महाराजा यहां के हाड़ा क्षत्रिय हैं ग्राम और कस्बों में जैनियों की स्थापित बहुधा पाठशालायें हैं—शहर कोटा में महाराजा की ओर से एक ऐंगलोवरनाकुलर स्कूल और एक दवाखाना भी है—कोटा चम्बल के किनारे ४००००० आदमियों की बस्ती है हिन्दुओं के यहां कई एक मन्दिर है बल्लभकुल के ठाकुर मथुरेश जी का यहां प्रसिद्ध मन्दिर है मुसलमानों की कई एक मसजिदें भी हैं—सन् १६२५ में कोटा बूंदी से अलग हो गया पहिले इसके ये दोनों राज्य एक थे राजा यहां के महाराव कहलाते हैं—राज्य के आधीन बहुत से छोटे २ ठाकुर और जागीरदार हैं शहर शहरपनाह के भीतर बसा है चारोओर पहाड़ काट खांई खोदी हुई है—नगर यह घना बसा है पर प्रसिद्ध स्थान सिवाय महाराव साहब की महलों के और कुछ नहीं है आबादी मुसलमानों की इस रियासत में भी हिन्दुओं के बराबर की है शहर के पूर्व एक कृत्रिम बड़ी झील है जिस्का पानी खेत सींचने के काम में आता है—वर्त्तमान महाराव अभी बालक हैं किन्तु शिक्षा इन की अच्छे ढंग से हो रही है—

झालावार या झालरापाटन ॥

इस राज्य का वर्गमूल २६९४ मील है जन संख्या ३४३३१० मनुष्य की है भूमि कर १५ लाख है—इस्के ३ जुदे २ टुकड़े हैं और कोटा राज्य के दक्षिण ओर स्थित है—बड़ा हिस्सा राज्य का पहाड़ी भूमि है बाकी हिस्सा अनूप समभूमि है जो बरसात में जलमग्न रहने से उपज जिस्में बहुत अच्छी होती है—कुल राज्य का एक तिहाई हिस्सा खेतीबारी के लायक है जिस्में सब प्रकार के अन्न की उपज अच्छी होती है दक्षिणी हिस्से में अफीम बहुत पैदा होती है अधिकतर खेत कुआ के पानी से सींचे जाते हैं—महाराज झालजाति के राजपूत हैं जिन के पूर्वज गुजरात

के काठियावार देश से आय बसे हैं–सन् १८३८ में यह राज कोटा से अलग कर दिया गया और राजा ने अपनी उपाधि महाराज राणा रक्खा–शिक्षा का प्रबन्ध अब तक यहां बहुत कम था किन्तु अब दिनोंदिन शिक्षा सुधरती और बढ़ती जाती है राज्य की ओर से रियासत भर में ५ दवाखाने हैं–राजधानी झालरा-पाटन या पत्तन सन् ईस्वी १७९६ में निर्माण की गई महाराज ज़ालिमसिंह इस रियासत की बुनियाद डालने वाले हुये शहर से ४ मील उत्तर कनटूनमेंट हैं जहां फौज रहती है–रईस और महाजन झालरापाटन में रहते हैं महाराज की महल और कचहरियां कनटूनमेण्ट में हैं दोनों मिला कर ३२००० आदमी की बस्ती है वर्त्तमान महाराज राणा तरुण अवस्था के राजकाज में बड़े प्रवीण हैं–जिस्से आशा होती यह राज्य प्रतिदिन उन्नति करता जायगा––

बूंदी

यह राज्य उदयपुर या मेवाड़ के पूर्व कोटा के पश्चिम और जयपुर के दक्षिण है–विस्तार २३०० वर्गमूल मील है जन संख्या सन् ईस्वी ८१ में २५४७०१ थी भूमिकर १० लाख सालाना है–राज्यभर में पहाड़ों की दोहरी कतार चली गई है सालके जंगल यहां बहुत हैं अन्न सब प्रकार के अच्छे उपजते हैं राजभर में ९००० के अनु मान राजपूत होंगे–राजधानी शहर पनाह के भीतर बसी है एक भाग इस्का नई दूसरा पुरानी बूंदी कहलाता है–जो शहर पनाह के भीतर बसी है वह नई बूंदी कहलाती है शहरपनाह पहाड़ों से जो प्रायः ४०० फुट ऊंचे होंगे किले और म-हलों से मिलगई है–पुरानी बूंदी में मन्दिर बहुत हैं बाज़ार खूब चौड़ा ठौर २ हौज़ बने हैं जिन्में फौहारे बरसात के दिनों में छुटते हैं नगर के पासही एक झील आंख को बहुत सोहावनी मालूम होती है बाज़ार महाराज की महलों के सामने बसा है–पुरानी बूंदी नई बूंदी के पश्चिम है शहर के उत्तर पहाड़ी घाटियों पर बहुत सुन्दर २ तालाब हैं बाग और छतरियां बनी हैं–सुख महल जो झील के बांध पर बनी है वहां से बरसात के दिनों में पानीकी चद्दरें गिरती हुई बहुत भली मालूम होती हैं–शहर में महाराजा की ओर से एक औषधालय है राज्य भर में कई एक छोटे २ स्कूल और राजधानी में एक बहुत बड़ास्कूल है–जन संख्या राजधानी की सन् ईस्वी ८१ में २१००० मनुष्य की थी पुराने महाराव बड़े विद्वान् विद्यारसिक और धर्मिष्ठ थे अतिवृद्धही हाल मे स्वर्गवासी हुये

वर्तमान महाराव साहब तरुण और राजकाज में सब भांत निपुण और चौहान-क्षत्री हैं—बूंदी का राज वंश और राज्य बहुत पुराना प्रतिष्ठित है कोटा का राज्य इसी मूल वृक्ष की एक शाखा है—

करौली

यह राज्य राजपुताना के ईशानकोण को है उत्तर और पश्चिम जयपुर के राज्य से घिरा हुआ है दक्षिण को ग्वालियर के राज्य से और पूर्व को धौलपुर की अमलदारी से मिला हुआ है—विस्तार १९०० वर्ग मील के अनुमान है जन-संख्या सन् ८१ में १५८६७० थी भूमिकर ५ लाख सलाना है राज्य के अग्निकोण की ओर चम्बल इसे ग्वालियर से अलग करता है—देश बिलकुल पर्वतस्थली है किसी २ चट्टानों में बहुत अच्छे पत्थर सङ्गमर्मर सङ्गसूसा तक निकल आते हैं—फतहपूरशीकरी का मकबरा और ताजमहल में अधिकतर यहीं के पत्थर लगे हैं—पत्थर की इतनी अधिकाई है कि गांव में खेतिहरों के घर भी निरे पत्थर के बने हैं—बाजरा और जुआर यहां की मुख्य उपज है प्रजा बिलकुल खेती से जीती है किसी तरह की कारीगरी या व्यौपार यहां बहुत कम हैं—राजपूत इस राज्य में बड़े प्रतिष्ठित समझे जाते हैं लोग प्रायः वैष्णव हैं कृष्ण की उपासना सब से मुख्य है—मुसलमान यहां बहुत कम हैं सिवाय थोड़े से पठान के जो फौज में भरती हैं—महाराज यदुवंशी क्षत्री हैं और कृष्णचन्द्र से अपने वंश का पता देते हैं यहां और बहुत से यदुवंशी ठाकुर हैं जो राजवंश में अपने को मानते हैं—आगरा से ७५ मील नैर्ऋत्य कोण को राजधानी करौली पुशपेरी नदी पर स्थित है अनुमान २६००० मनुष्यों की बस्ती है ब्राह्मण और महाजन यहां बहुत हैं गलियां तङ्ग और टेढ़ीमेढ़ी हैं—शहर में मन्दिर कई एक हैं नगर में एक अस्पताल और एक अंगरेज़ी स्कूल है और ७ हिन्दुओं की स्थापित पाठशालायें हैं—लेकिन शिक्षा की ओर अभी बहुत कम ध्यान यहां के लोगों का है कदाचित् इसका कारण जनसंख्या में ब्राह्मणों की अधिकाई है—महाराजा साहब को उचित है अपने राज्य के इन ब्राह्मणों को अंगरेज़ी शिक्षा के लिये बाधित करें महाराजा भँवरपालदेव २८ वर्ष की अवस्था के यादववंशी क्षत्री सब भांत समर्थ हैं—

बंशवारा ॥

इस राज्य का विस्तार १५०० वर्ग मूल मील है जन संख्या १७५१४५ मनुष्य की है और भूमिकर २५९००० है—बंसवारा और डूंगरपुर के बीच माही नदी है राज्य का पश्चिमी भाग बहुत उपजाऊ है बाकी हिस्सा जंगल और पहाड़ है भील उन्में रहते हैं—शिक्षा का विस्तार इस राज्य में बहुत कम है सड़क इत्यादि भी नहीं है महारावल यहां के राजा की उपाधि है सिसोदिया राजपूत हैं जो डूंगरपुर के राजवंश की एक शाख है—

डूंगरपुर ॥

विस्तार इस राज्य का १००० वर्ग मूल मील है जन संख्या १५३३८१ और भूमिकर १४५००० है—डूंगरपुर का राज्य राजपुताना के दक्षिण मेंवाड़ गुजरात के बीच बिलकुल पहाड़ और जंगल है पहाड़ों के बीच जहां कहीं नीची भूमि आगई है उतने ही में खेती हो सक्ती है दो तिहाई जंगल ऐसे हैं जिन्में बड़े दाम की लकड़ियां पैदा होती हैं—राज्य का बड़ा हिस्सा बबुआन और ठाकुरों के बीच बटा है आबादी का आधा हिस्सा भीलों से बसा है राजभर में न कोई पाठशाला या स्कूल है न सड़क है श्रीमान् महारावल साहब सिसोदिया राजपूत क्षत्री महाकुलीन महाराणा उदैपुर के जेठे घराने में हैं—

परतापगढ़ ॥

विस्तार इस राज्य का वर्ग मूल १४६० मील जन संख्या सन् ८१ ईस्वी में ७९५६८ मनुष्य की थी भूमिकर अनुमान अढ़ाई लाख साल है—यह बंसवाड़ा के ईशानकोण की ओर सिवा उस हिस्से के जो वायव्यकोण को है जो बिलकुल जंगल और पहाड़ है और जंगली भीलों से बसा हुआ है बाकी हिस्सा सम भूमि और उपजाऊ है—सब तरह के अन्न अफीम और रूई यहां पैदा होती है सड़क नहीं है शिक्षा का भी कोई प्रबन्ध यहां नहीं पाया जाता राज का बड़ा हिस्सा १५० के अनुमान जागीरदारों के बीच बटा है—राजधानी प्रतापगढ़ १३००० आदमियों की बस्ती है—राजा यहां के महारावत कहलाते हैं उदैपुर के महाराणा के छोटे भाई के वंश में सिसोदिया राजपूत हैं—बंसवाड़ा डूंगरपुर और प्रतापगढ़ ये तीनों

राज बड़े प्रतिष्ठित कुलीन क्षत्री और महाराणा के भाई बन्ध में हैं—ये तीनों राज्य बहुत छोटे हैं किन्तु कुलीनता में बहुत बड़े समझे जाते हैं—

सिरोही—

वर्ग मूल इस राज्य का ३०२० मील है जन संख्या सन् ८१ में १४२९०३ थी भूमि कर १७५००० साल की है यह राज्य बड़ोदा की अमल्दारी के उत्तर है—पूर्व की ओर उदयपुर पश्चिम और उत्तर को जोधपुर है—पहाड़ इसमें बहुत हैं राजधानी से १८ मील नैर्ऋत्य कोण को आबू पहाड़ है जिसे अर्बुदगिरि भी कहते हैं जो समुद्र की सतह से ५६५३ फुट ऊंचा है—जल की अधिकाई कई एक सुन्दर झीलें जंगलों में हरियाली ठंडी हवा हिमालय का नमूना इस पर्वत को कर रहे हैं—यहां गर्मियों में बहुधा साहब लोग हवा खाने जाया करते हैं—अचलेश्वर महादेव का पुराना स्थान यहां है—जैनियों के दो मन्दिर संगमर्मर के बहुत उमदा नक्काशी के इसपर बने हैं—इसमें के चिकने पत्थर शीशा और हाथीदांत मालूम होते हैं—कहते हैं सवा सवालाख रुपये की लागत के दो ताक इन मन्दिरों में बने हैं—एक ताजबीबी का रौज़ा छोड़ कर दुनिया भर में ऐसी दूसरी इमारत न मिलेगी जिन के बनाने में कई करोड़ रुपये उठे होंगे—ये मन्दिर कम से कम एक हज़ार वर्ष के बने मालूम होते हैं—अर्बुदगिरि इस राज्य को दो विषम भाग में बांटता है जो भाग पश्चिम की ओर है वह दूसरे की अपेक्षा अधिक उपजाऊ है—पूर्व के हिस्से मे घने जंगल और पहाड़ बहुत हैं बाघ और चीते उनमें बहुत हैं जो कभी २ गावों में आय चौपायों का बड़ा विनाश करते हैं—गेहूं जौ चना तेलहन ये सब यहां पैदा होते हैं जैनी इस राज्य में बहुत हैं और बड़े धनी पात्र हैं जंगलों में भील तथा दूसरे छोटी जाति वाले बड़े लुटेरे हैं—प्राचीन रहने वाले यहां के भील थे उपरान्त गेहलत जाति के राजपूत आकर बसे उनके उपरान्त प्रमर क्षत्री आ बसे और चन्द्रावती नगरी बसाया जो किसी समय बहुत बड़ा और सुसमृद्ध नगर था—विक्रमाब्द के ग्यारहवें शताब्द के आरम्भ में चौहान क्षत्रियों ने प्रमर क्षत्रियों को यहां से निकाल आप यहां के राजा बन गये अर्बुद गिरि को अपने अधिकार में कर महाराव अपनी उपाधि रक्खा—राजधानी सिरोही ६००० मनुष्यों की बस्ती छोटासा रमणीक नगर है महाराव साहब की ओर से एक औषधालय और स्कूल भी यहां है राज का प्रबन्ध अच्छे ढंग से चल रहा है—

अलवर ॥

यह राज्य विस्तार में वर्ग मूल ३०२४ मील और जन संख्या ७६९०८० है भूमि कर अनुमान साढ़े २६ लाख है और राजपुताना के उत्तर भरतपुर और जैपुर राज्य के बीच में यह रियासत है—उत्तर से दक्षिण को समान अन्तर पर दो पहाड़ इस राज्य में गये हैं जिन के बीच की भूमि उर्वरा और उपजाऊ होने से सब तरह की खेती इस भूमि में हो सक्ती है— आधे से ज़ियादह ज़मीन इस रियासत की खेतीवारी के लायक है बाकी पहाड़ जंगल और ऊसर है—तीन चौथाई हिन्दू एक चौथाई मुसल्मान यहां की जन संख्या में होंगे—मुसल्मानों में मेव्रात जाति के मुसल्मान बहुत हैं मेवाती पहले के राजपूत हैं ये केवल नाममात्र के मुसल्मान हैं हिन्दुओं की बहुतसी रीत रसम तेहवार और देवी देवताओं को अब तक पूजते हैं—

यह राज्य पहले जैपुर और भरतपुर के आधीन बहुत से छोटे ठाकुर और राजाओं में बटा हुआ था अलवर के राजवंश की बुनियाद डालने वाले महाराज प्रतापसिंह ने अनुमान १७७५ ईस्वी सन् में स्वच्छन्द हो राज्य का दक्षिणी हिस्सा अपने अधिकार में कर लिया १७७६ में प्रतापसिंह भरतपुर से लड़कर किला और अलवर का शहर अपने कब्जे में कर लिया—प्रतापसिंह के दत्तक पुत्र बख्तावरसिंह जिन्हों ने महराठों के साथ लड़ाई में गवर्नमेंट की सहायता सन् ईस्वी १८०३ और १८०६ में की थी इसके बदले गवर्नमेंट से अलवर के उत्तरी ज़िले माफी में पाये तब से अलवर राज्य की मालगुज़ारी अधिक हो गई—राजपुताना मालवा रेलवे राज्य के बीच से हो कर गई है महाराजा साहब की ओर से राज्य में ४ औषधालय कई एक स्कूल और बालापाठशालायें हैं—अलवर शहर ५१०० मनुष्यों की बस्ती है महाराज साहब की महल और महाराज बख्तावरसिंह बहादुर की छतरी देखने योग्य हैं—महाराजा सवाई सर मंगलसिंह बहादुर जी—सी—एस—आई—नारूक राजपूत इस समय राज्य का बड़ा उत्तम प्रबन्ध कर रहे हैं—

धवलपुर ॥

विस्तार वर्ग मूल १२०० मील जन संख्या सन् ईस्वी ८१ में २७९८८० थी भूमि कर ९५०००० है—यह राजपुताना के ईशान कोण को ज़िलह आगरा के दक्षिण —लाल पत्थर का एक पहाड़ इस राज्य के बीच हो कर गया है पहाड़ के ऊपर

की पृथ्वी ऊषर और कम उपजाऊ है किन्तु ज्यों २ पहाड़ दूर हटता गया है धरती अधिक २ उर्वरा होती गई है अब उसमें बहुत उपजता है—प्राचीन समय में यह कन्नौज के राज्य के आधीन था अकबर ने इसे आगरा में मिला लिया—सन्१७८२ में सेंधिया ने धौलपुर को अपने आधीन कर लिया था अब यह जाट क्षत्रियों के आधीन है—महाराज राणा निहालसिंह बहादुर अब यहां राज्य करते हैं और महाराज पटियाला के भानजे हैं—धौलपुर अनुमान १६ हज़ार मनुष्यों की बस्ती है पास ही एक अतिमनोहर झील है जिस्के किनारे एकसौ के ऊपर मन्दिर बने हैं—

भरतपुर

विस्तार १९४ वर्गमील जन संख्या सन् ८१ में थी ६४०६२० भूमिकर २७ लाख सालाना है—भरतपुर राजपुताना के ईशान कोण की ओर राजपुताना के सब राज्यों से अधिक घना बसा हुआ है पृथ्वी यहां की अधिकतर सम भूमि है कहीं पर कम उंचाई के पहाड़ भी हैं—यहां लाल पत्थर की खान है दिल्ली आगरा मथुरा की उमदा २ ईमारतें यहीं के लाल पत्थरों कीबनी हैं—यह ब्रजभूमि कहलाती है और ब्रज भाषा यहां बोली जाती है जिस्की मिठास कन्द और मिसरी को भी नीचे करती है—इस्की उत्तर की सीमा अलवर का राज्य पश्चिम की जयपुर दक्षिण धौलपुर पूर्व की सीमा आगरा और मथुरा के सर्कारी ज़िले हैं—राजधानी भरतपुर आगरा से ३५ मील आठ मील के घेरे में कच्ची शहर पनाह के भीतर बसी है—शहर पनाह इतनी ऊंची और चौड़ी बनी है कि यदि भरतपूर मरम्मत होती रहे तो तोप के गोलों का कुछ असर उस्पर नहीं पहुंच सकता—शहर पनाह के गिर्द खांई भी खुदी है और झीलें यहां ऐसी २ हैं कि यदि उन के बांध काट दिये जांय तो शहर के बाहर कोसों तक पानी ही पानी हो जाय—शहर के बीचो बीच पक्का किला है जिस्के इर्द गिर्द ऐसी चौड़ी खाई है कि एक छोटी नदी मालूम होती है—सन् ८१ में इस्की आबादी ७७००० थी बिहारी जी का मन्दिर यहां बहुत प्रतिष्ठित है—किला भरतपुर का सन् ईस्वी १७३३ में महाराज बदनसिंह भरतपुर के राज्य की बुनियाद डालने वाले का बनवाया हुआ है—दिल्ली में मुगल खानदान के अस्त होने पर जाटों के सिरदार बदनसिंह ने डीग में ठाकुर के नाम से खज्ज-

न्दता ग्रहण कर भरतपुर का राज्य स्थापित किया उपरान्त उन के पुत्र सूरजमल बड़े प्रतापी हुये मुल्क पर मुल्क फतह करते हुये लड़ाई में तन त्याग स्वर्गगामी हुये—उन के पुत्र रनजीत सिंह बराबर अंगरेज़ी गवर्नमेंट की महराटों के साथ युद्ध में सहायता करते रहे—सन् १८२६ में भरतपूर अंगरेज़ी गवर्नमेंट से बड़ी बहादुरी के साथ कई महीनों तक लड़ा भी किन्तु अन्त में हारजाने पर इस्के पहले राजा गद्दी से उतार दिये गये और बनारस में नज़रबन्द रक्खे गये जहां उन के वंश के अब तक विद्यमान हैं और राज्य बलवन्त सिंह को दिया गया—सन् १८५३ में महाराज बलवन्त सिंह के स्वर्गवासी होने पर महाराज सवाई सर जसवन्त राव जी—सी—एस—आई—उत्तराधिकरी हुये—राज्य का प्रबन्ध बहुत अच्छा और सब भांत सराहने लायक है—राजधानी से ८ कोस पर डीगभवन और महाराज का बाग देखने लायक है—एक बारहदरी जिसे मच्छीभवन कहते हैं उस्में इतने फौहारे लगे हैं कि दर दिवार खंभे सब जगह से पानी निकलता है—ऐसे हिसाब से लगे हैं कि जब फौहारे छुटने लगते हैं तो सूर्य की किरनों में पानी की फुहियों को बेध जाने पर भवन के भीतर दो इन्द्र धनुष बन जाती हैं—भरतपुर से एक दिन की रास्ते पर नैर्ऋत्यकोण को बयाने का किला है—जब अगरा नहीं बसा था तब यही इस सूबे की राजधानी थी सिकन्दर लोदी बहुधा यहीं रहा करता था और यह किला उसे बहुत पसन्द था—पहाड़ पर यह किला बना है जिस्में ऐसे गहरे कुण्ड हैं कि घलियाल ऊपर तैरते रहते हैं—

टोंक ॥

यह रियासत विस्तार में २५०७ वर्गमूल मील आबादी सन् ८१ ईस्वी में ३७९३३० थी और आमदनी १२ लाख साल की है—यह राज्य राजपुताना के पूर्व है और यही एक रियासत है जो राजपुताना भर में मुसल्मानों के दखल में है—सब ओर बूंदी और जैपुर की अमलदारी से घिरा हुआ है—राजधानी टोंक दो तरफ पहाड़ों से घिरी हुई है तीसरी तरफ पत्थर की दीवाल है जिसे ले जा कर पहाड़ों से मिला दिया है—बनास नदी नगर के उत्तर बहती है नदी के किनारे पर नवाब साहब के मकान बने हैं मिट्टी का एक किला भी यहां है— आबादी सन् ईस्वी ८१ में ४४००० थी शहर के पास ही एक छोटीसी झील भी है—नवाब साहब बोनर फिरके के पठान हैं—इस घराने की बुनियाद डालने वाले अमीरखां

हुलकर की मदतातो में कुछ थोड़ीसी अपनी खास फौज़ जमा कर लड़ाई में हुलकर की मदत करते थे जिस्के इवज़ में हुलकर की ओर से फौज़ का खर्च चलाने को टोंक का इलाका दे दिया गया था—सन् ईस्वी १८०८ में अमीरखां ने ४० हज़ार घोड़ सवार ले कर नागपूर के मुकाबिले कूच किया था पर गवर्नमेंट का इशारा पाय लौट आया और लौटते समय रास्ते में जो देश आ गये उन्हें इस्की फौज़ खातिरखाह लूटने से न छोड़ा सन् १८१७ ईस्वी में उस समय के गवर्नरजेनरल मार्क्विस हेसटिंग ने पिंडारियों की लूट से मुल्क की हिफाज़त रखने के ज़िम्में पर टोंक का राज्य अमीरखां को दे दिया सब से यह राज्य राजपुताने में कायम हुआ है—

राजपुताना जो क्षत्रियों का उत्पत्ति स्थान है उस्में के प्रधान २ राज्य जिन का कुछ वृत्तान्त हमें मिल सका यहां पर समाप्त किया—इन राज्यों में जिस किसी का हमें विशेष वृत्तान्त मिलता जायगा समय २ प्रकाशित करते जांयगे अब बुंदेले क्षत्रियों की चरितावली का आरंभ करते हैं—यमुना और मध्य प्रदेश का देश बुंदेलखण्ड कहलाता है पश्चिमी सीमा इस्की चंबल और पूर्व की सीमा बघेलखंड है छोटी बड़ी सब मिलाय इस्में ३० स्वच्छन्द रियासते हैं उन्में प्रधान २ जिन का कुछ हाल हमें अब तक मिला है लिखते हैं—बुंदेले यहां विक्रमी सम्वत् के चौदहवें शताब्दी के मध्य भाग में आ बसे और क्रम २ अपना २ राज्य स्थापित करने लगे—बुन्देलखण्ड संपूर्ण विन्ध्य पर्वत की पर्वतस्थली है इन पहाड़ों की उचाई बहुधा दो हज़ार फुट की उचाई तक की है लोहे की खान अक्सर जगहों में पाई जाती हैं यहां के पर्वतों का उतार चढ़ाव ठीक समुद्र की तरंग का अनुहार करता है—

दतिया ॥

विस्तार ८३७ वर्गमूल मील आबादी ८१ ईस्वी में १८२५९८० थी आमदनी ९ लाख सालाना है यह राज्य चारों ओर से सेंधिया की अमलदारी से घिरा है—बसीन की सन्धि जो अंगरेज़ी गवर्नमेंट के साथ हुई थी तब से यह राज्य गवर्नमेंट की रक्षा के आधीन है—राजधानी दतिया पक्की शहरपनाह के भीतर बसा हुआ है सन् ८१ ईस्वी में २८००० आदमियों की बस्ती थी महाराजा साहब को सर्कार से लोकेन्द्र की उपाधि दी गई है राजा की महल देखने योग्य स्थान है—

उरछा या तिहरी ॥

दतिया से ७४ मील दक्षिण राजधानी टिहरी है—विस्तार इस राज्य का १९३४ वर्गमूल मील है आबादी ८१ ईस्वी में ३११३४ थी आमदनी ९ लाख सालाना है और ज़िला झांसी के दक्षिण है—राज्य का बड़ा हिस्सा पहाड़ और जंगल है बहुत कम बसा हुआ धरती भी कम उपजाऊ है—महाराज के पूर्वजों के बनवाये ठौर २ बहुत से तालाब राज्य भर में हैं—बुन्देलखण्ड के सब राज्यों में उरछा का दरजा औवल है और यही एक राज्य है जो महराठों के आधीन नहीं हुआ और न कभी चौथ महराठों को दिया—महाराज ने सन् सत्तावन के बलवे में सर्कार के साथ बड़ी खैरखाही की थी इसी लिये गवर्नमेंट ने कर माफ कर दिया है—महाराज अब तिहरी में रहते हैं पुरानी राजधानी बेतवा नदी पर उरछा अब उजाड़ है—महाराज को महेन्द्रसवाई की उपाधि है—राज्य का प्रबन्ध अच्छा है—

पन्ना ॥

विस्तार २५६८ वर्ग मूल मील जन संख्या ८१ ईस्वी में २२७३०६ थी भूमिकर साढ़े चारलाख वार्षिक है—पहाड़ जंगल इस राज्य में भी बहुत हैं—राज्य में पक्की सड़कें कई एक ऐसी बना दी गई हैं कि बटोहियों को बड़ा आराम मिलता है गाड़ी बहल इत्यादि बड़े सुख से उस्पर जा सक्ते हैं—राजधानी पन्ना दतिया से ११० मील अग्निकोण को एक पथरीले मैदान पर बसी है—राज्य में हीरे की खान है अकबर के समय यहां हीरे के पैदावारी की आमदनी ८ लाख रुपये साल की थी अब बहुत कम निकलता है—हीरा १५ फुट से २० फुट की गहराई तक में निकलता है मेहनत करने से एक लाख साल का हीरा अब भी निकल सक्ता है किन्तु उसके खुदाने में आमदनी से खर्च अधिक बैठ जाता है—महाराज की पदवी महेन्द्र की गवर्नमेंट की ओर से दी गई है राज्य का प्रबन्ध बड़ा उत्तम और बहुत अच्छी दशा में है—महाराजा साहब ४ भाई हैं सब के सब बड़े सुयोग्य और विद्यारसिक हैं तृतीय भ्राता श्रीमान् दीवान् खुमान सिंह बहादुर विशेष विद्यारसिक हैं—पतंजलि के योगसूत्रों का आपने बहुत अच्छा अभ्यास किया है और पतंजलिदर्शन के गूढ़ तात्पर्यों के समझने में आप की विशेष रुचि है—जब बहुधा राजकुमार अनेक दुर्व्यसन में आसक्त हो बल पौरुष

वित्त और बहुतसा समय नष्ट करते हैं ऐसी दशा में उक्त श्रीमान् की परमार्थ चिन्तन में ऐसी दृढ़ रुचि और भली बात की ओर झुकावट हम लोगों को कितना हर्ष का अवसर है—अस्तु बुन्देलखण्ड की और २ रियासतों से पन्ना का राज्य हमें अधिक उन्नति की दशा में मालूम होता है—

चरखारी ॥

विस्तार ७८७ वर्ग मील जन संख्या ८१ ईस्वी में १४३०१५ थी आमदनी ५ लाख सालाना—दतिया से ७५ मील अग्निकोण को राजधानी चरखारी एक पहाड़ी के नीचे बसी है—महाराज की महल देखने लायक है पहाड़ी पर एक किला भी उजाड़ पड़ा है—बुन्देले राजाओं में यहां के राजा ने सब के पहले गवर्नमेंट का प्रभुत्व स्वीकार किया और सन् ५७ के बलवे में सर्कार के बड़े खैर-ख्वाह रहे—इस लिये जागीर इनाम में पाया है—महाराजा साहब तरुण अवस्था के हैं और तालीम इन को बहुत अच्छी दी गई है रियासत का इन्तिज़ाम भी अच्छा है—

छतरपुर ॥

विस्तार ११६९ वर्गमील जन संख्या १६७७०० आमदनी ३ लाख सालाना है—राजधानी छतरपुर दतिया से ८० मील पर है इस राज्य की बुनियाद डालने वाले महराठों के उपद्रव के समय यहां पहिले राजा को निकाल जो बुन्देले क्षत्री थे राज्य अपने अधिकार में कर लिया और यह पवार क्षत्री हैं—शिक्षा इत्यादि के प्रचार में यह रियासत पीछे हटी हुई मालूम होती है ॥

अजयगढ़—

विस्तार ८०२ वर्ग मील आबादी ८१ ईस्वी में १४५४ थी आमदनी सवा तीन लाख सालाना है—राजधानी अजयगढ़ दतिया से १२० मील अग्निकोण को है—किला यहां का मज़बूत और अच्छा बना है—प्राचीन जैनमन्दिर के टूटे किले के पास अब तक देख पड़ते हैं जिन्में अब बन्दर और विषधर सर्प वास करते हैं—सभ्यता और शिक्षा में यह राज्य अभी बहुत पीछे है—महराजा साहब बुन्देले क्षत्री हैं और सवाई इन की उपाधि है ॥

विजावर और समथर

विस्तार ९७३ वर्गमूल मील आबादी ११३२८५ मालकुज़ारी दो लाख साल-धरती पहाड़ी होने से कम उपजाऊ है पन्ना की खुदान इस राज्य में भी है-यहां लोहे की भी खान है-सवाई की पदवी यहां के महाराज की भी है-राजधानी विजावर दतिया से १०० अग्निकोण दक्षिण को झुकती हुई है-दतिया से ३० मील ईशान कोण समथर साढ़े चार लाख साल की आमदनी का राज्य है-समर अपभ्रंश समस्थल का मालूम होता है कदाचित् इसका समस्थल इसलिये नाम पड़ा हो कि यहां और २ रियासतों की अपेक्षा पर्वत कम हैं समभूमि में बसा है इससे समथर कहलाया-बुन्देलखण्ड की और बाकी रियासतें बहुत छोटी दस दस पन्द्रह पन्द्रह हज़ार तक की हैं-प्रधान २ राज्यों का वृत्तान्त जो कुछ अब तक मिला लिखा गया ॥

रीवां या बघेलखण्ड-

इस राज्य का नाम रेवा है जिस्का अपभ्रंश रीवां हो गया है--रेवा नाम नर्मदा का है जो एक महापवित्र नदी है और पुराणों में जिस्की बड़ी महिमा गाई गई है मेघदूत काव्य में कालिदास ने भी लिखा है "रेवा द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णाम्" इस राज्य के बीच में हो कर बही है बल्कि उस समय अमरकण्टक का पर्वत जहां से नर्मदा और सोन दोनों नदी निकली हैं इस राज्य का प्रधान स्थान कदाचित् रहा हो इसी लिये इस्का नाम रेवा पड़ा-बघेलखण्ड इस लिये कहलाया कि वाघदेव जो इसराज्य की पुनियाद डालने वाले थे विक्रमी संवत् के ५२४ में गुजरात से आय यहां बसे और इस राज्य को स्थापन किया उन्हीं के नाम से इस्का बघेलखण्ड नाम पड़ा--उन के पुत्र करणदेव ने इस राज्य को और भी बढ़ाया--महाराज अपने को बान्धवपति भी कहते हैं क्योंकि बान्धवगढ़ का किला जो दलदली धरती के बीच में बना है इसी राज्य में है-यह एक अद्भुत किला है चारो ओर इस्के दूर २ तक दलदल है-महाराज १२ छोटे राजाओं के महाराज हैं जिन्में बान्धवगढ़ और नई गढ़ी सब में बड़े हैं--राज्य भाई बन्दों में बहुत बटा है कुल आमदनी जोड़ी जाय तो ५० लाख सालाने के ऊपर होती है--किन्तु इस समय महाराजा साहब के खज़ाने में १८

या २० लाख के अनुमान आता है—कहते हैं किसी समय रीवां की अमलदारी प्रयाग तक थी रानी की मरही प्रयाग का एक मुहल्ला इस बात की साक्षी है कि इसका नाम रीवां की किसी रानी से पड़ा है—मरही या हाट तो वहां पर अब कुछ नहीं है पर नाम से अब तक रानी की मरही कहा जाता है—इसमें सन्देह नहीं सभ्यता और शिक्षा में यहां की प्रजा अब तक बहुत पीछे थी. किन्तु अब राज्य में बहुधा पाठशालायें और स्कूल स्थापित होते जाते हैं जिससे आशा होती है लोग शिक्षा इत्यादि में और २ जगह के रहने वालों के बराबर के हो जांयगे—पर बीरता हिम्मत और दिलेरी में बघेल किसी से कम नहीं हैं—बघेल सिसोदिया क्षत्री हैं महाराजा साहब और उन के भाई बन्धु कुलीनता में भी राना राठौर हाड़ा कछवाहा पवांर चौहान आदि क्षत्रियों में किसी से कम नहीं हैं वरन इन का पद बहुतों से ऊंचा है अकबर ने इस घराने को बड़ी इज्ज़त दी थी—बुन्देलखण्ड की बोली जैसी ही मीठी कोमल और रसीली है वैसा ही बघेलखण्ड की रूखी भदेस और कड़ी है किन्तु इसके शुद्ध हिन्दी होने में कोई सन्देह नहीं है इस लिये कि खुलिहर उर्दू से यह अपवित्र नहीं की गई—पुराने कवियों ने ब्रजभाषा बुन्देलखण्डी और बघेलखण्ड की बोली इन्हीं तीन का प्रयोग अपनी कविता में अधिक किया है—जनानों ब्रज की बोली से फिर भी यह अच्छी है—

बघेलखण्ड इलाहाबद और मिर्ज़ापुर के दक्षिण स्थित है—उत्तर दक्षिण और पूर्व इसके इलाहाबाद और बिहार के ज़िले हैं पश्चिम में बुन्देलखण्ड है—पश्चिमोत्तर देश और मध्यप्रदेश को बघेलखण्ड ही बीच में आय जुदा करता है—विस्तार इसका मील मुरब्बा १० हज़ार मील है उड़ीसा और नागपूर की तरहटी तक पहाड़ ही पहाड़ रीवां की अमलदारी चली गई है—जन संख्या राज्य भर की १३०५१२४ सन् ईस्वी ८१ में थी कोइला की कई एक खानें यहां हैं लोहा और तांबा की खान की भी संभावना इस राज्य में है—जंगल की पैदावरी शहतीरें लाख चिरौंजी गोंद इत्यादि बहुत पैदा होती हैं और सौदागरी के लिये बाहर जाती हैं—धरती जहां पर काली चिकनी मिट्टी की आ गई है वहां बहुत अन्न पैदा होता है जहां कहीं पर लाल मिट्टी आ गई है वहां उपज कम होती है कोदो और बड़गेहुआं बहुत होता है—कोल भील आदि जंगली फिरके इस राज्य

में बहुत हैं–नदियों का पानी कई स्थानों में ऐसे ऊंचे से गिरता है कि देखने योग्य है कोई २ झरने सौ गज़ की ऊचाई से गिरते हैं बरसात में ये झरने बड़े सुहावने मनभावने मालूम होते हैं–पहाड़ों पर ऐसे २ निराले स्थान हैं जहां जाने से अद्भुत शान्ति मन में आती है और वहां बैठ परमार्थ चिन्तन में बड़ा चित्त रमता है–बीहर का झरना प्रायः सवा सौ गज़ की ऊचाई से गिरता है–यहां टोंस का पानी एक कोस की दूरी पर बरसात में २० गज़ चौड़ी और ३ गज़ मोटी धारा में हो कर गिरता है–राजधानी रेवा या रीवां वृश्चिका नदी पर जिस्से विछिया भी कहते हैं अनुमान २२००० आदमियों की बस्ती है सन् ईस्वी १६१२ में बसाई गई है–महाराजा साहब के पूर्वजों का बनवाया एक किला भी विछिया नदी के किनारे पर है–कहते हैं श्रीरामचन्द्र से विद्यमान महाराज की ९०० पीढ़ी है––सत्तावन के बलवे की खैरख्वाही में महाराज को सर्कार से जागीर भी मिली है–

भूतपूर्व स्वर्गवादी महाराजा रघुराजसिंह हिन्दी के बड़े प्रसिद्ध कवि बड़े विद्वान् और उदार थे–श्रीमान् श्री १०८ व्यङ्कटेशरमणसिंह बहादुर अब राज्य के उत्तराधिकारी हैंगे––पं० पूरनमल महाराज के अध्यापक ने उक्त महाराज को शिक्षा बड़े यत्न और योग्यता के साथ की है जिस्का परिणाम महाराज के सौजन्य सौशील्य आदि गुणों से प्रगट है–आशा है महाराज पूर्ण अधिकार पर आने से भारत के नरेशों में एक नमूना हैंगे और आर्यकुलदिवाकर हो हम लोगों के मुकुलित मनोरविन्द को प्रफुल्लित करैंगे ॥

नागोद––

विस्तार ४५० वर्ग मील आवादी ८१ ईस्वी में ७९६२९ आमदनी ८५००० सालाना है–यह छोटीसी रियासत रीवां के पश्चिम है–पहिले यह पन्ना के राज्य में था सत्तावन के बलवे में खैरख्वाही के लिये गवर्नमेंट से थोड़ीसी जागीर भी इनाम में दी गई है–उचेहरा इस्की राजधानी है––महाराज परिहार क्षत्री हैं–

सहियर––

विस्तार ४०० वर्गमील आवादी ७१७०९ सन् ईस्वी ८१ में थी आमदनी ७२००० सालाना है यह राज्य रीवां के पश्चिम और नागोद के दक्षिण है––राजा

यहां के योगी हैं राजा की उपाधि इन्हें सर्कार से हाल में दी गई है—राजधानी महियर में एक किला सोलहवीं सदी का बना हुआ है इस राज्य में शारदा देवी का प्राचीन स्थान एक ऊंची पहाड़ी पर देखने योग्य है तीन सौ सीढ़ी चढ़ कर तब ऊपर जाना होता है—स्थान उग्र और प्राचीन है कहते हैं देवी की मूर्त्ति आल्हाऊदल की स्थापित है—

इलाहाबाद और मिर्ज़ापुर के ज़िले में बारा डहैया बड़ोखर माड़ा विजैपुर ये ५ छोटी २ रियासतें तीस तीस चालीस चालीस हज़ार सालाने की और भी हैं पर ये स्वच्छन्द नहीं हैं क्षत्री ये सब बड़े कुलीन और प्रतिष्ठित घराने के हैं—इन का विशेष वृत्तान्त मालूम होने पर आगामी अंक में देंगे—शेष—

मतवाले हाथी पर सिंहकेबच्चा का आटूटना

"तेजो यस्य विराजते स बलवान्स्थूलेषु कः प्रत्ययः,,

ऊपर के वाक्य की सचावट जपान का चीन पर आक्रमण ने प्रत्यक्ष कर दिखाया—सच है जो तेजीयान् तेजस्वी हैं वे ही वास्तव में बलवान् हो सक्ते हैं निस्पुरषार्थी बड़े डील डौल का लम्बा चौड़ा हुआ भी तो क्या—चीन वाले घमण्ड में फूले नहीं समाते थे अपने मुह मियांमिट्ठू बने हुये चीन का नाम "सेलेश्चियल इंपायर" स्वर्गीय राज्य धरे थे और समझते थे जपान वाले किसी गिनती में हैं जब मन करैं गे भुनगा सा मींज फेक दें गे—अपनी प्राचीनता की डींग मारते हुये पुरानी स्थिति रीति नीति पालन "कन्सरवेटिज़िम्" में मतवाले थे इधर जपान वालों ने थोड़े ही दिनों में वह उन्नति की जिसे खयाल कर यही मन में आता है कि आदमी मिट्टी का पुतला जो कुछ न कर डाले वही थोड़ा है—जपान ने यूरोप के भिन्न २ देशों में अपने पुरुषार्थी लड़कों को भेज २ जहां से जो कुछ पाया बटोरता गया अपनी निज की जहाज तैयार कर ली जितने विज्ञान और कला हिकमत कारीगरी यूरोप और अमरिका में अबतक प्रगट की गई जपान सब में जल्द कुशलता प्राप्त कर ली—दुनिया भर में कोई नई ईजाद को निकलते देर नहीं होती जपान में चट पहुंच जाती है रेल तार टेलीफोन सब जपान में तैयार है देश २ का सम्वाद पाने को अपना निज का

तार लगा रक्खा है—चीन और हिन्दुस्तान पुरानी लीक पीटते बाबा आदम के समय के किस्से कहानियों के बेसिरपैर के दास्तान गाय २ अपने पुराने पन के घमण्ड में ऐंठते ही रह गये जपान उन्नति के सोपान पर पांव रख देखते २ सभ्यता की अन्तिम सीमा को पहुंच सकल कला और विज्ञान का भण्डार हो अपने परोसी चीन को जा धर दाबा—अब चीन इस समय तोबा तिल्ला मचाये गिड़गिड़ा रहा है प्राचीनता का घमण्ड सब न जानिये कहां बिलाय गया अंग-रेज़ों से कहता है तुम हमारा हाथ पकड़ो रूस से जुदा खुशामद कर रहा है कि ज़रा आप ही उस अजेय सिंह विक्रान्त जपान से हमारी शिफारिस कर दीजिये फ्रान्स और अमरिका से भी जोड़ तोड़ लगाये हुये है कि तुम्ही हमारे कुछ काम आसको तो आओ—इधर यूरोप की साहसी कौमें जो सभ्यता और तरक्की में अपना औवल दरजा कायम किये रहीं जपान का एका एक नवाभ्युत्थान देख चकित हो रही हैं किसी का साहस नहीं होता कि उस सिंह शावक के विरुद्ध एक पांव आगे धरैं या एक लब्ज़ मुह से निकलैं—लक्षणों से मालूम होता है कि चीन भी हिन्दुस्तान और ब्रह्मा के समान कुछ दिनों में अपनी स्वच्छन्दता गवांय गर्दखोरा और विदेशियों का पदाघात सहने वाला हो जायगा—

क्या कहें कुछ कहा नहीं जाता—

क्या राजा क्या प्रजा क्या अपने क्या परये क्या लोक क्या कुटम्ब क्या जीव कोटि हम सब लोग क्या परमात्मा सबों के कुढंग और अस्तव्यस्त काम देख मन अकुलाता है जी चाहता है कि अपने स्वाभाविक अक्खड़पन पर आय कुछ कहैं पर क्या कहैं कुछ कहा नहीं जाता—ऊपर कहे हुओं में एक २ का गुन गाने लगैं तो सफहे के सफहे उन के गुन की गाथा से भर जांय फिर भी पछतावा बना ही रहे कि क्या कहैं कुछ कहा नहीं जाता—लीजिये हम कहते चलैं आप सुनते चलिये—सब ओर से जकड़े हुये हैं कहीं सांस लेने की जगह नहीं है नस २ ढीली है दम घुटने पर आलगा है जिधर से सुनो उधर से सिवाय रोने चिल्लाने की क्रन्दनध्वनि के पेटभर खाय सुख की नींद सपना हो गई—बड़े लोग जब अपने लड़कपन के सौकार्य और बहुतता का बयान करने लगते हैं तो सुन के अचरज होता है—वही देश है वही पृथ्वी है वही जल है वही वायु है वही मनुष्य हैं किन्तु

तब से अब कौनसी ऐसी विलक्षण बात हो गई जो पहिले का वह सुख सपना हो गया पहिले हम गज़ी गाढ़े के लिये भी तरसते रहे अब उमदे से उमदे चटकीले कपड़े पहनने को मिलते हैं जो आशाइसें और आराम हमारे बड़ों को स्वाब खयाल था वह हमे सब प्राप्त हैं सभ्यता का ज़माना है आदमियों के दैवी शक्ति वाष्प अनेक काम देख अकिल चकराती है तब भी सुख नहीं है मुह खाते हैं पेट ललाते हैं—यह सब ऐसा क्यों है बराबर सोचा किये कि आप के मन में बैठा दें कि इस सबब से यह ऐसा है किन्तु कोई बात खयाल में न आई अन्त को पछताते हुये यही कहना पड़ा क्या कहैं लाचार हैं कुछ कहा नहीं जाता कि क्यों हमारी ऐसी दशा आगई—जो कहैं हमारे सामयिक शासनकर्ता हमारी दीन दुखी दशा का जो कुछ कारण है उसे न जानते हों सो नहीं एक २ घराने का भीतरी तथा बाहिरी जो कुछ हाल है हमारे कर्मचारियों को आईना है फिर भी लालच और अपना स्वार्थ उन्हे ऐसा दबाये है कि देखते हुये भी नहीं देखते सुनकर भी अनसुनी कर जाते हैं—सरअकलैण्ड कालविन सरीखे जिन की भारी से भारी टैक्स लगाने में कभी दरेग नहीं हुआ जब तक यहां रहे दीनदुखिया प्रजा पर दया का भाव कैसे रखना होता है कभी जाना ही नहीं सो भी विलायत पहुंच नइनटीन्थसेंचुरी नामक मासिकपत्र में अब लम्बा चौड़ा लेख झाड़ते हैं कि गवर्नमेण्ट ने खर्च बहुत बढ़ा रक्खा है इण्डिया का दिवाला हो रहा है खज़ाना बिलकुल खाली है लोन पर लोन बढ़ता ही जाता है सीमा रक्षा तथा फौज आदि का खर्च गवर्नमेंट यदि कम नहीं करती तो बिना अब कोई नया टैक्स लगाये काम नहीं चल सकता और नये टैक्स की बिलकुल गुञ्जाइश नहीं है बरन नया टैक्स लगाना मानो रशिया के लिये यहां आने को आसानी देना है—यद्यपि कालविन से स्वार्थसाधन चतुर का अवश्य इस लेख से कुछ निज का स्वार्थ होगा निरी हिन्दुस्तान की भलाई और यहां के दुखियों के दुःख का बोझ हलका करने की नियत से यह लेख नहीं लिखा गया किन्तु जो बात सत्य होती है कहां तक छिपी रह सक्ती है हिन्दुस्तान की जैसी नाज़ुक हालत है उसपर खयाल कर राजनीति का मर्म समझने वाले नीतिज्ञों के मन में कँपकँपी होती है और देर तक सोच विचार के उपरान्त सहसा उन के मुख से यही निकलता है हे परमेश्वर! इस देश का भावी परिणाम क्या होगा क्या कहैं कुछ कहा नहीं जाता—शिक्षा

सभ्यता नई रोशनी की धारा बह रही है (नई तालीम नई उमङ्ग नये जोश के उफान में भरे हुये हमारे नवयुवक देश के भावी नवाभ्युत्थान का परिचय देते हुये हिन्दुस्तान और विलाइत को एक कर रहे हैं) दर्शन विज्ञान गणित साहित्य इत्यादि विद्या के प्रत्येक भाग में योग्यता और लियाकत का विस्तार किस ओर छोर को पहुंचा है जिसे देख चित्त चकित होता है देशहितैषियों का मुदित मन प्रफुल्लित हो रहा है कि अब हमारा दुःख दरिद्र दूर हटा अब हम भी सभ्य और सुशिक्षितों के समूह में गिने जायंगे—अब हमें आगे बढ़ने के लिये यूरोप की शाइस्ता कौमों का मुंह न ताकना पड़ेगा—इस २ तरह के मनमोदक खाय मगन हो रहे थे कि अकस्मात् अत्यन्त नीचे को गिरी हुई नष्ट भ्रष्ट बिगड़ी समाज पर ध्यान गया एक २ व्यक्ति के कुढंग कुचाल और बद्धमूल कुसंस्कार का खयाल कर हमारी वह झूठी खुशी तवे का बूंद हो गई क्रोध रंज और करुणा के कल्लोल में पड़े घण्टों तक गोता मारा किये—क्रोध और रंज इस बात पर होता था कि ये सब भांत यहां तक गिरी दशा में आ-गये कि पेट भर भोजन के लिये भी तरस रहे हैं तब भी नहीं चेतते हिमाकत और बेहूदगी से बाज़ नहीं आते तब और अब ये कब चेतेंगे बाल्यविवाह आदि अनेक बद्धमूल कुसंस्कार से प्रत्यक्ष हानि देख कर भी आंख में पट्टी बांधे हुये हैं वे ही दूधमुहे बालक जिन्हें ये लाल कहते हैं जिन्हें प्राण से अधिक चाहते हैं उन पर इस तरह की निठुराई ये क्यों कर रहे हैं—जैसा कोई हाथ के लगाये पौधे को जल की धारा से सींचने के बदले पौधे को फुनगी ही से कतर ले और उसकी स्वच्छन्द बाढ़ में आगे के लिये बड़ाभारी व्याघात पहुंचावे—निरा कच्चा फल जिसमें अभी जूस नाम को भी नहीं आया तभी से जब उसका चूसना आरंभ कर दिया गया तब आगे को उससे क्या उम्मेद रह गई " अली कली ही ते फांस्यो आगे कौन हवाल "—आगे का भी जो कुछ हवाल है वह प्रत्यक्ष है देश का देश निष्पुरुषार्थी निर्वीर्य निःसत्व अल्पबल अल्पायु पिंडरोगी हो गया इन्हीं सब बातों को सोच २ और इन की मूर्खता पर पश्चात्ताप और खिन करते करुणा के कल्लोल में डूबते उतराते ऐसे अथाह शोक सागर में मग्न हो रहे हैं कि क्या कहें कुछ कहा नहीं जाता—मसल है काज़ी क्यों दुबले शहर के अन्देशे हमें क्या प्रयोजन कि हम इन मूर्खों की मूर्खता का खयाल कर २

व्यर्थ को अपना चित्त दुखावें और दुखावैं भी तो हमारे इस कुढ़ने से और चित्त दुखाने से होता क्या है हमारा उपदेश और कहना ऊसर पृथ्वी में बिया बोने के समान निरा निष्फल है किन्तु देश और जाति वात्सल्य का उफान अब हमे रहने दे—इस तरह पर एक ओर अपना स्वाभाविक अक्खड़पन दूसरी ओर देशानुराग की निस्स्वार्थ प्रेरणा दोनों मिल एक ऐसा बिकार हमारे चित्त में पैदा करते हैं कि क्या कहैं कुछ कहा नहीं जाता—

जन्म भर फूंक २ पांव रक्खा ऐसे २ क्लेश सहे कि क्या कहैं कुछ कहा नहीं जाता जिस्में हमारे कुटुम्ब के लोग भाई बन्धु सब हम से प्रसन्न रहैं समाज में हम नेक नाम रहैं कोई हमें बुरा न कहै—ईश्वर की कृपा से वह क्रम हमारा अब तक निबह गया और सोचते थे कि हम ऐसा ही निबाह ले जावंगे किन्तु दबाव में पड़ एक काम हम से ऐसा बन पड़ा कि इतने दिनों का हमारा कराधरा सब नष्ट हो गया उन की दृष्टि में हम निहायत हल के जचने लगे हमारी सफाई और स्वच्छता में दाग लग गया जिस्का हमे पछतावा है और जन्म भर ऐसा पछतावा रहे गा कि क्या कहैं कुछ कहा नहीं जाता—एक वह समय था जब सर्कार ने बड़े २ शहरों की कौन कहे छोटे २ कस्बे और गावों में भी हलकाबन्दी मदर से और स्कूल स्थापन कर हमे विद्या का चस्का दिलाया और पढ़ने पढ़ाने का भरपूर शौक हम लोगों में पैदा कर दिया ऐसा कि अब हम उमदा से उमदा तालीम हासिल करने के लिये अत्यन्त प्यासे हो रहे हैं और यही चाहते हैं कि किस तरह यावत् विद्या घोर कर अपने बालकों को पिलाय दें सो अब मुंह दिखाय ढेला मारने की भांत पढ़ाने लिखाने में हरतरह की सख्ती होती जाती है—शिक्षा विभाग क्या है मानो इस महकमे के अधिकारियों को यह कामधेनु है किसी न किसी बहाने लाखों कमाय लेना कोई बड़ी बात नहीं है—अब यह हो नहीं सक्ता कि बालकों को मूर्ख रहने दें पढ़ाते हैं तो उन की तालीम का बोझ उठाया उठता नहीं किताबों का दाम स्कूल और कालेज की फीस जिस हद्द को पहुंची हुई है उस्का अदा करना हमारी इस बुभुक्षित दशा में दुर्घट

हो रहा है हमारी शिक्षा की विरोधी गवर्नमेंट की इस पलिसी पर खयाल कर क्या कहें कुछ कहा नहीं जाता कि क्या उपाय की जाय जिस्में मूर्खता पिशाची अब फिर हम पर आक्रमण न कर ले—दीनबन्धु कहलाते हैं जिन के लिये विश्वंभर कृपा वस्तुतालय दयासागर विभु व्यापक अन्तर्यामी आदि उपयुक्त विशेषण समझे जाते हैं—जहां अपना कुछ बश नहीं चलता यत्न और उद्योग कर कराय जब मनुष्य थक जाता है तब दैव की इच्छा मान सन्तोष कर शिथिल हो बैठ रहता है—कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुम् समर्थे छूंछी भरै भरी ढरकावै आदि सब सामर्थि जिसे प्राप्त है श्रुति चिल्लाय २ पुकार रही है कि वह जगदाधार है—

"हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधारपृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम" ॥
"येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वस्तभितं येन नाकः ।
योऽन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम" ॥

इत्यादि—सो उसके कुलच्छन देख २ और कुढ़न पैदा होती है—हम कहते हैं इसी करतूत के भरोसे हम मान लें कि उस ने सूरज चांद आकाश पाताल नर्क स्वर्ग सब बनाया और अपना विश्वंभर नाम धराय कीट पतंग से लगाय ब्रह्मा तक को जीव कोटि में थाप पालन पोषण करता है और आप निर्लेप निरीह परमात्मा परात्पर बनता है—कुलच्छन भी कितने जिन का आर पार नहीं एक दो बात हो तो कही सुनी जाय—गुलाब को ऐसा सुन्दर बनाय उस्में कांटा पैदा कर दिया "को कहि सकै बड़ेनसों बड़े काम की भूल—दीनी दई गुलाब की इन डारिन पे फूल"—बृन्दारू का फल ऐसा मनोहर बनाय स्वादु ऐसा कड़ुआ कर दिया मानो विष का बड़ा भाई—रुपये को संसार में सार पदार्थ और यावत् साधन सब का मुख्य अङ्ग कर उस्में एक ऐसा ज़हरीला असर पैदाकर दिया कि जिसे पाय आदमी मुग्ध हो जाता है अच्छा किसी कवि ने कहा है—

हाला हलो नैव विषं विषं रमा जनाः परं व्यत्ययमत्र मन्यते ।
निपीय जागर्त्ति सुखेन यं शिवो स्पृशन्निमां मुह्यति निद्रया हरिः ॥

सर्वज्ञ हो कर भी क्या वह यह नहीं जानता कि सब भांत हीन दीन हिन्दुस्तान की प्रजा को अब केवल खेती ही का सहारा रह गया है सो उस्में ऐसे २ विघ्न छोड़ देता है कि कभी पूरा नहीं पड़ता—इस साल अतिवृष्टि ही ने शस्य का सर्वनाश कर दिया जितना पानी तीन वर्ष में बरसता उतना दो महीने में बरस लाखों का नुकसान कर दिया पेट के अन्न का फीकना तो था ही रहने को कुटी भी न रही पानी में न जानिये कहां वह गई इत्यादि अस्तव्यस्त काम देख उस्की ईश्वरता पर चित्त ऐसा चक्कर में आता है कि क्या कहे कुछ कहा नहीं जाता—इत्यादि यहां पर थोड़ासा नमूने की तरह हमने इस फीकने को कह सुनाया सच तो यों है कि नहूसत की बुनियाद इस फीकने का अन्त नहीं «क्या कहें कुछ कहा नहीं जाता» इस तकिया कलाम को जिस्में लगाओ लगता जायगा और बात की लर न टूटैगी—

निर्मांस भोजन के अधिकारी कैसे होने चाहिये

मांसभोजन वाले हमारे लेख पर बुद्धि के दरिद्री दो एक सम्पादक व्यर्थ की टें टें कर रहे हैं सम्पादकों में भी वे जिन से हमारा कुछ सरोकार नहीं है जिन का अनेक कुढंग देख हम उन से बदला भी नहीं करते न उन से किसी तरह का लगाव रक्खा चाहते हैं हम तो ऐसों की चरचा चलाना भी अच्छा नहीं मानते यद्यपि ऐसे लेख जिन के लिखे हैं उन्हे भी हम जानते हैं क्योंकि खुद सम्पादक साहब में इतनी योग्यता कहां कि ऐसा भी लेख लिख सकैं—अस्तु ऐसों के कुतर्क दूर करने को हम अपने पढ़ने वालों को बतलाया चाहते हैं कि मांसभोजन से परहेज़ करने वाले कैसे होने चाहियें—जो दूसरे के धन को मिट्टी का ढेला और ठिकरी मानते हों औरों की बहू बेटी को जो निज कन्या और

बहिन समझते हो किसी की निन्दा या चवाव में मौन रहते हों—जैसा किसी कवि ने लिखा है—

मूकः परापवादे परदारनिरीक्षणेऽप्यन्धः ।
पङ्गुः परधनहरणे स जयति लोकत्रये पुरुषः ॥

दूसरे की निन्दा करने में गूंगा पराई स्त्री के ताकने में अन्ध परधन हरण में लुंज ऐसा मनुष्य तीनो लोक में सब के ऊपर है"—जो दियानतदारी में पक्के हैं झुठाई झूठा बरताव ऊपर के देखलाव से कोसों दूर भागते हों चिकने मुह के ठग न हों सदाचार के उदाहरण हों सच्ची शिष्टता और शिराफत में जिसके लिये लोग अंगुल्या निर्देश करते हों—न सब सही तो इन गुणों में कुछ भी जिन्में हों ऐसे लोग यदि मांसभोजन से भी परहेज़ करैं तो उन का परहेज़ करना सब तरह पर उचित और जा है—हम लिख चुके हैं परमार्थसाधन में मांसभोजन वैसा ही हानिकारक और बाधा पहुंचाता है जितना बलवीर्यवर्द्धक आदि गुणों के कारण राजनैतिक दृष्टि से "पोलिटिकली" यह संसार का उपकारक है—जो लोग केवल मांस नहीं खाते बरन हर तरह की बुराइयों में सैंदे हुये विषयलम्पट जिन के भयङ्कर छिये और प्रगट भी दुराचार देख रोंघटे खड़े होते हैं ऐसे महाअघोरी भी अपने को परम पवित्र मान स्वर्गगामी होने की आशा रखते हों उन के समान धूर्त्तप्रचारक समाज का कलंक दूसरा कौन होगा—हम यह नहीं कहते मांसभोजन परमार्थसाधन का एक अंग है न हम यही चाहते हैं कि विषयी जन मांसभोजन को विहित और उचित समझ हमारे लेख को अपने लिये एक ढाल मान बैठैं किन्तु आर्य जाति हिन्दू एक तो यों ही शौरों से हीन बल कम हिम्मत दबा करते २ विदेशियों के पाददलित हो गये मांसभोजन के सम्बन्ध में यह आन्दोलन अब और क्या अनर्थ करेगा—जो हो आपस में फूट का बीज आर्यसमाज में यह झगड़ा बुरा उठा है अन्त इसका अच्छा नहीं है—

मनुष्यजीवन की कर्त्तव्यता—

हमारे देश के सुशिक्षितों के बहुधा दो दल देखे जाते हैं—एक दल वैसे सुशिक्षितों का देखा जाता है जिन्हों ने प्रथम श्रेणी की शिक्षा प्राप्त की है पर उन का पढ़ना लिखना निरा किताबों का बोझ मात्र रहा—मनुष्यजीवन की कर्त्तव्यता क्या है इस बात पर लक्ष्य कर उन के जीवन में अन्त तक कोई ऐसी बात न पाई गई जिस्से हम उन का पढ़ना लिखना सफल कर मानते—दूसरे वे हैं जो उत्तम शिक्षा का फल अपने कामों से प्रगट कर दिखला रहे हैं—आज हम अपने पढ़ने वालों को इन दोनों दलों के लोगों के जीवन की तुलना से मनुष्यजीवन की कर्त्तव्यता क्या है यह दिखलाया चाहते हैं—इस्में सन्देह नहीं कि पहिली श्रेणी वालों ने पढ़ा लिखा बहुत कुछ किन्तु उन के चित्त में यह कभी न आया कि अपनी विद्या का फल देश या जाति के लोगों पर भी प्रगट कर दिखावें—बड़े विद्वान् हैं, सज्जनता और सच्चरित्र की कसौटी हैं, जिन की चालचलन के बारे में किसी को कभी कोई शक्क हो ही नहीं सक्ता, परम शान्त ऋषि तुल्य शत्रु मित्र उदासीन सब पर समभाव रखने वाले, किन्तु साथ ही सङ्कोच की मूर्त्ति, साहस तथा किसी बात को करके दिखाना कैसा होता है कभी जाना ही नहीं—उन का अपना निज का कोई सिद्धान्त हुई नहीं—सर्वसाधारण की भलाई क्या है और क्योंकर हो सक्ती है इस्की उन्हें भरपूर समझ है क्योंकि ऊंचे दरजे की तालीम हासिल की है—इस तरह के मामिलों में किसी ने यदि उन्हें बहुत ही दबाया और बड़ा बोझ छोड़ा ऐसा कि दबाव में आय उन्हें उस मांद से निकलना पड़ा जहां वे किताब के अक्षरों में आविष्ट चित्त समाधि लगाये मौन पड़े थे तो अनेक ऐसे बहाने पेश करेंगे जिस्में किसी तरह छुटकारा पावें—मिल, स्पेन्सर, लीकी, हक्सली के अनेक प्रमाण अपनी बात के पोषण में देंगे जो कुछ फिलासोफी और लाजिक उन्हों ने कालेज में पढ़ा था उस्की गठरी खोल के रख देंगे जिस्में उन का जी छुट जाय और ऐसे २ नाज़ुक मामिलों में उन्हें शरीक न होना पड़े—नाज़ुक इस लिये हम ने कहा कि मामिला यदि कोई राजकाजसम्बन्धी «पोलिटिकल» हुआ तो हाकिमों की डर लगी है कि कलट्टर साहब या दफ्तर के बाला हाकिम सुन लेंगे कि इस ने फलाने पोलिटिकल मामिले में सहायता दी या यह भी उस्में शरीक था तो तरक्की रुक जायगी सर्कारी नौकरी न मिलेगी—समाजसम्बन्धी कोई बात हुई तो इतनी हिम्मत नहीं कि किसी काम में अगुआ हो कुछ नमूना दिखलावें

पुरानी लीक के परिवर्तन में क्या २ गुण हैं उसकी ओर कभी ध्यान न दौड़ावेंगे उसके तोड़ देने से क्या २ बुराई होने की सम्भावना है इसे खोल २ दिखावेंगे—धर्मसम्बन्ध में भी अधर्म को धर्म मान लेना जैसा अन्धपरम्परा में प्रचलित हो रहा है उसके विरुद्ध चलने में बदनामी की डर है जनसमाज में हमारी हँसी होगी इस खयाल से किसी संशोधन में पहिले आप नमूना दिखलाने वाले न होंगे बरन चित्त से चाहो उसपर श्रद्धा न भी हो तो दम्भ और मक्कारी में अगुआ बनेंगे—निश्चय मानिये भीरुप्रकृति और हिम्मत का न होना हमारे बहुत से सुशिक्षितों को बेकाम कर रक्खा है—इसका जो कुछ कारण हो या तो यह कारण हो कि उन की तालीम ही इस ढंग की उन्हें दी गई है या उन का खान पान इस तरह का है कि उनमें तेज़ी नहीं आने पाती—अथवा इस देश की आब हवा का कोई ऐसा ज़हरीला असर हो कि इसका अंकुर उन के जी में नहीं जमता—अथवा यह कारण हो कि ये कच्चे वीर्य के पैदा हैं पुष्ट रजवीर्य से उन की उत्पत्ति होती तो सत्य, पुरुषार्थ, तेजास्विता, आत्मनिर्भर, आत्मत्याग, स्वतंत्रता, साहस, प्रभुत्वशक्ति आदि पौरुषेय गुण कहां तक न आते—स्वार्थनिष्ठा, भीरुता, दास्यभाव इत्यादि की मैल जो कोई के समान उनमें जम रही हैं उसका यही कारण है कि पैदाइश इन की उन माता पिता से हुई जिनमें पौरुषेय गुण आये नहीं तब इन्में कहां से आसक्ते हैं—हमारा यह प्रयोजन नहीं है कि ये ऋषि तुल्य हो अपना सम्पूर्ण जीवन केवल परोपकार में लगावें और देश की भलाई महायज्ञ में अपने को होम कर दें यह तो बड़े भाग्यशाली महानुभाव लोगों की कर्तव्यता है हिन्दुस्तान का ऐसा भाग्य कहां कि यहां के भारत सन्तान एक बारगी अपनी गाढ़ निद्रा से जाग उठेंगे किन्तु थोड़ा भी इस ओर पांव बढ़ाते तो हमें सन्तोष रहता—इस ओर इन का पांव बढ़ाना कुछ अचरज की बात न थी क्योंकि ये ज्ञानोन्नति सम्पन्न हैं देश का अभ्युत्थान और पतन किन २ बातों पर निर्भर है इसके वसूल को समझते हैं इन से यदि हम ऐसी आशा न करें तो उन बेचारों से क्या उम्मेद की जा शक्ति है जिन्में शिक्षा नहीं है—मनुष्य जाति की कर्तव्यता क्या है इसका उदाहरण दूर क्यों ढूंढने जांय हमारे देश का इतिहास हो हमें यह बतला रहा है जिस समय अत्याचारी मुसलमानों ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण करना आरंभ किया था उस समय हमें किस बात की कमती थी बरन दुर्भिक्ष कर पीड़ित विद्यमान राज से तब यह देश विशेष रंजा पुंजा था—देश में जितना

धन तब था उसका बीसवां हिस्सा भी अब बाकी न रहा न व्यौपार यहां का तब किसी अंश में घटा हुआ था—उस समय यहां के माल की जो कुछ बाहर रफ्तनी होती थी उसकी जगह अब माल की आमदनी होती है जो पहिले बाहर से रुपया यहां ढोया चला आता था उसके एवज़ अब ढोया चला जाता है—वीरता हिम्मत दिलेरी में भी अब से तब के लोग बहुत आगे बढ़े थे फिर क्यों यहां के लोग अत्याचारी मुसल्मानों के आक्रमण से अपने देश को न बचा सके—इसी लिये कि अन्न धन सब भांत परिपूर्ण रहने पर भी परस्पर की सहानुभूति हमदर्दी जो एका और कौमीयत की बुनियाद है सो तब न थी—हमदर्दी का अभाव तब कहां तक था उसका नमूना जैचन्द्र और पृथ्वीराज की कलह अच्छी तरह प्रगट कर रही है—न जानिये किस कुसाइत से इस फूट की बेल हमारे देश में बोई गई कि उसकी जड़ यहां से जाती ही नहीं उसका खोदेना इन्हीं सुशिक्षितों की कर्तव्यता पर अब आ लगा है जिन का चरित्र हम ऊपर गाय गये—सच पूछिये तो सहानुभूति का पैदा करना ही सब धर्मों में श्रेष्ठ धर्म है, यावत् सत्कर्म हैं सबों का सारांश है, महायज्ञ है, हमारे वर्तमान आधुनिक धर्म, जिन से उस सहानुभूति की जड़ कट रही है उन्हें हम कैसे कहैं कि ये वास्तव में धर्म हैं और इस धर्म को यदि किसी ने पहचाना तो स्वामी दयानन्द—नहीं तो जितने अब तक आचार्य और मतप्रवर्तक हुये बराबर चौका लगाते ही गये और इसकी जड़ पर कुल्हाड़ा चलाते गये—अनेक २ धन्यवाद अंगरेज़ों को है जिन्हों ने अंगरेज़ी शिक्षा हम लोगों में फैलाय नासमझी का तिमिर दूर हटा दिया हृदय के किवाड़े खुल गये क्या कर्तव्य है इसका ज्ञान अब हमें होने लगा और उसी कर्तव्यता पर आरूढ़ हो हम अब कानग्रेस कर रहे हैं तरह २ की कानफेरेन्स अनेक नामरूप में करते जाते हैं सभा कमेटीक्लब की तो कुछ गिनती नहीं कि महीने में कितने हुआ करते हैं—नये लगाये पौधों के समान यद्यपि हमारे शिक्षितों के दल में से बहुत से वन्ध्यपादप के सदृश हो गये हैं फिर भी अपने कर्तव्य पर लक्ष्य किये हुये उस दल में से कोई २ निकली तो आते हैं—आशा होती है कोई दिन ऐसा भी आवै कि इन का सम्पूर्ण दल का दल एकसा अपने कर्तव्य पर ध्यान देने वाला हो इस पुराने भारत को फिर से नया कर डाले—देशानुराग साहस, सहानुभूत, एक चित्त हो काम करने की सामर्थि, आत्मत्याग अर्थात् अपनी हानि होती हो और समस्त देश और

जाति का उसमें फायदा है तो अपनी निज की हानि को एक प्रकार का लाभ समझना, इत्यादि बातें इन्हीं अंगरेजों को यहां अपना राज्य जमाने में सहायक हुई और होती जाती हैं—हिन्दुस्तान के लोगों में ये सब बातें न होने से देश धन सम्पत्ति से सब भांत भरा पुरा हो कर खाली और सूखा रहा जैसा किसी का खाली घर पाय कोई परदेसी बे रोकटोक आकर अपना दखल उस घर में जमा ले उसी तहर पर ये आकर घर के स्वामी और प्रभु बन गये और घरके असली रहने वालों को गुलाम और उच्छिष्ट भोजिनोदासाः बना कर रखने लगे—हम लोग पूर्वोक्त पौरुषेय गुण विहीन होने के कारण परमुखप्रेक्षी हो उन के उच्छिष्ट महाप्रसाद को भी अपने सौभाग्य की परमावधि मानते हैं—ईश्वर की देन तो है न जानिये क्यों योरुप महाद्वीप की प्रत्येक जाति से वह इतना सन्तुष्ट है और एशिया महाद्वीप के लोगों से वह इतना रूठा हुआ है कि एशिया की जितनी कौमें हैं कोई भी उतनी सरसब्ज नहीं हैं जैसा यूरोप की कौमें हैं और साहस आदि पूर्वोक्त गुणविशिष्ट हो अपनी स्वच्छन्दता कायम किये हैं और दुनिया के दूर २ के हिस्सों में भी अपना प्रभुत्व जमाये हुये हैं—सच है जिस्पर ईश्वर प्रसन्न होता है उसे सुबुद्धि देता है और उसी सुबुद्धि से पूर्ण हो मनुष्य महत्व को पहुंचता है—ईश्वर से प्रार्थना है हमारी हिन्दू जाति को भी वही सुबुद्धि दे जो इस समय यूरोप और अमरिका निवासियों को दिये है—हम बहुत भोग चुके अब कब तक ऐसा ही भोगते रहैं गे अब हमारी भी दुःख निशा का अन्त होना उचित है पश्चिमी विज्ञान और पश्चिमी सभ्यता का फौफट हो रहा है अंगरेजी शिक्षा का अरुणोदय देश के एक छोर से दूसरे तक छागया है अब केवल हमारे सुशिक्षितों की कर्तव्यता के सूर्योदय की कसर रह गई है—हमारे सुशिक्षित सुसभ्य नवयुवक अपने २ कर्तव्य पर ध्यान दे जब तक सन्नद्ध न हों गे तब तक पूर्णरीति से उस दुःख निशा का अन्त न होगा न हम किसी लायक्क हों गे किमित्यधिकं पल्लवितेन—

कार्तिकस्नान—

भाई वाह कार्तिक स्नान भी क्या ही कैफीयत का नहान होता है—इस साल हमारे पंच महाराज पर भी न जानिये क्या शामत सवार हुई कि कातिक नहाने का हौसिला चरोंया पौफट होने के पहिले जब हाथ से हाथ नहीं सूझता था

घर से चल खड़े हुये—रास्ते में इन के लड़कार्इ के दोस्त एक बनिया सम्पट से इन की भेंट हो गई—पंच महाराज को इस पतित अपाहिजा की अद्भुत चेष्टा और कुढंग देख घिन तो बड़ी हुई जी कुढ़ गया पर क्या करैं आंख की शील न तोड़ सके "अद्यप्रातरेवानिष्टदर्शनं जातम्" इत्यादि चित्रग्रीव के किस्से का हितोपदेश के कई जुमले याद आये—ईश्वर का स्मरण कर मन में कहा भगवान् तड़के ही इस मनहूस की सूरत देखने में आई न जानिये आज का दिन कैसा कटे—अस्तु अत्यन्त विनीतभाव से नम्रतापूर्वक बड़े अदब के साथ दूर से पैलगी कर पंचमहाराज भी चोहल के खयाल से इस लम्पट से जा मिले—पंचमहाराज की चार आंख होते ही झूमता लड़खड़ता हुआ यह बोला ओहो आप भी आये हैं—बहुत दिनों पर आज आप के दर्शन हुये मैंने तो समझा कि इस साल की गोमती की बाढ़ में आप भी कहीं बह गये—खैर चलिये आप को महान की कैफीयत दिखलावें—दोनों आगे बढ़े—भगत जी को आते देख—जैगुपाल साहब—आप की लक्ष्मी माला तो खूब ही टट्टी के आड़ में शिकार है—आइये आइये भीड़ निकली जाती है बुड्ढे हुये तो क्या जी तो तरोताज़ा टटका बना है—आगे बढ़—यह कौन हैं, सब पण्डितों के सिरताज़ महा पण्डित श्रीमान् पुंडलीदास और कुलटाकुलघातक—राम करै यह जुगुल जोड़ी जुग २ जीवै भला कातिक के नहान को किसी भांत रौनक तो पहुंचा रहे हैं—शाबास लगी रहै टकटकी—"लोचन रोम २ प्रति मांगो—एक टक रहैं निमिष नहिं लागैं पहुति नहैं चलाऊं"—"मैनन्हि यहै रूप जो देखौं—तौ ऊधौ यह जीवन जग में सांच सुफल कर लेखौं"—

मनते ये अति ढीठ भये—बातो आय बोलती कबहूं ये जुगये सुगये—ज्यों भृंग केचुरी बिसारत फिर नहि ताहि निहारत—तैसेहि जाइ मिले इक टक ह्वै उरते लाज निवारत—

सच है ये नेत्र नहीं हैं वरन "मनमथ बान दुस्सह अनियारे निकसे फूटि हिये वहि ओर" रूप माधुरी को पीते २ अघाते ही नहीं—स्वर्ग में इन्द्र सहस्राक्ष हैं यहां ये दो ही नेत्र से टक टकी में सहस्राक्ष को परास्त करते हैं—टक टकी क्या भीत के उरेहे चित्र भी मात हैं—ये कौन हैं—काकचेष्टा बकध्यानी—हाथ गोमुखी में मन सुमुखी में—आहा आप हैं बड़ी देर बाद पहचाने गये—अभी नई उमंग है इश्क के कूंचे में पांव रक्खा है ग्यारह महीने परखते २ किसी तरह कातिक आया तो अब क्यों जी को जी ही में रहै—ये कौन हैं वैष्णवाग्रणी गोमती

बाबू गोपालदास जी जै श्रीकृष्ण जाइये आइये की लगी रहै "चाहो जितना जाय लगी कैसे छूटै"—

"लम्बा टीका मधुरी बानी दगाबाज़ की यही निशानी"

हमारे लाला जी बड़े सीधे साधे सज्जन महापुरुष हैं शील के सागर हैं क्या करैं आंख का रोग लग गया है—एक पन्थ दो काज आंख भी सिँक गई "सार्ङ्गधराक" चेहल कदमी भी हो गई—ये कौन हैं ये शहर के औवल दरजे के रईस हैं क्या करैं टक टकी का शौक इन्हे भी पैदा होगया है अपनी सब बात और प्रतिष्ठा को धूर में मिला रहे हैं—लोहे तांबे उतर चुके कोई बात बाकी नहीं है—और ये कौन हैं—ये बाबू साहब हैं—बाबू साहब "बाबू वयकनुख्त आबूशवद्" भाषा हैं भाषा बंगाली भाषा "की तुम्ही भलो बाशो बाबू साहब"—यह कौन आई सब कुलटाओं की सिरमौर मानो दूसरी कामकन्दला माधवानल को कहां छोड़ आई—चल फड़कती छमाछम यह मरा वह काटा यह लूटा—"अठिलात जात गोरी रंगमें भरी" काम कन्दला के कदम ब कदम यह दूसरे कौन हैं पोथाधारी कथक्कड़ व्यास—नमस्कार व्यास जी नमस्कार "नमो व्यासाय महते"—"जयति पराशरसूनुः सत्यवतीहृदयनन्दनो व्यासः" श्लोक का गढ़ने वाला भूल गया आखिर आदमी की अकिल कहां तक खता न करे—सत्यवती हृदयनन्दनों की जगह नव युवति हृदयनन्दनो कहना था—गोपियों में कन्हैया इन्हे जो चैन है सो किसी को न होगा धर्म के वक्ता अधर्म के कर्त्ता लम्पटता के राह दिखलाने वाले आचार्य—इन की रसीली तिरछी चितवन ने कितनी अबलाओं का मन मुठी में कर रक्खा है "तिरछी चितवन पीतम प्यारे मन वैरागी मोरा रे"—जाइये जाइये मैं आप के आनन्द में बाधक नहीं हुआ चाहता—अब ये विकट सूरत रोरी का आड़ा जमाये कौन आये "दिनोपवासी तु निशामिषाशी जटाधरः सन्कुल-टाभिलाषी" महामहोपाध्याय कुक्कुटमिश्र "गुरोर्गिरः पञ्चदिनान्यधीत्य वेदान्त-शास्त्राणि दिनद्वयं च। अमीसमाघ्राय च तर्कवादान् समागताः कुक्कुटमिश्रपादाः" जाइये जाइये आप को अभी देर तक सन्ध्या करना है—इनकासा गुप्त होना भी काम रक्खा है "गुप्तो मुक्तः प्रकटो मृतः" इत्यादि कुढङ्गों का कुचरित्र देख पशुमहाराज का जी ऊब गया बड़ी चिन्ता पैदा हुई उस अपने साथी से किसी तरह गला छुटाय घर चले आये और कार्त्तिक के स्नान को सदा के लिये प्रणाम

किया जो कुछ वहां देखा उसे लेखनी बद्ध कर हमारे पास भेज दिया जिसे हम ने भी अपने पढ़ने वालों के चित्त विनोदार्थ यहां पर प्रकाश कर दिया—

पुस्तकप्राप्ति—

हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास ॥

श्रीराधाकृष्णदासलिखित सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा काशीद्वारा प्रकाशित काशी की यह नागरीप्रचारिणी सभा हिन्दी के उद्धार का बड़ा प्रयत्न कर रही है—हम सब हिन्दीपत्र सम्पादकों को उचित है इस सभा की जहां तक जिस्की सामर्थि हो सहायता करैं प्रत्येक नगर में यदि ऐसी ऐसी एक सभा स्थापित हो जाय तो उर्दू हाइन का ज़ोर बहुत टूट जाय—समाजसंशोधन और धर्मसम्बन्ध में हमारी कुछ भलाई में हिन्दी का उद्धार और उस्की उन्नति पहली सीढ़ी है—खत्रीहितकारी तथा कई एक कायस्थ साहबों के कायस्थसमाचार कायस्थगज़ट आदि नाम से प्रचलित पत्रों को देख हमे बड़ी हँसी आती है और मन होता है कि इन विक्षिप्तों को पकड़ २ बरेली भेज दें—जिन्हें खफ़्त सवार है कि हम उन पत्रों के द्वारा अपनी जाति का संशोधन करैंगे और कौमीयत की गिनती में औवल समझे जांयगे जाति या समाज की उन्नति का पहिला अंग भाषा की उन्नति है—उस्की जड़ इन उर्दू पत्रों से कटती जाती है हमे खत्री हितकारी के दम्भ पर विशेष शोक होता है इस ने हितकारी अपना नाम क्यों रक्खा खत्री-फाड़दा वख्श रखना उचित था क्योंकि हितकारी शब्द से सुनने वाले को बोध होगा कि यह कोई हिन्दीभाषा का पत्र है—इसी तरह पर आर्यसमाजी का भी बहुधा यही हाल देखा जाता है दावा तो आर्य बनने का करैं गे और वेद का उद्धार अपना कर्त्तव्य मानें गे पर किताबें और लेक्चर इन के शुस्ता से शुस्ता उर्दू के रहते हैं जिन्में नाम को भी कहीं हिन्दी संस्कृत के शब्द नहीं आने पाते इन आर्यसमाजियों को चाहिये वेद की भाषा पहिले अरबी कर डालैं—

« मा पिलँगिनी बाप पिलङ्ग । तिन के लड़के रंग बरंग » ॥

अस्तु यह छोटी सी पुस्तक मालूम होता है बड़ी मेहनत से लिखी गई है भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास जहां तक मालूम हो सका लिखा गया है पुस्तकसङ्ग्रह करने योग्य है—सेक्रेटरी बाबू श्यामसुन्दरलाल को अनेक धन्यवाद है जो नागरी के उद्धार में बड़ा प्रयत्न कर रहे हैं—

मनोष्टकम्—

संस्कृत पाठशालाध्यापक पं०—सतीप्रसाद पांडे कृत—शार्दूलविक्रीडित और शिखरिणी आदि कई एक छन्दों में इसकी रचना बड़ी मनोहर है—वैदिक शिव-संकल्प सूक्त का भावार्थ ले कर यह अष्टक रचा गया है पं०—सतीप्रसाद की अद्भुत कवित्व शक्ति प्राचीन कवियों की छटा का अनुहार करती हुई पढ़ने वाले के चित्त में शान्ति को अवकाश दे देती है जो मोक्ष मार्ग का मुख्य साधन है—अन्त में वकील हाईकोर्ट बाबू बलदेवप्रसाद को इस पुस्तक के छपवाने का हम विशेष धन्यवाद देते हैं जो इस समय अवध प्रान्त के बहुमूल्य रत्नों के जौहरी बन रहे हैं और रत्नों के संग्रह में दत्त चित्त हो उक्त पण्डित सरीखे रत्न जहां कहीं मिलें उन के सञ्चय में विशेष यत्न कर रहे हैं—मूल्य इस पुस्तक का डाक-व्ययसहित —)॥ है बा०—बलदेवप्रसाद वकील हाईकोर्ट फैज़ाबाद के पास मिलेगी.

हृदयतमारिदर्पण ।

प्रथमभाग ॥

विविध छन्दों में पं० रामधन शुक्लकृत—ज्ञान और वैराग्य की उत्पादक यह पुस्तक पठनमात्र से शान्ति को चित्त में स्थान देती है बा० बलदेवप्रसाद वकील हाईकोर्टद्वारा मुद्रित मूल्य मै डाकव्यय ≡)॥ है ॥

रसिकप्रकाश भक्तमाल—

प्राचीन भक्तमाल में जिन भक्तों का जीवनचरित्र रह गया है या जो भक्त-जन ग्रन्थकर्त्ता नाभा जी के उपरान्त हुये हैं उन का जीवनचरित्र इसमें है—यह ग्रन्थ छन्दोबद्ध सतिलक श्रीमहन्त जीवारामकृत है इसका तिलक भी छन्दबद्ध है ग्रन्थ सङ्ग्रह के योग्य है भक्तजन का चरित्र पढ़ कौन ऐसा होगा सिवाय ईश्वर विमुख के जिसका मन भक्ति की भावना से भर विमल हो परमार्थ की ओर न झुकेगा—मूल्य मै डाकव्यय ।=) बा० बलदेवप्रसाद वकील हाईकोर्ट के पते से मिलेगा

पढ़ने वालों से—

हम अपने कृपालु रसिक पढ़ने वालों से अत्यन्त विनीतभावपूर्वक सूचित करते हैं कि हमारा वर्ष पूरा हो गया—विना बार २ के तकाज़े के हमारा मूल्य चुकता कर दें तो बड़ी अनुग्रह हो—देखें कै महाशय हमारी इस चितावनी पर ध्यान देते हैं और ठीक समय पर उपस्थित न होने के दोष में दाखिल न कर दया और छोह के साथ हमें अपनाये रहते हैं—हमारी इस जर्जरित दशा में अब उन्हीं का हमें सहारा है—किम्बहुना—

ISTERED NO 22

THE BEHAR-BANDHU

2366

बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

MAY 1893. VOL. XXII—NO 5

मासिक पत्र।

मई १८९३ बाईसवां भाग—नम्बर ५

१ माता की अपील पुत्र के पास
२ छोटी वस्तुओं का समूह
३ जीव जन्तु—
बन्दर और छेल मछली
४ समुद्र में गिरीन्द्र (लगातार)
५ शिशु मन रंजन (लगातार)
६ रीम
७ स्थानीय समाचार



बांकीपुर
"बिहार-बन्धु" छापाखाना,
१८९३।

For Sale

	Rs.	As.
SREE AMIYA NIMAYE CHARIT—or the Life of Chaitanya, the Avatar of Navadwip. PartI, by Babu Shishir Kumar Ghose (in Bengali.)		
Cloth bound ...	I	4
Paper bound ...	I	0
NAROTTAM CHARIT—The Life of a Salnt, by Shishir Kumar Ghose (in Bengali)	0	13
LIFE OF PROBODHANANDA, a Saint, by Shishir Kumar Ghose, (in Bengali) ...	0	5½
CHOITANAYA BHAGABUT. Published by Shishir Kumar Ghose, a big book beautifully printed (in Bengali.) ...	2	3
SNAKE-BITES (in Bengali) ...	0	5½
SNAKE-BITES AND THEIR TREATMENT (in English.) By a Hindu ...	0	12½

All inclusive Postage

To be had of Babu Keshab Lal Roy, "Amrita Bazar Patrika" Office, Baghbazar, Calcutta; Messrs. S. C. Auddy and Co. Wellington Street, Calcutta; and Messrs. S. K. Lihiri and Co., College Street, Calcutta.

माता की अपील पुत्र के पास।

दोहा ।

है मम प्राण समान सुत, बहुत सह्यों उतपात ।
पै तुम सों नहिं आजु लौं, कही एकहू बात ॥ १ ॥
कारण यह तुम कहं कहूं, सुनि जनि उपजै पीर ।
पै जब असह असीम दुख, लहि कै भई अधीर ॥ २ ॥
तब तुम सन मनमारि कै, भाखति एती बात ।
क्षोभ छाड़ि क्षण एकु लौं, सुनहु शान्त ह्वै तात ॥ ३ ॥
जाहि घरी तें कीन्ह तुम, उदर हमारे बास ।
भाजि गई इमि भूख जो, रुचै न एकहु ग्रास ॥ ४ ॥
क्षण क्षण मैं आवै वमन, मन कछु भावै नाहिं ।
कष्ट होत बैठत उठत, हड़फूटन तन माहिं ॥ ५ ॥
शोथ भयो सब अंग मैं, निसि दिन फूलत स्वास ।
इहि विधि अगिनित दुख सहत, जब बीते नव मास ॥ ६ ॥

परी दुसह जिहि पीर मैं, तुव जनमत हे तात ।
सो जानत मम गात कै, जानहिं जग की मात ॥ ७ ॥
मरत मरत हौं बचि गई, भा जगदीश सहाय ।
फिरि तुम्हार ही मुख निरखि, सब दुख दियो बहाय ॥ ८ ॥
बाहू पै पायों नहीं, पुत्र पटू छुटकार ।
पर्‌यो हमारे हि सीस सब, तुम पालन को भार ॥ ९ ॥
इक तो रहि अधीर अति, प्रसव पीरही पाय ।
दूजे पसंगी ताप तन, नेकु सह्यो नहिं जाय ॥ १० ॥
रोइ उठहु निसि माहिं तुम, तापै बारहिं बार ।
गोद लेइहौं ठाढ़ि कै, पीठ पोंछि चुचुकार ॥ ११ ॥
छन छन चीर पियाई जब, तुम कहं लेउं सुताइ ।
तब धीरे हौंहूं परौं, देह तुम्हारि बचाइ ॥ १२ ॥
गाढ़ी निद्रा रहत हूं, डासन बारहिं बार ।
लेउं टटोलि टटोलि हौं, आपन हाथ पसार ॥ १३ ॥
मूत बारि लखि तुमहिं लै, सूखि ओरि सुताउं ।
ओर आपु उठि बेगिही, भींगी दिसि कै जाउं ॥ १४ ॥
दिन मैं दश दश बार हौं, तुव तन लेसौं तेल ।
तो हित अति बिनती सहित, करौं अरिहु सन मेल ॥ १८ ॥
तनकहु तनय तुम्हार तन, पीड़ित परै लखाय ।
भूख प्यास भूषण सयन, मोहि बिसरी सब जाय ॥ १६ ॥
तुम्हरे ही सुख सों सुखी, दुखी होउं दुख देखि ।
निज प्राणहुं ते तव सदा, रक्षा करौं बिशेखि ॥ १७ ॥

कबहुं बस्त्र कहुं पलंग पर, कहुं तन कबहुं अगार।
जहं पावहु विष्टा करहु, पुनि पुनि बिनहिं बिचार॥ १८॥
धोवत मूत्र पुरीष तव, घिन को लेउं न नाम।
इहि बिधि बहु दिन लौं, कियों भंगिनिहूं कर काम॥ १९॥
जब जब तुम सुज थमित ह्वे, पियहु नाहिं सुत छीर।
तब तब दारुण पीर अति, लहै हमार शरीर॥ २०॥
सभ्य जानि तुम सौं नहीं, खोलि कही सो बात।
यासौं जनि वा कष्ट कहं, गिनेहु सधारन तात॥२१॥
इक इक करि निकरन लगै, जब जब तुव मुंह दांत।
तब तब गात तुम्हार अति, व्यथित तात ह्वै जात॥ २२॥
कबहुं भसम पढ़वाइकै, तुम कहं लेइ चटाउं।
कबहुं जन्त्र लिखवाइ कै, गरे माहिं पहिराउं॥२३॥
दिन तो कोनिहुं भांतिते, दुख सुख युत कटि जात।
पै तुम कहं गोदहि लिये, टहलत रात सिरात॥ २४॥
लै तुम कहं निज गोद मैं, बारहिं बार दुलारि।
सिखलायउं सुत बोलिबो, सुवा सरिस चुचुकारि॥ २५॥
जबहि दरस दिय शोतला, सुबन तुम्हार शरीर।
काह कहौं तेहि समय जस, भो मन भयो अधीर॥ २६॥
राति दिवस तव सेज ढिग, बैठि देवि गुहराउं।
भूख प्यास निद्रा भगी, नहिं जानौं किहि ठाउं॥ २७॥
राम राम करि जब कट्यो, सोउ काल बिकराल।
माता की पूजा कियों, बेचि गरे की माल॥ २८॥
ता पाछे कछु दोस सौं, सखी रह्यो तव गात।
तासों मिरो सो समयो, गयो हरख युत तात॥ २९॥

कबहुं कबहुं तजहूं परति, यदपि कठिनता आइ ।
जिहि कारण मो मन उठत, अधिक अधिक अकुलाइ ॥ ३० ॥
पै तव बदन प्रसन्न लखि, हमि सब दुख भजि जाहिं ।
यथा पवन कै आगमन, मशक समूह पराहिं ॥ ३१ ॥
आइ परै गृह के निकट, जबहिं कोउ हलुआइ ।
ठुनुकि ठुनुकि मम चीर धरि, करहु मिठाइ मिठाइ ॥ ३२ ॥
उहि अवसर मो पाहि कहुं, पैसा होय जु नाहिं ।
तो बिकलाइ हथाहथी, हेलि जाइ हिय माहिं ॥ ३३ ॥
झिझुनि छला बन्धक धरौं, एकहि पैसा लागि ॥
कै लावौं सब सकुच तजि, प्रतिबासिन सन मांगि ॥ ३४ ॥
ताके हित सहिबो परत, कबहुं बचन बहु व्यंग ।
जाहि सुनतही जरि उठत, क्रोध अगिनि सब अंग ॥ ३५ ॥
पै तुव हित सबहीं सहौं, रहौं सदा धरि मौन ।
अरिहु पाहिं बिनती करौं, हितकी गिनती कौन ॥ ३६ ॥
जब तुम हंसि हंसि हाथ लै, खाहु मिठाई तात ।
कुन्द कली सम दांत लखि, सब दुख दंद भुलात ॥ ३७ ॥
बिकत खिलौना देखि कहुं, आवहु झट मंझार ।
लेदै लेदै बकतही, फोरहु कान हमार ॥ ३८ ॥
जब लौं नहिं पावहु करहु, भांति भांति किलकार ।
बिबश होइ देतहि बनै, लै कौनिहूं प्रकार ३९ ॥
जान कदाचित परत कहुं, मोकह न्योते मांहि ।
अवशि चलहु तुमहूं यथा, अंग संग परिछाहिं ॥ ४० ॥
तहाँ जाइ कै नेकु तव, थिर कर चरन रहै न ।
लखि सुन सुन जन एक हू, मो मन चैन लहै न ॥ ४१ ॥

काहु को झोंटा धरहु, काहु देहु ठुनकाइ ।
काहु बालकहि ठेलिकै, महि मह्यं देहु गिराइ ॥ ४२ ॥
जिहि व्यञ्जनहि बिलोकु तुम, कहहु ताहि कह्यं लैन ।
गड़्यो जात तव बैन सुनि, सुनि लाजन मम नैन ॥ ४३ ॥
बार बार डरवाउं अरु, बातन मैं बहराउं ।
पै तुम्हार मुख नहिं तजै, वकन बराबर नाउं ॥ ४४ ॥
वैसहि अपनेहु गृह परत, जब कोउ कारज आय ।
तबहु उपद्रव नहिं तजहु, कोटिन करौं उपाय ॥ ४५ ॥
भरी भरी गगरी धरहु, बार बार ढरकाइ ।
कूड़ देहु पकवान कहुं, जूठे हाथनि आइ ॥ ४६ ॥
जातैं नाक सकोरहीं, दाई अरु द्योरानि ॥
न्योतहरिनि गण ढूसिकै, कहहिं कवनि यह बानि ॥ ४७ ॥
सुनि कै इक इक बात मोहि, होय लाज अरु रोष ।
पै सब टारौं कहि इहै, बालक कहं नहिं दोष ॥ ४८ ।
जान लगहु चटशाल जब, निज पितु आयसु पाइ ।
तेल लगाइ सवारि हौं, देउं बस्त्र पहिराइ ॥ ४९ ।
जदपि कलेउ कराइ हौं, जान देउं तोहि तात ।
तदपि तुमहिं देखे बिना, आंखि मोर अकुलात ॥ ५० ॥
बहुरि जबहि आवहु घरे, गुरु मन कुट्टी पाय ।
धूरि भरो तन लखि सदय, हिरदय लेउं लगाय ॥ ५१ ॥
बार बार मुख हेरि कै, अपनो हियो जुड़ाउं ।
मधुर मधुर व्यंजन कछू, भोजन तुमहिं कराउं ॥ ५२ ।
जब तुम मिलि बालन्ह संग, खेल माहिं फंसि जाहु ॥
चटिया गण आवहिं धरन, तिन कहं देखि पराहु ॥ ५३ ॥

तेऊ पकरन कहं तमहिं, खेदहिं चारिहु ओर ।
भाजत भाजत हारि तुम, आइ बैठु मो कोर ॥ ५४ ॥
पै तेऊ नहिं मानहीं, आइ परहिं मोहि पाहिं ।
तऊ हमार उछंग ते, तुमहिं धरत सकुचाहिं ॥ ५५ ।
तेहि अवसर हौं लाज तोहि, अतिशय लखित निहारि ।
धावन कहं कंज नयन कहि, देउ निकट ते टारि ॥ ५६ ।
तुम बिनु चटियन जात लखि, पिता तुम्हारो आई ।
मर्म्म भेद कटु वचन बहु, मों कह कहत रिसाइ ॥ ५७ ॥
गुरुचित निज पितु सन जबहिं, पैसा मांगहु जाइ ।
सो न देत तब मोर तुम, कान फोरु मचलाइ ॥ ५८ ॥
जा दिन दोन्हेहु निज गुरुहिं, मुंदरी मोरि चुराइ ।
खोजत खोजत हारि गइ, मरुस सगुन करवाइ ॥ ५९ ॥
गृह सेवा हित जो रही, बीस बरिस सों दाइ ।
ताहि निकार निमिष महं, झूठहु दोष लगाइ ॥ ६० ॥
दश मुद्रा इक दिवस तुम, चोरि चलेहु चटसार ।
द्वारहि पहुंचत छुटि गिरे, भइ तासु झनकार ॥ ६० ॥
अवया परत सो शब्द उठि, देखेउ पिता तुम्हार ।
रुपवा सह तुम कहं पकरि, लायउ भवन संभार ॥ ६१ ॥
यद्यपि दोष तुम्हार ही, पायउं सब परकार ।
तद्यपि तुव हित छोड़ हौं, किधों स्वामि सन रार ॥ ६२ ॥
जातें सो अति कोपि कै, मो कहं मार्‌यो लात ।
रोवत ही हौं रहि गई, बिनु भोजन दिन रात ॥ ६३ ॥
पाइ मोर सह और हू, गयेहु बहुत बोराइ ।
चारिहि दिन बीते चलेहु, चम्पाकली चुराइ ॥ ६४ ॥

बड़े भाग्य तें परि गई, तुरितहि नजरि हमारि ।
कीनि तुम्हारे हाथ सों, चुप ले धरी पिटारि ॥ ६५ ॥
चोरी पै ही दिसि रहत, नित प्रति तुम्हरो ध्यान ।
चहूं ओर ढूंढ़त फिरहु, कहुं घर कतहुं मचान ॥ ६६ ॥
जोइ पावहु सोइ लेइ कै, भाजहु आंखि छपाइ ।
यह भांति लखि गृह लोग सब, उठे अधिक अकुलाइ ॥६७॥
जो धन अगिनित कष्ट सहि, पिता तुम्हार कमात ।
तेहि फेंकहु इहि भांतितुम, कहु सो किमि सहि जात ॥६८॥
यह कुचालि अवलोकि कै, तव पितु अति अकुलाइ ।
सरकारी इसकूल महं, तुम कहं दियो पठाइ ॥ ६९ ॥
पै तबहूं मम प्राण कहं, दियेहु नाहिं सुत चैन ।
एकुन एकु लगी रही, चिन्ता चित दिन रैन ॥ ७० ॥
ज्योंही बासर इक पहर, चढ़े पढ़न तुम जाहु ।
त्यार रसोई न लहहु कहं, तो अतिसय खिसियाहु ॥ ७१ ॥
कबहूं दाइ पै कबहुं, मोही पै चिल्लाहु ।
कबहूं बासन पटिकि कै, बिनु खायहि चलि जाहु ॥७२॥
जब लौं तुम घर में रहहु, तब लौं हौं चुप मारि ।
भय तें कांपतही रहौं, क्रोध तुम्हार निहारि ॥ ७३ ॥
ताहू पै सुत हौं कतहुं, निन्दा करौं न तोर ।
भली बुरी तव चाल सब, लखि हिय हुलसत मोर ॥७४॥
त्यागि गयो संसार यह, जा दिन पिता तुम्हार ।
शोक विकल दशहूं दिशा, लागत मोहि अंधार ॥ ७५ ॥
उलटो जाय करेज अरु, सून लगे सब ठाउं ।
जिय चाहै उठि लहरि मैं, जहरि खाइ मरि जाउं ॥ ७६ ॥

पै इक तव मुख हेरि कै, जिय में धीरज धारि।
इहि जग में जीवत रहेउं, हृदय बज्र बैठारि ॥ ७७ ॥
यहै हृदय अनुमानि हौं, राख्यो तन में प्रान।
जब बबुआ बड़ होइहै, कटिहै बिपति अमान ॥ ७८ ॥
इक इक करि सब कियों, तब संसकार सहुलास।
इक चिन्ता तव व्याहकी, चित नित रहत उदास ॥ ७९ ॥
ताहु के हित लाल हौं, कियो अनेक उपाय।
कहुं उपवास कीगें कठिन, ईस मनाय मनाय ॥ ८० ॥
बहु देवन की मानता, करी अनेक प्रकार।
नाऊ बिप्रन कहं दियों, द्रव्य बारही बार ॥ ८१ ॥
लाख उपायन सों लग्यो, जबहिं सुवन तव व्याह।
बहू दरस को लालसा, भरिगो हिये उछाह ॥ ८२ ॥
मानंद करि तयारि हौं, तन आभरन बिचाइ।
सकल जाति गन चरन परि, दियो बरात पठाइ ॥ ८३ ॥
अति उछाह तव व्याह कीं, पुत्र बधू प्रिय पाइ।
लै निज आभूषण सकल, दियों ताहि पहिराइ ॥ ८४ ॥
निसि बासर अति प्यार युत, राखौं नैननि माँहिं।
कबहूं एकहु गृह टहल, करन कहौं तिहि नाहिं ॥ ८५ ॥
नित प्रति ताको बस्त्र लै, निज कर फोंचि सुखाउं।
मुख प्रस्वेद लखि पाउं तो, अंचल बात जुड़ाउं ॥ ८६ ॥
सब बिधि भयो भरोस दृढ़, बधू निरखि जिय माहिं।
दुसह बुढ़ापा दुख हमहिं, कबहुं व्यापि है नाहिं ॥ ८७ ॥
खेलि प्राण पै हौं यथा, पोस्यों सुतहि सप्रेम।
पलटो ताहु चुकाइ है, बधू मोरि धरि नेम ॥ ८८ ॥

जब मम गात पिराइ है, दै है तेल लगाय।
करिहै सेव सम्हार सब, व्याधि यमित मोहि पाय ॥ ८९ ॥
कछु दिन पाछे जाइ तुम, पाठ परिच्छा देइ।
अंगरेज़ी विद्या पढ़न, लागेहु कालिज सेइ ॥ ९० ॥
तहां पढ़े कछु द्योस लों, भई नई तव रीति।
जिय तें दियेहु उठाइ सब, देव पितर की प्रीति ॥ ९१ ॥
सरपूजा लखिकै हंसहु, पाथर कहि कहि तात।
छाप तिलक के नाम ही, ताप उठै तब गात ॥ ९२ ॥
पितृ श्राद्ध देखो करहु, भांति भांति परिहास।
कहहु सकत है खाइ कहुं, मृतक अश्वहू घास ॥ ९३ ॥
जूतहु पहिरे जल पियहु, छूतहु गिनहु न कोइ।
मदिरा मूतहु सिर धरहु, मूतहु ठाढ़े होइ ॥ ९४ ॥
क़लम दबावहु दाँत सन, काग़ज़ चाटहु तात।
जाति पांति बन्धन तुम्हैं, भूलिहु नाहिं सुहात ॥ ९५ ॥
परि कै कठिन कुसंग में, दीन्हेहु चाल बिगारि।
जाहु जौनही गैल महं, सुनहु तहां ही गारि ॥ ९६ ॥
कहं लगि तात गिनाउं हौं, मात् होइ तव पाप।
निरखि निरखि सुनि सुनि हिये, होत दुसह संताप ॥ ९७ ॥
बड़े भाग्य तुम चाकरी, पायेहु नृप दरबार।
पेशकार हवै प्रथम पुनि, भयेहु सरिश्तेदार ॥ ९८ ॥
यह जिय भयो भरोस दृढ़, लगे चाकरी तोरि।
टूरि गई दुख दायिनी, दशा आजु ते मोरि ॥ ९९ ॥
जिहि आशा की बेलिहौं, सींची सलिल सनेह।
कुसुमित ताहि निहारि मम, बसन समात न देह ॥ १०० ॥

पै मम यह आशा लता, भइ फलवती कि नाहिं।
ताकी करहु विवेचना, तुमही निज मन माहिं ॥ १०१ ॥
यहां कहत नहिं सोह मोहि, रहत जु तुमहिं विचार।
तो किहि कारण आवती, आजु कहन की बार ॥ १०२ ॥
अन धन बासन बसन पुनि, सबहि सदन अधिकार।
निज पतनी कहं सौंपि तुम, दियेहु एकही बार ॥ १०३ ॥
जो कछू बहू कहै करहु, वाही पै विश्वास।
राखहु सबही वस्तु तें, मो कहं सदा निरास ॥ १०४ ॥
जासों मेरी यह दशा, होय रही है तात।
सपनेहु माहिं न उदरि भरि, लहौं दाल अरु भात ॥ १०५ ॥
सूखी रोटी कबहुं कहुं, चना चबेना पाइ।
दांत बिना मुखते सकल, सकौं न सुखते खाइ ॥ १०६ ॥
अगिनि पेट की पै कठिन, खातहि बनै जु पाउं।
जो नहिं टूटै ताहि लै, कतहूं जाइ छिपाउं ॥ १०७ ॥
बहू जु लखि पावै कहूं, तुरित जाय परि गाजं।
अरुण अरुण लोचन किये, हाथ लिये सोइ नाज ॥ १०८ ॥
फर फरात युग अधर अरु, थरथरात सब गात।
आइ सामुहैं काल सम, रिस बस पीसति दांत ॥ १०९ ॥
बकन लगै इहि भांति सों, सबहिं पुकारि पुकारि।
देखहु यह गति अन्न की, कीन्हेसि बुढी नारि ॥ ११० ॥
बिकनौटी इहि रांड़ कहं, चाहिय बारहि बार।
नाहिंत कोऊ नाज नहिं, होत नरेटी पार ॥ १११ ॥
सम्पति गयो कमाइ कै, याको छोड़ि भतार।
तिहि दावा यह अन्न कहं, डारति धरि मंझार ॥ ११२ ॥

अब भलेहि कोचाइहौं, या कहं दूनौ सांझ ।
यह कहि तारे देति है, सकल कोठरिन मांझ ॥ ११३ ॥
इक है सांझ उपास महं, बीति जात जब तात ।
तब दासी के कहन ते, देति तिवासी भात ॥ ११४ ॥
अरु तुरतहि मम हाथ में, चरखा पिउनि धराय ।
बैठि सूत कातन कहति, हाय हाय रे हाय ॥ ११५ ॥
भई यह दशा बसन की, कसन कहौं दुख मांहि ।
दोय वस्त्र मो पाहिं सुत, कबहुं छोइ सक नाहिं ॥ ११६ ॥
आवति तब ससुरारि सौं, सदन माहिं जो दाइ ।
गाढ़ी धोती ताहि तुम, जैसी देहु मँगाइ ॥ ११७ ॥
मांगि मांगि घिघियाइ हौं, ककनि ककनि रहि जाउं ।
पै तैसी नहिं एकहू, सपने हू महं पाउं ॥ ११८ ॥
देत देत पेवंद थकौं, लागौं चोन उघारि ।
पाउं पुरान धुरान तब, बहू जु धरति उतारि ॥ ११९ ॥
नितहि सवेरे न्हाइ करि, पहिरौं भींगी चीर ।
गीषम होय कि शीत सब, सूखै निर शरीर ॥ १२० ॥
जासौं बहु बढ़ि जाय कहुं, दुख दायिनी दिनाय ।
कबहूं ज्वरचढ़ि आव अरु, कबहूं देह दुखाय ॥ १२१ ॥
परी परी हौं राति भरि, कहरौं टूटी खाट ।
सूखि कंठ पियास तें, सब तन खटमल काट ॥ १२२ ॥
पानी पानी रटउं तब, बहू उठति है डांटि ।
अब आगे दुख की कथा, कहत लगै मुहं लाटि ॥ १२३ ॥
यह सब आंख पसारिकै, तुम हूं देखहु तात ।
पै भूलिहु रोकहु नहीं, मानि मातु की नात ॥ १२४ ॥

तुव सनमुख गारी सुनौं, लहौं अपार कलेश ।
पै तव मुख पावौं नहीं, कतहुं उदासी लेश ॥ १२५ ॥
बैठि सभ्य गण संग सुत, बड़ि बड़ि बात बनाउ ।
देशहितैषि समाज महं, शिक्षा सहस सुनाउ ॥ १२६ ॥
आपन चरित बिलोकि कै, होत नहीं जिय लाज ।
बृद्धा माता दुख सहै, तिया करै गृह राज ॥ १२७ ॥
ऐसिहु दुसह व्यथा सहे, शाप देउं नहिं तात ।
रहति स्वभाविक ही सदा, करुणामय हिय मात ॥ १२८ ॥
पै इहि शोच डरात जिय, अधिक अधिक घबरात ।
दुख पावै इहि भांति सों, जासु मातु दिन रात ॥ १२९ ॥
तासु भलो किमि होइ है, या संसार मंझार ।
अन्त काल कहिहै कहा, नय नागर करतार ॥ १३० ॥
याहीतें आसीस यह, देति मातु करि क्रोइ ।
जगत पिता तुमपै सुवन, कबहुं करै जनि कोइ ॥ १३१ ॥
रहहु सदा सानन्द अरु, बाढ़े धन संतान ।
रखै निरंतर देह तव, सुख संयुत भगवान ॥ १३२ ॥

इति ।

छोटी वस्तुओं का समूह ।

प्रसिद्ध न्युटन ने एक सामान्य सेब के फल को ज़मीन पर गिरते हुए देख कर मध्याकर्षण शक्ति निकाली थी। गेलिलियो ने पाईसा नगर के गिरजे में लटकती हुई रोशनी देख कर घड़ी का पेन्डुलम निकाला था। बाग में टहलते हुए, मकड़े के जाले को देख कर कप्तान ब्राउन ने ट्वीड नदी के ऊपर लटकता हुआ पुल बनाने का इशारा पाया था। जेम्स वाट मछली के शरीर को देख कर क्लाईड नदी के नीचे लोहे का नल रख कर मनमानता, पानी को सिधर चाहा ले गये। ब्रुनेल ने जहाज़ के तले में छेद करने वाले कीड़े की नकल कर टेम्स नदी के नीचे सुरंग खोद कर की राह बनाई।

इसी तरह हम लोग देखते हैं कि छोटी छोटी चीज़ों ही से बड़े बड़े सब काम हुए हैं। छोटी चीज़ों पर खूब ध्यान देकर ज्ञानी लोगों ने पृथिवी में बड़े बड़े सब काम किये हैं। ज्ञान, शिल्पविद्या (कारीगरी)

पदार्थ विद्या, सांसारिक काम वगैरह सब छोटी छोटी ही दशासे उन्नति लाभ करते हैं। ज्ञानी लोग छोटी छोटी बातें सीख कर धीरे धीरे बहुत ज्ञान इकट्ठा करते हैं। धनवान आदमी थोड़ा थोड़ा जमा करना शुरू कर के लक्षपति हो जाते हैं। विद्वान लोग छोटे बड़े हर तरह के पुस्तकों से बहुत तरह के विषय सीख कर बहुत विद्या लाभ करते हैं।

उन्नति करने की राह बहुत ही बड़ी और कठिन है। बहुत कष्ट करके बहुत दिनों तक उपाय करने में इस राह में तरक्की हो सकती है। एका एक कोई भी कृत कार्य नहीं हो सकता। हर आदमी को थोड़े दिनों तक शागिर्दी करना पड़ता है, छोटी छोटी बातें ध्यान देकर सीखना पड़ता है तब कहीं कृतकार्य होने की राह उसे देख पड़ती है।

भिन्न भिन्न देशों के ज्ञानी लोग इन छोटी चीज़ों के बारे में बहुत से उपदेश कह गये हैं। सभ्य और असभ्य जातियों में भी इस बारे में भी मत भेद नहीं है। सब ही ने एक ही तरह के उपदेश को जुदे जुदे तौर और शब्दों से प्रगट किया है जैसे——"चिड़िया एक एक तिनका इकट्ठा करके घोंसला बनाती है।" "जो फटे कपड़े की मरम्मत करना नहीं चाहते उनको जल्दी ही बिना कपड़े के कष्ट भोगना पड़ता है।" अवसर का एक टांका बिन अवसर के नव टांके से बचाता है।" "छोटी छोटी लकड़ियों से आग सुलगती है लेकिन बड़ी लकड़ी उसे बुझा देती है।" एक पैसा अगर बचा सको वही तुम्हारा लाभ हुआ।" "पेनी सब से बाली होशियार हो जाओ पाउन्ड (सिक्का) सब आप ही होशियार हो जावेंगे।" "बहनों के लिये होशियार होओ बरस आप ही होशियार हो जावेगा।" एक छोटा सा सूराख जहाज़ को डुबा देता है।" "एक छोटी सी चिनगारी से बड़ी भारी आग सुलग जा सकती

है।" "कुल्हाड़ी की छोटी छोटी चोटों से बड़ा भारी दरख़्त ज़मीन पर गिर जाता है।" "रगड़ खाते खाते पत्थर भी घिस जाता है।" "एक एक ईंट धरिया कर बड़ा भारी मकान आदमी बना लेता है।" "नैवारी को इकट्ठा करके जो रस्सी बनती है उससे मतवाला हाथी भी बाँधा जाता है।"

बेकन ने कहा है "भाग्यवान होने की राह आकाशके मन्दाकिनी* सी है। मंदाकिनी जिस तरह छोटे छोटे अनगिनत तारों से बनी है जिसका एक एक छोटा तारा अलग नहीं देख पड़ता, लेकिन सब इकट्ठा हो कर रोशन करते हैं। उसी तरह अनगिनत बहुत से छोटे छोटे गुण हैं जिन्हें मनुष्य लोग छोटा कह कर तुच्छ कर देते हैं लेकिन उनके बारे में होशियार होने से आदमी भाग्यवान हो सकता है।" यंग साहब ने कहा है कि "चीज़ छोटी मालूम होती है इस लिये ग़ाफ़िल मत होओ क्योंकि छोटे छोटे बालू के कणों से पहाड़ छोटे छोटे पल और घड़ी इकट्ठा हो कर बरस, छोटी छोटी घटनायें इकट्ठा हो कर मनुष्य का जीवन बना है। विख्यात पोमिन को एक आदमी ने पूछा कि आप ऐसे यशस्वी कैसे हुए?" उन्हीं ने जवाब दिया कि "किसी चीज़ को भी इसने तुच्छ नहीं समझा।"

मैनचेस्टर शहर के किसी कारीगर ने अपने काम से फ़ुर्सत पाने के बाद किसी ऊंचे खान्दान के लोर्ड से एक जायदाद ख़रीदी। तय यह पाया कि मकान में जहां जहां जो असबाब है वह सब ख़रीदार के होंगे। दख़ल करने के वक़्त ख़रीदार ने एक आलमारी अपने वांछित जगह पर न देख उसके बारे में बेचनेवाले से पूछा। उन्हीं ने कहा "उसे हमने

---

*बहुत पहले भारतवर्ष में हिन्दुओं का यह विश्वास है कि मंन्दाकिनी गंगा जी की एक धारा है। लेकिन यूरप के पंडितों ने यह निर्णय किया यह सब छोटे छोटे अनगिनत तारों का समूह है।

ही हटवा दिया है। ऐसा मुझे कभी भी गुमान न था कि इतनी बड़ी जायदाद में एक छोटी सी आतमारी के लिये आप खोज करेंगे।" ख़रीदार ने जवाब दिया कि "साहब अगर हम अपनी सारी ज़िन्दगी भर छोटी छोटी चीज़ों के लिये होशियार हो कर ध्यान नहीं देते तो यह जायदाद हम कभी नहीं ख़रीद सकते, और अगर आप छोटी छोटी चीज़ों पर खूब ध्यान देते तब शायद आपको इस जायदाद के बेचने की कोई ज़रूरत न होती।"

एक सवार ने घोड़े पर चढ़ने के वक़्त वे ज़रूरी समझ कर घोड़े की नाल में एक कांटी नहीं लगाया, थोड़ी दूर तक तेज़ी से जाने के बाद नाल कहीं गिर गया, थोड़ी देर के बाद पत्थर की चोट खा कर घोड़ा गिरा और उसी सख़्त चोट से मर गया। सवार पैदल चलने लगा राह में दुश्मन के सिपाहियों ने उसे पकड़ कर मार डाला। सवार अगर ढीली न करके, घोड़े की नाल में एक छोटी सी कांटी लगा लेता तो शायद कोई आफ़त ही नहीं आती।

इसी तरह छोटी छोटी चीज़ों पर ध्यान न देने से बहुत से लोग अपना सौभाग्य बिगाड़ कर बड़े भारी दुख में पड़े हैं। पृथिवी के बहुत से बढ़िया काम, बहुत बढ़िया ज़िन्दगी, इनहीं छोटी चीज़ों पर न ध्यान देने से लोगों ने खोये हैं। हर आदमी को यह विचारना उचित है कि मनुष्य का जीवन ही छोटी छोटी घटनाओं के समूह से बना है। हर एक घटना को अलग करके देखने से देख पड़ता है कि वह मामूली और छोटी है। इसी तरह सब छोटे और मामूली बातें इकट्ठा हो कर आदमी के भाग्य और दुर्भाग्य दुख और सुख निर्णय करती हैं। जो आदमी जिस हिसाब से छोटी चीज़ों पर ध्यान देता है या उनके बारे में ढीली करता है, वह आदमी उसी हिसाब से सुखी या दुखी होता है। इस लिये अंधे की तरह न चल कर सुख दुख निर्णय करने वाली

छोटी वस्तुओं का समूह।

छोटी चीज़ों और छोटी घटनाओं के समूह पर बराबर होशियारी के साथ ध्यान रखना हर आदमी को उचित है।

ग्विकशियर डीनाई ने कहा है कि "बहुत सी बड़ी बातों में कामयाबी हासिल करना अक्सर एक छोटे से काम के पूरा या अधूरा रहने पर निर्भर (भरोसा) करता है। इसी लिये बहुत सावधानी के साथ छोटी चीज़ों के समूह पर ध्यान रखना उचित है।" वाशिंगटन का जीवन वृत्तान्त लिखने वाले अरविंग साहब ने लिखा है कि, वह महापुरुष छोटी चीज़ों पर बहुत ध्यान रखते थे—देशोपकारी कामों में, चीठी पत्री भेजने में, हिसाब वगैरह देखने में, अपने गृहस्थी के खर्च में—वह हमेशा छोटी चीज़ों के बारे में बहुत होशियार रहते थे। सर-हेनरी टेलर ने कहा है कि "हम लोग कभी कभी धनी आदमियों को कंजूस के नाम से बदनाम होते हुए देखते हैं क्यों कि वह खर्च का बहुत छोटा हिस्सा भी खूब जांच बूझ कर देखते हैं। लेकिन वाजिब तौर से विचार कर देखा जाये तो अगर वह इस तरह न करें तो वाजिब या गैर वाजिब खर्च उनको किस तरह मालूम होगा?"

इमर्सन साहब ने लिखा है कि "एक दफा का जिक्र है कि एक नौजवान एक बड़े कोठीवाल की मुलाकात को गये। वह उसके आदर सत्कार और मीठी बातों से बहुत खुश तो हुए लेकिन उसकी कोठी की अधमता देख कर बहुत अचम्भे में आकर उन्हों ने उसे अपने दिल में बहुत ही कंजूस समझ लिया था। धनवानने उस जवान का चेहरा देख समझ लिया और कहा कि "अय जवान, तुम अभी कुछ नहीं जानते कि इकट्ठा किस तरह होता है। इकट्ठा होना ही पृथ्वी में एक और यथार्थ बल है—धन का इकट्ठा होना, पानी का इकट्ठा होना, आदमियों का इकट्ठा होना, सबही में बड़ा बल है। ढेर ही जाने वाली पदार्थों का केन्द्र है, लेकिन इसे शुरू करना होता है और इसे

मदद देना पड़ता है। यह किस तरह शुरू किया जाता है? छोटी छोटी चीज़ों से। इसे किस तरह मदद दी जाती है? इनही छोटी छोटी चीज़ों से।"

आदमियों के इकट्ठा होने से उनकी ताक़त कितनी बढ़ जाती है यह बात दुर्भाग्य की वजह से भारतवासी नहीं देख सकते। एका का बल कितना बड़ा है, उससे कितने बड़े काम पूरे होते हैं, यह ज़रा बिचारने ही से दिल अचरज में डूब जाता है। भारतवासी सब यही बिचारते हैं कि हम बहुत छोटे आदमी हैं, हममें कौन बड़ा काम हो सकता है?" लेकिन यह नहीं बिचारते कि सारा देश ही उनके से छोटे छोटे आदमियों से भरा है तब उन सब देशों में किस तरह सभ्यता की ऊंची सीढ़ी पर चढ़ने की शक्ति आई? उन सब देशों के आदमियों ने किस तरह बड़े बड़े कामों को पूरा किया? क्या यह सब एका का गुण नहीं है? आज कल अंगरेज़, फ़रासीस जर्मन आदि जो बड़े पराक्रमवान हो गये हैं, वह क्या एका का गुण नहीं है? जब तक भारतवासी एका का रस न चखेंगे न जानेंगे और उसे काम में नहीं लगायेंगे तब तक भारत की यथार्थ उन्नति और सुख बढ़ने की आशा करना सिर्फ़ ख़याली पुलाव पकाना है।

बन्दर भोजन ।

एक साहब लिखते हैं कि—अफ्रिका के जंगल में यह तमाशा देख मेरा जी बहुत ही खुश हो गया था। उनका एक तमाशा मुझे अभी याद है—दो तीन दर्जन बन्दर एक आम का पेड़ लूट रहे थे। क्या क्या तमाशा उन लोगों ने किया! बोलना, दांत निकालना, खेल कूद, लड़ाई झगड़ा, दुम खींचना, सभी कुछ हुआ था।

बड़ी ऊंची डाल पर दो बन्दर एक एक आम लिये बड़ी गम्भीरता से जज की तरह बैठे थे। ज़रा ठहर ठहर कर एक उंगली से इस तरह सिर खुजलाते थे मानो कोई बात याद आ गई हो और इसी बात का पछतावा था कि उस बात को टोक लेने के लिये कागज़ पेन्सिल पास में न रही।

उन दोनों के नीचे एक डाल पर एक बूढ़ा बन्दर था। बढ़िया आम तोड़ कर नीचे अपनी स्त्री को उसने इस लिये दिया कि बड़ा बच्चा जो नीचे है उसे वह दे दे। पर जों ही वह अपने बच्चे को बढ़ा कर देने लगी कि बुड्ढे से लोभ न रुका, उसने अपनी स्त्री की दुम खींची। इसकी सज़ा में बूढ़े को एक चपत गाल में लगी।

दो अधेड़ बंदर और भी पेड़ के जड़ में बैठे थे। एक तो यह तमाशा देख रहा था और दूसरा उसका आम लेकर चुप चाप पेड़ में छिप रहा।

इधर यह सब हो ही रहा था कि एक दूसरा बन्दर जो मालूम होता है पेट भर खा चुका था, कोई काम ढूंढ़ रहा था। तुरत ही एक की दुम लटकी हुई देख पेड़ पर से डोलाने लगा। इसी कारण उन दोनों में झगड़ा शुरू हुआ। जिसका बढ़ते बढ़ते यह फल हुआ कि सब आपस में लड़ने लगे जिसमें ढेले की जगह आम ही काम में लाया गया।

पर एक बूढ़ा बन्दर और था वह कुछ मन ही मन विचार लड़ाई में शामिल नहीं हुआ। वह इतना आम खा गया था कि उसको बैठना

पड़ा और लेट कर कहने लगा। भाव उसका यह मालूम होता था कि मानो कह रहा है कि "कैसी बेवकूफी मैंने की, आखरी आम न खाता तो अच्छा करता।

इसी वक्त हमारे वहां जा पड़ने से सब बिल्ली की तरह पेड़ पर चढ़ गये और मुझे गाली देने लगे। जिस पर मैंने चाहा कि उनको पड़े हुए आमों से मारूं। पर यह ख्याल करके कि कहीं वह सब भी शुरू करें तो बड़ा बेमौका होगा—बड़े बड़े और पके आम जो उनलोगों ने पहले मेरी ओर फेंके थे लेकर मैं जल्दी वहां से चला आया।

बन्दर और जहाज़ी।

एक जहाज़ी दक्षिण अमेरीका के तीर पर गया उसके पास बिक्री की बहुत सी लाल छपी टोपियां थीं। तीर पर से शहर कुछ दूर था और रास्ते पर जंगल में एक झुण्ड बन्दरों का था जो दरख़्तों पर इधर उधर चढ़ता उतरता नज़र आता था।

दो पहर को धूप बड़ी कड़ी थी, तेज़ किरणों से बचने के लिये एक बड़े पेड़ की छाया में सुस्ताने के लिये लेटा अपनी पोटली में से एक टोपी निकाल उसने सिर में पहिन लिया। पड़े २ नींद लग गई।

जब जागा तो क्या देखता है कि टोपी सब ग़ायब हो गई! ऊपर डालों में अजीब किचमिचि २ की आवाज़ से उधर को ध्यान खिचा। ऊपर क्या देखता है कि पेड़ पर बन्दरों का झुण्ड है और हर एक के सिर पर एक एक लाल टोपी मौजूद है!

उन छोटे छोटे मक्कारों ने सब तमाशा देखा था और जहाज़ी की आंख लगजाने पर उसकी सब टोपियां चुराकर अपनी सिर में पहिन ली थीं वह हज़ार चिल्लाया पर बन्दरों ने कुछ नहीं सुना पर उसकी ओर पर सिर्फ़ उसको दांत दिखलाते थे जब उसने देखा कि टोपी वापस मिलने की सब कोशिश बेफ़ायदा हुई तो वह भी एक टोपी जो उसके सिर

पर थी उसने यह कह कर उसको भी ज़मीन पर फेंक दिया कि ऐ छोटे चोर बदमाश जब सब टोपियां तुम्हारे पास हैं तो इस एक को भी ले लो"।

उसको इतना करते देर भी न हुई थी कि उन छोटे छोटे जानवरों ने फौरन वैसाही किया। इस एकने अपने अपने सिरसे टोपी निकाल ज़मीन पर फेंक दी। मल्लाह अपनी सब टोपी जमा कर खुश होता हुआ चला गया।

बन्दर का डाह।

एक पशुशाला में बहुत से बंदर थे। चाचियों को जो कुछ मिलता था उसमें हिस्सा पाने के लिये जहां तक बना था इन छोटे जानवरों ने उद्योग किया था। एक चालाक बंदर को फल मिठाई का भाग विशेष कर के मिलता था। एक दिन उसे इस दिन की तरह चीज़ें न मिलीं। बल्कि जो लोग आते थे विशेष करके मेम लोग अपनी चीज़ें इस बन्दर के पास वाले बंदर को देने लगे।

उसको बड़ा अचरज हुआ कि कारण क्या है। अन्त को भीत के तड़ने में एक गिरह थी उसी को किसी तरह उसने निकाल डाला; झांक कर देखने से उसे मालूम हुआ कि पड़ोसी को एक बच्चा पैदा हुआ है उसी को सब देखते हैं। अब उस बच्चे से बदला लेना इसने अपने मन में ठान लिया। उस छेद से देखा करता और हाथ डाल कर इसी बंदोबस्त में रहता कि किसी तरकीब से उस बच्चे को चींवटी काटे या ढिक करें।

बंदरी ने इसकी बदनीयती देख ली और जिधर से यह बार बार छेद में हाथ डाला करता था उस छेद से बच्चे को दूर रक्खा करती थी। अन्त को बदला लेने का समय आ गया। अब बच्चा जिधर

चाहता था घुसने पाया था, संयोग से उसी छेद को कर बह गया। झट इस बंदर ने छेद में हाथ घुसाया और उस बच्चे की दुम खींच लाया। और तब सूराख के दोनों ओर पैर अड़ा कर बच्चे की दुम खींचना उसने शुरू किया। बेचारा बच्चा अपने को बेतरह फंसा देख बड़े ज़ोर से चिल्लाया, जिसे सुन कर बन्दरी सहायता को पहुंची और बच्चे को दीवार से सटा देख छुड़ाने के लिये ज़ोर करने लगी। इनके चिल्लाने की आवाज़ सुन रखवारा पहुंचा उसको आतुर देखते ही बन्दर ने अपने छोटे भतु की दुम छोड़ दी और पींजड़े के सब से दूर वाले कोने में वह जाकर बैठ रहा।

बंदर का क़िस्सा।

लंडन शहर का यह क़ायदा है कि सब जहाज़ वहां पहुंचे तो तोप न छोड़ें और जो कोई छोड़ेगा तो उसके कप्तान को बड़ी भारी सज़ा होगी। एक जंगी जहाज़ बहुत दूर से आया था और जहां जहां लगा था लंगर डालने पर तमाम सलामी की तोप छूटी थी।

एक बंदर जहाज़ पर था उसने सोचा कि क्या बात है लंडन शहर में लंगर डाला गया और वहां तोप न छूटी। यह बेक़ायदा समझ वह भारी जी क़ायदे की तामीली के लिये मुस्तैद हुआ।

जहाज़ तुरत ही लगा था सब लोगों का ध्यान और और कामों में लगा था। इसने बावर्चीख़ाने में जा कर चौंटा उठा एक अंगारा भरी हुई तोप के छोड़ने की जगह पर रख ही तो दिया। तुरत गुड़ुम सी आवाज़ हुई सब लोग चौंक गये। कप्तान पर आईन की आज्ञा न पालन करने के लिये मुक़द्दमा चला पर उनको रिहाई यही साबित करने पर हुई कि बंदर का यह काम था।

गोरक्वाल या चिकनी पीठ वाली ह्वेल मछली ।

ग्रीनलैन्ड और नोवा ज़ेम्बला के बीच बड़े भारी समुद्र में गोरक्वाल बेरोक विचरा करता है। ग्रीनलैन्ड के ह्वेल से यद्यपि यह सम्बा होता है पर इसका बदन बहुत ही पतला और मुंह नोकीला होता है १०० से १२१ फुट तक लम्बाई होती है फुर्तीला और निर्भय होने के कारण शिकारी इसके पीछे नहीं पड़ते। सच्चे ह्वेल की अपेक्षा इसमें तेल भी कम निकलता है और हड्डी भी छोटी होती है इसमें भी वे इतनी नज़र इस पर नहीं रखते।

गला बड़ा रहने के कारण बड़े बड़े मछली को भी निगल जाता है। इस जाति का एक मछली मारा गया था उसके पेट से छ सौ से ज़ियादा कौड मछली निकला था और दूसरे जाति के और भी थे! इसी से कुछ अन्दाज़ मिला होगा कि कितना एक एक बार लूट मचाता है। अपनी इस भूख को शान्त करने के लिये जिधर देखता है उधर ही पीछा करने को दौड़ता है और शिकार की खोज में उत्तर महासागर के बाहर भी चला जाता है। यहां तक कि अपने दौरे में इङ्गलिस्तान के किनारे भी आता हुआ देखा गया है।

स्वभाव का रूखा होने के कारण इस के शिकार में बड़ा भय रहता है, क्यों कि जब उस पर हारपून लगाया जाता है तो कभी तो तख्ती को लिये दिये बड़े ज़ोर से भागता है और अवसर मुंह फाड़ कर अपने शत्रुओं पर बड़े ज़ोर से टूटता है या उनकी नाव को अपने मज़बूत पूंछ की टक्कर से टुकड़े टुकड़े कर डालता है!

कप्तान स्कोर्सबाई ने जो उत्तर समुद्र में ह्वेल के शिकार के जहाज़ के अध्यक्ष थे कई बार इस भयंकर जीव को पकड़ने का उद्योग किया था। वह कहा करते थे कि चार सौ गज़ लम्बी तख्ती हारपून में बांधते थे उस तख्ती का दूसरा सिरा लोहे के पीपे में बांध देते थे कि मछली जब भागेगा तो साथ साथ पीपा भी चला जायेगा। आखिर थक कर बस में आ जायेगा। पीपे लोहे के और भीतर से फोंक जाइ

व जगह नाव आदि बांधने के लिये जल में उछालते हुए छोड़ दिये जाते हैं।

पहले ह्वेल में जोही हारपून गड़ा तुरत उसने गोता लगाया पीछा कुछ दूर तक खिंचता चला गया। थोड़ी ही दूर जाने पर तग्गी टूट गई। फिर कोशिश की गई पर इसमें तो तुरत ही उसके डैने की रग्गड़ खाते ही तग्गी कट गई।

एक दूसरे जहाज़ के मांझी जब रीरब्बाल की मार रहे थे तो बड़ी भयानक घटना हुई। जहाज़ और बर्फ़ के मैदान के बीच में एक ह्वेल देख पड़ा। जब समुद्र पर बहुत दूर तक बर्फ़ जम जाती है तो उस पर लोग उसी तरह चल सकते हैं जैसा कि सूखे पर। पर बहुत नीचे जल पतला ही रहता है उसी को बर्फ़ का मैदान कहते हैं। ह्वेल को देखते ही डेंगियां जल में छोड़ी गईं और आशा लोगों को बंधी कि सहज में अब पकड़ा जायेगा डेंगी बढ़ी जाती थी, हारपूनर अपने हाथ में हारपून लिये तइयार था, ह्वेल उछला रहा था और इनके आने की राह देख रहा था। एक मिनिट भी देर होती तो वह डुब्बी लगाता।

पर डेंगी इतने में पास पहुंच ही तो गई। हारपून चलाया गया और जाकर धंस ही तो गया फिर तग्गी में ढील पड़ी और उसका दूसरा सिरा तब तक डेंगी में बांध दिया गया। ह्वेल गोता लगाने के बदले सीधा तैर कर भागा, डोरी डेंगी में बंधी थी उसके तैरने की तेज़ी में पानी पानी सन सन कटता जाता था और बौछाड़ की तरह नाव पर जल पड़ने लगा।

ह्वेल सीधा भागता चला गया। जहाज़ी लोग दूसरे ह्वेल की तरह समझते थे कि यह भी जल्दी ही थक जायेगा। आख़िर ऐसी जगह पहुंचे जहां बड़ा भारी बर्फ़ का मैदान था। जहाज़ी मारे लोभ के शिकार अपने हाथ से जाने देना नहीं चाहते थे इससे किसी ने तग्गी काटने का हुक्म भी न दिया।

बराबर बढ़ते चले ही गये। आख़िर उनको मालूम हुआ कि हम बर्फ़ किनारे हैं। बिजली की तेज़ी की तरह ह्वेल बर्फ़ के नीचे ऐसा पलक मारते में डेंगी ठाय से जाकर बर्फ़ में लगी। जब तक रस्सी काटी जाये या जब तक डेंगी वाले कुछ बोलें बोलें कि डेंगी भी बर्फ़ के मैदान के नीचे खिंच गई, जो जहाज़ पर थे उन्हों ने भय के साथ देखा कि वह ग़ायब हो गये! दूसरी डेंगी छूटी लोगों ने वहां जाकर देखा तो न डेंगी ही देख पड़ी न साथियों ही का पता लगा।

ह्वेल मछली का शिकार।

हरसाल इसके शिकार के लिये उत्तरीय समुद्रों में जहाज़ जाया करते हैं। इसकी चर्बी का तेल निकलता है और बड़ी बड़ी काम आती है।

जहाज़ों पर बहुत सी छोटी छोटी डेंगियां रहती हैं जब शिकार की जगह आती है तो देखने के लिये आदमी जहाज़ के मस्तूल पर चढ़ाये जाते हैं उनके कहते ही जहां ह्वेल मछली नज़र आया कि लोग को सवार करा कर डेंगी समुद्र में छोड़ी जाती है।

हर डेंगी में एक आदमी बर्छी लिये रहता है उसको अंग्रेज़ी में हार्पूनर कहते हैं। लम्बी बर्छी जिसकी नोक मज़बूत लोहे की तीर की होती है उसी को हार्पून कहते हैं इसके अन्त में एक मज़बूत डोरी बन्धी रहती है यह डोरी जो अक्सर ४४० गज़ लम्बी होती है सरिया कर नाव ही पर रक्खी रहती है।

जब डेंगी मछली के बहुत पास रहती है तो चुपचाप पर बड़ी तेज़ी से खेई जाती है। डेंगी में आठ मांझी रहते हैं। हार्पूनर अपने काम के लिये मुस्तैद हो खड़ा रहता है। जब डेंगी कई गज़ की दूरी पर रह जाती है तो मांझी अपना डांड़ रोक लेते हैं। ख़ूब ज़ोर से हार्पून

हम पर चलाया जाता है और वह उसके बदन में घुस जाता है। अब हार्पून अक्सर बंदूक में भर कर चलाया जाता है।

चोट से छिलमिला कर ह्वेल जहां तक बन पड़ता है समुद्र में गोता लगाता है। अगर ह्वेल सचमुच मछली रहता तो हमेशा जल के भीतर ही रहता तब उसका पकड़ना कठिन होता। पर उसे सांस लेने के लिये ऊपर आना पड़ता है। वह घोड़ा या गाय के किस्म का जानवर है बिना हवा के नहीं रह सकता।

तब तक लोग डोंगी खेव कर वहां ले जाते हैं जहां वह समझते हैं कि मछली निकलेगा। ज्यों ऊपर निकला कि दूसरा हार्पून फेंका गया। फिर ह्वेल गोता लगाता है पर तुरत ही ऊपर आजाता है।

कटपटाहट में अपने भारी दुम से समुद्र इतने ज़ोर से हिलोर देता है कि उसकी आवाज़ दो तीन मील दूर से सुन पड़ती है। आखिर दर्द और लोहू के बहने से बेचारा ह्वेल हार जाता है। डोंगी लोग तुरत खेव कर पास ले जाते हैं और इस्पात लोहे के भाले से गोदना शुरू करते हैं।

जल्दी ही उस बड़े भारी जीव का बेजान शरीर ऊपर उपका आता है और लोग खुशी खुशी खींच कर जहाज़ तक ले आते हैं। टुकड़ा टुकड़ा करके गर्म करके तेल निकाल लिया जाता है और जब शिकार का दिन निकल जाता है तो तेल को पीपे में भर लोग ले आते हैं।

टूकट

ग्यारहवां अध्याय

अपनी साथियों की राह देखते चुप मुझे को एक एक घंटे एक एक दिन के से उस सुन सान तीर पर मालूम होने लगे। जो बहुत दिनों से भरी मंडली में रहते आये हैं वही अकेले रहने के दुख का अब कर सकते हैं कि अकेले में समय कैसा कठिन जान पड़ता है। और काम मुझे वहां यही था कि आग बुझने न पावे जलती रहे। बीच बीच में इस इरादे से लकड़ी चुनने में समय जाता था वह भी सिर्फ भारी नहीं मालूम होता था। आखिर मुझे बड़ी भूख लगी घाटे का बोरा देख नया खयाल मेरे जी में समाया।

वह यह कि घाटे की लप्सी क्यों न बने?

नमकीन चीज़ें खाते खाते जी घबरा गया है कुछ तो स्वाद फिरेगा।

पर लप्सी में दूध ज़रूरी है। यह बात ठीक है कि मुझको पकाने की आदत न थी और न कभी पहले भी मैंने लप्सी बनाई थी पर इसे कई बार खा चुका था। और अक्सर मैंने फेयरपोर्ट में दाई को लप्सी बनाने के वक्त देखा था कि वह दूध खूब डालती थी।

ऐनी दाई की संडन की और वहां के पकाने की चाल से बड़ी चिढ़ थी इससे मुझे बड़ा लाभ हुआ। उसे पूरा विश्वास था कि संडन में टटका दूध मुझे कभी नहीं मिलता होगा इससे पहली की घटी पूरा करने के लिये मुझको वह बहुत बहुत दूध दिया करती थी।

यह सब तो हुआ पर यहां इस उजाड़ पत्थर से भरे तीर पर दूध कहां से आवे इसका विचार करना बड़ा कठिन था।

रह रह कर मैं घाटा, केतली और पानी पर नज़र दौड़ाता था पर बिना दूध, चीनी के लप्सी बनती है क्यों कर?

चारों ओर देखते देखते हमारी नज़र नारियल पर जा पड़ी जो मैंने खोह के दरवाज़े पर लाकर जमा किये थे।

तुरत वह ओर कूद कर दौड़ा और कहने लगा कि "मैं कैसा गदहा हूं कि इनका अब तक याद न पड़ा। नारियल के जल से तो दूध का काम चल जायेगा।

दाब से बड़ा छेद मैंने छीप डाला और नारकूल में छेद कर भीतर का मीठा जल मैंने कैतली में झलक लिया । और बड़ी गंभीरता से बावर्ची की तरह एक लकड़ी बीनकर घांटने लगा । कई मिनट के बाद थोड़ा सा आंटा मैंने मिला दिया ।

अब क्या करना चाहिये मैं नहीं जानता था इससे चुपचाप आग पर कैतली को छोड़ [illegible] बैठा रहा ।

एका एक मुझे याद पड़ा कि रिकाबी की जरूरत तो है ही नहीं । अंगुली से निकाल कर गर्मा गर्म खप्सी खाना भी असम्भव था और ठंढा हो जाने पर भी उसके खाने में मज़ा नहीं मिलेगा । सोचने लगा कि क्या किया जाये । मसल है कि " काम पड़ने पर अकल झुकती है " इसे मैंने पूरी की ।

नारियल की खपड़ी से तो बहुत ही अच्छी कटोरी बनेगी और छुरी से काट कर लकड़ी का चमच बन जायेगा । इन दोनों में खप्सी मज़े में खाई जा सकेगी । वे दोनों चीज़ें बनी थी कि कैतली से बहुत सुगंध निकलने और सन सन आवाज़ आने लगी । मैंने चूल्हे पर से कैतली उतार चाहा कि टोंटी से खप्सी ढाल लें पर वह गाढ़ी बहुत थी आंटा मैंने बहुत छोड़ दिया था इससे हमारे मन लायक़ पतली खप्सी तइयार नहीं हुई ।

ढकना मैंने उठाया सुगंध उसकी पाते ही खुश हो गया । मारे खुशी के ज़ोर से हंसा और ताली बजाने लगा बिन चखेही मुझे पूरा विश्वास हो गया था कि ऐसी उम्दा खप्सी कभी किसी ने नहीं बनाई होगी ।

मैं सोचने लगा कि—मेरा जहाज पर जाना कैसा अच्छा हुआ जहाज न जाता तो कहां से ये अच्छी चीज़ें मिलतीं ।

नारियल की खपड़ीदया में गरी लगी थी पर मुझे भूख ज़ोर की लगी हुई थी । कौन साफ़ करता है और गरी निकालता है । झट उस कटोरी में मैंने झलक लिया और ज़रा ठंढा होने पर चखा तो मन में कहने लगा कि ऐसी स्वादिष्ट खप्सी मैंने पहले कभी नहीं खाई थी ।

इसमें सन्देह नहीं कि लकड़ी के टुकड़े भूल से उसमें बहुत से गिर गये थे पर इसकी भी मुझे कुछ चिन्ता नहीं हुई। मैं एक तो क्रोध में डोंगा दूसरे भूखा था इससे मैंने इन जरी जरी बातों का कुछ भी खयाल न किया। लप्सी कुछ बेजा नहीं बनी थी और ऐसी गर्मा गर्म खाने को कुछ दिन बीत चुके थे। इसी से मैं खा कर बहुत खुश हुआ बल्कि कुछ मेरे दिल को इस बात का घमंड भी आ गया कि मैं ऐसी चीज़ बना सकता हूं। मन में सोचने लगा कि "घर जाकर अपनी माता के लिये ऐसी ही लप्सी बनाऊंगा।"

फिर एका एक हमारे मन में यह बात आ गई कि कभी घर पहुंचने की नौबत न आवेगी। क्यों कि चटानों की टक्कर खाते खाते जहाज़ जल्दी ही टूट जावेगा। अगर मान भी लें कि उसकी मरम्मत हो जाये और पानी भीतर उसके ज़रा भी न आवे तो भी कैसे दो आदमी और दो लड़के इस समुद्र के पार उसे ले जा सकेंगे जिसमें आंधी चल रही है?

फिर इसके अलावे इस उजाड़ टापू में अकेला हूं क्या जाने बाकी दिन ज़िन्दगी के यहीं बिताने पड़ें।

तब आंसू के बूंद मेरे गालों पर ढलकने लगे और लप्सी में भी गिरने लगे।

ये बातें ऐसी थीं कि जिनके सोचने में मुझको बहुत दुख होता था इन बातों का खयाल आ जाने से टापू और भी उजाड़ मालूम होने लगा। कई चिड़िया हमारे आस पास चुपचाप फुदक रही थीं। कोई आदमी पहले वहां नहीं गया था इससे उनको मुझ से कुछ भी भय नहीं मालूम होता था।

आग से जो धूआं पहले निकला था उससे पक्षी पहले डरे थे पर जब भय दूर हो गया तो आस पास आकर कूदने लगे। देखने से जान पड़ता था कि मानो इस बात का पता लगाना चाहते हैं कि धूआं किधर से निकला। बल्कि एक मुर्ग़ जो सबसे ढीठ था उसने आग में अपनी चोंच भी घुसाई। पर जब ज़्यादा गर्म मालूम होने लगा और

सिर पर की कई कलगी जलने लगी तो बड़े ज़ोर से कौक कौक करता और अपना पर फड़फड़ाता हुआ भागा ।

इस घटना को देख हमारा दुखमय ध्यान टूट गया । मुर्ग़े को इस तरह भागते देख मुझे बड़ी हंसी आ गई । कहां भाग कर वह खड़ा था चारो ओर मुर्ग़ियां उसके गिर आईं और बड़ी देर तक बात चीत करती रहीं मानो सबको बड़ा दुख हो गया कि बेचारे के सिर की सुन्दर कलगी जल गई ।

इस के बाद वे मुझ से कुछ दूर रहने लगे और उन में से कोई छोटा और मूर्ख मेरे बहुत पास आने की कोशिश करता तो बड़े बड़े उस को चारो ओर से घेर कर बड़े ज़ोर से " कमबैक कमबैक " इस तरह से बोलते थे जिस का अर्थ यही निकलता था कि " चले आओ " " चले आओ " ।

मैं मन में कहने लगा कि " एक यही संतोष की बात है कि सब अंग्रेज़ी बोलते हैं । इस बात से मुझे इतनी हंसी आई कि आंख से आंसू बहने लगा । फिर मुस्कुराहट चेहरे पर आने से आंसू सूख गये । जो कुछ लप्सी बच रही थी आग पर चढ़ी चढ़ी सूख गई उसी को मैं बांटने लगा और धीरे धीरे और भी रंग बिरंगी चिड़ियां आकर जमा हो गईं और उन को चुगने लगीं ।

कोई चिड़िया तो खूब नीली थी पर सिर खूब काला था, किसी का रंग पीला, काला, सफ़ेद गरज़ इसी तरह बहुत भड़कीली भड़कीली थीं । कहीं हरे हरे गोबरौंडे चटानों पर रेंग रहे थे और धूप में पानी से चमकते थे । भांति भांति की चीज़ें देख मुझ को भूलने लगा जैसे किसी नये और अजीब ढंग के पशुशाला में आया हुआ हूं थोड़ी ही देर में इन रंग बिरंगी जीवों को देख दिल खुश हो गया, उदासी जाती रही ।

वे इस तरह निर्भय होकर और निकट आकर खाने लगी कि जिस से जान पड़ता था कि सब पोसाव हों । मैं यह सब देख मगन हो गया । ऐसा ही विरला कोई होगा जिसे परमेश्वर की सृष्टि का ऐसा तमाशा देख आनन्द न मिले ।

आंधी थम्भ गई थी आकाश निर्मल और नीला हो रहा था सूर्य खूब चमक रहा था। समुद्र अब कुछ नहीं देख पड़ता था सर्वत्र शान्ति छाई हुई थी पर हल्के जो धीरे धीरे तीर पर चोट खा रहे थे कुछ अनोखा ही दृश्य पैदा कर रहे थे।

समुद्र के तीर पर घोंघे सीप बड़े छोटे रंग बिरंगे बिखराये पड़े थे। जंगल जहां समाप्त हुए थे वहीं पर बड़े बड़े नारियल के पेड़ों का झाड़ियां सा बन गया था और इधर में उनकी फुनगियां धीरे धीरे डोल रही थीं।

मैं मन में कहने लगा कि यहां नारियल चिड़िया और अंडे हैं इस से भूखा तो नहीं मरूंगा पर वह लोग भी आ जाते तो बहुत अच्छा होता इन के बिना तो मुझे बड़ा सूना मालूम होता है।

इस बीच में चिड़िया कुछ सस्ती चुंग गई थीं इस से और भी कुछ खाने का ढूंढ़ने लगीं।

तुरत ही मैं ने देखा कि एक सुग ने सीधा रास्ता उस ओर का लिया जहां खाने की चीज़ों से भरी हुई टोकरी रक्खी थी।

मुझ को यह सोच कर एक तरह का भय हो गया कि इतनी सी ये हैं और सभी भूखी हैं कहीं एक बार भी इन की चोंच वहां पहुंची तो फिर दूसरे दिन के लिये, मांस रोटी आदि जो कुछ टोकरी में ढकी हुई रक्खी है ज़रा भी न बचेंगी।

यह सोच विचार हाथ पैर पटकता गुल करता मैं एक दफ़ा उन की ओर बहुत ज़ोर से दौड़ा। मैं ने सिर्फ़ समझा था कि वे भाग जायेंगी पर इस का ख़याल नहीं हुआ था कि वे बहुत ही डर जायेंगी।

मारे भय के वे चिल्लाती और शोर करती भागीं मैंने उन पर जो बालू फेंकी इस से तो वे खूब ही डर गईं और पलभर के बाद जंगल में चली गईं और मैं पहले ही की तरह अकेला रह गया।

यदि बालू पर उन के पैरों के निशान न रहते और बिल्कुल जल्दी समाप्त नहीं हुई होती तो मुझे यही मालूम होता कि कुछ तमाशा जो देख पड़ा बिलकुल स्वप्न ही था।

मैं सोचने लगा कि क्या जानी चेनी रहता तो यह सब देख कर हंसता या नहीं? वह सदा गंभीर रहता है मैंने तो उसे कभी मुस्कुराते भी नहीं देखा है।

टोकरी को अच्छी तरह ढकने और ऊपर उस के सूखी लकड़ियों के रखने में कई मिनट लगे। इस के बाद थोड़ी दूर और भी ऊपर मैं घाटे के बीरे को खींच कर ले गया। अब जहां मैं खींच कर ले गया था वहां झुआर का जल नहीं पहुंचता था इस से बहुत ही खुश हुआ। फिर मैं ने जल में केतली को धोकर साफ़ किया और पानी भर कर आग पर रक्खा। इन सब तइयारियों में कुछ समय बीता। इस के बाद ऊपर जाकर जलावन के लिये सूखी लकड़ी मैंने बटोर नीचे फेंक दिया और कई नारियल भी लेता आया।

मुझे पूरा विश्वास था कि टापू में और भी फल हैं पर राह भूल जाने के भय से अकेले जंगल में जाने की मुझे हिम्मत न हुई। पर मैं ने सोच रक्खा कि धीरे धीरे कुल्हाड़ी की मदद से जंगल का रास्ता भी बन जायेगा।

तब मैं यह देखने के लिये कि डेंगी लौटी या नहीं तीर पर गया पर कहीं भी देखने में न आई। आधा घंटा पहले जैसा सून सान छोड़ गया था वैसा ही लौट आने पर भी मुझे मिला।

कप्तान, चेनी, स्टीफन किसी का भी निशान नहीं देख पड़ता था।

बारहवां अध्याय।

तीसरा पहर को बहुत देर के बाद तीन आदमियों को लिये हुए डेंगी फिर आती देख पड़ी तो हमारे जीमें जी आया।

बात की बात में मेरे दुख और भय दोनो दूर हो गये और मैं झट कूद कर जलकी किनारे उनकी अगौनी के लिये जाकर खड़ा हो गया।

तीनों थके थे, आग जलाकर सैनी उनके सुख का सरंजाम पहले से कर रक्खा था इससे बड़ी खुशी सुभ को मिली। भला उनकी थकन का क्या पूछना था दिन भर उनको दम लेने की भी छुट्टी न मिली थी इस वक्त तो सुस्ताने की उनको बहुत जरूरत थी।

कप्तान—क्यों लड़के तुमने तो समझा होगा कि हमलोग मर गये? मैं—मुझे भय तो अलबत्ता हुआ था पर अब सब ठीक हो गया।

सैनी—"सब ठीक हो गया" मैं नहीं समझ सकता कि तुम्हारा क्या मतलब है। तुम्हारा तो अजीब तरह का सब ठीक हो जाता है।

बातों में सैनी के जान पड़ा कि उसका मिज़ाज इस वक्त ठिकाने नहीं है। इसी बीच में स्टीफन ने दया के साथ मेरे कन्धे पर हाथ रक्खा जिससे मेरे मन में बहुत भरोसा हो गया और इसी कारण सैनी के कड़े वचन का मैंने कुछ ख्याल नहीं किया।

सैनी वैसे मनुष्यों में से था जो समझते हैं कि जिस को चाहें कड़े वचन बोलें और कड़वी बातें कहें। पर स्टीफन सब से मिलता जुलता और मीठी बातें करता था बल्कि उसका चित्त दुखी रहता तो भी हंसी उसके होठों पर सदा विराजती थी।

स्टीफन की दुखी होने का कई कारण था पर किसी से मन की बात उसने खोली न थी। उसके भी माता पिता घर पर थे जो उसकी राह ताकते होंगे और शायद उनके दर्शन का कभी आनन्द मिले या न मिले इसका भी भय था। इन सब के अलावे वेस्टन में तीन वर्ष हुए एक लड़की से उसके विवाह की बात चीत हो गई थी—इसकी भी यही आशा थी कि यात्रा समाप्त हो जाने पर नोआस्कोशिया का माल बेच चुकने पर तो मैं सीधा वेस्टन ही को जाऊंगा।

कप्तान जहाज के खोने से दुखी था और सैनी भी शायद अपनी दौलत के पूरे न होने के कारण अफसोस में था तो भी मैं तो समझता हूं कि सब इस बात के लिये परमेश्वर का धन्यवाद कर रहे थे कि उसने सब का प्राण बचाया और एक बार फिर सूखी ज़मीन पर पहुंचाया।

मैंने इन लोगों से कहा कि आग जला कर मैंने पानी गरम कर रक्खा है अगर आप चाय चाहें तो तुरत तइयार हो जावे। इसके अलावे अंडे हमने बहुत से जमा कर रक्खे हैं।

कप्तान (दया से)—आह तुमने खूब किया। हां मैं चाय लेता आया हूं इसके अलावे चायदानी, चार प्याले, चार रकाबियां भी आई हैं उस टोकरी में रक्खी है देखो टूटने न पावें।

मैं यह सुन कर बहुत खुश हुआ। जिस घड़ी से मैंने खाने तइयार की थी तब से पाक शास्त्र में मेरे उत्साह का कुछ भी ठिकाना न था इस कारण जब मेरी नज़र टोकरी में की तावा, कड़ाही, कलछी चायदानी आदि पर पड़ी तो आनन्द की सीमा न रही।

डेंगी के पेंदे में कई कम्बल पुराने पाल में लपेटे हुए रक्खे थे। एक मटके में नमकीन गोश्त कुछ बिस्कुट आदि भी आया था। पर डेंगी इतनी छोटी और हल्का इतना छठ रहा था कि कप्तान को अधिक बोझा लादने में डर मालूम हुआ बहुत सी चीज़ें वह छोड़ ही आये थे जो काम आती। खैर, ज़रूरी काम को पूरा करने के लिये बहुत सामान था और आशा यह की जाती थी कि दूसरे दिन यदि समुद्र थिर रहा तो जहाज़ टूटने के पहले जय वार तन पहुंचा जाकर इस छोटी डेंगी में चीज़ें लाद लाद कर लाई जायेंगी।

पत्थर की चटानों के बीच जहाज़ ऐसा बैठ गया था और तूफान भी थक गया था इससे आशा बंधती थी कि कुछ दिनों तक जहाज़ जैसी अवस्था में है उसी में रहेगा। यह भी बात तत्वों ही के अधिकार की है। कप्तान विलियम्स अच्छी तरह जानते थे कि इस प्रान्त में हवा की गति का निश्चय करना बड़ा कठिन है। अजब क्या कि दो ही एक घंटे में बहुत जोर से तूफान आ जावे फिर "नोवास्कोशिया" का चटानों से टक्कर खाकर टूट जाने में क्या संदेह रहेगा।

इसी लिये दिन रहते ही तीर पर आ जाना उन्होंने उचित समझा था क्यों कि अंधेरे में इतनी छोटी डेंगी पर यात्रा करने का साहस करना भयानक बात थी।

जब तक इधर चीज़ें उतारी जाती थीं आग भी खूब जल रही थी और जितनी देर में वे डेंगी को खींच ऊपर लाये और उसे पाल से ढाँप कर चटानों पर बैठे उतनी ही देर में मैं ने चाय तइयार की और अंडे उबाले। नमकीन गोश्त बिस्कुट और चाय आदि सब मिलाकर एक प्रकार का अच्छा भोजन हुआ। सैनी भी भोजन करने पर ताज़ा हो गया इस से अब उस का स्वभाव चिड़ चिड़ा न रहा।

भोजन के बाद, टापू का रंग ढंग सोचते सोचते कप्तान पूछ बैठा कि बालू पर वे दाग़ कैसे हैं?

मैं ने कहा कि वह सिर्फ़ मुर्ग़े मुर्ग़ियों के पैर के हैं। जब मैंने लप्सी बनाई तो हमारे चारो ओर आकर सब खा गये।

मेरी ऐसी बात सुन कप्तान ज़रा मुस्कुराया। फिर मैं ने कहा कि "यहां बहुत पक्षी हैं अच्छी बात है न? जिस दिन अच्छे भोजन के लिये उन का मांस, अंडा और नारियल मिल सकता है। इन सब के रहते हम लोग भूखे तो नहीं मरेंगे।"

जब सब का खाना पीना हो चुका तो स्टीफ़न ने क्या किया कि सब रसद पाल के नीचे डेंगी में जमा कर रक्खा कि ऐसा न हो कि मुर्ग़े मुर्ग़ियां आकर सब चख जायें। तब सब कोई उस स्थान की तहक़ीक़ात के लिये ऊपर चढ़े।

अंदाज़ से यही मालूम हुआ कि जंगल आध कोस से ज़ियादे का है। कप्तान ने पेड़ पर चढ़ कर कुछ देर तक चारो ओर देखा फिर उतर कर वह भी सब के साथ मिल गये जो नारियल बटोरने और अंडे की खोज में लगे थे।

कप्तान ने कहा कि पच्छिम की ओर जुआर का ढंग देखने से जान पड़ता है कि हम लोग टापू में हैं पर अभी भी इस का निश्चय नहीं है पर आदमियों का तो कोई निशान नहीं देख पड़ता इस से अगर हे खौफ़ हो कर रात भर उसी नीचे वाली खोह में हम लोग रह जायें तो कोई सुनायका नहीं है।

स्टीफ़न जो सूखी घास का बोझा बांध रहा था उस की भी यही राय हुई इस से सब तुरत ही वहां से नीचे आये और बिछाने के लिये जितना जिस से उठ सका बोझा लेता आया।

कप्तान—फुर्त्ती करो क्यों कि तुरत रात होगी इस प्रान्त में संध्या बहुत कम देर तक रहती है।

घास पर कम्बल बिछा सब आराम से लेटे। थके मांदे तो थे ही पीठ लगते ही नींद ने घेरा सब सो गये। पर सोने के पहले स्टीफ़न ने कहा था कि कल कई झरने यहां बांध देना चाहिये। गुफा अच्छा स्थान मिल गया था। फैलाव और हवादार था पर सर्दी का नाम तक न था।

ज़मीन सब की सफ़ेद बालू की थी। जुआर का जल न पहुंचने के कारण सदा सूखा स्थान रहता था। सब से पहले मैं ही दूसरे दिन उठा खाली बैठने की आदत न रहने से मैं उस गुफा में तीनों को सोता छोड़ चुप चाप बाहर निकल आया।

रात की अपेक्षा समुद्र इस समय बड़ा स्थिर था और सूर्योदय का चिन्ह स्वरूप आकाश और जल में सर्वत्र लाली छाई हुई थी। वृक्ष और पत्थर, बालू और जल सभी गुलाबी रंग के हो रहे थे। समुद्र का रंग देख मेरी इच्छा स्नान करने की हुई। पर स्टीफ़न की बात याद आ जाने से दिल आगे पीछे करने लगा।

इच्छा ही थी कि स्नान का विचार छोड़ दें कि एक चटान के पीछे निर्मल जल का बालू में एक कुंड देख पड़ा।

इस में घड़ियाल नहीं है यह मैं ने निश्चय कर कपड़ा उतार गोता लगाया। कुछ देर के बाद मुझे याद पड़ा कि अब आग सुलगा कर दोस्तों के जलपान के लिये पानी वग़ैरह गर्म कर रखना चाहिये। बस तुरत निकल आग मैं ने सुलगाई और पानी रखता ही था कि स्टीफ़न हमारे पास आकर बोला।

वाह जी रसोईया! तुम उठ कर काम में लगे हो? मैं ने तो समझा था कि अब तक कम्बल में लिपटे तुम पड़े होगे।

मैं—ओ, मुझे उठे देर भी हो चुकी। मैं स्नान भी कर चुका।

स्टीफन (चकित होकर)—स्नान! अकेले समुद्र में तो नहीं गये थे न?

मैं—नहीं पहले तो मेरा यही इरादा था पर तुम्हारा किस्सा याद आ गया इस से मैं समुद्र में न गया पर एक कुंड में नहाया।

स्टीफन—खैर! अच्छा हुआ। कभी मत अकेले इस जल में जाना। घड़ियाल के अलावे और भी बहुत सी डर की बातें हैं जिन को तुम नहीं जानते—समझ लो जैसे कि जुआर का झोंक।, तुम्हारे से छोटे छोटे लड़के तो बात के करते बह जायें हम लोगों को भी सम्भलना कठिन हो जाता है। अच्छा जिस का अन्त अच्छा हुआ उस का सभी अच्छा हुआ। कल की मिहनत से मेरा हाथ पैर भी अकड़ा जाता है। मैं भी तुम्हारी ही तरह कुंड में नहाने को जाता हूं।

मेरी इच्छा थी स्टीफन जल्दी आये तो खिचड़ी बना कर सब को खिलाऊं एका एक सब के सामने पहुंचेगी तो ताज्जुब में आ जायेंगे। इसी लिये मैंने स्टीफन से कहा "हां हां जल्दी से स्नान कर डालो सब हरारत दूर हो जायेगी।"

स्टीफन तो नहाने को चला गया और मैंने कड़ाही निकाल घमंड और आनन्द के साथ सब चीज़ें मिलाईं।

जब कप्तान और चैनी आये तो उन लोगों को नाश्ते के लिये तइयार मिला। हमारा पाक शास्त्र में इतना उद्योग देख दोनों ने बड़ी प्रशंसा की जिससे मुझे बड़ा सन्तोष हुआ।

स्टीफन ने कहा अच्छा कल मैं तुमको नई चीज़ सिखलाऊंगा।

कप्तान—हां अगर रात के लिये दो तीन चिड़िया मिल जाये तो बहुत अच्छा हो।

स्टीफन—वे मिलेंगी कैसे?

चैनी—बंदूक तो है न?

कप्तान—नहीं बारूद हमें बरबाद करना अच्छा नहीं। वह सब सामान विपत काल के लिये बचा रखना चाहिये। और किसी तकीब से उनको फंसाओ।

मैंने कहा कि जो उपाय मैं बतलाता हूं करो मेरी जान्ती उनको बहुत अच्छी लगी थी थोड़ा सा बालू पर छींट दी तो वे तुरत आती देख पड़ेंगी ।

मेरा कहना ठीक हुआ। पल भर के बाद ही एक भूरी चिड़िया झाड़ी के पीछे से चौकन्नी होती हुई निकली। हम चारो चुपचाप बैठे रहे इससे उसको हिम्मत हुई। दो एक बार सन्देह के साथ टूंगने पर जब उसको मालूम हो गया कि कोई भय की बात नहीं है तो कुक कुक करके अपने मित्रों को पुकारने लगी। पुकारना सुनते ही झुंड के झुंड चारो पर टूट पड़ीं ।

फिर तो स्टीफन ने दो मोटी मोटी चुनकर पकड़ ली और गरदन मरोड़ डाली। बाकी अपने मज़ेदार आहार में इतने उलझी हुई थीं कि इसका पता उनको न लगा कि दो चिड़िया खोई गईं ।

कप्तान—स्टीफन ! चलो हम तुम जहाज़ पर चलें देखें उसकी क्या गत है ?

चैनी—मैं भी नहीं चलूं पिता ?

कप्तान—नहीं नहीं। हम तुम दोनो लड़कों को यहीं छोड़ जायेंगे हम ही दोनो के लायक़ डेंगी छोटी है। जब तक हम लोग वहां रहेंगे तब तक तुम दोनो यहां बहुत कुछ कर सकते हो। इतना ही याद रक्खो अकेले बहुत दूर मत जाना।

मैं—अगर और कोई नया फल नहीं मिलेगा तो फिर अंडों ही की खोज करेंगे ।

स्टीफन—हां मेरे जानते तो पर सीपी मछली बहुत मिलेगी।

मुझे यह बात ऐसी नई मालूम पड़ी और मैं ऐसा व्यग्र हो गया कि नाश्ते की चीज़ों को ऐसी ही खुली छोड़ छाड़ तीर पर चला गया।

पर चैनी को धीरज बहुत था वह जब सब चीज़ों को ठिकाने रख-चुका तब मछली की खोज में आया ।

दोनो तो जहाज़ की ओर जल्दी चले गये और हम दोनो लड़के कई घंटों तक अकेले ही रहे ।

चेनी ने कहा कि और कोई काम करने के पहले उन चिड़ियों का पंख नोचना चाहिये जो पकड़ी गई हैं।

मैंने मन में कहा कि यह काम ऐसा ज़रूरी नहीं है पर चेनी से बहस करना नापसंद समझ मैं भी इस नये काम में शामिल हो गया।

हम दोनों ने जैसा ख़याल किया था उससे कहीं कठिन यह पंख नोचने का काम था पर किसी तरह धीरज के साथ पूरा कर गुफा में चिड़ियों को रख हम दोनों एक एक टोकरी ले मछली की खोज में चले।

पहले सब चीज़ें डंगी में रक्खी गई थीं पर जब गुफा साफ़ हो गई बिछावन आदि बिछ गया तो वहीं एक कोने में सब चीज़ें भी रक्खी गईं।

तेरहवां अध्याय।

मुझे मछली बहुत अच्छी लगती थी इस लिये मैं बहुत उत्साह के साथ खोज में चला। किसी काम के पूरा करने के लिये उत्साह कैसी ज़रूरी चीज़ है यह वही जानते हैं जिन को काम पड़ा है।

चेनी तीर के किनारे किनारे बड़ी गंभीरता से चला जाता था। उस की गम्भीरता से मेरी हिम्मत तो उस से बात करने की नहीं होती थी।

चेनी भी खाने का शौकीन था और प्राणी और वनस्पति शास्त्र पढ़ा हुआ था इस से भंडार घर की सामग्री जमा करने की इच्छा से आंख खोले चारों ओर देखता भालता जाता था। रसद का सामान इकट्ठा करने में बहुत काम का वह आदमी था।

जुआर हो गया था इस से जंगल के किनारे किनारे हम दोनों को जाना पड़ता था तीर पर जगह नहीं थी।

जल के बढ़े रहने से बड़े बड़े बेड़े चट्टानों पर चढ़ना पड़ता था हम दोनों फुर्तीले और नई चीज़ों की खोज में उत्साही हो रहे थे इस से जो जो कठिनाइयां राह में पड़ती थीं सब ही को सहज मान लेते थे।

नाश्ता करने और पंख नोचने में जो समय लगा था उतने में दिन बहुत चढ़ आया था और बहुत दूर भी हम लोग नहीं बढ़े थे कि गर्मी बढ़ने लगी।

चैनी—आओ ज़रा हम लोग बैठ कर सुस्ता लें तब आगे अच्छी तरह बढ़ सकेंगे।

मैं ने कहा—हां लेकिन यह जमह तो कीचड़ और दल दल से भरी है ज़रा आगे बढ़ कर दूब में बैठना अच्छा होगा।

चैनी—मैं बहुत थक गया हूं मैं तो ज़रूर आराम लूंगा इस के अलावे मैं समझता हूं कि इस दल दलमें बहुत काम की चीज़ें मिलेंगी।

मैं ने पूछा—तुम क्या कहते हो ?

चैनी—मोटे मोटे नरकट सी चीज़ तुम को नज़र आती है न ? अगर मुझे भ्रम न हुआ हो तो मैं समझता हूं कि वह हम लोगों को बहुत सुख देगी।

मैं—जलाने के लिये न ? सूखने पर तो खूब मज़े में जलेगा।

चैनी—जलाने के अलावे और भी बहुत उम्दा काम उस से चलेगा इतना कह कर चैनी ने छुरी निकाल एक छड़का काटने की तइयारी की।

मैं चुपचाप देखता रहा क्योंकि समझ नहीं पड़ा कि क्या कर रहा है।

चैनी बात बड़ी गम्भीरता से और खुल कर नहीं कहता था इस से सवाल करने की मुझे हिम्मत नहीं होती थी पर चुप चाप ताज्जुब करता था कि इस का मतलब क्या है।

अन्धकार में बहुत देर तक मैं नहीं रहा। चैनी ने एक छड़का काट सावधानता से अपनी जीभ में लगाया और धीरे से चखा जब संदेह दूर हो गया तो जो टुकड़ा उस ने काटा था उसे खूब चूसा।

मैं ने पूछा—क्या चीज़ है ?

चैनी दूसरा टुकड़ा मुंह में लेकर बोला "चखो और देखो।"

जैसा उस ने किया था वैसा ही मैं ने भी किया तब उस की बात का भेद खुला मन में मैं ने कहा कि खूब मीठा है तब ज़ोर से कहा "निस्सन्देह यह तो गन्ना है।"

चैनी ने कहा—हां यह तो ठीक है। अगर तुम गदहे नहीं होते तो पहले ही समझ जाते।

मैंने कहा कि अच्छा तो थोड़ा सा काट कर हम लोग तुरत गुफा में ले चलें।

चैनी—हां यही मेरा भी विचार है क्योंकि जब तक मीठा नहीं होता तब तक तो मछलियां नहीं मिलेंगी।

मेरा जी तो पाकशास्त्र में लगा था इस लिये पूछने लगा इसमें से इतना मीठा निकल सकता है जिसमें भोजन मीठा हो?

चैनी—हां उमेद तो है। हम लोग कोशिश करके देखें बहुत से गन्ना काटना ठीक नहीं सिर्फ उतना ही काटना चाहिये जितना हम लोग आराम से ले जा सकें। क्योंकि यहां आकर और भी ले जाना कोई कठिन बात नहीं है।

मैं राज़ी हो गया। फिर हम दोनों ने कई गन्ने काटे। अगार के पत्तों को बांट कर रस्सी बनाया और उसीसे बांध एक बोझा तइयार किया।

फिर मैंने कहा उस पेड़ में फल कौन से लगे हैं।

चैनी ने बहुत ही खुश हो कर गन्ने का बोझा पटक दिया और कहा "वाह वा! यह तो अंजीर है" इतना कह कर उधर दौड़ा दौड़ा गया।

उसका कहना ठीक था। वह अंजीर का छोटासा पेड़ था और पके पके फल उसमें लगे हुए थे। इसके मिलने से बड़ी खुशी मिली। हम दोनों ने पके फलों को खूब खाया। खा लेने के बाद जेब भी हम लोगों ने भर लिया तब गन्ने का बोझ उठा कर चलने की तइयारी की।

चैनी—जगह कैसी तर है यहां ज़रूर जल पक्षी रहते होंगे।

इतना का कहना था कि मानो चैनी की बात सच करने को जंगली बत्तक, मुर्गाबी और दूसरे जल पक्षियों का एक झुंड देख पड़ा। वे चिल्लाते हुए दल दल की लंबी वृक्षों के पीछे छिप गये।

चैनी बोला—आस पास में कहीं मीठे जल की झील अवश्य ही होगी या नहीं तो तलैया के होने में तो संदेह ही नहीं है।

मैंने पूछा—क्या देखने को चलोगे ?

चैनो ने कहा—नहीं आज नहीं। किसी दूसरे दिन पिता और स्टीफ़न के साथ हम लोग सब चीज़ों की खोज में चलेंगे। अकेले जंगल को ओर हम लोगों को नहीं जाना चाहिये। तब तक चलो अंजीर और गन्ना तो ले चलें और तब तक जल भी घट जायेगा फिर मछली की खोज होगी।

उन जल पक्षियों का पीछा नहीं हुआ इसमें पहले तो मुझे दुख हुआ पर पीछे चैनो ही की राय पसंद पड़ी। बाकी दोनो भी जिस दिन बंदूक लेकर साथ चलेंगे तब ही खोज में निकलना अच्छा होगा।

कहीं ऋतु बदल गया पानी आदि के पड़ने से बाहर निकलना मुश्किल हो तो ऐसे अवसर के लिये भंडार घरको खाने पीने की चीज़ों से जहां तक बन भरा पूरा रखना चाहिये।

दोनो जने गन्ने का बोझा ले कर घर की ओर चले। यह काम हम लोगों ने पहले हलका समझ लिया था। पर ले चलने पर मज़ा मालूम हुआ। थोड़ी थोड़ी दूर पर बोझा रखते उठाते, उठते बैठते पेड़ों की छांह में सुस्ताते हम लोग चले।

कभी अंजीर खा लेते, कभी पानी पी लेते इससे शरीर में बल आ जाता था गरज़ किसी तरह हम स्थान पर पहुंचे जिसका इतने ही श्रम में हम लोगों ने नाम 'घर' रक्खा था।

ऊख का बोझा और अंजीरों को कड़ाही में, ठिकाने से रख मछली की खोज में चले।

जुवार अब कम होता जाता था इससे तीर ही तीर बालू पर चलना कुछ कठिन नहीं मालूम हुआ।

मेरा जी तो बहुत चाहता था कि तीर पर के सुन्दर पौधों को चुनता चलूं पर चैनी मना करता था कि इन फ़ज़ूल कामों में वृथा समय नष्ट न करो। मैंने कहा कि इनसे चमच आदि छोटे छोटे बरतनों का काम निकलेगा। इस पर चैनी ने कहा कि "पहले जो बरतन तुम्हारे पास हैं उन पर रखने के लिये भर पूर चीज़ों की तलाश कर लो।।"

हुक्म पाते ही राज को जिस तरह उसने दिखाया उसी तरह एक के ऊपर एक ईंट जोड़ने लगा। पर ईंट उठाना और एक के ऊपर एक रखना भारी मालूम हुआ। सीधा और बराबर रखना जैसा उसने सहज समझा था वैसा सचमुच न था। बहुत ही मिहनत के बाद उसने दीवार बनाई इसका उसको घमंड हुआ। एक राज को हुक्का भर उसने दिखलाया, राज हंसता हुआ गया और पैर उठा कर एक ला... उसने शीतल की दीवार में लगाई जो भरभरा कर गिर पड़ी। शीतल ने एक लफ़्ज़ भी मुंह से न निकाला ... राज ने जो दीवार बनाई थी उसको लात [illegible]ने के लिये दौड़ कर गया। तब तो राज ... शीतल ने निहस्स होकर कहा "हमारी दीवार तुम्हारी बेना ... ी तरह क्यों ... सकता है?"

राज दोनों नेत्र सिखाया गया था ... । जब मैं छोटा था तब दीवारनहीं [illegible] मैंने दीवार बना ... है अब मैं बड़ा हो गया हूं बहुत दिन ... अगर मैं अच्छी दीवार न बना सकूं तो मेरे लिये बड़ी हंसी की बात ...

कई हफ्ते के बाद शीतल दूसरे ... स मकान में आया। पहुंच कर क्या सुनता है कि खट खट खट ... खर खर खर आवाज किस बात की आ रही है? अपने दोस्त राज को खोजने के लिये दौड़ा दौड़ा गया पर सब नये आदमी देख पड़े। पूछने पर लोगों ने जवाब दिया कि "राज का काम हो गया तब अपने घर चले गये।" शीतल ने पूछा "तब तुम क्या कर रहे हो?" जवाब मिला कि "हम लोग बढ़ई हैं। छत दरवाज़ा चौकठ आदि ... लकड़ी का काम बनाने को आये हैं।"

शीतल ने देखा कि कोई छत बनाने के लिये बड़ा बड़ा लट्ठा रख रहे हैं कोई कांटी ठोक कर उनको जोड़ रहे हैं। तब उसने पूछा कि "हम लोगों में कांटी जड़ें?" एक बढ़ई ने लकड़ी का टुकड़ा, कुछ कांटी और एक छोटी हथौड़ी दे कर कह ... कर देखो।"

शीतल इन चीज़ों को पाकर बहुत खुश हुआ। दोनों लकड़ी इकट्ठा कर बाँधें हाथ की चुटकी में कांटी पकड़ हथौड़ी उसने चलाई लेकिन पहली ही चोट में कांटी एक तरफ हट गई। बढ़ई ने कहा "तुमने कांटी को सीधा नहीं पकड़ा फिर कोशिश करो।" दूसरी बार शीतल ने सम्हाल कर उसको सीधा रक्खा और फिर जो चोट उसने लगाई वह चोट उंगली अंगूठा और कांटी पर ऐसी बैठी कि वह झट पटा गया। कई आदमी हंसने लगे पर शीतल रोने लगा। बढ़ई ने कहा "कुछ परवाह नहीं ल[illegible] क्या जाने कितनी चोट हमारी उंगलियों ने खाई है कितनी जगह कट गया तब मुझे [illegible]प लगा, चोट जल्दी आराम हो जायेगी।"

शीतल ने एक बार [illegible] झट अपना [illegible] पहले कई बा[illegible] चोट खाने पर उसने धन्यवाद दे घर गया। [illegible] बढ़ई। जब दर्द अच्छा हो गया तो बढ़ई [illegible] म०—ने

[illegible]ा।

[illegible] लगाई)

तीसरी बार जब [illegible] ने नये मकान में गया कि उसने क्या देखा कि कई आदमी बड़ा बड़ा शीशा लिये हुये उन चौकठों में लगाने की कोशिश कर रहे हैं जिन्हें बढ़ई बना गये थे। नापने पर सभी बड़े हुए। "तुम इसको काट कर छोटा बनाओ मैं बढ़ईसी कैंची लाने को जाता हूं" शीतलने कहा। उन आदमियों में से एक ने कहा "नहीं बबुआ शीशा कैंची से नहीं कटता"—शीतल ने पूछा "तब तुमको आरी कुल्हाड़ी या बटाली [illegible]हिये हम जाकर ले आवें देखें बढ़ई लोग कोई औज़ार छोड़ गये हैं या नहीं।" उस आदमी ने हंस कर जवाब दिया "नहीं नहीं उन सब चीज़ों से शीशा नहीं कटता पर एक चीज़ है जिससे शीशा कटेगा वह मैं तुमको दिखलाता हूं।" तब उसने औज़ार और एक कलम ले कर शीशे [illegible] इस तरह से लकीर खींच दिया जैसे हम लोग पेन्सिल से खींचते [illegible] शीतल ने बड़े अचरज से शीशे का तख़्

चराना सुना और देखा कि शीशा कट गया। वह बोला "कैसे ताज्जुब की बात है कि चाकू और कैंची से शीशा नहीं कटता और एक लकड़ी का बेंट इसे काट देता है।" मिस्त्री ने कहा कि "बेंट तो सिर्फ पकड़ने के लिये है इसके नीचे एक चीज़ दूसरी है जिससे शीशा कटता है।" तब इसने उस औज़ार में जो हीरा जड़ा था दिखला दिया और कहा कि "यह बड़ा सख्त है इसी से शीशा कटता है।" तब शीतल ने देखा कि उसने शीशे की खिड़की के सायक काट कर बना दिया। शीतल ने पूछा ठीक "सायक का तो कट गया पर चौकठ में बैठेगा कैसे?"—मिस्त्री ने कहा कि "चौकठ में शीशे के लिये खांच बना हुआ है लेकिन उससे भी ठीक नहीं सटा रहेगा हवा से गिर पड़ेगा इसी लिये हम लोग चारो तरफ कोर में पुटीन लगा देते हैं इसी से शीशा और चौकठ सट जाता है और इसके सूख जाने पर चाहे शीशा टूट जाये पर पुटीन अलग नहीं होती"—शीतल ने "कहा मुझे मालूम होता है कि पुटीन गारे की सी चीज़ है जिसे राज लोग काम में लाते हैं जब यह नर्म रहता है तो ईंटों के बीच में बिछा देते हैं पर सूख जाने पर वह ईंट ही सा कड़ा हो जाता है।

फिर थोड़े दिनों के बाद शीतल ने आकर बड़ा घंटे की आवाज़ सुन बड़ा अचम्भा माना। एक टिंगे रिंगे रिंग दूसरा टैंगे रैंगे रैंग, तीसरा टींगे रींगे रींग, एक बड़ा घंटा डिंग डौंग डिंग डौंग बज रहा था। आवाज़ा सुनते ही भीतर घुसा, कोठे पर जाना चाहता था कि एक आदमी से भेंट हो गई वह सीढ़ी पर चढ़ा हुआ छत में घंटी टांग रहा था। इनहीं की आवाज़ शीतल की सुन पड़ी थी।

घंटे वाले से उसने पूछा "तुम तो लटका रहे हो घंटा बजाता कौन है?"—मज़दूर ने कहा "एक दूसरे आदमी को हमने देखने को भेजा है कि जाकर तमाम बजाये जिसमें देखा जाये कि यहां बजता है या नहीं देखना चाहो तो ऊपर जा कर देखो।" ऊपर जाकर शीतल ने देखा कि तार में बंधे हुए घंटे के मूठ को खींच रहा है। उस आदमी ने सब दिखलाया। मूठ वाला तार ज़मीन में एक सूराख से होता हुआ नीचे गया और वहां से एक दूसरे सूराख से हो कर दूसरे कोने से चारो

हुआ देख पड़ा फिर पता न लगा कि किधर गया। तब शीतल ने पूछा कि "अब कहां गया?" उसने कहा "आओ देखो" यह कह कर उसने एक बड़ा सा किवाड़ खोला जहां नौकरों के बैठने की जगह थी और कहा "देखो बटुआ उस सूराख से तार निकल कर उस घंटे से बंधा हुआ है।" शीतल ने कहा "पहले हमको नहीं मालूम हुआ कि घंटा कैसे बजता है पर अब जान गये। जब हम मूठ को खींचते हैं तो मूठ तार को खींचता है और तार घंटे को खींचता है घंटे के हिलने से भीतर उसकी जो लोढ़ी रहती है वह हिलती है उसी के हिल कर चोट खाने से टिंग रिंग रिंग निकलता है। पर टींगे रींगे रींग और टिंगे रिंगे रिंग की आवाज़ कहां से निकलती है? उस आदमी ने कहा कि जब घंटा बड़ा रहता है तो वह धीरे धीरे हिलते हैं उनसे गंभीर आवाज़ निकलती है। इतने में उसे अपने घर के पास का घंटा सुन पड़ा—तुरत चला गया।

बटली पानी से कई दिनों तक वह बाहर नहीं निकला पर जब साफ़ हो गया तो शीतल ने उस कोठी का दरवाज़ा बंद पाया। तब उसने घंटा खटकाया था उसी को बजाया। एक नौकर ने निकल कर पूछा कि "क्या चाहते हो?"—शीतल ने कहा कि "मकान का बनना हम देखना चाहते हैं।" नौकर ने कहा कि "मकान बन गया, मज़दूर लोग चले गये और जिन के लिये यह बना है वह सपरिवार अब यहां रहते हैं।" शीतल ने कहा "क्या अब तो इसका आकर हम नहीं देख सकते?"

मकान मालिक पास ही की कोठरी में बैठा था उसने शीतल की बात पहले ही सुन ली थी बाहर आकर उसने कहा "हां बेटा जितनी बार तुम्हारी इच्छा हो देख जाओ पर अब मज़दूर यहां नहीं लगे हैं इससे हम समझते हैं कि तुम्हारा जी नहीं लगेगा।"

वह शीतल को हर एक कमरे में ले गया—हर एक कमरे का अस्बाब दरी गलीचा फ़र्श टेबल कुर्सी घड़ी झिलावन वग़ैरह जितना अस्बाब था घुमा घुमाकर दिखलाने लगा। शीतल यह सब देख बहुत खुश हुआ पर कारीगरों की मुलाकात से उसको बड़ा नफ़ा पहुंचा था, बहुत सी बातें उसने सीख ली थीं। जब कभी राज बढ़ई आदि की बात

वह सुनता तो बहुत ध्यान देता और जब कभी इसकी बात निकलती तो वह अपनी देखी हुई बातें सब से कहता।

बनाग्नि।

चौधरी साहब लिखते हैं कि "हम लोग आराम से सोये थे, भोर होने को दो घंटे बाकी होंगे जब कि घोड़ों का हिनहिनाना और गाय बैल की बिसियाहट सुन अचानक आंख खुल गई। बंदूक ले बाहर जाकर मैंने देखा कि इस शोर गुल का सबब क्या है। जहां तक मेरी नज़र पहुंची तमाम आग की चमक मालूम होती थी। हमारे घोड़े कूद रहे थे और बाकी जानवर मारे भय के इधर उधर दौड़ रहे थे।

मकान के पिछवाड़े जाकर देखा तो लकड़ियों का कड़कड़ाना और जलने की आवाज़ साफ सुन पड़ी। ऐसा मालूम होता था कि आग हमारे ही ओर चली आ रही है। दौड़ कर मकान में गया और मेम साहब से मैंने कहा कि तुम झटपट कपड़ा पहनो और लड़के को भी तय्यार करो और रुपया पैसा जो कुछ साथ ही ले लो तब तक मैं दो उम्दे घोड़ों को कसने के लिये जाता हूं। वक्त बड़ा बेमौकीमत था इससे झटपट यह सब काम हो गया।

हम सब घोड़ों पर चढ़ आग से दूर भागे। मेरी मेम खूब घोड़ा चढ़ना जानती थी हमारे साथ साथ लगी रही। लड़की को हमने थाम ले लिया वह बहुत छोटी थी। भागने के वक्त पीछे फिर कर हमने देखा कि तमाम जंगल में आग लगी हुई है, आंच हमारी ओर चली आ रही है और धुंए की धर चुकी। संयोग अच्छा था कि हमारे शिकारी कपड़ों के साथ सिंधा हमारे साथ ही था। इसको मैंने बजाया कि जिसमें हमारे सब जानवर कुत्ते वगैरह साथ साथ चले आवें।

थोड़ी देर तक तो जानवर हमारे पीछे पीछे आये पर एक घंटा भी पूरा नहीं हुआ था कि पागल की तरह जंगल में घुसे फिर हमने न देखा कि इनकी क्या दशा हुई। हमारे कुत्ते भी जो और समय

में शीश में रहते थे इस वक्त हरिन के पीछे भागे बहुत हरिनें हमारी ओर बहुत तेज़ी से आई उनको भी मालूम हो गया था मृत्यु चली आ रही है ।

और लोग जो जंगल में थे उनकी भी दशा वही थी । क्यों कि उनका सिंघा वगैरह भी हम लोगों को सुन पड़ा । किसी तरह अपनी जान बचाने की इच्छा से, कई मील पर एक झील थी उसीका खयाल हमारे मन में आया क्यों कि पानी से आग रुकने की उमेद थी। मेम साहब को जल्दी जल्दी घोड़ा हांकने के लिये कह कर मैंने खूब तेज़ी से घोड़ा हांका । दोनो जंगल झाड़ी के बीच होते हुए चले ।

हम लोगों को भागने पर भी लहर मालूम हो रही थी । डर इसी बात का था कहीं घोड़े गिर न पड़ें । अजीब तरह की हवा हमारे सिर पर हो कर चल रही थी और आंच से दिन का सा मालूम होता था । मुझे कमज़ोरी मालूम होती थी और मेम पीली मालूम होती थी । लहर से बच्चे का चेहरा लाल हो रहा था । हम लोगों की ओर उसके देखने से दुख और घबराहट बहुत बढ़ गई ।

तेज़ घोड़ों पर दस मील जाना कोई बात नहीं है तिसपर भी जब हम झील के किनारे पहुंचे तो बहुत थक गये थे, दिल छूट गया । लहर और धूंआं बरदाश्त होने लायक न था, आंच जैसी हम सब की ओर आ रही थी वर्णन करना कठिन है ।

तीर पर पहुंच किनारे ही किनारे घूम कर हम सब झील के दूसरी ओर पहुंचे । वहीं घोड़ा छोड़ दिया फिर नहीं मालूम हुआ कि वे कहां गये । जल के किनारे किनारे घास में झुक झुक कर लहर बचाने के लिये हम लोग चले । जल में दिल ताज़ा हो गया और ठंढई का बड़ा आनन्द मिला ।

आग बे ठिकाने झींक से जंगल में बढ़ती ही चली गई । परमेश्वर न करे कि वैसी सुबह फिर देखने में आये । आकाश में धुंए का बादल सा उमड़ा हुआ था और आंच का सी ठिकानाही न था । बदन हम सब का तो ठंढा था पर सिर झुलस रहा था । लड़की इतनी देर में सब बात समझ गई थी उसके रोने से हम लोगों का कलेजा फटा जाता था ।

दिन चढ़ आया हम सब को भूख लगी। कुछ से जंगली जानवर हमारे पास ही जल में खड़े थे। कोई तैर कर इधर आते थे, कोई चुप चाप ही खड़े थे। यद्यपि मैं कमज़ोर और थका हुआ था तौभी एक साहिब मार उसका मांस चखा। रात कैसे बीती यह मैं नहीं कह सकता। ज़मीन पर आग छितराई हुई थी। पेड़ कोई खड़े और कोई बड़े आग के धक्के से मालूम हो रहे थे। चारो ओर आग और चिनगियों का ठिकाना न था धुंआं हमारी ओर झोंक से चला आता था जिससे जी घबराता और दम घुटता था।

भोर होने पर तमाम सलतनत ही गया पर धुंआं अब तक कम नहीं हुआ था। हालत बराबर खराब ही होती मालूम हुई। आगे क्या दशा होगी मैं नहीं जानता था। मेम साहब ने बच्चे को छाती से लगाया वह फूट फूट कर रो रही थी। पर परमेश्वर ने बड़ी आफ़त से माता बचाया, आंख ठंढी हो गई अब निराश होना एक का रटा दूसरे अकृतज्ञता कहलावेगा।

फिर भूख ने सताया पर इसका उपाय जल्दी ही हो गया। कई हरिन जल में सिर निकाले खड़े थे एक को मारकर खाने पर बड़ी ताक़त मालूम हुई। इतने अर्से में बड़ी आग की दूर चली गई पर ज़मीन बहुत जगहों में जल रही थी उन जले पेड़ों में हो कर जाना बड़े जोखिम का काम था।

ज़रा सुस्ताने के बाद हम लोग। बच्चे को छटा गर्म ज़मीन और पत्थरों पर आगे चले। दो दिन रात जैसे मौका मिला उसी तरह खेप चलते चलते ऐसी जगह पहुंचे जहां आग न थी। जल्दी ही एक गृहस्थ से भेंट हुई उसने खातिर की। तब से बेकार आदमियों की तरह मैंने खूब मिहनत करना शुरू किया और अब हट्टा कट्टा और खुश हूं।

उजाड़ गांव।

पहले जहां मनुष्यों के हर तरह के शोर सुन पड़ते थे, जहां के मनुष्यों के मन में सोच फिक्र, लड़ाई झगड़ा से अलावे अच्छी अच्छी बातें हरदम होती थीं वहां अब बिलकुल सुनसान नज़र आता है—न कोई

चलने फिरने वाला, न कोई अफ़सोस करने वाला न खुश होने वाला अब कोई रहा—सब सपना बन सा हो गया।

टूटी फूटी दीवारें जिनके ऊपर का छप्पर समय के प्रभाव से गिर पड़ गया है काई से भर गई है घास पात तमाम उग आई है। जिसकी कोई खबर नहीं लेता उसकी प्रकृति सजीव मुकुट पहना देती है और वहीं पर हरे हरे हर तरह की घास पैदा हो जाती है।

वह उसका मुंडेरा जिस पर गाँव के लोग बैठ गप्प करके समय बिताते थे और वह बड़ का पेड़ जिसके नीचे गाँव के लड़के जमा होकर खेलते और शोर करते थे—इनही दोनों को काल ने कोड़ दिया है पर खुशी की आवाज़ और गत बीत वहां नहीं सुन पड़ती।

छोटे छोटे बाग की जमीन को अब कोई देखने वाला नहीं है। न उसमें फल ही का दरख्त देख पड़ता है, क्यारियां बिलकुल टूट गई, बाग के चारों ओर जो पेड़ थे बेहिसाब बढ़ गये और खतरा गये हैं। बीच में बड़ी बड़ी घास भर गई है।

ऐसी अवस्था में भी इस बात की सत्यता प्रमाणित हो जाती है कि यद्यपि मनुष्य और उसका काम सब नष्ट हो जाता है पर प्रकृति सदा अमर और जवान ही बनी रहती है और काल की बरबादी का उसे कोई दुख नहीं होता बल्कि प्रसन्न भाव ही रखती है इस समय भी उसकी वही दशा है जो बहुत दिनों पहले थी।

जंगल में पक्षी अभी भी चहचहाते हैं। जहां कुंज में जंगली फूल फूलते थे अभी भी फूलते हैं छोटी छोटी नदियां भी पहले ही की तरह अभी भी झर झर बहती ही हैं।

बड़े बड़े पेड़ों की फुनगी पर अभी भी मैना अपना खोता बनाती है, पहाड़ों पर उजियाला और अंधेरा अभी भी होता है, बसन्त ऋतु में तमाम हरियाली अभी भी हो जाती है।

पर अब वे कहां हैं? जो इस मनोरम स्थान में जीते थे जिनका नाम भी हम लोग अब भूल गये हैं उनके बारे में हम लोग इतना ही जानते हैं कि "हां कभी कोई रहता था" जो मिहनत करते थे, लड़ते थे, हंसते थे, रोते थे, खेलते थे, और सुख की नींद सोते थे।

क्रमशः

लैटिन लड़ाई ।

लैटिन लोगों ने देखा कि गौल लोग तो चले गये भय क्या है। यह सोच रोमन लोगों के आधीन रहना उनको नापसंद हुआ। ३४० में रोमन लोगों को उन्हीं ने कहला भेजा कि अब हम लोगों की बराबरी का दर्जा मिले। राजधानी रोम ही रहे पर सिनेट दूनी कर दी जाये और हर साल दो लैटिन और दो रोमन कन्सल चुने जायें। रोमन लोग इस बात पर राज़ी न हुए इसीसे बड़ी भारी लैटिन लड़ाई शुरू हुई जिसकी हार जीत से यह निश्चय होगा कि रोमन या लैटिन इन दोनों में कौन किसपर हुकूमत करेगा। तीन बरस तक (३४०-३३८) बड़ी कठोर युद्ध रही। इस युद्ध में बड़ी लड़ाई वीसूवीयस पर्वत की पहाड़-तली में हुई जिसकी सफ़ाई में बहुत दिनों तक संदेह रहा। पर रोमन कन्सल पब्लियस डिसीयस म्यूस ने सुना था कि जिस ओर का सेनापति आत्म त्याग करेगा वही जीतेगा। सो वह जबादा से मुंह छिपा शत्रु सैन्य में ढेल गया। धीरे धीरे रोमन लोगों ही की जीत हुई।

मैनलियस को दंड आज्ञा ।

टाइटस मैनलीयस नाम दूसरे कन्सल का क़िस्सा सुनोगे तो जान जाओगे कि रोमन लोग कैसे कठोर होते थे। इस कन्सल ने आज्ञा दे दी थी कि शत्रु की ओर के किसी आदमी से कोई अकेला न लड़े। एक दिन उसी के लड़के को एक शत्रु ने ललकारा लड़के से रहा न गया। जाकर वह लड़ा और उसको मार कर लेता आया। लड़के के बाप ने आज्ञा भंग के लिये उसका सिर काटने का हुक्म दिया और आप खड़ा होकर देखता रहा। यद्यपि कुल आदमी भय खा गये पर सब ने कहा कि मैनलियस की दंड आज्ञा ठीक हुई।

रोमने लैटिन लोगों पर कैसे हुकूमत की ।

लैटिन लोग जब हार गये तो रोम ने उनका सब शहर ले लिया और सब को अलग अलग अधिकार दे दिया और आपस में एक दूसरे

की फिक्र रखने के बदले यह सिखलाया कि सब गत पत तुम्हारी रोम ही में है। बहुत दिनों तक मैत्री रहने के कारण रोम लैटिन लोगों को पराया सा नहीं समझ सकता था। दोनों भाई ही की तरह शत्रु से एक ही अस्त्र शस्त्र लेकर साथ ही लड़े थे। इससे जब रोमने जीता तो निर्दयता का बर्ताव उनके साथ नहीं किया पर इतना ही ख्याल रक्खा कि फिर रोम से नहीं बिगड़े। आपस में बैपार उनका बंद कर दिया और कहा कि रोम से बैपार खोलो इस ढंग से रोम ही लैटिन लोगों की राजधानी हो गई। इसके अलावे यह भी कह दिया कि अगर ईमानदारी से रहोगे तो तुम लोग भी रोम के रहनेवालों का इख्तियार पा जाओगे। इन सब बातों से लैटिन लोग तो भूल ही गये कि किसी से हम जीते गये हैं बल्कि रोम के आधीन रहने का घमंड करने लगे। इस ढंग से रोम ने जीते हुए देश को बस रखना सीखा इससे वे कभी न बिगड़े। याद रखना चाहिये कि जब जब लड़ाई हुई रोम ने यही ढंग निकाला। जीते देशों के नगरों का आपस का सम्बन्ध छुड़ा कर सब को यह आशा दे दी कि ठीक रीत से रहोगे तो बहुत कुछ मिलेगा।

दूसरी सैमनाईट की लड़ाई।

रोमने लैटिन लोगों को जो मिला रक्खा बहुत अच्छा किया क्यों कि ३२७ में दूसरी सैमनाईट लड़ाई आरंभ हुई जो ३०५ तक बाईस बरस रही। दोनों ओर के लोग जी जान से लड़ते थे क्योंकि लोग जानते थे कि जो पक्ष जीतेगा वही इटली में मुख्य स्टेट समझा जायेगा। सैमनाईट सेनापति गेयस पौन्टियस बड़ा बीर पुरुष था एक दफा तो उसने प्रायः कुल रोमन सेना को तय कर डाला था। लड़ते लड़ते उसने यह ढंग रचा कि जैसे फौज के साथ भागा जाता हो, रोमन लोगों ने पीछा करना शुरू किया यहां तक कि एक तराई में रोमन फौज बंद हो गई और सैमनाईट लोगों ने चारो ओर से घेर लिया। अपना निकास न देख रोमन लोग पौनटियस के आधीन हो गये उसने मेल करके सब को छोड़ दिया। पर रोम वाले रोमन लोगों ने कहा कि जब तक सिनेट की

मंजूरी न हो कोई मेल (सन्धि) ठीक नहीं है और पौन्टियस के पास उन कन्सलों को क़ैद करके भेज दिया जिन लोगों ने मेल कर लिया था। पौन्टियस ने कहा कि हम चाहते तो कुल फ़ौज को मार डालते और तब तो ज़बर्दस्ती मेल करना पड़ता ; अगर अब भी मेल करना नहीं मंजूर हो तो अपनी फ़ौज को उसी कौडियम की घाटी में भेज दो। लेकिन रोमन लोगों ने नहीं स्वीकार किया और कहा कि जिन कन्सलों का दोष था उनको तो भेज ही दिया है इससे और कुछ बेशी करने के हम पाबन्द नहीं हैं। पौन्टियस ने कन्सलों को वापस भेजा और लड़ाई फिर चली। रोमन लोगों ने इसमें बेईमानी की।

लड़ाई जारी रही। इट्रस्कन लोगों को रोम की शक्ति का भय हो गया इससे सैमनाईट लोगों की मदद देने लगे पर वह भी हारे। अन्त को ३०४ में सैमनाईट लोगों को लड़ाई बंद करनी पड़ी।

तीसरी सैमनाईट लड़ाई।

यह मेली बहुत दिनों तक नहीं रही क्योंकि ३०० में तीसरी लड़ाई प्रारंभ हुई। आज तक इटली की और और जातियां जो आपस में लड़ा करती थीं, रोम के भय से, साथ हो गईं सो यह लड़ाई रोम को हिलाने के लिये सैमनाईट, इट्रस्कन और गौल तीनों ने मिल कर की। सेन्टीनम की लड़ाई २९५ में हुई जिसमें रोमन लोगों ने सब को हरा दिया। दो बरस के बाद सैमनाइटों का बीर नायक कैयस पौन्टियस क़ैद हो गया, रोमन लोगों ने उसे निर्दयता से मार डाला। जो लोग रोम से बिगड़ते थे उन पर रोमन लोग ज़रा भी दया नहीं दिखलाते थे यह भी एक कारण था कि जिन नगरों को वे जीतते थे वे फिर कभी नहीं सिर उठाते थे।

पीछे नगरों से लड़ाई।

इस आखरी सैमनाईट लड़ाई से यह निबट गया कि इटली के दक्षिण भाग का मालिक रोम ही हुआ। सैमनाईट और इट्रस्कन पर तो

इधर तो ही गया था सीस लोग भगा ही दिये गये थे अब लड़ने वाले सिर्फ थोड़े से ग्रीक नगर दक्षिण में रह गये थे। इन नगरों का किसी समय बड़ा सामर्थ था। और अब भी धनवान थे यदि सच पूछो तो ऐसे अमीर हो गये थे कि आप नहीं लड़ सकते थे। टैरेन्टमकी खाड़ी जो इटली के दक्षिण है वहीं एक बड़ा भारी नगर टैरेन्टम था। टैरेन्टम के लोग जब अपने शत्रुओं से लड़ते थे तो रोमन लोग इनके शत्रुओं को सहायता देते थे इसी से रोम के अधिकार से टैरेन्टमवालों को डाह हो गया था। एक दिन समुद्र के किनारे खुली जगह में बैठ कर वह लोग नाटक देख रहे थे कि एका एक दस रोमन जहाज़ टैरेन्टम बन्दर के पास आते हुए देख पड़े। मारे क्रोध के सब जहाज़ पर दौड़े, रोमन लोगों को मार पीट कर आधे आदमी नुक़सान कर डाले, सोयह लड़ाई २८२ में शुरू हुई।

पिर्ह्रस से लड़ाई।

टैरेन्टम के रहनेवाले टैरेन्टाईन कहलाते थे। पर ये आप लड़ने से डरते थे और इटलीमें ऐसे कोई न थे जो रोम से लड़ सकते सो उन्होंने ग्रीस का मुंह देखा। इटली के पास ही ग्रीस के पश्चिम किनारे एपीरस का राजा पिर्ह्रस रहता था। उससे टैरेन्टम वालों ने मदद मांगी। वह जवान था हौसला भी बहुत था, बड़ी खुशी से मदद देने को मुस्तैद हो गया। वह सिपाही भी अच्छा था और अच्छे सिपाहियों की फौज भी लाया था। इटली के बाहर रहनेवाले आदमियोंसे लड़ना रोम को बड़ा भारी मालूम हुआ पर क्या करें अपने बचावे के लिये वह भी करना पड़ा।

२८० में बड़ी फौज के साथ इटली में उतरा। रोमन लोग जो लड़ने को पहुंचे थे साइरीस नदी के किनारे हेरेकलिया में हार गये। इनके सवार भी ग्रीक सवारों के से अच्छे न थे, इसके अलावे ग्रीक लोग हाथी ले आये थे। हाथियों को देखते ही रोमन घोड़े भड़क गये। यद्यपि पिर्ह्रस ने लड़ाई जीती पर उसके आदमी बहुत मर गये। यह देख उसने कहा कि "ऐसी थोड़ी सी जीत जहां हुई कि मैं बर्बाद हुआ।" इससे उसने टैरेन्टम और अपने पक्ष में रोमसे मेली करने के लिये आदमी भेजा। उस आदमी का नाम सीनियस था इसकी चालाकी से सिनेट ने

मान लिया था पर एक रोमन सरदार जो कन्सल और सेन्सर हो चुका था पर अब बूढ़ा और अंधा हो गया था किसी तरह सिनेट सभा में पहुंच अपनी दम टूट आवाज़ में उसने सबसे मिनती की कि जब तक पिर्हस इटली में रहे उससे मैत्री कभी मत करो। इसी जवाब के साथ सिनेट ने सिनियस को बिदा दिया। जब वह लौट आया तो पिर्हस से उसने कहा कि "रोम से लड़ना वृथा है क्योंकि वहां की सिनेट क्या है राजाओं की सभा है।" दूसरे वर्ष पिर्हस ने फिर रोमन लोगों को हराया पर वे क्यों माने। इसके बाद पिर्हस सिसिली में दो वर्ष तक लड़ता रहा, फिर जब लौट कर आया तो उसकी फ़ौज बहुत कमज़ोर थी। रोमन लोग भी इधर अपनी सवारी की फ़ौज ठीक कर रहे थे हाथी का भय भी कुछ रहे थे अब उससे मुक़ाबले में लड़ सकते थे। सो २७५ में बेनी-बेन्टम की लड़ाई में रोमन लोगों से पिर्हस हार गया। सब फ़ौज खोकर उसे एपिरस में लौट जाना पड़ा। उसका लड़ाई का हौसला तब ही गया और तीन बरस के बाद ग्रीस ही में जब आरगौस नगर को घेरे हुए था कि एक स्त्री के फेंके हुए पत्थर की चोट से वह मर गया।

रोम का इटली में राज।

पिर्हस के भाग जाने पर इटली का दक्षिण भाग लेने में रोम को कुछ भी कठिनता न हुई। पश्चिम किनारे मैकरा नदी और पूर्व किनारे रुबिकन नदी—इसी लकीर के दक्षिण बिलकुल रोम का राज रहा इसके उत्तर गौल देश था। इटली तमाम ज़िले ज़िले बंटा हुआ था और उसमें मुख्य एक एक नगर था सब पर रोम का राज हो गया। अब हालत यह थी की रोम नगर बासी तमाम इटली का राज करते थे और सब यही चाहते थे कि हम रोम नगरबासी हो जायें। रोम के बाद लैटिन लोगों को रोम के रहने बालों का सा कुछ अधिकार मिल गया था और समय पाकर बाकी भी पाने की आशा थी। इसके बाद इटैलियनों का दर्जा आया जो अपने नगर का काम काज आप ही देखते थे पर रोम की आज्ञा में रहना पड़ता था इसके अलावे काम पड़ने पर रोम की फ़ौज में भी काम करना पड़ता था।

दो ढंग से रोम ने इटली को अपने हाथ में रक्खा । इनको याद रखना चाहिये क्यों कि जब जब देश उसने जीता, यही ढंग रक्खा—

(१) नई बस्ती बसाना ।

(२) सड़क बनाना ।

रोम की नई बस्तियाँ ।

(१) बस्ती से मतलब यह है कि दूसरे मुल्क में जाकर रहना । इटली में जहाँ उनलोगों ने जीता थोड़ी जगह अपने अधिकार में कर लिया और वहां स्टेट बनाकर थोड़े से रोमन नगर बासियों को बसने के लिये भेज देना । इस ढंग से इटली भर में बहुत से छोटे छोटे रोम छितराये हुए थे । रोम अपनी बस्ती पर सदा विश्वास रखता था क्यों कि रोम को रोमन लोग कभी नहीं भूलते थे । यह बस्ती क्या थी कि सब इटैलियनों को आंख तली रखने के लिये एक तरह की छावनी थी पर यह सिपाही की छावनी से बहुत बढ़ कर थी क्यों कि इनमें शान्ति-प्रिय लोग रहते थे जो आप खेत में काम करते थे और दूसरों को भी यही चाल सिखलाते थे । इन सब बातों से इटैलियन लोग रोमन लोगों को जान गये और उनही की तरह होने की कोशिश करने लगे और रोम के राज से राज़ी रहे ।

रोमवालों की सड़कें ।

(२) रोमन लोग सड़क बहुत अच्छी बनाते थे । उनकी सड़कें ऐसी उम्दा और मज़बूत होती थी कि बहुत सी रोमन लोगों की सड़कें आज तक मौजूद हैं । ये सड़कें रोम से इटली देश के अलग अलग भागों तक लगी हुई थीं इससे काम पड़ने पर ख़बर भी जल्दी इनको मिलती थी और जहां ज़रूरत होती थी फ़ौज भी जल्दी भेज देते थे । यह तमाम शान्ति रखने का बहुत उम्दा ढंग था । सब जगहों से सड़कें रोम से मिली हुई थी जिससे ऐसा मालूम होता था कि रोम ने सब शहरों को बांध रक्खा हो ।

पुराने रोमन लोगों की चाल।

इस ढंग से रोम इटली का राज करता था। जिन दिनों उसको सैमनाइट और पिङ्रस की लड़ाई लड़ना पड़ता था वह उसके बड़े बढ़न्ती के दिन थे। क्यों कि रोमन लोगों को तब भी बड़ी मिहनत करना पड़ता था और अब तक अमीर नहीं हुए थे इससे सच्चे, बीर और उदार थे। उनकी सीधी चाल के वर्णन में बहुत किस्से कहे गये हैं। उनके बड़े भारी राजनैतिक पुरुष और सेनापति आदि मामूली लोगों से ज़रा भी बढ़ चढ़ कर नहीं रहते थे और जब कोई उनके पास भेंट वगैरह भेजता था तो वह फेर देते थे। एक बार सैमनाईट लोगों ने मेनियस क्यूरियस नाम एक बड़े भारी रोमन सेनापति को भेंट के तौर पर सोने का डला भेजा। उन दूतों ने देखा कि खेत पर वह आप रसोई पका रहा है और शलजम भून रहा है खाने के लिये लकड़ी की एक रिकाबी थी। जब सैमनाईट लोग उसके सामने सोना ले आये तो उसने फेर दिया और कहा कि "जिनके पास सोना है उन पर हुकूमत करना सोना लेने की अपेक्षा कहीं बढ़ कर है।"

पर वह समय भी जल्दी ही आने वाला था जब कि रोमन लोगों को लड़ाइयों में अमीर होना था और सब सीधी चाल लोप हो जाने को थी।

तीसरा अध्याय।

कार्थेज के साथ रोम की लड़ाई।

पिङ्रस के जाने के कुल ग्यारह ही बरस बाद रोमन लोग एक दूसरी लड़ाई में लगे। यह लड़ाई कार्थेजवालों के साथ हुई।

कार्थेज की उत्पति।

यह नगर अफ्रिका के उत्तर तीर पर ऐसी जगह था जो सिसली टापू के बहुत निकट है पैलेस्टाईन के उत्तर सीरिया एक देश है।

लङ्का के रहने वाले फिनिशयन कहलाते थे उनहीं मे बसा हुआ कार्थेज नगर था। सीरिया में दो बड़े बड़े नगर टायर और सिडौन थे। पैलेस्टाईन देश से इज़राईल लोगों ने जिन कनान देश वासियों को भगा दिया था वह, और फिनिशयन एक ही थे। इनकी भाषा हिब्रू थी। इसमें यहूदी जिस जाति के हैं वह भी उसी ज़ात के थे। पुराने वक्त में बड़े सौदागर थे। लोग कहते हैं कि उनके जहाज़ गौल देश तक जाते थे और इंग्लिस्तान से वह टीन लाते थे। रोम की नेव पड़ने के १०० बरस पहले टायर के मनुष्यों ने आकर कार्थेज की नेव डाली थी। सौदागरी के कारण रोम से यह जल्दी बढ़ गया। रोम ही की तरह कार्थेज मे भी राज होता था, राजाओं से नहीं पर सौदागरी से अमीर बने हुए बड़े बड़े आदमियों के द्वारा। अफ्रिका के उत्तर का आधा पश्चिम भाग कार्थेज ने जीत लिया था पर जीते हुए देशों के साथ ये वैसा अच्छा व्यवहार नहीं रखते थे जैसा कि रोमन लोग इटेलियनों के साथ रखते थे और लड़ाई जो होने वाली थी उसमें तुम देखोगे कि यह कैसी ज़रूरी बात थी।

सिसिली में कार्थेज वाले।

सिसिली ही में पहले पहल रोमन लोग और कार्थेज वालों से भेंट हुई। यह टापू इटली और कार्थेज के बीच में पड़ता है इस से दोनों का उस टापू में मिलना बड़ा ज़रूरी स्वाभाविक था। इटेलियनों की लेटिन जाति की सी एक जाति सिमेल्स उस टापू में जाकर बसी थी उसी के नाम से टापू सिसिली कहलाया। पर ७३५ में ग्रीक लोगों ने एक बस्ती बसाई इस से सिमेल लोगों ने ग्रीक ही लोगों के ऐसा होना सीखा वह भी कार्थेज वालों ही की तरह सौदागरी करते थे इस से दोनों सदा लड़ते थे विशेष करके कार्थेज वाले जो सिसिली के पश्चिम किनारे रहते थे ग्रीक लोगों को निकाल देने की कोशिश किया करते थे। इस से जिन दिनों रोम पहले पहल इटली में अपनी लड़ाई में फँसा था उन ही दिनों में सिसिल में ग्रीक और कार्थेज वालों में बराबर लड़ाई होती थी। बड़ा ग्रीक लोगों के राजा साइरेक्यूज़ में रहते थे।

CLEMENT'S TONIC

मरीज़ों के ख़िदमत में,

क्लेमेन्ट साहब की दवा मक़व्वी।

एक जल्द असर करने वाला क़ाबिल एतबार इलाज है वास्ते नीचे लिखे हुए मरज़ों के—

पट्ठों की कमज़ोरी नुक़सान जिस्मानी फुर्ती की कमी और हर तरह की कमज़ोरी सलबी ताक़त की कमी जिरियान और मनी और परदश वग़ैरह वग़ैरह क्लेमेन्ट साहब की मक़वी हमेशा के लिये क़ामिल तौर पर जिस्मी फुर्ती को बहाल और बरक़रार रखती है और पट्ठों की ताक़त को ज़ियादे करती है और जवानी की पुरदिली और शबाब की पुर जोश-लगी को ताज़ा कर दिखाती है जिस्मानी और अज़ाय रइसां की हरकाती ताक़त को उन मर्द और औरतों के ताज़े कर देती है कि जो कमज़ोर ज़ईफ़ सुस्त और ख़स्ता और मांदा हो गये हैं क्लेमेन्ट साहब की मक़वी एक बेनज़ीर इल्म ही है हर तरह से इन्सान के हक़ में इस की अजीब सेहत बख़्श ताक़त ज़ाहिर होती है इसके इस्तेमाल के बाद ही और बाबत में ताकीदी शहादत उन लोगों की जो इस की इस्तेमाल में ला चुके हैं वैसे निहायत और बेशुमार हैं वह लोग बयान करते हैं कि वह हर एक मोताद की तासीर को नफ़े और फ़ायदे पहुंचाने वाली बातें हैं फ़िल हक़ीक़त यह एक ऐसी पुर तासीर मोक़वी है कि जिस से पट्ठों को ताक़त पहुंचाती है और जो हर एक रग ओ पै में जिस्म के पट्ठों के ज़रिये से ताक़त बख़्श और ताज़ा करने वाला असर को पहुंचाती है हर हालत में ख़ाह जिस्मानी ताक़त बसबब मर्ज़ शदीद के कम की गई हो या सुस्ती और तकलीफ़ और मेहनत सख़्त के या किसी क़िस्म के ज़रर पहुंचाने वाली नाअक़बत अन्देशी के सबब से हो ख़ाह वो घटी हुई हालत किसी

तरह की ही जब कि पट्ठों की कमज़ोरी पाई जाये या किसी किस्म की ख़ास कमज़ोरी या हर तरह की कमज़ोरी ही जब कि सुस्ती या ज़ोफ़ या कम ताक़ती उस मर्ज़ का बाइस हो इन हालतों में क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी ही सिर्फ़ इलाज है। जो लोग कि बदनी या क़लबी शदीद मिहनत के नतीजों के सबब तकलीफ़ पाते हैं या कि सख़्तियों से और सर्दी या गर्मी बरदाश्त करने के सबब से या कि किसी नामालूम सदमे के सबब या हिर्स वी तमें के सबब या जो लोग दानिस्ता वी नादानिस्ता इहकाम-इ-क़ुदरत को न मान कर अपने को तकलीफ़ में डाले हुए हों वह लोग क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी को एक ऐसा इलाज पावेंगे जिस से कि यक़ीनी उन को तकलीफ़ से नजात मिलेगी। यह मुक़व्वी बहुत ही जल्द हर किस्म के ज़हूर तरक़्क़ी जिस्मी नाताक़ती को दूर कर देती है और फुर्ती के घटती को उस की असली ताक़त और दुरुस्तगी तक पहुंचा देती है। जब जब कमज़ोरी आज़ार रईस को ज़ाहिर हो या कि पट्ठों की कमज़ोरी और घट जाना जिस्मी या क़लबी हरकत का नमूद हो या कि घबराहट खयाली का या सुस्ती एतमाद का, या चिड़ चिड़ाहट मिज़ाज का, मालखोलिया, बुज़दिली, घुटनों की या पीठ की कमज़ोरी, दिल की धड़क, सिर का दर्द कमर का दर्द, कड़ा रखना हो, पीठ का दर्द, दांत का दर्द, जी मारूद वक़्त पर हुआ करे याज़ा शिकमी, जोड़ का दर्द, बेख़ाबी दर्द सरी, सुबह के वक़्त सुस्ती बायालात और जोड़ों का दर्द मोज़िश ममाना, वो गुर्दों को मोज़िश, मसला पेशाब जो पीच की तरह हुआ करता है, ज़रर पहुंचाने वाला और नामालूम नुक़सान जिस्म का या कि टूसरे अलामात जिस के नतीजे हैं दिली या जिस्मी ताक़त की नुक़सान काहिर हो मर्द और औरतों की कामयाबी के मुक़ाबिल में एक रोक पैदा करे और उन की ज़िन्दगानी की वाजिबात के और ज़रूरी कामों के अंजाम देने में काबिल बनावे तब तब ऐसी हालतों में क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी सिर्फ़ एक ही पुर तासीर इलाज है और आज तक होती आई है। नौजवान लोग जो ज़िन्दगानी के जाननगाह में दाख़िल हुआ चाहते हैं और अपनी क़ाबलितियों पर क़ब्ज़ा या इख़्तियार अच्छी तरह रखते हैं और कामयाबी के हद तक अपनी मुरादें के ले जाने पर क़ादिर हो क़ायल हैं और वे मौजूद अदमी

और क़ाबिल सहसीन और फ़रब दिलाने वाले नुर्ख़ती के नतीजों को हासिल करने चाहते हैं क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी उन के वास्ते पहली सीढ़ी उन के मुराद तक पहुंचने की है।

बहुत लोग जिनकी ढिलती हुई फुर्तियां बतलाती हैं बक्त से आगे जवानी की तनज़ुली का आना और जो मालूम करते हैं कि रफ़्त रफ़्त वे एक बेर इस दुश्मन के हवाले में जाने को हैं और जिनकी ज़िन्दगी के ख़ज़ाने में बड़ी बड़ी हुंडियां दाख़िल की जाती हैं ताकि बचपन के क़र्ज़ सब अदा किये जावें या कि जिनके ज़ख़ीरे फुर्ती के मर्ज़ के बायस कम हो गये हैं या सुस्ती और जांफ़िशानी और ज़िन्दगानी की मिहनत के सबब घट गये हैं या कि किसी और और तरह से अपनी ताक़त को ज़ाया किये हैं उनके हक़ में क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी एक दोस्त है जो मुसीबत के वक़्त पर दस्तगीरी करेगा और एक पुरज़ोर मदद है और एक दुरुस्त करने वाला बुरी हालतों का है जो कभी नहीं चूकेगा और वे इससे एक नई ज़िन्दगी हासिल करेंगे और बदनी ताक़त भी हासिल करेंगे और सब तरह की हालत जो फ़र्ती ताज़ा कामिल तौर पर हो जावेगी।

बूढ़े लोग इस मुक़व्वी के इस्तेमाल से इनहिज़ाज़ की पेशक़दमी को रोकते हैं और ताक़त की तनज़्ज़ुली में बच रहते हैं और अपने शबाब को दोबारा हासिल करते हैं ताक़त बदनी पाते रहते हैं और दोबारा अपनी क़ाबलतियों पर क़ाबिज़ हो क़ादिर हो जाते हैं और अपनी फुर्ती हो क़ाबिलियत की इमेश बहाल हो बरक़रार रखते हैं।

नौजवान औरतें क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी को एक निहायत ही पुरतासीर इलाज पावेंगी जो सहलुल वसूल है। इससे हर किस्म की कमज़ोरी जो ख़ास कर औरतों को हुआ करती है इलाज पज़ीर होती है और दफ़ा हो जाती है इसके मुक़ाबिल में और इलाज औरतों की कमज़ोरी दूर करने का नहीं है। और ज़ईफ़ुल क़वा नाज़ुक और नहीफ़ बदन छोटी लड़कियों के हक़ में यह बतौर आला के काम करती है और यक़ीनी पुरज़ोर ज़नाना तबियत पैदा करती है यह पुरतासीर इलाज उन बसीलों को पैदा करती है जिसके ज़रिये से ज़रर पहुंचानेवाली बेमीका तकलीफ़ात को पहिले से रोका जाता है और पुरज़ोर ख़ाहिशात नफ़्सानी

को दबाया जा सकता है और फ़र्ती की हालत के नुक़सान का जब्र कर देता है और आज़ाय रईस के हरकात की बद इन्तज़ामी को दुरुस्त किया जाता है और एतदाल पर लाया जा सकता है खलल पहुंचे हुए दीमाग़ को और मालिख़ोलिया और ख़यालात फ़ासिद के बहशत को दूर किया जाता है और ख़ुशनुमा मज़हर ख़ुदा को हमारी ख़िलक़त के इलाकत और तबाही से बचा लेता है दूसके इस्त्यमाल से बराबरी दरमियान नुक़सान औरजब्र नुक़सान के बरकरार रक्खा गया है, नुक़सान बेजा रोका गया है ज़रर पहुंचा हुआ को दुरुस्त किया गया है कमज़ोर किया हुआ और सिकुड़ा हुआ रगों को ताक़त असली और दुरुस्तगी दी गई है बेवकूफ़ी ओ नादानी ओ ग़लती के नतीजे दुरुस्त किये गये हैं और ग़ायत दर्जे के ज़लील और इबृत देने वाले मरीज़ अपनी तकलीफ़ों से मुख़लिसी पाये हैं और आदत पकड़े हैं मरदाना सिफ़तों से, और हिम्मत में और फ़र्ती और बदनी ताक़त से। क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी में जितने लोग चंगे हुए हैं उनका एक दफ़्तर मौजूद है और जो जो बेहतरियां इस दवा ने ज़ाहिर की है वैसी ख़ूबियां हज़रत आदम के ज़माने से किसी और दवा ने आज तक ज़ाहिर नहीं की। मांग भेजने से हम लोग तफ़सील कामिल और सनदें वग़ैर किसी ख़र्च के हर कहीं भेज सकते हैं मरीज़ों को चाहिये कि बहुत ख़बरदारी से इस दवा को ख़रीदें क्यों कि हर जगह पर नक़ली दवा बिक रही है और उनको बड़ी ख़बरदारी करनी चाहिये जिसमें उन्हें सिर्फ़ क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी मिले। और यह भी ख़याल रहे कि अक्सर नक़ली या जाली दवा भी अलकहल के निस्बत ज़ियादा ज़रर पहुंचाती है।

क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी तलब करो हर एक दवा फ़रोश इसकी बेचता है।

F. M. Clements

यह दस्तख़त—हर एक दवा के बोतल पर है।

न्यूटाउन, सिडनी
आस्ट्रेलिया
} मरीज़ों के ख़िदमत में।

मसोढ़ी के दंगे वालों को एक एक वर्ष की सज़ा दे दी गई। बे-चारे बे कमूर बांधे गये।

—:o:—

मई महीने के तीसरे सप्ताह में तो खूब गर्मी पड़ने लगी। प्रात ही बजे से लोग बिकल होने लगते हैं।

—:o:—

काशी में एक दल रामलीला करने वालों का आया हुआ था। लीला अच्छी होती थी। यह लीला बेनीदास की की ठाकुरबाड़ी के पास होती थी।

—:o:—

ज़मींदारी पंचायत का वार्षिक रिपोर्ट १२८८ का धन्यवाद सहित स्वीकार करते हैं।

—:o:—

पहले हफ़्ते की आंधी में २२ नाव तीसी लदी हुई गंगा जी में डूब गई थी। बीरे जब निकाले गये थे तो तीसी की एक लत भी बाकी न रही। जवाब होकर बोरी में लिपटी थी।

—:o:—

काउन्सिल में मेम्बर भेजने के लिये जो इलेक्शन यहां हुआ उसने बहुतों का जी भीतर ही भीतर दहला हुआ। पर महाराजा साहब दर-भंगा के चुने जाने से सब ठीक हो रहा।

—:o:—

शहर में गली और सड़कों पर पक्की नालियां बन रही हैं पर उनसे कुछ काम नहीं चलने का— भला जहां वर्षा में कमर कमर भर पानी चलता है वहां दो या ढाई बिता चौड़ी और प्रायः एक गज़ गहरी नाली से क्या होने वाला है।

—:o:—

राय ईश्वरीप्रसाद शहर के रईस पर तीन बदमाशों ने तलवार चलाई थी उनमें से एक गोविन्द प्रसाद मिश्र को दस वर्ष के लिये काला पानी की सज़ा हुई और बाकी दो सात सात वर्ष के लिये बा मिहनत क़ैद किये गये।

—:o:—

स्थानीय समाचार।

इस महीने का पहला हफ़्ता ख़ासा बरसात का नमूना हो गया था। आंधी पानी का ज़ोर बैठिकाने, सूर्य का दर्शन नहीं। गर्मी यहां तक दूर हो गई थी कि जज साहब ने दौरे के मुक़द्दमों की तजवीज़ के लिये कचहरी दस बजे की कर डाली थी। दौरे का मुक़द्दमा उन्नीसवीं मई तक होता रहा।

—:—

श्री रामेश्वर यात्रा—मुज़फ़्फ़रपुर निवासी बाबू देवी प्रसाद की लिखी धन्यवाद पूर्वक स्वीकार की गई। उधर की यात्रा जिनको करना हो अवश्य ही इसकी एक प्रति उनको रखना चाहिये। जो तीर्थाभिलाषी न भी हों उनका भी जी अवश्य इसमें लगेगा। नारायण प्रेस मुज़फ़्फ़रपुर में छपी मूल्य कुल चार आना है।

—:—

यहां से थोड़ी ही दूर पर एक गांव पृथ्वीचक है। १४वीं मई की रात को वहां के रहने वाले चमरू भगत के मकान पर ६०—७० आदमियों ने मिल कर डाका दिया। लोग कहते हैं कि घर का वह अच्छा था। अब घर तरह से मुहताज हो गया। पुलिस ख़बर पाते ही वहां जा पहुंची। दारोग़ा इन्स्पेक्टर वग़ैरह हैरान थे अब तक मुज़रिमों का पता नहीं लगा।

—:—

महकमे कलेक्टरी और मजिस्ट्रेटी और इसके आधीन कचहरियों में नागरी अक्षरों में काम होने लगा। मज़े में हो भी रहा है पर वही उर्दू अक्षरों के आदी अभी भी यही कहते हैं कि "काम कैसे चलेगा।" धन्य हैं ये महात्मा जो देख कर भी नहीं देखते जब कायथी अक्षर जारी हुए थे तब भी वे ऐसा ही कहा करते थे पर ग्यारह वर्ष तक उसी अक्षर में काम बेखटक होता ही रहा। हमारे छोटे लाट इस बात के लिये अवश्य धन्यवाद के योग्य हैं।

———

REGISTERED NO [illegible]

THE BEHAR-BANDHU

बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

JUNE 1883. VOL. XXII—NO 6

मासिक पत्र।

जून ८८३ बाईसवां भाग—नम्बर ६

१ लोग क्या कहेंगे ?
२ जीव जन्तु—
सफेद सिरवाला गिद्ध
सियार गोश
गिलहरी
चिन्पांज़ी का बच्चा
३ समुद्र में गिरीन्द्र (बनातार)
४ विश्व मन रंजन (बनातार)
ईश्वर जिसमें हम सांस लेते हैं
टकसाल की सैर
५ रोम

बांकीपुर
"बिहार-बन्धु" छापाख़ाना,
१८८३।

[illegible]

लोग क्या कहेंगे ?

लोग क्या कहेंगे ? इसके भय से जब ज्ञानी और प्रवीण आदमी भी नहीं बचे तब जवानों की तो बात ही क्या है ? यह भय ऐसा है कि लोगों की अच्छी इच्छा को रोकता है और दुर्बल कर डालता है और मनुष्य को मनुष्य का गुलाम बना डालता है । युरप और अमरिका से गुलामों की खरीद बिक्री उठ तो गई है पर जिसका ज़िक्र यहां किया जाता है उससे अच्छी तरह युरप और अमरिका वाले भी न छूट सके । भारतवासी तो बिचारे अलग ही हैं ।

भारतवर्ष के लिखे पढ़े लोगों में सब ही की यह इच्छा है कि, देश में कुसंस्कार से जो रीति नीति हैं और खराब देशाचार सब दूर होवें और स्वदेशीय लोग पवित्रता, धर्म, सतकार्य आदि आदि में दिन दिन ऊंचे होवें । वह यह जानते हैं कि अपनी सदिच्छा के अनुसार न चलने से मनुष्य नाम की गौरव रक्षा नहीं होती है, इस तरह के कामों में हाथ डालने ही से अच्छे कामों में साहस करने का दृष्टान्त दे सकते हैं, सब ही लिखे पढ़े आदमी, अपना मतलब पूरा करने को साहे मुंह पर जैसा कहें, लेकिन, वैसे काम करने वालों की मन में बिना बड़ाई किये नहीं रह सकते—केवल मूर्ख और निर्बोध मनुष्य उनकी निन्दा करते हैं और हर तरह से उनको नीचा दिखलाने की कोशिश करते हैं । लेकिन लोग जान लेंगे तो क्या होगा ? इनही मूर्खों की गिनती अधिक जान कर वे डर से फिर जाते हैं । ज्ञान या लिखना पढ़ना, किसी चीज़ से भी उनका वह डर दूर नहीं हो सकता । जिस मंडली को निर्बोध और नीचा समझते हैं उसी मंडली की बड़ाई पाने की कोशिश में अपने दिल को ढीला कर देते हैं । लेकिन जिनको पढ़े लिखे और ज्ञानी समझ कर, दिल से चाहते हैं, उनकी गिनती कम है इस लिये अपनी बड़ाई लोप होने के डर से अच्छे काम में

आगे पाँव नहीं बढ़ाते। इसी तरह हीरा के बदले में काँच लेने की तरह अपने विवेक को छोड़ कर निर्बोध आदमियों की तारीफ़ रूपी गुलामी में अपनी ज़िन्दगी को छोड़ देते हैं।

इस श्रेणी के हर आदमी धर्म की अपेक्षा लोक निन्दा से ज़्यादा डरते हैं। वह एक बार भी नहीं विचारते कि इसमें स्वाधीनता नहीं है—वह निर्बोध आदमियों के गुलाम हैं—वह आप अपना सन्मान करना नहीं जानते लेकिन दूसरों से सन्मान पाना चाहते हैं। वे दूसरों की बुद्धि के बस ही कर चलते हैं कपट और चतुराई से बड़ाई पाते हैं। लेकिन जब लोगों को मालूम हो जाता है कि वे अपने बल से नहीं चलते तब उनसे वे श्रद्धा हीन होने लगते हैं। जिनसे बड़ाई पाने के लिये उन्होंने, ज्ञान, विद्या, धर्म आदि सब ही छोड़ दिया वेही उनका निरादर करना आरंभ करते हैं। वे निराश होकर चारो तरफ़ अंधियारा ही देखते हैं। तब सब आदमियों को जो खुश करना चाहता है वह किसी को भी खुश नहीं कर सकता।" इस उपदेश भरे कहावत की सचाई अच्छी तरह वे समझने लगते हैं। इससे सारांश यह निकला कि, अपने को छिपाकर किसी काम में भी सच्चा सुख पाने की आशा नहीं की जा सकती। अपना मतलब और बड़ाई हासिल करने के लिये मनुष्य और ईश्वर को ठगने की कोशिश करने से वे आपही ठगे जाते हैं। ऐसा आदमी कभी भी सुख नहीं पा सकता। उनके सुख की आशा मृग तृष्णा के समान है।

एक और तरह के आदमी होते हैं जो मन में समझते हैं कि किसी तरह का काम करने से उनकी इज़्ज़त घट जायेगी। ऐसे आदमियों की गिनती हिन्दुस्तान में जितनी ज़्यादा है उतनी पृथ्वी के और किसी देश में नहीं मालूम होती। इस अभाग्य का कुछ ठिकाना है कि लोग सब काम करने को बेइज़्ज़ती समझें लेकिन भीख मांगने में बेइज़्ज़ती न समझें। यहां पैसा खर्च करके भी सस्ता दाई नौकर न मिलेंगे लेकिन अगर इस बात की ढींढ़ी पिटवा दी जाये कि फ़लानी तारीख़ को भीख बांटी जायेगी तो फिर क्या है हज़ारों वैष्णव और वैष्णवी

बन कर मर्द और औरत अपने अपने लड़के बालों के साथ गुल शोर मचाते हुए दरवाज़े पर मौजूद हैं। अगर उनमें से किसी की हिम्मत करके पूछो भी कि "भाई तुम तो मज़बूत हो भीख क्यों मांगते हो?" चट से जवाब मिलेगा "भीख देना हो दे दो नहीं तो चले जायें, तुम्हारे क्या कुछ कर्ज़दार हैं?" दूसरा कहेगा "हम भीख मांगते हैं तुम्हारा क्या बिगड़ता है?" तीसरा कहेगा "हमारे तीन पुश्त भीख मांग कर खाते आये इसी लिये हम भी भीख मांगते हैं।" यह कहना यहां ज़रूरी है कि उनमें बहुतों का यह खान्दानी पेशा चला आता है, लेकिन बीच बीच में नये आदमी भी फ़क़ीर बन कर उनका समाज बढ़ाया करते हैं।

इन सब आदमियों से देश की कितनी हानि हो रही है वह पढ़े लिखे सब ही आदमी जानते हैं। भीख मांगने का रोज़गार करने वाले आदमियों को भरण पोषण और सुख के लिये जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है सब ही, उनको बिना तकलीफ़ के मिल जाती हैं। दूसरों ने मिहनत कर के जो सब काम किये हैं यह लोग बहुत ही सुख से उसका फल भोग करते हैं लेकिन दूसरे आदमियों के लिये ये लोग (फ़क़ीर) काम करना तो दूर रहे एक दफ़ा सोचते भी नहीं, इस लिये इन लोगों के आलसी रहने से समाज की जो घटी होती है वह कभी पूरी नहीं होती और समाज दिन दिन दुर्बल होता जाता है।

आश्चर्य की तो यह बात है कि क्या पढ़े लिखे और क्या बिन पढ़े लिखे सब ही इन जवान, निरोग और आलसी भिक्षुकों को भिक्षा देने में नहीं शर्माते। आप मिहनत करके जो धन पैदा करते हैं उसके एक भाग से आलसी होने के लिये लोगों को उत्साह देते हैं। साधारण लोगों में बहुतेरे ऐसा समझते हैं कि भिक्षुकों को भीख न देने से अधर्म होता है अर्थात् आलस्य का बढ़ाना धर्म का काम है!!! पढ़े लिखे लोगों में भी ज़्यादे आदमी लोक निन्दा के डर से भीख देना बंद करने में साहसी नहीं होते!! आज कल थोड़े आदमियों ने, अंधे, लंगड़े, बीमार आदि दया के पात्रों को छोड़ कर, दूसरे मज़बूतों को भीख देना बंद कर दिया है लेकिन ऐसे आदमी बहुत कम हैं।

लोग क्या कहेंगे ।

एक तरह के आदमी और हैं जो बड़े ऊंचे वंश के हैं लेकिन कुल की मर्य्यादा बचाने लायक न तो उनके पास धन है और न विद्या है। इन लोगों में अगर किसी से कहा जाये "भाई तुम इस तरह क्यों घूमा फिरा करते हो? मोदी की दूकान में एक छोटी सी नौकरी कर लो, बहुत नहीं तो थोड़ा बहुत तो कुछ पैदा हो जायेगा फिर जब मिले तो कोई अच्छी नौकरी कर लेना।" वह तुरत दोनों आंखें लाल करके कहेंगे "हम अशराफ़ हैं ऊंचे कुल के हैं, हम क्या मोदी की दूकान में नौकरी करेंगे? लोग हमको क्या कहेंगे? हम भीख मांग कर खायेंगे सौ क़बूल है लेकिन ऐसा नीच काम कभी नहीं करेंगे।" अन्त को किसी मनुष्य की कन्या से विवाह कर ससुर के बोझ हो कर या क़र्ज़ कर के अपनी इज़्ज़त बचाते हैं।

एक दरजे के आदमी और हैं वह धनी कहलाते हैं। उनमें प्रायः सबही उम्दा हुक्के में मसालेदार तम्बाकू पीते पीते अपनी ज़िन्दगी बिताते हैं। वह मनमें यही समझते हैं कि बाप दादों के धन से सुख भोग करने ही के लिये मेरा जन्म हुआ है। काम तो नौकर ही लोग किया करते हैं हम क्यों करें वह अपने हाथ से तेल नहीं लगा सकते, स्नान करने के लिये जल सिर पर नहीं ढाल सकते, गमछे से बदन नहीं पोंछ सकते, अपने से कपड़ा नहीं पहन सकते। जैसे पुजारी ब्राह्मण हर रोज़ आकर नारायण को स्नान कराते और कपड़ा पहनाते हैं, उनके लिये नौकरों को भी उसी तरह करना पड़ता है। उनमें किसी को अंग हिलाने की शक्ति हो यह बात नहीं मालूम होती। मानो वह लोग बेजान चीज़ हों! अगर उनके दिल में यह बात आई कि हाथ पैर हिला कर कोई काम करें तो उसी वक़्त एक महामन्त्र के द्वारा उस इच्छा को दबा देते हैं। वह मंत्र यह है कि "ऐसा मामूली काम करने से लोग हमें क्या कहेंगे? मिहनत करना तो दूसरे आदमियों का काम है। हम लोगों का काम तो सिर्फ़ सुख भोग करने का है।" इसी तरह वे सच्चे सुख की राह छोड़ कर आलस्य और काहिली के गुलाम हो जाते हैं। आलस्य के

जितने रोग, जितने पाप हैं, सब ही धीरे धीरे उनको आकर घेरते हैं। अन्त को अकाल मृत्यु के पाले पड़ कर भाई बन्धुओं को शोक के समुद्र में डुबा जाते हैं।

यहाँ यह भी कहना जरूर है कि स्कूलों में भी यह रोग घुसा है। स्कूल के लड़कों को दो पैसों की तकारी या फल फलहरी हाथ में लेकर बाज़ार से घर आने की हिम्मत नहीं होती क्यों कि अगर उनको कोई देखले तो "लोग क्या कहेंगे ?" वे दो तीन कपड़े या एक गठरी ही हाथ में लेकर घर घर नहीं जा सकते ! बाज़ार हाट में जाकर कोई चीज़ नहीं खरीद सकते। यह सब काम तो नौकरों का है, वह ऐसा काम क्यों करने लगे ? " लोग उनको क्या कहेंगे ? " साफ़ साफ़ कपड़े और अंग्रेज़ी जूता पहन कर क्या कोई गठरी ले कर चलता है ? कैफ़ियत तो यह है कि वह अभी स्कूल ही में पढ़ते हैं। जब शुरू ही में उनका दिल ऐसा बिगड़ जाता है तब न मालूम आगे वह क्या करेंगे ?

यही तो इस अभागे देश और समाज की अवस्था है। जिस देशमें पढ़े लिखे आदमी बिन पढ़े लिखे लोगों की निन्दा के डर से इतनी दुर्बलता प्रगट करते हैं और सत्कर्म, सत्साहस सद्बुद्धि आदि सब उनसे बड़ाई पाने के लिये त्याग देते हैं, जिस देश में आलसी हीना रोज़गार समझा जाता है और सब आदमी जिस में उत्साह देते हैं, जिस देशमें धनी और ज़मीदार लोग, अपनी मिहनत से किसी काम करने को बेइज़्ज़ती होने का कारण समझते हैं, जिस देशमें आलस्य की बढ़न्ती करना धर्मानुसार ख़याल किया जाता है, जिस देश के आदमी कुल की मर्य्यादा के लिये मनुष्य की यथार्थ मर्य्यादा—स्वाधीनता, को त्याग कर बिना कष्ट के दूसरे का अन्त ध्वंस करते हैं, जिस देश के आदमी मिहनत करने में शर्माते हैं लेकिन भीख मांगने में उनकी शर्म नहीं मालूम होती, जिस देश में आलस्य ही को यथार्थ सुख ज़ियादा आदमी समझते हैं और इसी विश्वास के अनुसार काम करते हैं उस देश की तो आहिस्ते आहिस्ते घटन्ती होवेहीगी, इसका टालना बड़ा कठिन है।

युरप में आज कल स्पेन देश की बड़ी बुरी दशा है। एक दफ़ा

जिस स्पेन देश के महा बलवान दूसरे फिलिप ने इंग्लेन्ड की महारानी एलिजेबेथ के राज्य पर चढ़ाई कर इंग्लेन्ड को थर्रा दिया था, उसी स्पेन देश के अभागे आदमियों के बारे में यह कहावत जारी है कि "स्पेन देश के मनुष्य काम करने में लजाते हैं लेकिन भीख मांगने में नहीं लज्जा समझते।" अभागे भारतवर्ष की अवस्था क्या उस से भी अधिक शोचनीय नहीं है ?

इसी हिन्दुस्तान में आज कल अंग्रेज़ों की अमलदारी में बहुत से विद्यालय बने हैं और लोग तालीम पाते हैं लेकिन बड़े दुख की यही बात है कि पढ़े लिखे आदमियों का अधिक भाग अंग्रेज़ों के गुणों की नक़ल न करके उन के दोष ही की नक़ल करने के लिये घबरा रहे हैं। यह तालीम उन की भीरुता डरपोकपन दूर नहीं कर सकी, उन्हों ने ज्ञान बुद्धि धर्म आदि सब ही छोड़ कर "लोग हमें क्या कहेंगे ?" इसी मूल मंत्र को अपने जीवन का उपदेशक ठान लिया !! ऐसे देश की यदि दुर्दशा न हो, ऐसे देश की यदि अवनति न हो तब और किस देश की होगी ?

पढ़े लिखे भाइयों, एक बार तो इस झूठे डर को मन से दूर करो, एक बार तो सत्साहस का सहारा लेकर, विवेक के बतलाये हुए राह पर चल कर, अपने देश की उन्नति करने को मुस्तैद हो। अब देर न करो, अब उदास हो कर मत रहो, अपनी ओर, अपने समाज की ओर, अपने देश की ओर एक दफ़ा दया करके निहारो, यदि पढ़े लिखे हो कर भी अच्छा नमूना न दिखलाओगे तब इस अभागे देश में उन्नति का प्रवाह कैसे चलेगा ?

सफ़ेद सिर वाला गिद्ध ।

अमरिका के पक्षियों में बड़प्पन दर्जा इसी का है, डील डौल भी उस का वैसा ही होता है और यूनाइटेड स्टेट्स वालों ने अपने निशान के तौर पर इसी को रक्खा है। इस पसंद पर बेंजमिन फ्रांकलिन साहब ने उज़्र किया था क्यों कि इस में अनीति बहुत है इस के अलावे अपनी जीविका ईमानदारी के साथ नहीं निबाहता। यह उज़्र बहुत ठीक था क्यों कि यह पक्षी पक्का डाकू होता है।

यह पक्षी अलबत्ता बहुत बड़ा होता है। डैना जब फैला रहता है तो लम्बाई उस की एक सिरे से दूसरे तक आठ फुट होती है बीच का शरीर साढ़े तीन फुट लम्बा होता है, सिर बर्फ़ सा सफ़ेद धूप में बहुत चमकता रहता है, चोंच बड़ी भारी और पीले रंग की होती है जिस से अपने शिकार को फाड़ डालता है।

इस का अहार विशेष करके मछली ही है पर दूसरे दूसरे जीवों को भी वक़्त आ पड़ने पर खाता है। जब मछलियां जल के ऊपर आ कर तैरती हैं तब वह अक्सर झपट्टा मारता है।

आप मछली मारने की तकलीफ़ ज़ियादा नहीं उठाता पर दूसरे की मिहनत से मारी हुई मछली को छीन कर खा जाता है। चुपचाप मछलीखा की राह देखता रहता है। जहां उस ने देखा कि अब वह घात लगाये हुए है तो यह और भी होशियार हो जाता है।

विल्सन साहब कहते हैं कि उस को घात लगाये देख गिद्ध का जी लुसफुसाने लगता है और जिस डाल या पत्थर के चटान पर बैठा है वहीं से अपना डैना आधा फैला कर उड़ने की तइयारी में रहता है। उधर जों ही मछलीखा ने गोता लगाया कि उस के झटके से समुद्र की तरंगों में फेन निकलने लगता है।

जों ही उधर गोता लगा कि गिद्ध सतर्क हो जाता है उड़ने की तइयारी में गला झुका कर क्या देखता है कि छटपटाती हुई मछली को लिये हुए वह निकला और शोर कर रहा है।

इतना का देखना कि पीछा करने के लिये गिद्ध चला। दोनों की कोशिश यही रहती है कि खूब ऊपर उड़ जायें आख़िर मछली के बीझ

से वह हार जाता है और गिद्ध उस को दबा देता है नाउमेद होकर मछली को मछलीका छोड़ देता है।

गिद्ध निशाना ठीक करने के लिये ज़रा सम्हल कर आंधी की तरह झोंक से जाता है और जब तक मछली फिर जलमें गिरने गिरने पर रहती तभी तक उस को ऊपर ही ऊपर लीक कर जंगल में चला जाता है।

ये गिद्ध अपना खोता दल दल में किसी ऊंचे पेड़ पर बनाते हैं, हर साल की मरम्मत और जोड़ तोड़ से वह बड़ा हो जाता है। जिन मछलियों को वह खाता है उन के टुकड़े वग़ैरह के गिर कर सड़ने से जो दुर्गन्ध निकलती है उसी से उन के खोते का पता लग जाता है।

यद्यपि ये लुटेरे होते हैं पर बच्चों के लिये उन को भी प्रेम विशेष होता है जब तक वे असमर्थ रहते हैं तब तक पूरी खबर उन की वह लेते हैं। जिस दरख़्त में खोता रहता है उस के चारो ओर अगर आग भी जलने लगे तो भी वह नहीं छोड़ते!

इसी गिद्ध का खोता लेने के लिये एक दरख़्त काटा गया था जिस के गिरते ही बच्चे मर गये थे पर नर और मादीन बड़े बड़े मुश्किलों से भगाये गये, बराबर शोर करते हुए बहुत देर तक उड़ते रहे।

सियाह गोश।

यह जानवर जंगली बिल्ली से बहुत मिलता जुलता होता है। लेकिन उस से बड़ा अक्सर नाक से दुम की जड़ तक तीन से चार फुट तक लम्बा होता है। बिल्ली से इस में यह फ़र्क़ है कि उसकी दुम छोटी होती है यानी छ से ९ इंच तक होती है इस से ज़्यादे नहीं बढ़ती। पैर इसके उस से लम्बे होते हैं और कान नोकीले हर एक के फुनगी पर थोड़े से बाल होते हैं इस के अलावे गालों पर भी बड़े २ रोएं होते है।

यह जानवर खास करके नौर्वे, स्वीड्न, रूस और उत्तर एशिया में और कभी कभी मध्य युरप के पहाड़ी ज़िलों में पाये जाते हैं। इस में कोई सन्देह नहीं है कि यह जानवर युरप के बड़े भयानक और नुक़्सान करने वाले शिकारी जानवरों में से हैं। रूसी भेड़िये खराब होते हैं। वे झुण्ड में रहा करते हैं और जब बहुत से साथ रहते हैं तब ही

भयानक होते हैं। अकेला भेड़िया बहुत ही डरपोक होता है लेकिन सियाह गोश सचमुच बड़ा भयंकर शत्रु है।

वह ऊंचे पहाड़ के खोह और जंगलों में आहार ढूंढ़ लेता है और अपना स्थान नहीं बदलता पर अकेले अपनी मादीन के साथ रहता है और उस का रहना दूरही से लोगों को भयंकर भूकने की आवाज़ से मालूम होता है।

वह अपनी चुनी हुई जगह लाचारी दर्जे पर छोड़ता है किसी डाल पर चढ़ कर पत्तों के बीच लम्बा होकर छिपा रहता है। आंख और कान उस के सतर्क रहते हैं और दिन भर उस का शरीर ज़रा भी नहीं हिलता आंखें आधी बन्द रहती है, ज़ाहिरा सोया हुआ मालूम होता है यही दशा उस की ज़्यादे डरावनी है क्यों कि उस वक़्त जो कुछ चारों ओर होता रहता है वह सब जानता है।

सियाह गोश धोखेबाज़ी के साथ अपना दिन काटता है। बिल्लियों की तरह उस की सूंघने की शक्ति खास करके तेज़ नहीं होती और न उस की चाल ही ऐसी तेज़ होती है कि जिस में शिकार को पकड़ सके वह अपने धीरज और चुपचाप रेंगने की चालाकी से शिकार के पास पहुंच जाता है। लोमड़ी से उस को धीरज अधिक होता है पर चालाकी कम रहती है भेड़िया से कम मज़बूत होता है पर उस से कूदने और भूख रोकने में ज्यादे शक्ति उस को होती है। वह भाल से ज़्यादे ताक़तवर नहीं होता पर उस की नज़र उससे ज्यादा तेज़ और होशियारी उससे बेशी होती है।

उस की ताक़त खास करके पांव, कल्ले और गले में रहती है वह शिकार को जहां तक हो सके आसानी से मारना चाहता है। जो जानवर उस के एक उछाल में आ सकता है कभी नहीं बचता और उस को वह खा जाता है अगर उस के हाथ से शिकार बच गया तो जानवर को छोड़ देता है और बग़ैर अपनी निराशता दिखलाये अपने ठिकाने की जगह में छिप कर बैठ रहता है।

अगर वह बकरी या भेड़ों के झुण्ड के पास पहुंच गया तो ज़मीन से सट कर सांप की तरह अपने शरीर को घसीटता है और नज़दीक पहुंचने

पर अपनी शिकारके पीठ पर एकही उछलेमें कूद कर चला जाता है और तुरत मार डालता है। वह ऐसा खून का प्यासा होता है कि एक सियाह गोश चालीस भेंड़ी की कई झुंडों के बीच में मारता हुआ देखा गया है।

मध्य युरप के लोगों का भाग्य अच्छा समझना चाहिये कि यह जन्तु बहुत कम हो गई आल्पस पर्वत में भी अब यह बहुत कम है तीस या चालीस वर्ष पहले वहां बहुत देखने में आता था। सियाह गोश जब बचपन में पकड़ा जाता है तो पीस मानता है लेकिन लोग कहते हैं कि पाला हुआ जानवर मारे मोटाई के मर जाता है। उस का गोश्त साइबिरिया देश में खाया जाता है पर चमड़ा उस का बहुत दामी समझा जाता है। इस की खाल बहुत सुन्दर होती है और साइबिरिया में जहां इस का बहुत दाम लगता है एक एक का बीस तीस रुपया मिलता है। अगले पैर का चमड़ा अलग बिकता है और उस का दाम सात आठ रुपया तक मिलता है। सियाह गोश का चमड़ा तीन सम्बूर के, छ भेड़िया के, बारह लोमड़ी के और सौ गिलहरी के बराबर कीमत का उस देश में होता है।

गिलहरी।

हमारे मकान के सामने एक बहुत सुन्दर काते का सा पेड़ है इस पर कई छोटी छोटी पीठ पर धारी वाली बहुत सी गिलहरियां खेला करती हैं मैं उन को अक्सर मिठाई, चना वग़ैरह खिलाया करता हूं वे निडर होकर पास आ जाती हैं।

एक हमारे सामने हाथों में रोटी लिये बैठी हुई खा रही है दूसरी के मुंह में एक बेर है और उस के पीछे दूसरी लगी हुई पेड़ पर चारों ओर दौड़ रही है तीसरी पेड़ के जड़ में दीमक की लगी हुई मिट्टी को झाड़ रही है और उन छोटे छोटे कीड़ों को जो भाग कर छिपा चाहते हैं पकड़ती है। चौथी पेड़ के नीचे चिड़ियों के साथ कूदती और खेलती देख पड़ती है बाकी पिछले पैरों पर बैठ कर जड़ के पास उगे हुए घासों की बीचा खा रही है।

इस तरफ़ हर एक घर में गिलहरियां पाती हैं। वे कूपर में बड़ा खोता—रूई, कपड़ा, सन, ऊन, बाल और घास वग़ैरह जो कुछ मिले मो-लायम चीज़ों का बनाकर रहती हैं। इन सब चीज़ों का वह खोता इतना बड़ा बनाती हैं जो नौ इंच से लेकर एक फुट तक लम्बा चौड़ा होता है और उस की जगह या तो कड़ी पर या किसी खोखले में होती है उस में ये नर्म चीज़ें बिछाकर चार पांच बच्चे उस खोते में पालती हैं।

हम ने एक को अपने मकान के बरामदे ही में खोता बनाते हुए देखा है। यह खोता ऐसी जगह बना था कि पानी पड़ने से भीग जावे। पानी बरसा और भीग जाने से उन लोगों ने वे तरह और करना शुरू किया। तुरत ही थोड़े ही वक़्त में शायद एक घन्टे में एक अच्छी सूखी जगह में एक दूसरा खोता बन गया और माता अपने भीगे बच्चों को मुंह में एक एक करके लिये हुए नई जगह में रख आई और मैं समझता हूं कि वे वहां ज़्यादे आराम से रहे।

ये बड़ी शोख होती हैं और आपस में उपद्रव किया करती हैं एक दिन मैं ने उनको खेलते हुए देखा। एक को खाली नल बाग़ में पड़ा हुआ मिल गया और उस के भीतर बाहर निकल कर अपना जी बहला रही थी। यह बात ज़्यादे ताज्जुब की इस लिये है कि वह अकेली थी और नल के बाहर भीतर आने की वजह सिवा अपने दिल बहलाने के और कोई नहीं मालूम हुई।

एक दिन मैं ने देखा कि एक गिलहरी चुपचाप छिप कर एक दीवार पर चली जा रही है। उस दीवार पर एक बड़ा काला कौवा कुछ बढ़िया चीज़ लिये खा रहा था। गिलहरी से लोभ न रुक सका। जब वह बहुत उस के पास पहुंच गई तो झट कौवे के पीठ पर कूदी, कौवा इतना डरा कि अपनी मुंह की चीज़ गिरा कर उड़ गया। गिलहरी ने उस को ले लिया। कौवा वह चीज़ फिर ले लेता पर गिलहरी चालाक थी पास ही एक छेद था उसी में घुस गई कौवा यों ही मुंह देखता रह गया।

यह गिलहरियां बड़ी चोर होती हैं। अपने खोते में बिछाने के लिये चिड़ियों के घोंसले में से मोलायम खर, ऊन, पर, या बाल जो कुछ अपने मंच की चीज़ मिले ले आती हैं।

कभी कभी इन के मुंह में अण्डे भी देखे गये हैं। विशेष करके वे फल और अन्न आदि ही खाया करती हैं। ये अक्सर पाली भी जाती हैं पहले पहल दो एक बार काटती तो हैं पर पीछे अच्छा पीस मान लेती हैं।

चिम्पाञ्ज़ी का बच्चा।

ब्रोडरिप साहब लिखते हैं कि—पहले पहल मैं ने इस जानवर को बावर्ची की कोठरी में देखा उस वक्त वह एक बनियाइन पहने हुए था। बूढ़ी औरत के गोद में लड़के की तरह बैठा हुआ था। जब ही वह उस को नीचे रखना चाहती वह सट जाता। भाव उस का शान्त और धीमा था लेकिन देखने में एक बूढ़ा सा छोटा आदमी मालूम होता था। उस की बड़ी बड़ी आखें, बिन बालों का सिकुड़ा हुआ मुंह, आदमी के से कान, सिर पर काले काले बाल के कारण दबी नाक और ऊंचा मुंह रहने पर भी चेहरा आदमी से बहुत मिलता हुआ था।

उस बूढ़ी औरत को वह बहुत चाहता था और उसे भी इस जानवर से एक तरह की प्रीत बढ़ गई थी। उन दोनों की मुलाकात को तीन या चार दिन से ज़ेशी नहीं हुए थे तो भी वह बड़े बड़े मुश्किल से उसे किसी काम के लिये भी मकान के दूसरे अलंग में जाने देता था।

उस की गोद में उस को बड़ा आराम मिलता था और मुझे ऐसा मालूम हुआ कि उस ने अपनी माता ही की जगह बुढ़िया को समझ लिया था। उस औरत के गलेमें रूमाल बंधाथा उसको हमेशा अपने हाथोंसे खोलने की कोशिश करता और उस की बात मना करने पर भी नहीं सुनता था।

जब वह स्त्री और किसी काम में नहीं लगी रहती तो वह गोद में चुपचाप बैठ कर आदमी के बच्चे की तरह पैर के अंगूठे और उंगलियां खींच कर अपना दिल बहलाया करता। मैं ने उस का दांत देखना चाहा तो उस की दाई ने ठीक लड़की ही की तरह अपने हाथों में उस को गिरा कर मुझे दिखलाया।

मैं ने अपना खाली हाथ उस को दिखलाया। उस ने डर और ढीठई दोनों को दूर करके अपने हाथों में ले लिया खूब देखा। एक उंगली में अंगूठी देख बड़ी होशियारी के साथ दांतों से उस की परीक्षा

को, अंगूठी में ज़रा भी दाग़ नहीं आया। तब मैं ने अपना दूसरा हाथ जिस में दस्ताना था बढ़ दिया। उस को भी उलट पुलट कर देखने के बाद दांत से उस ने जांचा।

आख़िर उस औरत को वहां से किसी काम के लिये जाना पड़ा उस के बहुत ज़िद्द करने पर भी उस ने ज़मीन पर उस जानवर को रख दिया। उस से अलग होना नहीं चाह कर वह उस का घंघरा पकड़ कर लड़के की तरह सीधा चलने लगा। आख़िर उस औरत ने उस को एक कच्चा आलू देकर अपना पीछा छुड़ाया। दहने हाथ में लेकर बहुत स्वाद के साथ वह आलू खाने लगा।

औरत जो उसे बहुत मानती थी आकर उस से बोली। चिम्पांज़ी ने खड़े होकर अपने ओठ से बोलने की कोशिश की पर सिवा "हू हू" के और कुछ नहीं बोल सका। थोड़ी ही देर में उस ने मुझ से खेलने की इच्छा दिखलाई लड़के की तरह वह कूदने लगा। हम लोगों ने खूब खेला इस में कुछ संदेह नहीं है।

दूसरी बार जब हमारे साथ खेलने लगा तो बीच ही में मैं ने एक आईना मंगवा कर उस के सामने रखवा दिया। उस का ध्यान तुरत खिंचा। कहां तो इधर उधर कूद रहा था एका एक खड़ा हो उत्सुकता के साथ आईना को देखने लगा। आश्चर्य का भाव उस के चेहरे से प्रगट होने लगा। अन्त को उस ने मेरी ओर देख फिर आईना देखा। मैं आईना पकड़े था हमारी उंगलियां एक ओर नज़र आ रही थीं उन पर उस ने अपना हाथ रक्खा और फिर अपना मुंह लगा कर उस ने आईना के पीछे देखा फिर अपना हाथ भी आईने के पीछे उस ने ले जाकर देखा कि वह शकल जो देख पड़ती है असली है या झूठी।

फिर मैं ने उसे एक नारियल दिया जिस में छिलका भी कुछ सटा हुआ था, अंकुर उस में से निकला आ रहा था—झट कुतर कर उसे खा गया। फिर उस में छेद करके उस को दिया गया तुरत मुंह पर रख कर बड़े आनन्द से वह रस पी गया।

मैं पेन्सिल और काग़ज़ से कुछ लिख रहा था कि पास आकर बहुत जी लगा कर देखने लगा। जब पेन्सिल उस को दे दी गई तो दांत से उस ने अज़माया।

उस के साहस की भी परीक्षा ली गई । उस का ध्यान दूसरी ओर लगा था कि एक पेटारा जिस में बड़ा लम्बा सांप था, लाया गया और एक कुर्सी पर रख दिया गया। ढंकना उस पेटारी का खोल दिया गया। चिम्पाज़ी खेलता हुआ उधर को पहुंचा। जब तक उधर नहीं गया था बहुत ही खुश हो कर कूद रहा था पर एका एक रुक कर आगे बढ़ा और चालाकी से पेटारी में झांक कर भय और घृणा से "हू हू" करके उस नफ़रत की चीज़ से पीछे हटा और शक्ति भर पीछे कूदा, फिर उस स्त्री के पास रक्षा के लिये कूद कर चला गया।

इस जानवर को बंद रहना नहीं अच्छा लगता। जब पींजड़े में बंद कर दिया जाता है तो दरवाज़े को बहुत ज़ोर के साथ हिलाता और खींचता है। पर यह ज़ोर उसे पींजड़े के सिवा और किसी भाग में करते मैं ने नहीं देखा। इस बात की कोशिश भी की गई थी पर विफल हुई। वह दरवाज़े ही पर जब न तब धक्का मारता था।

जब कूटा रहता है तो बहुत खेलवाड़ करता है। खुशी की हालत में मैं ने उस को क्या देखा कि कोने में एक कुत्तिया अपने बच्चों के साथ पड़ी थी वहीं जाकर एक बच्चा उस ने उठा लिया आखिर उस औरत के चिल्लाने और कुत्ती के भूंकने पर उस ने पिल्ले को रख दिया। तब वह पींजड़े पर चढ़ गया। वहां पर पींजड़ा रक्खा था उसी पर उन जानवरों को डराने के लिये बड़े ज़ोर से कूदा, वे इस भयानक जानवर को अपने सिर के ऊपर देख डर कर सट रहे। तब सब ने खिड़की खोल दी और बाहर देखने लगा। मुझे तो संदेह हो गया था कि कहीं भाग न जाये। पर अपने मालिक के धीमी और दृढ़ आवाज़ में मना करने पर वह खिड़की का किवाड़ बन्द करके चला आया।

सच पूछो तो यह बन्दर खूब पोस मानता है और बहुत ही प्रेम प्रगट करता है। उस के चेहरे का भाव देख कर देखने वाले को कभी बुरा ख़्याल उस की ओर से नहीं होता। उस को जब किसी तरह की तकलीफ़ होती है तो तुरत अपनी रक्षा की प्रार्थना करने लगता है।

चटानों से सटी और घास में छिपी बहुत किस्म की मछलियां थीं सब को पकड़ पकड़ हम लोग जमा करने लगे। हम लोगों की आहट पाते ही कई किलोड़े जो मौजूद थे भागने लगे। बर फेयरपोर्ट में रह कर एक ही महीने में मुझे उन के पकड़ने का ढंग मालूम हो गया था देखने की देर थी, छ सात को पकड़ टोकरी में मैंने रख लिया।

चटानों के बीच में एक झींगा मछली देख पड़ी पर मुझे समझ न पड़ा कि कैसे पकड़ूं क्यों कि उन को चंगुल होता है।

इस लिये मदद के लिये चैनी को मैं ने पुकारा। इस दोनों का जो क्रम देख कर लक्ष्मण गया। वह भाग जायेगी तो बड़ा अफ़सोस होगा और उस के पकड़ने में भी साहस नहीं होता था।

चैनी को तरकीब खूब सूझती थी। उस ने कहा "देखो, मैं पकड़ने की तरकीब बतलाता हूं।"

मैं ने पूछा—कौन सी?

तीर पर एक लकड़ी पड़ी थी झट चैनी उठा लाया और एक टोकरी में मछली वगैरह जो जमा की गई थी उनको सम्हाल उसने खाली कर डाली और मुझे कहा कि उस के भागने की राह पर छड़ी पकड़े रहो। और आप दूसरी छड़ी लेकर उस मछली के मुंह में गोदने लगा। यह व्यवहार देख अपने बचाने के लिये उस ने अपना चंगुल बढ़ाया और छड़ी को कस कर पकड़ लिया। चैनी ने झट फुर्ती से समरीद उस को उठा लिया और टोकरी में रख लिया।

इस चालाकी के खेल से हम लोगों को बड़ी खुशी मिली। नीचे उस को रक्खा उस के ऊपर खर पात रख और मछलियां रख घर ले आये।

जहाज़ पर से वे दोनों जब लौट कर आयेंगे तो बहुत ही थके मांदे रहेंगे इस लिये खाने की तय्यारी करने का विचार हुआ।

स्टीफन ने आग को राख में छिपा कर रख दिया था इस से वह बुझी नहीं थी। सूखी लकड़ी, बेली आदि रख कर फूंकने ही से आग भड़क उठी। मछलियां ठंढी खाई जाती हैं इस लिये पहले उन ही के पकाने में हाथ लगाया गया। चिड़िया पीछे भूनने के लिये रक्खी गई।

मेरी तो इच्छा थी कि फिर खिचड़ी बने पर सैनी ने कहा कि अभी तो मछली, मांस, चिड़िया, फल आदि इतनी चीज़ें हैं इस वक्त खिचड़ी बनाने का क्या काम है आंटा भी समझ बूझ कर खर्च करना चाहिये। सब खतम हो जावेगा तो फिर कहां से आवेगा।

मैं ने कहा कि—कुछ साग सब्ज़ी होती तो अच्छा होता। देखें जहाज़ पर से वह लोग आलू लाते हैं या नहीं।

सैनी—हां हम को तो पूरा यक़ीन है कि वे लेते आवेंगे। अगर ले आये तो हम लोग मुफ़्त के पास यहां लगा देंगे थोड़े दिनों में खासा एक बाग़ हो जावेगा।

मैं मारे खुशी के कूद कर बोला "हां बहुत उम्दा होगा" हमारे धक्के से चूल्हे पर की केतली गिरते गिरते बच गई।

सैनी—पर बात इतनी है कि हम लोगों को उतने दिन न रहना पड़े जब तक कि खाने लायक़ पैदा हो। परमेश्वर करे कि उन सब के फलने के पहले ही कोई जहाज़ आ जाये जो हम सब को यहां से ले जाये।

मैंने कहा—हां मैं भी यही मनाता हूं पर कई चीज़ों के लगा देने में कोई हर्ज नहीं है। मान लो कि हमको फ़ायदा न हो पर और किसी विपत के मारे जहाज़ के मुआफ़िर यहां आ जायें उनके लिये तो अच्छा होगा। और इस टापू में इन चीज़ों के लगा देने के लिये हम सब को धन्यवाद देंगे।

चौदहवां अध्याय।

मछली वग़ैरह पका कर छांह में ठंढी होने के लिये छोड़ दी गई और तब चिड़िया भूनने की ओर ध्यान दिया गया। हम दोनों खाना पकाने में इस तरह लिप्त हो गये कि उन दोनों की राह देखना जो जहाज़ पर से भूल ही गये थे। इतने में गिग पास पहुंच गई थी और जब उसके भोंकने की आवाज़ तीर पर पानी में सुन पड़ी तब हमारा ध्यान उस ओर गया। कप्तान और स्टीफ़न को उस छोटी डोंगी पर कुशल

के साथ देख हम सब को बड़ा आनन्द मिला। वह लोग अपने साथ शहतीरों को बांध कर एक बेड़ा भी बनाये लाये थे।

समुद्र के स्थिर रहने में शहतीरों को, जो जहाज़ पर लदे थे, बांध कर एक बड़ा भारी बेड़ा दोनोंने बनाया था। उसी पर संदूक पीपे आदि में जहां तक संभव था काम की चीज़ें लाद ली गई थीं।

अपनी डोंगी में विक्रावन और एक बड़ा सा लोहे का बरतन रख तीर की ओर खेव कर आने लगे और साथ ही काम की चीज़ों से लदे बेड़े को भी खींचते आये।

परिश्रम से वह बहुत थक गये थे इससे तीर पर एक बचाव की जगह देख डोंगी और बेड़े को उन लोगों ने बांध दिया और हम लोगों के तइयार किये हुए खाने को खाने लगे।

एक एक करके सब चीज़ें वह जब खा चुकेतो मैंने अंगीर जो छिपा कर रक्खा था सब के पीछे उसे निकाला उसको देख कर वे अचरज में भी आये और खुश भी हुए।

दो एक चीज़ दूसरे दिन के लिये भी रख छोड़ी गई।

कप्तान—तुम लोगों ने तो आज बड़े आदमियों का खाना खिलाया अब मेरा विचार है कि थोड़ा सा मद्य भी ऊपर से पी लिया जाये।

पहली खेप में जो चीज़ें आई थीं उनमें मद्य भी था मैं एक बोतल और चार चीनी का प्याला दौड़ कर ले आया और कप्तान के पास जो चाकू था उसमें बोतल से काग निकालने का स्क्रू भी था उसी से काग निकाल मैंने थोड़ा थोड़ा मद्य सब के सामने रक्खा।

पूरा भोजन हो जाने से छाया में थोड़ी देर सुस्ताने के लिये वे दोनों लेटे। जब तक मैंने सब बरतन धो धा कर और आहार की सामग्री में से जो कुछ बचा ढाक कर रख दिया।

कप्तान मेरे इस काम से बहुत प्रसन्न होकर बोला—"तुम बड़े चालाक लड़के हो तुम नहीं रहते तो न जाने कैसे हम लोगों का काम चलता।"

अपनी बड़ाई सुन मेरा मन बहुत ही प्रसन्न हो गया और आग वग़ैरह सब ठीक करके रक्खा और कंतली में मीठा पानी रख दिया।

इधर वह दोनों अच्छी तरह जब सुस्ता चुके तो अस्बाब उतारने में हाथ लगाया गया। पहले डेंगी पर से बिछावन उतार कर गुफा में बिछा दिया गया जो बहुत ही फैलाव और चार आदमियों के फरागत से सोने लायक थी। हक़ीकत में फैलाव हो या न हो पर जहाज़ की छोटी छोटी कोठरियों के मुक़ाबले में तो हम सब को बहुत फैलाव मालूम हुई।

मैंने तो रसोइयों का काम विशेष करके अपने इलाके रक्खा था इससे आलू से भरा हुआ वह लोहे का बरतन देख मैं प्रसन्न हुआ।

डेंगी खाली करने के बाद सब का ध्यान बेड़े की ओर गया जो निर्विघ्न तीर तक आ गया था और जिस पर संदूक और पीपों में बहुत काम की चीज़ें थीं।

कप्तान ने पहले ही दो बंदूक, दो पिस्तोल, बारूद, गोली, छर्रा लेकर रख लिया था। क्यों कि इनहीं के भरोसे खाने के लिये शिकार हो सकता था। इसके अलावे अगर उस टापू में कोई जंगली आदमियों की बस्ती हो तो अपनी हिफ़ाज़त के लिये भी इन सब हथियारों की ज़रूरत थी।

स्टीफ़न अपने बढ़ई के औज़ार लेता आया था और कुल्हाड़ी हथौड़ा भी जहाज़ पर था उनको भी तीर पर ले आया। बड़े काम की बात उसको सूझी। अगर कहीं ज़ियादे दिन टापू में रहना पड़ा और घर बनाने की ज़रूरत पड़ी तो उस हालत में वे औज़ार बहुत काम आयेंगे। एक संदूक में माझियों के कपड़े और कम्बल थे और दूसरे में बिस्कुट, नमकीन मांस, दो पीपा मद्य और कई बोरे आंटे के थे—सब चीज़ें बड़े काम की थीं इससे एक के बाद एक जब ये चीज़ें निकलीं तो देख कर हम लोगों को बड़ी खुशी मिली।

एक ही घटना दुर्भाग्य की बेड़ा लादने के वक्त हुई वह यह कि कप्तान के हाथ से वह संदूक फिसल कर समुद्र में जा गिरा जिसके न रहने से अब गणना करना और टापू कहां पर है इसका पता लगना कठिन हो गया।

हम सारी जी लगा कर काम कर रहे थे इससे रात होने के पहले सब चीज़ें ठिकाने रक्खी जा चुकी । तब बिस्कुट खा और चाय पी सब ताज़े हो गये और अंधेरा होते ही भोर तक गाढ़ी नींद में सोये ।

भोर की चिड़ियों के शोर से सब की नींद खुली। गुफा के बाहर दौड़ कर आये तो क्या देखते हैं कि उन्हीं पक्षियों का झुंड है जिनको खाने को कल दिया गया था ।

वे तीर पर शोर करती थीं और इसके कारण का पता पहले स्टीफन ही ने लगाया ।

एक बड़ा भारी मगर का शरीर बहकर तीर पर आ लगा था उसी के खाने को सब पक्षी आकर जमा हुए थे ।

आये तो पर खाने लायक न देख कर ऊपर जा शोर कर रहे थे ।

उन लोगों ने पहले कभी नहीं मनुष्य देखा था इससे उनको भय न मालूम हुआ स्टीफन के पास चले जाने पर भी उन लोगों ने कुछ खयाल न किया ।

जिस जाले में भर कर स्टीफन ने औज़ार जहाज़ पर से लाया था उसी में चार पांच चिड़ियों को जल्दी जल्दी पकड़ उसने रख लिया। वह सब अचरज में आ गईं और झट पट करने लगीं । उसने झट हम लोगों के हाथ उनको मार मार दे दिया, बाकी जो खाने में लगी थी उन चार पांच को पकड़े जाते न देख सकीं अपने ही काम में लगी रहीं ।

स्टीफन ने हम सब को देकर कहा कि इनके पंख नोच आलू और चावल के साथ पानी में डाल चूल्हे पर चढ़ा दो । वैसी अवस्था में यह काम अच्छा हुआ क्योंकि चूल्हे के पास किसी के बैठने का काम न पड़ा ।

स्टीफन और कप्तान की राय हम लोगों को जहाज़ पर ले जाने की हो चुकी थी । हम लोग चुन चुन कर काम की चीज़ बेड़े पर लादेंगे और वे दोनों और और काम करेंगे ।

पर उन लोगों ने अपनी राय पहले हम लोगों से नहीं ज़ाहिर किया क्यों कि कहीं आंधी पानी आ जाता तो फिर हम लोगों का दिल छोटा हो जाता।

कप्तान भी स्टीफन के पास पहुंच गये और बालू कंकड़ फेंक और शोर मचा कर उन लोगों ने चिड़ियों को भगा दिया।

उस आवाज़ वगैरह से वे चिड़ियां इतनी घबरा गईं कि घड़ियाल को छोड़ छाड़ भाग गईं।

हड्डी और आरे के से दांतों के मोह से उन लोगों ने पहले उसकी खाल निकाल ली। और नारियल के खपड़ी में चर्बीदार हिस्सों को निकाल कर रख लिया। यद्यपि यह ह्वेल मछली की चर्बी सा न था। तो भी गरम करके चिराग़ में तेल का काम देगा और कहीं कोई जंगली जानवर का शिकार हुआ तो मांस में घी का काम देगा यही समझ घड़ियाल भी काम में लाया गया।

जब तक वे इस काम में लगे रहे हम लोगों ने भोजन को ठीक किया। उन लोगों ने पूर्ण भोजन किया क्यों कि आज जहाज़ पर ज़ियादा देर लगने का क़रीना था। मुझे सब सिजिल करके तइयार करने के लिये सब ने मिल कर धन्यवाद दिया।

भोजन के पहले सब उसी कुंड में स्नान करते गये और भोजन के बाद टूटे जहाज़ पर सब चले।

सुधार का वक़्त था ऐसी बेला बेड़ा खींच कर ले जाने से जहाज़ पर पहुंचने में बड़ी देर होती।

अगर बेड़े का काम पड़ेगा तो जहाज़ में बहुत कड़ी है एक दूसरा बना लिया जायेगा यह सब ने स्थिर कर लिया था।

मुझे फिर "नोवा स्कोशिया" पर पैर रखने के ख़याल से मन में एक अजीब भाव उत्पन्न हुआ। पर उसकी पहले की दशा और अब की दशा में बड़ा अन्तर था। पहले वह अच्छी दशा में था अब उसका हाल देखने से दुख होता था।

चारो ओर का मुड़ेरा टूट गया था और यदि इस समय कहीं हवा या आंधी चलती होती तो उसके पास जाना कठिन काम क्या कि बहुत ही भयानक था।

मस्तूल सब टूट गये थे और जिधर तिधर लकड़ी के टुकड़े पड़े थे। स्टीफ़न ने हम लोगों से कहा कि इन लकड़ियों को समुद्र में फेंकदो इससे दो काम निकलेगा पहले तो यह कि जहाज़ पर चलने फिरने में कोई रुकावट न होगी। दूसरे यह कि जुआर का वक्त था सब लकड़ियां बह कर तीर पर चली जायेंगी।

इस काम के हो जाने से कप्तान ने स्टीफ़न की बहुत बड़ाई की क्यों कि सफ़ाई हो जाने से जहाज़ पर चलने फिरने में सुबीता हो गया।

दूसरा बेड़ा बनाने के बाद, जिस पर हाथ पड़ा चारो आदमी जहाज़ की चीज़ों के ढोने में लग गये।

दो आदमियों के हाथों के बदले चार हाथों के लगने से काम बहुत जल्दी होने लगा, लकड़ी वग़ैरह रुकावट की चीज़ें दूर हो गई थीं। इससे जहाज़ पर पहुंचने के दोही घंटे में बेड़े पर जितनी चीज़ें लद सकीं लादी गईं। कप्तान की राय ठहरी कि स्टीफ़न और हम चीज़ों को लेकर फ़ोरन टापू में जायें और तब तक वह और चैनी जहाज़ पर रह कर तीसरा बेड़ा तइयार करें जिस पर चीज़ें लद कर हम लोगों के लौट आने पर फिर एक बार टापू पर पहुंचाई जा सकें।

फ़ेयरपोर्ट के उस कुसाइत से मैंने डांड़ को कभी छूआ तक न था पर मैं साहस करके डांड़ के पास बैठ गया और थोड़ी ही देर में मुझे मालूम हो गया कि स्टीफ़न की सलाह और मदद से मैं मज़े में खेव सकता हूं।

बेड़े पर अस्बाब बहुत लदा था इससे बड़ी देर हुई पर भाग्य अच्छे थे कि जुआर इस समय था इससे निर्विघ्न हम सब पार उतर गये।

तीर पर चीज़ों को उतार कर सूखी जगह में रखते देर न लगी। जब तक स्टीफ़न ने उन चीज़ों को पाल से ढंका और बालू में खूंटी गाड़ कर बांधा तब तक मैं रसोई घर में चला गया और आग सुलगा कर थोड़ा और भी बालू सीझने के लिये छोड़ आया।

पन्द्रहवां अध्याय।

लौट कर जब हम लोग जहाज़ पर पहुंचे तो देखते हैं कि वह बेड़ा भी तइयार हो गया और उस पर संदूक पीपे रक्खे जा चुके। कप्तान और चैनी ने बड़ी मिहनत की थी। कई महीनों की खाने पीने लायक़ चीज़ें उतार चुके थे। उतने दिनों तक टापू में खोज न की जाती तो कोई कष्ट खाने पीने का न होता। नमकीन मांस का पीवा, बिस्कुट, पनीर, मछली, मक्खन, कई बोरा आंटा, कहुआ, चाय गरीका गोला, अंचार, शराब आदि जहाज़ पर जो था सब की ढावा ढाई मची।

मैंने मन में सोचा कि खाने का पूरा सामान रहने पर भी कपड़ों के बिना काम न चलेगा। इस लिये मैंने जहाज़ियों की संदूक खोल जितने कपड़े मिले सब की मोटरी बांध बांध गिग में रख लिया। मैंने देखा कि टापू में कहीं बहुत दिनों तक रहना पड़ा तो बहुत सी चीज़ों का काम पड़ेगा इस लिये रस्सी, डोरी, टाट सुतली जो कुछ मिला सब ले लिया।

चैनी अपने कपड़े निकाल लेने के बाद एक ही चीज़ की फ़िक्र में रहा। बिना किताबों के दिन कैसे कटेगा इसी का उसे ख़याल घेरे हुए था। इस लिये जो किताब क़लम, काग़ज़ स्याही मिली सब उसने जमा कर लिया। एक किताब भी उसने नहीं छोड़ी। इस बात के लिये चैनी की हम तीनों ने पीछे बहुत बहुत बड़ाई की।

कप्तान और स्टीफ़न ने क्या किया कि लकड़ी के बीझे बना उसी में पाल और रस्से ख़ूब जकड़ कर बांध समुद्र में फेंक दिये—इस उमीद पर कि ज्वार में तो जल तीर की ओर ज़ोर करता है उसी के साथ ये चीज़ें भी पहुंच जायेंगी।

जहाज़ धीरे धीरे पत्थरों के बीच बैठा जाता था उन दोनों को मालूम हो गया कि यही आख़री बार है। अब यह डूब ही जायेगा। इस लिये उनकी इच्छा थी कि जहां तक जो मिल सके ले लेना चाहिये इससे ख़ूब मिहनत दोनों ने की और जहां तक हिम्मत हुई बेड़ा और डेंगी भरपूर लाद ली।

अब भाठा होने लगा था, उलटी धार में टापू में लौट जाना कुछ सहज काम न था, भारी बेड़े को खींचना भी बड़ा मुश्किल था किसी तरह ज्यौंत्यों करके कुशल से तीर पर पहुंचे, दिन भर की मिहनत से बड़ी मांदगी आ गई थी।

हम सब जैसा छोड़ गये थे सब वैसा ही था। सब चीज़ें ठिकाने जौं तौं करके रख दी गई तीनों बेड़े और डेंगी हिफाज़त से एक खाड़ी में बांध दी गईं। सब काम जब हो गया तब खाने की ओर ध्यान लगाया गया जो दिनभर आप ही आप पक रहा था।

सब चीज़ गरमा गरम ही मिली पर बहुत देर तक आग पर रहने से बद सवाद हो गई थी पर बहुत थके और भूखे रहने के कारण इस बात पर किसी ने ध्यान न दिया। कप्तान ने बिस्कुट आदि खिलाने के बाद सब को शराब पीने को दी जिससे सब के शरीर में ताज़गी आ गई। मुझे शराब ना पसंद थी इस से मैं ने शराब के बदले नारियल का जल और अंजीर ही प्रसन्नता से खाया।

भोजन के बाद कम्बल लपेट सब गुफा में सो रहे फिर कुछ खबर न रही कि किधर क्या हो रहा है।

सोने के समय आकाश निर्मल और तमाम साफ़ था, कप्तान जो ऐसे बुद्धिमान थे उन को भी ऋतु के बदलने का कुछ भी संदेह नहीं हुआ था।

भोर होने के पहले ही गरजना कड़ कड़ाना और सन सनाना सुन स्टीफ़न की आंख खुल गई। उस को यह धोखा हुआ कि टापू के जंगली जानवर तो नहीं गरज रहे हैं।

गुफा के दरवाज़े पर जो ही पहुंचा कि बिजली की चमक से उसे चकाचौंध लग गई—फिर चमकी—फिर चमकी। उस की कड़क बड़े ज़ोर से तीर पर के चटानों में गूंजती थी। समुद्र जो झील सा शान्त था अब उस में तरंगों का कुछ ठिकाना न रहा और आपस में चोट खाने से बे ठिकाने फेन पैदा हो गया था।

बड़ी भारी आंधी चल रही थी। समुद्र की शान्त देख एक बिचार

यह भी हुआ था कि रात को जहाज़ ही पर रहना ही जाये पर परमेश्वर को अच्छा करना था कि इस विचार के अनुसार कोई रात को जहाज पर न रहा बल्कि दिन रहते ही तीर पर सब चले आये। थोड़ी ही देर में सब जाग गये और सब को मालूम हुआ कि आंधी चल रही है। अच्छा हुआ कि जहाज़ पर से जो चीज़ लाई गई थी वह सब उसी वक्त रख दी गई नहीं तो पानी जैसा मूसलाधार इस वक्त बरस रहा था सब चीज़ें ही भींग जातीं।

सब से पहले खयाल कप्तान का बारूद पर गया कि ऐसा न हो कि सर्दी से खराब हो जाये इस लिये स्टीफन को मदद से बारूद का पीपा लोघड़ा कर गुफा में सब से पीछे की ओर उन्हों ने रख दिया।

भोर हुआ तो वीरानी के बड़े बड़े चिन्ह देख पड़े। समुद्र पहाड़ की तरह ऊंचा हो रहा था और बवंडर के साथ घूमने से बालू का सैकड़ों खंभा बनता और गिरता था। ऐसी दशा में बाहर निकलने का साहस करना असम्भव था।

यह भी आशा नहीं थी कि इस आंधी को जहाज़ सम्भाल सकेगा। जों जों दिन उगता गया अपने को रक्षा की जगह में देख बहुत कुछ संतोष होता था।

वे जहाज़ी जो पहले ही तीन डेंगियों पर उतर कर चले गये थे उनकी क्या दशा हुई होगी सोचने से बड़ा दुख होता था।

खुली डेंगियों का ऐसी आंधी से बचने की आशा करना एक अनहोनी बात की उमीद करना था। एक आशा यही होती थी कि कहीं वह भी तीर पर उतर गये हों, कहीं दूसरे टापू पर उतरे हों। मान भी लें कि वे उतरे हों तो भी बिना खाने पीने की सामग्री के उन की बुरी गत हुई होगी।

जल्दी जल्दी रोटी और पनीर खा कर सब चीज़ों की देख भाल करने लगे और जहां तक होना संभव था डरा सरियाने में हाथ हम लोगों ने लगाया।

पहले हमक लटकाया गया कि जिस में निर्विघ्न सोयें कोई सांप

वग़ैरह ज़हरीला जानवर ज़मीन में सोते हुए न काट ले। जो शहतीर जहाज़ पर से लाया गया था उसी को काट कर गुफा में खंभा खड़ा किया गया उसी में हमक लटकाया गया।

थोड़े से तख़्ते जो ज़ुआर से बह कर चले आये थे वह भी गुफा ही में मौजूद थे उन ही का काट कर स्टीफ़न ने एक आलमारी बनाई जिस पर नित के खर्च की चीज़ें मसाला वग़ैरह रक्खी गईं क्यों कि ज़मीन में उन चीज़ों के पड़े रहने से और उजाला भी पूरा न रहने से उन का पैरों से कुचल जाने का डर था।

कई खूंटी गाड़ दी गईं उस पर कपड़े लटका दिये गये इस से बहुत जगह निकल आई। पीपे और संदूक दीवार से लगाकर खड़े कर दिये गये। इतना करने पर सब को सुस्ताने की फ़ुर्सत मिली।

चेनी—यहां आग न सुलगाई जाये तो अच्छा हो नहीं तो सारे धूएं के सांस रुकने लगेगी।

कप्तान—नहीं। आज बिना चूल्हा सुलगाये ही काम चलाना चाहिये। आंधी रुक जाने पर चटान को काट कर अगर हो सकेगा तो धुंआरा बना लिया जायेगा।

मैं—समुद्र के पास जो चटान है उस में तो एक छेद है पर मिट्टी और घास से भरा है अगर उसे हम लोग साफ़ कर डालें तो बहुत उम्दा धुंआरा बन जायगा।

स्टीफ़न—पानी छूट जाये तो बनाया जायेगा अभी वह छेद खोला जायेगा तो हम लोग बिलकुल भींग जावेंगे।

कप्तान—पर मेरा विचार है कि यह जगह चूल्हा बनाने की अच्छी नहीं है इस लिये उसकी तो खिड़की बने और बाहर की ओर जो चटान निकला हुआ है वही रसोई की जगह और उस के ऊपर धुंआरा बने।

तब तक मैं छेद के पास गया और ऊपर चढ़ उस में गला डाल देखने लगा उस पर लता घिरी थी एक हाथ से उसे हटा दिया। बाहर देख कर मैं ने कहा कि अब तो साफ़ हुआ जाता है समुद्र पर कुछ रोशनी

मालूम होती है। बहुत से पक्षी तीर पर बालू में सूंग रहे हैं। कई जंगली बत्तक हैं और बाकी हंस मालूम होते हैं भेद सिर्फ इतना ही है कि इन का रंग काला है।

तीनों आदमियों ने हमारा छेद में झांकना नहीं देखा था और हवा अभी भी ज़ोर से चल रही थी इस से मेरी आवाज़ उन लोगों को नहीं सुन पड़ी थी।

जब मैं ने देखा कि मेरी बात कोई नहीं सुनता तो वहीं ऊंचे पर से बहुत निकट चिड़ियों को देखने लगा।

गुफा समुद्र से कुछ दूर थी। छेद के ऊपर एक दूसरा चटान निकला हुआ था इसी से वहां हवा और पानी की गुज़र नहीं थी लेकिन बाहर की सब चीज़ मज़े में वहां से देख पड़ती थी।

पक्षियों को कुछ भी मालूम न था कि शत्रु पास ही बैठा है। इस से निडर हो जो चीज़ें तीर पर बह आई थीं उन को खाने के लिये शोर कर और लड़ रहे थे। कुछ देर तक तो मैं उन का तमाशा देखता रहा फिर एक बात मुझे उसी के करने के उद्योग में लगा।

सोलहवां अध्याय।

पहले तो मेरा विचार वहां से पक्षियों को देख कर यह हुआ कि स्टीफन को बुला कर बंदूक से उन का शिकार कराऊं फिर मैं ने सोचा कि अगर आप ही किसी तरह पकड़ सकूं तो इसी में बड़ाई है।

कुछ देर तक वहीं ऊंचे पर बैठ मैं उनको पकड़ने का उपाय सोचने लगा। इतना निकट उन के रहते भी बिना बारूद करी बर्बाद किये कैसे पकड़ना संभव है इसी की फिक्र मुझे लगी।

अन्त को जब मैं ने देखा कि दिन साफ होता आता है तो धीरे से मैं वहां से उतरा और जिस में बिस्कुट रक्खा जाता था उसी चौड़े मुंह की टोकरी लेकर चुपचाप गुफा के बाहर चला आया।

समुद्र की तरंग से जो चीज़ तीर पर चली आई थी उसी के लिये वे चिड़ियां उछल कूद, शोर गुल, लड़ाई भिड़ाई कर रही थीं। अपनी

धुन में मुझे किसी ने न देखा, एक चट्टान पर कई बैठी थीं उसी के नीचे छिपता छुपा मैं गया, झट टोकरी फेंक कई को मैं ने पकड़ा और लेकर गुफा में लौट आया।

अवरज में आये हुए अपने साथी विमूर्ति को दिखलाया और फिर उसी ताक में चला। इस बार ज़रा कठिनता से एक बड़ा पक्षी पकड़ा। जंगली हंस सरीखा था और पंख उस के काले काले बहुत ही सुन्दर थे।

कप्तान—वाह तुम तो खूब आदमी हो! खाली हम लोगों का खाना ही नहीं पकाते पर शिकार भी मारते हो। इन चिड़ियों से बरसात में बड़ा काम चलेगा क्यों कि हम सब के आहार के लिये हमेशा खिड़की के पास प्राण देने को वह नहीं आवेंगी। जितनी मिलेंगी सब में निमक लगा लगा कर रख देंगे।

मैंने कहा कि समुद्र में से तो बे हिसाब नमक निकलेगा।

चैनी—हां पहले चहबच्चा बनाना होगा जब जल उस में का सूख जायेगा तब निमक मिलेगा?

मैं—तो क्या और भी चिड़ियां पकड़ लाऊं।

कप्तान—नहीं। अभी दो दिन के लिये यही बहुत है। लेकिन जब नमक जमा हो ले तब बरसात में बैठे बैठे तुम जंगली बत्त पकड़ते रहना।

इस काम के करने से ज़रा शेखी मुझे हो गई और कप्तान का भय जाता रहा इस से मैं ने कहा कि—"क्या यह बात विचित्र नहीं लगती?"

कप्तान—मैं तो समझता हूं कि यहां सभी बातें विचित्र सुन पड़ती हैं।

चैनी इस वक्त किताब में गर्क हो गया था। हमारे इन कामों से उसे ज़रा भी आनन्द नहीं मिलता था।

बात असल में यह थी कि हमारी तेज़ी और कठिनता को सहज कर लेने का ढंग देख वह भीतर ही भीतर मुझ से जलता था पर चाहता

था कि यह बात कोई जानने न पावे इसी लिये वह ऐसा भाव दिखलाता था कि और किसी और हमारा ध्यान नहीं है एक है तो सिर्फ़ उसी किताब में जो सामने खुली पड़ी है ।

घर का आराम बढ़ाने का सामान तइयार करने में स्टीफ़न लगा हुआ था । तख़्ता जोड़ जोड़ कर उस ने टेबल और बेंच बनाया और कप्तान ने चिड़ियों को खाने लायक़ बना कर रख छोड़ा ।

इस बीच में पानी बरसना रुक गया था सिर्फ़ झीसी आ रही थी इस से हम लोग तीर पर चले ।

अब तो साफ़ ही मालूम हो गया कि " नोवा स्कोशिया " पर पांव रखने की आशा करना वृथा था । अब उस के डूबने में कोई सन्देह नहीं बच रहा था क्यों कि उस के हर एक जोड़ और तख़्तों से तीर बिल-कुल भर गया था ।

छोटी डोंगी जिस ने इतना काम दिया था वह भी तीर पर पटका कर बहुत ही चूर और मरम्मत तलब हो गई थी । पर हम लोगों को आशा थी कि मरम्मत करने पर दुरुस्त हो जायेगी ।

बांस की तरह गोल गोल मस्तूल के जो टुकड़े तीर पर बह आये थे उसी पर डोंगी को दौड़ा कर गुफा के पास एक ताड़ के पेड़ के पास हम लोग ले गये ।

इस के बाद हम चारो ने तीर पर तख़्ता पोपा, संदूक आदि जो कुछ समुद्र ने बहा कर हम लोगों के दरवाज़े पर ला रक्खा था सब जमा करके समुद्र की तरंग जहां न पहुंच सके उतनी दूर जमा किया ।

ऐसे टापू में पहुंचाने के लिये कि जहां खाने को मिलता था परमेश्वर को धन्यवाद दिया ।

इस मिहनत में दिन भर लग गया रात आ जाने से काम बंद करना पड़ा । और गुफा के द्वार ही पर जहां दो पत्थरों से एक कोना बन गया था वहीं आग सुलगा कर एक दिन पहले का जो कुछ बच रहा था वही गरम किया गया ।

सोने के पहले स्टीफ़न ने पानी से बचाव के लिये तख़्ते की छत

देकर एक छोटा सा रसोई घर बनाया और उस के नीचे निमक के पानी से खूब तर करके पाल का टुकड़ा बांध दिया फिर सब बरतन लटकाने के लिये लोहे का टुकड़ा कई जगह गाड़ दिया। यह सब करके स्टीफ़न ने कहा कि जिस बात की कमी होगी धीरे धीरे पूरी हो जायेगी। कल अगर पानी खूब भी बरसे तो भी रसोई निर्विघ्न बन सकेगी।

मैं ने कहा कि यहां जानवर पाले जाते तो अच्छा होता।

स्टीफ़न—न जाने कोई जानवर टापू में हैं या नहीं।

कप्तान—मेरी इच्छा है कि किसी दिन इस की तहक़ीक़ात हो। उस दिन बंदूक़ भी साथ चले, और देखा जाये इस टापू में कौन कौन शिकार मिलते हैं।

मैं ने कहा—अच्छा। कल ही चलिये।

कप्तान—इतना मत घबराओ। अभी यहां ही बहुत काम बाक़ी है जब यहां से फ़ुर्सत हो ले तब भीतर चल कर देखें क्या क्या मिलता है। चैनी ने पुस्तकों को देखा है वह बहुत से जीव और पेड़ों का हाल बतला सकेगा।

अपनी विद्या की तारीफ़ अपने बाप से सुन चैनी का चेहरा चमक उठा ऐसा प्रसन्न मुख मैं ने उस का कभी नहीं देखा था। उस ने प्राणी तत्व और वनस्पति की विद्या पढ़ी थी अब इस अनजान टापू में पड़ जाने से उस की विद्या के उपयोग में आने का अच्छा अवसर था।

कप्तान—मुझे मालूम होता है कि साग सब्ज़ी यहां मिलना कठिन होगा। इस से मेरी राय है कि हम लोग तुरत थोड़ा आलू लगा दें। ज़मीन के लक्षण से मालूम होता है कि आलू अच्छी तरह पैदा होगा इस से फ़ौरन जगह देख ज़मीन खोद आलू लगा ही देना चाहिये जितना जल्दी उखड़े हम लोगों के लिये अच्छा ही होगा।

यही सलाह एक दिन भोजन के समय ठहर चुकी थी। इस से यह विचार बहुत ही प्रसन्नता से स्वीकार किया गया। थोड़ी ही देर के बाद तीर पर एक अच्छी जगह चुन स्टीफ़न और चैनी ने ज़मीन खोद कर तइयार कर डाली और कई पांती आलू भी लगा दिया।

चैनी—पानी पड़ जाने से ज़मीन ऐसी अच्छी हो गई है कि दो एक क्यारी और भी बना रखना चाहिये कि यहां की कोई चीज़ काम की मिल जाये तो वह भी इस बाग़ में लगा दी जाये। अजब नहीं कि थोड़ी सी चीज़ ऐसी मिल जाये।

चैनी को इस बात का शौक़ था इस से उस का जी लगा थोड़े ही दिनों में बहुत से ऐसे कन्द मूल और साग सब्ज़ी उसने जमा की जिसे वह पढ़ने के कारण जानता था कि खाने के काम में आ सकती है।

संदूक जो वह लाया था उस को खोलने से चावल उस दशा में मिला जो बोया जा सकता है और धान कहलाता है। इस से बड़ा खुश हुआ ऐसी जगह में उस ने छींट दिया जहां दल दल था और पानी की कमी नहीं थी।

जब धान पकने पर आया तब तो जंगली चिड़िया वे तरह टूट पड़ने लगी। इस को बहुत कष्ट मिहनत और मेरी मदद से उस ने बांस से घेरा और ऊपर एक तरह का जाल लगा दिया। जंगल में एक दरख़्त से बहुत लम्बा लम्बा डोरी की तरह लटकता था उसी का जाल हम लोगों ने बना लिया था।

ऋतु वहां की बड़ी सुन्दर थी। पहले एक खम्भा खड़ा करके उस में ध्वजा लगा दी गई इतना करने के बाद कप्तान और स्टीफ़न टापू का पता लगाने को गये।

पता लगाने से जान पड़ा कि यह टापू एक लम्बा धज्जी सा चला गया है। प्रायः आधा मील सघन वृक्ष लता और झाड़ियों से पूर्ण है इस के बाद भूमि समुद्र में निकली हुई है तीर पर छोटे छोटे पेड़ पत्तियों से भरा है और यहां वहां पत्थर के ढोंके चटान आदि पड़े हैं।

जब तक समुद्र शांत नहीं होता और डोंगी पूरे तौर से नहीं बन लेती तब तक वहां जाने का विचार उन लोगों ने रोक रक्खा पर इतना जो भर लिया कि साग सब्ज़ी यहां खूब है अनगिनती ताड़ खजूर नारियल, छोटे बड़े वृक्ष, लता मंडप से स्थान ऐसा सुहावना हो रहा था कि टापू के क़ैद का दुख कुछ कम हो गया।

वक्त आया। किसी को जीविका निर्वाह न होने के कारण
परदे[illegible]ाना पड़ा, कोई शहर में जाकर रह गये, कोई समुद्र पार जाकर
बसे, और बहुत से परलोक चले गये।

आह ! क्या क्या परिवर्त्तन हो गये ! क्या वृथा का रोना है !
पुराने दिनों का याद करना कैसा दुखदायी है
जाना, गर्म गर्म जल आंखों से इस बा
ज़िन्दगी के सब सुख कम हो जायेंगे,
आयेंगे। और हम लोगों का पता भी

लकड़ी बटोरने

मोहन—चलो आओ निकोलस, जल्दी चलो इस ... यहां देर होती है तब तक मां जाड़ा खा रही है।

निको०—हां जी, चौ बाजा चल रहा है। हम लोग बड़ी रात को सोये थे ठीक वहीं पर झोपड़ी में बर्फ़ गिर रही है।

(... बड़ी भारी आवाज़ सुन पड़ी)

तुम लोगों को पकड़ा।"

का बोझ पीठ पर से नीचे गिर पड़ा उसके पांव पर दाने गिर पड़े। वह होता था, उसकी आवाज़ और चा... या आंख गड़ा कर टो...

मुझ से नहीं मींचा
त को सोच टपक पड़ता है कि
ने लायेंगे और फिर कभी नहीं
न रहेगा कि कहां गये !

ली लड़की ।

विलायत में जाड़ा खूब पड़ता है डिसेम्बर के महीने में, ठीक की
गरीब लड़के, फटा कपड़ा पहने सैन्मी के जंगल के किनारे एक कुटी थी
वहांसे निकले । तमाम बर्फ पड़ी थी पहाड़ियां पत्तियां इसीमें झड़ गई थी ।
हवा जोर की चल रही थी उस वक्त तड़का हुआ जाता था सिर्फ सात ही
बजे थे । इसी से समझ लेना चाहिये कि वहां कैसी देर देर से होती है ।

निकोलस और फ्रांक नाम दो गरीब लड़के लकड़ी बटोरने के
लिये जल्दी जल्दी जंगल के बीच की ओर जा रहे थे । पुराने जूते
पैर में थे इससे कुछ बचाव न था मोटे कपड़े का पैजामा, पैबंद लगा
कुर्ता और खरगोश के चमड़े की टोपी यही उनकी पोशाक थी ।

बहुत दूर जाने पर दो राह मिली । तब निकोलस ने कहा
"फ्रांक खड़े रहो यह रस्सा लो इसमें जितनी सूखी लकड़ी तुम बटोर
सको इकट्ठा करके बांध डालो ।" दूसरा भाई बोला "बहुत अच्छा
जब तुम भी काम माफिक जमा कर चुको तो जंगल के दरवाजे पर आना
वहीं मुझ से भेंट होगी ।"

तब दोनों भाई अलग हुए और दूसरी दूसरी राह से चले
ही दोनों को सूखी लकड़ी पड़ी हुई मिल गई भारी भारी बो
बांध लिया । बोझा अपना ले ले कर दोनों वहीं मिले
सलाह हो चुकी थी ।

"यह ! चोर फिर इस

दोनों लड़के डर गये थे उ

और जो आदमी सामने नज़र आया

आदमी के रंग में बड़ा रूखा मालूम

दोनों ने जादू की सी थी। गुस्सा

हुए लड़कों को देखने लगा। उसकी

रखवारों की सी थी और

बग़ल में बंदूक भी रक्खे था।

मनुष्य—कहो नट खट लोगो ! यह दूसरी बार मैंने तुम लोगों को

पकड़ा न ?

दोनों लड़के—[रोकर] माफ़ कीजिये माफ़ कीजिये, सिलवेस्टर

साहब !

मनु०—आय ? क्या तुम समझते हो कि साविवंस * की लकड़ियां

इस तरह चोरी होती रहेंगी ?

अच्छा हम देखेंगे—हम देखेंगे !

लड़के—पर यह सूखी लकड़ियां हैं। जब इनको कोई नहीं

बटोरता तो पड़ी पड़ी सड़ जाती हैं। फिर किसी के काम नहीं आती।

मनुष्य—चाओ, चाओ। बहस पीछे करना, बोझा उठा कर मेरे

साथ साथ चाओ।

लड़के—साथ साथ आयें ?—कहां

म०—कैदखाने में चोट्टे !

के—कैदखाने में ? नहीं साहब, दया करके मुझे छोड़ दीजिये

नहीं। मैं कहता हूं !

---

* सब [illegible] का इंडदा है वैसा ही यह बिलायत का इंडदा है।

लड़के—तब हमारी माता सर्दी में मर जायेगी। संसार में सिवा हमारे दूसरा उसे कोई नहीं है। और अगर आप हमको क़ैदखाने में बंद कर देंगे तब वह क्या करेगी?

म०—हम यह झूठ फूंक नहीं मानते।

लड़के—ओ! न आप का हृदय है, न दया है इसी वास्ते आप को "सिलवेस्टर भेड़िया" लोग कहते हैं।

म०—अच्छा अच्छा। बहुत हुआ। मैं अपना काम करता हूं और किसी बात के लिये सिर अपना नहीं झुकाता।

निकोलस—सुनिये सिलवेस्टर साहब मैं अपने भाईसे बड़ा और मज़बूत हूं इसने जितनी लकड़ी जमा की है उसमें मैंने ज़ियादा सूखी लकड़ी बटोरी है। इस लिये मैं ज़ियादा दोषी हूं। अगर आपको सज़ाही देना है तो दोनोंके बदले मुझेही सज़ा दीजिये पर मेरे भाईको कुटिमें भेज दीजिये।

फ्रांक—नहीं जनाब, आपको चाहिये कि हम दोनों ही को क़ैद करें। निकोलस मुझ से मज़बूत है उनकी मिहनत मेरी माता [illegible] काम आयेगी।

सिलवेस्टर—नहीं नहीं। बहुत मत बक बक करो—तुम दोनों को चलना होगा।

फ्रांक—(सिसक कर) हाय मा!

दोनों लड़के अपना अपना बोझ उठा निर्दयी बन रक्षक के पीछे पीछे चले। जोड़ी सब मार्क्विस की कोठी के सामने से निकले कि निकोलस ने कहा कि "क़ैदखाने में चलने के पहिले मार्क्विस के सामने चलिये।"

सिल्वेस्टर—अच्छा तो। यही तो वह चले आ रहे हैं।

मार्क्विस इन ही लोगों की ओर चले आ रहे थे उम्र उनकी साठ वर्ष की आकार सुन्दर, चेहरा भलेमानुष का सा था। पकके बालगलों पर लटके हुए थे आंखों से मधुरता और दया प्रगट हो रही थी, जो उनका मुंह देखता था उनको खुशी और धीरज दोनों एक साथ होती थी।

मार्क्विस—कहो सिल्वेस्टर इन लड़कों को कहां लिये जाते हो?

सिल्वे०—हुज़ूर ये दोनों चोर हैं। दूसरी बार इनको लकड़ी चोरते मैंने पकड़ा है।

दोनो लड़के सामने खड़े हो फूट फूट रो रहे थे।

मार्क्विस—तुम जानते हो न ? ये लकड़ियां तुम्हारी नहीं हैं ?

फ्रांक—जी हां।

मार्क्विस—तब तो तुम्हारा दोष साफ़ साफ़ है। क्यों कि एक बार जब तुमको मना कर दिया गया था तो फिर तुमका ऐसा करना नहीं चाहता था।

निकोलस—(कलपकर)तब तो हम लोग सर्दी में पड़े ही पड़े मर जाते।

मार्क्विस—(तर्स खाकर) कैसे बेटा ! यह क्या तुम कहते हो ?

निकोलस—हां जनाब, मैं आप से अभी सब हाल सच सच कहता हूं। आप ही इसका विचार करें कि हम सब को सज़ा होनी चाहिये या नहीं। हमारे बाप लकड़हारे थे, सख़्त मिहनत और ग़रीबी दोनों से दबे हुए वह कुटुम्ब के लायक़ आहार बड़ी बड़ी कठिनाइयों से जुगता सकते थे [illegible] क दिन उनकी अधमूए हालत में सब कोई ले आये। [illegible] उन्हींने काटी थी उसी में दब कर बदन चूर हो गया था। [illegible] हीने दुख झेलने के बाद वह मर गये। हमारी बूढ़ी और कमज़ोर माता मेरा भाई और मैं—यही तीनो अकेले बच गये। छोटी सी मड़ई दरख़्त की छाल से ढंकी हुई और एक छोटा आलू का खेत—कुल यही हम लोगों की है।

"गर्मी में हम और फ्रांक जंगल में लकड़ी काटते हैं या किसानों को काम में मदद देते हैं इसी से कुछ थोड़ा मिल जाता है जिससे मेरी माता जीती है। पर जाड़े में जनाब, हाय ! तब तो, हम लोगों के दुख का पारावार नहीं रहता। तमाम ज़मीन पर बर्फ़ पड़ी रहती है तथा हमारी मड़ई को हमेशा डोलाती रहती है, तमाम पानी टपकता है और हमारे कपड़े तक जम जाते हैं हमलोग कोटे हैं इसमें सब सहलेते हैं पर मेरी माता, साहब ! बेचारी मा !—को जब हम लोग देखते हैं—उसका बदन सर्द, रंग पीला, बिलकुल मरण तुल्य बर्फ़ से सर्द अपने हाथ पैर को गर्म रखने को वृथा कोशिश करते देखते हैं तो—दिल हमारा टुकड़े टुकड़े हो जाता है आंस[illegible] आंखों से रोकते नहीं रुकती।

तब हम लोग अपना दुख दूर करने के लिये झड़ी में निकल पड़ते हैं। यह जंगल हमारे सामने पाता है। तमाम हवा की गिराई सूखी लकड़ियों से ज़मीन भरी रहती है। इनकी बेकाम की थोड़ी चीज़ों से मेरी माता का जाड़ा दूर हो जायेगा। जब कि इतनी आसानी से हम लोग उसे बचा सकते हैं तो क्या उसे मरने के लिये छोड़ दें? यही बिलकुल ठीक है अब कहिये सार्जेंस साहब कि हम दोषी हैं?

सार्जेंस—नहीं, लड़के, क्यों कि तुमने वह चीज़ ली जो तुम्हारी अपनी नहीं है। पर तुम सच्चे और मातृ भक्त लड़के हो तुम को सज़ा देना हकीकत में निर्दयता का काम होगा। जाओ, मैं माफ़ करता हूं। जब तुमको जाड़ा मालूम हो जंगल में चले जाया करो, जो लकड़ियां पाइते हो बटोर लिया करो—मैं आज्ञा देता हूं। (फिर वन रक्षक की ओर देख कर) सुनते हो न सिलवेस्टर?

सिल्वे०—(टोपी छूकर) हुज़ूर।

सार्जेंस—लड़कों को तुमने इतनी दूर लाया वे थक गये होंगे, एक छकड़ा लेकर जाओ और उनकी माता को लकड़ी पहुंचा आओ।

लकड़ी बटोरने वाले लड़के।

(इतिहास)

सन १८२८-३० का जाड़ा बहुत ही भयंकर था। सर्दी का कुछ ठिकाना न था और बहुत दिनों तक रही। बड़ी बड़ी नदियां बर्फ़ से छिप गई थीं और उन पर भारी से भारी बोझ से लदी गाड़ियां इस तरह चली जाती थीं, जैसे मामूली सड़कों पर चल सकती [illegible] घोड़े और चौपाये अपनी अस्तबलों में मारे सर्दी के ठिठुर [illegible] थे। राह चलते आदमी सर्दी से गिरे पड़ते थे [illegible] यह दशा थी कि भूख प्यास से व्याकुल [illegible] में या अस्तबल और लोगों के [illegible] कि दुख और हैरानी का ठिकाना न [illegible]

सार्जेंस मेजर की [illegible]

जाड़ा बिना कष्ट के काट [illegible]

मार्क्विस ने बनवा दिया था, घर की कुछ सामग्री बनवा दी थी, कुछ खेत में ज़मीन बढ़ा कर दुख और नाउमेदी के बदले मार्क्विस की दया से वे दोनो लड़के अपनी माता के साथ पहले से अच्छी दशा में रहने लगे।

जाड़ा पड़ता ही रहा। पर उन लड़कों ने किसी बात की शिकायत न की। मार्क्विस के वास्ते उनकी माता धुनी जला कर चर्ख़ी पर सूत काता करती थी। दिनको लड़के अपने खेत के चारो ओर का घेरा बनाते थे और शामको बेंतकी टोकरी और पींजड़ा बनाकर दूसरे रोज़ जाकर आस पासके शहर में बेच आते थे। जब कभी लौटनेमें उनको देर हो जाती थी उस समय वे जंगलमें भेड़ियों का भौंकना सुन के काँप जाते थे।

एक दिन रात को वे शहर से अपना सौदा बेच जंगल की राह से मकान को लौटे आते थे कि किसी के विपत्ति में पड़ने की आवाज़ कान में पहुंची।

फ्रैंक—यह आवाज़ तो मार्क्विस की है!

निकोलस—चलो इधर दौड़ कर चलें।

जहां से उनको विपत्ति में पड़े हुए अपने हितकारक की आवाज़ आती सुन पड़ी उधर ही दौड़े। जब कभी दूर जानें का मौक़ा होता था तो अपने पास दोनो कुल्हाड़ी रख लिया करते थे। इस वक़्त भी दोनों के पास कुल्हाड़ी मौजूद थी।

थोड़ी ही देर में वह एक आदमी के पास पहुंचे जो बड़े भारी भेड़िये के साथ लड़ रहा था। सचमुच मार्क्विस ही थे। भेड़िया उन पर [illegible] था और दांत गड़ा रहा था और मार्क्विस भयानक लड़ाई लड़ने के [illegible] शत्रु को गिराने ही पर थे कि निकोलस ने अपनी कुल्हाड़ी [illegible] जानवर को मार उसका पंजा काट लिया।

[illegible] अपने नये शत्रु पर फिरा। निकोलस [illegible] पीठ पर कूद उसकी गर्दन के चारो [illegible] दे। भेड़िया ज़मीन पर [illegible] के पास ही कुल्हाड़ी गिर [illegible] और इस बात का मौक़ा देखते

रहे कि लड़की को ज़रूर न पहुंचे और जानवर भी मरे। देखते देखते अवसर पा मार्विलस ने ऐसा निशाना मारा कि भेड़िया का सिर कट गया।

मार्विलस ने उन छोटे बच्चों को पीछे पहचान कर कहा—"आह लड़के! तो तुम ही लोग हो जिनके कारण मेरी जान आज बची।"

लड़के—जनाब आपने हमारे दुख पर दया की; आप ही ने हमारे माता की जान बचाई, सब कुछ आपही की बदौलत हम लोगों को हुआ।

इतने में बन का रखवाला मिलब्रैस्टर आ पहुंचा था उसने मार्विलस ने कहा "देखो इन दो वीर लड़कों ने मेरी जान बचाने में कैसी वीरता दिखलाई है। ग़रीब दुखियों पर रूखे और निर्दय होने के बदले दयालु और उदार हुआ करो। विचार कर देखो कि यदि धर्म के लिये दया न दिखलाओ तो स्वार्थ के लिये भी दिखलाना अच्छा है। क्यों कि अपने से जो कमज़ोर और छोटे हैं वह भी हम लोगों की जान बचा सकते हैं। देखो जैसा मेरा हाल हुआ उसी तरह मार्विलस की जान दो छोटे छोटे किसान के लड़के भी बचा सकते हैं।

हमारी ज़रूरतें।

ख़याल करो कितने आदमी अपने अपने रोज़गार में लगे हैं जिससे हमारी ज़रूरत की चीज़ें मिलती हैं।

हम लोगों को दाल चावल रोटी का काम पड़ता है। इन सब चीज़ों के मिलने के पहले किसान ( ) जोतता है ( ) बोता है ( ) काटता पीटता है। रोटी बनाने के लिये गेहूं पीसा जाता है और तब रसोइया रोटी बनाता है।

हम सब को दूध चाहिये। पर दूध मिलने के पहले गोवाला और गाय होना चाहिये जो गाय को चरा कर दूध दूहेगा और तब बेचेगा।

चाय का काम पड़ता है तो आसाम और पंजाब में मज़दूरों का होना ज़रूर है जो पत्ती इकट्ठा करेंगे, रेल और जहाज़ होना चाहिये जिस पर लद कर ये चीज़ें आनी चाहियें। चाय वालों से ख़रीदने को सौदागर होना चाहिये पसारीका होना ज़रूर है जो बाज़ारमें हमारे लिये थोड़ी थोड़ी बेचें।

कपड़ा मिलने के लिये भी कितने आदमियों का काम करना ज़रूर है। हमारे कपड़े रूई के रहते हैं, पर हम सब को कपड़ा कभी न मिले अगर खेतों में बीज बोने वाले और रूई जमा करने वाले आदमी न मिलें। सूत कातने वाले न हों, ( ) बीनने के लिये जोलाहे न हों, ( ) बेचने के लिये बज़ाज़ न हों कतर ब्योंत कर ( ) बनाने के लिये दर्ज़ी न हों तो बड़ा कठिन हो।

जाड़े की पोशाक ऊन की बनती है। इस काम के लिये भी ( ) की पीठ पर से ऊन काटने बेचने को गड़ेरियों को होना चाहिये।

जूता चमड़े का बनता है; पर चमड़ा जानवरों की खाल का होता है जिसको तय्यार करने को चमार की ज़रूरत है जो इतना करने के बाद ( ) के नाप से काट सी कर दुरुस्त कर दे।

पर खाने के लिये अन्न और पहनने की पोशाक के अलावे रोज़ रहने के लिये ( ) चाहिये। क्या मकान बिना बहुत से मज़दूरों की मदद के बन सकता है? कभी नहीं। ईंट बनना और पकना चाहिये बढ़ईगण उनको ( ) के लिये होना चाहिये। राज को ज़रूरत है जो बनावें। दीवारों में ( ) होना चाहिये। लकड़ी का काम बनाने को ( ) का भी रहना ज़रूरी है। किवाड़ रंगने को ( ) होना चाहिये। गरज़ हर तरह की चीज़ों को बनवाने के लिये हर पेशे के ( ) का रहना भी ज़रूर है।

इन बातों को विचारो और अपना बड़ा भाग्य समझो कि ऐसे ( ) में रहते हो जहां हर तरह की चीज़ें और हज़ारों आदमी काम करने को मिलते हैं।

पहला प्यूनिक युद्ध।

इतिहास वालों ने कार्थेज की इस लड़ाई का नाम प्यूनिक युद्ध रक्खा है। इस लड़ाई का कारण यह था कि थोड़े से इटैलियन जाति के लूटेरे मेसिना नगर में जाकर रहे थे। यह नगर सिसिली का, इटली के बहुत निकट था। ग्रीक और कार्थेज वाले दोनों उन लुटेरों को उस नगर से निकाला चाहते थे। इस से लुटेरों ने रोम की मदद के वास्ते बुलाया। रोम वालों की यह इच्छा न थी कि मेसिना कार्थेज वालों के हाथ जाये इस लिये उस ने मदद भेजा उसी से यह युद्ध आरंभ हुआ और बाईस बरस तक रहा (२६४—२४१)

रोमन लोगों की जहाज़ न थे पर कार्थेज वाले सौदागर थे इस से जहाज़ भी उन के पास बहुत थे। लेकिन सूखे पर लड़ने वाली रोम की बहुत अच्छी सेना थी क्यों कि हर एक रोमन सिपाही था इस के अलावे इटैलियन लोग जो रोम की फ़ौज में थे जी से रोम के लिये लड़ते थे। और कार्थेज वाले सिर्फ़ सेनापति अपना रखते थे और फ़ौज में तलब देकर जीते हुए देश के लोग भर्ती होते थे इस से इन के सिपाही सिर्फ़ अपनी तलब की फ़िक्र रखते थे पर जी लगा कर नहीं लड़ते थे।

रोम के जहाज़ी फ़ौज की बढ़न्ती।

पहले जब कि सिसिली में लड़ाई हुई तो रोमन लोगों ने कार्थेज वालों को हरा दिया और साइरेक्यूज़ के ग्रीक राजा से जबर्दस्ती सन्धि कर लिया और उस की कार्थेज की मैत्री छुड़ा कर अपना मित्र उसे बना लिया। पर कार्थेज के जहाज़ ने इटली के तीर का इतना नुक़सान किया कि रोमन लोगों ने देखा कि अब अपनी भी जहाज़ी फ़ौज बनाये बिना काम न चलेगा। संयोग ऐसा हुआ था कि कार्थेज का एक जहाज़ इटली के तीर पर डूब गया था। उसी नमूने को देख रोमवालों ने अपना जहाज़ बनाना शुरू किया। इधर जहाज़ बनता था और साथ ही उसके लिये खेवने वालों की भी तालीम होने लगी। उन दिनों में जहाज़ आज कल के से नहीं होते थे पर बड़ी बड़ी नावों की तरह होते

थे। तले ऊपर लोग पाँती की पाँती बैठ कर खेवते थे और बड़े बड़े लड़ाई के जहाज़ में ऐसी ऐसी पांच पांतियां होती थीं—सो जहाज़ चलाने के लिये अभ्यास का भी काम था। २६० में जहाज़ का बेड़ा समुद्र में डाला गया। इतना रोमन लोग जानते थे कि नज़दीक से भिड़ने का मौका मिले तो हम लोग ज़रूर जीतें, सो उन्हीं ने बड़े बड़े लकड़ी के पुल बना मस्तूल में बांध दिया और अकुंसा उस पुल में लगा रहता था। जब देखते थे कि कार्थेज वालों का जहाज़ बहुत निकट आ गया तो पुल को गिराते थे और उस का अकुंसा उन के जहाज़ में फंस जाता था। तब झट रोमन सिपाही पुल पर से कार्थेज वालों के जहाज़ पर चले जाते थे और सहज में मार कूंच कर दुरुस्त कर देते थे यद्यपि रोमन लोग समुद्र के काम में पक्के न थे पर इसी तरकीब से चार वर्षों में उन लोगों ने दो बड़ी बड़ी लड़ाई जीती।

अफ्रिका में रेग्युलस।

(२५६)—दिल बढ़ जाने के कारण रोमन कन्सल मार्शियस रेग्युलस ने अफ्रिका में जाकर कुल देश को लूट लिया। कार्थेज वालों ने डर कर सुलह करना चाहा पर रेग्युलस कहता था कि हर तरह से आधीन हो जाओ। तब कार्थेज वालों ने फ़ौज इकट्ठा की और रोमन लोगों से लड़े और रेग्युलस को कैद कर लिया। सिसिली में पहले ही की तरह लड़ाई चली जाती थी २५० में रोमन लोगों ने एक लड़ाई जीती और कई कार्थेज के बड़े आदमियों को उन लोगों ने कैद कर लिया। कार्थेज वालों ने उनको छुड़ाने के लिये रेग्युलस को रोम में इस शर्त पर भेजा कि अगर वह कैदियों का अदला बदला न करें तो रेग्युलस कार्थेज में वापस आवें। रेग्युलस ने देखा कि इस बात में रोमन लोगों की घटी है इससे उसने सिनेट को सलाह दी कि अदला बदला मत करो। सो उन लोगों ने अस्वीकार किया और रेग्युलस अपने वचनानुसार स्त्री, लड़के और मित्रों को रोम में छोड़ कार्थेज के बंदीखाने में मरने के लिये चला आया।

पहले प्यूनिक युद्ध का अन्त।

लड़ाई २४१ तक होती रही इसी वर्ष में समुद्र में रोमवालों की बड़ी भारी जीत हुई। कार्थेज वालों का जी घबराया हुआ था, सुलह करना चाहते थे। उनहीं दिनों कार्थेज में एक बड़ा भारी सेनापति होता आता था नाम उसका हमिलकार था पर लोग "बारका" यानी बिजली भी उसे कहा करते थे। उसने देखा कि कार्थेज को कुछ दिन का चैन मिलना चाहिये कि जिसमें ज़मीन पर रोमन लोगों से लड़ने लायक सिपाही तालीम किये जा सकें। यह सब समझ बूझ कार्थेज वालों ने सुलह कर लिया, रोम के लिये सिसिली छोड़ दिया और उसे बहुत रुपया देने को भी राज़ी हो गये। सुलह तो हो गई पर किसी के मन में यह न था कि ज़ियादे दिन तक रहे। दोनों ओर के लोग यही चाहते थे कि नई लड़ाई की तइयारी करने के लिये सुहलत मिल जावे।

रोम का पहला सूबा।

इटली के बाहर अब रोम का पहला दखल सिसिली पर हुआ। थोड़े ही बरसों के बाद रोम ने कार्थेज वालों से सार्डिनिया और कौर्सिका का टापू भी छोड़वा लिया। सिसिली के लोगों से रोम ने वैसा व्यवहार नहीं रक्खा जैसा कि इटली वालों से। पर उसने सिसिली को एक प्रोविन्स यानी सूबा बनाया जिसका मतलब यह था कि उसका राज काज एक रोमन मजिस्ट्रेट करेगा। सिसिली के आदमियों को रोम के राज काज में कुछ भी हिस्सा न मिला न कभी उनको पाने की उमेद थी वह लोग रोम के सिव भी नहीं थे पर प्रजा थे। हर साल रोम से एक मजिस्ट्रेट वहां का काम चलाने को आता था इसके अलावे वहां वालों को मालगुज़ारी भी रोम को देना पड़ता था।

अब से जिन जिन देशों को रोम ने जीता तमाम सिसिली की तरह राज काज की हाल रक्खा। सो यह बात सुनकी बहुत बाद

रखना चाहिये। रोम ने लेटिन लोगों पर एक तरह की, इटैलियन लोगों पर दूसरी तरह की, और सूबा के आदमियों पर तीसरे ढंग की हुकूमत की।

कार्थेज वाले स्पेन में।

कार्थेज की पहली लड़ाई इस लिये बंद हुई कि दोनों तरफ के लोग घबरा गये थे, और हमिलकार की भी इच्छा थी कि रोमन लोगों से लड़ने लायक एक फौज तइयार करें। कार्थेज वालों से कह सुन कर अपने को उसने स्पेन में भेजवाया, और वहां जाकर उसने सिपाहियों को खूब लड़ना सिखवाया। स्पेन में धन हीन और वीर पुरुष रहते थे उनको बिना खूब लड़े, जीतना बहुत कठिन था। कार्थेज से चलती समय देवताओं को हमिलकार ने बलिदान चढ़ाया। पूजा के समय अपने नव वर्ष के छोटे लड़के हनिबौल को उसने बुला कर पूछा कि "क्या लड़ाई में चलोगे?" हनिबौल ने कहा "हां"। तब उसने अपने लड़के से कहा कि "इसी स्थान में कसम खाओ कि रोमन लोगों से कभी मित्रता न करेंगे।" लड़के ने कसम खा ली और बाप के साथ गया। आगे चल कर देखोगे कि अपनी प्रतिज्ञा कैसी उसने याद रक्खी।

हमिलकार अपने जीते जी स्पेन में लड़ता रहा और टैगस नदी के किनारे तक पूरा स्पेन, कार्थेज वालों के लिये उसने जीत लिया। उसके मरने पर उसका दामाद हसड्रूबौल चढ़ाई करता और देश जीतता रहा जब २२१ में वह भी मारा गया तो २६ ही वर्ष की अवस्था में हनीबौल सेनापति हुआ।

रोम वाले भी चुप चाप नहीं बैठे थे। उत्तर में गौल लोगों से बड़ी लड़ाई हो रही थी और उनको पीछे हटाते हटाते इटली के उत्तर पो नदी तक रोम वालों ने पहुंचा दिया था। उन लोगों ने कार्थेज वालों से भी इस बात की शर्त कर ली थी कि स्पेन में आईबरस

नदी के उत्तर दखल न करें । आईबरस नदी का नाम आज कल इबी नदी है ।

दूसरा प्यूनिक युद्ध कैसे आरंभ हुआ ।

२१८ में हनीबौल ने समझा कि हम रोमन लोगों से लड़ने लायक हो गये सो उसने जो लड़ाई शुरू की सत्रह बरस तक (२१८—२०२) रही । उसने शुरू यों किया । स्पेन के पूर्व किनारे ग्रीक लोगों की बस्ती एक सेगन्टम नगर में थी । कार्थेज से डर कर सेगन्टम ने रोम से मैत्री करके सुलह कर ली थी । पर हनीबौल ने सेगन्टम से लड़ाई की, उसको घेर लिया, वहां के लोग खूब लड़े । आखिर आठ महीने की घेरघार में शहर के बड़े बड़े लोगों ने देखा कि अब ठटना कठिन है, बस आग सुलगा पहले अपना माल मता उसमें डाल पीछे आप भी जल मरे । इस तरह यह शहर सर हुआ । तब रोमन लोगों ने इस बात की शिकायत करने के लिये कार्थेज वालों के पास एक दूत भेजा वह जब कार्थेज की सिनेट में आया तो हाथ में लपेट कर अपना लबादा लेता आया और आकर उसने कहा कि " मैं सुलह और लड़ाई दोनों लाया हूं जो चाहो ले लो । " कार्थेज वालों ने कहा " जो जी में आवे दे दो " तब उसने अपना लबादा झटक कर कहा " मैं लड़ाई देता हूं । " कार्थेज वालों ने भी ज़ोर से कहा " अच्छा यही सही । "

हनीबौल की तदबीरें ।

हनीबौल की इच्छा समुद्र की लड़ाई लड़ने की नहीं थी पर उसकी इच्छा थी कि अपनी फ़ौज एक बारगी इटली में ले जायें और रोमन लोगों पर उनके अपने ही देश में चढ़ाई करें । उसने यह भी समझा था कि गौल को रोम वालों ने हाल ही जीता है इससे वह भी रोम से रंज ही होंगे और मदद पाकर तुरत बिगड़ जावेंगे । उसने यह भी बिचारा था कि दो एक लड़ाई में जहां रोमन लोगों को हराया तो कुल इटली वाले हमारा साथ दे देंगे तब रोम को दबना पड़ेगा ।

हनीबौल की कठिनाइयां।

पर इटली में जाना ही कठिन था क्यों कि स्पेन के बाहर होने के लिये पहले पीरेनीज़ पर्वत के पार होना तब ऱ्होन नदी के पार होना यह काम कुछ सहज नहीं है क्यों कि इस नदी की धारा बड़ी तेज़ है। इसके अलावे गौल देश के लोगों की इच्छा न थी कि हमारे देश होकर कोई जाये इससे वह भी रोकने का बहुत उद्योग करते थे। आल्प्स पर्वत तक पहुंचने के पहले इन लोगों से भी लड़ना उसके लिये ज़रूरी हो था, इसके अलावे फिर इन पहाड़ों की सर्दी, बर्फ़ और ऊंचाई को टपना आदि बड़ी बड़ी आफ़तें थीं। इतने के बाद तब कहीं लम्बार्डी में वह पहुंचता जहां रोम वाले भी ज़रूर ही बाधा डालते।

इनही सब कठिनाइयों के कारण हनीबौल की इटली पर चढ़ाई—इतनी प्रसिद्ध है। गौल लोग आल्प्स पर्वत के पश्चिम रहते थे। जब हनीबौल गौल देश में रहता वहीं जाकर रोमन लोग उससे लड़ते तो इटली में वह पैर भी नहीं रखने पाता। पर उसकी तेज़ी की तारीफ़ है। जितना रोमवाले समझे हुए थे उससे कहीं ज़ियादा तेज़ी उसमें थी। जहां जहां उससे लड़ने को रोमवाले जाते थे सदा पीछे ही पहुंचते थे। जैसे कि ऱ्होन नदी के पार हुए हनीबौल को तीन दिन हो चुके थे तब रोमन लोग इस नदी तीर पर पहुंचे। इसलिये वह लोग लम्बार्डी ही में जाकर ठहरे।

हनीबौल की इटली की ओर कूच।

हनीबौल रोडेनडस (ऱ्होन) के बहुत जल्दी पार हो गया। सब सिपाहियों को पार कराने के लिये जितने नाव का काम था उसने दो दिन में जमा कर लिया। नदी के उस पार गौल लोग रोकने को खड़े थे, उसने रात को थोड़े से सिपाहियों को धार के ऊपर की ओर भेज दिया और कहा कि वहां जाकर पार हो जाओ। तब उसने बड़ी बड़ी नाव को बांध डाला जिससे धार का ज़ोर कम हो जाये इतना करके छोटी डोंगी में तो उसने सिपाहियों को चढ़ा कर और घोड़ों को

तैरा कर नदी के पार किया। उधर अपने सवारियों ने गौल लोगों के पीछे जाकर पीछे से हमला किया। ऐसा देख कर वह समझ गए कि हमारे सिपाही उतर गये। जोड़ी लेकर पार से इनीबोल के सिपाही तीर पर उतर रहे थे कि गौल लोग उन पर टूटे पर पीछे और मुख मुड़ कर उन लोगों ने घुस कर देखा तो बनस्बत होमा जब देखा तो उतने में वह सिपाही भी जो पहले पार हो चुके थे वह भी पहुंच गये। गौल लोगों को ऐसी उम्मीद न थी इससे डर कर भाग गये और सिपाही लोग बीच में तीर पर उतर गये। अब इससे भी कठिन काम घाटपेस का लांघना था। पहाड़ पर से यह लोग बड़े बड़े पत्थर गिराते थे कभी पीछे से आकर लड़ते थे। पर बर्फ और सर्दी के मुकाबले से यह सब भी कुछ नहीं था। पहाड़ पर से उतरने के समय बड़ी बिपत बड़ी भारी थी। राह बर्फ से ढकी थी, बर्फ पर से आदमी फिसल फिसल कर गिर कर मर गये। इसीसे उस राह की कठिनता का खयाल बंध जायेगा कि जब रीडैन्डस नदी के पार हुआ था तब इनीबोल के साथ ४८००० आदमी थे और जब घाटपेस के पार भी गया तो उसके साथ सिर्फ २६००० आदमी बच रहे बाकी सब मर गये।

इनीबोलने रोमन लोगों को हराया।

तुम समझते होगे कि रोमन लोगों ने जल्दी उनको रोकने का उद्योग किया क्यों कि जैसा इनीबोल ने समझा था उसी के अनुसार पेडस (पो) नदी के किनारे रहने वाले गौल उसकी फौज में भरती होने लगे। पहली लड़ाई (२१८) टिसिनस नदी के तीर पर हुई जो ऐल्प्स से आकर पेडस (पो) नदी में मिल गई है। रोमवाले आये और इनीबोल पेडस के पार हो गया। तब तक दूसरी रोम की फौज पहुंच गई थी और उसके अफसर कन्सल टाइबीरियस सम्प्रोनियस लौंगस ने तुरत लड़ना चाहा। दोनों फौज के बीच में एक छोटी नदी ट्रीबिया पड़ती थी, ठंढ का दिन था और जो रोमन कन्सर ने अपने सिपाहियों को जल में हेला कर इनीबोल पर चढ़ाई की। रोमन लोगों को इनीबोल ने खूब हराया और गौल देश से बाहर कर दिया।

इस तरह इटली का उत्तर भाग इनीबील के हाथ चला आया और वहां के सब आदमी उसके मित्र हो गये। सी दूसरे वर्ष (२१७) में इनीबील इट्रूरिया में गया और वहां से लूट मार करता रोम के ठीक दक्षिण की ओर उसने धावा किया। रोमन कन्सल कैयस फ़्लेमिनियस नीपोस उससे लड़ने को आया और एक लड़ाई ट्रेसीमीनस झील के किनारे हुई। उस दिन कूहा बहुत था और रोमन लोग जो इनीबील पर चढ़ने को जा रहे थे उन्हीं को एका एक इनीबील की फ़ौज ने घेर लिया, गहरी लड़ाई में पूरी तरह रोम वाले हारे और उसी में कन्सल भी मारा गया। तब तो रोम वालों ने बिपद में पड़ कर क्विन्टस फेबियस मैक्सिमस को डिक्टेटर बनाया। डिक्टेटर ने देखा कि इनीबील से लड़ना बृथा है इसी उसके पीछे ही फिरता रहा और उस पर निगाह रखता रहा और जब दाव मिल जाती तो इनीबील का कुछ बिगाड़ देता, इसीसे इसका नाम "कंकटेटर" अर्थात बिलम्ब करने वाला पड़ा।

कैनी की लड़ाई।

यद्यपि कंकटेटर का ढंग बहुत काम का था पर रोमन लोगों को पसंद नहीं था क्यों कि मन मानता लूट मार करने का इनीबील को अवसर मिलता था और यह भी भय लगा हुआ था कि इटली की और और जाति वाले उसका साथ देकर कहीं रोम पर चढ़ाई न करें। इस लिये दूसरे साल (२१६) रोमवालों ने उसको दूर करने का बड़ा भारी उद्योग किया। दोनों कन्सलों की इनीबील की दूनी दूनी फ़ौज के साथ लड़ने को भेजा पर फिर ये दोनों उससे कैनीमें हार गये सत्तर हज़ार आदमी चुने चुने सिपाही रोम के मारे गये और इनीबील के कुल ६,०००, उस समय ऐसा हो गया था मानों रोम वालों की कोई आशा न रही।

दुरितहार।

SEIGEL'S SYRUP

किसी दिन भी वह भाग जा सकता था।

धर्म के मतभेद वास्ते जुलमगार सरकारने एक आदमी को पकड़ के कैद में डाला था। बंदीखाने की पत्थर की मज़बूत दिवारों को देख के वह एकांत और उदास जगह में बाकी जिन्दगी गुज़ारनी पड़ेगी ऐसा उसने अनुमान किया। जुल्म के लिये सज़ा मिली थी परंतु न्यायी कायदे का उलंघन करने वास्ते नहीं था ऐसा विचार आने से इस दुर्दशा में भी उसको दिलासा मिलता था। तथापि बाहर निकल सकता तो खुशी साथ निकल आता कारण उसका हक था।

सो भी सोलह वर्ष दुःख दायक स्थिती में रहा। इस मुद्दत के अंत समय उसको ऐसा विचार आया कि एक पत्थर जो बाहर निकला था उस पर चढ़के ऊपर की बारी में से देखें। उसने देखा तब मालूम पड़ा कि लोहे के कड़े हट सकें ऐसे थे, और बारी का चौकट लंबा नहीं था। भाग जाने का खयाल उसके मन में आया। बारी खोल कर ७ फुट नीचे ज़मीन पर गिर पड़ा और शीघ्र प्रांत छोड़ के भाग गया। कभी उसका मन जास्ती विचारवान था, और जो तपास करने के सिवाय अनुमान नहीं किया था तो दीर्घ वास के अन्दर किसी दिन भी भाग सकता था।

धर्म प्राण त्यागी की बिनासमान और उलटी दूसरी बिना है उसके समान कारन स्वतंत्र क्रिया से रहित, उससे उलटी कारन दुःखी पुरुष कैद में नहीं था।

टूंके और टुके शब्द वाली पत्र हम हमेशा पसंद करते हैं उस जात के एक पत्रमें यह वृतांत एक स्त्री ने लिखा है। वह लिखती है कि, "सोलह बरस हुए पित्त और दुर्बलता से मैं बिमार रहती थी। सदा श्रमित और खिन्न स्वभाववाली थी। क्षुधा लगती नहीं थी, और मेरे आगे अन्न रखे जाते थे उसका स्पर्श नहीं कर सकती थी। बहुत दिन तक बिलकुल भोजन नहीं कर सकती थी। कोई कोई वक्त पेटमें उकाला होता था और मुख से चिकना रस निकलता था। छाती में वेदना, और त्रासदायक खांसी हुई थी, और स्वांस लेने से तकलीफ होती थी। मैं बहुत अशक्त हो गई, और दूकान में अथवा दूकान से बाहर फिर नहीं सकती थी मेरे

ग्राहक "मदर सीजलका क्युरेटिव सिरप" की प्रशंसा करते थे, वह औषधि सन १८८१ के डिसेम्बर महीने में खाने का आरंभ किया। थोड़े भाग मात्र खाने से आराम मालूम पड़ा, और औषधि खाते पंद्रह दिन हुए उतने में मुझको ऐसा आराम हुआ कि जैसा बरसों में नहीं हुआ था। इस तरह उत्तेजन मिलनेसे मैं पूर्ण आरोग्यता पाई तब तक औषधि खाती थी। मेरा पुत्र आरथर को भोजन के पीछे पेटमें भार और इजा होती थी। "मदर सीजल का क्युरेटिव सिरप" खाने की उसकी इच्छा भई, उसका परिणाम मेरे जैसाज हुआ। दूसरी सब औषधि निष्फल होने पीछे "मदर सीजल के क्युरेटिव सिरप" से आराम हुआ है ऐसे बहुत लोगोंको यह प्रांत में पहचानती हूं। मेरे जैसे पीड़ित लोगोंको फ़ायदा होगा ऐसा जो आपकी समझ में आवे तो मेरा पत्र छपाने की परवानगी देती हूं।

(सही) (मिसिस) जेम वार्ड, ११४ इक्स्टन रोड, राडफर्ड, नोटिंगहाम, तारीख १ एप्रिल सन १८८१।

संताप कारक और भयंकर रोग से मुक्त हुई उसके वास्ते मिसिस वार्डको मुबारकबादी देते हैं सुलभ और खातिर पूर्वक आराम किस तरह से होता है, उसकी खबर वह स्त्री को जलदी मिली नहीं यह कैसी दिलगिरीकी बात है। आयुष्य के सोलह बरस मन और तन के दुःख में गुजारना पड़े यह बहुत भारी बला है। थोड़े लोग धनवान होते हैं, परंतु आरोग्यता का सुख सब को समान होता है। आरोग्यता होवे तब उसको संभालने की और रोग मिटाने की रीत सबको मालूम होवे तो सब आरोग्य रहे।

इस स्त्री को पाचन शक्ति का रोग अजीर्ण और अग्नि मान्द्य था। यह रोग लोही मार्गसे अपने जेर की प्रत्येक जगह पर पसर के सब शरीर में फैल जाता है। सर्व दरद यह फलद्रुप रोग के परिणाम और चिन्ह है जिसको भिन्न भिन्न नाम से बोलते हैं। जिस औषधि से इस स्त्री को आराम हुआ उसकी कीर्ति जानने वाले को स्त्री के आराम की खबर से आश्चर्य नहीं होगा। इससे भी खराब रोग यह औषधि से मिट जाते हैं।

बाहर निकलने के सुलभ मार्ग की अज्ञानता से हमारा धर्मप्राणत्यागी मित्र बासदायक बंदिखाने में रहा। जो पढ़नेवाला कोई रोगका बंदिवान होवे तो आज पीछे कैद में रहने का कारण नहीं है। छोटे और प्रमाणिक पत्र में हमारे पत्र लिखनेवाले ने खुला हार दिखा दिया है।

CLEMENT'S TONIC

ग़रीबों के ख़िदमत में,

क्लेमेन्ट साहब की दवा मक़ब्बी।

एक जल्द असर करने वाला क़ाबिल एतबार इलाज है वास्ते नीचे लिखे हुए मरज़ों के—

पट्ठों की कमज़ोरी नुक़सान जिस्मानी फ़ुर्ती की कमी और हर तरह की कमज़ोरी सलबी ताक़त की कमी जिरियान और मनी और ग़दूद वग़ैरह वग़ैरह क्लेमेन्ट साहब की मक़्बी इमेज़ा के लिये क़ाबिल तौर पर जिस्मी फ़ुर्ती को बहाल और बरक़रार रखती है और पट्ठों की ताक़त को ज़ियादे करती है और जवानी की पुरदिली और शबाब की पुर जोशगी को ताज़ा कर दिखाती है जिस्मानी और अलाय रइसां की हरकाती ताक़त को उन मर्द और औरतों के ताज़े कर देती है कि जो कमज़ोर ज़ईफ़ सुस्त और ख़स्ता और मांदा हो गये हैं क्लेमेन्ट साहब की मक़्बी एक बख़शाइस इल्म ही है हर तरह से इन्सान के हक़ में इस की अजीब सेहत बख़्श ताक़त ज़ाहिर होती है इसके इस्तेमाल के बाद ही और सबत में ताकीदी शहादत उन लोगों की जो इस की इस्तेमाल में ला चुके हैं वैसी निहायत और बेशुमार हैं वह लोग बयान करते हैं कि वह हर एक मोताद की तासीर की नफ़े और फ़ायदे पहुंचाने वाली बातें हैं फ़िल हक़ीक़त यह एक ऐसी पुर तासीर मीक़्बी है कि जिस से पट्ठों को ताक़त पहुंचती है और जो हर एक रग पो पे में जिस्म के पट्ठों के ज़रिये से ताक़त बख़्श और ताज़ा करने वाला असर को पहुंचाती है हर हालत में ख़ाह जिस्मानी ताक़त बसबब मर्ज़ शदीद के कम की गई हो या सुस्ती और तकलीफ़ और मेहनत सख़्त के या किसी क़िस्म के ज़रर पहुंचाने वाली नाशकस्त ख़ाहिशों के सबब से हो ख़ाह वो बढ़ी हुई हालत किसी

तरह की हो जब कि पट्ठों की कमज़ोरी पाई जावे या किसी किस्म की ख़ास कमज़ोरी या हर तरह की कमज़ोरी हो जब कि सुस्ती या ज़ोफ़ या कम ताक़ती उस मज़्कूर का बाइस हो इन हालतों में क्लीमेन्ट साहब की सुकव्वी ही सिर्फ़ इलाज है। जो लोग कि बदनी या क़लबी शदीद मिहनत के नतीजों के सबब तकलीफ़ पाते हैं या कि सख़्तियों से और सर्दी या गर्मी बरदाश्त करने के सबब से या कि किसी नामालूम सदमे के सबब या किसी क़िस्म के सबब या जो लोग दानिस्ता वो नादानिस्ता इन्तज़ाम-इ-क़ुदरत को न मान कर अपने को तकलीफ़ में डाले हुए हों वह लोग क्लेमेन्ट साहब की सुकव्वी को एक ऐसा इलाज पावेंगे जिस से कि यक़ीनी उन को तकलीफ़ से नजात मिलेगी। यह सुकव्वी बहुत ही जल्द हर क़िस्म के ज़हूर तरक़्क़ी जिस्मी नाताक़ती को दूर कर देती है और पुट्ठों के घटती को उस की असली ताक़त और तुरुस्ती तक पहुंचा देती है। जब जब कमज़ोरी आज़ार रईस को ज़ाहिर हो या कि पट्ठों की कमज़ोरी और घट जाना जिस्मी या क़लबी हरकत का नमूद हो या कि घबराहट खयाली का या सुस्ती एतमाद का, या चिड़ चिड़ाहट मिज़ाज का, मालिख़ोलिया, बुज़दिली, घुटनों की या पीठ की कमज़ोरी, दिल की धड़क, सिर का दर्द कमर का दर्द, कड़ा रखता हो, पीठ का दर्द, दांत का दर्द, जो माहूद बख़्त पर हुआ करे आज़ा झिझमी, जोड़ का दर्द, बेख़ाबी दर्द सरी, सुबह के वक़्त सुस्ती खयालात और जोड़ों का दर्द मोज़िश समाना, वो गुर्दों की जोज़िश, गदला पेशाब जो पीच की तरह हुआ करता है, ज़रर पहुंचाने वाला और नामालूम नुक़्सान जिस्म का या कि दूसरे अलामात जिस के नतीजे से दिली या जिस्मी ताक़त को नुक़्सान ज़ाहिर हो मर्द और औरतों की कामयाबी के मुक़ाबिल में एक रोक पैदा करे और उन की ज़िन्दगानी की बाशिन्दात के और ज़रूरी कामों के अंजाम देने में क़ासिर बनावे तब तब ऐसी हालतों में क्लेमेन्ट साहब की सुकव्वी सिर्फ़ एक ही पुर तासीर इलाज है और आज तक होती आई है। नौजवान लोग जो ज़िन्दगानी के जौबानगाह में दाख़िल हुआ चाहते हैं और अपनी क़ाबलितों पर क़ब्ज़ा या इख़्तियार अच्छी तरह रखते हैं और कामयाबी के हद तक

और क़ाबिल सहमीन और फ़रक़ दिखाने वाले नुस्ख़ों के नतीजों को हासिल करने चाहते हैं क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी उन के वास्ते पहली सीढ़ी उन के मुराद तक पहुंचने की है।

अधेड़ लोग जिनकी खिसकती हुई फ़ुर्तियां बतलाती हैं बुढ़ापे के आगे जवानी की तनज़ुली का आना और भी मालूम करते हैं कि रफ़्त रफ़्त वे एक बेर फिर दुश्मन के हवाले में जाने को हैं और जिनकी ज़िन्दगी के ख़ज़ाने में बड़ी बड़ी हुंडियां दाख़िल की जाती हैं ताकि बचपन के क़र्ज़ अब अदा किये जावें या कि जिनके शबाबे फ़ुर्ती के मर्ज़ के बाइस कम हो गये हैं या सुस्ती और जांफ़िशानी और ज़िन्दगानी की मिहनत से मअन घट गये हों या कि किसी और और तरह से अपनी ताक़त को ज़ाया किये हों उनके वास्ते क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी एक दोस्त है जो मुसीबत के वक़्त पर दस्तगीरी करेगा और एक पुरज़ोर मदद है और एक दुरुस्त करने वाला बुरी आदतों का है जो कभी नहीं चूकेगा और वे इससे एक नई ज़िन्दगी हासिल करेंगे और बदनी ताक़त भी हासिल करेंगे और सब तरह की आदत की फ़ुर्ती ताज़ा कामिल तौर पर हो जावेगी।

बूढ़े लोग इस मुक़व्वी के इस्तेमाल से इनहिज़ाज़ की पेशक़दमी को रोकते हैं और ताक़त की तनज़ुली से बच रहते हैं और अपने शबाब को दोबारा हासिल करते हैं ताक़त बदनी पाते रहते हैं और दोबारा अपनी क़ाबलतियों पर क़ाबिज़ हो क़ादिर हो जाते हैं और अपनी फ़ुर्ती हो क़ाबिलियत की हमेश बहाल हो बरक़रार रखते हैं।

नौजवान औरतें क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी को एक निहायत ही पुरतासीर इलाज पावेंगी जो सहलुल वसूल है। इससे हर क़िस्म की कमज़ोरी जो ख़ास कर औरतों को हुआ करती है इलाज पज़ीर होती है और दफ़ा हो जाती है इसके मुक़ाबिल में और इलाज औरतों की कमज़ोरी दूर करने का नहीं है। और जड़फ़ुल क़बा नाज़ुक और नहीफ़ बदन छोटी लड़कियों के हक़ में यह बतौर आबे हयात के काम करती है और यकसां पुरज़ोर जनाना तबियत पैदा करती है यह पुरतासीर इलाज इन बरकतों को पैदा करती है जिसके ज़रिये से ज़रर पहुंचानेवाले बेमौक़ा [illegible] और नाज़ीबा ख़ातिरात नफ़सानी

को दबाया जा सकता है और फ़ुर्ती की हालत के नुक़्सान को जब्त कर देता है और आज़ाय रईस के हरकात की बद इन्तज़ामी को दुरुस्त किया जाता है और एतदाल पर लाया जा सकता है ख़लल पहुंचे हुए दीमाग़ को और मालिख़ौलिया और ख़यालात फ़ासिद के वहशत को दूर किया जाता है और ख़ुशनुमा मज़हर ख़ुदा को हमारी ख़िलक़त के हलाकत और तबाही से बचा लेता है इसके इस्तयमाल से बराबरी दरमियान नुक़्सान औरजब्त नुक़्सान के बरक़रार रक्खा गया है, नुक़्सान बेजा रोका गया है ज़रर पहुंचा हुआ को दुरुस्त किया गया है कमज़ोर किया हुआ और बिगड़ा हुआ रगों को ताक़त असली और दुरुस्तगी दी गई है बेवक़ूफ़ी औ नादानी औ ग़लती के नतीजे दुरुस्त किये गये हैं और ग़ायत दर्जे के ख़लील और इब्तला देने वाले मरीज़ अपनी तकलीफ़ों से मुख़लिसी पाये हैं और आदत पकड़े हैं मरदाना सिफ़्तों से, और हिम्मत से और फ़ुर्ती और बदनी ताक़त से। क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी में जितने लोग चंगे हुए हैं उनका एक दफ़्तर मौजूद है और जो जो बेहतरियां इस दवा ने ज़ाहिर की है वैसी ख़ूबियां हज़रत आदम के ज़माने से किसी और दवा ने आज तक ज़ाहिर नहीं की। मांग भेजने से हम लोग तफ़सील कामिल और सनदें वग़ैर किसी ख़र्च के हर कहीं भेज सकते हैं मरीज़ों को चाहिये कि बहुत ख़बरदारी से इस दवा को ख़रीदें क्यों कि हर जगह पर नक़ली दवा बिक रही है और उनको बड़ी ख़बरदारी करनी चाहिये जिसमें उन्हें सिर्फ क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी मिले। और यह भी ख़्याल रहे कि अक्सर नक़ली या जाली दवा भी असलकदल के निस्बत ज़ियादा ज़रर पहुंचाती है।

क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी तलब करो हर एक दवा फ़रोश इसको बेचता है।

F. M. Clements

यह दस्तख़त—हर एक दवा के बोतल पर है।

न्यूटाउन, सिडनी
आस्ट्रेलिया } मरीज़ों के ख़िदमत में।

नये वर्ष से।

बिहार-बन्धु सम्बन्धी कायदे।

१। बांकीपुर में बिहार-बन्धु की पेशगी सालाना कीमत ॥।=) एक रुपया चार आना, मुफस्सिल में भी एक रुपया दस आना,—पर डाक महसूल का ।=) छ आना अलग लगता है। इस से मुफस्सिल में कुल २) दो रुपया हुआ। राजा महाराजाओं से कुछ नियम नहीं इस की सहायतार्थ जो देंगे स्वीकार होगा।

२। बिहार-बन्धु के प्रति खंड का नक्द दाम अभी नव पैसा रक्खा गया है।

३। बिहार-बन्धु मासिक पत्र होगा, महीने महीने एक एक खंड प्रकाशित होगा। यानी साल भर के बारह महीनों में बारह खंड बिहार-बन्धु गाहकों को मिलेगा।

४। बिहार-बन्धु का आकार बड़ा यानी पचास पन्ने के ऊपर होगा, सुबीते के साथ तस्वीर भी छपा करेंगी।

५। दाम इस का जहां तक बना सस्ता किया गया है वह पाठक लोग देख ही कर समझ जावेंगे।

सुबीता।

१। दाम इस का सस्ता होने पर भी जुलाई महीने की ३१ तारीख तक जो गाहक होंगे उन से चार आना कीमत कम की जायेगी। यानी बांकीपुर के गाहकों को ॥।=) ही में बिहार-बन्धु मिलेगा और मुफस्सिल के गाहकों को ॥।) यानी एक रुपया बारह आने में मिलेगा।

७। एकतीसवीं जुलाई के बाद फिर कम कीमत पर बिहार-बन्धु नहीं मिलेगा। यह चूकने का अवसर नहीं है पीछे अफसोस होगा लोगों को चाहिये कि इसको देखतेही बांकीपुर के रहने वाले एक रुपया छ आना और मुफस्सिल के एक रुपया बारह आना भेज कर गाहक हो जावें।

इतना दाम कुछ बहुत नहीं है हिसाब जोड़ने से धेला भर रोज नहीं पड़ता इस के बदले में अच्छ अच्छी बातों से पूर्ण बिहार-बन्धु आप लोगों के पास पहुंचेगा।

पेशगी कीमत।

८। बिना पेशगी दाम पाये किसी को नहीं भेजा जाता। गाहकों को मनीआर्डर द्वारा रुपया भेजना चाहिये। इस में नाम ठिकाना, डाकघर, जिला साफ साफ लिखना चाहिये।

९। जिन को मनीआर्डर भेजने में अधिक सुबीता न हो तो उनसे डाकघर के मार्फत दस रुपये वसूल कर लेंगे। पर इस में दो आना गाहकों को अधिक देना होगा। मतलब यह है कि यदि गाहक लोग मनीआर्डर के ज़रिये रुपये भेज दें तो हम को सुबीता है। डाकघर के मार्फत वसूल करने में हम लोगों को बहुत झंझट उठाना पड़ता है और न चूक होने का भी भय है। भू

बिहार-बन्धु का नियम।

चार बिहार-बन्धु में एक बेशी।

१०। यदि कोई इकट्ठा एक नाम से चार बिहार-बन्धु लें तो उन को एक बिहार-बन्धु बतौर नज़र के मिलेगा अर्थात् जो कोई चार बिहार-बन्धु का एक बरस का सुफ़स्सिल का दाम सात रुपया और बांकीपुर का मूल्य साढ़े पांच एक ही वक़्त दे दें तो उन को पांच बिहार-बन्धु मिलेगा।

नमूना।

११। सुफ़स्सिल के लोगों को यदि नमूना के तौर पर बिहार-बन्धु देखना हो तो दस पैसा भेज दें। बिना कीमत पाथ किसी के पास नहीं भेजा जाता।

लड़कों के लिये।

१२। स्कूल में पढ़ने वाले लड़के अगर छापाख़ाना में आकर ले जायें तो उन को फ़ुल नम्बर का नक़द सात पैसा पर पेशगी दे जायें तो एक रुपया चार आना साल भर का देना होगा।

१३। लड़के जब यहां बि० ब० लेने के लिये आयेंगे तो उन को एक टिकट सुफ़त में मिलेगा जिस पर उन का नाम आदि लिखा रहेगा जब बिहार-बन्धु खरीदने को आयेंगे तो उन को दिखलाना होगा। इस के बाद यदि वह आप न भी आया चाहें तो अपने नौकर को टिकट के साथ भेज दें उन को सात ही पैसे में बि० ब० मिलेगा।

१४। दूसरे शहर के लड़के यदि अपने पंडित वा मास्टर से चीठी लिखवा कर पेशगी रुपया भेजेंगे तो उन को भी शिकायत में मिलेगा ही पर डाक आना महसूल का अलग लगेगा यानी एक रुपया दस आना देने से मिलेगा।

विज्ञापन का नियम।

१५। मासिक पत्र के साथ का विज्ञापन बहुत दिनों तक रहता है। इस में विज्ञापन छपवाने वालों को विशेष लाभ की संभावना है।

पहलीबार	प्रति पंक्ति	।/)
दो महीने तक का	,,	।/)
तीन महीने तक का	,,	।)
चार महीने तक का	,,	।/)
पांच महीने तक का	,,	।/)
छ महीने तक	,,	।/)

एक बरस वा इस से बड़ी दिनों तक एक पेज इश्तिहार का ७) महीना

इश्तिहार यदि आधा पेज से कम होगा और बरस दिन या ज्यादे दिनों तक छपेगा तो ।) प्रति पंक्ति लिया जायगा।

हर डाक में इश्तिहार की कीमत पेशगी भेजना चाहिये पर बरस दिन या बड़ी दिनों तक इश्तिहार छपवाने वालों से ६ महीने तक का पेशगी दाम मिलने में भी काम किया जायेगा।

१६। विज्ञापन में ब्लोक या तस्वीर भी पड़ सकती है।

मैनेजर
बिहार-बन्धु छापाख़ाना
बांकीपुर।

REGISTERED NO 22

361

THE BEHAR-BANDHU

बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

JULY 1893 VOL. XXII-NO 7

मासिक पत्र।

जुलाई १८९३ बाईसवां भाग—नम्बर ७

१ देशीय खेती

२ समुद्र में गिरीन्द्र (लगातार)

३ प्राप्ति स्वीकार

४ श्रीमान लीटे नाट का बांकीपुर में आगमन और दरबार

५ दीवान जयप्रकाश लाल बहादुर सी० आई० ई०।



बांकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाखाना,

१८९३।

बुक प्रिंटर हेंड का मकदूर दोष तब देना।

बिहार-बन्धु का नियम।

नये वर्ष से।

बिहार-बन्धु सम्बन्धी कायदे।

१। बांकीपुर में बिहार-बन्धु की पेशगी सालाना कीमत १॥) एक रुपया दस आना, सुफ़स्सिल में भी एक रुपया दस आना—पर डाक महसूल का ।≠) छ आना अलग लगता है। इस से सुफ़स्सिल में कुल २) दो रुपया हुआ। राजा महाराजाओं से कुछ नियम नहीं इस की सहायताओं को देंगे स्वीकार होगा।

२। बिहार-बन्धु के प्रति खंड की नक़द दाम अभी नव पैसा रक्खा गया है।

३। बिहार-बन्धु मासिक पत्र होगा, महीने महीने एक एक खंड प्रकाशित होगा। यानी साल भर के बारह महीनों में बारह खंड बिहार-बन्धु ग्राहकों को मिलेगा।

४। बिहार-बन्धु का आकार बड़ा यानी पचास पन्ने के ऊपर होगा, सुबीते के साथ तस्वीर भी कृपा करेंगी।

५। दाम इस का जहां तक बना सस्ता किया गया है वह पाठक लोग देख ही कर समझ जायेंगे।

सुबीता।

६। दाम इस का सस्ता होने पर भी जुलाई महीने की ३१ तारीख तक जो ग्राहक होंगे उन से साढ़े आना कीमत कम की जायगी। यानी बांकीपुर के ग्राहकों को १॥) ही में बिहार-बन्धु मिलेगा और सुफ़स्सिल के ग्राहकों को १॥) यानी एक रुपया बारहो आने में मिलेगा।

७। एकतीसवीं जुलाई के बाद फिर कम कीमत पर बिहार-बन्धु नहीं मिलेगा। यह चूकने का अवसर नहीं है पीछे अफ़सोस होगा लोगों को चाहिये कि इसको देखतेही बांकीपुर के रहने वाले एक रुपया छ आना और सुफ़स्सिल के एक रुपया बारह आना भेज कर ग्राहक हो जायें।

इतना दाम कुछ बहुत नहीं है हिसाब जोड़ने से धेला भी खर्च नहीं पड़ता इस के बदले में अच्छी अच्छी बातों से पूर्ण बिहार-बन्धु आप लोगों के पास पहुंचेगा।

पेशगी कीमत।

८। बिना पेशगी दाम पाये किसी को नहीं भेजा जाता। ग्राहकों को मनी ओर्डर द्वारा रुपया भेजना चाहिये। इस में नाम ठिकाना, डाकघर, ज़िला साफ़ साफ़ लिखना चाहिये।

९। जिन को मनीओर्डर भेजने में अधिक सुबीता न हो तो इनसे डाकघर के मार्फ़त इस रुपये वसूल कर लेंगे। पर इन में दो आना ग्राहकों को अधिक देना होगा। मतलब यह है कि यदि ग्राहक लोग मनीओर्डर के ज़रिये रुपये भेज दें तो इस को सुबीता है। डाकघर के मार्फ़त वसूल करने में इस लोगों को बहुत झंझट उठाना पड़ता है और भूल चूक होने का भी भय है।

देशीय खेती।

हिन्दू जाति सदा की भोली प्रसिद्ध है। हिन्दू के हर कामों में यही देखने में आयेगा कि सब कारखाने ऐसे सीधे सादे होते हैं कि काम पूरा पूरा हो साथ ही उसके फ़ज़ूल खर्ची ज़रा भी न हो। यह बात क्या हल में, क्या करघड़ में, क्या चक्की में, क्या और और कलें जो हाथ की बनी होती हैं तमाम देखने में आयेगी। एक ब्राह्मण जो सदा सिर मुंड़ाये रहता है, आधा शरीर खुला ही रहता है जिसके पैर खाली रहते हैं, जो बिना शानशोकत के झोपड़ी में रहा करता है अवसर आ पड़ने पर अपनी पूर्ण विद्या, तीक्ष्ण बुद्धि और दृढ़ आचार का ऐसा विकाश दिखला देगा कि देखने वाले दंग ही हो जायेंगे। उस स्कूल में जहां इन ब्राह्मणों की शिक्षा होती है और आज कल जहां अंग्रेजी पढ़ाई होती है दोनों में बड़ा अन्तर है। पीटी हुई छत के बदले फूस का छप्पर उसमें रहता है; बड़े बड़े पाये के बदले बांस के खंभे लगे रहते हैं, पक्की दीवार की तो कोई बात ही नहीं है फूस की टट्टी और उस पर मिट्टी का लेप। पर ऐसे स्थान में रहने पर भी उनकी विद्या और शिक्षा ऐसी पूर्ण है कि जिसको सोचने से सारे आश्चर्य के कोई बात नहीं निकलती। भला ऐसे स्थान में चमड़े की जिल्द और उस पर सोनहली काम का ज़िक्र कौन करे वहां तो ताड़ के पत्तों पर लिखे हुए, कीड़ों के खाये हुए, चिथड़ों में लपेटे हुए शकुन्तला सा नाटक, महाभारत सा पुराण, वेद और उपनिषद से ग्रन्थ, सांख्य और वेदान्त सरीखे साहित्य के सामान देख पड़ेंगे कि जिनका जोड़ ढूंढो तो मिलना ही असम्भव है।

यदि कपड़ा बीनने की साधारण कल को देखो उसकी सुन्दरता मज़बूती, बनावट की बिचारी जिसके ज़रीये में बढ़िया माल निकलता है, और साथ ही उसके जब पहली बार का खर्च भी मिलाते हैं तो इनके सामने विलायत की बड़ी बड़ी कलों का पैर नहीं जमता। किफ़ायत में इसका मुक़ाबला कहां तक बढ़ कर सकेंगे। यदि ऐसी ऐसी कामकी चीज़ों में जो बाहर देखने में मामूली ही देख पड़ती है पर पूर्णता में किसी तरह कम नहीं हैं तो खेती के तरीक़े में भी कम सीधापन और पूर्णता नहीं है। ज़रा भी जिसने इस ओर दिल दौड़ाया होगा उसके दिल पर अवश्य ही यह झलक गया होगा कि हमारे खेती के सामान भी कैसे सीधे

सादे, किफ़ायत खर्च और बुद्धि के नमूने हैं। दृष्टान्त के लिये चांड़ मोट, लाठा आदि खेत पटाने के सामान ही को देखो कि इनकी बराबरी आज तक, युरप में इतनी नई कलें बनीं पर, किसी ने न की; काम इनसे कैसा निकलता है और इनके बनाने में कौन सा बड़ा खर्च है।

खेती एक ऐसी चीज़ है जिसमें विचार करने की अपेक्षा परीक्षा ही का फल अधिक काम में आता है। हिन्दुस्तान की खेती ऐसी सहज बात नहीं है, इसमें कोई सन्देह नहीं कि बुद्धिमान पुरुषों ने बहुत दिनों तक इसमें बहुदर्शिता प्राप्त करके इसकी बड़ी उन्नति की है खेती की बढ़न्ती होना और सफल होना बहुत कुछ देश की अवस्था अर्थात, मिट्टी, पानी गर्मी, धूप और तरी पर निर्भर है। इन सब विषयों में युरप या और किसी देश की अपेक्षा हिन्दुस्तान को बहुत कुछ सुबीता है। पृथ्वी पर बहुत कम देश हैं जो यहां की फ़सल की बराबरी कर सकते हैं। कारण इस का यही है कि भारत वर्ष को परमेश्वर ने जैसी उपजाऊ भूमि दी है वैसी कृपा किसी देश पर नहीं की। बड़ी बड़ी नदियों का देश भर में जहां तहां बहना सभी स्थानों में जल के ढलकने का सुबीता, समयानुसार वृष्टि आदि ऐसी बातें हैं कि अन्न के खेतों को पटाने का ऐसा सुबीता कहीं नहीं है जैसा कि हिन्दुस्तान में है। मिट्टी हिन्दुस्तान की विशेषत: वही है जो नदियों के साथ बह कर जमती है जिसमें उर्वरा शक्ति खूब है। हिन्दुस्तान की आब हवा और इसका स्थान भूगोल में ऐसा है कि हर तरह की चीज़ें यहां खूब पैदा हो सकती हैं। किसी दूसरे देश से इसकी भूमि मिलाई जाये तो ऐसी समतल कहीं न मिलेगी। और और देशों में कहीं तो ज़मीन बिलकुल पहाड़ी ही होती है, कहीं बिलकुल ढाल ही रहती है—वे बखेड़े यहां के खेतों में नहीं हैं। इससे बराबर जल पटता है और भूमि में तरी रहती है जिसका होना हर तरह की फ़सल के पैदा होने के लिये बहुत ज़रूरी है। नदियां अक्सर इस देश की उथली होती हैं और किनारे भी उनके बहुत ऊंचे नहीं होते इससे बर्सात में कुल जल नदी ही में हो कर नहीं बह जाता। इससे अक्सर किनारे से ऊपर आ जाती है जिस का नफ़ा यह होता है कि दूर दूर तक नदी किनारे के खेत जल के नीचे पड़ जाते हैं और जब जल घट जाता है

तो उन खेतों की मिट्टी नई पड़ जाती है। अक्सर ऐसा भी होता है कि नदियों में मिट्टी नई पड़ जाती है इससे पहले जहां धारा बहती थी उससे दूसरी जगह हट कर बहने लगती है। जिस का फल यह होता है कि नदी, नई जगहों में नई मिट्टी देती जाती है। यह मिट्टी दूर दूर के पहाड़ जंगल के धोवन की रहती है जिसमें फसल के बढ़न्ती का बहुत मसाला रहता है। कूए तालाब के बंधे पानी से भी खेती में बड़ा फायदा पहुंचता है। यह बात बार बार नहरों से जो खेत पटाये जाते हैं उनके देखने के तजरिबे से प्रगट है। फूल पत्तियां और जानवरों की हड्डियां जब सड़ती हैं तो जिस भूमि की उपजाऊ शक्ति कम हो गई हो उसके लिये बहुत बढ़िया खाद हिन्दुस्तान में हो जाती है। फिर हिन्दुस्तान में कड़ी धूप के पड़ने से ज़मीन में दरार पड़ जाती हैं जिससे ठंढे ऋतु की सर्दी निकल जाती है और बर्सात में जब पानी पड़ता है तो तरी भी वैसी ही होती है। जो बलुआही ज़मीन होती है वहां की बालू तेज़ हवा के झोंक में उड़ उड़ कर उन दरारों के भीतर चली जाती है और साफ़ हो जाती है। हिन्दुस्तान के खेत बर्फ़ के नीचे कभी नहीं ढके रहते हैं जिससे और देशों की तरह यहां हवा लगना और तरी का कम होना रुके। लेकिन इतनी सर्दी गर्मी भी पड़ती है जिससे गर्मी में कुछ तरी भी बनी रहती है और गर्मी के खतम होते होते इतनी ज़मीन सूख भी जाती है कि बरसात का जल उसमें सूखे।

किसान भी जिनके हाथमें खेतीका भार है आईनके माननेवाले शान्त, सीधे और बहुत मद्यपी नहीं है यह भी खेतीकी बढ़न्तीका एक कारण है।

हमारे किसानों को विलायत की तरह खेत के चारो ओर हाता या पक्की दीवार नहीं खींचना पड़ता और न उनको चौकीदार ही रखना पड़ता है क्यों कि इस देशमें न तो जानवर ही छेला दिये जाते हैं और न ऐसे लुटेरे ही इस देश में होते हैं जिनका यह रोज़गार हो कि बीया चारो कर लें या खेत ही काट लें। पुराने समय में हिन्दुस्तान की रईयत न आपस में लड़ती थी न मुकद्दमा ही लड़ा करती थी क्योंकि उनमें इस विषय के बहुत उत्तम नियम थे जिनका पालन वे बहुत अच्छी तरह से करते थे। पहले और आज कल भी जिनकी औकात है अपने पड़ोसी

को मिहनत से, बीये से, हल वग़ैरह से मदद देते थे और देते हैं। किसी को दूसरे से फौड़ा, कुदार, मौट वग़ैरह मागने में शर्म नहीं मालूम होती बल्कि जिससे मांगा जाता वह इन सब चीज़ों को देना अपना कर्त्तव्य समझता है। ये बातें ऐसी हैं जो सिर्फ़ हिन्दुस्तान ही में पाई जाती हैं। इसमें घृणा की कोई बात नहीं है क्यों कि इससे बड़ा काम चलता है।

हमको पूरा विश्वास है कि यदि हमारे इन रईयतों की सहायता कुछ पूंजी से हो जाये जिनसे वह आवश्यकता दूर हो जायें जिनके बिना प्रायः फ़सल ख़राब हुआ करती है तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनकी अवस्था पृथ्वी भर में सब से अच्छी हो जाये और लोग यही चाहने लगे कि हम भी वैसी ही दशा में रहते। क्योंकि उनमें ऐसे गुण, प्रसन्नता, शान्ति, सीधापन, परिश्रम और सुघड़ाई सभी इकट्ठा हो जाये।

ऊपर जितनी बातें कही गई हैं वह हिन्दुस्तान ही में होती हैं। इस लिये यहां की खेती का तरीक़ा अलग ही रहना चाहिये। जो लोग यहां का सीधा और किफ़ायत ढंग छुड़ा कर चाहते हैं कि युरप के ढंग पर खेती यहां शुरू हो जिसमे बेहिसाब ख़र्च पड़ता है उनके विषय में हम यही कहेंगे कि उनकी विचार शक्ति और भविष्यत सोचने की शक्ति पूरी नहीं है। यद्यपि युरप के तरीक़े में सब कुछ अच्छा है पर एक बात बड़ी ख़राब यह है कि पहले पहल काम शुरू करने में बहुत ख़र्च की ज़रूरत है जो हिन्दुस्तान के लिये बड़ी बेगंव बात है। इसमें सन्देह नहीं कि युरप और अमरिका की तरह खेती के लिये हमारे यहां सायन्स में बड़ी उन्नति नहीं है, हमारे यहां के खेतों में एंजिन नहीं देख पड़ते। यह भी सच है कि हमारे यहां खेतों के बीच बीच में बड़ी बड़ी सड़कें नहीं हैं कि जिन पर बड़ी बड़ी गाड़ियां खाद से भरी हुई हमेशा चलती ही रहें, न हमारे यहां मंहगे मंहगे दमकलें ही खेतों को पटाने के लिये रहते हैं, न काड़ने, सोहने, काटने और पीटने के लिये कलें ही रहती हैं। पर यह भी सच है कि हमारे यहां इनकी ज़रूरत भी नहीं है और न उनके बिना हमारे किसानों को कुछ हर्ज ही मालूम होता है क्योंकि उनका जो तरीक़ा है उससे अगर बेशी नहीं तो युरप और अमरिका के तरीक़े के बराबर काम होने में तो कोई शक ही नहीं है।

इन सब सुबीतों के रहते हुए ऐसी कोई जरूरत नहीं देखी जाती कि वे अपना ध्यान स्वाभाविक सुबीते के विरुद्ध लगावें और अपनी खेती की बढ़न्ती के लिये साइन्स आदि का सहारा लें। यह निरा भ्रम है कि हमारे जात और सामाजिक कारणों से ज़मीन की तरक्की में बाधा होती है। बल्कि इजमाल खान्दान होने से इजमाली खेती में बड़ी मदद मिलती है। क्योंकि ऐसे खान्दान के आदमी जितना काम में जी लगा-येंगे उतना मज़दूरों से उमीद नहीं की जा सकती, खेती की तरक्की में जात के खयाल से भी कोई हर्ज नहीं होता। मुसलमान या और किसी नीची जात के मज़दूरों को खेत में लगाने से हिन्दू नहीं हिचकते और न ऐसे किसानों ही से मदद लेने में उनको कोई हुज़ुर होता है। चाहे हिन्दू न खाते हों पर लहसुन प्याज़ शलजम आदि चीज़ों की खेती करने में उनको कोई हुज़ुर नहीं होता। छोटे जोत से भी खेती की उन्नति में कोई बाधा नहीं होती बल्कि सहज में स्वाधीनता के साथ सैकड़ों मध्यम श्रेणी के कुटुम्बों को जीविका का उपाय हो जाता है। यदि छोटे जोत न रहा करते तो बहुत से कुटुम्ब बरबाद हो जाते और या उनको और किसी बुरी तरह जीविका निर्वाह करना पड़ता। घोड़ों से नहीं जोती जा कर बैलों से ज़मीन जोती जाती है यह भी हमारे खेती की घटन्ती का कारण नहीं है। जिसको साधारण बुद्धि है वह भी समझ सकता है कि बैलों के लिये साज़ की कोई ज़रूरत नहीं पर घोड़ों के लिये ज़रूरी बात है और उसमें ज़ियादा खर्च भी है। कीचड़ पानी में, खोदी हुई ज़मीन में खुर के फटे रहने से बैल घोड़ों की अपेक्षा अधिक उपयोगी हैं क्योंकि ऐसी ज़मीन में घोड़ों को बड़ी क़वाइत होती है। यह ठीक है कि घोड़े तेज़ चलते हैं लेकिन खेतिहर यह बात नहीं चाहता। उसका बदन युरपियनों की तरह मज़बूत नहीं रहने के कारण या तो वह तेज़ चल ही नहीं सकता या चाहता ही नहीं। किसानों को यह अच्छी तरह मालूम है कि जब उनके पास तेज़ चलने वाली बैलों की जोड़ी रहती है तो बैलों की तेज़ी कम करने के लिये हल के फाल को वे चौड़ा बनवा देते हैं। इन सब के अलावे बैलों के मुकाबले घोड़ों के खिलाने और रखने में बहुत खर्च है।

अन्यदेशीय एक यह बात कहते हैं कि हमारे किसान खाद डालने का हुनर नहीं जानते। तरकारी आदि के छोटे बाग़ में डालना या प्रदर्शिनी के लिये कोई अच्छी चीज़ पैदा करना हो तो कोई बात हो नहीं पर मामूली अन्न के लिये खाद डालना हो तो बेचारे किसानों का दिवाला निकल जायेगा। ऐसी ज़मीन भी इस देश में है जहां बिना एक मुट्ठी भी खाद डाले खूब फ़सल पैदा होता है। खल्ली, पुराने तालाब के नीचे की सड़ी हुई मिट्टी, टीवारों की झड़ी हुई नोनी मिट्टी, सड़ा हुआ गोबर और कूड़ा कतवार वगैरह मंवार किसान खाद के काम में लाते हैं और इन सब में किफ़ायत पड़ता है। खूब विचार कर और ढूंढ कर सोचने से मालूम होगा कि जब बहुत खेती की जाये और देसी तरीक़ा देसी सामान काम में लाये जायें तो खर्च और आमद को मिलाने से मालूम होगा कि मंहगे मंहगे कलों के रखने की कोई ज़रूरत नहीं है। यही बात खाद के बारे में भी कहने में आयेगी क्योंकि खाद डालने की न ज़रूरत है और न उससे कोई नफ़ा है।

ऐसे देश में जहां ज़मीन इतनी कम है कि रोज़ रोज़ बढ़ते हुए लोगों का गुज़र न हो सके, जहां पैदावार की क़ीमत लागत से बहुत ज़ियादा मिलती है वहां साइन्स के अनुसार सींचना, खाद डालना, बड़ी बड़ी कलें रखना उपयोगी हो पर हिन्दुस्तान में जहां अराज़ी ज़रूरत से बेशी पड़ी हैं, जहां थोड़ी क़ीमत पर ज़ियादा जगह मिलती है, जहां लागत से थोड़ा ही ज़ियादा दाम मिलता है वहां के लिये कल और दमकले वगैरह बे ज़रूरी ही नहीं है पर ठीक भी नहीं है क्योंकि जो बात मुद्दतों के जांच से ठीक उतर चुकी है उसमें गड़बड़ पड़ जायेगा। मान भी लें कि इन तरीक़ों से पैदावार बढ़े भी पर खर्च से मिलाने पर वह बढ़ती बढ़ती नहीं रहेगी। इसके अलावे सब को मालूम है कि पूंजी की कमी, क्या खेती और क्या दूसरा रोज़गार सब में, बड़ी भारी कठिनता है।

इतनी बातों के कह जाने पर भी हम यह नहीं कहना चाहते कि आज कल की खेती के तरीक़े में किसी उन्नति की ज़रूरत ही नहीं है। क्योंकि कोई काम कैसे भी पूरे सिलसिले से होता हो सब में तरक़्क़ी हो सकती है। यह हम मानते हैं कि बहुत से दोष दूर करने लायक़ हैं।

लेकिन मेरा मतलब यह है कि उपाय वहीं करना चाहिये जहां लगे। ऐसा करने से काम नहीं चलेगा कि सीधी और किफायती चाल छुड़ा कर उनको अधर में छोड़ दिया। यद्यपि हिन्दुस्तान की खेती में कुछ ऐब हैं तो उसके साथ ही फ़ायदे भी ऐसे हैं कि बहुत दिनों से देशी धन समान रीति से वितरित होता चला आया और यहां तक कि दरिद्र से भी दरिद्र मनुष्य जो आप मिहनत कर सकता है उसके हाथ भी पहुंचता है। विरुद्ध इसके जब विलायती ढंग की खेती का ख़याल करते हैं तो वह इस समानता को नष्ट करके सब नफ़ा उनही के हाथ पहुंचाती है जिनके हाथ पूंजी है और बाकी मामूली मज़दूरी की भिखमँगा, चोर आदि बना कर छोड़ देती है। हमारे जानते यहां की खेती में वहीं हाथ लगाना चाहिये जहां उन्नति संभव है और जिसे सब कोई कर सकें। जैसे हमारे यहां के किसान बीहन के उम्दा होने के बारे में कुछ ऐसा विशेष ध्यान नहीं देते। खेती की बढ़न्ती बहुत कुछ बीहन के उम्दा होने या न होने पर निर्भर करती है। यदि सच ही उन्नति की इच्छा हो तो इस पर तुरत ध्यान देना चाहिये। यही जगह है जहां सरकार या सामाजिक सहायता होनी चाहिये। सरकार ही की ओर से या कुछ लोग मिल कर हर ज़िले में नमूने के लिये एक ऐसा खेत बनायें जिसमें सब तरह के अन्न के बढ़िया बीज तय्यार करने में धन आदि किसी बात की किफ़ायत न की जाये। और यही बीहन सस्ते दाम पर खेतिहरों को दिया जाये। लेकिन सब से बड़ी बाधा खेती में यह है कि हमारे किसान बहुत ग़रीब होते हैं। बेचारे भूखे किसान की इतना भी नहीं रहता है कि अच्छी जोड़ी बैल की ख़रीदें (अगर ख़रीदें भी तो अच्छी तरह खिला नहीं सकते) उम्दा बीया और पूरा खाद मोल लें तो बहुत सूद महाजनों को देना पड़ता है और ज़मींदार भी जब वक़्त पर मालगुज़ारी अदा नहीं होती तो बहुत सूद लेते हैं। क्या यह उचित नहीं है कि चाहे सरकार या और कोई समाज ही ऐसा बन्दोबस्त करे कि जिसमें ग़रीब किसानों के लड़कों को काम चलाऊ हिसाब रखना आ जाये और ऐसी कोठी खोल दे जहां से ज़मानत पर या हाल साख की फ़सिल पर किसानों को बेअरगी रुपये मिला करें। तीसरी कठिनता यह है कि यहां ऋतु सदा बदलता रहता है, कभी तूफ़ान आता है कभी धूप कड़ी पड़ती है कभी

बदली घिर आती है पानी बरसने लगता है कभी नदी बढ़ जाती है—इन दुर्घटनाओं से बचने का कुछ उपाय भी होना चाहिये। पहले के समय में धर्मात्मा मनुष्यों की कमी न थी जो वक्त या पड़ने पर रुपया निकालने में कसर नहीं करते थे। खेतों को पटाने के लिये तालाब खुदवाते थे, नदी का जल रोकने के लिये बांध बधवाते थे, जहां दलदल रहता था वहां से खाल कटवाते थे। अब तो यह होता है कि किसी ज़िले में बाढ़ पर बाढ़ आती है, सब फ़सल बह जाती है और कहीं लोग आसमान की ओर टकटकी लगाये रहते हैं कि अब जल बरसे तो बीएन बोयेंगे पर कुछ नहीं बरसता, देखते ही रह जाते हैं। पुराने तालाब भर गये, पुराने बांध टूट गये, पुराने खालों का पता नहीं है और उस पर तुर्रा यह कि उस समय के से दयालु जोंक भी अब किसानों के अभाग्य से नहीं देख पड़ते। खास बंगाले के ज़िलों में एक आफ़त और भी सुनने में आती है कि मज़दूर ही नहीं मिलते। वहां बुरी हवा, जाड़ा बुखार की सी ऐसी फैली है कि बेचारी रएयत समाप्त होती जाती है और उनकी सन्तान भी जो बची बचाई रह गई है ऐसी बलहीन है सब खेतों को नहीं जोत सकती। बहुत से भाग के किसान असहाय, दरिद्र, उत्साह हीन हो रहे हैं उनकी इतनी सामर्थ नहीं है कि बाहर से मज़दूरों को बुलायें। फल इस का यह होता है कि बहुत सी जमीन पड़ती पड़ी रहती है और जो आबाद हुई भी वही ठीक तौर से नहीं और समय पर [illegible]। यह भी याद रखना चाहिये कि बेचारे किसान की जीविका निर्वाह सिर्फ़ अपनी जोत ही से होती है इस लिये एक वर्ष भी वह उसे छोड़ नहीं सकता। यदि वह बीमारी या और किसी कारण से ठीक समय पर जोत बून न सका तो उसे मिहनत खर्च आदि सब का खयाल छोड़ कर कुसमय में बूनना पड़ता है। इनही बातों को विचार कर फिर भी हम कहते हैं कि देसी हल को दूर करने से बैल के बदले घोड़ा रखने से, जोत को बढ़ाने से या मायन्स के अनुसार खाद व्यवहार में लाने से काम नहीं चलेगा। क्योंकि बहुत सी बुराइयां हैं जो बढ़ती जाती हैं, बहुत सी कठिनाइयां हैं जो नुकसान पहुंचाती हैं और बहुत सी बीमारियां हैं जो भीतर ही भीतर यहां के किसानों को घुन की तरह नष्ट कर रही हैं जिन को ऊपर से देखने वाले नहीं जानते।

कप्तान—धीरे धीरे जंगल काट कर हम लोग राह बनायेंगे, मुझे पूरा विश्वास है कि इन वृक्षों में बहुत से अपने काम के निकलेंगे।

हर रोज़ कप्तान टूरबीन ले कर समुद्र की ओर देखते थे, झंडा हर रोज़ फहराया करता, पर सब वृथा था क्योंकि इतने बड़े भारी समुद्र में एक जहाज़ भी न नज़र आया।

काम काजी आदमियों की वक्त भारी नहीं जान पड़ता। सिवा रविवार के हमलोग बराबर काम में लगे रहते थे इससे दिन भारी नहीं मालूम होता था।

स्टीफन बढ़ई का काम जानता था वह हम वक्त बहुत काम आया। वह खाली कभी नहीं बैठता था और टूटे जहाज़ की सब लकड़ी तीर पर चली आई थी इसे लकड़ी का अभाव न था थोड़े ही दिनों में उसने गुफा का ढांचा ही बदल दिया। बहुत से आराम के सामान उसने बना डाले।

स्टीफन ने एक टेबल रसोई घर के लिये बनाया उस पर कड़ाही, तावा, चाय गर्म करने की केतली आदि रखने का बन्दोबस्त हो गया और एक संदूक में चार पाया लगा कर ऊंचा कर दिया और उस में आलमारी बना दी इससे बड़ा सुभीता हो गया। सब सामग्री तो थी पर पानी रखने की सुराही और प्याले प्यालियों के बिना बहुत ही सूना मालूम होता था।

इनके मिलने की आशा बहुत कम थी परमेश्वर ने उस का भी सामान एकाएक कर दिया।

एक दिन कप्तान अपनी बंदूक ले कर जंगल में जाते थे, मुझे भी इन्हों ने कहा कि "साथ चलो देखें कोई जानवर या चिड़िया मिलती है या नहीं।"

मैं कप्तान से कुछ आगे दौड़ा जाता था कि हमारी आंख एक अजीब ढंग के पेड़ पर पड़ी। उस की जड़ ही के पास बड़ा बड़ा गोल जाल कुछ फैला हुआ था। देखते ही मैंने कप्तान साहब से कहा—

देखिये तो साहब! यह क्या चीज़ है ऐसा तो मैं ने पहले कभी नहीं देखा था।

कप्तान हमारे यह पूछने पर उधर देख बहुत खुश हुए और बोले—यह तो बड़े काम की चीज़ मिली। खास करके तुम्हारे लिये तो बहुत ही अच्छा हुआ क्योंकि तुम्हारे इलाके खाने पीने का इंतिज़ाम है।

मैं—क्यों? ये बदसूरत चीज़ें किस काम आयेंगी?

कप्तान—यह तितकद्दू है इसका बोतल कटोरा आदि बहुत सी चीज़ें बन सकती हैं।

इसी की तो कसर थी। कप्तान ने चाकू निकाल कई प्याले प्याली बनाये। मैं बराबर देखता रहा और जब कप्तान उधर से चिड़िया मार कर ले आये तब तक मैंने बहुत से प्याले रकाबियां वग़ैरह बना कर तइयार कर लिया। और कप्तान से मैंने पूछा कि मेरी इच्छा थी कि थोड़े से बोतल तइयार करता पर मालूम ही नहीं है कि कैसे बनाया जाता है।

कप्तान—चैनी से पूछो वह इनसब बातों को ज़रूर जानता होगा।

जब हम दोनो लौट कर गुफा में पहुंचे तो उधर अपने बाग़ से चैनी भी लौटा ही आता था। प्याला प्याली देख वह बहुत खुश हो गया और मुझ से उस ने कहा कि दूसरे दिन बोतल बनाना सिखला देंगे।

सत्रहवां अध्याय।

मुझे जी लगी के लिये अच्छी चीज़ मिल गई। स्टीफ़न की मदद से मैंने बहुत से प्याले और चमच बनाये।

चैनी ने जो किताबें जहाज़ पर से लाई थी उनमें की एक वह पढ़ा करता था उसमें लिखा था कि बोतल बनाने के लिये दूसरी कार्रवाई करनी पड़ती है। जब कद्दू बेल ही रहे तभी डंटी के पास पट्टी बांधना चाहिये जिससे बंधा हुआ भाग जों का तों रह जाता है बढ़ने की शक्ति दूसरे भाग में चली जाती है और गले के पास पतला रह कर बाकी भाग बोतल का सा मोटा हो जाता है। यह काम देर में पूरा होता है इसके अलावे और और ज़रूरी काम बहुत थे इस लिये उस समय हमलोगों ने बोतल बनाना नहीं शुरू किया।

पर पीके बहुत बढ़िया बोतल इन लोगों ने बनाये।

स्टीफन ने डेंगी की पूरी मरम्मत कर डाली थी इसमें अक्सर उस पर चढ़ कोप डोर और बन्सी से मछली मारने को जाया करता था। खुले दिन में टटकी और बर्सात में पीप में की रक्खी हुई नमकीन मछली लोग खाते थे।

कप्तान को मालूम था कि जहां बर्षा प्रारंभ हुई तो फिर जल्दी नहीं छूटेगी इस लिये उस वक्त के लिये जितना बन पड़ता था खाने पीने का सामान लकड़ी वगैरह जुगता कर रखते जाते थे।

उन्हों ने तालाब बनाया था, स्टीफन की मदद से चिड़िया रखने की जगह बांस वगैरह से घेर कर बनाई थी।

मेरी इच्छा थी कि तुरत ही चिड़िया फंसा कर उसमें रक्खी जायें पर कप्तान ने कहा कि अभी छोड़ दो जब तक उनको मिले चरने चुगने दो जब बर्सात में उनको आहार न मिलेगा तब उस हाते में दाना छींट देने से वह आप ही चली आयेंगी फिर उनका बंद करना क्या कठिन है।

मैंने एक चीज़ और देखा! एक दिन शाम को तीर पर टहलने को गया तो कोई चीज़ काली और बहुत बड़ी बालू पर पड़ी हुई देख पड़ी। कौंही उसे देखने को मैं नज़दीक जाने लगा तो देखता हूं कि वह चल रही है। सोचने लगा चीज़ क्या है, बहुत ही बदशकल है लेकिन धीरे धीरे समुद्र का रास्ता ले रही है।

बहुत नज़दीक जाकर देखा तो पहचान लिया—वह कछुआ था। थोड़ी दूर पर एक सूराख में अंडे पड़े थे। मैंने किताबों में पढ़ा था कि बालू पर उलट देने से वह चल नहीं सकते यह बात मुझे याद आ गई।

इसी लिये बिना कुछ सोचे मैंने उसको दौड़ कर पकड़ा और उलट दिया। पर इसी बीच में उसने इतनी बालू उड़ाई कि मैं मुंह के बल गिरा। बालू के आंख में पड़ने से और गिरने की चोट से एक मिनिट से ज़ियादा देर तक वैसा ही पड़ा रहा उठने की सामर्थ न रही।

जब मैं उठा तो इस बात की बड़ी चिन्ता हो गई थी कि कहीं शत्रु भाग न जाये पर जब देखा कि वह जौ भर भी इधर उधर नहीं हटा तो मेरे जी में जी आया।

जब मैंने देखा कि वह बेबस हो गया तो दौड़ कर कप्तान और स्टीफन को बुलाने को चला गया। सब हाल सुन कर दोनों बहुत खुश हुए। उसे पकड़ कर उन लोगों ने मार डाला। उसकी पीठ बहुत काम आई। उसके अंडे भी उन लोगों ने उठा लिये।

चैनी अक्सर अकेला जंगल में चल देता था इससे उसके पिता को बहुत चिन्ता हो जाती थी पर अक्सर कुछ काम ही के कन्द मूल, साग सब्ज़ी लेकर वह लौटता था। और चीज़ों के अलावे उसने बांगा (रूई का पेड़) पिंड खजूर और रबर का पेड़ ढूंढ़ निकाला।

बोरे में रूई भरने से बिछावन बहुत ही नर्म और सुखदायी हो गया। जिन चिड़ियों को लोगों ने मार खाया था उनके पर सुखा कर तकिया बहुत सा बनाया गया था।

रबर के वृक्ष के दूध से जूतों की मरम्मत की गई जहां जहां फट गया था वहां दस दस बारह बारह बार दूध लगा कर सुखा देने से जूते का छेद भी बंद हो गया और उसके पानी में सड़ने का भी भय न रहा। यह दूध पाक कर निकाला जाता था।

जो रबर हम लोग देखते हैं वह इसी तरह बनता है किसी बरतन में दूध जमा कर लिया जब वह सूख गया फिर उस पर दूसरी तह जमाई गई। गरज़ जितना मोटा बनाने की इच्छा हुई उतनी ही तह पर तह जमा कर सुखा लिया। तब वह धूंए में लटका दिया जाता है जिससे कड़ा हो कर उसकी शक्ल चमड़े की सी हो जाती है।

रबर का वृक्ष बहुत ही सीधा और बहुत ऊंचा होता है डाल इसमें कम होती है। नीचे तो होती ही नहीं पर ऊपर जाकर जो होती हैं उनका घेरा दस फुट से ज़ियादे नहीं होता। इसके पत्ते बड़ के से होते हैं भेद इतना ही होता है कि ऊपर हरा और नीचे का रंग सफेद रहता है।

आकाश कई हफ़्तों से बराबर निर्मल था अब उसमें मेघ घिर आये कप्तान को निश्चय हो गया कि बर्सात नज़दीक है।

इस लिये चिड़ियों के घर का दरवाज़ा उन्हों ने खोल दिया और एक कोने में खड़े हो कर देखते रहे कि क्या होता है।

ज़ियादा देर नहीं ठहरना पड़ा एक के बाद एक उस हाते में चिड़िया घुसने लगीं जब बीस के अंदाज़ भीतर आ गईं तो उन्होंने किवाड़ बन्द कर दिया।

चिड़ियों ने जब अपने को बंद पाया तो उनमें बड़ी खलबली मच गई।

कोई डैना फड़फड़ाती, कोई हाते में चारो ओर उड़ कर भागने की राह ढूंढ़ती पर सब तरफ़ जाल डाला हुआ था। धीरे धीरे वे शांत हो गईं। उसके भीतर कहीं अड्डा बना हुआ था, कहीं रूई घोंसला बनाने के लिये रक्खी हुई थी—गरज़ आराम का सब सामान देख फिर तकलीफ़ न देने लगीं।

पहले तीन मुर्ग़ लड़ने लगे यहां तक कि खून निकल निकल आता था। अन्त को कप्तान ने उन तीनों का काम तमाम किया तब से वहां की लड़ाई बंद हो गई।

कप्तान—इसी बात का मुझे बेशी भय है कि बर्सात बहुत दिनों तक रहा तो साग सब्ज़ी का बड़ा कष्ट होगा।

जैनी—मैं भी इसी ख़याल में लगा हूं पर मुझे मालूम होता है कि आज एक कन्द मूल का पता लगा है जो हम लोगों के बहुत काम आयेगा।

यह कह कर अपनी थैली से उसने गाजर का सा एक कंद निकाला। और कहा—

यदि मुझे धोखा न होता हो तो शायद यह वही है जिसकी रोटी बना कर अमरिका के आदिम निवासी खाते हैं।

कप्तान—यदि ऐसा है तो तुमने बड़ा काम किया हम लोग भी उनही लोगों की तरह इसे धो पीस कर आटा बना डालेंगे।

मैंने कहा—अगर यही इतना है तो कब दिन इससे कटेगा।

चैनी—कुछ चिन्ता मत करो, एक बोरा मैंने बाहर रक्खा है। और जहां से इसे ले आया हूं वहां भी बहुत है इन सब के अलावे बाग में मैंने बहुत लगा दिया है जहां पानी बरसा फिर इनको बढ़ते कुछ देर नहीं है।

चैनी ने यह काम अपने स्वभाव के अनुसार ठीक ठीक किया था। कैसी भी कोई बात हो जब तक पूरा निश्चय न हो वह कभी नहीं प्रगट करता था।

मुझ में ऐसा नहीं होता था। मेरा स्वभाव भोंकीला था। जो बात मेरे मन में आई तुरत मुंह पर भौंचूट हो जाती थी। पर चैनी खूब सोच समझ कर तब किसी से कहता था।

दूसरे रोज़ मेघ और भी अधिक घिर आये। पर तड़के ही हम लोग खाने का सामान ले आये। मैंने बांस का नल गिरह में छेद करके रसोई के दरवाज़े तक लगा रक्खा था कि पानी पीने का लाने के लिये बाहर न निकलना पड़े जब बरसेगा तो आपही आप दरवाज़े तक पहुंच जायेगा।

स्टीफ़न ने फ़ालूस पानी को गुफा में छत से लटका दिया था उसी में फल फलहरी, गन्ने का टुकड़ा ज़ंजीर वग़ैरह रख दिया जाता था।

मैंने कद्दू की बहुत सी टोकरी और प्याली बना रक्खी थी उसमें बहुत सी छोटी चीज़ों के रखने का काम चलता था।

स्टीफ़न ने धुंआरा बना कर चूल्हा बहुत ही सुखदाई बना रक्खा था।

कप्तान भी बंदूक लेकर गये थे और कई किस्म की चिड़िया मार लाये थे। इस इंतज़ाम से भूख मरने का कोई सामान न था।

मैं मछली और किकोड़ा तालाब में छोड़ आया था इसी वक्त मुझे याद हो आया कि इस वक्त जैक कैप्टन और उस के लड़के मुझे देखते तो कैसे अचरज में आते। इसका मुझे पूरा विश्वास था कि यदि मैं उनसे कहूंगा कि तालाब में मछली मैंने जमा की थी और कछुए को उलट दिया था तो वह कभी विश्वास न करेंगे।

यह सब हाल सुन कर उन लोगों का चेहरा आश्चर्य से कैसा हो जायेगा उसका खयाल कर मैं आपही आप हंसने लगा। स्टीफ़न संयोग से हमारे पास आ गया। हमारे मन में जो कुछ बीत रहा था सब उसे पुकार कर कहा।

स्टीफ़न—हां हम लोगों की कुछ बात सुन वे ज़रूर ताज्जुब में आ जायेंगे।

फिर उसके मन में फ़ेयरपोर्ट, वहां के रहने वाले, विस्टन जो वहां से पास ही था—सब का ध्यान बंधने लगा एका एक उसकी दोनों आखों में आंसू भर आया फिर यह सोच कर कि इस तरह की बातें करना वृथा है उसने आंसू पोंछ डाला।

मुझसे किसी को रोते **नहीं देखा** जाता था इस लिये आदत के मुताबिक़ तुरत मैंने विषय **ही बात चीत का** बदल दिया।

अठारहवां अध्याय।

मेघ जो घिर आये थे और जिससे कप्तान को पानी बरसने का भय हो गया था शाम होते होते साफ़ हो गया। दूसरे दिन भोर को यद्यपि आकाश में कुछ अंधेरा था पर वैसा न था जैसा पहले दिन।

इस लिये हम दोनों लड़के दूसरी बार फिर जंगल की ओर गये। उस दिन मुख्य काम यही था कि रबर के वृक्ष का दूध कुछ अधिक ले आवें।

मुझे बरसाती कपड़ा बनाने की बहुत जल्दी पड़ी हुई थी स्टीफ़न ने बहुत मदद देने का वादा किया था। इस लिये हम लोग उस दिन दो बड़े बड़े कद्दू के बोतल लेकर चले।

हम लोग थोड़ी ही दूर गये थे कि चैनी का ध्यान एक वृक्ष पर जा पड़ा जिस में किसी नये फूल का गुच्छा लटक रहा था। उसने वनस्पति शास्त्र और प्राणीतत्व पढ़ा था इससे बराबर ऐसी ही ऐसी चीज़ों पर ध्यान रखता था।

झुक कर जो उस बढ़िया फूल को देखने लगा तो उस वृक्ष की

जड़ में एक छेद था उसमें से भन भन आवाज़ आती हुई सुन पड़ी।

मुझे भी उसने सुनने के लिये बुलाया। छोटी कुल्हाड़ी हमारे पास थी झट आवाज़ के सुनते ही मैंने बेधड़क एक चोट वहां लगाई छाल का एक छोटा सा टुकड़ा कट गया।

वह आवाज़ बहुत बढ़ती हुई सुन पड़ी और तुरत ही इस नये सूराख़ से दो तीन मधुमक्खियां उड़ीं। एक हमारे गाल पर आ बैठी और आंख के नीचे उसने बहुत ज़ोर से डंस लिया।

दर्द तो बहुत था पर साहस मुझ में अधिक था इससे चिल्लाया नहीं बल्कि पीड़ा को मर्द की तरह बरदाश्त कर लिया और कहा कि—

अजी चैनी! यह पुराना दरख़्त तो खोखला मालूम होता है और मधु मक्खियां भी भरी हैं। अगर शहद मिल जाये तो कैसा तमाशा हो—

चैनी—और मोम भी मिले तो बहुत काम चलेगा क्योंकि जलाने का तेल कुछ नहीं है। अगर हम लोग मोमबत्ती तइयार कर सकें तो बड़ा भारी काम निकले। यही बड़ा कठिन है मक्खियां काटने न पावें और शहद मिल जाये।

मैं—धुंआ देकर उनको भगा दो।

चैनी—हां। लेकिन तुमने जो छेद काट कर बनाया उसके पहले वह किस रास्ते से इसमें घुसीं इसका पता लगना ज़रूर है।

मैं—कहो तो मैं ऊपर चढ़ कर देखूं।

चैनी—नहीं नहीं। ऐसा करोगे तो वह तुम्हें काट खायेंगी। एक गाल तो तुम्हारा आंख तक फूल ही गया है क्या तुम्हारी इच्छा है कि दूसरा भी वैसा ही हो जाये?

मैं—बात तो अच्छी नहीं होगी पर किया क्या जावे?

चैनी—इस निचले सूराख़ के पास आओ हमलोग लकड़ी जमा करें और आग जब जलने लगे तब (पास ही एक छोटा सा पेड़ बतला कर) इस के हरे हरे पत्ते उस पर डाल देंगे इस का धूआं बहुत ही कड़ुवा और दुख देता है। उसी के लगने से मक्खियां भाग जायेंगी फिर छत्ता काट कर हमलोग शहद और मोम ले लेंगे।

मैंने देखा कि हमारे उजड्डपने की अपेक्षा यह सलाह कहीं अच्छा है इसमें मान लिया पर देर होगी इसी का पछतावा रहा।

उसी सलाह के मुताबिक़ हम लोगों ने काम किया और तुरत ही धूंआं चारो ओर दरख़्त से लग कर ऊपर जाने लगा और इसी तरह उस छेद में भी घुसा।

बड़ी भयानक भनभनाहट की आवाज़ अब पेड़ के भीतर सुन पड़ी। मधुमक्खियों को धूंआं बहुत बुरा लगा इससे वे ऊपर वाले छेद से लगातार एक के बाद एक निकलने लगीं, दूर से देखने में मालूम होता था मानो किसी चीज़ का फ़ौवारा छूट रहा हो। कुछ देर तक तो वृक्ष के चारो ओर भनभनाती रहीं जिससे हम लोग डर गये कि कहीं फिर न घुस जायें पर जब गाढ़ा धूंआं चारो ओर हवा में भर गया तो वे धीरे धीरे भाग गईं।

अब खज़ाना लूटने का वक़्त आया। हम लोगों ने बहादुरी के साथ अपनी अपनी कुल्हाड़ी ले पुराने दरख़्त को काट डाला। वह बहुत बड़ा और खोखला था एक तरफ़ से बड़ा टुकड़ा काट डाला और जब धूंआं ज़रा साफ़ हो गया तो कैसी अच्छी चीज़ हमारे आंखों के सामने देख पड़ी। सिफ़त सार्थक हुई जितनी उमीद थी उससे कहीं ज़्यादा माल देख पड़ा पर अब संदेह इसी बात का रहा कि ले जाने के लिये इतना बरतन हम लोगों के पास न था।

इतना कच्चा था कि सब हम लोग नहीं ले जा सकें। जितना सुभ्भ से चल सका उतना ले कर मैं गुफा की ओर इस इरादे से चला कि बाक़ी रखने के लिये टोकरी और तुम्बा लिये हुए स्टीफ़न को बुला लाऊं।

वैनी वहीं और और छत्तों को काटने के लिये रह गया और मन में कहने लगा कि स्टीफ़न ज़रूर टोकरे लेते आवेगा।

इन टोकरों को स्टीफ़न ने वैनी के बाप के लिये झाऊ की डाल से बनाया था। वह बंसी पर रख लिया जाता था।

मैंने गुफा के पास पहुंच कर देखा कि स्टीफ़न और कप्तान मछली

की धो रहे हैं। बहुत मिन्नत आर्ज़ू करने पर उनकी आपने काम से छुड़ा अपनी मदद के लिये चलने का राज़ी किया।

कप्तान—अहद अच्छा है इसमें सन्देह नहीं पर जितना तुम ले आये हो वही अभी बहुत दिनों तक चलेगा।

मैं—हां लेकिन मोम! चैनी कहता है कि रूई की बत्ती डाल कर उसकी मोमबत्ती बन सकती है।

कप्तान—हां जी! ठीक बात है। क्या कहूं इसका ज़रा भी ख़याल न रहा! चलो स्टीफ़न अभी मछली को छोड़ दो इन्हें भीगे पत्ते से ढक दो जब तक हम लोग लौट आयेंगे तब तक कुछ बिगड़ेगा नहीं।

इतनी बात होने पर अहद ठिकाने रख कर सब कोई वहां चले। स्टीफ़न ने दोनों टोकरे अपने कंधे पर रख लिये और दो बड़ी बड़ी टोकरी हाथ में ले ली। कप्तान ने और मैंने भी कई टोकरी तितकहू के प्याले वग़ैरह ले लिया।

राह में मैंने चैनी का आग पर उस पत्ते को रख कड़ुआ धूंआ पैदा कर के मक्खियों को चालाकी से भगाने का हाल बेवरेबार कह सुनाया।

कप्तान सुन कर बहुत ख़ुश मालूम हुए पर कुछ बोले नहीं। स्टीफ़न को मन ही मन पछतावा हुआ कि क्यों मैंने चैनी को सिर्फ़ किताब पर झुके पढ़ते देख समझ लिया कि वह कुछ मदद नहीं देता।

स्टीफ़न ने यह मान लिया कि चैनी का जो समय किताबों के पढ़ने में बीतता था वृथा नहीं जाता था। बुद्धि हमेशा काम करती रहती थी इससे बहुत सी नई चीज़े वह खोज कर निकालता था और बाक़ी लोगों को अच्छे काम में लगाता था। यह बड़े ग़लती की बात है कि मज़बूत और फिरने चलने वाले आदमी जब किसी को किताब में परिश्रम करते देखते हैं तो उसको हंसी करते हैं क्योंकि संसार में जितनी काम की बातें प्रगट हुई हैं वह उनहीं शान्त और विद्या में परिश्रम करने वालों के द्वारा हुई हैं जिन को लोग सुस्त और बेवक़ूफ़ समझ नीची आंखों से देखते हैं।

दरख़्त के पास पहुंच कर सब ने क्या देखा ?—घास पर पंसेरियों छोटे छोटे सूराखों से भरे कुत्ते रक्खे थे। कप्तान और स्टीफ़न की ठकमकी लग गई। कई खेप में गुफा तक सब पहुंचाया गया।

खाली शहद ही बहुत दिन तक के लायक न था मोम भी बत्ती बनाने के लिये बहुत था यह बड़े काम की चीज़ मिली।

अब तक रात को चिराग़ जलाने का काम नहीं पड़ा था क्योंकि दिन तो बाहर ही के मिहनत में जाता था और रात को जब लौट कर आते थे तो इतनी मांदगी रहती थी कि शाम होते ही सो रहते थे। जब सूर्योदय होता था तो उठते थे और सूर्यास्त होता था तो सोते थे।

बत्ती ढालने का सांचा बनाने के लिये कप्तान ने बहुत सा बांस काट लिया और मैं जलावन इकट्ठा करता चला। गुफा के पास जब पहुंचे तो बहुत थक गये थे। कप्तान और स्टीफ़न ने जो भोजन तय्यार कर रक्खा छोड़ा था वही उस वक़्त बहुत मज़ेदार मालूम हुआ।

वह दिन बहुत मिहनत में बीता था पर उस दिन बड़ा भारी काम भी हुआ था इसके अलावे भंडार में रखने के लिये भी बहुत उम्दा चीज़ खाने को मिली।

जोहीं खा पी कर रात को हम लोग हमक में सोते गये कि पानी बरसना शुरू हुआ और जब भोर को उठे तब तमाम टापू तर देख पड़ा।

फिर तो रोज़ ऐसा पानी बरसने लगा कि बहुत दिनों तक पल भर के लिये भी गुफा छोड़ना असंभव हो गया। हमलोगों को इस बात से बड़ी खुशी मिली कि पहले ही से ऐसे दिन के लिये खाने पीने का सब सामान जमा करके रख लिया गया था।

उन्नीसवां अध्याय।

दूसरे दिन खाने पीने के बाद पहला काम शहद से मोम को अलग करने का हुआ।

अब कप्तान और स्टीफ़न सोचने लगे कि शहद को मोम से कैसे अलग किया जाये। जैसी अपना काम कर अलग हो गया।

उसने समझा कि शहद का पता लगा ही दिया बत्ती बनाने का भी याद दिला ही दिया यही बहुत किया। बाक़ी काम दूसरों के पूरा करने के लिये छोड़ दिया।

छत्ते एक गरम जगह में उलट कर रख दिये गये थोड़ी ही देर में सब शहद चू गया। मोम एक दूसरे बरतन में रख कर गर्म किया गया और तब बत्ती बनाने का बड़ा भारी काम आरंभ हुआ।

एक तख़्ते पर गिली मिट्टी रख, बराबर बराबर बांस की चोंगी काट कर गाड़ दी गई और हर एक में रूई की बत्ती बना कर डाल दी गई।

एक आदमी बत्ती सीधी पकड़े रहा दूसरे ने पिघला हुआ मोम उसी चोंगी में उझल दिया।

ठंढा और कड़ा हो जाने के बाद जब सांचा तोड़ा गया तो खासिस मोम की सुन्दर गोल गोल बत्ती देख लोगों को बड़ी खुशी मिली। हां, रंग ज़रा पीला था पर रोशनी बहुत साफ और उम्दा हुई।

मोम बहुत था। अब जब काम पड़ेगा मोमबत्ती बन जायेगी इस बात से सबके जी में बहुत धीरज हुआ। क्यों कि गुफा में उजाला बहुत नहीं आता था इससे सोने के वक्त के बहुत पहले ही अंधेरा हो जाता था।

अब मोमबत्ती की मदद से अंधेरा होने के बाद भी बहुत देर तक हम लोग काम कर सकते थे नहीं तो काम करने की इच्छा रहने पर भी अंधेरे के कारण छोड़ देना पड़ता था।

पानी रोज़ बरसता ही था पर मैं किसी तरह रोज़ जाकर चिड़ियों को दाना दे ही आता था।

नमकीन मांस, मछली आदि तो रोज़ भोजन में होता ही था पर गेहूं के आटे की रोटी के बदले उस कन्द की रोटी मीठा डाल कर बहुत उम्दा होने लगी।

जब तक फल रहा तब तक रोज़ अंजीर, नारंगी और आनानास खूब खाने में आया। जब ये खतम हो गये तब मैं लप्सी बनाने लगा। जहाज़ पर का बिस्कुट शहद भी भोजन में रक्खा जाता था। रविवार को

पावरोटी बनती थी पर गेहूंका आंटा ऐसा अनमोल हो रहा था कि बहुत समझ बूझ कर खर्च करना पड़ता था।

बस्ती बनाना जब समाप्त हुआ तब हमारे कहने पर लोगों ने बरसाती कपड़ा बनाने की ओर ध्यान दिया।

स्टीफन ने मरे हुए घड़ियाल का चमड़ा ले कर जंगल में फिरने के लिये सब के पैर के नाप से घुटने तक की पट्टी बनाई थी जिसको बांध लेने से कांटा वगैरह से बहुत बचाव हुआ।

जो कपड़े हम लोग जहाज़ पर से बचा लाये थे सब को खोल कर देखा तो मोटे कपड़े का एक कुर्त्ता और एक जोड़ वैसे ही कपड़े का पैजामा मिला। उन पर रबर के वृक्ष का दूध लगा कर सुखा देने से एक तरह का अच्छा बरसाती कपड़ा बन सकता था। सब के लिये सहज में काम निकला पर कठिनता मेरी ही दशा में आ पहुंची। मैं इतना छोटा था कि किसी जहाज़ी का कुर्त्ता मुझे ठीक नहीं आता था। खैर स्टीफन ने मेरे लिये दर्ज़ी का काम करना स्वीकार और मेरे लिये भी एक पोशाक काट छांट कर दुरुस्त कर दिया। जूतों पर भी रबर के दूध का लेप लगा कर सब का बरसाती जूता तइयार हुआ इसी तरह एक एक ओढ़ना भी सब के लिये बना। अब हम चारों के बरसात में निकलने में कोई बाधा न रही।

इन की मदद से आहार की खोज में निर्विघ्न जाना होता था। चेनी ने नदी की मछलियों के पकड़ने के लिये एक विचार किया था वह इन पोशाकों के बन जाने से पूरा हुआ।

उसने नदी के दोनों ओर बांस गाड़ कर बीच में जाल बांध दिया, मछलियां जो धार में बह कर आती थीं उनको जाल समेट कर पकड़ लेता था। खाने पीने का सामान भरपूर जमा था और काम गुफा ही में बैठ कर इतना करने को था कि पूरी बरसात निकल गई पर किसी का जी गुफा में बैठे बैठे न ऊबा।

मैंने स्टीफन से टोकरी बनाना सीखा और उसकी थोड़ी ही मदद से दो जोड़ा टोकरे और बनाये इसके अलावे एक चौसूटा टोकरा हमने

ऐसा बनाया जिसे बांस में लटका कर दो आदमी कंधे पर रख कर ले जा सकें।

स्टीफन ने गन्ने का रस निकालने के लिये चर्खी बनाई जिससे जब जी चाहता था रस निकाल लेते थे। और कप्तान ने बहुत सी लकड़ियां चीर डालीं कि जिसमें ज़ियादा न जले। बांस और पाल के टुकड़े से एक किस्म की आराम कुर्सी भी बनाई।

जब बदली फटने लगी तो सब ने आनन्द प्रगट किया। पर भीसी पड़ती ही थी इस लिये बरसाती कपड़ा पहन कर इतने दिनों की बर्सात से किधर क्या भलाई बुराई हुई उसकी तहक़ीक़ात की चले।

पहला ख़याल कप्तान के दिल में यही आया कि ऊंचे स्थान पर चढ़ दूरबीन लगा कर देखें कि कहीं कोई जहाज़ नज़र आता है या नहीं।

जो समुद्र अब तक मेह से छिपा था अब बहुत दूर तक नज़र आने लगा। नीलेपन के साथ शान्ति छाई हुई थी और हर मिनिट में आकाश साफ़ होता आता था। चारों ओर उन्हों ने देखा पर जहाज़ का कहीं चिन्ह भी नहीं देख पड़ा।

सुन्दर हवा मुंह पर लग रही थी आकाश के निर्मल होने से सूर्य की किरनें भी निकली आती थीं, इतने दिन जल मूसलाधार बरसने के बाद सूर्य का दर्शन होता था पर जहाज़ के देखने से जो खुशी मिलती इसके मुक़ाबले में सूर्य के दर्शन से क्या खुशी मिलती?

घर पर एक बार भी खाने का मौक़ा आवे तो उसके लिये टापू के सब फल फूल सामग्री को छोड़ देना मंज़ूर था। जब पूरा निश्चय हो गया कि कोई जहाज़ नहीं नज़र आता तो दूरबीन उन्हों ने बंद कर लिया।

पहले जो झंडा खड़ा किया गया था वह गिर पड़ा था इस लिये उसी ऊंचे स्थान पर फिर उन्हों ने झंडा खड़ा करने का इरादा किया। इस लिये गुफा में आकर सब से लम्बा टुकड़ा मस्तूल का जो मौजूद था स्टीफन की मदद से फिर खड़ा किया गया।

उनको हमेशा इस बात की आस लगी थी कि अगर कोई जहाज़

टापू के पास हो कर आ निकलेगा तो झंडा देख उसे मालूम हो जायेगा कि टापू में आदमी की बस्ती है।

गुफा में हर तरह का आराम रहने पर भी स्टीफन के दिल में यह बात पैठी हुई थी कि एक घर बन जाये तो हम लोगों को बड़ा आराम हो।

झंडा खड़ा करने के बाद यह बात कप्तान से उसने कहा जिससे मालूम हुआ कि कप्तान के मन में भी यह बात आ चुकी थी।

कप्तान—मुझे संदेह इसी बात का है कि इतने कम आदमियों से कैसे काम होगा?

स्टीफन ने कहा—इस बात की जल्दी थोड़ी ही कुछ पड़ी है पर मैं समझता हूं कि इसे करके देखना चाहिये।

कप्तान—हां यह तो होना चाहिये और इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं है कि सुस्त बैठे रहने की अपेक्षा अगर किसी काम में जी लगा रहेगा तो हम लोग ज़ियादा खुश रहेंगे। चलो अभी ही स्थान चुन लें कि कहां ठीक होगा।

स्टीफन—मैं उसका ठिकाना कर चुका हूं। देखिये हम लोगों का मकान लकड़ी का बनेगा। इस लिये ऐसी जगह चुनना चाहिये जहां दरख़्त बहुत हों और ठिकाने से लकड़ी वग़ैरह रखने का सुभीता हो तो हम लोगों की बहुत मिहनत बचेगी। यहां से थोड़ी ही दूर नीचे तराई में प्रकृति देवी ने हमारे लायक़ जगह ठीक कर रक्खी है।

कप्तान—चलो ज़रा देख तो आवें कैसी जगह है?

तब हम लोगों ने नीचे उतर कर देखा तो यथार्थ ही में स्थान अति उत्तम और जैसा चाहिये वैसा ही था।

दो चटानों से छाया वहां खूब थी पास ही लम्बे लम्बे और सीधे कई पेड़ मौजूद थे। स्टीफन ने समुद्र के रुख पर जो स्थान मन में बढ़िया सोच रक्खा था वह बतलाया।

जगह नापी गई। नक़्शा बन गया। स्टीफन ने कुल्हाड़ी मारी और कई रस्सा लाया और बहुत ही परिश्रम से आस पास में जो

कंचे पेड़ थे उनको काट गिराया। फिर जितनी बड़े की ज़रूरत थी बल्ला काट कर बना लिया।

इतना काम एक दिन में हुआ बाकी उसने आइन्दे के लिये छोड़ दिया।

पानी से चैनी का बाग़ बहुत कुछ ख़राब हो गया था सो वह उसकी दुरुस्त करने में लगा था।

जो जो पेड़ नुक्सान हो गये थे उनका नया दूसरा पेड़ लग गया। कोई वनस्पति सूर्य के रुख लगाये गये थे वे तो बढ़ गये पर धान जो दल दल में था वह मज़े में बढ़ रहा था। कई दिनों के बाद जब सूर्य का ताप लगेगा तो जल्दी पक जायेगा।

चैनी के किताब में छोटी चिड़ियों के बभाने की रीत लिखी थी उसी तरह मैं जाल फैला आया।

दो कछुए धूप खाते हुए मुझे बालू पर फिर देख पड़े दोनों को मैंने उलट दिया और इतमीनान से पकड़ कर उसी तालाब में मैंने छोड़ दिया जो मछलियों के लिये बनाया गया था।

कप्तान ने कहा कि घेर कर कछुओं के लिये भी एक तालाब बनाऊंगा पर पहले अपना ही घर बनाना उचित है।

बीसवां अध्याय।

जब ज़मीन सूख गई तब मकान बनाने के काम में खूब धूम धाम से हाथ लगा।

कप्तान को पहले से भी लकड़ी का मकान बनाने का तजरिबा था इसमें उनको इस काम में कुछ दिक़्क़त नहीं मालूम हुई। छत दरवाज़ा वग़ैरह बनाने में जहाज़ की टूटी लकड़ी से बहुत काम चला।

झंडा रोज़ फहराता था। कप्तान ऊंचे स्थान पर चढ़ कर हर रोज़ दूरबीन लगा समुद्र में देखते थे कि कोई जहाज़ आता है या नहीं।

पर कोई जहाज़ या डोंगी नहीं देख पड़ती थी। कभी कभी दूरबीन के शीशे पर किसी दाग़ से धोखा हो जाता था और उसीसे उबार होने की उमेद हो कर उनका दिल धड़कने लगता था। पर नहीं, सब ख़याल फ़ज़ूल था सिवा दाग़ के और कोई चीज़ न थी। उनको यही जान पड़ता था कि हम चारो ज़िन्दगी के बाक़ी दिन उसी निर्जन टापू में बितायेंगे। मकान और अपनी प्रीति पात्र स्त्री को देखने के लिये कितना उनका जी लगा था जो अपने पति और ज्येष्ठ पुत्र के वियोग से कितना दुख कर रही होगी।

अक्सर उनको अपनी छोटी लड़की का ध्यान आ जाता था जिसे फिर वह गले लगाया चाहते थे।

पर चाहने से क्या होता है उसका कोई फल नहीं है। टापू ही में हम लोग थे और वहीं रहने का लक्षण मालूम होता था। सब में उम्र उनहीं की बड़ी थी। उन्हीं ने देखा कि घबराने से काम न चलेगा, आ पड़ा है तो भुगतना ही पड़ेगा यह सब सोच समझ उन्हीं ने कर्त्तव्य यही समझा कि ऐसा करना चाहिये जिसमें हम तीनों का उत्साह कम न हो। सब बातों को मिलाने से ज़्यादे कारण उदास रहने का न था बल्कि धन्यवाद ही करने का था।

ऋतु सुहावना हो गया था। भारी बरसात से पत्तों में ताज़गी आ गई थी, पेड़ और फूलों का रंग बेहिसाब चटकीला निकल आया था, श्राम की मिहनत करने के बाद जंगल में घूमने से बड़ा श्रानन्द मिलता था। उसी समय चैनी भी अपनी विद्या के प्रभाव से काम के फल मूल की खोज में आंख इधर उधर फैलाता ही रहता था।

हम लोग केवल खाने ही की चीज़ में बराबर नहीं रहते थे, शोभा के फूल लता आदि की ओर भी ख़याल था।

नये मकान के चारो ओर बांस का खंभा लगा कर सायबान भी बना लिया गया था। वहां सूर्य की किरणों से अच्छा बचाव था, चैनी ने सुहावनी लता हर एक खंभे पर चढ़ाने के लिये लगा दी थी, जब वे फूलों और खंभों पर चढ़ गईं तो बड़ी शोभा मालूम होने लगी।

ओसारे के भीतर कपड़े से पेड़ों की छाल में, अजीब अजीब शक्ल के तितकद्दू के छोटे छोटे गमले बना कर और फूल लगा कर लटका दिये गये। किसी में जंगली सुहावनी जड़ी बूटी किसी में खूब फूलनेवाले फूल लगे थे।

चैनी को स्थान सुहावना बनाने में बड़ी नजर थी यहां तक कि गुफा में भी गमले के बदले तितकद्दू ही के गमले में जंगल से सुन्दर सुन्दर फूल लाकर उसने रक्खे थे। पहले उसके पिता को मालूम होता था कि यह सब वृथा समय नष्ट करना है पर धीरे धीरे इन सब सामानों से उनको भी घर ही सा सुख मालूम होने लगा।

भीतर का सामान छाड़ कर जब सब मकान बन गया तो कप्तान आराम कुर्सी पर ओसारे में बैठ शाम को तम्बाकू पीते थे तो देख कर यह बात उनको कबूल करनी पड़ती थी कि लता लग जाने से स्थान बहुत सुहावना हो गया। पर एक ही बात का उनको बहुत दुख था। तम्बाकू पीना उनके लिये बड़े सुख की बात थी यही सोच था कि अब यह छोड़ना पड़ेगा।

चुरट तो बहुत पहले ही तय हो गया था अब वह मामूली जहाजियों की तम्बाकू पीते थे। यह भी घट चली थी। एक पत्ती चैनी ने ढूंढ़ कर निकाली थी उसे सुखा कर कप्तान ने पीया भी था पर तम्बाकू सी वह अच्छी न लगी। इसके अलावे उस के नशीले होने से कप्तान ने समझा कि इससे जी बिगड़ जायेगा। बिना तम्बाकू पीये भी काम चल सकता था पर आदत बड़ी बुरी चीज़ है। उनको इतनी आदत पड़ गई थी कि छोड़ने के खयाल से बड़ा दुख होता था।

चैनी को मालूम था कि मेरे पिता को इस बात का दुख होता है। पर मुंह से एक बात भी उसने न निकाली, कप्तान को भी इसका ज़रा ध्यान न था कि चैनी को मेरे तम्बाकू के कारण फिक्र हो गई है। पर चैनी तम्बाकू पाने की आशा में हर एक नये फूल और पत्ती को ध्यान से देखता हुआ टापू में फिरता था।

एक दिन वह मामूल से दूर बढ़ गया था। कंधे पर टोकरी हाथ

में कुल्हाड़ी जैसे हमेशा रहती थी इस वक्त भी थी। घर से चलने के लिये कभी कोई फल रख लेता कभी कोई जड़ी उखाड़ लेता था। भोजन की सामग्री में साग सब्ज़ी, तरकारी वग़ैरह सब उसी की लाई हुई रहती थी।

जिस समय पहाड़ी पर वह पहुंचा तो दिन बहुत चढ़ चुका था दूब से भरी जगह में कहीं कहीं पत्थर के ढोंके निकले हुए थे धूप की तेज़ी और चलने की हरारत से इन पत्थर के चट्टानों में से एक के नीचे उसकी इच्छा हुई कि ज़रा लेट कर आराम कर लें। इसी इरादे से छाया में टोकरी कंधे पर से उतार उसने हाथ पैर फैलाया। सिर पर आकाश निर्मल था, टापू पर सूर्य की किरणों के पड़ने से रंग उसका सुनहला हो रहा था, पश्चिम की ओर आकाश का रंग गुलाबी हो रहा था और कोर पर देखने से ऐसा जान पड़ता था जैसे सुनहली कोर लगी हो।

वहां सूनसान था तो भी दृश्य बहुत ही सुहावना था। समुद्र की लहरों के तीर पर धीरे धीरे टकरा झाग से जो मधुर आवाज़ निकलती थी वह सुन पड़ती थी कभी कभी जंगल के पक्षियों की चिल्लाहट से वहां की शान्ति में खलल पड़ता था पर किसी मनुष्य की आवाज़ नहीं सुन पड़ती थी।

जैनी का स्वभाव सोचने का बहुत था इससे अकेले में बैठ कर सोचना उसे बहुत अच्छा मालूम होता था।

सोचने लगा, क्या हमेशा मुझे यहीं रहना पड़ेगा? सिर्फ़ तीन ही साथियों के साथ क्या इस निर्जन टापू में जन्म भर बिताना होगा? क्या ऐसा ही बुरा भाग्य हमारा हो गया?

यदि हमारा पहला हौसला पूरा हो जाता तो क्या जाने इस टापू में रह कर उससे अपेक्षा अधिक सुख बदा हो। अभी तो जिस दशा में हूं उसी में सन्तोष करना अच्छा है, भविष्यत ऐसा अंधकार और अनिश्चय से भरा है कि कुछ कहा नहीं जा सकता कि किस दिन क्या हो जाये। कहीं तेज़ हवा चले और "नोवास्कोशिया" की तरह कोई दूसरा जहाज़ अपनी राह से भटक कर चला आये, और यह भी संभव था कि किसी दिन इस टापू से निकलने की बहुत दिनों की इच्छा पूर्ण हो। तब तक

के लिये किताब मौजूद ही हैं उनमें मेरा जी लगता भी है अवसर अच्छा है पढ़ने ही में क्यों न उन्नति करें ?

जिसके दीमाग़ में बहुत सी बातें भरी हैं और जिसमें प्रति दिन प्रकृति की शोभा देख देख नई बात सीखने की शक्ति भी है वह कभी भी नाख़ुश नहीं रह सकता। और अब सैनी का दुनिया में सिर्फ़ रुपया कमाने ही का हौसला जाता रहा इससे अब केवल ज्ञान ही उपार्जन करने के लिये वह विद्या आज़माने लगा।

अब सैनी के मन के तरंग और विचार का हाल सुनते सुनते पाठकों का जी ऊबता आता होगा इस लिये समाप्त कर कहता हूं कि घास पर लेटने के कई मिनिट के बाद ही यदि वहां कोई रहता तो, एक अजीब तरह की आवाज़ सैनी की नाक से आती हुई सुनता। सच पूछो तो वह सो गया था! और वह आवाज़ उसके खर्राटा लेने की थी!

बहुत देर तक पड़ा पड़ा सोया रहा इस बीच में टापू पर अंधियारा फिर आने लगा, लाल लाल आकाश भूरे रंग का हो गया और रात आ गई। सैनी बिलकुल निडर हो कर सो गया था क्यों कि ऐसे निर्जन और सूनसान स्थान में उसका क्या नुक़सान हो सकता था ?

वह सुखदायी स्वप्न देख रहा था, एका एक जब तक वह नींद से चौंक कर न उठा तब तक किसी भय ने उसे न घेरा था।

कोई चीज़ लसदार और ठंढी ठंढी उसके हाथ पर से सरक कर जाती हुई मालूम हुई। हज़ारों जुगनु जो वहां मौजूद थे उनकी रोशनी से उसने देखा कि एक बड़ा भारी सांप है!

इक्कीसवां अध्याय।

जैसी दशा में सैनी की नींद खुली उसका जी कैसा हुआ होगा इसका वर्णन करने की अपेक्षा सहज ही में ख़याल कर लिया जा सकता है।

जहाज़ के टूटने से हम लोग शुरू शुरू जब टापू में रहने लगे तो

ज़रा सी आवाज़ सुनने से जंगली जानवर और जंगली आदमियों का भय दिल में पैठ जाता था।

अब इतने दिन, हफ़्ते और महीने बीत गये थे भय को कोई चीज़ ही नहीं सुनने में आई और न कुछ भयावना देख ही पड़ा था इससे एक तरह डरका ख़्याल ही जाता रहा था सिवा अपने अपने रोज़ीना काम के और किसी बात में मन को उद्वेग नहीं होता था।

जहां वह पड़ा था पास ही उसके वृक्ष पर एक बड़ा भारी सांप था। प्राणी तत्व जानने वाले प्रायः बारह तरह का भेद उनका जानते हैं।

रात होने के कारण चैनी नहीं पहचान सका पर उसे इतना ही देख पड़ा कि वह भयंकर जीव उसके सिर ही के पास एक डाल से लटकता हुआ है।

चन्द्रमा और जुगनु की रौशनी में उसे इतना ही मालूम हुआ कि लम्बाई कई फुट की है।

भयानक जंतु को देख सब ज्ञान जाता रहा फिर धीरे धीरे उसके जी में भय ने प्रवेश किया।

उसका रंग वह ठीक न कर सका लेकिन हक़ीक़त में पीठ अति सुन्दर लाली लिये हुए भूरे रंग की थी और पेट ख़ूब पीला पर जहां तहां खास करके दुम के नीचे भूरे रंग का दाग़ था। मुंह अजीब तरह का था कभी लंबा हो जाता, कभी पत्ते की तरह चौड़ा हो जाता था। पीछे हम को मालूम हुआ कि सांप का ऐसा करना फन उठाना कहलाता है।

यदि लंडन के किसी पशुशाला में पींजड़े में सांप रहता और चैनी बाहर से चुपचाप देखता और कोई ख़ौफ़ की बात न रहती तो सब बारीकियां बड़ी ख़ुशी से तजबीज करता पर इस वक़्त हालत दूसरी थी जब कि उसने सांप को सामने सामने पाया।

गाढ़ी नींद में सांप का ठंढा ठंढा बदन छू जाने से चैनी सीधा हो उठ बैठा और एक टक अशुभ मेहमान को देखने लगा।

उसी घड़ी चन्द्रमा जो मेघ में कुछ छिपा था साफ़ निकल आया। चैनी क्या देखता है कि सांप सिर ऊंचा कर के उस पर हमला करना चाहता है।

पल भर तो वह काठ सा देखता रहा फिर आत्मरक्षा यानी अपने प्राण बचाने का जब ख़याल आया तो झट कुल्हाड़ी ले उसने खड़े ही बड़े ज़ोर से कुल्हाड़ी चलाई। पर अफ़सोस! निशाना पूरा नहीं था इससे कुल्हाड़ी झूठी पड़ी।

चांदनी में लोहे की चमक से वह जन्तु ज़रा डर गया और जिस डाल से लटक रहा था उसी में लिपट गया इतने में चैनी पूरे होश में आ गया और सम्हल कर फिर कुल्हाड़ी से उसने निशाना किया। इस बार चोट पूरी बैठी। सिर ही पर वार लगी और सिर जो पहले से जंचा किये हुए था सामर्थ हीन हो कर पेड़ से लग कर गिर पड़ा।

इतनी बातें इतनी शीघ्र हो गईं कि कार्रवाई करलेने के बाद चैनी को अपने भय का ज्ञान हुआ।

बड़ा भयानक सांप मर गया और उसके प्राण भी बड़े जोखिम से बचे।

यदि गाढ़ी नींद में सांप चैनी को देखता तो फिर उस नींदसे चैनी की आंख कभी न खुलती।

इस ख़याल से उसका कलेजा दहल उठा! सच्चा भय तो दूर हो गया था पर अब अपनी दशा का ख़याल हो जाने से झूठे भय ने ऐसा घेरा कि अच्छी तरह से वह भय भीत हो गया।

यहां से ज़रूर, अब ज़रूर भागना चाहिये—यद्यपि आज तक टापू में रहे और सांप न देख पड़ा क्या जानें अब उनकी खान यहां पर हो।

उसने फुर्ती की। उसको यही मालूम हुआ कि यहां से भागने ही में कल्याण है।

थोड़ी दूर नीचे एक नाले में सुन्दर साफ़ जल बह रहा था चांदनी में बिलकुल चांदी ही सा चमकता था। चारो ओर ताड़ लम्बे लम्बे खड़े थे और अनजान पेड़ों की छाया रास्ते में पड़ती थी।

बेसिलसिले चारो ओर हर तरह के पेड़ पत्ते उपजे हुए थे जिनकी शोभा वर्णन करना कठिन है। सुन्दरता में नन्दन बन हो रहा था पर वहां सांप थे यही दुख की बात थी! कभी पेड़ की डालों में फंसता, कभी

पत्थरों से चोट खाता, कभी सीज के कांटों मे चुभता हुआ पोला और थका हुआ चैनी किसी तरह गिरता पड़ता घर पर पहुंचा।

जब चैनी उधर गया था तो कप्तान और स्टीफन मछली मारने को गये थे और जब लौट कर घर आया तो वह लोग भी तुरत ही आ चुके थे और मुझे सोये बहुत देर हो चुकी थी।

चैनी की शक्ल देख और सब किस्सा सुन उसके पिता को बहुत भय हो गया।

अब तक ऐसे निर्बिघ्न और चैन से हमलोग टापू में थे कि यह बात भूले ही जाते थे कि कौन कौन भय इस टापू में है जिनकी हम लोगों को खबर नहीं है और जिनसे सचेत रहना चाहिये।

बेचारे चैनी के दिल में इतना भय पैठ गया और इतना बीमार मालूम होने लगा कि कप्तान और स्टीफन बहुत डर गये।

उसे लोगों ने बिछावन पर सुलाया एक प्याला चाय पिलाया फिर जब मालूम हो गया कि बुखार आ गया तो रात भर माता की तरह उसकी सेवा करते रहे।

भोर होते होते बुखार की नींद आ गई पर बेचैनी नहीं गई थी। बीमारी देख कप्तान बहुत डर गये क्यों कि बड़ी भारी विपत थी।

जब से हमलोगों ने टापू पर पैर रक्खा था तब से अब तक हम सभी पूरे तन्दुरुस्त थे। पानी बरसता हो या धूप पड़ती हो, चाहे कैसा ही ऋतु क्यों न हो सब कोई हर तरह से चंगे थे और सामर्थ भर सब काम करने को मुस्तैद थे।

पर अब चैनी धमक में पड़ा था। बीमारी की पहचान के लिये चिकित्सा शास्त्र का काम न था। थकावट और भय से उसके दिल पर बड़ा भारी असर पहुंचा था इस से बहुत ही जोर का बुखार उसे आ गया था।

कई दिन और रात तक चैनी अधमूआ सा हो कर पड़ा रहा। जो उसे अगोर रहे थे उनके दुख का क्या पूछना था।

मैं बहुत दुखी हुआ। मुझ से जल्दी सब से प्रीति हो जाती थी। जिस मंडली में मैं रहता था बिना उनको प्यार किये रहा ही नहीं जाता

था। यद्यपि चैनी सदा चुपचाप और अजीब ढंग का था तो भी उसकी बीमारी का मुझे इतना दुख था जैसे कि मेरा भाई ही बीमार हो। और चैनी बहुत बीमार था। कई दिन रात तक तो उसे होश न रहा और बर्र बकता था कभी कहता कि कमरा सांप से भरा है उनकी आखें चमक रही हैं, कभी गुम हो जाता जिससे देखने वालों को और भी डर मालूम होता था। मैंने उस के लिये फल लाने और दवा बनाने में ज़रा भी देह न चुराया और ऐसे दुख और सोच के समय में मुझे बहुत गम्भीरता और शान्ति के साथ सेवा करते देख कप्तान मुझे बहुत प्यार करने लगा।

अन्त को बुखार कम हुआ और चैनी अच्छा होने लगा।

वह बहुत ही कमज़ोर हो गया था ऐसा सफ़ेद और दुर्बल हो गया था कि जब उसे कपड़ा पहना कर ओसारे में चारपाई पर लेटाया गया तो मुझे अच्छा के बदले बुरा मालूम हुआ।

जिस दिन उसने चारपाई छोड़ी रविवार था।

एक काम चैनी ने अपना मामूल कर रक्खा था दिन भर जो कुछ होता उसे शाम को लिख कर तारीख़ दे देता था।

शुरू से यह काम वह नहीं करता तो दिन किस तरह जाता है और आज कौन वार है इसका पता लगना कठिन हो जाता। उसकी बीमारी में स्टीफ़न ने यह काम अपने सपुर्द कर लिया था इससे दिन मालूम करने में भूल होने का कोई भय न था। हर रविवार को काम बंद रहता था।

ईसाइयों के लिये रविवार बड़ा पवित्र दिन है इससे जब उस दिन चैनी ने नहा धो कपड़े बदले तो सब को बड़ी खुशी हुई। कमज़ोरी उसे बहुत थी, हाथ इतने सफ़ेद थे कि उनमें लोहू का दरस भी नहीं था। मुझे देखते ही रुलाई आ गई।

चैनी के बीमारी भर सब दुखी रहे। जब से दिन दिन उसे भूख खुल कर लगने लगी और शरीर में बल आने लगा तब से जो आनन्द सब को होने लगा उसका मुंह से बर्णन करना या क़लम से लिखा जाना सामर्थ्य से बाहर है।

प्राप्ति स्वीकार।

इस मास में एक पुस्तक कारनामः राय बहादुर दीवान जैप्रकाश लाल साहब C. I. E. बड़े बड़े सुन्दर नागरी अक्षरों में छपा हुआ इसको मिला जिसमें रियासत डुमरांव के बहुत कुछ हाल मिलता है अवश्य देखने योग्य है उत्साही जनों को चाहिये कि एक पोस्टकार्ड पंडित नक्छेदी तिवारी डुमरांव के पास भेज दें वहां से बेमूल्य यह पुस्तक उनको मिल जायेगा।

बांकीपुर महल्ले चौहट्टा में युनिवर्सल प्रोविडेन्ट फन्ड सोसाइटी नाम की एक जीवन बीमा की सभा स्थापित हुई है इस का विज्ञापन हम लोगों को मिला है और इसके नियम और उद्देश्य एक अलग कागज़ पर विज्ञापन के तौर पर इस अंक के बिहार-बन्धु के साथ बंटा है। इस को देखने से मालूम होगा कि धन हीन भले आदमी अपने मरने के बाद अपने बाल बच्चों के लिये कैसी सहज रीति से धन का बन्दोबस्त कर सकते हैं। इस सभा की खूबी यह है कि हिन्दू, मुसल्मान, क्रिस्तान आदि सभी धर्म के क्या स्त्री क्या पुरुष सभ्य हो सकते हैं। यह सन्देह हो सकता है कि बहुत सी जीवन बीमा की सभाओं के रहते नई सभा करने का क्या नफ़ा जवाब में यह कहा जा सकता है कि इस सभा के नियम औरों के तुलना से यह स्थीर करते हैं कि धन हीन भले मनुष्यों के लिये यह बहुत अच्छी है। विलायती सभाओं में बिना बहुत आमदनी हुए कोई जीवन बीमा नहीं कर सकता और और देशी सभाओं में भी सब जात और धर्म के स्त्री पुरुष सभ्य नहीं हो सकते।

बहुतेरे सोचेंगे कि थोड़ी उम्र में ज़ियादा दिन तक बचने की उमीद रहती है इसमें चन्दा अधिक, और बुढ़ापे में जीवन बीमा करने से चन्दा कम देना होगा और नफे की ज़ियादा उमीद है पर मौत का कोई ठिकाना नहीं है। हर सभ्य के मरने के बाद उनके वारिसान को पांच हज़ार रुपये तक पाने की उम्मीद है। हर सभ्य को नाम लिखवाई १॥) रुपया और हर महीने सिर्फ ⅛) देना होगा यदि एक या एक से अधिक सभ्य के किसी एक महीने में मरने से १) रुपया बाकी सभ्यों को देना होगा। ऐसा सुबीता देखला कर सभा उम्मीद करती है कि बिना विलम्ब क्या धनी क्या निर्धन क्या स्त्री क्या पुरुष सभी अपनी अपनी जन बीमा करेंगे।

श्री मान छोटे लाट का बांकीपुर में आगमन और दरबार।

श्री मान छोटे लाट सर ए० पी० मकडोनल साहब डाकगाड़ी से ७—२७ मिनट पर उतरे।

हाकिमान रईस और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर और म्युनिसिपल कमिश्नर अगोनी के लिये मौजूद थे। गार्ड औफ़ औनर ने सलामी दी और म्युनिसिपल कमिश्नरों ने ऐड्रेस दिया।

स्टेशन से कमिश्नर की कोठी तक दो पट्टी पुलिस खड़ी की गई थी स्टेशन से लाट साहब घोड़े से वालंटियरों की अर्दली के साथ कोठी पर पहुंचे।

लाट साहब की बांकीपुर का प्रोग्राम नीचे लिखा प्रचारित हुआ था।

२९. जुलाई—७-२७ आगमन और म्युनिसिपल ऐड्रेस।
" —१२-० सरकारी दफ़्तर देखना और डिस्ट्रिक्टबोर्ड का ऐड्रेस।
" —४-० मौलवी खुदाबख्श खां साहब की लाईब्रेरी देखना और ज़नाना मिशन अस्पताल की नींव।

३०वी जुलाई—रविवार खाली दिन।

३१वीं " —सामवार—गुलज़ारबाग़ अफीम की कोठी और इन्डस्ट्रियल स्कूल देखना।

१२-२ बजे तक—अंग्रेज़ों की मुलाक़ात।

४ बजे —दरबार।

१ली अगस्त—मंगल ८-९-१०—रईसों की मुलाक़ात

१२-२ बजे —रईसों की मुलाक़ात

५ " —नवाब विलायत अली खां का न्योता।

२री अगस्त—७-५५ बिदा होना।

दरबार।

दरबार के लिये कौलेज ही का मकान ठहराया गया था। दो बजे से तइयारियां होने लगीं। शहर भर की पुलिस बुलाई गई थी जो हाते भर में छितरा दी गई थी और फाटक से पोर्टिको तक दो पट्टी कतार में खड़ी कर दी गई थी।

दानापुर से देसी फौज़ भी बुलाई गई थी।

फाटक से कौलेज के दरवाज़े तक झंडे खड़े किये गये थे और ऊपर भी लगा दिये गये थे उस समय की शोभा अपूर्व थी दो ही बजे

से रईसों की गाड़ियां आने लगीं, लोग उतर कर भीतर गये और अपने अपने स्थान पर बैठे। उनकी गाड़ियां मकान के उत्तर ओर जाकर खड़ी होती थीं।

चार बजते लाट साहब पहुंचे पल्टन ने क़वायद की सलामी बजाया। महाराजा बहादुर दरभंगा को दो तीन मिनट की देर हो गई थी। वह भी जब आ गये तब दरबार का काम शुरू हुआ।

पोर्टिको से दरबार हौल तक बिलकुल लाल बनात बिछी हुई थी और दरवाज़े पर से हौल के दरवाज़े तक सीढ़ियों पर दोनों ओर क्रोटन और फूल वग़ैरह के गमले सजे गये थे और बिलायती खुशबू से तर हो रहा था। दरबार हौल में दोनों ओर कुर्सियां लगी थीं और बीच में राह छोड़ दी गई थी। जितने दरवाज़े वहां थे सब में बिलायती जाली-लैट के सफ़ेद पर्दे लगे थे। दीवारों पर थोड़ी थोड़ी दूर पर गोटा टकी झंडियां लगा दी गई थीं। कार्निस के नीचे चारो ओर लाल एकरंगे से हाथ भर तक मढ़ दिया गया था और उस पर भी गोटे पट्टी से काम लिया गया था। हौल में उत्तर तरफ़ बीच में एक तख़्त पर लाट साहब के बैठने के लिये गद्दा कुर्सी रक्खी थी।

लाट साहब के गाड़ी से उतरने पर मजिस्ट्रेट मिले और उनके दरबार हौल में पहुंचने पर सब खड़े हो गये और जब तक तख़्त पर जाकर लाट साहब न बैठे सब खड़े ही रहे। इसके बाद चीफ़ सेक्रेटरी गवर्नमेन्ट बंगाल और पटने के कमिश्नर लेफ्टेनेन्ट कर्नल सर डबल्यु० बी० हडसन साहब को लाट साहब के पास ले गये सब लोग खड़े हो गये और श्री मान ने उक्त साहब को सनद दी जिसे चीफ़ सेक्रेटरी ने पढ़ कर सुना दिया इसके बाद श्री मान ने हडसन साहब की प्रशंसा कर के अन्त में कहा कि—

यह गौरव जो आप को महारानी एमप्रेस विक्टोरिया ने दिया है मैं समझता हूं कि ऐसा कोई इस बिहार में न होगा जो मेरी राय में मिल कर यह न कहे कि आप इस इज़्ज़त को भोगने के लिये बहुत दिन तक जीते रहें।

इसके बाद हडसन साहब अपने स्थान पर बैठाय गये और सब आदमी बैठे। इसके बाद महाराजा हर बल्लभ नारायण सिंह को उसी तरह सनद आदि दी गई तब श्री मान ने यह कहा कि—

महाराजा हर बल्लभ नारायण सिंह—मुझे लाट साहब की ओर से आप को सी० आई० ई० का तमगा नज़र करने को कहा गया है और मुझे इस आज्ञा को पूरी करने में बड़ा संतोष होता है मुझ से आप से सन १८७५ में मुलाकात है कि जब आप ने सन १८७४ के अकाल में बड़ा भारी काम किया था जिसके लिये आप को राजा का खिताब मिला। तब से स्कूल अस्पताल दवाखाना आदि साधारण के भलाई के कामों में उदारता से आप बराबर दान देते गये जिसके कारण सरकार बराबर अपना आनन्द आपको प्रगट करती गई। आपका डफ़रिन फ़न्ड और इम्पीरियल इन्स्टीट्युट में बहुत दान देना साधारण का उपकार और उदारता को सूचित करता है इन सब के साथ ही आप अपनी बड़ी ज़मींदारी के बन्दोबस्त में सतर्क और बिचार शील हैं जिससे आप की गिनती अच्छे ज़मींदारों में है और आप न्याय और परिश्रम के साथ औनरेरी मजिस्ट्रेट का काम करते हैं जिसके लिये गवर्नर जनरल ने आप को महाराजा की पदवी दी और अब बिशेष रीत से महारानी बिक्टोरिया ने आप को सी० आई० ई० का पद दिया। मुझे आशा है कि आप दीर्घ जीवी हो कर इसे भोगेंगे।

इसके बाद राय जय प्रकाश लाल बहादुर को सनद आदि दी गई और उसी तरह सनद के पढ़े जाने के बाद श्री मान ने कहा कि—

राय जयप्रकाश लाल बहादुर,—सी० आई० ई० के तमगे को जिसे राज राजेश्वरी महाराणी कैसरे हिन्द ने दान किया आपको अपने हाथ देने में मुझे बड़ा आनन्द होता है, उन बहुतेरे कामों का बर्णन करने में बहुत समय लगेगा जिनके द्वारा आपने अपने कामों को साधारण में प्रकास करने का अधिकार गवर्नमेन्ट पर दृढ़ किया है।

आप सन १८७४ ई० से डुमराँव के महाराजा बहादुर के दीवान हैं, बीस वर्ष के लगभग इस बड़े समय के बीच आप ने भारी और आवश्यक कर्तव्यों को करने में सदा सर्वदा गवर्नमेन्ट की प्रसन्नता को योग्यता के साथ प्राप्त किया।

मैं उस उत्साह और यतन को विशेष कर के कहना चाहता हूं कि जिन से अफ़गानिस्तान के संग्राम की सेना के सुख की सामग्री के विषय में आपने महाराजा बहादुर के राज योग्य और उदार आज्ञयों को पूरा किया और आठ वर्ष पहले लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर की कौंसिल (सभा) के मेम्बर (सभासद) हो कर और उसके पीछे सोन के नहर की जांच की सभा के भी सभासद (मेम्बर) होकर जो जो काम किया उनका भी गुनाबाद करना चाहता हूं। मैं आशा करता हूं कि अभी आप के सनसुख साधारण भलाई करने का बहुत अवसर है और मैं विश्वास करता हूं कि जिन प्रतिष्ठाओं को आपने प्राप्त किया है उनको बहुत दिन तक भोगियेगा।

इसके बाद राय धीरज करण बहादुर और राय मेदनी प्रसाद बहादुर एक के बाद दूसरे की मजिस्ट्रेट पटना तख़्त के सामने ले गये और कमिश्नर ने लाट साहब के सामने पेश किया जिनके हुक्म से उन्हों ने खिल्लतें दीं सनद चीफ़ सिक्रेटरी ने पढ़ के सुना दिया तब लाट साहब ने कहा—

राय धीरज करण बहादुर—आपने अपने देश वासियों का और गवर्नमेन्ट का बहैसियत ओनरेरी मजिस्ट्रेट और मुंगेर बेंच के प्रेसिडेन्ट बहैसियत बाइस चेयरमैन मुंगेर म्युनिसिपैलोटी और चेयरमैन लोकल बोर्ड के बहुत उम्दा उम्दा काम किया है और इन उम्दा कामों के इनाम में हम को बड़ी कुशी मिलती है कि हमारे ज़रिये आप को राय बहादुर का खिताब दिया जाता है।

राय मेदनी प्रसाद बहादुर—आप ने हाल ही बड़ी पुरानी और इमानदारी की नौकरी बहैसियत डिपटी मजिस्ट्रेट कलेक्टर के पूरी की है और आप ने अपने देश के आदमियों को बहुत अच्छा नमूना अपने काम को पूरा कर के और साधारण की भलाई करके दिखलाया है। मुझे इस बात से बड़ी खुशी मिलती है कि मैंही आप पर राय बहादुरी [illegible]

इतना कहने के बाद वे लोग अपने अपने स्थान पर पहुंचाये गये तब श्री मान लाट साहब ने खड़े होकर दरबार में यों कहा—

महाराजा राजा ओ बिहार के रईस—अभी जो कुछ मैं कहूंगा उससे पहले यह मैं कहता हूं कि इस दरबार में सभापती होने से मुझे यह खास तरह की खुशी मिलती है क्यों कि मैं सिर्फ़ बहुत से पुरानी मित्रों ही से घेरा हुआ अपने को नहीं पाता हूं पर मुझे लाट साहब की ओर से उन पुरानी दोस्तों में से कई को सनद ओ खिल्लत वगैरह नज़र करने का काम भी मिला है जिसे महारानी क्विन इम्प्रेस ने अनुग्रह करके गुणों को समझ कर दिया है।

इससे बढ़ कर दूसरा कोई काम नहीं होता जिसे मैं खुशी से कबूल करता या जिस पर मेरा हक़ ज़ियादे रहता यह खुश नसीबी है इन्डियन सरविस की कि किसी सरकारी अफ़सर को अपने काम के पूरे करने में अपनी आन्तरिक इच्छा पर कुछ दबाव नहीं डालना पड़ता। लेकिन आज मुझ पर विशेष रीत का अनुग्रह है कि मैं सरकारी काम भी कर रहा हूं और अपने मन की इच्छा को भी पूर्ण कर रहा हूं। तौ भी इन सब खुशी के बीच में शायद खुशी बहुत बढ़ जाने की वजह से कई उदासी की बातें मेरे मन में आती हैं कई पुराने आदमियों को मैं नहीं देखता हूं। लौन बक्सवेल और चार्लस बर्सली और बेतिया के महाराजा हरिन्द्रकिशोर को नहीं पाता हूं। वे लोग हमारे पहलेही चले गये और पर्दे के पीछे पड़ गये लेकिन अपने उत्तम गुण और अपनी सूकीर्त्ती की याद छोड़ गये।

महाशय आप लोग हमारा दोष न देंगे यदि इस बड़े अवसर पर दो चार बात दो बड़े बड़े विषयों पर हम कहें जो हाल से हमारे मन को बड़े चिन्ता में डाले हुए हैं आप से अर्ज़ करते हैं कि जो बातें हम कहेंगे उसे आप सिर्फ़ लेफ़्टेनेन्ट गवर्नर की बातें कही हुई न समझिये लेकिन इस दोस्त की भी जिसकी शुभ चिन्तायें सदा इस प्रान्त के साथ हैं जिसने अपनी ज़िन्दगी के बहुत खुश हिस्से इसमें बिताये हैं।

१ ली बात जो आप लोगों से हम कहा चाहते हैं वह यह है कि मज़हबी क़ुर्बानी के बारे में हिन्दू और मुसलमानों में हाल से शोक जनक और अभाग्य सूचक मन मुटाव हो रहा है। इस मन मुटाव

का फल यह हुआ है कि पड़ोसियों में खून हो गया जिससे लोग सज़ा दिये जाने के लिये फौज़दारी कचहरी में लाय गये और कई गांवों में स्पेशल पुलिस तैनात करना पड़ा। महाशयो इस तरह का मन का भाव बिहार प्रान्त के लिये नई बात है। बारह वर्ष पहले जब आप लोगों के साथ हमारा समागम था उस वक्त ऐसी कोई बात न थी। हिन्दू मुसल्मान तब मेल से रहते थे न कोई मुसल्मान योंही किसी हिन्दू का अपमान करता था न ज़बरदस्ती छेड़ छाड़ हिन्दू लोग मुसल्मानों से करते थे। अब बातें क्यों बदल गईं और मेल और प्रेम के बदले में कठोर शत्रुता ने जगह ली? एक दल से मुझे मालूम हुआ है कि हिन्दू पड़ोसियों के मनोभाव की तरफ़ मुसल्मान लोग पहले से अब कम ध्यान देते हैं, दूसरे दल के लोग कहते हैं कि गो हत्या के कारण ज़बरदस्ती छेड़ छाड़ करने का भाव हिन्दुओं के मन में उदय हो गया है और वह भाव हिन्दू लोगों में बढ़ रहा है। इस समय इन बातों को हम तौलना नहीं चाहते हैं और न किसी दल को बदनामी लगाया चाहते हैं। हमारी इच्छा यह है कि आप लोगों के सुबुद्धि आप लोगों के सद भाव और धर्म सम्बन्धी सहनशीलता की दोहाई दें। हमलोग सब कोई जानते हैं कि क़ुर्बानी करना मुसल्मानी रसम का ज़रूरी हिस्सा है। हम लोग सब कोई जानते हैं कि गो हत्या करना पक्के हिन्दुओं के लिये बड़ी घृनित बात है। यह सब जान कर भी ऐसा असहनशील और निर्दई इस दरबार में कौन मुसल्मान है जो ज़बरदस्ती क़ुर्बानियां अपने हिन्दू पड़ोसी के बहुत दिन के चले आये धर्म सम्बन्धी विश्वास पर इस तरह का ज़ुल्म करेगा? कौन हिन्दू अपने मुसल्मान पड़ोसी को अपने धर्म के ज़रूरी हिस्से को करते हुए रोक सकता है? महाशयो यह सब बातें उदारता और सहनशीलता की हैं दूसरे के साथ वैसाही बेवहार करो जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें। मुसल्मान लोग अपने बड़ों की तरह बेतकरार मज़हबी रसमें अदा किया करें पर उनके अदा करने में वह हिन्दुओं पर ज़ियादती न करें जिसे हिन्दू लोग घृना से देखते हैं और दुखित होते हैं। और हिन्दू भी मुसल्मानों को अपने मज़हबी रसमों को अदा करते योंही छेड़ छाड़ न करें।

मुझे मालूम हुआ है कि मुसलमानी रसम में गो हत्या करना कोई ज़रूरी अमर नहीं है और खस्सी भेड़ी या और जानवर जिनके खुर फटे हैं और जिन की हत्या पर हिन्दू लोग इतना ध्यान नहीं देते उनसे भी बखूबी काम निकल सकता है, इसका भी ज़िक्र है कि गवर्नमेन्ट गो हत्या की मनाही कर दे महाशयो हज़ारों बरस से धर्म सम्बन्धी बेवहार जो चला आता है क्या गवर्नमेन्ट उसको रोक दे? क्या गवर्नमेन्ट यह आज्ञा दे कि मुसलमान या हिन्दू दूसरे का देवता पूजें? और अगर नहीं तो भला गवर्नमेन्ट कैसे कह सकती है कि मुसलमान अपने मजहबी रसमों के अदा करने में किस जानवर को कुर्बानी करें और किसकी नहीं? यह बात अपने विवेक के साथ और अपनी चारो ओर की अवस्था को विचार कर के तै करना चाहिये और हम चाहते हैं कि हर धर्म सम्बन्धी ज़ातों में दूसरे के धर्म के प्रति कुछ न कुछ उदारता आन्तरिक रहती है उसमें भी इस प्रश्न के निर्णय करने में सहायता ली जाये।

सरकारी राज में सब को अधिकार है कि लोग अपने २ ढंग से ईश्वर की पूजा करें और यथोचित रीति से कार्य्य करने में उन को सरकार से रक्षा लाभ का भी अधिकार है। मुसलमान अपने पूर्व पुरुषों के रीत्यानुसार कुर्बानी करें पर जहां हिन्दुओं की बस्ती है वहां इस ढंग से कुर्बानी नहीं करें जिस से हिन्दुओं के दिल में चोट पहुंचे और उनका क्रोधानल भभक उठे। हिन्दू मुसलमानों के धर्माचार में हाथ न डालें और न आईन को अपने हाथ में ले बैठें। सरकार अन्याय को रोकने और दुराचारी को दंड देने में सदा मुस्तैद है। महाशयगण यह ऐसी साधारण बात है कि शांति पूर्वक बार्तालाप में मुसलमान और हिन्दू दोनों इस को ऐसे एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि ऐसी प्रसिद्ध श्रोता मंडली में हम यह विषय छेड़ने में भी हिचकते यदि हाल की अनेक घटनाओं से यह बात प्रगट नहीं होती कि बिहार प्रान्त के किसी २ भाग के लोगों में यह बात भूली सी मालूम पड़ती है। हम जानते हैं कि यह द्वेष भाव उच्च श्रेणी के लोगों की अपेक्षा नीच श्रेणी के लोगों में अधिकतर पाया जाता है और बिहार के सज्जनों में क्या हिन्दू और मुसलमान दोनों में मित्रता तथा सुहृदयता विराजमान है। गत कई

दिनों में हमको इसके अनेक प्रमाण मिल गये हैं । ईश्वर करे ऐसा मेल मिलाप बहुत दिनों तक बना रहे । पर अब बिहार निवासी शिष्ट जन, आप लोगों पर एक जवाबदेही है जिसे अंजाम करने के वास्ते हम आप लोगों से कहते हैं। हम आप लोगों से निवेदन करते हैं कि आप लोग अपनी प्रजा वर्ग में अपने बड़े अधिकार को इस रीति से काम में लाइये कि इन झगड़ों और गुल गड़प्पों का अंत हो जाय और सरकार को फिर वैसी सख़्त कारवाई नहीं करनी पड़े जिस से इस साल का भारी बखेड़ा रोका गया और अधिक सख़्ती की तो बात दूर रहे यह मेरी इच्छा है कि धर्म की उत्तेजना में जो कोई पहले पहल अन्यायी घटना विशेष हो जाय तो यथा शक्ति उसपर नर्मी दिखलाई जाय। घटना प्रायः धर्म सम्बन्धी उमंग के वेग से हुआ करती है पर आदि ही से उसे रोकना जरूर है नहीं तो इस से असंख्य घटनाओं की संभावना होती है । हे महाशयगण हम निवेदन करते हैं कि आप लोग हमको इस के रोकने के लिये कठिन उपाय रचने से बचाइयेगा।

दूसरी बड़ी बात जो श्री मान ने कहा वह कडास्ट्रल सर्वे के बारे में थी जिस की बनेगा तो हम दूसरी बार सुनावेंगे।

ऐड्रेस समाप्त हो जाने के बाद चीफ़ सेक्रेटरी महाराजा नवाब और राजाओं को तख़्त के सामने ले गये जहां उनको अतर और पान लाट साहब ने दिया । समसुलउलमा महामहोपाध्याय, खां बहादुर और राय बहादुरों को चीफ़ सेक्रेटरी और कमिश्नर ने अतर पान दिया। बाकी जितने रईस थे उनको अतर और पान कमिश्नर के पर्सनल असिस्टेन्ट और चीफ़ सेक्रेटरी के असिस्टेन्ट ने दिया। इस तरह दरबार की कारवाई ख़तम हुई।

वर्टली में जो वालनटियर थे वे उतर कर लाट साहब के पीछे कतार में खड़े थे वही आगे आगे चले और जिस सिलसिले से दरबार हौल में गये थे उसी सिलसिले से लाट साहब आदि बाहर निकले । श्री मान ने कमिश्नर साहब की कोठी में पहुंचने के बाद वालनटियरों को हाजिरी के लिये धन्यवाद देकर विदा किया।

दीवान राय जय प्रकाश लाल बहादुर C. I. E.

इस अवसर पर हमको उचित है कि कुछ समाचार पाठकों को दीवान रियासत डुमराँव राय जयप्रकाश लाल बहादुर C. I. E. का सुनायें कि यह कैसे पुरुष हैं जिनको गवर्नमेन्ट ने यह पदवी दी।

रायबहादुर दीवान साहब मौज़ा अपहर के एक प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित कुल से हैं। जो लोग मौजा अपहर से अभिज्ञ हैं वे भली भाँति जानते हैं कि दीवान साहब के कुल में सनातन से लोग उच्च पदों पर सुशोभित होते आये हैं जिससे इस कुल को पूर्ण रूप से गौरव वा श्रेष्ठता प्राप्त है।

जिस समय भारतवर्ष मुसल्मान बादशाहों के अधीन था उस समय भी दीवान साहब के प्रपितामह पितामह इत्यादि उच्च उच्च पदों पर नियुक्त थे जिसका प्रमाण उन लेखों से होता है जो बादशाहों ने प्रसन्नता पूर्वक उक्त महोदय के वंशधरों को प्रदान किया है और श्रीमान का विवाह भी राय बहादुर मुन्शी अनन्दी प्रसाद साहेब बैकुंठवासी मेम्बर कौन्सिल रीजन्सी ग्वालियर की पौत्री में हुआ है।

नीति निपुण, सरल स्वभाव दीवान साहेब का बरताव राज रियासत के समस्त कर्मचारियों, सेवकों, के साथ ऐसा रहता है कि सब कोई उक्त महाशय के शुभचिन्तक बने रहते हैं, कभी किसी के मुख से किसी प्रकार की निन्दा सुनने में नहीं आई, विशेष प्रशंसा की बात तो यह है कि दीवान साहेब से उनके स्वामी, महाराजा साहेब सन्तुष्ट, गवर्नमेन्ट प्रसन्न, प्रजा कृतार्थ, सर्व्वसाधारण राज़ी, फिर एक राज रियासत के प्रधान मन्त्री की इस से अधिक नेकनामी और खुशकिस्मती क्या होगी? जिसका परिणाम यह है कि सर्व्वसाधारण धन्यवाद सहित आशीर्वाद देता है, स्वामी ने पुरस्कार में जागीर प्रदान किया, गवर्नमेन्ट ने उपाधि और तमगे से भूषित किया—गवर्नमेन्ट के हुक्काम औ अफ़सरान कृपा दृष्टि रखते और प्रशंसा करते हैं।

दीवान साहेब पक्षपात रहित मनुष्य हैं किसी धर्म किसी जाति का कोई क्यों न हो सब के साथ सम भाव, रखते, और सबके सब पर सम दृष्टि रखते हैं, निज स्वार्थ को जानते नहीं कि किस पक्षी का नाम है।

परमार्थ को अपना मुख्य धर्म समझते हैं। अभिमान, अहंकार उनके शरीर में लेशमात्र नहीं है। दीनता, नम्रता आप में इतनी है कि प्रत्येक छोटे बड़े से मित्र भाव रखते हैं।

सहन शीलता के सुमेरु हैं, क्रोध का नाम तक नहीं जानते, सब कामों को बिचार कर करते, सब का परिणाम पहिले ही से सोच समझ लेते हैं।

ऐसे बड़े अधिकार पाने पर भी कभी किसी प्रकार से किसी मनुष्य पर अनुचित क्रुद्ध नहीं हुए यदि कोई अधीनस्थ कर्मचारी उनके मत से किसी विषय में असम्मत हुआ तो उस से असन्तुष्ट नहीं होते बरन उसपर न्यायपूर्वक पूरा पूरा बिचार कर यदि उसका मत उचित जान पड़ा तो उसको सादर ग्रहण करते हैं इसको अत्यन्त न्यायशीलता कहना चाहिये।

यद्यपि किसी प्रजावर्ग वा किसी कर्मचारी से एक पैसे की भी कोई वस्तु भेट में स्वीकार नहीं की।

वर्त्तमान समय के अमीरों और रईसों की भांति आपको ऐश, आराम पसन्द नहीं है सर्व्वदा उद्यम में प्रवृत रहते हैं, मेहनत से मुंह नहीं मोड़ते, प्रातःकाल से आधीरात तक बराबर राज रियासत का कार्य्य करते हैं, प्रत्येक कामों को स्वयं जांचते हैं, जहां जाने की आवश्यकता पड़ती है स्वयं जाते हैं, चित में किञ्चित मात्र भी आलस्य नहीं है—अभी दूर देश की यात्रा से वापस आये हैं हाथ मुंह भी नहीं धोया और कोई तार कहीं से आया तुरत वहां चले गये, कचहरी से आती समय यदि रास्तेही में कहीं जाने की आवश्यकता मालूम हुई तो बाहरही बाहर वहीं चले गये।

अपने स्वामी के आज्ञा पालन में, राज रियासत के प्रबन्ध में, जो कुछ कठिनाइयां उपस्थित होती हैं उनको सहर्ष, सहनशीलता के साथ समापन करते हैं।

प्रगट हो कि उक्त दीवान साहब तीस वर्ष से इस राज रियासत के कर्मचारी हैं, और अपनी सत्यता, प्रभु भक्ति, नीतिज्ञता और कुशलता से बराबर उन्नति को प्राप्त होते रहे यहां तक कि आज उच्च कर्मचारी दीवान के पद पर सुशोभित हैं और जो गौरव प्रतिष्ठा, नाम, यश उक्त महोदय ने प्राप्त किया है भूत पूर्व्व दीवानों को नहीं प्राप्त हुआ था।

सम्प्रति राज रियासत डुमरांव के अधीश्वर श्री१०८ सर महाराजा राधा प्रसाद सिंह साहब के० सी० आई० ई० हैं। इसके पहिले मिस्टर चार्ल्स फाक्स साहब बहादुर इस रियासत के दीवान और मनेजर थे; जब उस समय उत्तमता के साथ रियासत का कार्य्य नहीं चला तब वर्तमान दीवान साहब के हाथ में इस पद का अधिकार दिया गया जिससे रियासत को भारी लाभ हुआ यहां तक कि ताअलुकेदारी से अब रियासत कहलाने लगी जिस समय उक्त दीवान साहब के हाथ में यह अधिकार आया रियासत पर ऋण का बोझा था, कोष (शून्य) खाली था, रियासत का प्रबन्ध अवनति दशा को प्राप्त था, परन्तु जब से दीवान साहब का अधिकार हुआ, रियासत को जो जो लाभ हुये हम उनको नीचे लिखते हैं।

१—पूर्व्व दीवान साहब के समय में रियासत की वार्षिक आमदनी साढ़े सात लाख थी और अब चौदह लाख है—

२—पहले सेवकों अर्थात कर्मचारियों की संख्या कम थी, और उनका मासिक वेतन भी कम था तो भी समय पर मासिक वेतन लोगों को नहीं मिलता था, किन्तु अब संख्या भी अधिक है और मासिक वेतन उचित रीति से कर्मचारियों को समय पर मिल जाता है।

३—रियासत के कन्धे से ऋण का बोझा बिल्कुल उतर गया और कोष भी पूर्ण है।

४—बैंक में रुपया जमा होता है, गैर आबाद भूमि आबाद की जाती है, लाखों के नये इलाके खरीद होते हैं, प्रजा संतुष्ट, रईस प्रसन्न गवर्नमेन्ट राजी, और कोष का प्रबन्ध पूर्णतया गवर्नमेन्ट कोष की भांति है, कोई रकम बिना जांच परताल के न तो कोई ले सकता न किसी को

दिया जा सकता, न किसी को छल द्वारा कोई रक़म खा जाने का अवसर मिल सकता है, हिसाबके दफ़्तर का पूरा प्रबन्ध है, वार्षिक (आय व्यय का लेखा) बजट तय्यार होता है उसके अनुसार आय व्यय का प्रबन्ध रहता है।

५—पहिले रियासत के मोक़द्दिमात में दफ़्तर व इलाक़ः जात के काग़जात ठीक ठीक न रहने के कारण बहुत कठिनाइयां होती थीं, प्रायः जितने का दावा होता था उस की संख्या मे अधिक ख़र्च हो जाता था, बरन रियासत का धन अनुचित रीति मे नष्ट होता था, प्रजा और राजा के सत्वों का ठीक ठीक पता नहीं मिलता था परन्तु अब समस्त दफ़्तर गवर्नमेन्ट की भांति नियमानुसार है किसी बातमें कोई कठिनाई नहीं है।

६—डुमरांव में न राजपथ (सड़क) अच्छा था, न पाठशाले (स्कूल) का प्रबन्ध था, न अस्पताल (चिकित्सालय) था न रियासत में तार (तड़ित) वा डाकघर था, न टेलीफ़ोन था न सदाव्रत वा दान देने का कोई उचित प्रबन्ध था किन्तु अब इस समय यह सब कुछ है।

७—दीवान साहेब ने शिल्प और कृषी की उन्नति के हेतु और गाय बैल के पोषण पालन के निमित्त डुमरांव में एक बड़ी प्रदर्शनी स्थापन किया है, जिस में अनेक प्रकार के, प्रत्येक समाज के लोग, बड़े बड़े न्यायाधीश (हुक्काम) शरीक हुये, बड़ी धूम धाम और तय्यारी के साथ प्रदर्शनी की सफलता हुई, जिससे प्रजावर्ग और रियासत ने बहुत कुछ लाभ उठाया।

८—दीवान साहेब के उद्योग से डुमरांव में म्युनिसिपैलीटी कायम हुई जिसके प्रेसिडन्ट स्वयं दीवान साहेब हैं, इस से नगर की स्वच्छता, और स्वास्थ्य विषयक बातों की बड़ी उन्नति हुई।

९—एक समय श्री १०८ महाराजा साहेब बहादुर डुमरांव गृहणमान के निमित्त काशी में गये थे उस समय दीवान साहेब ने उक्त स्थान पर एक सन्यासी क्षेत्र कायम किया जिसका व्यय रियासत की ओर से दिया जाता है, काशी में पण्डितों की एक भारी सभा हुई जिसमें उदारतापूर्वक बहुत कुछ दान दक्षिणा दिया गया।

१०—पहिले कभी कोई कलेक्टर, मजिस्ट्रेट जिला का भी आगमन डुमरांव में नहीं होता था और अब श्रीमान नव्वाब सर ऐशली ईडन साहेब बहादुर तथा श्रीमान सर रिवर्स टामसन साहेब बहादुर भूत पूर्व लेफ्टिनेन्ट गवर्नर और श्रीमान नव्वाब सरइस्टुआर्ट बेली साहेब बहादुर वर्तमान लेफ्टिनेन्ट गवर्नर अपने अपने पदाधिकार के समय में प्रसन्नता पूर्वक रियासत के पाहुन (मेहमान) हुये और रईस के साथ मैत्री भाव का बर्ताव रक्खा; रियासत की ओर से उत्तमता के साथ आदर सत्कार किया गया जिसकी प्रशंसा उन महाशयों ने स्वयं किया और सर्वदा प्रत्येक श्रेणी के उच्च उच्च कर्मचारी रियासत के पाहुन हुआ करते हैं और रियासत के सुप्रबन्ध की प्रशंसा करते हैं यहां तक कि श्रीमान हिज़ एक्सलेन्सी नव्वाब गवर्नर जनरल बहादुर वाईसराय कैसरे-हिन्द भी रईस के पाहुन हुये; अब इससे अधिक उच्च कर्मचारियों और गवर्नमेण्ट की प्रसन्नता क्या होगी ?

११—श्रीमान महाराजा डुमरांव के राज्याभिषेक (गद्दीनशीनी) में एक धूमधामी दरबार हुआ जिसमें श्रीमान लेफ्टिनेन्ट गवर्नर बहादुर और हज़ारों योरोपियन और हिन्दुस्तानी कर्मचारी और रईस, बड़े बड़े हुक्काम रियासत के मेहमान (पाहुन) हुये और उन सब महाशयों के आदर सत्कार का प्रबन्ध स्वयं दीवान साहेब बहादुर ने किया जो अत्यन्त कठिन कार्य्य था, सब सज्जन प्रसन्न रहे, प्रशंसा करते रहे, रियासत के समस्त सेवकों, कर्मचारियों, सम्बन्धियों के साथ विशेष रूप से सलूक किया गया, पारितोषिक और पुरस्कार दिया गया, दीवान साहेब ने इन सब कार्य्यों को अति साहस और उदारता से समापन किया।

१२—रईस को गवर्नमेन्ट से श्रेष्ट उपाधि प्राप्त हुई, जो इससे पहिले डुमरांव के किसी रईस को नहीं प्राप्त हुई थी, और स्वयं दीवान साहेब बहादुर को भी उनकी बुद्धिमानी, सत्यता, राजनीतिज्ञता और सुप्रबन्ध के पुरस्कार में राय बहादुर की उपाधि प्रदत्त हुई और इसी योग्यता के प्रभाव से श्रीमान लेफ्टिनेन्ट गवर्नर बेंगाल ने अपनी कानूनी कौन्सिल का मेम्बर नियुक्त किया, और दीवान साहब के नाम के साथ

ओनरेबुल का शब्द प्रयोग होने की आज्ञा दी और दरजा दोयम का अख़्तियारे-मजिस्ट्रेटी भी प्रदान किया।

यह सब प्रतिष्ठा पहिले किसी दीवान को नहीं प्राप्त हुई थी।

१३—एक ख़ास अभियोग में गवर्नमेन्ट ने दीवान साहेब को कमिश्नर नियुक्त किया था।

इसी भांति और भी बहुत से बड़े बड़े कार्य्यों की गवर्नमेन्ट ने दीवान साहेब की योग्यता के अनुसार उन को सौंपा था जिससे इस बात का अनुभव किया जा सकता है कि गवर्नमेन्ट और उच्चकर्मचारीगण दीवान साहेब का विश्वास, और योग्यता कहां तक समझते थे।

१४—कुछ वर्ष व्यतीत हुये कि रियासत कश्मीर के लिये दीवान साहेब मंत्री (वज़ीर) तजवीज़ किये गये थे जिसके मासिक वेतन की संख्या बहुत अधिक थी किन्तु दीवान साहेब ने अपने पुराने रईस का साथ छोड़ना पसन्द नहीं किया, न रईस ने अपने सुयोग्य, ईमानदार, सुप्रबन्धकर्त्ता दीवान की जुदाई स्वीकार किया।

१५—२१ वीं अगस्त सन् १८६० ई० को श्रीमान सर स्टुअर्ट बेली साहेब बहादुर लेफ्टिनेन्ट गवर्नर बहादुर बेंगाल ने रियासत में पदार्पण किया था, म्युनिसिपैलीटी डुमरांव ने अभिनन्दनपत्र दिया उसके उत्तर में श्रीमान ने अपने मुखारविन्द से जो उच्चारण किया उसको हम नीचे लिखते हैं।

"मुझ को बीस वर्ष में जो परीक्षा से ज्ञात हुआ है उसके अनुसार मुझको आनरेबल राय बहादुर दीवान साहेब की दियानतदारी, दीवान साहेब की कार्य्यवाही, दीवान साहेब की योग्यता, और रियासत के प्रबन्ध पर दृढ़तापूर्वक विश्वास है।

१६—महाराजा साहेब ने, जो एक सुशिक्षित रईस हैं दीवान साहेब की दियानत, योग्यता, सुप्रबन्ध, शुभचिन्तकता, हितैषिता में अर्थात् हर प्रकार से भलीभांति परीक्षा ले लिया, जिस समय उक्त महोदय को राजा की उपाधि गवर्नमेन्ट से प्रदान हुई उस समय १६००) सौ रुपया आमदनी की जागीर मौकूफी की तौर पर अपने दीवान को प्रदान किया,

उसके पश्चात् जब दीवान साहेब के सुप्रबन्ध से रियासत की आमदनी में उन्नति हुई, और रईस की गवर्नमेन्ट से महाराजा की उपाधि प्रदान हुई उस वक्त फिर रईस ने १२००) बारह सौ रुपया वार्षिक आय की जागीर और भी नौकरी की तौर पर अपने दीवान को दिया, उसके पश्चात् दीवान साहेब बहादुर के सुप्रबन्ध से जब रियासत की आमदनी लगभग १४ लक्ष के हुई और दीवान साहेब बहादुर के उद्योग और यत्न से रईस की शुभचिन्तना (खैर ख्वाही) औ अधीनता (तबैयत) जो कि विद्रोह (गदर) को समय से शंकायुक्त थी, गवर्नमेन्ट के निकट भली भांति प्रमाणित हो गई और गवर्नमेन्ट ने योग्यता अनुसार सर महाराजा साहेब बहादुर के० सी० आई० ई० की उपाधि प्रदान किया, और हुमरांव नगर में श्रीमान नव्वाब लेफ्टिनेन्ट गवर्नर बहादुर का बड़ा धूम धाम से दरबार हुआ, और रईस को आशातीत नेकनामी प्राप्त हुई, और अपने दीवान की कारगुज़ारी प्रमाणित हुई उस समय रईस ने अपनी संतुष्टता और प्रसन्नता से छः हज़ार वार्षिक आय की जागीर और भी अपने दीवान को नौकरी की भांति पर प्रदान किया, कुल आठ हज़ार आठ सौ वार्षिक आय की भूमि दीवान साहेब को प्रदान हुई जो काग़ज़ात सरकारी में प्रगट है और दफ्तरखाना रियासत में भी इसके काग़ज़ात मौजूद हैं किन्तु कुल जागीरों की जमा भी मोकर्रर है।

१७—अत्यन्त शुभचिन्तकता, और हितैषिता दीवान साहेब की यह है कि रियासत के विशेष आवश्यकता वश साढ़े तीन वर्ष तक अपना मासिक वेतन नहीं लिया न जागीर वाकी भूमि की आमदनी लिया यह सब रियासत के कोष में जमा होती थी और उक्त महोदय खर्चा इत्यादि से अपना कार्य्य निर्वाह करते थे, और महाराजा साहेब को इसका समाचार भी नहीं जनाया, जब किसी प्रकार महाराज साहेब को इस का पता लगा तो दामदाम दीवान साहेब का पावना चुका दिया।

१८—अगिले दीवान साहेब के अधिकार में वार्षिक दो लाख से अधिक आमदनी का इलाक़ा था किन्तु वर्तमान दीवान साहेब के अधिकार में केवल लगभग अठारह हज़ार वार्षिक आय का इलाक़ा है।

आप की सावधानी पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि इस समय ऐसे सत्प्रकृति के मनुष्य बहुत कम हैं।

१९—नव्वाब लेफ्टिनैन्ट गवर्नर बहादुर बेंगाल और गवर्नमेन्ट हिन्द के आदेश से दीवान साहेब पथ का कठिन कष्ट सहकर बर्मा गये और एक लाख बीगहा सागौन का जंगल भूमि सहित सौ १०० वर्ष के लिये बहुत कम जमा पर रियासत के वास्ते लिया है, उस भूमि में उपज शक्ति बहुत अच्छी, और बड़े लाभ की आशा है, जंगल के लकड़ियों का दाम विशेष प्राप्त होगा इसके अतिरिक्त जिस समय सब भूमि आबाद हो जावेगी तो एक राज के बराबर आमदनी प्राप्त होगी, मानो महाराज को एक और दूसरा राज्य प्राप्त हो गया, फिर तो थोड़े ही दिनों में लाखों रुपया वार्षिक लाभ की दृढ़ आशा है और सौ वर्ष के पश्चात भी यह भूमि महाराज ही के अधिकार में रहेगी किंचित दाम बढ़ाना पड़ेगा, दीवान साहेब को धन्यवाद देना चाहिये, प्रभुभक्त ऐसेही पुरुष को कहते हैं।

दीवान साहेब की इस खैरख्वाही और दूरदर्शिता का यह फल प्राप्त हुआ कि गौर्न्मेन्ट ओफ इन्डिया ने महाराजा साहेब बहादुर को धन्यवाद दिया और श्री मान प्रिन्स अल्बर्ट विक्टर साहेब बहादुर ने भी साक्षात् के समय महाराजा साहेब को धन्यवाद दिया—क्यों न हो सोना और सुगन्ध की कहावत है कि महाराजा साहेब को बहुसंख्यक धन भी प्राप्त हो और गवर्मेन्ट के शुभचिन्तक भी बनें। दीवान साहेब बहादुर की यह कार्य्यवाही भारतवर्ष के इतिहास में अद्वितीय है।

२०—अहाबाद के साहेब कलक्टर बहादुर ने १७ वीं अप्रैल सन १८६१ ई० को दीवान साहेब बहादुर पर इन्कमटैक्स कायम करती समय १५००) रु० मासिक वेतन के अनुसार टैक्स लगाया जिससे लोगों का धोखा और सन्देह निवृत्त हो गया।

२१—पटना प्रान्त के श्री युत कमिश्नर साहेब ने सन १८८०—८१ ई० की रिपोर्ट में रियासत डुमरांव के विषय में निम्नलिखित बातें (रिमार्क) लिखी हैं।

हम इस बात को कह सकते हैं कि उस समय की अपेक्षा जब हम पहिले सब डिविज़नल औफ़िसर मोकाम बक्सर ज़िला शाहाबाद के थे, और जोयन्टमजिस्ट्रेट मोकाम आरा में थे और अब बहुत दिनों के बाद हम डुमराँव फिर गये तो हम को बड़ा आश्चर्य्य हुआ कि ऐसी आशातीत उन्नति वहां के प्रबन्ध में किस भांति हुई। हम जहां तक विचारते हैं, अवश्य यह उन्नतियां श्री मान महाराजा साहब के सुहृदयता और दीवान राव कैप्रकाश लाल साहब बहादुर की योग्यता, सुप्रबन्ध और उद्योग से हुई हैं।

इस रिपोर्ट पर हिज़ औनर नव्वाब लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर बहादुर कलकत्ता ने जो रिमार्क लिखा है वह कलकत्ते के गवर्नमेन्ट गज़ट तिथि ३०वीं सेप्टेम्बर सन १८८१ ई० पृष्ट १५५१ में प्रकाश हुआ है जिसका सारांश यह है।

"साहब कमिश्नर अपनी रिपोर्ट में विशेषतः अत्यन्त आश्चर्य्य के साथ यह बात लिखते हैं कि "जब मैं बहुत दिनों के बाद इस प्रांत में फिर वापस आया तो मैंने डुमराँव के प्रबन्ध में अत्यन्त उन्नति देखी निस्सन्देह यह महाराजा साहब बहादुर की सुहृदयता और बाबू कैप्रकाश लाल साहब उनके दीवान की योग्यता और सुप्रबन्ध के कारण हुई है"।

२२—तिथि २६ औक्टूबर सन १८८० ई० को जो सभा (जलसा) डुमराँव में हुई थी उसमें श्री महाराजा साहब बहादुर ने निज मुखार्विन्द से निम्न लिखित वक्तृता दी थी, उस समय प्रतिष्ठित प्रतिष्ठित सज्जन पण्डित अयोध्या नाथ साहब वैकुण्ठ वासी वकील हाईकोर्ट और बाबू योगीन्द्रनाथ राय साहब वकील इत्यादि के सदृश उस सभा में सुशोभित थे। इन महाशयों ने दीवान साहब की योग्यता, उत्तम उत्तम कार्य्यों, सत्प्रकृति, उद्योग इत्यादि गुणों पर प्रभावशाली व्याख्यान दिये, तत्पश्चात श्रीमान महाराजा साहब की सुचलित वक्तृता हुई।

श्रीयुत महाराजा साहेब बहादुर डुमराँव के निज मुखार्विन्द की वक्तृता

जो कुछ मौल्वी महम्मद अबदुस्समद साहेब ने मेरे रियासत के प्रबन्ध और दीवान साहेब की कार्य्यवाही के विषय में वर्णन किया है उससे अधिक वर्णन की आवश्यकता नहीं है किन्तु यह मण्डली सर्व्व साधारण की है और बहुत से प्रतिष्ठित २ सज्जन इस महती सभा

में सुशोभित हैं इस लिये मुझको भी अपना अभिप्राय (ख़यालात) प्रगट कर देना आवश्यक है।

इसमें सन्देह नहीं है कि मेरे कुल में भूतपूर्व महाराज लोग सब योग्य थे, और उन के समय में उनके दीवान भी योग्य थे परन्तु देखने से यह बात प्रगट है कि जिस उत्तमता से हमारे दीवान साहब की समय में सुप्रबन्ध है ऐसा इसके पहले कभी नहीं था, अपने कर्तव्य कार्य्य को दीवान साहब भली भांति, सत्यता और अपने ऊपर कष्ट उठा कर बुद्धिमानी के साथ समापन करते हैं, उनकी हितैषिता, प्रभुभक्ति, और कार्य्यदाही के जानने का जितना मुझे अवसर मिलता है दूसरे लोग नहीं जान सकते।

यह रियासत ऋण में डूबी हुई थी, दीवान साहब के सुप्रबन्ध द्वारा बिना किसी प्रकार की कठिनाई के रियासत ऋण से उऋण हो गई, उसमें विशेषता यह है कि किसी कार्य्य में ऐसी न्यूनता (किफ़ायत) नहीं की गई कि रियासत के किसी धूमधाम में कुछ त्रुटि हो, अथवा किसी को कुछ तकलीफ़ हुई हो। के० सी० आई० ई० उपाधि की प्रतिष्ठा मुझे उन्हीं के उद्योगों से प्राप्त हुई।

कार्निकल (यानी पृष्ठाघात) का जब घातक रोग मुझे हुआ था और मेरी जीवनदशा शंकायुक्त थी उस समय मेरी आरोग्यता और मेरे सुख के यत्न में जो अत्यन्त उद्योग और मेहनत दीवान साहब ने किया उसको मेरा हृदय ही जानता है।

इस रियासत को उन्हीं ने अपने प्रबन्ध से बहुत बढ़ाया है और प्रत्येक विषयों में उन्नति किया है, कोष पूरा किया है, अदालती झगड़ों को मिटाया है, गवर्नमेन्ट के निकट इस रियासत को पूरे तौर पर शुभ-चिन्तक प्रमाणित किया है—प्रजा को संतुष्ट रक्खा है, और मुझको सर्व प्रकार सुख दिया है। ऐसी दशा में जिस कदर मोकर्री और ठीका मैंने उनको दिया है वह प्रसन्नता पूर्वक केवल उनकी सेवा के पुरस्कार में नक़्द के बदले दिया है, उनकी सेवा की अपेक्षा यह मोकर्री और ठीका मेरे जानने में कम है, और यह कोई नई बात नहीं है, बरन इस रियासत में सनातन से यह बात चली आती है। जो ठीका मैंने दिया है वे वेही इलाके हैं, जो पूर्व दीवान को उसी भांति से और उसी

अवधि (मियाद) के लिये उस पदाधिकार के पुरस्कार में दिये गये थे क्यों कि उन इलाकों में से चौथा हिस्सा अब तक पहले दीवान के उत्तराधिकारी को दिया गया है जो कुछ दिया गया है वह केवल सेवा का पुरस्कार है, पारितोषिक (इनाम) नहीं है।

इस रियासत के कुछ पदच्युत कर्मचारी जो देशी हैं उन लोगों ने जो झगड़ा उत्पन्न करनेवाला लेख समाचार पत्रों में छपवाया है वह सर्वांग मिथ्या और निर्मूल है, सत्यता का उसमें लेशमात्र नहीं है, वरन यह कार्य्य उन लोगों का स्वार्थपरता और द्वेष से है, उसको मैंने सविस्तर लिखवा दिया है, जिस को मुन्शी मथुरा प्रसाद मेरे मीरमुन्शी आप लोगों के सामने पढ़ेंगे।

सर महाराजा साहब बहादुर दुमराँव की लिखित वक्तृता जिसको मुन्शी मथुरा प्रसाद ने पढ़ा था।

आप सब महाशयों पर विदित हो कि मौल्वी मुहम्मद अब्दुस्समद साहब और दूसरे महाशयों ने जैसा वर्णन किया है, वास्तव में रियासत के कुछ अशुभचिन्तकों ने झगड़ा फसाद मचाया था और वेही इसके मूल कारण थे, और वे लोग जिनका पोषण पालन हुआ था, जो लूटते थे वा लूटना चाहते थे उनके सहायक हुये, कारण उसका यह है कि राय बहादुर दीवान साहब के सुप्रबन्ध से उनके स्वार्थ, मनोरथ, में हानि पहुंची, नहीं तो दीवान साहब प्रायः रियासत के अधीनस्थ कर्मचारियों, सिवकों, और प्रजावर्ग के साथ जिस उत्तमता से बर्तते हैं सो सब पर प्रसिद्ध है। सुप्रबन्ध में सफलता हुई, जिससे हमारी प्रसन्नता हुई, और इसमें वा और प्रसन्नता के पुरस्कार में रियासत की ओर से दीवान साहब के साथ रियासत की गई, इसका द्वेष इन झगड़ालुओं को हुआ और प्रगट रीति से अशुभ चिन्तना में वे सब कटिबद्ध हुये। जब जाना कि हमारे निकट उनका कल नहीं निबहेगा क्यों कि हम दीवान साहब की हितैषिता से भली भांति अभिज्ञ थे, तब इन लोगों ने यह चाल चलना आरम्भ किया कि हाकिमों और सर्व साधारण की दृष्टि में दीवान साहब की न्यूनता हो। प्रथम सभा (कमीटी) किया तदुपरान्त समाचार पत्रों में निन्दा छपवाना, गुप्त रीति से गवर्मेन्ट

में निवेदनपत्र भेजना प्रारम्भ किया, इस के अतिरिक्त और भी बहुत सी अनुचित ढिठाई किया। यद्यपि प्रकाश में दीवान साहब की निन्दा किया, किन्तु वास्तव में वह रियासत की निन्दा थी, क्यों कि जिस रियासत के दीवान लालची और स्वार्थी होंगे उस रियासत में कुप्रबन्ध कहा जावेगा, और उनका विश्वास सर्व साधारण में कैसे हो सकता है? सच तो यह है कि सब निन्दा उनकी मिथ्या थी, क्यों कि दीवान साहब की सत्यता और हितैषिता की परीक्षा का अवसर इनको प्राप्त है दूसरे किसी को नहीं प्राप्त हो सकता, श्रीमान नव्वाब सर स्टुआर्ट बेली साहब बहादुर लेफ्टिनेन्ट गवर्नर बंगाल ने जब कि डुमरांव में आये थे अपने मुखारबिन्द से दीवान साहब की योग्यता और सत्याचरण की प्रशंसा की थी, और दर्जा दोयम के मजिस्ट्रेटी का अधिकार प्रदान किया था, इससे स्पष्ट प्रगट है कि गवर्नमेन्ट के प्रधान कर्मचारियों के हृदय में इस रियासत के सुप्रबन्ध के विषय में उत्तम ध्यान (खयाल) है, प्रत्येक श्रेणी, प्रत्येक समाज के लोगों ने जिनमें (कर्मचारी गण और प्रजावर्ग भी शामिल थे) सभा करके अपनी प्रसन्नता का धन्यवाद दिया है, जिस उत्तमता से दीवान साहब ने १५ वर्ष में अपने पद (दीवानगीरी) का कठिन कार्य्य सम्पादन किया है उसको भली भांति हम जानते हैं, और बुद्धिमानों की मण्डली उसको समझ सकती है, वे सब कार्य्य प्रसिद्ध हैं, बीस वर्ष के समय में अनेक प्रकार के कार्य्य उक्त महाशय ने उत्तमता और सत्यता से किये हैं, पन्द्रह वर्ष के पहिले जिस समय दीवानगीरी का पद उक्त महाशय को सौंपा गया उस समय रियासत में बहुत सी कठिनाइयां उपस्थित थीं, जिनका निवारण उत्तमता औ सरलता से इन्हीं ने किया जिनका बयान नीचे किया जाता है।

१—रियासत के दफ़्तर के काग़ज़ात अस्त व्यस्त थे उनको बड़ी मिहनत और व्यय से ठीक और एकत्र कर नियम साथ रक्खा।

२—आज्ञाकारिता और अध्यवसाय से गवर्नमेन्ट और प्रधान कर्मचारियों की प्रसन्नता प्राप्त किया।

३—इस समय रियासत ऋणी थी, ऋणी की दशा कैसी व्यय होती है सो प्रसिद्ध है, ऐसे अवसर में भी किसी कार्य्य में न्यूनता (किफायत) नहीं की गई वरन रियासत के नेकनामी के लिये जब जहां कोई अवसर पड़ा

उदारता के साथ कार्य्य किया, तौ भी रियासत के कन्धे से ऋण का बोझा उठा दिया, अब रियासत और कोष की उन्नति प्रति दिन होती जाती है।

४—इस रियासत में कई कारणों वश आमदनी से खर्च अधिक था जिसका घटाना बिना कष्ट बहुत कठिन था किन्तु उक्त महाशय ने बिना किसी प्रकार की व्यग्रता के बड़ी सावधानी के साथ व्यय को घटाया।

५—प्रजा को उचित कर (लगान) देने की आदत नहीं थी क्यों कि इस रियासत की अधिकांश रियाया ब्राह्मण, खत्री, भुंईहार हैं वे हठधर्मी और ढिठाई करते थे जिससे कर (मालगुज़ारी) वसूल करने में बड़ी कठिनाई उपस्थित होती थी उनको उक्त महाशय ने कोमलता और बुद्धिमानी से अपने आधीन बनाया और अब प्रतिवर्ष पहिले की अपेक्षा द्विगुण कर (मालगुज़ारी) वसूल होता है तौ भी प्रजा प्रसन्न और सन्तुष्ट है।

६—सेवकगण अपने सेवा का धर्म नहीं समझते थे और रियासत के लाभ से निज लाभ को श्रेष्ट जानते थे, उक्त महाशय ने ईमान्दार और योग्य सेवकों को रक्खा और कार्य्य करने का ऐसा प्रबन्ध किया कि जिससे चोरी और रिश्वत एकबारगी बंद हो गई।

७—आदालती झगड़े इतने फैले थे कि जिससे रियासत में हानि पहुंचने की आशंका थी, केवल उन्हीं के उद्योगों से निवारण हुये और प्रतिदिन होते जाते हैं वरन आशातीत रियासत विस्तीर्ण होती जाती है।

८—प्रायःहमारे स्वजातीय प्राचीन काल से समय समय पर रियासत के प्रबन्ध में विघ्नकारक होते आये हैं, उसको उक्त महाशय ने अपनी दूरदर्शिता और चतुराई से बचाया है और सफलता प्राप्त किया है।

९—पहिले रियासत का प्रबन्ध मिस्टर चार्ल्स फाक्स साहेब के हाथ में दिया गया था, जो लोगों से दुखी हो कर अलग हो गये ऐसे अवसर में एक हिन्दुस्तानी कर्मचारी के हाथ से सफलता प्राप्त होना कैसा कठिन था? आप सब महाशय अनुभव कर सकते हैं कि अंग्रेज़ मैनेजर के साथ जो सहानुभूति जो विश्वास अंग्रेज़ी हाकिमों की है वह हिन्दुस्तानी के साथ असम्भव है, गवर्नमेन्ट से जो सहायता अंग्रेज़ मनेजर को सुगमता से मिल सकती है, वह हिन्दुस्तानियों को बहुत कठिन है, तौ भी दीवान साहेब ने अपनी अधीनता और सेवा से गवर्नमेन्ट और प्रधान

कर्मचारियों को प्रसन्न किया जिससे प्रबन्ध में सफलता प्राप्त है।

१०—गवर्नमेन्ट की कृपा से इस रियासत का अधिकारी बंगाल, बिहार, ओड़ैसा, प्रांत में प्रथम श्रेणी (फ़ौव्वलदर्जा) का माना गया, यद्यपि कोई २ महाशय अपनी योग्यता और धन के बल में अग्रगण्य हुआ चाहते थे, किन्तु उक्त महाशय के उद्योग से गवर्नमेन्ट के निकट सन्मान और गौरव बढ़ता गया।

११—हम अकेले हैं, और यह रियासत कई एक ज़िलों में फैली हुई है, और यहां के लोग हकूमत पसन्द हैं इस लिये हमारे पूर्वाधिकारी महोदय गण दीवान के रहने पर भी परस्पर विभाग करके रियासत का कार्य्य सम्पादन करते थे, कि जिनमें से अब कोई जीवित नहीं हैं। ऐसी दशा में कब सम्भव है कि जिस कार्य्य को कई एक सरदार मिल कर सम्पादन करते थे उसको हम स्वयं सम्पादन करें? अतएव आवश्यक हुआ कि दीवान पर कार्य्य का बोझा अधिक हो तौ भी उक्त महाशय सावधानी और अध्यवसाय द्वारा उत्तमता से कार्य्य करते हैं जिससे हम को भली भांति संतोष है।

अर्थात् जिस तरह कि उक्त महाशय ने रियासत के दफ़्तर को तरतीब दिया, गवर्नमेन्ट को प्रसन्न रक्खा, स्वधर्म निर्वाह किया, अमित खर्च को बन्द किया, प्रजा को सुख दिया, सेवकों को आधीन रक्खा, अदालती झगड़ों को मिटाया, रियासत के हैषियों और शत्रुओं को परास्त कर रियासत को नेकनाम किया, रियासत का सुप्रबन्ध किया, और हमारे मानमर्य्यादा की उन्नति में उद्योग किया, इन कार्य्यों से हम प्रसन्न और संतुष्ट हुये और इन्हीं उत्तम कार्य्यों के पुरस्कार में भली भांति भाव विचार कर अपने हितैषियों की सम्मति से मोक़र्री दिया, और दो वर्ष से मासिक वेतन के बदले ठीका दिया, ऐसे अवसर में यदि हमने वैसी सलूक किये जो कि हमारे पूर्वाधिकारी महाराज लोग पूर्व्व दीवानों के साथ करते आये तो क्या अनुचित किया? क्या यह रियासत को उचित नहीं है कि अपने उच्च कर्मचारी को आवश्यकतानुसार पुरस्कार देवे? और अपने ऐसे मोक़ाज़िम का आदर करे?

चूं कि यहां के लोग हकूमत पसन्द हैं इस लिये इस रियासत के दीवान को वह सामान रखना पड़ता है जो दूसरी रियासत के दीवान को

आवश्यक नहीं है,—दीवान का पद इस रियासत में प्रतिष्ठित है, और नाथब रियासत होने के कारण से दीवान को बहुत सा व्यय करना पड़ता है जिसकी आवश्यकता अंग्रेज़ मनेजर को नहीं पड़ती इसी विचार से हमारे पूर्वाधिकारियों ने बहुत परीक्षा कर और सोच विचार दीवान को मोकर्री का देना या ठीका देना उचित समझा है, उसी तौर पर यदि उक्त महाशय को दिया गया और उन्हों ने स्वीकार किया तो क्या अनुचित हुआ ? उक्त महाशय ने अपनी तरक्की के लिये कदापि मुझ से निवेदन नहीं किया, किन्तु मैं कैसे ऐसी निठुरता करता कि इतने दिनों की सेवा का पुरस्कार न देता अतएव हमने पुरस्कार दिया जिससे दूसरे कर्मचारियों को प्रभुभक्ति में उत्साह बढ़े ।

हम आशा करते हैं कि दीवान साहब इन ईर्षियों की अशुभचिन्ता, और व्यर्थ निन्दा पर ध्यान न देंगे और जो सलूक उनके साथ हुआ है उसको स्वीकार करेंगे, और सन्तोष के साथ अपने पद सम्बन्धी सेवा को वैसेही उत्साहपूर्वक सम्पादन करेंगे जैसा कि करते आये, जिससे हमको सन्तोष बना रहे ।

२२—२३वीं फ़रवरी सन १८८२ ई० को श्री महाराजा साहब डुमराँव की कन्या का विवाह श्री महाराजा साहब रीवां के साथ हुआ जिनकी अवस्था विवाह के समय १५ वर्ष की थी । विवाह धूम धाम और बड़े उत्साह और उदारता के साथ हुआ जैसा राजा महाराजाओं के यहां हुआ करता है । राजा महाराजा, रईस, टुरपियन और देशीय सब जमा थे। दान दहेज बहुत कुछ हुआ सब का आदर सत्कार भी उत्कृष्ट रीति से हुआ महाराजा साहब ने सभा के सामने अपने भाग्य सराहे और रीवां में विवाह होने का मूल कारण दीवान ही की ठहराया जिन्हों ने अपने उद्योग से सब राजाओं के मुक़ाबले अपने ही राजा के यहां रीवां धीश का विवाह ठीक कर लिया । इस विवाह का समाचार कुल भारतवर्ष के पत्रों में छपा था । आज तक दरबार आम में किसी रईस ने अपने दीवान की प्रशंसा न की थी वह सुख दीवान साहब को प्राप्त हुआ यह कुछ थोड़े सौभाग्य का विषय नहीं है ।

१३ । १४ फ़रवरी सन १८८३ ई० को गवने के उत्सव में श्री मान रीवां धीश का आगमन हुआ था। इस उत्सव के उपलक्ष में १० वीं

फ़रवरी से १५वीं तक डुमरांव राज में बहुत ही धूम धाम थी। बंगाल और पश्चिमोत्तर प्रान्त के नामी नामी रईस इकट्ठा थे। दोनों इलाक़े के युरपियन कर्मचारी, हिन्दुस्तानी रईस, साहुकार, वकील मुख़्तार, अमला, ज़मींदार और प्रजावर्ग का बड़ा भारी समारोह था। सब के रहने के लिये खेमे और शामियाने खड़े किये गये थे बहुत से लोग बंगलों में ठहरे थे श्रीमान रीवांधिपति की बारात महाराज के बड़े बाग़ में ठहरी थी। राह बाट सड़क गली कूंचा सब साफ़ सुथरा, पोखरा तालाब जलपूर्ण थे, रोशनी का सर्वत्र बन्दोबस्त था। डुमरांव नगर और उसके आस पास भी एक छोटी सी नगरी बन गई थी। उस स्थान की शोभा अत्यन्त दर्शनीय और सुन्दर हो रही थी। ऐसे धूम धाम, समारोह और भीड़ भाड़ में दीवान साहब सर्व व्यापी हो रहे थे जिधर देखो उधर ही आप उपस्थित हैं सर्वत्र स्वयं जाकर प्रबन्धों को देख भाल, और यथोचित वार्तालाप कर रहे हैं। भोजन शयन का प्रबन्ध देखने के लिय अधिकारियों के रहते भी आप असावधान न थे। एक ओर मेहमानों का सत्कार करना उधर रनिवास में महाराजा साहब की कन्या के विदा होने के कारण जो शोक उत्पन्न हो रहा था वहां जाकर उनको समझाना बुझाना, रात दिन काम में व्यस्त रहना यह दीवान ही साहब का काम था। ये सब बातें समाचार पत्रों में प्रकाश हो चुकी हैं। यद्यपि निमंत्रण पत्र हमको भी आया था पर उसी समय अपने एक आत्मीय का स्वर्गवास हो जाने के कारण उक्त स्थान पर हम उपस्थित न हो सके।

हाल ही मुहर्रम के उपलक्ष में बड़ा भारी मनमुटाव हिन्दू मुसलमानों में भोजपुर में हो गया था बड़े भारी दंगे का सामान था। क़रीब दस हज़ार आदमी जमा हो गये थे। पर दीवान साहब की मुस्तैदी का वर्णन ऊपर किया जा चुका है इस मामले में भी आपने वैसी ही मुस्तैदी दिखलाई थी। जाय वक़ू पर आप झट पहुंच गये और दोनों ओर के लोगों को समझा बुझा कर बखेड़ा तय कर दिया नहीं तो सम्भव था कि बड़ा भारी उपद्रव होता।

अब इस लेख को बहुत विस्तार न करके यहीं समाप्त करते हैं और महाराजा साहब को आशीर्वाद देते हैं कि दीर्घ जीवी हों और उत्तरोत्तर उनकी बढ़न्ती हो।

दृश्तिहार।

SEIGEL'S SYRUP

किसी दिन भी वह भाग जा सकता था।

धर्म के मतभेद वास्ते जुलमगार सरकारने एक आदमी को पकड़ के क़ैद में डाला था। बंदीखाने की पत्थर की मज़बूत दिवारों को देख के यह एकांत और उदास जगह में बाकी ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ेगी ऐसा उसने अनुमान किया। जुल्म के लिये सज़ा मिली थी परंतु न्याय्य कायदे का उलंघन करने वास्ते नहीं था ऐसा विचार आने से इस दुर्दशा में भी उसको दिलासा मिलता था। तथापि बाहर निकल सकता तो खुशी साथ निकल जाता कारण उसका इक था।

तो भी सोलह वर्ष दुःख दायक स्थिती में रहा। इस मुद्दत के अंत समय उसको ऐसा विचार आया कि एक पत्थर जो बाहर निकला था उस पर चढ़के ऊपर की बारी में से देखें। उसने देखा तब मालूम पड़ा कि लोहे के कड़े हट सकें ऐसे थे, और बारी का चौकठ जड़ा नहीं था। भाग जाने का खयाल उसके मन में आया। बारी खोल कर छ फुट नीचे ज़मीन पर गिर पड़ा और शीघ्र प्रांत छोड़ के भाग गया। कभी उसका मन जास्ती विचारवान था, और जो तपास करने के सिवाय अनुमान नहीं किया था तो दीर्घ वास के अन्दर किसी दिन भी भाग सकता था।

धर्म प्राण त्यागो की बिनासमान और उलटी दूसरी बिना है उसके समान कारन स्वतंत्र क्रिया से रहित, उससे उलटी कारन दुःखी पुरुष क़ैद में नहीं था।

टूंके और टूके शब्द वाले पत्र हम हमेशा पसंद करते हैं उस जात के एक पत्रमें यह वृतांत एक स्त्री ने लिखा है। वह लिखती है कि, "सोलह बरस हुए पित्त और दुर्बलता से मैं बिमार रहती थी। सदा श्रमित और खिन्न स्वभाववाली थी। क्षुधा लगती नहीं थी, और मेरे आगे अन्न रखे जाते थे उसका स्पर्श नहीं कर सकती थी। बहुत दिन तक बिलकुल भोजन नहीं कर सकती थी। कोई कोई वक़्त पेटमें उकाला होता था और मुख से चिकना रस निकलता था। छाती में वेदना, और श्वासदायक खांसी हुई थी, और स्वास लेने से तकलीफ़ होती थी। मैं बहुत अशक्त हो गई और दूकान में अथवा दूकान से बाहर फिर नहीं सकती थी मेरे

आपके "मदर सीजलका क्युरेटिव सिरप" की प्रशंसा करते थे, वह औषधि सन १८८१ के डिसेम्बर महीने में खाने का आरंभ किया। थोड़े भाग मात्र खाने से आराम मालूम पड़ा, और औषधि खाते पंद्रह दिन हुए उतने में मुझको ऐसा आराम हुआ कि जैसा बरसों में नहीं हुआ था। इस तरह डाक्टरजन मिलनेसे मैं पूर्ण आरोग्यता पाई तब तक औषधि खाती थी। मेरा पुत्र आरथर को भोजन के पीछे पेटमें भार और इच्छा होती थी। "मदर सीजल का क्युरेटिव सिरप" खाने की उसकी इच्छा भई, उसका परिणाम मेरे जैसाज हुआ। दूसरी सब औषधि निष्फल होने पीछे "मदर सीजल के क्युरेटिव सिरप" से आराम हुआ है ऐसे बहुत लोगोंको यह प्रति मैं पहचानती हूं। मेरे जैसे पीड़ित लोगोंको फायदा होगा ऐसा जो आपको समझ में आवे तो मेरा पत्र छपाने की परवानगी देती हूं।

(सही) (मिसिस) जेम वार्ड, ११४ इकस्टन रोड, राडफर्ड, नोटिंगहाम, तारीख १ एप्रिल सन १८८१।

संताप कारक और भयंकर रोग से मुक्त हुई उसके वास्ते मिसिस वार्डको मुबारकबादी देते हैं सुलभ और खातिर पूर्वक आराम किस तरह से होता है, उसकी खबर वह स्त्री की जलदी मिली नहीं यह कैसी दिलगिरीकी बात है। आयुष्य के सोलह बरस मन और तन के दुःख में गुजारना पड़े यह बहुत भारी बला है। थोड़े लोग धनवान होते हैं, परंतु आरोग्यता का सुख सब को समान होता है। आरोग्यता होवे तब उसकी संभालने की और रोग मिटाने की रीत सबको मालूम होवे तो सब आरोग्य रहे।

इस स्त्री की पाचन शक्ति का रोग अजीर्ण और अग्नि मान्द्य था। यह रोग लोही मार्गमें अपने जेर की प्रत्येक जगह पर पसर के सब शरीर में फैल जाता है। सर्व दरद यह फन्ट्रुप रोग के परिणाम और चिन्ह है जिसको भिन्न भिन्न नाम से बोलते हैं। जिस औषधि से इस स्त्री को आराम हुआ उसकी कीर्ति जानने वाले को स्त्री के आराम की खबर से आश्चर्य नहीं होगा। इससे भी खराब रोग यह औषधि से मिट जाते हैं।

बाहर निकलने के सुलभ मार्ग की अज्ञानता से हमारा धर्मग्रामत्यागी मित्र बासदायक बंदिखाने में रहा। जो पढ़नेवाला कोई रोगका बंदिवान होवे तो आज पीछे कैद में रहने का कारण नहीं है। छोटे और प्रमाणिक पत्र में हमारे पत्र लिखनेवाले ने खुला हार दिखा दिया है।

H. D.

CLEMENT'S TONIC

मरीज़ों के ख़िदमत में,

क्लेमेन्ट साहब की दवा मक़व्वी।

एक जल्द असर करने वाला क़ाबिल एतबार इलाज है वास्ते नीचे लिखे हुए मरज़ों के—

पट्ठों की कमज़ोरी नुक़सान जिस्मानी फुर्ती की कमी और हर तरह की कमज़ोरी सलबी ताक़त की कमी जिरियान और मनी और परदल वग़ैरह वग़ैरह क्लेमेन्ट साहब की मक़वी हमेशा के लिये क़ामिल तौर पर जिस्मी फुर्ती को बहाल और बरक़रार रखती है और पट्ठों की ताक़त को ज़ियादे करती है और जवानी की पुरदिली और शबाब की पुर जोश-गी को ताज़ा कर देती है जिस्मानी और अज़ाय रईसा की हरकाती ताक़त को उन मर्द और औरतों के ताज़े कर देती है कि जो कमज़ोर ज़ईफ़ सुस्त और ख़स्ता और मांदा हो गये हैं क्लेमेन्ट साहब की मक़वी एक बख़्शाइस इलम ही है हर तरह से इन्सान के हक़ में इस को अजीब सेहत बख़्श ताक़त ज़ाहिर होती है इसके इस्तेमाल के बाद ही और बाबत में ताकीदी शहादत उन लोगों की जो इस को इस्तेमाल में ला चुके हैं वैसे निहायत और बेशुमार हैं वह लोग बयान करते हैं कि वह हर एक मोताद की तासीर की नफ़े और फ़ायदे पहुंचाने वाली बातें हैं फ़िल हक़ीक़त वह एक ऐसी पुर तासीर मोक़वी है कि जिस से पट्ठों को ताक़त पहुंचती है और जो हर एक रग ओ पै में जिस्म के पट्ठों के ज़रिये से ताक़त बख़्श और ताज़ा करने वाला असर को पहुंचाती है हर हालत में ख़ाह जिस्मानी ताक़त बसबब मर्ज़ शदीद के कम की गई हो या ख़स्तगी और तकलीफ़ और मेहनत सख़्त के या किसी किस्म के ज़रर पहुंचाने वाली नाअक़बत अन्देशी के सबब से हो ख़ाह की घटी हुई हालत किसी

तरह की ही जब कि पट्ठों की कमज़ोरी पाई जावे या किसी किस्म की ख़ास कमज़ोरी या हर तरह की कमज़ोरी हो जब कि सुस्ती या ज़ोफ़ या कम ताक़ती उस मर्ज़ का बाइस हो इन हालतों में बलेमिन्ट साहब की मुक़ब्बी ही सिर्फ़ इलाज है। जो लोग कि बदनी या क़ल्बी शदीद मिहनत के नतीजों के सबब तकलीफ़ पाते हैं या कि सख़्तियों से और सर्दी या गर्मी बरदाश्त करने के सबब से या कि किसी नामालूम सदमे के सबब या किसी क़िस्म की तंगी के सबब या जो लोग दानिस्ता वो नादानिस्ता इन्तज़ाम-ए-क़ुदरत को न मान कर अपने को तकलीफ़ में डाले हुए हैं वह लोग बलेमिन्ट साहब की मुक़ब्बी को एक ऐसा इलाज पावेंगे जिस से कि यक़ीनी उन को तकलीफ़ से नजात मिलेगी। यह मुक़ब्बी बहुत ही जल्द हर क़िस्म के शदीद तरद्दुदी किस्मी नातावती को दूर कर देती है और फुर्ती के घटती को उस की असली ताक़त और दुरुस्तगी तक पहुंचा देती है। जब जब कमज़ोरी आज़ार रईस को ज़ाहिर हो या कि पट्ठों की कमज़ोरी और घट जाना जिस्मी या क़ल्बी हरकत का नमूद हो या कि घबराहट ख़्यालों की या सुस्ती एतमाद का, या चिड़ चिड़ाहट मिज़ाज का, मालीख़ोलिया, बुज़दिली, घुटनों की या पीठ की कमज़ोरी, दिल की धड़क, सिर का दर्द कमर का दर्द, कड़ा रहना हो, पीठ का दर्द, दांत का दर्द, जो माहूद वक़्त पर हुआ करे आज़ा शिकनी, जोड़ का दर्द, रेखानी दर्द मरी, सुबह के वक़्त सुस्ती बायालात और जोड़ों का दर्द सोज़िश मसाना, वो गुर्दों की सोज़िश, गदला पेशाब जो पीच की तरह हुआ करता है, ज़रर पहुंचाने वाला और नामालूम नुक़सान जिस्म का या कि दूसरे अलामात जिस के नतीजे में दिली या जिस्मी ताक़त को नुक़सान ज़ाहिर हो मर्द और औरतों की कामयाबी के मुक़ाबिले में एक रोक पैदा करे और उन की ज़िन्दगानी की बाशिबात के और ज़रूरी कामों के अंजाम देने में क़ासिर बनावे तब तब ऐसी हालतों में बलेमिन्ट साहब की मुक़ब्बी सिर्फ़ एक ही पुर तासीर इलाज है और आज तक होती आई है। नौजवान लोग जो ज़िन्दगानी के मैदानगाह में दाख़िल हुआ चाहते हैं और अपनी क़ाबलियतों पर क़ब्ज़ा या इख़्तियार अच्छी तरह रखते हैं और कामयाबी के हद तक अपनी मुरादों के ले जाने पर क़ादिर और क़ायल हैं और वे बेजूल अड़

और क़ाबिल सहभीन और फ़रह दिलाने वाली तुर्शीके नतीजों को हासिल करने चाहते हैं क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी उन के वास्ते पहली सीढ़ी उन के मुराद तक पहुंचने की है।

अधेड़ लोग जिनकी खिलती हुई फुर्तियां बतलाती हैं बक्त से आगे जवानी की तनज़ुली का आना और जो मालूम करते हैं कि रफ़्त रफ़्त वे एक बेर हम दुश्मन के हवाले में जाने को हैं और जिनकी ज़िन्दगी के खज़ाने में बड़ी बड़ी हुंडियां दाखिल की जाती हैं ताकि बचपन के कर्ज़ सब अदा किये जावें या कि जिनके ज़खीरे फुर्ती के मर्दों के बायस कम हो गये हैं या सुस्ती और जांफिशानी और ज़िन्दगानी की मिहनत के सबब घट गये हों या कि किसी और और तरहों से अपनी ताक़त की ज़ाया किये हों उनके हक में क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी एक दोस्त है जो मुसीबत के वक़्त पर दस्तगीरी करेगा और एक पुरज़ोर मदद है और एक दुरुस्त करने वाला बुरी हालतों का है जो कभी नहीं चूकेगा और वे इसमें एक नई ज़िन्दगी हासिल करेंगे और बदनी ताक़त भी हासिल करेंगे और सब तरह की हालत औ फुर्ती ताज़ा कामिल तौर पर हो जावेगी।

बूढ़े लोग इस मुक़व्वी के इस्तेमाल से इनहिज़ाज़ की पेशक़दमी को रोकते हैं और ताक़त की तनज़ुली में बच रहते हैं और अपने शबाब को दोबारा हासिल करते हैं ताक़त बदनी पाते रहते हैं और दोबारा अपनी क़ाबलतियों पर क़ाबिज़ औ क़ादिर हो जाते हैं और अपनी फुर्ती औ क़ाबिलियत को हमेश बहाल औ बरक़रार रखते हैं।

नौजवान औरतें क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी को एक निहायत ही पुरतासीर इलाज पावेंगी जो सहलुल वसूल है। इससे हर क़िस्म की कमज़ोरी जो खास कर औरतों को हुआ करती है इलाज पज़ीर होती है और दफ़ा हो जाती है इसके मुक़ाबिल में और इलाज औरतों की कमज़ोरी दूर करने का नहीं है। और ज़इफ़ुल क़वा नाज़ुक और नहीफ़ बदन छोटी लड़कियों के हक़ में यह बतौर आला के काम करती है और बक़ोनी पुरज़ोर ज़नाना तबियत पैदा करती है यह पुरतासीर इलाज उन बसीलों को पैदा करती है जिसके ज़रिये से ज़रर पहुंचानेवाली बेमौक़ा तकलीफ़ात को पहले से रोका जाता है और पुरज़ोर ख़ातिरात नफ़सानी

को दबाया जा सकता है और फुर्ती की हालत के नुक़्सान का जड़ कर देता है और आज़ाय रईस के हरकात की बद इन्तज़ामी को दुरुस्त किया जाता है और पतदाल पर लाया जा सकता है खलल पहुंचे हुए दीमाग़ को और मालिख़ोलिया और ख़यालात फ़ासिद के बदशत को दूर किया जाता है और ख़ुशनुमा मज़हर ख़ुदा को हमारी ख़िलक़त के हलाकत और तबाही से बचा लेता है इसके इस्तेमाल से बराबरी दरमियान नुक़्सान और नव नुक़्सान के बरक़रार रक्खा गया है, नुक़्सान बेजा रोका गया है ज़रर पहुंचा हुआ को दुरुस्त किया गया है कमज़ोर किया हुआ और सिकुड़ा हुआ रगों को ताक़त असली और दुरुस्तगी दी गई है बेवकूफ़ी की नादानी की ग़लती के नतीजे दुरुस्त किये गये हैं और ग़ायत दर्जे के ज़लील और ख़्वार देने वाले मरीज़ अपनी तकलीफ़ों से मुख़लिसी पाये हैं और आदत पकड़े हैं मरदाना सिफ़तों से, और हिम्मत से और फुर्ती और बदनी ताक़त से। क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी में जितने लोग चंगे हुए हैं उनका एक दफ़्तर मौजूद है और जो जो बेहतरियां इस दवा ने ज़ाहिर की है वैसी ख़ूबियां हज़रत आदम के ज़माने से किसी और दवा ने आज तक ज़ाहिर नहीं की। मांग भेजने से हम लोग तफ़सील कामिल और सनदें वग़ैर किसी ख़र्च के हर कहीं भेज सकते हैं मरीज़ों को चाहिये कि बहुत ख़बरदारी से इस दवा को ख़रीदें क्यों कि हर जगह पर नक़ली दवा बिक रही है और उनको बड़ी ख़बरदारी करनी चाहिये जिसमें उन्हें सिर्फ़ क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी मिले। और यह भी ख़्याल रहे कि अक्सर नक़ली या जाली दवा भी असलदवा के निस्बत ज़ियादा ज़रर पहुंचाती है।

क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी तलब करो हर एक दवा फ़रोश इसकी बेचता है।

F. M. Clements

यह दस्तख़त—हर एक दवा के बोतल पर है।

न्यूटाउन, सिडनी
शार्ट लिया } मरीज़ों की ख़िदमत में।

बिहार-बन्धु का नियम।

चार बिहार-बन्धु में एक बेशी।

१०। यदि कोई इकट्ठा एक नाम से चार बिहार-बन्धु लें तो उन को एक बिहार-बन्धु बतौर नज़र के मिलेगा अर्थात् जो कोई चार बिहार-बन्धु का एक बरस का मुफ़स्सिल का दाम सात रुपया और कँवर का मूल्य साढ़े पाँच एक ही वक़्त दे दें तो उन को पांच बिहार-बन्धु मिलेगा।

नमूना।

११। मुफ़स्सिल के लोगों को यदि नमूना के तौर पर बिहार-बन्धु देखना हो तो दस पैसा भेज दें। बिना क़ीमत पाये किसी के पास नहीं भेजा जाता।

लड़कों के लिये।

१२। स्कूल में पढ़ने वाले लड़के अगर छापाख़ाना में आकर ले जायें तो उन को फुट नम्बर का नक़द सात पैसा और पेशगी दे जायँ तो एक रुपया चार आना साल भर का देना होगा।

१३। लड़के जब यहां वि० व० लेने के लिये आयेंगे तो उन को एक टिकट मुफ़्त में मिलेगा जिस पर उन का नाम आदि लिखा रहेगा जब बिहार-बन्धु खरीदने को आयेंगे तो उन को दिखलाना होगा। उस के बाद यदि वह आप न भी आवा चाहें तो अपने नौकर को टिकट के साथ भेज दें उन को सात ही पैसे में वि० व० मिलेगा।

१४। दूसरे शहर के लड़के यदि अपने पंडित वा मास्टर से चीठी लिखवा कर पेशगी रुपया भेजेंगे तो उन को भी किफ़ायत में मिलेगा ही पर छ आना महसूल का अलग लगेगा यानी एक रुपया दस आना देने से मिलेगा।

विज्ञापन का नियम।

१५। मासिक पत्र के साथ का विज्ञापन बहुत दिनों तक रहता है। इस में विज्ञापन छपवाने वालों को विशेष लाभ की संभावना है।

पहलीबार	प्रति पंक्ति	१/)
दो महीने तक का	,,	१/)
तीन महीने तक का	,,	।)
चार महीने तक का	,,	।/)
पांच महीने तक का	,,	१/)
छ महीने तक	,,	।/)

एक बरस या इस से बेशी दिनों तक एक पेज इश्तिहार का ७) महीना

इश्तिहार यदि आधा पेज से कम होगा और बरस दिन या ज्यादे दिनों तक छपेगा तो ।) प्रति पंक्ति लिया जायेगा।

हर हालत में इश्तिहार की क़ीमत पेशगी लेना चाहिये पर बरस दिन या बेशी दिनों तक इश्तिहार छपवाने वालों से छ महीने तक का पेशगी दाम मिलने में भी हर्ज नहीं होगा।

१६। विज्ञापन में ब्लौक या तस्वीर भी पड़ सकती है।

मैनेजर
बिहार-बन्धु छापाख़ाना
बांकीपुर।

THE

BEHAR-BANDHU

बिहार बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

AUGUST & SEPTEMBER 1893 VOL. XXII—NO 8, 9

मासिक पत्र।

अगस्त, सेप्टेम्बर १८९३। बाईसवां भाग—नम्बर ८, ९

१ अध्यवसाय और सदिच्छा।
२ कालीदासकृत शृंगारतिलक भाषा
३ अलक्ष्मी।
४ जीव जन्तु—कुत्ता।
५ बैरिष्टर लालमोहन घोष।
६ बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी।
७ स्वर्गीय काशीनाथ त्र्यम्बक तैलंग
८ समुद्र में शिरोन्द्रुं।
९ प्राप्ति स्वीकार। (लगातार)
१० ज़राफ़त या सेती।
११ अपनी ही दाव सूझती है।
१२ मद्य।
१३ दवाबीरो।
१४ प्राप्ति स्वीकार।
१५ आकृत।
१६ हरगंगा।
१७ खबरें।
१८ समाचार दाता।



बांकीपुर
"बिहार बन्धु" छापाखाना,
१८९३।

[illegible] खड्ग बहादुर दास, बी. ए.

430

सूचना।

इस नगर की आब हवा बिगड़ने के कारण इस कारखाने के कई आदमी बीमार पड़ गये इसी कारण बिहार-बन्धु पाठकों की सेवा में समय पर न जा सका। अगस्त और सेप्टेम्बर का साथ ही सेवा में जाता है।

प्रबन्ध कर्त्ता।

दूसरी सूचना।

इस बार के बिहार-बन्धु के साथ कारनामः राय बहादुर पाठकों की सेवा में पूर्त्ति के रूप से जाता है। आशा है को इसे पढ़ कर रियासत डुमराँव के सुयोग्य दीवान राय जयप्रकाश लाल बहादुर सी० आई० ई० के कार्य विदरण से ज्ञात होंगे।

प्रबन्ध कर्त्ता।

अध्यवसाय और सहिष्णुता ।

कृतकार्य होने की राह बड़ी दुर्गम है। अकस्मात् या सहज में यह लाभ नहीं हो सकता। एका एक कौन बहुत बढ़िया चित्रकार हो गया है ? एका एक कौन कभी बहुत बढ़िया गवइया या बजवइया हो गया है ? अध्यवसाय के बिना कोई आदमी किसी उम्दा काम में पूरा नहीं हो सकता। जो यथार्थ में अध्यवसायी हैं वह योंही कभी नहीं हार मानते। पहली बार वह निराश होते हैं फिर कोशिश करते हैं दूसरी बार निराश होते हैं, फिर दूने उत्साह से कोशिश करते हैं इसी तरह बार बार कोशिश करते करते इच्छानुसार फल पाने में कृतकार्य होते हैं। बार बार निराश हो कर भी जो आशा नहीं छोड़ते और काम पूरा होने तक तन मन से उपाय करते हैं ऐसे ही आदमियों को यथार्थ अध्यवसायी और पुरुष कहा जा सकता है ।

मामूली एक पेड़ को भी गिराने के लिये जबर्दस्त से बार बार उसमें कुल्हाड़ा लगाना पड़ता है तब किसी बड़े कामकेलिये जब तक बार बारकोशिश न की जावे तब तक उसका पूरा होना क्यों कर संभव है ? मधुमक्षिकायें जो मधु का छत्ता बनाती हैं उसके बनाने में क्या उनको अनगिनती फूलों पर घूमना और बारबार कोशिश करने की ज़रूरत नहीं पड़ती है ?

जितने आदमी संसार में बड़े हुए हैं उनमें सब ही इस अध्यवसाय की सहायता से अपना काम पूरा करने में समर्थ हुए। कोई आदमी एक दिन में उन्नति नहीं कर सकता।

बटोही जिस तरह एक एक पैर आगे रख कर अपनी राह में आगे बढ़ते हैं उसी तरह ज़िन्दगी की राह चलने वाले बटोही धीरे धीरे ज़िन्दगी की राह काटते हैं। अगर चाहे तो भी जिस तरह राह के एक ठिकाने से दूसरे ठिकाने पर कोई मुसाफ़िर एक तड़पान में नहीं जा सकता लेकिन सहनशीलता के साथ उसे थोड़ा थोड़ा करके राह काटना पड़ता है उसी तरह कोई मनुष्य भी एका एक अपनी इच्छानुसार फल पाने की आशा नहीं कर सकता, लेकिन है क्या कि, उपाय, मिहनत और बरदाश्त को सहारे से कोशिश करने के बाद अपनी उलझी हुई मुराद हासिल होती

है। किसान बीज बोते के साथ ही कटनी नहीं कर सकता पर बहुत दिनों तक उसे सचेत हो कर, आस लगा कर और धीरज धर कर राह देखना पड़ता है। पहले अंकुर निकलता है तब पत्ते निकलते हैं तब दाने लगते और पकते हैं, तब कहीं कटनी का वक़्त आता है। इसी तरह कामों में बहुत से हिस्से हैं जिनके धीरे धीरे पूरे होने पर अन्त को कृत-कार्यता लाभ होती है।

सिर्फ़ चाहने ही से कोई बड़ा काम पूरा नहीं हो सकता। धीरज के साथ बहुत दिन बीताने से और बहुत यत्न करने से तब उस काम का फल मिलता है। एक कहावत है "कि समय और धीरज तूंत के पत्ते को साटन बना डालता है।" जब तक धीरज धरने और राह देखने का तौर नहीं मालूम हो तब तक किसी बड़े काम के पूरा करने की आशा केवल निराशा ही समझना चाहिये।

अधीरजी मनुष्य एक ही दिन में लाखपति या सब शास्त्रों में निपुण होना चाहते हैं। लड़की की तरह बीज बोते ही देखते हैं कि अंकुर निकला या नहीं। किसी काम में जो विघ्न या बाधा होती है वह उन्हें दुर्गम पहाड़ सा जान पड़ता है। वह भय और निराशा में डूब जाते हैं, बहुत जल्दी अपनी शक्ति के बाहर मिहनत देख कर ढीले हो जाते हैं, झूठी कोशिश में अनमोल वक़्त बरबाद करते हैं, घबराहट के साथ नई नई राह पकड़ते हैं और तुरत फल पाने की आस नहीं देखकर बार बार उसे छोड़ देते हैं, इसी तरह उनकी कोशिश मिहनत वग़ैरह सब ही बेफ़ायदा हो जाती है।

लेकिन जिन को धीरज है वे स्थिर मन से काम में हाथ लगाते हैं क्यों कि वह जानते हैं कि दिल्ली या कलकत्ता शहर एक दिन में नहीं बना था—अकस्मात कोई आदमी किसी काम में पूरा नहीं हुआ, इस लिये वह धीरे धीरे शक्ति के अनुसार, मिहनत और उपाय करके कृत-कार्यता लाभ करते हैं। विघ्न आदि के दुर्गम पहाड़, उन की स्थिर बुद्धि, लगातार मिहनत और उपाय के आगे, अपना सिर नीचा कर लेते हैं।

बहुत से आदमियों का यह ख़याल है कि किसी किसी आदमी को स्वाभाविक असाधारण बुद्धि रहती है और उसी की मदद से बिना मिहनत

के बड़े बड़े काम और आसानी के साथ कर सकते हैं। इस असाधारण बुद्धि शक्ति को बहुत लोग प्रतिभा कहते हैं। ईश्वर के विशेष अनुग्रह से होती है सब के भाग्य में यह नहीं रहती। लेकिन इतिहास वगैरह को देख कर जहां तक विचार किया जाता है इस से ईश्वर के विशेष अनुग्रह से मिली हुई इस असाधारण बुद्धि शक्ति का पता नहीं लगता। यदि यथार्थ ही में कोई ऐसी चीज़ रहती तो हम लोग बराबर सुना करते कि आज फलाने आदमी सुप्रसिद्ध तानसेन की तरह गवईया हुए हैं, आज फलाना आदमी माइकेल एञ्जेलो की तरह सिलकार हुआ है और अगर यह बात होती तो ज्ञानी लोग कभी नहीं ऐसा कहते कि "आदमी ने जो कुछ किया है सब ही, आदमी कर सकता है। विशेष करके ऐसा विचारने से ईश्वर के न्याय में दोष लगाया जाता है।

युरप के विद्वानों में से प्रायः कोई भी प्रतिभा नामक ईश्वर की विशेष अनुग्रह प्रगट करने वाली वस्तु पर विश्वास नहीं करते। उन में कोई कोई कहते हैं कि प्रतिभा सिवाय "लगातार कष्ट करने की शक्ति" के और कोई चीज़ नहीं है। कोई "मामूली ज्ञान के बढ़न्ती" ही को प्रतिभा कहते हैं। कोई उद्योग करने की शक्ति ही को प्रतिभा कहते हैं। कारलाइल और बफौन साहब कहते हैं कि "सहिष्णुता ही प्रतिभा है। न्युटन जिन्हें सब ही जानते हैं कि वह बड़े तेज़ थे, लेकिन जब उन से किसी ने पूछा कि "साहब आपने किस तरह यह असाधारण काम पूरा किया" तब उन्हीं ने नम्र भाव से यही जवाब दिया था कि "बराबर इन ही सब बातों के सोचते सोचते हम ने कामयाबी हासिल की है।" डाक्टर बेन्टली से उन्हों ने कहा था कि—"अगर हम ने सब के हित के लिये कोई काम किया है तो केवल परिश्रम और सहिष्णुता से मिली हुई चिन्ता ही से हमने पूरा किया है।" इस लिये प्रतिभा ईश्वर की विशेष दया प्रगट करने वाला कोई गुण नहीं है। ईश्वर किसी पर कम और किसी पर अधिक अनुग्रह नहीं दिखलाता। उस की सब जीवों पर समान दया है वह समदर्शी है।

प्रतिभा यथार्थ में "अपनी अग्नि तेज़ करने की शक्ति है।" यह तेज़ी अग्नि सब में है। जो परिश्रम अध्यवसाय सहिष्णुता से

उसे तेज़ कर ले सकते हैं वही उन्नति लाभ कर सकते हैं और जो यह नहीं कर सकते वे साधारण आदमियों के साथ साधारण कामों में अपनी ज़िन्दगी बिताते हैं ।

यथार्थ में लगातार अध्यवसाय और सहिष्णुता के बिना, विज्ञान, साहित्य कारीगरी आदि किसी विद्या में भी निपुणता नहीं होती । प्रसिद्ध सर जोशुआ रिनोल्ड्स ने कहा है कि " यदि किसी को तस्वीर या और किसी कारीगरी के काम में निपुणता लाभ करना हो तो उसे सुबह को बिछावन पर से उठ कर रात को फिर बिछावन पर जाने के वक्त तक उसी एक बात में मन को लगाये रखना चाहिये ।" बड़े प्रसिद्ध गियारडिनाई से एक जवान ने बीन बजाना सीखने के लिये जाकर पूछा कि " साहब कितने दिनों में बीन बजाने में हम पूरे हो जायेंगे ? " उन्होंने जवाब दिया कि "हर रोज़ बारह घंटे के हिसाब से बीस बरस जब मिहनत करोगे तब निपुण हो सकते हो । " इनहीं सब दृष्टान्तों से जान पड़ता है कि बिना अध्यवसाय के किसी विषयमें निपुणता नहीं हो सकती ।

बहुत से प्रधान प्रधान मनुष्य बार बार हार कर अन्त को कृतकार्यता लाभ करके समर्थ हुए हैं । वह जितने बार हार गये हैं उतने ही बार अधिक साहस और अध्यवसाय के साथ फिर अपना काम उन्हीं ने आरम्भ किया है । इंग्लैन्ड के मंत्री डिज़रेली ने पहले दफा जब पार्लिमेन्ट की बड़ी सभा में वक्तृता देने की कोशिश किया था तब वहां के आदमियों ने उनकी निन्दा और हंसी की थी । किन्तु उन्हों ने सहज से नहीं छोड़ दिया, उन्होंने तुरत ही कहा कि " बहुत से काम हम बार बार शुरू करके अन्त को कृतकार्य हुए । अच्छा तो हम आज बैठ जाते हैं लेकिन एक दिन वह आयेगा कि जब आप लोग मेरी वक्तृता कान लगा कर सुनेंगे ।" और सच ही उन्होंने अपना वचन पूरा किया, जिस डिज़रेली की महा सभा में इस तरह निन्दा हुई वही महापुरुष इंग्लैन्ड के मंत्री हो कर उन्हीं आदमियों को उन्हीं ने मोह रक्खा था ऐसे अध्यवसायी वीर पुरुष यदि पृथिवी में उन्नति नहीं कर सकेंगे तब और कौन उन्नति कर सकेगा ?

महाकवि कालिदास कृत शृंगारतिलक भाषापद्य अनुवाद सहित।

श्लोक।

बाहू द्वौ च मृणालसाम्यकमलं, लावण्यलीलाजलम्।
श्रोणीतीर्थशिला च नेत्रसफरं, धम्मिल्लशैवालकम्॥
कान्तायाः स्तन चक्रवाकयुगलं, कंदर्प बाणानलै
र्दग्धानामवगाहनाय विधिना, रम्यं सरोनिर्म्मितम् १

सवैया।

बाहु हैं दोय मृणाल तथा मुखपंकज पंकज, रूप सुहाना।
सुन्दरता जल सिद्धि सुश्रोणि बड़े दोनों लोचन मीन समाना॥
केश सिवार सरोज रथांग को जोड़ा सरोवर चित्त लुभाना।
काम के बाण जले जन लौं, विधि कीन विचारि निहारि विधाना॥ १॥

श्लोक।

आयाता मधुयामिनी यदि पुनर्नो यात एव प्रभुः
प्राणा यान्तु विभावसो यदि पुनर्जन्मस्यहं प्रार्थये॥
व्याधः कोकिलबन्धने हिमकरध्वंसे च राहु यथः।
कन्दर्पे हरनेत्रदीधितिरहं प्राणेश्वरे मन्मथः॥ २॥

सवैया।

आवेगी आलि बसन्त निशा, यदि बालम मोरे घरे नहिं ऐहैं।
अग्नि जलौं पुनि जन्म भये, करि यत्न मैं व्याध अवश्यहि ह्वैहैं॥
कोइल बांधौं बसौ विधु राहु, महेश के लोचन काम जलैहैं।
काम को लैअवतार बिहारि स्वनाथहि हौं भलि भांति छकैहैं॥ २॥

श्लोक ।

इन्दीवरेण नयनं मुखमम्बुजेन
कुन्देन दन्तमधरं नवपल्लवेन ।
अंगानि चम्पकदलैः स विधाय वेधाः,
कान्ते कथं घटितवानुपलेन चेतः ॥ ३ ॥

सवैया ।

पंकजतें ये सुलोचनि ! लोचन, अम्बुजतें मुख कौन विधाना ।
कुन्दकलीनतें दन्तकली, अधरान सुपल्लव लाई के नाना ॥
चम्पक फूल कि पाखड़ि तें ये सुहावन गात बने हैं महाना ।
काहु कठोर पखान रचा मन तोर विचारि मनाये न माना ॥ ३ ॥

श्लोक ।

एकोहि खञ्जनवरो नलिनी दलस्थो,
दृष्टः करोति चतुरंग बलाधिपत्यम ।
किम्वाकरिष्यति भवद्वदनारविंदे,
जानामि नो नयनखञ्जन युग्ममेतत् ॥ ४ ॥

दोहा ॥

एकहु खिड़रिच कमल पैं, लखे देत बड़ राज ।
लाजौं नहिं क्या देखिगें, दृग खंजन युग आज ॥ ४ ॥

श्लोक ।

येये खञ्जनमेकमेव कमले पश्यन्ति, दैवात् ववचित ;
ते सर्व्वे कवयो भवन्ति सुतरां प्रख्यात भूमी भुजः ॥
त्वद्वक्त्राम्बुज नेत्र खञ्जन युगं पश्यन्ति येये जना ।
स्तेते मन्मथबाणजाल विकला, मुग्धे किमेतदभुतम् ॥५॥

सवैया ।

भाग्य के योग लखें जनके, इकखंजन पंकज ऊपर प्यारी !
होयं कबी वे धरातल बीच, बड़े अति भूपति कुंवर धारी ।
काम के बान तें व्याकुल क्यों, यह बात लखात न अद्भुत न्यारी ॥
होहिं कहीं तुमरे मुख पंकज, ऊपर खञ्जन जोड़ा निहारी ॥ ५ ॥

श्लोक ।

झटिति प्रविश गेहं मा बहिस्तिष्ठकान्ते ।
ग्रहणसमयवेला वर्तते शीतरश्मेः ॥
तदिह विमलकान्तिं वीक्ष्य नूनं स राहु ।
र्यसति तव मुखेन्दुं पूर्णचन्द्रं विहाय ॥ ६ ॥

सवैया ।

शीघ्रहि जाहु न मन्दिर भीतर, बाहर नेकु न ठैरहु बाले ।
चन्द्र को राहु गरासत हैं, उपराग की बेला अहै एहि काले ॥
मुखचन्द्र तुम्हार निहारि सुहावन, सुन्दर जैसे सुधा भर प्याले ।
ग्रसि हैं तजिके निशिचै विधु को, यह चिन्ता हिये हमरे अति शाले ॥६॥

श्लोक ।

कस्तूरीवरपत्रभंगनिकरो भ्रष्टो न गंडस्थले ।
नोलुप्तं सखि चन्दनं स्तनतटे धौतं ननेत्राञ्जनम् ॥
रागोन्मस्खलित स्तवाधरपुटे ताम्बूलसम्वर्द्धितः ।
किंरुष्टासिगजेन्द्रमन्दगमने किंवा मृदुस्ते पतिः ॥ ७ ॥

सवैया ।

कस्तूरि को चित्र कपोल लसैं, कुच चन्दन लेप ककू नहिं लोपा ।
आंख तें अंजन कूटा नहीं, अधरानमों रंग अभी जनु रोपा ॥
बालम तेरे निहारि हैं बालक, सुन्दरि यातें तुझे नहिं रोका ।
सत्य कहै गजगामिनि ! कौन तू प्यारे से मान महा किसु कोपा ॥ ७ ॥

श्लोक ।

समायातेकान्तेकथमपिच कालेन वहुना ।
कथाभिर्देशानां सखि रजनिरर्द्धंगतवती ॥
ततोयावल्लीलाकलह कुपितास्मिप्रियतमे ।
सपत्नीव प्राची दिगियम भवत्तावदरुणा ॥ ८ ॥

सवैया ।

बहु काल के अन्तर प्यारे हमार सखी ! घर कौनहुं भाँति जो आये ।
देश विदेश कि बातन में में निगोड़ि तहां अधरात बिताये ॥
जब आइ कलोल-कि बेला भली, अति कलहइ मान मनै मन छाये ।
पूरब की दिशि सौत बिहारि, यही बिच डाह की लाली दिखाये ॥ ८ ॥

श्लोक ।

श्लाघ्यंनीरसकाष्ठताड़नशतंश्लाघ्यः प्रचण्डातपः
क्लेशः श्लाघ्यतरः सुपंकनिचयैः श्लाघ्योऽतिदाहानलः ॥
यत् कान्ताकुचपार्श्वबाहुलतिका छिल्लोललीलासुखं,
लब्धंकुम्भवर त्वया नहि सुखं दुःखैर्व्विनालभ्यते ॥ ९ ॥

सवैया ।

नीरस काठ की चोट भली, भल घाम के बीच पसारि सुखाना ।
कीचड़ धूरि लपेटि बिहारि, बड़ाई के योग्य है आग जलाना ॥
मृग लोचनि बाहु लता कुच के ढिग, झूलन को सुख जो तुम जाना ।
राखु घड़े ! निश्चै मन में, दुख के बिन होत नहीं सुख पाना ॥ ९ ॥

श्लोक ।

किंमेवक्त्रमुपेत्यचुम्बसिवलान्निर्लज्जलज्जा क्व ते,
बस्तान्तंशठमुच्चमुच्चशपथैः किं धूर्त्तवाग्बन्धनैः ॥
खिन्नाहंतवरात्रिजागरबशात् तामेवयाहिप्रियां
निर्म्माल्योज्झितपुष्पदामनिकरेकाषट्पदीनांरतिः ॥ १० ॥

सवैया।

काहे को चूमहू धूरत तू मुख, लाज नहीं तुम को कछु आती।
वस्त्र को टीक तू छोड़ी हमार, क्रिया कसता नहिं बात छिपाती॥
दुख में पति है यह देह हमार, जगी अमरा तुमरी भरि राती।
जाहु निगोड़ी के पास वही, भवरी कहुं जूठ प्रसून नहिं खाती॥१०॥

श्लोक।

वाणिज्येन गतः स मे गृहपतिर्व्वार्त्तापि न श्रूयते।
प्रातस्तज्जननी प्रभूततनया जामातृगेहं गता॥
बालाहन्नवयौवना निशि कथं स्थातव्यमस्मद्गृहे,
सायंसम्प्रतिवर्त्तते पथिकहे स्थानान्तरे गम्यताम्॥११॥

सवैया।

सासु ननन्दा के गेह गई, तहं देखन को निज नाति बधाई।
बानिज लागि विदेश गये, मनदेअहु पी को न देत सुनाई॥
बारी अकेली रहौं घर हौं, तुवरात सुवामन छै यहि ठाई।
सांझ भभी कुछ देर न पान्थ, तुवास करे अनते कहुं जाई॥११॥

श्लोक।

यामिन्येषागहनजलदैर्व्वह्नभीमान्धकारा,
निद्रांयातोगृहपतिरसौ क्लेशितः कर्म्म दुःखी॥
बालाचाहं मनसिजभयात् प्राप्तगाढ़प्रकम्पा।
यामश्चौरैरयमुपयतः पान्थनिद्रांजहीहि॥१२॥

सवैया।

यह रात महा अंधियारी कि वारि, छइ चहुं ओर न नेकु दिखाये।
थकि कै अस सोये परिश्रम मे, पति मोर जगे नहिं कैसो जगाये॥
वारि मैं कांपति हौं डरतें, एहि गांव मों चोर रहैं बहु छाये।
लागु बटोहि न सोचा अभी, बड़ भागनु आज यहां तुम आये॥१२॥

श्लोक ।

इयं व्याधायते बाला भ्रूरस्याः कार्मुकायते ॥
कटाक्षाश्च शरायन्ते मनोमे हरिणायते ॥ १३ ॥

दोहा ।

यह बाला व्याधा भई, याके भौंह कमान ।
अखियां याकी शर भईं, ममचित हरिन बखान ॥ १३ ॥

श्लोक ।

क्वभ्रातश्चलितोऽसि वैद्यकगृहं किन्तत्रशान्तीरुजां
किन्तेनास्ति गृहेसखे प्रियतमा सर्व्वानगदान् हन्ति या ।
वातश्चेत् कुचकुम्भ मर्दनवशात् पित्तञ्चवक्त्रामृतात् ।
श्लेष्माणंविनिहन्ति हन्तसुरतव्यापारकेलिश्रमात् ॥ १४ ॥

सवैया ।

मित्र कहां तुम जाहु चले, हम वैद्य के भौन चले सुनु भाई ।
क्या है नहीं ललना घर में, जिन देत भले सब रोग भगाई ॥
कुच मर्दन बात हटावत है, मुख अमृत पान तें पित्त नसाई ।
क्रीड़ा कलोल परिश्रम तो, कफकी अधिकाइ को देत हटाई ॥ १४ ॥

श्लोक ।

दृष्टिंदेहिपुनर्बालि कमलायतलोचने ॥
श्रूयतेहिपुरालोके विषस्य विषमौषधम् ॥ १५ ॥

दोहा ।

फिर हम को मृगलोचनी, लोचन देहु दिखाय ।
सुना जात विष तें पुरा, विष ज्वाला हरि जाय ॥ १५ ॥

श्लोक ।

अन्तर्गता मदन वन्हिशिखावली या,
नोबाधते किमिह चन्दन चर्चितेन ।

यःकुम्भकार पवनोपरिपंकलेपः,
तापाय केवलमसौ न च तापशान्त्यै ॥ १६ ॥

दोहा।

चित अन्तर मनसिज जलनि, चन्दन लेप कि जाय।
कुम्भकार घट लेप किमु, ताप नहीं अधिकाय ॥ १६ ॥

श्लोक।

दृष्ट्वा यासां नयन सुषमां वंग वारांगणानां,
देशत्यागः परमकृतिभिः कृष्ण सारैरकारि।
तासांमेवस्तनयुगजिताः कुम्भिनः सन्तिमत्ताः,
प्रायोमूर्खैः परिभवविधौनाभिमानं तनोति ॥ १७ ॥

सवैया।

बंग कि बारबधून कि लोचन शोभा लखे मृग जंगल भागे।
उनके कुच कुम्भ को देख के ये, गज जो मतवाले भये अरु रागे ॥
सत्य कहैं कवि लोग जो हार तें, उत्तम को मन ही अति लाजे।
मूरख को अभिमान न जात, चहे जेतिबार वे हार के भागे ॥ १७ ॥

श्लोक।

अपूर्वोदृश्यते वन्हिः कामिन्याः स्तनमण्डले।
दूरतो दहते गात्रं हृदिलग्नस्तु शीतलः ॥ १८ ॥

दोहा।

अद्भुत आगि लखाति हैं, कामिनि के कुच मीत।
दूर तें दाहति देह जो, हिये लगे अति शीत ॥ १८ ॥

श्लोक।

कथमेतत् कुचद्वन्द्वं पतितं तव सुन्दरि ॥
पश्याधस्खननान्मूढ़ पतन्ति गिरयोऽपिच ॥ १९ ॥

दोहा ।

कुच जोड़े तब क्यों गिरे, सुन्दरि कहु यह गूढ़ ।
नीचे खलनी मे गिरें, परवत हूं लखु गूढ़ ॥ १८ ॥

श्लोक ।

कुसुमे कुसुमोत्पत्तिः श्रूयते नच दृश्यते ।
बाले तवमुखाम्भोजे कथ मिन्दीरवद्वयम् ॥ २० ॥

दोहा ।

फूल तें फूल की जन्म में, देखा सुना न कोय ।
प्यारी मुख पंकज विषे, क्यों ये पंकज दोय ॥ २० ॥

श्लोक ।

अयिमन्मथचूतमञ्जरि श्रवणायतलोचने ॥
अपहृत्यमनः क्व यासितत् किमराजकमत्रराजते ॥ २१ ॥

दोहा ।

काम आम की मञ्जरी ! बड़े आंख की बाम ।
चित्त चुराय कहं जाति क्या, बिन राजा यह ठाम ॥ २१ ॥

श्लोक ।

कोपस्त्वया हृदिकृतोयदिपंकजाक्षि,
सोस्तुप्रियस्तव किमत्रविधेयमन्यत् ॥
आश्लेषमर्पयमदर्पितपूर्व्वमुच्चै
र्दन्तक्षतं ममसमर्पयचुम्बनञ्च ॥ २२ ॥

दोहा ।

क्रोध कियौं यदि मोहिपै, अपर कहौ का बाम ।
मम आलिंगन चूमिबौ, फेरहु फिरि तहिं काम ॥ २२ ॥

इति श्री कालि दास विरचितं शृंगार तिलक समाप्तम् ॥

इति बिहारि कृतं भाषा शृंगार तिलकम् ।

अलक्ष्मी ।

एक ब्राह्मण के कुटुम्ब में उसकी स्त्री और कई बच्चे थे। ब्राह्मण सत्यनिष्ट और स्वभाव का सरल था। ब्राह्मणी भी सती साध्वी और पति परायणा थी पर ये बड़े दरिद्र थे। दारुण अन्नकष्ट सदा उनके यहां रहता था।

इनकी तो कोई बात ही नहीं थी उपवास ही में न जाने कितने दिन कटते थे। पर उनके बच्चों को भी शाम के वक़्त एक मूठी अन्न सब दिन नहीं मिलता था। वे भूख से सताये अपनी माता का अंचल पकड़, बहुत ही कलपते थे, जिसे देख कठोर हृदय भी पिघल जाता था। आहार न मिलने के कारण उन कच्चे बच्चों की केवल हड्डी ही सार देख पड़ती थी, पसुलियों का गिनना तो कोई बात ही नहीं थी।

संसार बड़ी कठिन जगह है, कौन किसकी ओर देखता है! सभी अपने अपने काम में लगे रहते हैं, अपने ही सुख दुख में व्यग्र रहते हैं! किसको गरज़ है कि उस ब्राह्मण के घर की दरिद्रता देख फ़ाज़िल्ल दुख से दुखी हो!

भिक्षा से अब नहीं चलता—भिक्षा अब कोई देना नहीं चाहता, भिक्षा मांगने में ब्राह्मण स्वभाव ही से हिचकते हैं पर केवल बच्चों से लाचार ही भिक्षा मांगने को जाते थे मिलता भी कुछ नहीं था, जो कुछ मिलता भी था उससे दोनो स्त्री पुरुष के आप भूखे रहने पर भी सन्तान का आधा पेट भी नहीं भरता था। इसके अलावे ब्राह्मण धर्मात्मा थे, संसार का छल प्रपंच कुछ जानते न थे और जान कर उसमें उनकी प्रवृत्ति भी नहीं होती थी कि जिससे धन उपार्जन कर परिवार का पालन करते। ब्राह्मण के कुल में जन्म लेकर यह भी कैसे हो सकता था कि अपने वर्ण का काम छोड़ दूसरी वृत्ति अवलम्बन करें? क्यों कि इससे धर्म भ्रष्ट होने का भय है।

सहायहीन जीविकाहीन दरिद्र ब्राह्मण की सहनशीलता और श्रम ही की ओर कौन देखता है? इस भयंकर संसार में जो जितना चतुर और कारीगर है उसी की न बढ़न्ती है? वही न संसार युद्ध में जयी होता है?

स्त्री पुरुष आप उपवास सहन कर सकते हैं पर क्षुधा की पीड़ा से पीड़ित बच्चों को कब घड़ी देख सकते थे? और देख ही कर कहां तक सहेंगे? हाय! हाय! मा बाप से कहां तक यह दुख सहा जा सकता है!!!

ब्राह्मणी बिचारी केवल रोती है और भगवान की याद करती है, पर ब्राह्मण संसार से बिरक्त होने लगे यहां तक कि परमेश्वर के बिधान में भी कुछ सन्देह सा उनको होने लगा। दरिद्रता की चक्की में पिस कर ब्राह्मण को कुछ समझ नहीं पड़ता था कि क्या करें अन्त को "मरण ही श्रेष्ट है" यह बिचार बिना ब्राह्मणी से कुछ कहे सुने चुप चाप घर से निकले।

जाते जाते राह में एक सन्यासी महात्मा से भेंट हो गई। सन्यासी को देख ब्राह्मण ने आदर के सहित उनका चरण पकड़ा और श्रद्धा के साथ सिर झुका सन्यासी के पास खड़े हुए। उन्हों ने ब्राह्मण का दुखी मुख देख स्नेह के साथ पूछा "कहो बच्चा क्यों दुखी से हो रहे हो?"

ब्राह्मण आंख डबडबा कर बोले "भगवन! बिरक्त हो घर से बाहर निकला हूं अब जीने की मेरी लालसा नहीं है, पर आत्म हत्या बड़ा पाप है कृपा कर कहिये कब मेरी मृत्यु होगी और कैसे मैं मरूंगा?"

सन्यासी—तुम क्यों मरना चाहते हो? पहले अपना हाल कहो तब हम प्रश्नका उत्तर देंगे।

ब्राह्मण ने सन्यासी से अपनी दरिद्रता का हाल बतला कर कहा "देव! अब यह यातना नहीं सही जाती। सब सह सकता हूं पर थोड़े से अन्न के लिये कुटी का आर्त्त नाद नहीं सहा जाता। जीवन की यातना से जरजर हो रहा हूं अब शरीर का अन्त हो जाये तो प्राण बचे।"

सन्यासी के मन पर इस दुख कथा का कुछ असर न हुआ सुनने के बाद धीर गम्भीर स्वर से बोले—तुम संसारी हो, संसार में सुख शान्ति तुम को नहीं मिली, तुम्हारा पहले का किया हुआ कर्मफल आगे आया है। कर्मफल से कष्ट जो होता है वह किसी के टाले नहीं टल सकता है। संसार से विरक्त हो कर मृत्यु की इच्छा करना भी पाप है। इस लिये मेरा यही अनुरोध है कि दारिद्र्य का दुख कैसा भी क्यों न हो पर आत्म हत्या का पाप कभी मत बटोरना अभी तुम अलक्ष्मी की दृष्टि में पड़े हो। जब तक अलक्ष्मी तुम्हारे आश्रय में रहेगी तब तक तुम्हारी दरिद्रता न दूर होगी। सारा संसार तुम्हारी सहायता को आवे तब भी यह अन्न कष्ट नहीं दूर होगा। यह निश्चय जानो।

यह सुन कर ब्राह्मण ठंढी सांस लेकर बोले—महात्मन् तब अब क्या उपाय है?

सन्यासी—एक उपाय है, कहता हूं मन लगा कर सुनो—तुम घर लौट जाओ घर जाकर अलक्ष्मी की एक मूर्त्ति बना कर यथा शास्त्र पूजा करो। पूजा के अन्त में प्रतिमा का विसर्ज्जन मत करना। प्रतिमा अपने सिर पर रख नगर में जाकर बाज़ार में लोगों के द्वार पर हो पूछना कि "कौन अलक्ष्मी लेगा" जो लेना चाहे उसे प्रतिमा दे घर लौट आना। उस के बाद जो होगा जानोगे। पर जब तक कोई प्रतिमा न ले तब तक घर मत लौटना।

सन्यासी की बात मन लगा कर सुनने के बाद ज़रा दम लेकर बोले—महाशय आपने जो कहा वह तो हम ने समझा पर उस प्रतिमा को कोई न ले तब हम क्या करेंगे? इस संसार में कौन अलक्ष्मी को और किस लिये लेगा?

सन्यासी—जब कोई भी लेने वाला न ठहरेगा तब उस का उपाय बतला देंगे (यह कह कर सन्यासी अन्तर्ध्यान हो गये)।

ब्राह्मण ने लौट कर सब समाचार ब्राह्मणी से कहा और दोनों मिल अलक्ष्मी की पूजा का उद्योग करने लगे। प्रतिमा बनी, पुराना घर,

झाड़ू जिस से बांधी जाती है वह डोरी, पुराना बांस, बजबजाते हुए तालाब की मिट्टी, पड़ोसीन के यहां से राख ब्राह्मणी ले आई ये सब सामान आये। लोढ़े के आभूषण पहनाये गये। सैंकड़ो जोड़ का फटा हुआ मशीन चिथड़ा कोयले की बुकनी में रंग कर देवी को दिव्य वसन पहनाया गया। इन सब वस्तुओं से अलक्ष्मी की मनुष्य के बराबर प्रतिमा बनी, मन्त्रोच्चारण के साथ यथा विधि पूजा हुई। पूजा के बाद, सन्यासी के कहने अनुसार प्रतिमा सिर पर रख ब्राह्मण नगर में निकले।

ब्राह्मण पुकारने लगे "कोई अलक्ष्मी को लीजीये जी।" पहले नम्बर में जवाब मिला "मर बोड़ाहा ब्राह्मण दूर हो"। दूसरी बार "अजी गृहस्थ लोग कोई अलक्ष्मी को लोगे?" जैसे जैसे विचारे पुकारते चले कोई कहता यह ब्राह्मण मरता क्यों नहीं;—यह पागल है—कोई कहता "लगाओ बीड़िम" कोई कहता "दे दो दो चार धौल" किसी ने स्त्रियों को प्रसन्न करने के लिये यह कर भी दिखाया। धीरे धीरे मछली टोली के लड़के सूप ले ले कर आ जमा हुए और सूप बजाते हुए अलक्ष्मी समेत ब्राह्मण को नगर के बाहर कर मातृ आज्ञा पालन कर सपूत बने।

इस तरह दिन गया रात गई, रात गई दिन आया, वह दिन भी गया, ब्राह्मण कितने नगर कितने गांव कितने शहर में फिरे, पर किसी ने वह प्रतिमा न ली। कौन ऐसा अभागा और अहमक होगा जो अलक्ष्मी की प्रतिमा लेगा!

ब्राह्मण बड़े विपद में पड़े। अलक्ष्मी होने पर भी प्रतिमा तो देवी ही की ठहरी विशेषतः प्राण प्रतिष्ठा भी हो ही चुकी है, पूजा कर चुके हैं, प्रतिमा सिर पर, न उसे उतार ही सकते न आप बैठ ही सकते और न मल मूत्र ही त्याग कर सकते हैं। और दिन पर दिन बीतता चला जाता है, कैसी भारी विपद है। अलक्ष्मी ऐसी ही विपद में डालती हैं! जो कुछ हो ब्राह्मण बेचारे का प्राण जाने जाने पर हुआ। इस से तो भूख का कष्ट बहुत अच्छा था।

फिर ब्राह्मण ने सुना कि पास ही कहीं राजा ने एक बाज़ार बसाया है और इस बात की डुग्गी उन्हों ने पिटवाई है कि उस नये हाट में जो आदमी जो चीज़ ले जायेगा उस की वह चीज़ यदि बिन बिकी रह जायेगी तो राज सरकार से वह ख़रीद ली जायेगी। ब्राह्मण प्रतिमा ले कर उस नये बाज़ार में पहुंचे क्यों कि वहां से तो बिन बिकी कोई चीज़ फिरती न थी।

सब चीज़ें बाज़ार की बिक गईं, दूकानदारों ने दूकान बढ़ाया, लोग अपने घर गये, ब्राह्मण लेकिन तब भी प्रतिमा लिये खड़े ही रहे। हाट के गुमाश्ता ने पूछा "महाराज तुम्हारे सिर पर क्या है?" ब्राह्मण ने कहा "हमारे सिर पर अलक्ष्मी हैं इन को तो किसी ने न लिया अब अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इन की ख़रीद लीजिये" गुमाश्ता को हुक्म तो था कि हाट में कोई चीज़ बिना बिकी रह जाये तो सरकारी तहबील से ख़रीद लेना पर अलक्ष्मी या ऐसी कोई चीज़ भी ख़रीदी जायेगी या नहीं ऐसा कोई हुक्म नहीं था। दाम दे कर अलक्ष्मी को मोल लेना इस से बढ़ कर और क्या अहमक़पना हो सकता है। इस लिये गुमाश्ता ने दीवान के सामने यह बात पेश की। दीवान भी कुछ निर्णय न कर सके इस लिये राजा से उन्हों ने पूछा। राजा भी बड़े संकट में पड़े। एक ओर अलक्ष्मी का मोल लेना—दूसरी ओर सत्य का पालन। यदि प्रतिमा न ख़रीदें तो सत्य नहीं पालन हो, धर्म नष्ट हो। इधर अभाग्य की खान अलक्ष्मी को लेकर राज्य श्री ही कैसे नष्ट करें! यह भी बड़ी कठिन बात है। थोड़ी देर के बाद राजा ने यही निश्चय किया कि सत्य ही का पालन ठीक है। सोना देकर प्रतिमा ली गई। ब्राह्मण घर गये उन की दरिद्रता दूर हुई। इधर राजा ने अलक्ष्मी मोल ली, अब करें क्या? बड़े धूम से घर में प्रतिष्ठा की गई, पर राजा का मन बड़ा उदास हुआ। कौन चाहेगा कि अलक्ष्मी हमारे यहां रहे?

विषाद सागर में डूबे हुए राजा ने उस रात को आहार न किया, अन्तःपुर में भी न गये, दुख के कारण बाहर ही चुपचाप रहे। धीरे धीरे रात बढ़ती चली, सब सो गये थे, दशों दिशा सुनी देख पड़ती थी

सारा संसार उस समय स्मशान सा देख पड़ता था। केवल राजा ही सिंह द्वार की ओर अकेले बैठे थे, मन के उद्वेग से नींद नहीं आती थी, बैठे बैठे आकाश पाताल सोच रहे थे, चिन्ता का समुद्र उमड़ा ही आता है, बीच बीच में सिर उठाते हैं तो केवल घोर अंधकार ही नज़र आता है।

बहुत देर की चिन्ता के बाद चकित हो कर राजा ने एक बार देखा, देखते ही अचरज भी आया।—क्या देखते हैं कि एक स्त्री मूर्त्ति राज भवन से निकली और बाहर का रास्ता ले रही है। रूप दिव्य था कांचन सा गोरा वर्ण था, शरीर अलंकार से पूर्ण था, वस्त्र रेशमी थे। देखते ही राजा कुछ चौंके और डरे विचारने लगे यह क्या बात है क्या प्रतिरात को अन्तःपुर की कोई स्त्री सज कर इस तरह बाहर जाती है? संदेह से इच्छा प्रबल हुई देखें बात क्या है। क्रम क्रम से वह स्त्री इन के सामने आई और चली राजा ने उठ कर सुन्दरी से पूछा "आप कौन हैं?" स्त्री ने मधुर स्वर से जवाब दिया "मैं राज लक्ष्मी हूं। बहुत दिनों से यहां रहती थी, अब चली।" राजा ने हाथ जोड़ पूछा "आप क्यों जाती हैं? आप तो इस राज्य की सर्व मंगलमयी अधिकारिणी हैं अपना घर छोड़ क्यों जाती हैं?" लक्ष्मी बोली "अब कैसे यहां रहूं। राजा ने आप ही अलक्ष्मी को लाकर इस घर में स्थापित किया है। जहां अलक्ष्मी का वास है वहां हे राजा मैं किसी तरह नहीं रह सकती।"

राजा समझ गये। थोड़ी देर चुप रहने के बाद फिर साष्टांग दण्डवत कर बोले "हे माता इस अभागे का दण्डवत स्वीकार करो जब अब आप यहां रहना नहीं चाहतीं तब अब क्या कहूं जहां इच्छा हो जायें।"

लक्ष्मी चंचल चरणों से चली गईं। एक मुहूर्त भी न बीतने पाया था कि एक पुरुष मूर्ति द्वार पर देख पड़ी। शंख चक्र, गदा पद्म धारी, हिरणमयी शरीर और कनक कुंडल से शोभित था। राजाने प्रणाम कर हाथ जोड़ पूछा "भगवन आप कौन हैं और कहां जाते हैं?"

दिव्य पुरुष ने उत्तर दिया—मैं विष्णु नारायण हूं मैं लक्ष्मी के साथ जाता हूं। जहां लक्ष्मी नहीं हैं वहां तो मेरा रहना नहीं हो सकता। जहां लक्ष्मी वहां मैं।

राजा ने प्रणाम कर नारायण को विदा किया। इसी तरह धीरे धीरे ब्रह्मा शिव आदि और सब देवताओं को द्वार पर बैठ दुखित ही राजा ने विदा किया। सब के पीछे स्वच्छ वस्त्र पहने दीप्यमान एक महा पुरुष द्वार पर पहुंचे। राजा तो वहां थे ही साष्टांग प्रणाम कर बोले — सभी तो जा चुके अब आप कौन चले जाते हैं ? बतलाइये।

महापुरुष — मैं धर्म हूं। सब देवता चले गये अब मैं जाता हूं।

धर्म की बात पूरी भी न होने पाई थी राजा तुरत पास जा धर्म के दोनों पांव पकड़ बोले "आप यह स्थान त्याग कर जाना चाहते हैं जाइये। सत्य का पालन कर धर्म रक्षा ही के लिये आज इस राज भवन में मैं ने अलक्ष्मी को लाया है। राज श्री से अलग तो हो ही चुके, अब हे धर्म, आप मुझे छोड़ जाते हैं। अच्छा, अपना धर्म यथा साध्य हमने पालन किया अब अपने धर्म में जो उत्तम समझें आप करें। मुझे अब कुछ कहना नहीं है।"

धर्म बड़े बेमौके फंसे। हतबुद्धि की तरह बहुत देर तक स्थिर चित्त से कुछ सोचने लगे। सब देवता चले गये राजा ने एक एक करके सब को विदा किया केवल धर्म ही की रक्षा के लिये। धर्म अब कैसे चलेगा ? धर्म का डेग आगे न बढ़ा! धर्म ने कहा "वत्स, अज्ञात ही मैंने अकृतज्ञ का काम किया है। इस लिये तुम दुखी मत होओ। तुम धीरज रक्खो। सब देवता चले गये जाने दो, मैं तुमको कभी नहीं त्यागूंगा। देखो अब मैं लौट कर अपने वास स्थान में जाता हूं।" इतना कह कर धर्म ने राज भवन में प्रवेश किया।

राजा तब भी न उठे, पहले ही की तरह सिंह द्वार पर जमे रहे। थोड़ी ही देर के बाद ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर आदि सब देवता एका एकी

द्वार पर फिर आकर उपस्थित हुए। राजा ने पूछा "क्यों महाशय गए! अब कहाँ आप लोग चले? देवता बोले हम लोग फिर राजभवन में प्रवेश करते हैं, धर्म की छोड़ हम लोग कैसे जायें, आगे न बढ़ सकें—इसी लिये चले आये।"

"अच्छा! आइये आइये" कह कर सब को राजा आदर के साथ ले गये। सब के पीछे सुगन्धि आदि की पिटारी बगल में लिये धीरे धीरे लक्ष्मी भी आ पहुंचीं।

राजा।—माता! क्या आप फिर पहुंचीं?

लक्ष्मी—हाँ बच्चा आई। जाना नहीं हुआ।

राजा—आइये आइये। सब तो आप ही का है।

यह कह कर लक्ष्मी को साथ ले राजा राज भवन में आये।

* * * * * * *

प्यारे पाठक, कहानी आपने सुनी। आप तो सब समझ ही गये होंगे असल बात यह है कि "यतो धर्मस्ततो जयः" सब जायें तो चले जायें पर धर्म न छूटें।



नीरो और अठन्नी ।

(कुत्ते की कहानी)

एक साहब के पास बहुत अच्छा कुत्ता था उस का नाम नीरो था। वह अपने मित्र के साथ घोड़े पर सैर को गया था। रास्ते में कुत्ते ही की बात निकली। बहुत तारीफ़ करने के बाद साहब ने अपने मित्र से कहा कि कोई चीज़ कितने ही दूर पर रख दें और जब उसे हुक्म दिया जायेगा तो वह ला देगा। इस बात की परीक्षा लेने के लिये निशान देकर एक अठन्नी पहले उस कुत्ते को दिखला दी गई और तब सड़क के किनारे पत्थर के नीचे दबा दी गई। तीन मील तक दोनों चले आये तब कुत्ते को इशारा किया गया कि निशान दी हुई अठन्नी ले आवे। कुत्ता वहीं से लौटा और ये दोनों मकान पर चले आये। पर उस दिन कुत्ता नहीं आया देख कर दोनों को ताज्जुब हुआ। पीछे मालूम हुआ कि वह पत्थर के पास गया पर भारी होने के कारण उसे हटा न सका इस से वहीं वह खड़ा रहा और शोर करता रहा। अन्त को दो आदमी घोड़े पर ही कर उधर से आ निकले। कुत्ते को शोर करते देख खड़े हो गये एक ने पत्थर को हटाया और उस के नीचे अठन्नी देख उठा कर जेब में रख ली यह उस को ख़याल नहीं हुआ कि कुत्ता अठन्नी ही ढूंढ़ रहा है। कुत्ता दस कोस तक उन के घोड़े के पीछे पीछे गया जहां उन लोगों ने खाया वहां चुप चाप बैठा रहा, जहां वह सोते थे दाई के साथ चुप-चाप चला गया और एक चारपाई के नीचे छिप रहा। जिस ने अठन्नी ली थी उस साहब ने चारपाई के पास ही अपना पतलून उतार कर खूंटी पर टांग दिया। जब दोनों सो गये तो इसी पतलून को मुंह में ले खि-

ड़की से कूद चार बजे भोर को अपने मालिक के मकान पर पहुंचा। गर्मी का दिन था इसी से खिड़की खोल कर वे सोये थे। उसी पतलून के जेब में अठन्नी के अलावे कुछ रुपये और एक घड़ी थी। इत्तिफाक अठवारों में रुपया दिया गया और मालिक को चीज़ें लौटा दी गईं। इसी वक्त कुत्ते का हाल सुन कर सब को अचरज हुआ।

डैंडी नाम का कुत्ता।

भूगोल पढ़ने वाले जानते होंगे कि इंग्लिस्तान के उत्तर स्कोटलैंड देश है उस की राजधानी का नाम एडिन वर्ग है वहां मिस्टर मैकिनटायर नाम एक कारीगर रहता था उस को डैंडी नाम एक बहुत ही चालाक कुत्ता था। जब बहुत आदमियों के साथ भी वह कारीगर रहता सब की टोप एक जगह पड़ी रहती अगर डैंडी से वह कहता कि "मेरा टोप ले आओ" तो सब में से चुन कर वह लाकर अपने मालिक के हाथ दे देता। ताश की गड्डी में से कोई ताश अगर उसका मालिक पसन्द कर लेता तो कुत्ता पहचान कर उसे लाकर दे देता।

एक दिन कई आदमी इकट्ठा थे, एक की अठन्नी संयोग से ज़मीन पर गिर पड़ी। बहुत खोज होने पर भी उस का पता न लगा। मिस्टर मैकिनटायर ने अपने कुत्ते को कोने में बैठा देख कहा कि "डैंडी अठन्नी ढूंढ़ दो तुम को बिस्कुट मिलेगा।" कुत्ते ने तुरत कूद टेबल पर चढ़ अठन्नी सामने लाकर रख दी। पहले ही जब किसी ने देखा भी नहीं था तभी उस ने छिपा कर रख लिया था।

एक बार कमरे में पड़ा था बाहर से किसी ने किवाड़ बन्द कर दी थी पहले तो चुपचाप रहा पर जी बहुत घबराया तो उस ने घंटा बजाया। जब नौकर ने किवाड़ खोला तो कुत्ते को रस्सी खींचते देख अचरज में आया। तब से कहने पर वही घंटा बजाया करता था। अगर घंटे की रस्सी कमरे में नहीं देखता तो टेबल पर अगर घंटी रक्खी रहती तो मुंह में लेकर उसी को बजाता।

एक दिन मिस्टर मैकिनटायर रात को देर से मकान पर आये सब सो गये थे जूता न मिला तो उन्हों ने कुत्ते को कहा कि मेरा जूता नहीं

मिलता ढूढ़ लाओ। कुत्ते ने समझ कर एक कमरे का दरवाज़ा नोचना शुरू किया जब कि साहब ने किवाड़ खोल दी तो मुंह में जूता लेकर आया। जूता मालिक दिन को दूसरे कमरे में छोड़ आया था।

कोई कोई डैंडी को पेनी (सिक्का) दे दिया करते थे उस को ले कर वह रोटी वाले की दूकान पर जाकर अपने लिये रोटी ले आता था। एक साहब उसे अक्सर एक पेनी देते थे रास्ते में कुत्ते से जब भेंट हुई तो उन से उन्हों ने कहा कि "मेरे पास तो पेनी नहीं है लेकिन घर पर है।" घर पर पहुंचने के थोड़ी देर बाद दरवाज़े पर एक आवाज़ सुन पड़ी, कुत्ता पेनी लेने के लिये भीतर आया। क़िस्सा यहीं नहीं तमाम हुआ; वह पेनी खराब निकली, रोटी वाले ने जब नहीं ली तो तुरत वह लौटा और उस पेनी को नौकर के पैरों पर रख घृणा प्रकाश करता हुआ चुप चाप चला गया। गुप्त स्थान में भी वह पैसा जमा करके रखता था कि जब रोटी खरीदने का काम पड़ेगा तो उसी में से निकालेंगे। कुत्ते के पीछे में गोदाम से अस्बाब निकाल गाड़ी पर लाद कर जिस ने खरीदा था उस के पास भेजा गया था। मिस्टर अपने कुत्ते के साथ जिधर गाड़ी पहले जा चुकी थी उधर ही को चला। एका एक कुत्ता गायब हो गया; थोड़ी दूर आगे बढ़ कर मैकिनटायर साहब ने देखा कि एडिनबर्ग ही की ओर एक गाड़ी चली आ रही है और कुत्ता लगाम घोड़ी की मुंह में लिये हुए है। गाड़ीवान ने कहा कि कुत्ता घोड़े को रोक गाड़ी पर चढ़ गया भीतर का अस्बाब जांच लेने के बाद घोड़े की लगाम पकड़ उस ने गाड़ी फेरी। हम ने कड़ी से पीटा तब भी लगाम नहीं छोड़ता। अपने मालिक को देख कर जान गया कि हम से ग़लती हुई है तब चुपचाप उस ने गाड़ीवान को जाने दिया। इसी कुत्ते की अक़्लमंदी तारीफ़ में बहुत सी कहानी लोग कहते हैं।

कुत्ते की आश्चर्य शक्ति।

इस जीव की जितनी बड़ाई सुनी जाती है उतनी किसी की नहीं। फ्रांस में एक नये उम्र के साहब कुत्ते को ले कर एक मजलिस में गये।

मज्लिस में कुत्ता ले जाने की मनाही थी इस से उसे दरवान के सपुर्द कर दिया। संयोग से साहब की जेब घड़ी खोई गई। तब उन्हों ने कुत्ते को मंगवा कर कुत्ते से कहा कि मेरी घड़ी गुम हो गई है चोर पकड़ो तो। कुत्ते ने अन्त को सूंघने की शक्ति के बल से चोर को पकड़ लिया। चोर के पास से छ जेबी घड़ियां निकलीं पर कुत्ते ने उन में से अपनी घड़ी चुन कर निकाल ली।

कुत्ता और गड़रिया।

भेड़ी पालने वालों का काम कुत्ते से बहुत चलता है। एक किसान के कुत्ते का नाम स्मार्ट था। इधर उधर उस के चले जाने पर मालिक उस को बिना साथ ही लिये चला जाता था। जब वह देर से आता तो लोग कह देते थे कि जाओ मालिक तुम्हारे भेड़ चराने गये हैं। स्मार्ट झट वहां पहुंच कर अपना काम करने लगता।

मिस्टर स्कौट के यहां एक दिन शहर से कोई भेड़ी मोल लेने को आया। पर घर ले जाने के वक्त घबराया कि कैसे ले जाऊं। अन्त को उस ने उस से कहा कि एक लड़का साथ कर दीजिये जो हम को चौक तक पहुंचा दे।

मिस्टर स्कौट ने कहा कि "लड़का तो हमारे यहां नहीं है मैं स्मार्ट को साथ कर देता हूं।" आदमी ने कहा "अच्छा पर आप भी चलिये क्यों कि बिना आप के कुत्ता नहीं जायेगा।" स्कौट साहब ने कहा "उस का बंदोबस्त मैं कर दूंगा। जहां तक आप कहते हैं वहां तक पहुंचाने के लिये उसे मैं समझा देता हूं पर देखिये वहां तक पहुंच कर लौटा दीजियेगा।"

यह सुन कर अचरज तो होगा पर जैसा कहा गया था कुत्ते ने वही किया। वह इतना जल्दी लौट आया कि स्कौट साहब ने समझा कि इस ने काम नहीं किया। दूसरी बार जब वही गाहक आया तो साहब ने पूछा कि "वह उस दिन आप को पहुंचा आया था या नहीं?"

गाहक बोला—हां साहब! अब अबकी भेड़ी खरीदूंगा तो उसी को घर तक साथ ले जाऊंगा। दो लड़के भी इस के बराबर मदद नहीं दे सकते।

कुत्ते को कैसे खाना मिलता था।

फ्रांस के दक्षिण किसी शहर के एक रईस के यहां दस्तूर था कि ठहराये हुए वक्त पर हर रोज़ बीस ग़रीब आदमियों को खाना मिलता था। वहां एक कुत्ता उन आदमियों का जूठा टुकड़ा लेने के लिये खाने के वक्त पर हर रोज़ मौजूद रहता था।

खाने वाले विशेष कर के ग़रीब भुखड़ रहा करते थे इससे कोई कोई कुछ भी नहीं देते थे। इससे कुत्ते को भोजन की सुगन्ध भर प्राप्त होती थी पर उसका जी चाहता था कि कुछ मिले।

लोगों को घंटा बजाने पर खाना मिलता था। बाहर वालों को खाना देने के लिये दीवार में एक ऐसा छेद बना हुआ था कि उसी में परोस कर रख दिया जाता था। लेकिन परोसने वाला यह नहीं जान सकता था कि कौन लेता है। घंटे की आवाज़ सुन वह उसी मीछे में खाना रख देता था।

एक दिन कुत्ते को किसी ने कुछ नहीं दिया सब खा खा कर चले गये। सब के जाने पर कुत्ते ने उस डोरी को दांत से खींचा जिसमें घंटा बंधा था। घंटे की आवाज़ सुनते ही उस छेद में हाथ नज़र आया और खाना वहां रक्खा गया। कुत्ते ने खूब खुशी के साथ पेट भर खाया।

कई दिनों तक कुत्ता इसी तरह करता रहा। आखिर वह दुष्ट पकड़ा गया। वहां वाले कुत्ते से घिन कुछ नहीं करते। कुत्ते का घंटा बजा कर खाना देख लोगों को बहुत अचरज हुआ। इस लिये उसे भी घंटा बजाने पर सब फ़कीरों के साथ बहुत दिनों तक खाना मिलता रहा।

सेंट बर्नार्ड का कुत्ता।

भूगोल पढ़ने वाले सभी लड़के जानते होंगे कि युरप खंड में स्विज़रलैन्ड एक देश है जहां बड़े ऊंचे ऊंचे आल्प्स नाम पर्वत हैं उनमें बड़ी बिकट घाटियां है उधर ही होकर इटली में आने की राह है इन

पर्वतों पर गर्मी में आंधी के साथ बर्फ गिरती है और जाड़े का तो कुछ कहना ही नहीं है बड़ी भयानक हवा चलती है और तब वे घाटियां बड़ी भयानक हो जाती हैं। दिन साफ रहता है और एका एक ऐसी बर्फ गिरती है कि मुसाफिर दब दबा जाते हैं पता बिलकुल नहीं रहता।

जाड़े में इन घाटियों से जाते हुए सैंकड़ों आदमियों की जानें गई हैं। पर बहुतों के प्राण सेंट बर्नार्ड के कुत्तों ने अपनी बुद्धि और दया से बचाये हैं। ये कुत्ते बड़े मज़बूत सिर इनका बड़ा, रोएं और दुम के बाल भी बड़े बड़े होते हैं। इनका यह नाम इस लिये पड़ा कि बर्नार्ड नाम एक फ़क़ीर का आश्रम उन घाटियों मेंसे एक में हैं वहीं वे पाले जाते हैं।

वहां परोपकारी साधु लोग साल भर बराबर रहते हैं और मुसाफ़िरों की मदद दिया करते हैं। कुत्तों की सहायता से वह बहुतों की सहायता करते हैं।

खोये हुए मुसाफ़िरों की ढूंढना उनको सिखलाया जाता है। हर रोज़ जाड़े में दो कुत्ते साथ बाहर भेजे जाते हैं। एक के गले की पेटी में खाने की रोटी और सर्दी में पीने के लिये शराब एक छोटे से पेटी में बांध दी जाती है और दूसरे के गले की पेटी में ओढ़ने का एक कपड़ा बांध दिया जाता है। इस ढंग से जो भूखा या जाड़ा मरता हुआ मुसाफ़िर उन कुत्तों को मिलता है उसकी मदद खाना और कपड़ा से हो जाती है।

अगर मुसाफ़िर की चलने की सामर्थ रही तब कुत्ते आश्रम की ओर उसे ले जाते हैं और ज़ोरसे भूकते जाते हैं जिससे साधुओं को मालूम हो जाये कि वे चले आते हैं। और अगर मुसाफ़िर बेहोश और ठिठुरा हुआ मिला तो उन साधुओं ही को कुत्ते वहां बुला कर ले जाते हैं।

कभी कभी मुसाफ़िर बर्फ़ के नीचे पड़ जाता है। अगर आश्रम वासी अकेले रहते तो उन को कभी नहीं पता लगता लेकिन कुत्ते सूंघ कर पता लगा लेते हैं और अपने पैरों से बर्फ़ को खुर्च कर भूकते हैं जिस से उन साधुओं को मालूम हो जाता है और वे वहां पहुंच जाते हैं।

लोग कहते है कि इस तरह से एक कुत्ते ने बयालीस आदमियों की जान बचाई थी ! उस का नाम बैरी था, जैसा ही बुद्धिमान था वैसा ही साहसी भी था। एक बार एक स्त्री अपने लड़के को ले कर उधर से जा रही थी। बर्फ़ का ढोंका जो ऊपर से आया स्त्री का पता न रहा। बैरी ने लड़के को बेदाग़ पाया लेकिन सर्दी से उस के हाथ पांव जकड़े हुए थे। कुत्ते ने किसी तरह उस बच्चे को पीठ पर चढ़ाया और आश्रम में ले आया वहां उस की सेवा साधुओं ने खूब की।

कुत्ते का साहस।

एक दिन पन्ना लाल अपने दो लड़के हीरा और जवाहिर के साथ समुद्र में मछली मारने के लिये जाने को तइयार हुआ।

उसकी लड़की मोती ने आकाश को अंधेरा देख मारे भय के मना किया कि मत जाओ। पर डोंगी एक दोस्त ने भेज दी थी। उसकी इच्छा न रुक सकी। सो वह अपने लड़कों के साथ डोंगी पर सवार हो कर गया।

बेचारी मोती बड़ी देर तक उदास हो तीर पर खड़ी खड़ी देखती रही। पन्ना लाल ने कहा कि रोओ मत अपना काम जाकर देखो कोई भय की बात नहीं है। लड़की अपने बाप का कहना मान चुप हो रही।

पर थोड़ी ही देर में हवा ज़ोर की चलने लगी। मोती समुद्र के ऊंचे ऊंचे तरंग और फेन को देख बहुत डर गई। मनही मन बहुत डरने लगी पर हो क्या सकता था कुछ भी वह निश्चय नहीं कर सकी।

अकुता पकुता कर लड़की खिड़की के पास बैठ रही और मूंगा नाम एक न्यूफ़ाउन्ड लैन्ड कुत्ता जिसे उसने बचपन से पाला था वह भी उसके पैर के पास आकर बैठ गया।

एका एक कुत्ता ज़ोर से दौड़ा और एक ही तड़पान में झाते के पार ही तीर पर पहुंचा। मोती भी जहां तक बना दौड़ी दौड़ी वहां पहुंची।

ओह ही ! क्या भयानक बात देख पड़ी ! छोटी डोंगी में उसका बाप दोनों भाइयों के साथ बैठा था। डोंगी हलके में ऊपर नीचे आगे पीछे उछलती फिरती और वे बस हो रही थी। तीर पर आने का जितना वह उद्योग करते थे सब बेफ़ायदा होता था।

मोती भय से हाथ मल मल कर ज़ोर से रोने लगी। तीर पर के मछुओं से मदद देने की मिनती करने लगी। पर वह तो जानते ही थे कि ऐसे समय में जब कि आंधी चल रही है समुद्र उबल रहा है डोंगी समुद्र में डालने की कोशिश करना बिलकुल बेफ़ायदा है।

कुत्ते को उसकी दशा देख बड़ी मया मालूम होने लगी सीधा पानी में हेला। हलका उसको जाने नहीं देता था बड़ी मिहनत के बाद वह डोंगी तक पहुंचा।

हीरा ने उसको नाव में ले लिया और उसके गले में डोरी बांध तीर पर जाने का इशारा किया। कुत्ता फ़ौरन कूदा और तीर पर पहुंच गया। मछुए डोरी पकड़ नाव को खींचने लगे पर हवा पानी का ऐसा ज़ोर था कि डोंगी उलट गई।

बुड्ढे को तैरना नहीं आता था इसके अलावे बीमारी से कमज़ोर हो गया था। जी उसका हार गया। लड़कों ने उसको बचाना चाहा पर जल के हिलोरे से हाथ पांव नहीं चलते थे इससे उस बुड्ढे तक न पहुंच सके।

लड़की का सहारा पाते ही कुत्ता फिर तरंग के बीच हेल गया और बुड्ढे का कुर्त्ता दांत से पकड़ सहारा देता हुआ उसको तीर पर ले आया। तब तक डोरी हीरा और जवाहिर के हाथ भी लग गई और वह दोनो भी बच गये।

मोती मारे खुशी के रोने लगी। भींगी ही हालत में मूंगा को उसने कईबार गले लगाया। उसदिन का हाल वह कभी न भूली क्यों कि उसी कुत्ते ने उसके पिता और दोनो भाई को बचाया था।



ईमानदार कुत्ता ।

फ्रांस का एक सौदागर अपना रुपया तहसीलने के लिये घोड़े पर चला, साथ में कुत्ता भी था। रुपये की थैली लेकर घर की ओर चला। थोड़ी दूर जाने के बाद पेड़ के नीचे आराम करने के लिये उतर पड़ा। रुपये की थैली बगल में उसने रख ली। पर फिर सवार होकर चला तो भूल गया। कुत्ते ने यह बात देख वहां जाकर रुपया लाने की कोशिश की पर भारी होने के कारण खींच न सका।

तब वह अपने मालिक के पास दौड़ कर गया और गुल मचा कर शोर कर के उसे याद दिलाने की कोशिश करने लगा। सौदागर ने इशारा कुछ नहीं समझा, पर कुत्ता कोशिश करता ही रहा। घोड़े को उसने रोकना चाहा जब न रुका तो घोड़े को काटने लगा।

सौदागर के मन में यह आया कि कुत्ता पागल हो गया है, बीच में नदी मिलती थी उसने फिर कर देखा कि पानी तो नहीं पीता है। वह पानी क्यों पीये उसके जीमें तो यह था कि घोड़े को रोकें। इस लिये पहले से भी ज़ियादा ज़ोर से काटना और भूकना उसने शुरू किया।

सौदागर को जब पूरा विश्वास हो गया कि कुत्ता पागल ही हो गया तो जेब से पिस्तौल निकाल उसने उस पर दाग दी दिया। तुरत खून से तराबोर हो गया। सौदागर यह दशा न देख सका, एड़ लगा उसने चल दिया।

तब उसे पकतावा ने घेरा वह मन में कहने लगा कि "मैं बड़ा अभागा हूं रुपया जाता तो जाता पर कुत्ता वैसा अब कैसे मिलेगा" इतना का कहना था कि उसने थैली पर हाथ बढ़ाया, पर थैली तो नहीं थी, होश उड़ गया, गलती पर ध्यान गया, तब तो कुत्ते का इशारा न समझ सकने के कारण अपने को धिक्कारने लगा।

घोड़ा उसने फेरा, जहां उतरा था उधर ही चला । रात भर बर्फ का दाग़ तो देख पड़ा पर कुत्ता कहीं नहीं नज़र आया । आख़िर उसी पेड़ के नीचे पहुंच कर क्या देखता है कि थैली पर मरण तुल्य कुत्ता अधीरता हुआ बैठा है ।

अपने मालिक को देख धीरे से दुम हिला अपना आनन्द उसने प्रगट किया । उठने की कोशिश उसने की पर सब सामर्थ्य चली गई थी । सौदागर बड़े पकतावे के साथ उस पर हाथ फेर रहा था बड़े बड़े कष्ट से अपना प्रेम प्रगट करने के लिये हाथ उसने चाटा फिर आंख बंद कर उसने प्राण दे दिया ।

रूसी कुत्ता ।

एक रूसी किसान अपने मालिक के लिये लकड़ी काट कर लाने के लिये गाड़ी लिये जाता था ।

जब वह रवाने हुआ था बरफ़ ख़ूब जम गई थी सूर्य्य ख़ूब चमक रहे थे उसको उमीद थी कि दूसरे दिन भी ऐसा ही साफ़ रहेगा पर भोर होने पर मालूम हुआ कि रात को और भी बर्फ़ गिरी थी जिससे तमाम ज़मीन और चीज़ें सफ़ेद हो रही थीं ।

छोटे २ पेड़ों का एक बाग था उधर ही से जलावन लाद जब वह घर की ओर लौटा उसके साथ उसीका एक कुत्ता था । उसको पूरा विश्वास था कि हम ठीक राह से जा रहे हैं पर दो पहर के बाद जब अन्धेरा हो चला तो ज़मीन पर राह के निशान नहीं देख पड़ने के कारण राह से भटक गया ।

घोड़ा भी उसका बर्फ़ की चमक से अन्धा हो गया था सरदी से ठिठुर गया था और राह के परिश्रम से थक गया था । जहां तक बना मालिक उसको बढ़वा दे दे कर ले गया आख़िर लाचार हो बेचारा घोड़ा गिर पड़ा और उस के उठाने की सब कोशिश बेफ़ायदा हुई ।

कुत्ता पहले घोड़े गाड़ी को सूंघ कर उस ओर चला गया जिस राह को उस के मालिक ने ग़लत ख़याल किया था ।

वह गाँव में जाकर अपने मालिक के स्त्री के पास रोता भूंकता पहुंचा। कुत्ते ने इतना दुख प्रगट किया कि स्त्री ने कोई खटका समझ कई पड़ोसियों को बुला भेजा जो लालटेन लेकर रास्ता और कुत्ते के पाँव के निशान को देखते हुए चले।

निशान देखने का कुछ काम नहीं था क्यों कि मारे प्रसन्नता के वह कुत्ता आगे भूकता हुआ अपने मालिक के पास पहुंचा जो घोड़े से सट कर ऐसी गहरी नींद में सोया जाता था कि जिस से जागने की बहुत कम उमेद थी।

रोशनी की चमक से उस की धुंधली आंखें चकमका गईं लेकिन मित्रों की सलाम बन्दगी और कुत्ते की आवाज़ से किसान को मालूम हो गया कि मदद आ गई और वह अन्त को बच गया।



२

कुत्ते की कहानी।

और जानवरों की अपेक्षा कुत्ते को ज़ियादा अक़्ल होती है उसको बहुत जल्दी बहुत कुछ सिखलाया जा सकता है उसको मनुष्य से बड़ा प्रेम रहता है और उनका बहुत काम का होता है। बहुत दिन के बाद भी जब मालिक आता है तब भी वह उसे पहचान लेता है। कुत्ते अक्सर मालिक की छड़ी और गठरी ले जाते हुए देखे गये है। एडिन बर्ग में एक कुत्ता था जो हर रोज़ एक ही वक़्त पर अपने मुंह में पैसा ले कर रोटी वाले की दूकान पर जाता था और अपने खाने के लिये ले आता था।

कई क़िस्म के कुत्ते होते हैं जो आदमी के बहुत काम आते हैं। कोई (मैस्टिफ़ और बुलडोग) मकान अगोरा करते हैं। एक ऐसा होता है जो अपनी सूंघने की शक्ति से शिकारियों को बतला देते हैं कि शिकार

कहां पर है। एक ऐसा हीता है जो लोमड़ी का शिकार कर सकता है कोई (थे हाउन्ड) ख़रगोश के पीछा करने में बड़ा ज़बर्दस्त हीता है। पानी वाला कुत्ता जहाज़ियों के बहुत काम आता है जब कोई समुद्र में गिर जाता है तो उनही की मदद से जान बचती है। कुत्ते की एक ज़ात ऐसी हीती है जो गड़ेरियों के बहुत काम आती है।

२

इंग्लिस्तान के एक ज़िले में बिसब्रोर्न नाम सराय थी। उसके मालिक ने नेपचून नाम एक कुत्ता पाल रक्खा था। इस कुत्ते का नाम बहुत दूर तक फैला हुआ था।

हर रोज़ आठ बजे लोग उस को देखते थे कि नानवाई के यहां रोटी लाने को मुंह में एक टोकरी लटकाये लिये जाता है। टोकरी में रोटी का दाम रहता था। रोज़ नेपचून उस सिक्के को रोटी वाले के यहां होशियारी से ले जाता था।

नानवाई कीमत ले कर गिन कर ठीक रोटी रख कर कपड़े से ढांक टोकरी में रख देता था। और कुत्ता ठिकाने से घर में जाकर रख देता था। रविवार को दूकान बंद रहती थी लोग कहते हैं कि उस दिन वह कभी नहीं टोकरी छूता था न ले जाने की कोशिश ही करता था।

एक दिन जब दूकान से लौटा आता था कि राह में एक दूसरा कुत्ता मिला जी चाहता था कि रोटी लेलें। इस पर नेपचून ने टोकरी ज़मीन में रख लड़ाई की और उस कुत्ते की पूरी सज़ा दे टोकरी उठा घर चला आया!

३

दो भाई (अंगरेज़) शिकार करने के लिये बाहर निकले, साथ में एक बहुत उम्दा कुत्ता था। अपनी रीप ज़मीन में रख दोनों कांटा कुस से होते हुए नदी तीर पहुंचे। कई चिड़ियों को मार नदी के किनारे किनारे कुछ दूर चले गये।

आखिर उनको टोप की ज़रूरत पड़ी। कुत्ते को पुकार उन्हों ने टोपी लाने को कहा वह आज्ञा पालन करने को चला गया।

वहां पहुंच उसने बहुत कोशिश की दोनों को एक ही दफा मुंह में रख कर ले चलें। पर असंभव उसे मालूम हुआ। आखिर सोच कर उसने देखा कि एक टोप दूसरे से छोटा है। तब झट छोटे को बड़े में रख पैर से दबा दोनों एक ही बार ले आया। सब काम दो तरीके से होते हैं एक ग़लत और दूसरा सही।

४

कुत्ते की सूंघने की शक्ति के विषय में बहुत कहानियां सुनी जा चुकी हैं पर थोड़े दिन हुए रावलपिंडी में एक आश्चर्य घटना हो गई है। एक घुड़दौड़ का सवार रावलपिंडी के घुड़दौड़ से आने के समय अपना "टीप" नाम फ़ौक्स टेरियर जाति का कुत्ता भूल आये। वहां से दो एक स्टेशन आगे बढ़ आने पर उन्हों ने रेलवाले और अपने मित्रों को तार में खबर दे दी कि जब कुत्ता मिले तो उसे अम्बाले में हमारे पास भेज देना। पर अनुसंधान करने पर भी कोई पता न लगा। अम्बाले में पहुंचने के पन्द्रह दिन के बाद एक दुबला पतला, बैतलमार सा कुत्ता आया और घर में इस ढब से इधर उधर घूमने लगा जैसे सब से जान पहचान हो। बहुत देर के बाद सवार ने उसे पहचाना कि टीप ही है। कुत्ता रावलपिंडी में रेल पर अपने मालिक को चले जाते देख तेरह दिनों तक बराबर कितने नदी नाले टपता रेलवे लाईन के किनारे किनारे भूखे प्यासे दिन काटता घर आ पहुंचा। यह नहीं मालूम है कि उसने और कोई ऐसे साहस का काम किया था नहीं। कप्तान एबट साहब का कुत्ता भी इसी तरह १८८९ में शाहदरा स्टेशन से लाहौर तक उन को ढूंढता ढूंढता अन्त को लाहौर के एक क्लब घर में जहां उस वक्त वह बैठे थे जा पहुंचा था।

५

मंचेस्टर नगर के पास किसी भले आदमी को एक कुत्ता था। वह हर रोज़ अपने कुत्ते को एक पेनी देते थे जिससे वह रोटी वालेके यहां जा रोटी खरीद खाता था। एक दिन रोटी वाले ने उस आदमी को देख पूछा कि "अब आप का कुत्ता हमारी दूकान पर क्यों नहीं आता?" इस का कारण वह नहीं बतला सके पर बराबर पेनी देते ही थे। अब उस आदमी ने यह भी देखा कि कुत्ता ठीक समय होने के पहले ही पैसा पाने के लिये व्यग्रता प्रकाश करता है। दूसरे दिन उस ने पैसा देने के बाद छिप कर पीछे पीछे जाकर देखा कि कुत्ता एक कसाई की दूकान पर गया वहां एक पेनी का मांस मोल लेकर एक मकान में घुसा; उस मकान में एक दुबला पतला असहाय कुत्ता पड़ा था उसी को उस ने मांस दे दिया। कुत्ते में भी दया और स्वजाति प्रेम होता है!

६

एक दूसरा कुत्ता था जो अपने मालिक के साथ एक मेम के यहां गया। मेम ने पुकारा उस पर हाथ फेरा और पूछा कि इसी का नाम सैम है न? जब मालूम हो गया तो मेम ने कहा कि हमारे साथ रहे। सैम के मालिक ने हाथ फेरा तारीफ़ की और कहा कि तुम बहुत अच्छे कुत्ते हो, मेम साहब, के यहां रहो कल खाकर चले आना। कुत्ते ने मान लिया। भीर को खा कर उस ने मेम का मुंह देखा अपनी दुम हिलाई और घर की ओर चला।

वह अपने मालिक का कपड़ा ले आता था और ठिकाने पर रख भी देता था; सब कपड़ों का नाम भी उसे मालूम था। वह कुर्सी पर बैठ कर सब के साथ खाता था कुछ गड़ बड़ नहीं करता था; अकेला भी खाता था, कभी दूध पीता कभी रोटी खाता कभी गोश्त खाता। और जब कोई कहता कि सैम एक टुकड़ा मुझे दो तो तुरत वह आज्ञा पालन करता।

जब सब काम हो जाता तो वह चीज़ों को इटा कर किनारे रख देता। अस्तबल से अपने मालिक का घोड़ा ले आता। ग़रज़ यह कि सब बात वह समझता था सिर्फ़ उस का जन्म मनुष्य का नहीं था।

७

एक बड़ा कुत्ता सड़क पर खेल रहा था संयोग से एक गाड़ी का पहिया उस के पँजे पर से हो कर चला गया; चोट से रोने लगा। पास ही एक नालबंद की दूकान थी। इस का रोना सुन देखने को एक आदमी दूकान से उतर कर आया। कुत्ते को घायल देख उस ने उठा लिया और मरहम पट्टी लगा कर बांध दिया और उसे छोड़ दिया।

कुत्ता अपने घर चला गया। कई दिनों के बाद जब दर्द बढ़ा तो नालबंद के यहां फिर आया और पंजा उठा कर उसे दिखला कर रोने लगा कि दर्द इस में अभी है। फिर उस ने पट्टी बांध दी; कुत्ता कृतज्ञता प्रगट करने के लिये उस का हाथ चाट चला गया और थोड़े ही दिनों में अच्छा हो गया।

कई महीनों के बाद ही वही कुत्ता एक दूसरे के साथ वहीं खेल रहा था कि दूसरे कुत्ते पर वैसी ही आफ़त आई उस का भी पंजा कुचल गया। यह देख पहले कुत्ते ने उस को कान पकड़ बड़े बड़े मुश्किलों से नालबंद के दूकान पर लाया जहां उस को दवा की गई थी। दूकानदार उस कुत्ते की बुद्धि को देख बड़े खुश हुए और नये रोगी को भी उन्हों ने उसी तरह दवा की।

८

मिस्टर डिडज एक नाटक के अभिनेता थे। नाटक में जो तमाशा करते हैं उन को नक़ली बालों की ज़रूरत होती है। इस मिस्टर ने अपना बास्त एक खूंटी पर लटका रक्खा था। एक दिन इस बास्त

की उन्हीं ने अपनी मिस को मंगनी दिया था। थोड़े दिनों के बाद मिस्टर हिउज उस के यहां गये। कुत्ता इन का साथ था और वह मिस उस समय बालों को पढ़ती था। मिस्टर हिउज थोड़ी देर बात चीत करके चले आये पर कुत्ता वहीं रह गया। कुछ देर तक खड़ा हो कर उस आदमी का चेहरा यह देखता रहा। तब एका एक उछल कर उस के कंधे पर कुत्ता चढ़ गया और बालों को ले कर भागा। मकान पर पहुंच बाल को मामूली जगह में टांगने की उस ने उछल उछल कर कोशिश की।

वही कुत्ता तीसरा पहर को एक दिन डार्टमथ के खेत के पास से हो कर आ रहा था और वहीं अपने कपड़े धोबिन ने धोकर सुखलाने के लिये टांगे थे। कुत्ता खड़ा हो कर एक कुर्त्ते को बहुत ध्यान से देखने लगा; और तब उस को गर्द में घसीटता हुआ खींच कर अपने मालिक के पास ले गया, वह कुर्त्ता मालिक ही का ठहरा।

बैरिस्टर लाल मोहन घोष।

इनका जन्म कृष्ण नगर में १८४८ इस्वी में हुआ था। यह स्वर्ग वासी राम लोचन घोष के पुत्र हैं। बचपन में इन्होंने कलकत्ते में शिक्षा पाई। मिस्टर मनमोहन घोष बैरिस्टर इनके बड़े भाई हैं। १८६८ में इनके बड़े भाई ने इनको आईन पढ़ने के लिये विलायत भेजा। दो वर्ष में बैरिस्टर हो यह लौट आये और कलकत्ता हाईकोर्ट में बैरिस्टरी करने लगे। इन्डियन सिविल सर्विस हिन्दुस्तान के आदमियों के लिये जारी तो हुआ पर यहां के परीक्षार्थियों के लिये उम्र की क़ैद एक बड़ी रुकावट हो गई, एक नियम उस का यह था कि उन्नीस वर्ष से अधिक अवस्था वाले सिविल सर्विस परीक्षा न दे सकेंगे। इस नियम से भारतवासियों के लिये परीक्षा देने की राह एक तरह से बन्द ही रही। पार्लेमेन्ट में इस का प्रतिवाद करना ज़रूर समझा गया। इस बात का विलायत में आन्दोलन करने के लिये बृटिश इंडियन एसोसियेशन ने इन को वहां भेजा। बाबू सुरेन्द्र नाथ इस आन्दोलन के एक प्रधान उद्योगी थे। १८७८ में लाल मोहन घोष विलायत पहुंचे, ब्राइट साहब ने सहानुभूति दिखलाई लन्डन नगर के विलिस रूम नामक मकान में एक सभा इकट्ठी की गई। ब्राइट साहब सभापति हुए। मिस्टर लाल मोहन घोष की अमृत भरी तेजस्विनी वक्तृता सुन कर क्या लिबरल और क्या कन्सर्वेटिव सभी दल के लोग मुग्ध हो गये थे। इस का ऐसा असर हुआ कि सारे इंग्लिस्तान में एक बड़ा आन्दोलन हुआ और उस का फल स्वरूप स्टैटिउटरी सिविल सर्विस की सृष्टि हुई। इस के बाद थोड़े ही दिन तक लाल मोहन विलायत में रहे। इसी समय में इंडिया गवर्नमेन्ट की राजस्व नीति, वाणिज्य नीति और अपर साधारण नीतियों पर वक्तृता देने के लिये बर्मिंहैम के सौदागरों की सभा ने इन को बुलाया। १८८० के मार्च महीने में यह कलकत्ते लौट आये। लौट आने पर कलकत्ते के बड़े बड़े आदमियों ने बड़े हुल्लास के साथ उन की अभ्यर्थना की थी। इस के बाद नवेम्बर के महीने में जब यह फिर विलायत से लौट आये तो बम्बई में उन का उसी तरह आदर सन्मान हुआ था।

बैरिस्टर लाल मोहन घोष।

१८८२ में कलकत्ते में देसी अख़बारों के आईन का प्रतिबाद कर कैसा बड़ा उपकार इन्हीं ने किया सब जानते हैं। उन की उस समय की वक्तृता अभीभी बहुतों की याद होगी। १८८३ में इलबर्ट बिल के कारण सारे हिन्दुस्तान में आन्दोलन मच गया। देसीयों को दबाने के लिये सब अंग्रेज़ों ने एक राय हो बड़ी बड़ी लीला दिखलाई थी। इसी इलबर्ट बिल पर ढाका में जो सभा हुई थी मिस्टर लाल मोहन घोष ने कैसी नोक झोंक की और सारगर्भ वक्तृता दी थी अब तक बहुत से लोग भूले नहीं हैं। १८८४ में पार्लिमेन्ट के मेम्बर होने के लिये फिर विलायत गये। अंग्रेज़ पहले ही से उन का गुण जान गये थे इस से इंग्लिस्तान के कुल ऊंचे दिल के और उदार राजनैतिक पुरुषों ने बड़े आदर के साथ सन्मान किया। पर दुख की बात यह हुई कि उन की लालसा पूरी न हुई। जय लाभ होने के पहले ही आईरिश वोट सब विच्छिन्न हो गया इस से लाल मोहन का पराजय हुआ।

इलेक्शन (चुनाव) के समय डेप्टफोर्ड के रहने वालों ने भी उन के गुण से मोहित हो उन की अभ्यर्थना की थी। वह दिन भी याद रखने लायक है। इंग्लैन्ड की सड़कों पर चारो ओर आनन्द सूचक ध्वजा पताका उड़ रहे थे, मनोहर बाजे बजाये गये थे। इंग्लिस्तान में अंग्रेज़ और भारत बासी दोनों का मिलन अपूर्व दृश्य था। किसी ने स्वप्न में भी यह न सोचा था कि लाल मोहन की हार होगी जो कुछ हो इन की हार भी एक तरह की जीत ही समझना चाहिये। उन्हीं ने ३५६० अंग्रेज़ों का दिल अपनी ओर फेर लिया था और हज़ारों उन के लिये सोच में थे यही एक तरह की जीत समझना चाहिये। कन्सर्वेटिव दल वाले दरवाज़े दरवाज़े पर जाकर कहने लगे कि "हिन्टू को लिये वोट मत दो अंग्रेज़ों को वोट दो" सड़कों पर लोग ज़ोर से कहने लगे कि हम लाल मोहन ही को वोट देंगे। दो अस्सी वर्ष के बुड्ढे इन को वोट देने के लिये लाठी लेकर निकले थे। उन को पूछा गया कि आप लोग इतने बूढ़े हैं, चला नहीं जाता, आप क्यों वोट देने को आये हैं? उन लोगों ने जवाब दिया कि "कन्सर्वेटिव लोग उन को

काला आदमी कहते हैं हम तो इन ही को वोट देंगे।" विलायत से लौट आने पर वह बैरिस्टरी कर रहे हैं। दादा भाई नोरोजी पार्लिमेन्ट के मेम्बर हो गये आशा की जाती है एक दिन लाल मोहन भी उस आसन पर सुशोभित हों। इन के ऐसी प्रतिभा और क्षमता बहुत कम मनुष्यों की होती है।

बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी।

मनुष्य जीवन सदा गुह प्रवाह से पूर्ण है यह बात सुरेन्द्र नाथ के जीवन चरित्र से प्रगट होती है। यह अति प्रसिद्ध डाक्टर दुर्गाचरण बन्दोपाध्याय के द्वितीय पुत्र हैं। तीक्ष्ण बुद्धि उद्यम शीलता और अध्यवसाय आदि पिता के गुण पुत्र में पूरी मात्रा में मौजूद हैं। इनका जन्म सन १८४८ ईस्वी में हुआ था। छोटेपन ही से इनका जी पढ़ने में बहुत लगता था और इन्हीं ने डीवीटन कौलेज में पढ़ा। १८६३ में एट्रेन्स और १८६८ में बी० ए० की परीक्षा में जिस गौरव के साथ पास हुए उसी से भविष्यत जीवन का चित्र कुछ कुछ झलकता था। डीवीटन कौलेज के अध्यक्ष साइम साहब ने इनकी तीक्ष्ण बुद्धि आदि गुण देख डाक्टर दुर्गाचरण से कहा था कि "आप अपने लड़के को सिविल सर्विस परीक्षा के लिये विलायत भेज दीजिये।"

साहब ने जैसा सोचा था वैसा ही हुआ, पिता ने सुरेन्द्रनाथ को विलायत भेजा और वहां सिविल सर्विस परीक्षा में यह गौरव के साथ पास हुए। पास तो हो गये पर नौकरी मिलने में एक बड़ा भारी गड़बड़ हुआ। कमिश्नरों ने यह उज्र किया कि इनकी अवस्था अधिक है। लेकिन वह उज्र पीछे रद हो गया।

स्वदेश में लौट आने पर सुरेन्द्रनाथ श्रीहट्ट के असिस्टेन्ट मजिस्ट्रेट हुए। दो वर्ष के बाद ही एक सामान्य अपराध के लिये यह सिविल सर्विस से किनारे किये गये। जिन लोगों ने विचार किया था उनमें के किसी किसी ने कहा था कि सामान्य तिरस्कार या थोड़े दिनों के लिये "सस्पेन्ड" करना ही इस अपराध के लिये बहुत था। पर कौन सुनता

है? इन्हो ने आप प्रतिवाद किया, देश भर के लोगों ने प्रतिवाद किया, सुविचार के लिये गवर्नमेन्ट में इन्होंने दरख़ास्त दी पर कुछ न हुआ। जहाँ बड़े बड़े अफ़सर उन को किनारे करने की मुस्तैद वहाँ कैसे सुनाई हो? ५०) रुपया माहवारी पेन्शन पर सिविल सर्विस से सुरेन्द्रनाथ को विदा होना पड़ा। सारा देश यह देख कर अचम्भे में आया। उन के लिये उनके भाई बन्धु व्याकुल हुए, पर पल भर के लिये भी सुरेन्द्रनाथ व्याकुल या निरुत्साहित न हुए। सौभाग्य की ऊंची सीढ़ी पर से दुर्भाग्य के कूए में गिरने पर भी इन्हों ने साहस न छोड़ा, इनके चरित्र में यह एक बड़ी भारी विचित्रता है और यह याद रखने लायक है।

अक्सर देखने में आता है कि दुर्भाग्य सौभाग्य की सीढ़ी का पहला डंटा स्वरूप होता है। जिस दिन वह सिविल सर्विस से अलग हुए उसी दिन भविष्य भाग्य रूपी आकाश में होनहार गौरव रूपी सूर्य की किरणें धीरे धीरे छटकने लगीं। इसी समय में (सन १८७६ में) पंडित ईश्वर चन्द्र विद्या सागर ने इनको मेट्रोपोलिटन कौलेज का इंग्लिश प्रोफ़ेसर बनाया। थोड़े दिनों के बाद सिटी कौलेज स्थापित हुआ वहाँ भी पढ़ाने लगे। पाच वर्षों के बाद मेट्रोपोलिटन कौलेज को छोड़ फ्रीचर्च कौलेज में घुसे। इसके थोड़े ही दिनों बाद बहू बाज़ार में एक छोटे से स्कूल का भार इन्हों ने लिया। वही आजकल के नामी रिपन कौलेज का अंकुर था। वह अंकुर आज सात वर्ष के बीच बड़ा वृक्ष हो गया और करीब करीब सभी को उस ने ढक लिया।

सुरेन्द्रनाथ की जोश से भरी और लोगों को अपनी ओर खींचने वाली वक्तृता प्रसिद्ध है स्कूल ही में इस के आसार देख पड़े थे पहले पहल साधारण के सामने वह कलकत्ते की "छात्र-सभा" में बोले थे। यही सभा उन के राजनैतिक जीवन की प्रथम लीला भूमि हुई। उन का काम बहुत बढ़ गया है वह सौभाग्य की ऊंची से ऊंची सीढ़ी पर पहुंच गये। अब देश के बड़े बड़े लोग उन से मिलना चाहते हैं, पर आज तक उस सभा से उन का लगाव दूर नहीं हुआ है। देश के छात्रों पर एकदिन उन का प्रभाव असीम था, आज भी कोई कमी नहीं देखने में आती।

१८७५ साल में इन ही के उद्योग से इन्डियन एसोसियेशन स्थापित हुआ। यही उस के प्राण स्वरूप हैं जिस दिन इस सभा का स्थापन हुआ उन का एक मात्र छोटा लड़का परलोक सिधारा। इस प्रबल आघात से भी सुरेन्द्रनाथ विचलित न हुए।

केवल इनही दी सभाओं में वह नहीं लगे रहते थे। हिन्दुस्तान भरके बहुत से नगरों में घूमे और वहां अपनी जोश दिलाने वाली वक्तृता के बल से कुल भारतवासियों को उन्हीं ने जगाया, और उनमें राजनैतिक जीवन का संचार किया। आज जो राज नीति पर लोग विशेष ध्यान देते देख पड़ते हैं सुरेन्द्रनाथ ही उस के एक प्रधान मूल हैं और यही उन का प्रधान गौरव है।

१८७८ में बाबू सुरेन्द्रनाथ ने बेंगौली पत्र के सम्पादन का भार लिया। उन दिनों उस पत्र के ग्राहक कम होते जाते थे पर इन की जोश भरी लिखावट के कारण थोड़े ही दिनों में उस पत्र का आदर तमाम होने लगा। १८८३ साल के मई महीने में उस पत्र में एक लेख के कारण उन को जो बिड़म्बना उठानी पड़ी थी किसी से छिपी नहीं है। इन पर मुकद्दमा चला उसी में दो महीना उन को क़ैद की सज़ा मिली। पर यह क़ैद ही का समय उन के प्रधान गौरव का समय मालूम होता है, क्यों कि सारे हिन्दुस्तान ने एक दिल ही उन के लिये सहानुभूति प्रकाश की थी। यहां तक कि स्कूल के लड़कों ने भी शोक सूचक काला फीता कुछ दिनों तक लगाया था।

कुछ दिन हुआ कि इस बात का आन्दोलन हुआ था कि कौंग्रेस का प्रतिष्ठाता कौन है। यहां यह कहा जा सकता है कि काल ही इसका प्रतिष्ठाता है। भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न लोग एक ही उद्देश्य से काम कर रहे थे काल के हेर फेर में सब इकट्ठे हो गये सुरेन्द्र नाथ भी इस महासभा के एक प्रयोजनीय अंश हैं। कौंग्रेस के प्रतिनिधि हो कर सुरेन्द्रनाथ विलायत गये। जिस वक्तृता और उद्यम के बल से समग्र भारतवर्ष जागृत हुआ विलायत भी उसे देख कर स्तम्भित हो गया था।

इन के उद्यम, उत्साह अध्यवसाय और परिश्रम की सीमा नहीं है। अकेले सुरेन्द्रनाथ दी बड़े बड़े कौलेजों के प्रोफ़ेसर और परिचालक, कई स्कूलों के अध्यक्ष, एक अख़बार के अकेले लेखक, सम्पादक और कार्याध्यक्ष, एक प्रधान राजनैतिक सभाके एक मात्र कार्यकर सभ्य और सम्पादक, कुल राजनैतिक आन्दोलन के अवलम्ब एक बड़ी मुफ़स्सिल की म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन और कलकत्ता म्युनिसिपैलिटी के एक प्रधान सभ्य, दो स्थानों के औनरेरी मजिस्ट्रेट इन सब के अलावे लाट साहब की सभा के मेम्बर। एक आदमी और इतना काम—कैसे पार पड़ता होगा सोचने ही में अक़्ल गुम होती है। इस से किसी किसी में चूक भी हो जाती है। पर जिस को इतना काम है उस से चूक न होना ही आश्चर्य का विषय है।

स्वर्गीय काशीनाथ त्र्यम्बक तैलंग बम्बई हाईकोर्ट के जज।

हा! अब यह सारे भारतवर्ष को रुला संसार से उठ गये पहली सितम्बर १८९३ शुक्रवार को २॥ बजे इन का देहान्त हुआ। इन के मृत्यु शोक में बम्बई हाईकोर्ट एक दिन के लिये बन्द हुआ था। इस के अलावे वहां के कौलेज आदि और कलकत्ते के सिटीकौलेज आदि भी बन्द हुए थे। जिस दिन इन का देहान्त हुआ व्यवस्थापक सभा में गवर्नर साहब ने कहा कि "माननीय जज मिस्टर तैलंग की मृत्यु से बम्बई हाईकोर्ट और शिक्षा विभाग की बड़ी घटी हुई। उन के स्वदेशीय उन के लिये जैसे दुखी हैं गवर्नमेन्ट भी उन के लिये वैसी ही दुखी है।" यद्यपि उनका सांसारिक अस्तित्व दूर हो गया पर कीर्त्ति कभी नहीं लोप होगी। बड़ी बड़ी घटनाओं से पूर्ण उन का जीवन चरित्र संक्षेप में यहां लिखा जाता है।

काशी नाथ ने सन १८५० की ३० वीं अगस्त को बम्बई में जन्म लिया था। इन के पिता का नाम काशीनाथ तैलंग था। दादा इन के रामचन्द्र बम्बई में किसी सौदागर के यहां नौकर थे। थाना उन का आदि वास स्थान था। रोज़गार के लिये बम्बई आये और यहीं रह

गये। काशीनाथ के तीन चचा थे उन में त्र्यम्बक राव की कोई लड़का न था इस लिये उन्हीं ने काशीनाथ को पोष्यपुत्र बनाया। उस समय इन की अवस्था ४॥ वर्ष की थी। त्र्यंबक राव सब से बड़े थे इस से शारीरिक कामों को देखते थे उन की चौकसी के कारण घर का कोई यथेच्छाचारी नहीं हो सकता था। इन ही के शासन के गुण से बालक काशीनाथ कभी नहीं कुपथ में जा सके। पिता माता के उत्तम गुण काशीनाथ में आये थे। विशेष करके माता का शान्त और सद्व्यवहार का गुण इन में आया था। जैसे जैसे इन की अवस्था बढ़ती गई जनक जननी और चचा सब के गुणों से यह सुशोभित होते गये।

अमर चन्द बादी स्कूल में इन की बाल्य शिक्षा पूरी हुई। इन के गुरु का नाम महादेव पंडा जी था।

१८५९ ईस्वी में एलफिन्स्टोन हाई स्कूल में काशीनाथ ने अंग्रेज़ी शुरू की। वहां इन्हीं ने अपने असाधारण बुद्धिबल से जो कुछ वहां बड़े बड़े ईनाम आदि थे सभी पाये। मानसिक गुणों के कारण वह सर्वोत्तम छात्र प्रसिद्ध थे, शारीरिक बल में भी यह कुछ कम न थे। हर तरह की कसरत और खेल में निपुण थे, यहां तक कि परीक्षा के दिनों में भी दिन भर खेल में मत्त रहते थे। जो कुछ हो १८६४ में इन्हों ने इन्ट्रेन्स पास किया इस के बाद एलफिन्स्टोन कौलेज में भर्त्ती हुए यहां भी तेज़ लड़के का यश बना रहा। बहुत से स्कौलरशिप और ईनाम इन को मिले। अन्त को १८६७ में बी० ए० की परीक्षा में पास हुए। यद्यपि स्कूल कौलेज में यह अच्छे ही कहलाते थे पर यथार्थ शिक्षा उन की आरम्भ नहीं हुई थी। जिस शिक्षा के बल से वह नामी जज और देशहितैषी कहलाये वह कौलेज छूटने के बाद ही हुई थी। बी० ए० में उन को अर्थशास्त्र और न्यायशास्त्र दोनों पढ़ना पड़ा था पर उस से उन को सन्तोष न हुआ। कौलेज छोड़ने के बाद फिर वही सब पढ़ने लगे। ध्यान जमाने के लिये अधिकांश समय बीज गणित (अलजेब्रा) के हिसाब बनाने में लगाते थे, युक्ति मार्ग को सुगम करने के लिये ज्यामिति में लगे रहते थे।

#74

स्वर्गीय काशीनाथ त्र्यम्बक तैलंक जज।

बी० ए० परीक्षा देने के बाद ही एलफिन्स्टोन हाई स्कूल में संस्कृत के पंडित नियत हुए। सन १८६७ से १८७२ तक उसी कौलेज के फ़ेलो रहे। इतने अधिक दिनों तक वहां का फ़ेलो कोई नहीं रहता। इतना दिन उन्हीं ने कैसे बिताया सुन कर जी दंग हो जाता है। कौलेज की लाइब्रेरी (पुस्तकालय) का द्वार उन के लिये खुला रहता था। वहां ऐसी कोई किताब न बची थी जिसे उन्हों ने अच्छी तरह न पढ़ा हो। जौन स्टूअर्ट मिल और हर्बर्ट स्पेन्सर की किताबों को कंठस्थ कर डाला था। मनो विज्ञान और धर्म विज्ञान में उन को अधिक अनुराग था। साहित्य समाज, विज्ञान सभा, क्लब समाज आदि सभी प्रकार की सभाओं में जी से साथ देते थे। १८६८ में काशीनाथ ने एम० ए० पास किया। उन दिनों एम० ए० परीक्षा में अंग्रेज़ी में कविता बनाने की परीक्षा ली जाती थी। इस के लिये तइयार होने ही के समय में उन्हों ने हम लोगों के धर्म विज्ञान श्रीमद्भगवद्गीता का अंग्रेज़ी पद्य में अनुवाद किया था। १८६९ के अप्रिल में "भगवान दास पुरुषोत्तम दास" नामक संस्कृत स्कौलरशिप पाई थी। इस के बाद ही नवेम्बर में एल० एल० बी० भी पास हो गये। १८७०-७१ में हाई कोर्ट में इन्हों ने वकालत शुरू की और साथ ही इस के एलफिन्स्टोन कौलेज के सीनियर फ़ेलो नियत हुए। १८७२ में ऐडवोकेट की परीक्षा में पास हुए। मिस्टर तैलंग को संस्कृत भाषा और अंग्रेज़ी आईन का ज्ञान बहुत अच्छा था इस से हिन्दुओं के धर्मशास्त्र सम्बन्धी पेंचीले मुकद्दमों में बैरिस्टर आदि अवश्य इन की सम्मति ले लेते थे।

इन का गभीर ज्ञान देख चीफ़ जस्टिस इन पर विशेष अनुरक्त थे। जज, वकील, जन साधारण सभी उन के गुण से मुग्ध थे। सब उन पर विश्वास और श्रद्धा दिखलाते थे। उस समय के चीफ़ जस्टिस सर माइकैल अक्सर कहा करते थे कि "एक न एक दिन काशीनाथ अवश्य हाईकोर्ट के जज होंगे।" उन की यह भविष्यद वाणी सफल भी हुई। १८८० में इन को थाणे के जौयन्ट जज का पद मिलता था पर इन्हों ने अस्वीकार किया। सन १८८८ के २५ वीं नवेम्बर को यह हाईकोर्ट के जज हुए।

इन का अध्यवसाय साधारण नहीं था, कार्य में अनुराग कम नहीं था इन ही कारणों से लोग मोहित हो रहे थे। फुर्सत के वक्त वह बहुत से देशोपकारी कामों में हर्ष और उत्साह के साथ, साथ देते थे। १८७२ में म्युनिसिपैलिटी स्थापन के लिये पहली वक्तृता इन्हीं ने दी थी। १८७३ में नमक पर महसूल के आईन का तीव्र प्रतिवाद किया। इसी समय से ऐसी कोई सभा या मिटिंग न हुई जिस में उन्हों ने वक्तृता न दी हो। १८७६ में राजस्व सम्बन्धी बिल का प्रतिवाद किया। १८७८ में लाइसेन्स टैक्स, १८९८ में सिर्फ युरपियन वालंटियर का होना और इन्कम टैक्स उठाना, १८८३ में इलबर्ट बिल का आन्दोलन, १८८५ में बम्बई का कौंग्रेस, १८८८ में प्रयाग कौंग्रेस का अधिवेशन आदि हर तरह की सभा और आन्दोलन में उन्हों ने साथ दिया। कलकत्ता और मद्रास के कौंग्रेस में जी नहीं अच्छा रहने के कारण नहीं आ सके। जब यह जज हुए तो एक ओर जैसा ही आनन्द हुआ दूसरी ओर वैसा ही लोगों को निरानन्द भी हुआ क्यों कि पहले की तरह राजनैतिक आदि आन्दोलनों में यह साथ न दे सके।

राजनैतिक जीवन के रुकते ही साहित्य में उन का जी लगा। संस्कृत साहित्य, राजनीति, अर्थ नीति इतिहास और महाराष्ट्रीय भाषा में इन्हों ने इतने ग्रन्थ लिखे हैं कि कुछ कहते नहीं बनता। कहाँ हाईकोर्ट की जजी और फिर साहित्य में समय लगाना। ज्ञान समाज, विज्ञान सभा और साहित्य समाज में, बम्बई रौयल एशियाटिक सोसाइटी में काशीनाथ ने कितने प्रबन्ध पढ़ कर सुनाये गिनती करना कठिन है। इस के अलावे "इन्डियन ऐन्टिक्वेरी" नाम पत्र में नियम के साथ प्रबन्ध लिखा करते थे। एक दफा प्रोफेसर वेबर ने उन से पूछा था कि "पहले रामायण बना या इलीयड?" जवाब में उन्हों ने अपनी विद्या का कैसा परिचय दिया है वह उन की बनाई इस विषय पर पुस्तक देखने ही से ज्ञात होगा। अंग्रेज़ी पद्य में भगवद्गीता का ऐसा भाषान्तर उन्हों ने किया है कि अंग्रेज़ लोग देख कर दंग होते हैं। देशीय के कलम से क्या ऐसा पद्य अंग्रेज़ी में निकल सकता है? टीका

सहित भट्टी काव्य और मुद्रा राक्षस इन्हीं ने प्रकाश किया। १८७३ और उस के दो वर्ष बाद युनीवर्सिटी के एफ० ए० और बी० ए० परीक्षा के परीक्षक हुए। १८७७ में बम्बई युनीवर्सिटी के फ़ेलो चुने गये। अन्त की उस के बाईस-चैन्सलर भी हुए। १८८०-८१ में शिक्षा कमीशन के सभ्य नियुक्त हुए। इसी समय गवर्नमेन्ट ने उन को सी० आई० ई० की उपाधि दी। सन १८८४ में सर जेम्स फ़रगुसन ने इन को आईन सभा का मेम्बर बनाया फिर उन्हीं ने बड़े लाट की काउन्सिल का मेम्बर होने के लिये कहा पर काशीनाथ तैलंग ने अस्वीकार किया। बम्बई व्यवस्थापक सभा में प्रजा के प्रतिनिधि स्वरूप निडर होकर अपने मत का वह समर्थन करते थे। बम्बई के रौयल एशियाटिक सोसाईटी में कई बार प्रेसीडन्ट हुए थे। इस के अलावे बहुत सी सभाओं के प्रेसीडेन्ट थे। यह सहवास सम्मति बिल के पक्ष में थे। इन का ख़याल था कि बिना सरकार की सहायता के निद्रित हिन्दू समाज कभी न जागेगा। मत भेद होने पर भी उन के विपक्षी अवश्य इतना स्वीकार करेंगे कि ऐसे स्वाधीन चित्त, कार्य प्रिय, पंडित पुरुष आज कल भारतवर्ष में बहुत कम देखने में आते हैं।

जब वह अच्छा होने लगा तो उत्तम उत्तम सामग्री बना कर मैं उसे खिलाने लगा।

चैनी धीरे धीरे आराम होने लगा उसके शरीर ने बड़ा झींका उठाया था। अच्छा होने के बहुत दिन बाद उसके सामने कप्तान की सांप का नाम लेने का साहस हुआ।

कप्तान और स्टीफन ने बहुत खोज खोज कर सांप का पता लगाया और इस बात से की को बहुत खुशी मिली कि हम लोग टापू के जिस भाग में थे उसमें सांप का ज़रा भी दरस नहीं था।

जब तक चैनी खूब चंगा न हो गया तब तक हमलोग रुके रहे। जब वह अच्छा हो गया तब सब कोई जंगल में इस इरादे से चले कि देखें और कौन कौन नये जानवर यहां हैं। मैं इस अवसर की राह देख रहा था पर संदेह यही था कि देखें मुझे सब साथ ले जाते हैं या नहीं।

बाईसवां अध्याय।

एक दिन जब कि चैनी कमज़ोरी ही की हालत में हमारे साथ शाम को सायबान में बैठा था वे दोनो मकान छोड़ कर समुद्र तीर पर फिरने को गये। ज़ार का ज़ुआर आने से कछुआ रखने का जो तालाब बना था उसकी दीवार टूट गई थी इसी को देखने के लिये वहां जाना ज़रूरी था।

इतने दिन टापू पर रहते हो गये थे पर पूरे तौर से यह देखा भाला न गया था। जिस भाग में हम लोगों का मकान था उधर ही ज़रूरी चीज़ें मिल जाती थीं और हमेशे काम लगा ही रहता था इससे यह देखने भालने का काम सुबीते साथ करने का विचार होता था। इसका फल जैसा हमेशा होता है वही हुआ यानी मामूली काम जो हर दिन हो सकता है उसको करने के लिये कभी सुबीते का वक्त ही न मिला।

तम्बाकू की खोज में चैनी इतनी दूर निकल गया था जितना कि वे दोनों भी कभी नहीं गये थे। बल्कि उसी का हाल सुन कर लोगों ने निश्चय किया कि किधर चलना चाहिये।

तड़के ही दोनो जने बंदूक पिस्तौल बांध कर चले और एक हलकी कुल्हाड़ी जंगल में घुसने को राह बनाने के लिये उन लोगों ने रख लिया।

कई घंटे घूमने के बाद वह ऐसे जगह में आये जहां पहले कभी नहीं गये थे।

छोटे छोटे पेड़, घास, लता, फूल इतने घने उपजे हुए थे कि उनके बीच हो कर जाने के लिये अक्सर कुल्हाड़ी से काट कर राह बनाने की बारी आती थी।

दृश्य बहुत ही सुन्दर था। बीच बीच में पत्थर के ढोके आकाश की ओर निकले हुए थे जिन पर चढ़ने से समुद्र साफ़ देख पड़ता था। हर तरह के वृक्षों के पक्षों के मिल जाने से उस गर्म देश में शीतल छाया देख, बिना परमेश्वर को धन्यवाद दिये जी नहीं मानता था। चमकीले पर वाले हर एक रंग के पक्षी एक डाल से दूसरे पर फुदक रहे थे या निर्भय हो कर उनके पैरों के पास हरी घास पर घूमते फिरते थे। पशु पक्षी सकलियां इस प्रान्त में पास्राव सी हो रही थीं क्यों कि आज तक किसी मनुष्य ने उनका डराया न था इससे वे मनुष्यों को अपना शत्रु नहीं समझते थे।

ओर की इस सैर में जो कुछ देख पड़ा उससे वे दोनो बहुत ही प्रसन्न और मोहित हो गये।

इधर उधर बहुत घूमने के बाद वह एक खुली जगह में आये। तमाम दूब उपजी हुई थी और उसके मध्य में एक ही बड़ा भारी चटान खड़ा था वहां दोनों सुस्ताने के लिये ठहर गये और स्टीफ़न पहाड़ो के एक ओर से जल का सोता बहता हुआ देख जल पीने के लिये झुका।

जोहीं वह झुका तो उसकी आंखें तीर पर एक गुबरीला के झुंड पर जो चली जा रही थी, जा पड़ी।

मालूम होता था कि कोई पल्टन अपने अफ़सर के पीछे पीछे चली जा रही हो। यदि दोनों आदमियों को टापू के उस पार जाना था तो नष्ट करने के लिये समय न था इस लिये स्टीफ़न ने एक तुम्बा जल

इस लिये भर कर रख लिया कि अगर आगे नदी न मिली तो इसी से संतोष किया जायगा। फिर दोनो ने जंगल के बीच काट कर रास्ता बनाना शुरू किया। सुन्दर सुन्दर लताओं ने वृक्षों को इस तरह लपेट लिया था जिससे जान पड़ता था कि किसी ने जाल लगा दिया हो, राह पर पड़ने से इन जालों को भी कुल्हाड़ी से काटना पड़ता था।

इस तरह बिन राह के पहाड़ और जंगलों के बीच सैर यद्यपि मन भावनी होता है पर इसमें मांदगी बहुत होती है। स्टीफन ने तुम्बा में पानी भर कर रख लिया था वह बहुत काम आया क्योंकि मिहनत के बाद पानी पीने से मिज़ाज में ताज़गी आ जाती थी। उलझे हुए जंगल में काटने का बहुत काम पड़ता था। थोड़ी देर तक उन का ऐसा मन हो गया कि ऊपर चढ़ना छोड़ दिया जाये और टापू के अपनी ही भाग की ओर चल चलें जो बहुत खुलता और साफ़ है।

पर न तो कप्तान और न स्टीफ़न ही हार मानना चाहते थे इससे चढ़ने की थकावट और मिहनत के रहते भी धीरज के साथ चढ़ाई को ओर चले। जों जों आगे बढ़ते जाते एक की जड़ और लता चारो ओर दूसरे से इस तरह लिपटी हुई थी कि बिना नीचे देखे चलना बड़ा कठिन था इससे गिर जाने का भय था। जों जों ज़मीन ऊंची होती जाती थी दरख़्त छोटे छोटे मिलते थे पर झाड़ियां बड़ी घनी होती जाती थीं।

इसके बाद खड़ी राह मिलने लगी जिसका चढ़ना बहुत कठिन था लेकिन इससे उत्साह नहीं कम हुआ था आख़िर ऊपर पहुंच गये।

गर्मी से बेदम हो रहे थे, चढ़ाई से थक गये थे, तो भी वहां से जो देख पड़ा उसकी खुशी न रुक सकी, मुंह से निकल ही आई।

टापू के सब से ऊंच जगह पर वे पहुंच गये थे वहां से अपने राज भर का कुल भाग देख पड़ता था।

टापू आठ या नव मील लम्बा था और चौड़ाई में जहां खूब चौड़ा था शायद दो मील होगा।

वह जहां थे उसके नीचे एक कोटी झील या बड़ा तालाब था जिसके किनारे अनगिनती जंगली जल पक्षी कलोल कर रहे थे।

ताड़ की छाया में कुछ देर तक दोनों सुस्ताने को बैठे और चिड़ियों का तमाशा देखते रहे, चिड़ियों ने कभी आदमी नहीं देखा था इससे निर्भय हो कर कल्लोल करती थीं।

कप्तान—सब बातों को ख़याल करने से हम लोग बड़े भाग्यवान मालूम होते हैं क्यों कि हमलोगों का टापू बहुत ही उपजाऊ है यहां शान्ति विराज रही है।

स्टीफ़न—इसमें क्या सन्देह है? अक्सर मैं सोचता हूं कि किसी पहाड़ी टापू पर हम लोगों का जहाज़ टूटता जहां सिवा पत्थर के और कोई चीज़ न रहती तो हमलोगों की क्या दशा होती। बहुत लोगों की ऐसी गत हुई है और बेचारे भूखे प्यासे मर गये हैं।

कप्तान—यहां से निकल जाने की बहुत इच्छा करना परमेश्वर का अकृतज्ञ होना है या नहीं?

स्टीफ़न—मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा है जो घर और कुटुम्ब की सदा इच्छा करता रहता है। इस बात में मनुष्य के स्वभाव का तो मैं दोष नहीं मान सकता। पर यह कहना आवश्यक है कि हमारे भाग्य से अच्छी जगह मिल गई है।

कप्तान—निस्सन्देह। बल्कि हमलोगों को कृतज्ञ होने के लिये कई कारण हैं एक तो परमेश्वर ने समुद्र की विपत में बचाया, दूसरे खाने पीने का भरपूर और रहने को अच्छी आब हवा दी है क्यों कि चैनो की बीमारी तक हम लोग कैसे भले चंगे रहे। क्यों है न?

स्टीफ़न—हां, कभी हम लोगों का कोई पीड़ा या दुख नहीं हुआ तो भी यहां से जाने की इच्छा बहुत हो रही है। मैं तो समझता हूं कि घर जाता हुआ जहाज़ अगर हमारे लिये यहां आ जाये तो उससे उम्दा कोई चीज़ इस वक्त हम देखना न चाहेंगे।

कप्तान—यह तो ठीक ही है।

इतना कह कर कप्तान जहां बैठा था वहां से उठा और दूरबीन लेकर चारो ओर देखने लगा।

समुद्र में गिरीन्द्र।

चारो ओर शान्त और नीला समुद्र था। पश्चिम किनारे छोटे छोटे टापू थे कोई खाली पत्थर ही था कोई सिर्फ़ बालू ही था। पर किसी में आदमी की बस्ती न थी और इस लोगों के टापू पर भी सिवा इस चारों के और किसी ज़ात का कोई आदमी न था। यदि कोई होता तो उसका चिन्ह पहले ही देखने में आ जाता।

खुले समुद्र में चारो ओर कप्तान ने अपनी उम्दा आखों से देखना शुरू किया पर किसी ओर जहाज़ का नेज़ मात्र भी दृश्य में न आया। ठंढी सांस के साथ दूरबीन फिर बंद करके उस मोम को फिर कप्तान ने देखा जो पैरों के पास एक नगीना सी चमक रही थी।

बीच बीचमें मछलियां जलमें कूदती थी और चिड़ियां कभी जल के ऊपर और कभी भीतर भी शिकार की खोज में उड़ कर गोता लगाती थीं।

जल के किनारे सुन्दर सुन्दर फूल फूले हुए थे और लम्बे लम्बे ताड़ और दूसरे वृक्षों की छाया स्थिर जल पर पड़ रही थी। ताड़ पर एक लता चढ़ी हुई थी उसको बतला कर स्टीफन ने पूछा कि "वह सुन्दर लता किस चीज़ की है ?"

कप्तान—वह पान है। मैंने पहले भी इन प्रान्तों में देखा है। इसके पत्ते चकोतरे से मिलते हैं। यही कि वे ज़रा लम्बे और पतले होते हैं। मैंने अंगूर की तरह इसकी खेती होते देखा है और लता के चढ़ने के लिये अक्सर भी लगाया जाता है।

स्टीफन—यहां उनको आप ही ढूंढ़ लेना पड़ता है। क्या ऐसा लट पट डाल आपने पहले देखा था ? एक सुन्दर लता दूसरे को पकड़े है और मज़बूत कमज़ोर को दबाये है।

कप्तान हंसा—यह कुछ गर्म ही देश के वृक्षों में बात नहीं है वही डाल पृथ्वी भर में सर्वत्र है। देखो एक पेड़ और है इसको मैं पहचानता हूं इसका नाम सुपारी है।

वह दरख़्त बड़ा खूबसूरत था और उसकी डालें छोटी थीं पर पत्ते बहुत ही सुन्दर थे। पचीस तीस फुट ऊंचा सीधा तीर की तरह वह खड़ा था और इसकी फुनगी पर गुच्छे पत्तों के थे।

थोड़े से फल नीचे गिरे हुए थे कप्तान ने उठा कर स्टीफन को दिखलाया और कहा कि यह फल पान के साथ हिन्दुस्तान में बहुत खाया जाता है। इसका स्वाद बहुत अच्छा होता है।

कप्तान—इधर के टापू में यह बहुत पैदा होता है पर सिर्फ़ हिन्दुस्तान के लोग इसको काम में लाते हैं।

सब से ऊंची जगह पर से उनलोगों ने टापू देख लिया और झील भी देखा इसमें अब घर लौटने का विचार करने लगे। राह खो जाने के डर से जिधर से आये थे उधर ही से कुल्हाड़ी से राह काटते चले।

आने के वक़्त उन्हों ने किसी पेड़ की डाल काट डाला था किसी पेड़ पर निशान बना डाला था कि जिस में राह का शक न हो। जंगल के सब भाग आपस में ऐसे मिलते जुलते और एक ही तरह के थे कि इस तदबीर के न करने से बहुत जल्दी राह भूल जाते फिर निकलना कठिन होता। शाम को जब घर पहुंचे तो मांदगी बहुत दीनो को आ गई थी। मैंने उनके लिये खाने का जो बना रक्खा वह खा कर उन लोगों ने मेरी बहुत ही तारीफ़ की।

तेईसवां अध्याय।

चेनी और हमारा जी उस झील को देखने के लिये बहुत चाहता था। एक हफ़्ते में झील तक की राह साफ़ करने में मदद देने लायक़ चेनी भी हो गया।

छोटे छोटे जंगल और फूलती लता को काट कर हम लोगों ने जल्दी ही एक साफ़ राह बना ली। इस बात का बड़ा अचरज हुआ कि जो पहले कठिन मालूम होता था वह अब टहलने लायक़ हमदा जगह निकल आई। बांस काट कर हम लोगों ने छीप बनाया और पतली पतली डोरी में जहाज़ पर से बचा लाया था उसी का डोर हुआ। समुद्र की मछली से जी ऊब गया इससे झील की मछली का शौक़ हुआ। शौक़ का यही धंधा कुछ दिनों के लिये हो गया। सीप के टुकड़े से एक तरह की बंसी भी बना ली गई।

एक दरख़्त की जड़ को खोद करके स्टीफ़न ने एक तरह का एकठा बना लिया था उस पर चढ़ कर झील की खूब सैर होती थी।

एक दिन लकड़ी काटने के वक़्त सब को सनसनाहट की आवाज़ सुन पड़ी। स्टीफ़न जिधर था उधर ही से आवाज़ आ रही थी। घूम कर उसने देखा कि एक बड़ा भारी सांप लटक कर उसी की ओर क्रोध से सिर उठा रहा है। हाथ में तेज़ कुल्हाड़ी थी झट एक ही चोट में उसने धड़ से सिर अलग कर डाला।

चैनी पहले पहल उस दिन बीमारी के बाद खुश मालूम हुआ। वह कहने लगा कि किताब में इसने सांप के चमड़े के बनाने का हाल पढ़ा है। बुखार के बाद वह इतना कमज़ोर हो गया था कि कप्तान को फिर उसे खुश देखने की उमेद ही नहीं थी।

अच्छे होने के बहुत दिन बाद भी उसका किसी चीज़ में जी नहीं लगता था। यों तो तलाब तक जाने की राह में वह भी मदद देता था पर जो कभी खुश नहीं देख पड़ा था।

इस सांप के मारे जाने से मालूम हुआ कि वह जाग उठा—और उसका चमड़ा तइयार करने के विषय में वह कुछ कहने लगा।

चैनी को फिर उत्साहित और एक चीज़ में जी लगाते देख सब कोई खुश हो गये। उन लोगों ने चैनी को सांप का चमड़ा दे दिया कई घंटे वह उसी के चमड़े का क्या जाने क्या तइयार करता रहा इसी में उसका जी बहलता रहा।

बीमारी में उसके बाग़ की हालत बड़ी खराब हो रही थी। और और काम करने के लिये लोगों को बहुत था इससे किसी ने बाग़ को छूआ भी नहीं था। चैनी जब मज़बूत हो गया और बाग़ में गया तो उसने देखा कि सब जंगल हो गया है।

कई दिन की मिहनत में सब ठीक हो गया और इस मिहनत का उसे पूरा फल मिला क्यों कि जो काम की साग सब्ज़ी उसने जमा की थी सब के उपज जाने से बाग़ की अपूर्व शोभा हो गई थी।

इतने दिनों में जितनी बत्ती बनाई गई थी सब खतम हो गई। हम और चेनी फिर मधुमक्खी की खोज में निकले। धूंए से फिर काम निकाला गया। लेकिन इस बार कई लगड मक्खियों ने हम लोगों को डंस लिया। जब तक चेनी बखूबी अच्छा हो गया दूसरा बरस करीब करीब बीत गया फिर बरसात के लिये सब कोई तइयारी करने लगे।

हर रोज़ कप्तान सुबह शाम पहाड़ी पर जाते और चारो ओर पाल की खोज में टूरबीन लगा कर देखते थे। उन्हों ने बहुत आंख फाड़ फाड़ कर देखा पर कभी नहीं नज़र आया।

यह फिक्र बड़ी भारी आ पड़ी थी हम लोग जिस वक्त टापू में आये थे कप्तान के बाल काले थे अब इन दो बरसों में सोच के मारे बहुत से भूरे हो गये थे।

फिक्र ही से आदमी जल्दी बूढ़ा होता है। कुछ पता नहीं था कि कब तक ऐसी दशा में रहना होगा इस लिये इतने दिन बहुत ही दुख में कप्तान के लिये बीते।

यद्यपि इस उपजाऊ टापू में सही सलामत रखने के लिये परमेश्वर का अनुगृहीत था तो भी कब तक टापू में रहना पड़ेगा इसका ठिकाना न रहने के कारण उसे सन्देह होने लगा कि कहीं अन्त काल तक इसी टापू में न बिताना पड़े और इस बात की भी कौन आशा है कि किसी को मालूम हो जाये कि हम लोग यहां पड़े हैं और आकर यहां से ले जाये। अपने को घर और नातेदारों से इतना दूर देख और अपने बाल बच्चों का खयाल आ जाने से कप्तान हाथ मल मल दुख के मारे तीर पर जब कटपटाता था उसका वर्णन करना बड़ा दुखदायी है।

टापू बड़ा सुन्दर, उपजाऊ और हर तरह से अच्छा था। यदि सब को एक बड़ा भारी बाग कहें तो भी कुछ अनुचित न होगा। क्यों कि सदा बड़े बड़े सुन्दर फूल वहां खिले ही रहते थे और अनगिनती चमकीले परों वाली चिड़िया वहां रहती ही थी।

यह उन ही टापुओं का सा था जैसा कलम्बसने ढूंढ कर निकाला था जहां मनुष्य के थोड़े ही परिश्रम करने से भरपूर अन्न पृथ्वी देती है।

यही बात अचरज की थी कि नये नये स्थान और धन के खोज में जहाज़ वाले घूमा करते हैं पर इस टापू को उन लोगों ने क्यों छोड़ दिया था।

कप्तान विलियम्स रोज़ अपने फुर्सत के वक्त जल और थल से टापू की खोज में निकलते थे पर मनुष्य का कहीं दरस उनको न मिला।

कभी बड़े बड़े पक्षियों का झुण्ड कभी सांप के निशान उनको देख पड़ते थे पर कोई ऐसी चीज़ न देख पड़ी जिससे इस लोगों के चित्त में खटका होता। इस लोग पहाड़ पर चढ़ते, तालाब में पैरते थे इससे इस लोगों का शरीर मज़बूत और निरोग हो गया। वक्त झट झट बीतने लगा तो भी वहां से इस सब को कुड़ाने के लिये कोई जहाज़ नहीं आया।

टापू में बहुत तरह के ताड़ के से पेड़ थे। चैनी को पूरा विश्वास था कि इन में का कोई किस्म आदमी के बड़े काम का था।

उसने स्कूल में वनस्पति शास्त्र खूब जी लगा कर पढ़ा था इससे उस को पूरा विश्वास हो गया कि एक जो घर के पास ही था उस जाति का है जिससे चीनी निकलती है और खजूर कहलाता है।

इस पेड़ में मीठा बहुत होता है और उसके खमीर से ताड़ी होती है जिसके पीने से नशा होता है। ताड़ी का रंग सफ़ेद और लाल दोनो होता है और हर एक पेड़ से डेढ़ दो सेर के अन्दाज़ रोज़ रस निकलता है। जब ताड़ी निकालने का जी चाहता है तो लोग पत्ते के पास कील देते हैं और उसके नीचे लबनी बांध देते हैं। रस बिलकुल उसी में जाकर जमा होता है।

चैनी ने परीक्षा लेने के लिये एक कुल्हाड़ी ले कर नीचे के पत्ते के पास कील दिया और एक तुम्बा लटका दिया। बाग़ में काम करके जब कई घंटों के बाद लौटा तो उस बरतन को दो तिहाई रस से भरा देख पड़ा प्रसन्न हुआ।

खमीर हो चला था जैसा कि बुलबुलों के निकलने से मालूम होता था। इस लिये उसने उस पात्र को बड़े पत्ते से ढक कर साये में रख दिया। कई दिनों के बाद उसने देखा कि रस काला हो चला। चख कर देखा तो बहुत स्वाद मालूम हुआ लेकिन बहुत पीने लायक़ न था उसके पीने

से उनको ताज़गी मालूम होने लगी। जब परीक्षा ठीक उतर गई तब उस तरह के बहुत से बृक्षों में, रस जमा करने के लिये कील कर, तुम्बा टांग दिया गया। पन्द्रह दिन में कई तुम्बा उन लोगों के पीने लायक उम्दा ताड़ी तइयार हुई और बाकी का गर्म करके गुड़ बना।

परीक्षा से जब उसको निश्चय हो गया कि जो उसने समझा था वही है तब और और भी काम उसमें निकलने।

नारियल के छिलके का रस्सा उसने बनवाना शुरू किया। हम चारों में से जब कोई बेकार रहते तो रस्सा डोरी हमेशा बनाया करते थे। इसी जाति का एक और पेड़ था जिसके जड़का गूदा जब सुखा कर पीसा जाता था तो बड़ी उम्दा चीज़ खाने को होती थी इससे मुझे जो आनन्द मिला उसका पाठक सहज में अनुभव कर सकते हैं।

सामग्री अब इतनी प्रस्तुत हो गई थी कि हेर फेर कर बनाने का बहुत मौका था। जब कभी किसी को दूर जाने का मौका होता था और लौटने की गंज नहीं मिलती थी तो खाने का साथ ही ले जाते थे।

चैनी उद्भिज विद्या जानता था इससे मुझे बड़ा आनन्द मिलता था और ज़ियादा खुशी इस बात की मुझे थी कि उसकी किताब जहाज पर से लाने की कैसी अच्छी अक्ल सूझी।

एक और तरह का ताड़ भी टापू में बहुत था जो हाथी दांत से बहुत मिलता जुलता था इस में यह बाबत थी कि जड़ पहले ज़मीन से लग कर बीस बीस फुट जाने के बाद तब ऊपर को जाती थी। और उसकी ऊंचाई तीन चार फुट से कभी ज़ियादा नहीं रहती थी। फल इसका गुच्छे का गुच्छा सा होता है। इसका सस्ता सस्ता शतरंज का मोहरा बहुत बनता है

चैनी हर बात की परीक्षा लेना चाहता था लेकिन खराद नहीं था। इससे अच्छी चीज़ न बना सका। तो भी उसने दो चार डिबिया और दो चार छोटे छोटे प्याले बना ही लिये।

चौबीसवां अध्याय।

समय इस तरह जल्दी बीता जाता था कि जिससे जान पड़ता था कि दिन भागे जाते हैं। पानी पड़ता था तो भी हम लोग कोई न कोई काम ऐसा करते ही रहते थे जिससे दिन बड़ा नहीं जान पड़ता था।

मकान के पिछवाड़े एक बड़ा लम्बा पतला ओसारा स्टीफ़न ने बनाया था इसमें वही काम होता था जो मकान के भीतर होने लायक़ न था। डोरी बनाना, लकड़ी काटना आदि। स्टीफ़न टोकरी बनाने में बहुत होशियार हो गया था।

ताड़ के बड़े बड़े पत्तों से बेंतका काम और बांस से लकड़ी का काम कुर्सियों के बनाने में बहुत उम्दा होता था।

स्टीफ़न ने ताड़ के पत्तों से शतरंज की बहुत उम्दा बिसात बनाई और चेनी ने मुहरें बनाये इससे मुझे बड़ा आनंद मिला। ताड़ की चटाई भी बन गई।

मुहरे बनाने के बाद बखेड़ा एक इस बात का हुआ कि दोनो एक ही रंग के थे इससे संदेह होने लगा कि कौन मुहरा किसका है। पर यह अभाव भी चेनी ने मिटा दिया। ओसारे में जो लकड़ें लगी थीं उनमें एक का फूल लाल होता था उसीका रस निकाल एक पक्ष के उस ने कुल मोहरे उसमें उबाल डाले। इस तर्कीब से नक़ली हाथी दांत पर बहुत सुन्दर रंग चढ़ गया।

अब बहुत सा वक़्त शाम का शतरंज ही के खेल में निकलने लगा इसके बाद हम लोगों ने दूसरे खेल की भी गोटी बना ली।

अब स्टीफ़न का ध्यान मिट्टी के बरतन बनाने की ओर भी लगा। हर तरह की काम लायक़ मिट्टी टापू में थी पर चाक ही की कसर थी वह भी एक तरह का उसने बना लिया और उसके मदद से अजीब अजीब तरह के उसने घड़े और हांड़ी, प्याली प्याले बना डाले।

मिट्टी के बर्त्तन जब बन गये तब उनके पकाने की फ़िक्र पड़ी लेकिन जलावन बहुत था इससे उन्हों ने एक तरह का आवा बना कर आग धक धक सुलगा कर तब उस पर कच्चे बर्त्तन इसने धरिया दिये।

पकाने के वक्त पहले पहले तो बहुत से बरतन टूट गये पर मसल है कि "पढ़े पंडित नहीं पढ़े पंडित होता है" कई बार बिगड़ने के बाद बर्तन अच्छे अच्छे बनने लगे ।

हर हुनर का शुरू होता है। पहले पहल जो हम लोगों के बरतन बने थे यदि किसी नुमाईशगाह में रक्खे जाते तो तारीफ़ के बदले ज़रूर ही हंसी होती। यद्यपि भद्दे बरतन बनते थे पर जब निर्विघ्न पकने लग गये तो हम लोगों के सन्तोष और आनन्द का ठिकाना न रहा।

एक दिन शाम को मैं स्टीफ़न के साथ टेबल की एक ओर बैठ कर शतरंज खेल रहा था और दूसरी ओर चेनी बैठ कर किताब पढ़ रहा था, दो मोमबत्तियां जल रही थीं कि ऐसे वक्त में फिर कप्तान को घर का याद आ गया और टापू में इतने दिन का रहना खयाल कर उनके दिल में उदासी छा गई।

उस समय कमरा बिलकुल घर सा मालूम हो रहा था, चारो ओर आराम के सामान रक्खे थे दो दो मोमबत्तियों के जलने से रोशनी खूब हो रही थी, हम तीनो ठीक उसी तरह बैठे थे जैसे मकान पर लोग बेफ़िक्री से बैठा करते हैं। इसी से शायद उनको अपने लड़के और स्त्री का खयाल पड़ कर अपने घर का याद आ गया। खिड़किनी खोल चुपचाप मकान के बाहर चले गये।

पानी बरसना रुक गया था, सारे टापू में चांदनी छिटकी हुई थी। वृक्षों की डालें और छोटी छोटी फुनगियां चन्द्रमा की रोशनी बड़ी सुन्दर देख पड़ती थी, दम भर तक वे चीज़ें देखते रहे—फिर उस सुहावनी समा के देखने से जी उमड़ आया।

निस्सन्देह टापू बड़ा सुन्दर था तो भी उनका जी छोड़ने के लिये चाह रहा था। जन्म भूमि चाहे कैसी भी हो पर स्वर्ग से भी ज़ियादा प्यारी मालूम होती है। कैसे भी बढ़िया जवाहिरातों से जड़े सोने के पींजड़े में चिड़िया को बंद कर रक्खो पर वह उसे अच्छा नहीं लगता भागना ही चाहती है अपनी पहली स्वाधीनता ही खोजती है। उसी तरह यद्यपि टापू में किसी बात की कमी नहीं थी, स्वर्ग ही सा सुन्दर और मनोहर था तो भी उनका जी नहीं लगता था।

ज़मीन तर और मुलायम थी, उस वक्त घास आदि भी भींगे हुए थे पर जल पर चंद्रमा की रोशनी ऐसी साफ़ पड़ रही थी कि मन में जो झींक आया उसे वह न रोक सके। पहाड़ी पर जहां झंडा खड़ा था सीधे चले जाने और समुद्र में देखने की इच्छा मन में प्रबल हो उठी।

कप्तान विलियम्स बड़ी बड़ी घास के बीच छाते हुए झंडे के पास चले ही गये और खड़े हो कर समुद्र में देखने लगे।

पूर्णिमा का चन्द्रमा था, सारा समुद्र चांदी सा देख पड़ता था। चारो ओर सुन सान और शान्ति विराज रही थी। पक्षीगण निद्रित थे और हवा गिर गई थी।

नीचे धीरे धीरे तीर पर के पत्थरों पर समुद्र जल का छल छलाना केवल सुन पड़ता था। थोड़ी देर तक किसी खयाल में डूबे हुए कप्तान खड़े रहे ज़रा भी हिलते डोलते न थे उस वक्त जो कोई दूसरा देखता यही समझता कि पत्थर ही है कोई आदमी नहीं है।

चन्द्रमा का प्रकाश ऐसा निर्मल था कि दिन को जैसा साफ़ मालूम होता वैसा ही उस समय भी देख पड़ता था। वह समुद्र की ओर टकटकी लगाये देख रहे थे पर जहाज़ देखने की आशा नहीं थी।

बहुत दिन उम्मीदों के टूटने से दिल ऐसा ही टूट जाता है, मन उदास हुआ जाता था। बराबर यही देख पड़ता था कि एक के बाद एक तरंग चले आ रहे हैं और बीच बीच में छोटे छोटे ढेह भी उठते हैं। दूर पर आकाश और जल मिला हुआ देख पड़ता था। इसी तरह देखते देखते कोई चीज़ हटती हुई देख पड़ी। क्या उनकी आंखों को धोखा तो नहीं हुआ? उन्होंने अपनी आंखें हाथों से इस लिये मल डालीं जिसमें निश्चय हो कि जागे हैं और फिर समुद्र में देखने लगे।

निस्सन्देह चंद्रमा की किरणों में कोई चीज़ काली काली सी अवश्य देख पड़ती थी! इतना भर तो देख पड़ा—पर था क्या? शायद झील सकती। उस प्रान्त में ये बड़ी बड़ी मछलियां, सुनने में आया था कि, बहुत होती हैं पर हम लोगों ने तब तक उस टापू के पास कभी नहीं देखा था।

फिर उन्हों ने आंख फैलाई, और इस बार कुछ ज़रा ज़ियादा साफ़ देख पड़ा। नहीं, छोटा मछली नहीं थी वह निश्चय हो गया। तब क्या जहाज़ था?

उस वक्त के संदेह से उत्पन्न दुख का क्या पूछना था! बुद्धि चकरा गई पर समय ऐसा वह था कि जिसमें बुद्धि स्थिर शान्त और ठिकाने रखना उचित था। पल भर के बाद चंद्रमा की ज्योति में वह काला दाग और भी साफ़ मालूम होने लगा। इसके बाद एक ही दृष्टि में निश्चय हो गया कि जहाज़ ही है।

इतने दिन बीत गये, हफ़्ते बीत गये, इतने महीने बीत गये तब कहीं अन्त को जहाज़ देख पड़ा। लेकिन वह भी इतनी दूर पर। क्या वह नज़दीक आयेगा या अंधेरे ही में बाहर बाहर चला जायेगा और कभी नहीं लौटेगा?

कहीं जो इस वक्त दिन होता तब तो जहाज़ का चौकीदार हम लोगों का झंडा देख ही लेता। लेकिन कैसी भयानक बात है! भोर होने को बहुत विलम्ब था। भोर होने के पहले ही वह आशा जो धीरज देने को आई थी निराशा हो जायेगी।

ज़रा आग जला सकते तो जहाज़ वाले देख लेते या जब तक आग सुलगे तब तक जहाज़ निकल जाये तब तो सत्यानास ही होगा! पर पानी ऐसा खारसे बरस गया था। सब खर पात सूखी लकड़ियां भीग गई थीं—आग को सुलगते सुलगते भी पहरों लगेगा तब तक तो खेल ही भंडूल हो जायेगा।

उस समय कप्तान के मन की भयानक दशा हो रही थी यह भी मालूम था कि जहाज़ पास ही है और अभी भी टापू से छुटकारा पाकर घर पहुंचने का संयोग है और यह भी मालूम था कि वह आशा कितनी कम है! पहाड़ी पर से घर की ओर दौड़े क्या कि उड़ ही जाये और जहां हम लोग निश्चिन्त बैठे थे धड़फड़ाते हुए भीतर घुस आये।

उनकी घबरायी सी और पीली शकल देख हम तीनो डर के मारे खड़े हो गये।

डैनी—क्या हुआ ?

मैं—शायद साँप है।

स्टीफ़न—मुझे मालूम होता है कि जंगली आदमी तो नहीं देख पड़े ?

कप्तान के मुंह से बोली कहां निकलती थी, सीधे उन्हीं ने उस कोने का रास्ता लिया जहां जलावन रक्खा था और सूखी लकड़ी ताड़ के पत्ते आदि का एक बीझा दोनों हाथों से उठाने लगे।

जब मुंह से बोली निकली तो जल्दी से सब हाल उन्हीं ने कहा और सब से कहा "कि बाहर आकर तीर पर जल्दी आग लहराओ। झंडे के पास लकड़ी ले जाकर जलाने का वक्त नहीं है। नज़दीक ही कहीं आग सुलगाना चाहिये।"

पचीसवां अध्याय।

चंद्रमा की रोशनी जल पर खूब चमक रही थी पर जहाज़ इतनी देर में रोशनी की लकीर से बाहर जा कर अंधेरे में फिर चला गया था।

कप्तान को यदि इस तरह बेअवसर उदासी नहीं आती और वह रातको झंडे के पास नहीं जाते तो जहाज़ अपनी राह से चला जाता और उनको कभी नहीं देख पड़ता और कप्तान को यह भी नहीं मालूम होता कि जहाज़ इतना नज़दीक से आया था।

बहुत देर तो नहीं हो गई थी ? कौन कह सकता था ? हम चारों ने बड़ी मिहनत की और जल्दी ही तीर पर बड़ी भारी रोशनी हुई। बराबर जैसे जैसे हम लोग सूखी लकड़ी, सूखी डालें डालते चले गये वैसे ही वैसे चारों ओर बड़ी रोशनी फैली।

कप्तान हम तीनों को आग सुलगाने के लिये छोड़ झंडे के पास चले गये।

राह में ताड़ के पेड़ों की छाया वैसी ही थी, हवा वैसी ही रुकी हुई थी, चंद्रमा पहलेही की तरह सुन्दर चमक रहा था पर जहाज़ कहीं नहीं देख पड़ता था।

चारो ओर बहुत साफ़ था पर कहीं भी कोई दाग़ नहीं देख पड़ता था। तो क्या इतनी देर तक जो सब देख पड़ा बिलकुल स्वप्न ही था? क्या हम लोगों को छकाने ही के लिये दूर पर जहाज़ का आकार देख पड़ा?

धीरे धीरे दुखी हो कर एक ओर से दूसरी ओर देखते थे पर कप्तान को कुछ नया नहीं देख पड़ा—सिवा समुद्र और आकाश के दूसरी चीज़ सामने न थी।

जब लौटे तो भोर हुआ आता था और जब हम लोगों से मिले तो पत्थर और पेड़ों पर प्रातः काल की अरुण आभा छाई हुई थी।

आग अभी भी जल रही थी पर अब वैसी भयानक नहीं देख पड़ती थी जैसी कि चन्द्रमा की पीली रोशनी में मालूम होती थी। रात ऐसी जल्दी बीत गई और दिन ऐसा झट हो गया कि बिलकुल जादू का खेल सा मालूम होने लगा। थकी और उनींदी आखों से हम लोग सब कोई समुद्र की ओर देखने लगे। कोई चीज़ न देख पड़ी। हम लोगों को यही मालूम होने लगा कि कप्तान का दीमाग़ ख़राब हो गया है बहुत दिन से जहाज़ मे उनका जी लगा हुआ है उसी का ख़याल उनको बंध गया और जहाज़ का आकार मालूम हुआ।

स्टीफ़न यही समझे हुए था। उसे कप्तान कई दिनो से बीमार मालूम होते थे और स्टीफ़न को यह विश्वास हो गया था कि जहाज़ सचमुच नहीं था केवल कप्तान के ख़याल ही में विराजमान था। पर वह साफ़ साफ़ यह बात नहीं कहना चाहता था क्यों कि वह बिचारता था कि क्या जाने उसीका ख़याल ग़लत हो और कप्तान की बात सच हो। इस लिये सिर्फ़ आसकत से आग का सुलगाना छोड़ देना पूरा पागलपन होगा—यही सोच समझ वह भी आग जलाने में मदद देता रहा।

भाग्य अच्छे थे कि लकड़ी बेठिकाने और सस्ती थी इससे आग को जलती रखना कुछ कठिन न था जों जों दिन उगने लगा कप्तान की आशा लता मुर्झाने लगी। धीरे धीरे उदासी और निराशा में डूब गये जिससे हम लोगों को भय मालूम होने लगा।

चैनी और हम दोनो रात भर जागने से बहुत थक गये थे। मैं जब सबको खिला चुका तो हम दोनो सो रहे।

स्टीफन कप्तान को अकेला छोड़ना उचित न जान उनके पास बैठा जहां पहाड़ी पर दूरबीन हाथ में लिये कप्तान बृथा जहाज़ को फिर देखने की आशा में बैठे थे।

साफ़ दिन में आंच की अपेक्षा धूएं ही से ज़ियादा ध्यान खिंचता है इस लिये भीगी लकड़ी उन लोगों ने जमा कर रक्खी थी। धीरे धीरे खूब काला धूआं आकाश में उठा। इस बीच में हम दोनो ज़रा सुस्ता चुके थे वहां पहुंचे। आकाश निर्मल था धूंआ ऐसा काला था कि कई मील तक लोगों का ध्यान खींचने के लिये बहुत था।

दिन बीतता चला तो भी कप्तान दूरबीन लिये हुए झंडे के पास बैठे रहे लेकिन कुछ नहीं देख पड़ा।

आख़िर चैनी बड़े सोच में पड़ उनके पास जा बैठा और बोला।

आपने दिन भर हुआ कुछ खाया नहीं। उतर कर चलिये खा लीजिये। गिरीन्द्र ने आपके लिये बहुत अच्छी चीज़ें तय्यार की हैं। कप्तान ने घबरा कर सामने से चैनी को हटा दिया और फिर समुद्र की ओर वह देखने लगे।

चैनी ने चुपचाप अपना हाथ कप्तान की बांह पर रख कर कहा "यह बृथा है पिता! कल रात को आप स्वप्न देख रहे थे और आज दिनभर आप ख़याल कर रहे हैं कि जहाज़ पास ही में है लेकिन भूखे रहने से वह कुछ जल्दी तो नज़दीक आ ही नहीं जायेगा।

चैनी को यह विश्वास नहीं था कि कप्तान झूठ कह रहे हैं। वह बहुत समझा बुझा कर पहाड़ी पर से उनको उतार घर ले आया, और खिलाने के बाद जहाज़ पर की बचाई हुई शराब पीने को उसने दिया।

कप्तान बराबर कहते रहे कि हम को भूख नहीं है, प्यास नहीं है, किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है तो भी आहार करने से इस वक्त उनको बहुत लाभ हुआ।

खाने के बाद आग पर उन्होंने और भी लकड़ी पत्ता, भीगी हुई घास वगैरह रख दिया जिसमें खूब धूआं हो और जहाज़ वाले देख लें। और दूरबीन हाथ में ले झंडे के पास फिर जाकर बैठे।

अब तक भी कुछ नहीं देख पड़ा। जी लगा कर कुछ देर तक देखने के बाद निराशा से दुखी हो दूरबीन उन्हों ने बंद कर जी और वहां से चले आना ही चाहते थे।

एका एक, एक आवाज़ उनके कानोंमें पहुंची—यह आवाज़, न समुद्र के लहर की थी और न हवा के सनसनाने की थी। वह चौंक कर सुनने लगे; सुनने के साथ ही उमेद जो चली गई थी फिर हो आई। वह आवाज़ स्टीमर के पहियों की थी इसमें किसी तरह का सन्देह न था। पर वह था कहां? कहीं भी नज़र तो नहीं आता था। वह बहुत दूर देख रहे थे पर अब नज़दीकही देखने लगे। पश्चिम की ओर जो एक ज़मीनका कोना था उसी के पास एका एक इतना नज़दीक लम्बा और नीचा एक जहाज़ देख पड़ा कि उस पर के आदमी साफ़ मालूम होते थे।

उस समय कप्तान के जी का हाल मैं क्या वर्णन करूं? महीनों! सीव ज़िक्र में ठहरे ठहरे अन्त को सामने शरण देख पड़ा।

इस लोगोंने भी जो एक कोने पर खड़े थे स्टीमर को देख लिया था मारे खुशी के टोपी हिलाते और जहाज़ की ओर इशारा कर रहे थे। कप्तान ने कांपते हुए हाथ से अपना झंडा नीचे गिराया और फिर खड़ा किया। उस समय उनके आनन्द का क्या ठिकाना था जब कि जहाज़ पर से भी उनके इशारे के जवाब में उसी तरह इंग्लिस्तान का झंडा गिरा और उठा।

तुरत ही एक डोंगी उतारी गई कप्तान चार आदमियों के साथ जहाज़ से उतर तीर पर आया।

यह इंग्लिस्तान का जहाज़ अमरिका से आ रहा था। आंधी पानी से इस ओर अपनी राह से भटक कर चला आया था।

इस लोगों को यह नहीं समझना चाहिये कि जो बात बुरी हम समझते हैं वह यथार्थ ही में बुरी है। यदि आंधी नहीं चलती तो यह

इँगिलस्तान का जहाज़ इधर राह भटक कर क्यों आता? अपनी राह ही से सीधा चला जाता, जहाज़ पर के आदमी हम लोगों की आग का धूआं कैसे देखते? पर परमेश्वर को अच्छा करना था इसमें आंधी पानी आ गया जहाज़ भी राह से भटक गया। जहाज़ पर मीठा पानी घट गया था उन लोगों की बड़ी इच्छा थी कि कोई अच्छी जगह मिल जाती जहां से मीठा पानी ले लेते। पर भय इसी बात का था कि लहर में न पड़ जायें इसी लिये धीरे धीरे आ रहे थे। जब बहुत पास आ गये और उन लोगोंने देख लिया कि अमरिका का झंडा खंभे पर चढ़ रहा है तो समझ गये कि भय की कोई बात नहीं है तब तीर पर आना निश्चय किया।

इस जहाज़ के कप्तान का नाम कप्तान जेन्किंस था यह देखने में मज़बूत, चेहरा इसका लाल था और वह पुराना समुद्र का घूमनेवाला था।

उसने समझा था कि इस टापू पर बड़ी बस्ती होगी पर सिर्फ़ चार ही आदमी को देख बहुत अचरज में आ गया था। स्वभाव उसका दयालु और मिलनसार था। अपनी इतनी खातिर देख प्रसन्न हो गया था।

जहाज़ी लोग भी तीर पर आकर बहुत खुश हो गये थे। जैसी और मैंने जहां तक बना, बहुत सा फल मूल उनके आगे रख आगत स्वागत किया।

छब्बीसवां अध्याय।

एकान्त में रहते और एक ही तरह का काम करते हम लोगों को बहुत दिन बीत गये थे। नये नये आदमियों के टापू में आने से इस चल और शोर गुल के होने से मुझे अजब तरह का मालूम होने लगा पहले मैं कुछ भी नहीं निश्चय कर सका कि मुझे अच्छा मालूम हुआ या नहीं।

रात भर नींद तो नहीं आई पर रात भर घर के खयाल में हसक में पड़े रहने के बाद मुझे मालूम हुआ कि बात क्या है तब अपनी मदद के लिये जहाज़ को भेजने के वास्ते जीसे मैंने परमेश्वर का गुणानुवाद किया।

टापू के चारो ओर पत्थर बहुत थे इस लिये कप्तान ने हुक्म दे दिया था कि दिन रहते ही जहाज़ खुलेगा। दिन भर सब कोई काम में लगे रहे।

अब घर की ओर की यात्रा थी, बहुत कहां तक कहा जाये इतना ही कहना बहुत है कि हवा मंद की मिल गई जहाज़ को या उसपर के मनुष्यों की एक उंगली भी टेढ़ी न हुई।

जैसे जैसे जहाज़ घर के पास होता जाता था हमारे जी में कैसे कैसे भाव उदय होते होंगे कहां तक लिखा जा सकता है पाठक ध्यान ही से सोच सकते हैं।

सब से पहला खयाल हमारे जी में यह आया था कि माता पिता को मैंने इतनी चिंता और दुख में डाला किस तरह से इसका बदला चुक सकता है।

अहा! घर जाने की मेरी इच्छा कैसी प्रबल हुई! माता का मुख देखने के लिये, जिसे मैं स्वप्न में अक्सर देखता था, कैसा जी तरस रहा था! पर जब यात्रा समाप्त हो गई और स्टीमर कुशल पूर्वक लंडन में एक घाट किनारे लग गया तो भी मुझे ऐसा ही मालूम होता था कि अभी भी स्वप्न ही देख रहा हूं।

कप्तान विलियम्स और जैनी दोनो तुरत ही अमरिका जाने के लिये घबराये से थे पर मैंने कहा कि मेरे यहां ज़रूर आप लोगों को चलना होगा जहां से आप अपनी मेम के पास तार में अपने कुशल मंगल की खबर दे दीजियेगा। स्टीफन को भी मैं साथ ले गया।

यद्यपि हम लोग निर्जन टापू में थे पर वहां इतना अकेला नहीं मालूम होता था जैसा कि हम लोगों को मनुष्यों से भरे लंडन के घाट पर मालूम हुआ। सब आदमी अपने काम में लगे इधर से उधर जा रहे थे। सभी अनजान थे और कोई किसी को पूछता भी न था।

हम चारो एक गाड़ी में बैठे और धड़कते दिल से मैंने गाड़ीवान को मकान का पता बतलाया।

घोड़े कूटे, सड़क पर पहियों की आवाज़ और गाड़ी के खिड़कियों की खड़खड़ाहट से बात चीत करना कठिन था।

मैंने सोचा कि अच्छा ही हुआ क्यों कि मेरा जो ऐसा उमड़ा आता था कि हमारे मुंह से उस वक्त बोली नहीं निकलती। अन्तकी झटके के साथ गाड़ीवान ने जाने बूझे दरवाजे पर गाड़ी को रोका। और किसी तरह गाड़ी से बाहर निकल मैंने किवाड़ खटखटा कर घंटा बजाया।

घंटे की आवाज़ सुनते ही मेरा कलेजा धड़धड़ करने लगा।

दरवाज़ा तुरत खुला काला कपड़ा पहने एक बूढ़ी औरत पलभर तक चारों मूर्ति को देखती रही। फिर तुरत ही मुझे पहचान मेरे गले में उसने हाथ डाल दिया। घबराहट में मेरे मुंह से "दाई" सिवा इस शब्द के और कुछ न निकला।

मेरे पिता को भोजन करने के बाद ज़रा झपकी लग गई थी हल चल की आवाज़ सुन झट बाहर निकले कि देखें क्या बात है।

यह तो ख़याल ही करने की बात है कि अपने एक ही लड़के को जीता जागता देख परमेश्वर के वह कैसे अनुगृहीत हुए होंगे। उन्हों ने समझ लिया था कि मैं मर गया।

मेरा अपनी माता के सामने एका एक जा कर खड़ा होना अच्छा नहीं होगा इस लिये दाई पहले ही कहने के लिये कोठे पर गई।

उसने अपना काम बड़ी सावधानी से आरंभ किया पर दाई का मुंह देख मेरी माता को मालूम हो गया कि कोई भारी बात है। इससे बोली।

"कहो दाई! क्या बात है? मेरे लड़के की ख़बर लाई हो? मुझे मालूम होता है कि वह आ गया।"

प्रीत से ऐसा ही बल आ जाता है। कैसी कमज़ोर और शक्ति हीन वह हो रही थी तो भी अपने प्यारे लड़के से मिलने के लिये व्यग्र हो कमरे से दौड़ कर बाहर निकली।

दूसरे पलमें मैं सही सलामत जीता जागता उसकी गोद में था। जिस परमेश्वर ने विपत्ति में मेरी रक्षा की उसी ने मुझे उसके पास पहुंचाया। उस समय की खुशी और आनन्द का क्या ठिकाना है। वही इसका भेद समझ सकते हैं जिनकी प्रेममयी माता हैं और वही माता इस आनन्द का अनुभव कर सकती है जो हरघड़ी अपनी सन्तान के लिये व्याकुल रहती है।

हमारे पिता का एक जहाज़ अमरिका को जा रहा था उसी में कप्तान विलियम्स और चैनी सवार हो सकान गये। इस बात को पाठक लोग ख़ातिर जमा रक्खें कि मेरे पिता ने उन दोनो से जहाज़ का भाड़ा नहीं लिया।

स्टीफ़न अपने घर जा कर लोगों से मिलने के लिये इतना घबराया हुआ था कि एक ही रात हमारे यहां रहा। थोड़े ही दिनों के बाद जब कि मेरी माता चंगी हो गई तो भाई मूलचंद की भेंट के लिये मैं माता पिता के साथ फ़ेयर पोर्ट गया। स्टीफ़न ने घर पहुंचते ही विवाह कर लिया था। हम सबके वहां पहुंचने की ख़बर सुनते ही अपनी स्त्री के सहित भेंट करने को आया।

चैनी ने भी भांति भांति के प्रकार बनाये। स्टीफ़न ने बड़ी रुचि के साथ खाया भी, लेकिन सब से उसने कहा कि यद्यपि सब चीज़ें बहुत ही बढ़ियां बनी हैं पर उस टापू में गिरीन्द्र ने जैसे जैसे प्रकार बनाये थे उनके मुक़ाबले में ये चीज़ें नहीं ठहरतीं।

प्राप्ति स्वीकार ।

हम धन्यवाद सहित निम्न लिखित पुस्तक और पत्र स्वीकार करते हैं ।

१ । आश्चर्य वृत्तान्त । यह पीयूष प्रवाह में थोड़ा थोड़ा प्रकाश होता था और पढ़ने वालों के जी में लालसा ही लगी रहती थी कि आगे क्या है । अब वह पुस्तकाकार छप गया है । सचमुच अचम्भे की बात सा मालूम होता है । आरंभ करने पर बिना समाप्त किये रखने का जी नहीं चाहता । अब यह कहना पुनरुक्ति ही है कि इसके रचयिता श्री पंडित अम्बिका दत्त व्यास हैं । दाम भी इसका बहुत कम ही है चिकना कागज़ १९९ पृष्ठों की किताब, अक्षर सुन्दर बड़े बड़े और मूल्य केवल ८ आने । मिलनेका पता व्यास प्रेस—भागलपुर है ।

२ । भट्ट भास्कर—मासिकपत्र कानपुर से श्री गौरीशंकर भट्ट द्वारा संपादित वार्षिक मूल्य १।) ।

३ । भाषाभूषण—बम्बई का नया साप्ताहिक पत्र बाबू गोपाल राम द्वारा सम्पादित देश विदेश सर्वत्र दाम २) चटकीले लेखों से पूर्ण रहता है ।

४ । संस्कृत चन्द्रिका संस्कृत भाषा की मासिक पत्रिका । कार्त्तिक से १) और दूसरे वर्षकी से १॥) मिलने का पता—श्री हरिदास मित्र—आहिरी टोला नं० ८ बाबूराम घोष लेन—कलकत्ता ।

जब से काशी का "पंडित" और बांकीपुर का "विद्यार्थी" ये दोनो संस्कृत के पत्र बंद हो गये तब से इधर संस्कृत का कोई पत्र देखने में न आया । बड़े हर्ष का विषय है कि आज कल जहां तहां संस्कृत का

प्राप्ति स्वीकार।

प्रचार मध्य के कुछ दिनों की अपेक्षा अधिक देखने में आता है। यह बात भी सब कोई जानते हैं कि मूल में जो बात रहती है वह भाषान्तर में उतनी नहीं आने पाती इसी से शास्त्रों के अर्थमें हेर फेर हो जाता है इसी इसी प्रकार की बहुत सी कठिनाइयों को दूर करने के अभिप्राय से सर रमेशचन्द्र मित्र और जस्टिस गुरुदास बनर्जी से उत्साहित हो कर पंडित जयचन्द्र सिद्धान्त भूषण ने इस मासिक पत्रिका को निकालने का संकल्प किया है इसकी तीन संख्या निकल भी चुकी है अलबत्ता यह काम बहुत प्रशंसनीय हुआ। अभी इसमें उपनिषदादि का कुछ अंश, अच्छे अच्छे चुने चुने विषयों का अर्थ युनीवर्सिटी परीक्षा के प्रश्न, नीति विषयक कहानियां आदि स्फुट काम की बातें लिखने का विचार किया गया है और इन अंको में देखने में भी आया है। इसका प्रचार स्कूल के लड़कों में होना चाहिये क्यों कि संस्कृत का ज्ञान इसमें बढ़ेगा।

५। रेलवे एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट १८९२-९३ का।

ज़राअत या खेती।

इन्सान को ज़राअत से न हों फ़ायदे क्या क्या—हर फ़स्ल में हर क़िस्म की अजनास हो पैदा। सामान मईशत हो ज़राअत से मुहैया—दुनिया में मज़ारा न हो मुहताज किसी का।

हर शख़्स के दिल में हो ज़राअत का तमन्ना।

वह कौन है जिस को नहीं इस काम से रग़बत—हर पेशे की है आख़िर, जो मब्नी ज़राअत। हर शख़्स को हासिल हो ग़िज़ा इस की बदौलत—दुनिया में ज़राअत से बशर की बढ़े हुर्मत।

क़ायल है अमीर और ग़रीब इस की मनाफ़ा।

हों एक से सौ दाने ख़ुदा की है यह क़ुदरत—अजनास ज़राअत से मिले खाने में लज़्ज़त। बा लुत्फ़ ग़िज़ा हो तो मिले रूह को फ़रहत—हो तक़वियत मादा, बढ़े जिस्म को ताक़त।

तौसीफ़ ज़राअत का नहीं काम ज़बां का।

हर शख़्स से मुम्किन नहीं हो कार ज़राअत—हर एक से उठने का नहीं बार ज़राअत। आराम करे तर्क तलबगार ज़राअत—मिहनत के सही सदमें बफ़ादार ज़राअत।

जब उस को मयस्सर हो कहीं ऐश से खाना।

हर मुल्क में मशहूर है हिन्द इस की बदौलत—हर क़िस्म की पैदा हो यहां जिन्स ब कसरत। करते हैं ज़राअत में यहां लोग मशक़्क़त—भर भरते हैं ग़ल्ला से पय बक़ मुसीबत।

कुछ कद्र व गिरानी का नहीं है उन्हे खटका।

ख़ुश्की में ज़राअत हो कहीं हो जबे दरिया—दो फ़स्लें कहीं एक ही हो फ़स्ल। किसी जा पम्बा * कहीं गल्ला कहीं शलजम कहीं गन्ना—आलू हो कहीं धान कहीं नील हो पैदा।

---

* (रूई)

अब किस्सा है इस मुल्क में हर जिन्स सुड़दया।

सुथराक् इसी काम का हो पैरो जवां है,—दुनिया में ज़राअत ही से सब अमन व अमां है। वे इस के जो सच पूछो तो फिर ऐश कहां है, कुल काम हैं हल, हल से यह मशहूर जहां है।

श्याम लाल।

अपनी ही दांव सूझती है।

ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र जब भक्ति मार्ग की ओर झुके तो अपनी अपनी जाति के अनुसार यों अलापा करते हैं—

ब्राह्मण—

राम नाम लड्डू गोपाल नाम घी, कृष्ण नाम मिश्री घोर घोर पी।

क्षत्री—

राम नाम शमशेर पकड़ के, कृष्ण कटारा बांध लिया।
दया धर्म की ढाल बना के, यम का हारा जीत लिया॥

वैश्य—

साहब मेरो बानिया, बनिज करे व्योपार।
बिन डांडी बिन पालड़ा, तौले सकल जहान॥

शूद्र—

जाति पांति पूछे नहीं कोई, हर को भजे सो हर का होई।

भय।

पाठकगण! आप लोग विचार कर इस बात का भलीभांति सत्कार करें कि प्राणी मात्र क्यों सुपात्र बनने का सदैव बीड़ा उठाये रहते हैं? कारण कि उनके पीछे लोक लाज का भय ऐसा जय करने को तत्पर रहता है कि जैसे भोग में रोग का भय, सुख में दुख का भय, संग्राम में आराम का भय, मान में अपमान का भय, धर्म में अधर्म का भय, शान्ति में अशान्ति का भय, सज्जनता में दुष्टता का भय, और एडीटरों को नादिहंदों का भय, रहता है। अनुमान मे ही सिद्ध होता है कि यदि इस भय का दबाव सब पर न होता तो क्या आप लोग यह समझ सकते हैं कि सब काम नियमबद्ध रहते कदापि नहीं जब हमको किसी बात का भय है ही नहीं तब हम क्यों सत्य मार्ग पर अपना जीवन निर्वाह कर सकते हैं। हाथी क्यों अपने साथी महावत को अंकुश के बश सीधा चलता है कारण कि उसे उस छोटी सी अंकुश का भय सदैव थर्राया करता है। इसी प्रकार बड़े से बड़े बनैले पशु एक दूसरे के भय से निर्भय हो कभी एक ठौर अपने चित्तचोर को जोर देकर बैठ नहीं सकते हैं हैं। जंगली हानि कारक पशुओं को इस बात का सदैव भय रहता है कि कहीं मनुष्य आकर हमारे प्राणों के बाधक का साधक न बन बैठे इस लिये वे दिन का बड़ी २ अंधियारी कंदरों में तान बिछौना सोया करते हैं और रात्रि को निर्भय हो सिंहनाद की भांति गर्जते हुए अपनी अपनी आखेट की लपेट के निमित्त सुचित्त होकर सघन जंगल में मंगल करने के लिये भय नहीं खाते हैं। तो भी छोटी छोटी लोमड़ियां उन से भयभीत हो अपनी अपनी झाड़ियां त्याग कर भय के लिहाज़ से रात्रि के सुख को स्वप्नवत् समझ नगरी, कसबों और ग्रामों के निकट आकर अपना आश्रय लेती हैं कारण कि वे दुष्ट जंगली पशु मनुष्यों के भय से अपना लय करने के लिये कदापि वहां न आ फड़केंगे। कहने का सारांश यह है कि हर एक क्या पशु और क्या अपशु सभी भय के बशीभूत हो इस असार संसार में अपना क्वचित् निर्वाह किया करते हैं। दूर कहां जाइये इसी लोग अपने पर स्वतः न विचारें कि जब कोई काकताल के न्याय से भय ताल ठोंक कर आ विराजता है तब कैसे

बप्पारे, दइयारे, हायरे, मरेरे, चलेरे आदि दुःख प्रद शब्दों का उच्चारण कर अपना मन खनते हैं। यदि हम लोगों पर इस भय का डंका न बजता तो न मालूम हम लोग कौन कौन से अनर्थ अपने स्वार्थ अर्थ कर बैठते। और जिन लोगों में लोक लाज तथा ईश्वर का भय नहीं है वे अभय होकर जो मन में आता है सो बिना किये नहीं हिचकते हैं। ईश्वर के भय बिना मनुष्य अपने जीवन को कैसे अपरमिति कुव्यवहार में डाल कर सद्व्यवहार को एक दम तिलांजलि दे देते हैं और नास्तिक बन मद मांस खा पीकर निर्भय हो लोकलाज को रसातल पयान करा देते हैं। जो मनुष्य मदिरा पियेगा उसे कबाब चटपटे की अवश्य सुधि आवेगी और जो कबाब खाने की इच्छा करेगा उसे अवश्य काम उत्पन्न होगा और वह लोक लाज छोड़ मदअंध हो गली गली झांकता फिरेगा। अतएव मांस का खाना, मदिरा का पीना, परस्त्री गमन करना सदैव वर्जित हैं, धर्मी मनुष्य के लिये तो ये निरे बिषैले कांटे हैं जो कुतेही चुभ जाते हैं और शरीर को क्लेश पहुंचाते हैं। इन वस्तुओं के सेवन से फिर किसी का भय नहीं रहता है और तब लोग नाना प्रकार के अनर्थ करने लगते हैं। दूर कहां जाते हैं देखिये हमारे भारतवर्ष में नास्तिक लोग ईश्वर का भय न रख कर कैसे कैसे कुमार्गों में प्रवृत्त हो रहे हैं। कोई तो ईश्वर को नहीं मानते हैं और अभय हो शराब कबाब में चूर रहते हैं और ढोलक की झान और ददरिवों की तान में अपना मान सदैव बढ़ाया करते हैं। एक समय वह था कि लोग ईश्वर के भय से सदैव धार्मिक कार्यों में निमग्न रहते थे, आज वह समय आया है कि लोग ईश्वर पर चौका फेर अधर्म की ओर मुड़ गये हैं और आपस में फूट का बीज बो एक दूसरे को खून मजे के साथ लूट रहे हैं। इस भारतवर्ष में आज क्यों फूट का डंका बज रहा है? इसका कारण यह है कि लोगों में ईश्वर का भय तनिक भी नहीं रहा इस लिये वे अपनी मनमानी बातों को गढ़ गढ़ कर सातवें तबख की ओर बढ़ रहे हैं जिन्हें अपनी मान मर्यादा का तनिक भी भय नहीं है। इस लिये हम भयभीत हैं कि कहीं हमारे भारतवासी पौंजड़े के चंडूल बन हाथोंहाथ न फिरने लगें।—शुभचिन्तक।

दवा-बीरो।

सांप—यदि दाहिने अंग में काटे तो बांए कानमें यदि बांए अंग में काटे तो दाहिने कान में नसादर को पानी में घिस कर डालो और छाव कर भी लगा दो।

बर्रे—जहां काटे वहां अंग्रेज़ी दियासलाई का मसाला पानी में घिस कर लगा दो।

बिच्छू—उपरोक्त औषधि लगा कर कीयले की आग से सेंकी।

रतौंधी—रीठे को पानी में घिस कर लगावो।

हैज़ा—एक टुकड़ा कपूर को सदा अपने पास रक्खो तो हैज़े से बचे रहोगे।

हैज़ा की दवा—गांजा और अफ़ीम तीन २ माशे लेकर पीस कर दो २ माशे की गोली बनावो और इस रोग के प्रारंभ होते ही १ गोली खिलाओ यदि रोग बढ़ गया हो रोगी खा सके या उल्टी हो जाय तो चिलम में भर कर दम खिचवावो।

सांप—जहां काटे उसी जगह इमली की चांई को गो मूत्र में घिस कर लगावो और नागरमोथा ३ माशे ५ दाना मिर्च के साथ पीस कर पिलावो।

बिच्छू—जिसे डंक मारे उसे, मदार के पत्ते को आग पर सेंक कर उसका रस निकालो और उसमें ५ दाना मिर्च पीस कर गर्म गर्म नाश्ता दो और संधा निमक घी में मिलाकर घाव पर लगावो।

सेंहुआ—चमेली के तेल में नीबू का रस मिला कर शरीर में मलो, यदि थोड़ा हरताल मिला दो तो और भी उत्तम है।

यदि फोता (आड़) फूलना शुरू हो तो उसी वक़्त रसवत को गरम करके उस पर लगा दो और आग में सेंक दो शीघ्र ही छूट जायगा आज़मा देखो।

पुष्टिकर अपूर्व महौषधि—गुजराती इलायची, बंशलोचन, सालिम मिसिरी, कूमी मस्तगी, शीतलचीनी इन सभों को बराबर वज़न लेकर कपड़ छान करे २ माशे नित्य गो दुग्ध के साथ खाना चाहिये ईश्वरेच्छा से शीघ्र ही फ़ायदा होगा।

कसरत करने से, थल एवं पुराना अदद खाने से पेट बढ़ना और अत्यंत स्थूलता (मुटापन) कम हो जाता है।

दही चीनी के साथ उड़द खाने से शरीर मोटा होता है।

गरम वस्तु अधिक खाने से शीघ्रही बाल सुफेद होने लगते हैं।

नशा और तंबाकू सदा ही हानि कारक है किंतु बचपन और चढ़ती उमर में बहुत ही बुरा है इस से पुरुषार्थ नष्ट और आयु कम होती है।

बच्चों के पैरों में मोटे २ कड़े पहिनाने से उनका पुरुषार्थ कम होता है।

बचपन से जवानी में और जवानी से बुढ़ापे में स्निग्ध (घृतादि) भोजन की आवश्यकता होती है।

बाल अवस्था में पित्त की अधिकता होती है और युवावस्था में कफ की, तथा बुढ़ापे में वायु की अधिकता होती है इसी से स्निग्ध भोजन की ज़्यादा आवश्यकता होती है।

रूखे बांस के वृक्षों की वायु चयी कास (खांसी) और स्वांस में परम हित है।

बकरी का दूध भी चयी में बहुत हितकारक है।

मीठे भोजन से धातु और कफ की वृद्धि होती है और शरीर में स्थूलता पैर अधिक मीठे ही खाने से कफ का कोप (विकार) होता है और जठराग्नि मन्द होती है चरपरा खाने से पित्त बढ़ता है और चरपरा खाने से पित्त विकार तथा रक्त पित्तादि रोग होते हैं।

कड़वा कसैला खाने से वायु बढ़ती है और इनके अधिक खाने से वात व्याधियां होती हैं।

तर गरम भोजन से वायु शान्ति होती है।

मीठे पतले खान पान से पित्त शान्त होता है।

रूखे और तीक्ष्ण पदार्थों से कफ शान्त हो जाता है।

कुत्ता के काटे हुए घाव पर मदार (आक) के दूध लगाने से शीघ्र आराम होगा चाहे कैसाही विषधर कुत्ता हो।

प्राप्ति स्वीकार।

इस वर्ष हिन्दी बंगवासी ने अपने ग्राहकों को तीन ग्रन्थ जो उपहार में दिये हैं वे ये हैं (१) श्री मद्भगवद्गीता मूल संस्कृत श्लोक श्रीधर स्वामी की सम्पूर्ण टीका और सरल हिन्दी अनुवाद। (२) मार्कण्डेय चण्डी दुर्गा मूल संस्कृत श्लोक और हिन्दी अनुवाद। (३) विलायत की चिट्ठी पहले दोनों पुस्तकों का हाल तो किसी से छिपा नहीं है। हिन्दू धर्म सम्बन्धी अनुपम रत्न हैं। कागज़ भी चिकना और छापा साफ़ सभी का है। बाकी बची विलायत की चिट्ठी—यह किसकी लिखी है ग्रन्थ देखने से कुछ नहीं मालूम होता। इसकी भाषा ठीक हिन्दी बंगवासी की सरीखी है इसके पढ़ने से विलायत वासियों के सामाजिक अवस्था का बहुत कुछ ज्ञान मिलता है इसका दाम १), दुर्गा का ॥) और गीता २) लेकिन ॥) ही आना लेकर पत्राधिकारी अपने ग्राहकों को दे रहे हैं यह नियम सिर्फ़ तीन ही सप्ताह तक रहेगा।

आफ़त।

एडीटरों को अख़बार की आफ़त, गवर्नमेन्ट को रूस की आफ़त, अमीर काबुल को अफ़ग़ानिस्तान की आफ़त, गवरनर ज़नरल को इन्तज़ाम की आफ़त, पश्चिमोत्तरी राज्यों को मीचाल की आफ़त, पुलिस को इलज़ाम लगाने की आफ़त, पार्लीमेण्ट को ख़ज़ाने की आफ़त, बनियों को व्योपार की आफ़त, अख़बार वालों को ग्राहकों की आफ़त, ग़रीबों को घर चूने की आफ़त, हाकिमों को दौरा और मुकद्दमों की आफ़त, दरज़ियों को मेशीन की आफ़त, नाव वालों को दरया चढ़ाने की आफ़त, ब्राह्मणों को बिल्वपत्र चढ़ाने की आफ़त, म्युनिसिपल कमिश्नरों को मैला देखने की आफ़त, भिखमंगों को भीख माँगने की आफ़त, चोरों को उजियाली रात की आफ़त, गाड़ी घोड़ों को कच्ची सड़क की आफ़त, अंगरेज़ी प्रजा को टिकसों की आफ़त, औरतों को रोटी बनाने की आफ़त, कन्टन मेन्ट में झाड़ा पेशाब फिरने की आफ़त, उस्तादों को लड़कों के पढ़ाने की आफ़त, पण्डितों को पाठ पूजा करने की आफ़त, गंजेड़ियों को सूखी की आफ़त, चण्डूबाज़ों को बम्बू

की आफ़त, अंगरेज़ी पढ़े लिखों की नौकरी की आफ़त, लड़की को पढ़ने लिखने की आफ़त, पिंडी में नक़्शों को बाल बनाने की आफ़त, पनसारियों को पान की आफ़त, बम्बा बन्द हो जाने पर पानी की आफ़त, जबलपुर में नौसरबाज़ों की आफ़त, कलगी वालों को तुर्रेवालों की आफ़त, हिन्दुस्थान की सब आफ़त ही आफ़त ॥—(शु० चि०)

हरगंगा।

धर्म कर्म चूल्हे गयी कि हर गंगा
बाम मार्ग में आश्रम लयो कि हर गंगा
मद्य मांस चोरी से खाय कि हर गंगा
इतने पर जब नहीं अघाय कि हर गंगा
होटल में लिखवावें नाम कि हर गंगा
दें कबाब बिसकुट के दाम कि हर गंगा
कोट टीप पहिरे पतलून कि हर गंगा
घर में नहीं चनन को चून कि हर गंगा
मिस्टर कहें खुशी हो जायें कि हर गंगा
निज भाषा बोलत शरमाय कि हर गंगा
जेठन की डुबवायी नाम कि हर गंगा
जनम २ को भये बदनाम कि हर गंगा
तबला ठनक परे कहुं कान कि हर गंगा
कथा छोड़ पहुंचे तह आन कि हर गंगा
जग निन्दा को ग्रास उठाय कि हर गंगा
पर अकाज निज काज सटाय कि हर गंगा
गो माता बूचर को देय कि हर गंगा
गुप चुप तुरत रुपये लेय कि हर गंगा
कपट रूप पंडित कह लाय कि हर गंगा
ऐसहि जन परलोक नसाय कि हर गंगा

सदैव नन्द।

—एक डाक्टर ने किसी अमरिका के सौदागर की दवा की थी। ८ वर्ष में एक कौड़ी भी नहीं मिली थी। ३०००० पाउन्ड की दावी कर के डाक्टर ने जब नालिश की तो ८००० पाउन्ड की डिक्री उनको मिली।

—१३ लाख ६० हज़ार आदमी संवताली भाषा और ४६ लाख मनुष्य उड़िया भाषा बोलते हैं।

—खास बंगाले में तीन लाख बाईस हज़ार सात सै आठ सोनार और तीन लाख २५ हज़ार सात सै तेईस लोहार हैं।

—ह्वीटन नाम एक मेम साहबा के केश पौने पांच हाथ लम्बे हैं यह अलबत्ता दीर्घकेशी कहलाने लायक़ हैं।

—भाव नगर के महाराज विलायत से लौट आये।

—बम्बई के परलोक वासी जज तैलंग के स्थान पर श्री बालादेव जज बनाये जायेंगे।

—अख़बार वालों ने तो धूम मचा दी कि सर हेनरी नीरमेन बड़े लाट होकर यहां आते हैं भलाई की बहुत आशा है यहां तक कि उनका पुराना हाल भी छाप डाला पर देखो वह क्या कहते हैं बाबा इससे यह काम नहीं पार पड़ेगा—उन्हीं ने इंकार किया।

—सन १८८१ में सिर्फ़ बंगाले में १ लाख ७१ हज़ार ५४७ चौकीदार देहातों में थे। हर एक की तलब ४) इस हिसाब से ६८६१८८) हुआ लेकिन चोरीका हाल तो पहले ही का सा है। इनकी रखनेका नफ़ा क्या?

—अक्टोबर के अन्त में शिमला का दरबार ख़तम होगा। नवेम्बर में बड़े लाट बर्मा जायेंगे। डिसेम्बर में कलकत्ते पहुंचेंगे। क़रीब दसवीं जनवरी को इस देश से बिदा होंगे।

—पटुआ का भाव इस साल चढ़ेगा विलायत में अभी से शोर गुल हो रहा है। अब की पैदा कम हुआ।

—मद्रास लाट कौन्सिल से मीर हुमायूंजाह बड़े कौन्सिल के मेम्बर चुने गये। आप टीपू सुल्तान के परपोता हैं।

—पायोनियर कहता है आज कल पामीर की ख़बर नहीं मिलती। अजी! वहां रूस डेरा जमाये होगा।

—ईसाइयों में कैथलिक सम्प्रदाय के गुरू पोप को हर साल बहुत से चटी जूते नज़र में भेजे जाते हैं ये सब चटियां साधू ईसाइयों के हाथ के बने रहते हैं।

—राजराजेश्वरी महारानी विक्टोरिया जो पोशाक पहन पार्लिमेन्ट में जाती हैं वह हीरे जवाहिरात से टका रहता है कीमत जिनकी १५ लाख से कम नहीं। तब भी लोग कहते हैं विलायत में गहने का रिवाज ही नहीं है।

—यह मज़ा देखो। बाप की शादी में बेटा पुरोहित। आयर्लैन्ड के डब्लिन नगर में पादरी पुत्र ने अपने पिता की दूसरी शादी में मंत्र पढ़ा कर वर (बाप) और कन्या (माता) को आशीर्वाद दिया था।

—चीन में छोटे पैर की तारीफ़ है। चीन के मंत्री की स्त्री और लड़कियां हाल ही महारानी विक्टोरिया की भेंट की गई थीं। पैर इतना छोटा था कि उनसे खड़ा नहीं हुआ जाता था महारानी ने उनको बैठने को कहा देखो वह कैसी दयालु हैं।

भागलपुर के संवाद दाता।

भाद्र सुदी द्वादशी

भागलपुर में फुटबौलक्लब का तीन गोल है। वेस क्लब में तो ज्यादे बंगाली ही हैं क्वीन्स क्लब में हिन्दू तथा मुसल्मान दोनों जाति के लोग खेलते हैं वो तीसरा कायस्थ क्लब इसी की शाखा है अब एक दिन वेस क्लब के मेम्बरों ने कायस्थ क्लब को लिख भेजा कि वे सब आवें और बाज़ी लगा कर खेलें कायस्थ क्लब स्वीकार कर क्वीन्स क्लब से सहायता ले निर्दिष्ट समय अर्थात् १७ वीं सेप्टेम्बर रविवार के चार बजे दिन को ज़िला स्कूल के हाते में पहुंचा और वेस क्लब के साथ खेलना आरम्भ कर दिया खेलते २ संध्या हो गई अन्धेरा छा गया कि ज्यों हि बंगाली लोग बाज़ी जीतने पर थे कि फूल के बमूजिब एक बिहारी लड़के ने एक बंगाली लड़के को धक्का दिया कि बस बंगाली लोग गुल मचाने लगे शान्त होने पर एक क्रोधी स्वभाव बंगाली ने चाहा कि बलवान बिहारी कप्तान पर लाठी चलावें इतने में दोनों गोल के लोग उभड़ पड़े और मार पीट करने लगे इस बखेड़े में नौ बंगाली और इन को लाठी देने वाले एक माली ने सख़्त मार खाया।

सम्वाद दाता—डुमराँव ।

भाद्र कृष्णाष्टमी सम्वत १८५० ।

भारत वर्षीय प्राय: सबही लोग इस बात को जानते हैं कि राजधानी डुमराँव में चिरकाल से वर्ष में दो बार अर्थात् चैत्र शुक्ल नवमी और भाद्र कृष्णाष्टमी को महोत्सव निरन्तर होता है इस उत्सव में बहुत दूर दूर के रहने वाले कवि, पण्डित, गुणी, गवैया, भांड़, बहुरूपिया, नटावा, पतुरिया, साधु महात्मा, ब्राह्मण और अभ्यागत लोग (जिन में बहुतेरे बुलाये और बहुतेरे बिना बुलाये) आते हैं और यहां पर योग्यतानुसार सनमान पाते हैं । राज भवन के भीतर श्री बिहारी जी के मंदिर में ६ रोज़ तक दिन रात नाच रंग और पण्डित लोगों का शास्त्रार्थ आदि अनेक कलायं होती हैं । सातवें रोज़ श्री ठाकुर जी दूसरे ठाकुर द्वारे में (जहां से जन्म के दिन राज भवन में पधराये जाते हैं) पधारते हैं उस समय सम्पूर्ण राज वैभव ठाकुर जी के अर्दली में पधराने के लिये निकलता है यही महोत्सव महारानी साहबा की उदासी के कारण इस साल नहीं होने वाला था परन्तु श्री महारानी साहबा की उदार आज्ञा से और दिवान साहब की दूर्दर्शिता तथा बुद्धिमता से वह महोत्सव पूर्ववत मंगल पूर्वक समाप्त हुआ बल्कि इस साल एक बात अधिक हुई कि प्रत्येक षटमासी उत्सव में एक प्रति बाल्मीकि रामायण अथवा भागवत की पुस्तक सामग्री के साथ परिच्छीत्तीर्ण एक ब्राह्मण को दान दी जाती थी इस साल उसी लिये मधुबनी (दरभंगा) वासी रामनिरंजन पण्डित को दानाध्यक्ष महाशयों ने एक मास प्रथम ही से टिकाया था और निमक मिर्च में बहुत कुछ खर्च कराया था परन्तु पुस्तक एक बंगवासी महाशय को मिल गई यह समाचार पाते ही वह कोमल हृदई ब्राह्मण असीम दुखी हुआ यह खबर दीवान साहब तक पहुंची दीवान साहब ने बड़े उत्साह के साथ कहा कि ५०) रुपया के वास्ते विद्वान ब्राह्मण मेरे यहां से विमुख जायेगा ? अभी ५०) दिया जाये यह हुक्म पातेही पण्डित शिवनारायण शास्त्री जी ने पण्डितों के भरी सभा के

बीच उक्त पण्डित जी को ५०) दिया यह उदारता देख कर उक्त पण्डित जी और सम्पूर्ण पण्डित मंडली राय साहब को अनेक भांति से आशिर्वाद करते राज भवन तथा श्री मान दीवान साहब से पूर्ववत सनमान पाकर निज स्थान को सिधारे।

बच्चू सिंह मेदनीपुर।

हमारे इस प्रान्त के लोग तो बच्चू सिंह को भलीभांति जानते हैं कि डुमरांव रियासत के बनाये एक रईस थे जो डुमरांव से १० मील सीधा दक्षिण "मेदिनीपुर" नामक ग्राम में रहते थे, इस रियासत के बना देने से सब लोग उनको जानने लग गये थे वेही थोड़े दिनों से चंद शोहदों के बहकाने से उन्होंने यहां तक कमर बांधा था कि राजगद्दी का मालिक दूसरा बना दें, दीवान बदल कर दूसरा दीवान रक्खें। सम्पूर्ण राज्य का भार अपनी काबू में कर लें, यहां तक कि एक महाराज का गांव था उस पर हमला कर एक अहीर को गोली से मार डाला। सपरिवार गिरफ़्तार हुए सब को जज ने तीन बरस से सात बरस तक और हज़ार हज़ार रुपया जुरमाने का दंड दिया, इसकी अपील कलकत्ते तक उन्हीं ने की और गवाही में श्री महाराजा साहब बहादुर को तथा दीवान साहब को तलब कराया था लेकिन ये लोग गवाही से बरी किये गये और ज़िला का फैसला हाईकोर्ट तक ज्यों का त्यों रहा खर्चे तावान पड़ा—

"बिना बिचारे जो करै, पुनि पाछे पछताय।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हंसाय॥

CLEMENT'S TONIC

मरीज़ों के ख़िदमत में,

क्लेमेन्ट साहब की दवा मक़ब्बी।

एक जल्द असर करने वाला क़ाबिल एतबार इलाज है बातें नीचे लिखे हुए मरज़ों के—

पट्ठों की कमज़ोरी नुक़्सान जिस्मानी फुर्ती की कमी और हर तरह की कमज़ोरी सलबी ताक़त की कमी जिरियान और नमी और ग़रदंग वग़ैरह वग़ैरह क्लेमेन्ट साहब की मक़्बी हमेशा के लिये क़ामिल तौर पर जिस्मी फुर्ती को बहाल और बरक़रार रखती है और पट्ठों की ताक़त को ज़ियादे करती है और जवानी की पुरदिली और शबाब की पुर जोश-लगी को ताज़ा कर दिखाती है जिस्मानी और अलाय रइसां की हरकाती ताक़त को उन मर्द और औरतों के ताज़े कर देती है कि जो कमज़ोर ज़ईफ़ सुस्त और ख़स्ता और मांदा हो गये हैं क्लेमेन्ट साहब की मक़्बी एक बलशाइस इलम ही है हर तरह से इन्सान के हक़ में इस की अजीब सेहत बख़्श ताक़त ज़ाहिर होती है इसके इस्तेमाल के बाद भी और बाबत में ताकीदी शहादत उन लोगों की जो इस की इस्तेमाल में ला चुके हैं वैसे निहायत और बेशुमार हैं वह लोग बयान करते हैं कि वह हर एक मीताद की तासीर को नफ़े और फ़ायदे पहुंचाने वाली बातें हैं फ़िल हक़ीक़त यह एक ऐसी पुर तासीर मीक़्बी है कि जिस से पट्ठों को ताक़त पहुंचाती है और जो हर एक रग ओ पै में जिस्म के पट्ठों के ज़रिए से ताक़त बख़्श और ताज़ा करने वाला असर को पहुंचाती है हर हालत में ख़ाह जिस्मानी ताक़त बसबब मर्ज़ शदीद के कम की गई हो या सख़्तगी और तकलीफ़ और मेहनत सख़्त के या किसी क़िस्म के ज़रर पहुंचाने वाली नाअक़बत अन्देशी के सबब से हो ख़ाह वो घटी हुई हालत किसी

तरह की हो जब कि पट्ठों की कमज़ोरी पाई जावे या किसी किस्म की खास कमज़ोरी या हर तरह की कमज़ोरी हो जब कि सुस्ती या ज़ोफ़ या कम ताक़ती उस मज़्ज़ः का बाइस हो इन हालतों में क्लेमेन्ट साहब की सुकूब्बी ही सिर्फ़ इलाज है। जो लोग कि बदनी या क़लबी शदीद मिहनत के नतीजों के सबब तकलीफ़ पाते हैं या कि सख़्तियों में और सर्दी या गर्मी बरदाश्त करने के सबब से या कि किसी नामालूम सदमे के सबब या किसी वहमें के सबब या जो लोग दानिस्ता वो नादानिस्ता इन्तिज़ाम-ए-कुदरत को न मान कर अपने को तकलीफ़ में डाले हुए हों वह लोग क्लेमेन्ट साहब की सुकूब्बी को एक ऐसा इलाज पावेंगे जिस से यक़ीनी उन को तकलीफ़ से नजात मिलेगी। यह सुकूब्बी बहुत ही जल्द हर किस्म के ज़हूर तरक़्क़ी किसमी नातावती को दूर कर देती है और फुर्ती के घटती को उस की असली ताक़त और दुरुस्तगी तक पहुंचा देती है। जब जब कमज़ोरी आज़ार रईस को ज़ाहिर हो या कि पट्ठों की कमज़ोरी और बट जाना जिस्मी या क़लबी हरकत का नमूद हो या कि घबराहट ख़यालों का या सुस्ती एतमाद का, या चिड़ चिड़ाहट मिज़ाज का, मालिख़ौलिया, बुज़दिली, घुटनों की या पीठ की कमज़ोरी, दिल की धड़क, सिर का दर्द कमर का दर्द, कड़ा रखता हो, पीठ का दर्द, दांत का दर्द, जो माबूद वक़्त पर हुआ करे आज़ा शिकमी, जोड़ का दर्द, बेख़ाबी दर्द सरी, सुबह के वक़्त सुस्ती ख़यालात और जोड़ी का दर्द मोज़िश मसाना, वो गुर्दों को मोज़िश, गदला पेशाब जो पीच की तरह हुआ करता है, ज़रर पहुंचाने वाला और नामालूम नुक़्सान जिस्म का या कि दूसरे अलामात जिस के नतीजे हैं दिली या जिस्मी ताक़त को नुक़्सान ज़ाहिर हो मर्द और औरतों की कामयाबी के मुक़ाबिले में एक रोक पैदा करे और उन को ज़िन्दगानी की बाक़ियात के और ज़रूरी कामों के अंजाम देने में क़ासिल बनावे तब तब ऐसी हालतों में क्लेमेन्ट साहब की सुकूब्बी सिर्फ़ एक ही पुर तासीर इलाज है और आज तक होती आई है। नौजवान लोग जो ज़िन्दगानी के जौलानगाह में दाख़िल हुआ चाहते हैं और अपनी क़ाबलितियों पर क़ब्ज़ा भी इख़्तियार अच्छी तरह रखते हैं और कामयाबी के हद तक अपनी मुरादों के ले जाने पर क़ादिर भी क़ायल हैं और वे जौलूल अज़्मी

और क़ाबिल सहसीन और फ़रह दिलाने वाले नुस्ख़ों के नतीजों को हासिल करने चाहते हैं क्लेमेन्ट साहब की मुक़ब्बी उन के वास्ते पहली सीढ़ी उन के मुराद तक पहुंचने की है।

अधेड़ लोग जिनकी ढिलती हुई फुर्तियां बतलाती हैं वक़्त से आगे जवानी की तनज़ुली का आना और जो मालूम करते हैं कि रफ़्त रफ़्त वे एक बेर इस दुश्मन के हवाले में जाने को हैं और जिनकी ज़िन्दगी की सनअतों में बड़ी बड़ी हुंडियां दाख़िल की जाती हैं ताकि बचपन के कर्ज़ सब अदा किये जावें या कि जिनके जख़ीरे फुर्ती के मर्ज़ों के बायस कम हो गये हैं या सुस्ती और जांफ़िशानी और ज़िन्दगानी की मिहनत के सबब घट गये हों या कि किसी और और तरह से अपनी ताक़त को ज़ाया किये हों उनके हक़ में क्लेमेन्ट साहब की मुक़ब्बी एक दोस्त है जो मुसीबत के वक़्त पर दस्तगीरी करेगा और एक पुरज़ोर मदद है और एक दुरुस्त करने वाला बुरी हालतों का है जो कभी नहीं चूकेगा और वे इससे एक नई ज़िन्दगी हासिल करेंगे और बदनी ताक़त भी हासिल करेंगे और सब तरह की हालत औ फुर्ती ताज़ा कामिल तौर पर हो जावेगी।

बूढ़े लोग इस मुक़ब्बी के इस्तेमाल से इनक़िज़ाज़ की पेशक़दमी को रोकते हैं और ताक़त की तनज़ुली से बच रहते हैं और अपने शबाब को दोबारा हासिल करते हैं ताक़त बदनी पाते रहते हैं और दोबारा अपनी क़ाबलियतों पर क़ाबिज़ औ क़ादिर हो जाते हैं और अपनी फुर्ती औ क़ाबिलियत को हमेश बहाल औ बरक़रार रखते हैं।

नौजवान औरतें क्लेमेन्ट साहब की मुक़ब्बी को एक निहायत ही पुरतासीर इलाज पावेंगी जो सहलुल वसूल है। इससे हर क़िस्म की कमज़ोरी जो ख़ास कर औरतों को छुआ करती है इलाज पज़ीर होती है और दफ़ा हो जाती है इसके मुक़ाबिले में और इलाज औरतों की कमज़ोरी दूर करने का नहीं है। और जड़फुल क़वा नाज़ुक और नहीफ़ बदन छोटी लड़कियों के हक़ में यह बतौर आज़ा के काम करती है और अक़्लमंदी पुरज़ोर जनाना तबियत पैदा करती है यह पुरतासीर इलाज इन ख़ूबियों को पैदा करती है जिसके ज़रिये से उरूज पहुंचानेवाले तग़ैयुरात को पहले से रोका जाता है और पुरज़ोर ख़ासियात नमूदार

को दबाया जा सकता है और फुर्ती की हालत के नुक़्सान का जब्र कर देता है और आज़ाय रईस के हरकात की बद इन्तज़ामी को दुरुस्त किया जाता है और एतदाल पर लाया जा सकता है खलत पहुंचे हुए दीमाग़ को और मालिख़ोलिया और खयालात फ़ासिद के बहशत को दूर किया जाता है और खुशनुमा मज़हर खुदा की हमारी खिलक़त के खलाक़त और तबाही से बचा लेता है इसके इस्तेमाल से बराबरी दरमियान नुक़्सान और ज़ख़्म नुक़्सान के बरकरार रक्खा गया है, नुक़्सान बेजा रोका गया है ज़रर पहुंचा हुआ को दुरुस्त किया गया है कमज़ोर किया हुआ और सिकुड़ा हुआ रगों को ताक़त असली और दुरुस्तगी दी गई है बेवक़ूफ़ी और नादानी और ग़लती के नतीजे दुरुस्त किये गये हैं और ग़ायत दर्जे के तबीब और इलाज देने वाले मरीज़ अपनी तकलीफ़ों से सुरुखि़यी पाते हैं और बादत पकड़े हैं मरदाना सिफ़तों से, और हिम्मत में और फुर्ती और बदनी ताक़त में। क्लेमेन्ट साहब की सुकन्बी से जितने लोग चंगे हुए हैं उनका एक दफ़्तर मौजूद है और जो जो बेहतरियां इस दवा में ज़ाहिर की है वैसी खूबियां हज़रत आदम के ज़माने से किसी और दवा ने आज तक ज़ाहिर नहीं की। मांग भेजने में हम लोग तफ़सील ज़ाहिर और सनदें वग़ैर किसी खर्च के हर कहीं भेज सकते हैं मरीज़ों को चाहिये कि बहुत खबरदारी से इस दवा को खरीदें क्यों कि हर जगह पर नक़ली दवा बिक रही है और उनको बड़ी खबरदारी करनी चाहिये जिसमें उन्हें सिर्फ क्लेमेन्ट साहब की सुकन्बी मिले। और यह भी ख्याल रहे कि अक्सर नक़ली या जाली दवा भी अलकहल के निस्बत ज़ियादा ज़रर पहुंचाती है।

क्लेमेन्ट साहब की सुकन्बी तलब करो हर एक दवा फ़रोश उसको बेचता है।

F. M. Clements

यह दस्तख़त—हर एक दवा के बोतल पर है।

न्यूटाइन सिडनी
बाल्सेमिया } मरीज़ों के ख़िदमत में।

बिहार-बन्धु का नियम।

बिहार-बन्धु सम्बन्धी कायदे।

१। बांकीपुर में बिहार-बन्धु की पेशगी सालाना क़ीमत १॥=) एक रुपया दस आना मुफ़स्सिलमें भी एक रुपया दस आना, पर डाक महसूलका ।=) छ आना अलग लगता है। इससे मुफ़स्सिलमें कुल २) दो रुपया हुआ। छ महीनेका सवा रुपया और तीन महीने का बारह आना राजा नहीं राजाओंसे कुछ नियम नहीं इस की सहायतार्थ जो देंगे स्वीकार होगा।

२। बिहार-बन्धु की प्रति खंड का नक़द दाम अभी नव पैसा रक्खा गया है।

पेशगी क़ीमत।

३। बिना पेशगी दाम पाये किसी को नहीं भेजा जाता। गाहकों को मनी-ओर्डर द्वारा रुपया भेजना चाहिये। उस में नाम ठिकाना, डाकघर, ज़िला साफ़ साफ़ लिखना चाहिये।

४। जिन को मनीओर्डर भेजने में अधिक सुबीता न होतो उनसे डाकघर के मार्फ़त हम रुपये वसूल कर लेंगे। पर इस में दो आना ग्राहकों को अधिक देना होगा। मतलब यह है कि यदि ग्राहक लोग मनीओर्डर के ज़रिये रुपये भेज दें तो हम को सुबीता है। डाक-घर के मार्फ़त वसूल करने में हम लोगों को बहुत झंझट उठाना पड़ता है और भूल चूक होने का भी भय है।

चार बिहार-बन्धुमें एक बेशी।

५। यदि कोई इकट्ठा एक नाम से चार बिहार-बन्धु लें तो उन को एक बिहार-बन्धु बतौर नज़र के मिलेगा।

लड़कों के लिये।

६। स्कूल में पढ़ने वाले लड़के अगर छापाख़ाना मे आकर ले जायं तो उन को फुट नम्बर का नक़द सात पैसा और पेशगी दे जायें तो एक रुपया चार आना साल भर का देना होगा।

७। दूसरे शहर के लड़के यदि अपने पंडित वा मास्टर से चीठी लिखवा कर पेशगी रुपया भेजेंगे तो उन को भी किफ़ायत में मिलेगा ही पर छ आना महसूल का अलग लगेगा यानी एक रुपया दस आना देने से मिलेगा।

विज्ञापन का नियम।

८। मासिक पत्र के साथ का विज्ञापन बहुत दिनों तक रहता है। इस में विज्ञापन छपवाने वालों को वि-शेष लाभ की संभावना है।

पहलीबार	प्रति पंक्ति	॥=)
दो महीने तक का	,,	॥)
तीन महीने तक का	,,	॥)
बार महीने तक का	,,	।=)
पांच महीने तक का	,,	।=)
छ महीने तक	,,	।)

एक बरस या इस से बेशी दिनों तक एक पेज इश्तिहार का ७) महीना

इश्तिहार यदि आधा पेज से कम होगा और बरस दिन या ज्यादे दिनों तक छपेगा तो ।) प्रति पंक्ति लिया जावेगा।

हर हालतमें इश्तिहार की क़ीमत पेशगी भेजना चाहिये पर बरस दिन या बेशी दिनों तक इश्तिहार छपवाने वालों से ४ महीने तक का पेशगी दाम मिलने से भी छापा जावेगा।

९। विज्ञापनमें ब्लौक या तस्वीर भी पड़ सकती है। मनेजर

बिहार-बन्धु छापाख़ाना बांकीपुर।

Health Wealth and rPosperity.
Established 1880.

जी० बी० नायक और कंपनी

बिजली की अंगूठियां, पुतलियां, कडे, कलम, गलपट्टे,

१०००००

हरएक चीज पर

जी०बी०एन० (G.B.N.)

से अधिक बिकी,
खोटा माल लेना नहीं



देख लीजिये,

शुद्धरक्त मनुष्य का जीवनाधार तथा विद्युल्लता रक्त का जीवनाधार है अत्यन्त सस्त इस छोटीसी बटरी से शरीर का खून दूषित होने के कारण उत्पन्न होनेवाले अनेक रोगों को आराम होता है कमजोरी, सन्धिवात, शिरोगत वायु अर्द्धवायु पेट में वायु पीड़ा होना, शरीर में चमक और तीव्र पीड़ा, हड्डियों में पीड़ा, नपुंसकता कमर दुखना, फोड़ा, वरम पैदा होना, जो सूजना, मृगी, हाथ पैर गलना, स्त्रियों का प्रसूत इत्यादि कलेजे की पीड़ा, सब प्रकार के बुखार अर्द्ध कपाली माथे की पीड़ी कबजियत कांती की जलन गले का वरम सब प्रकार की बवासीर पेट की कमजोरी निन्द्रनाश मूत्राशय के रोग दमा खांसी गजकर्ण त्वचा विकार प्लीह और दूसरे रोग इस बैटरी के धारण करने से आराम हो जाते है सो जगत प्रसिद्ध है बिजली के गलपट्टे छोटे २ बालकों के दांतसुगम रीति से निकलने का उपाय बिजली के कलम जिन की धारण शक्ति घट गई हो उन की या जिन का हाथ लिखने में कांपता हो उन की इस कलम का और अंगूठी का गुण देखना उचित है अवश्य लाभ उठाइये।

बिजली के माल का भाव।

पीतल की अंगूठी	१॥)	पीतल की पुतली	१)
चांदी की "	२)	चांदी की "	२)
सोने की "	२०)	सोने की "	२२)
धातु की कलम	१॥)	हाथ के दंड का कड़ा	१॥)
गलपट्टा	१॥)	कैमीकल अंगूठी	२)

एक साथ १२ नग लेने वालों को एक नग ज्यादा मिलेगा नकद दाम आने पर वा वेल्यु-पेबल पार्सल में मंगाने से माल भेजा जायगा। उधार नहीं नकद व थोक माल खरीदने वालों से पार्सल खर्च न ली जायगी सब वस्तु पर (G. B. N.) ये अक्षर रहा करते हैं अंगूठी या कड़े के लिये मंगाने के साथकी अंगूठी या दंड का नाप जरूर भेजना चाहिये याने अंगुल या दंड का गोलाकार अथवा बारीक सूत की अंगूठी अवश्य भेजना चाहिये, डाक महसूल १ से ८ तक ।) अलग देना पड़ेगा सब प्रकार की चिट्ठी पत्री नीचे लिखे पते से आना चाहिये। हमारा माल फक्त हमारी ही दूकान पर मिलेगा। मंगानेवाले अपना नाम अंगरेजी या हिन्दी में साफ चाकूखाना और जिला वगैरह साफ लिखे।

जी० बी० नायक एन्ड कम्पनी,
भायखला, बम्बई।

REGISTERED NO 22

THE BEHAR-BANDHU

बिहार-बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

OCTOBER 1893 VOL. XXII—NO 10

मासिक पत्र।

अक्टोबर १८९३। बाईसवां भाग—नम्बर १०

१ उन्नति है वा अवनति।
२ स्पीच।
३ भाग्यं फलति सर्वदा।
४ काशीवासाष्टकम्।
५ शिशु मन रंजन।
६ जीव जन्तु।



बांकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाखाना,

१८९३।

यह उन्नति है वा अवनति ?

आज घर में हाहाकार मच रहा है, प्रजा अन्न के कष्ट से भूखों मर रही है, जिसे देखो विषाद वदनही पाओगे। किसी के मुख पर हंसी नहीं है तब क्या इसी का नाम उन्नति है ? बाहर जैसा दिखाई पड़ता था अब भी ज्यों का त्यों दिखाई पड़ता है, किन्तु जिस भाव के विकाश से भारतवासियों का गौरव था उस का आज भावान्तर हो गया है। जिस शक्ति की वृद्धि से मनुष्य का मनुष्यत्व बढ़ता है आज समग्र भारत सन्तान उस शक्ति से विहीन है। केवल स्वार्थही की ओर सब की दृष्टि है, केवल स्वार्थ ही के लिये सबों ने जातीय स्नेह और ममता को छोड़ दिया है। भारत सन्तान आज मरकत को त्याग करके काच संग्रह करने की अनुरागी हो रही है। भले बुरे का विचार न करके जिधर मन में आता है उसी मार्ग का अनुसरण करती जाती है पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव प्रति दिवस बढ़ता जाता है माता पिता के साथ अब भारत वासियों का वह सद्भाव नहीं रहा आहार व्यवहार की सब रीतें बदलकर कुछ से कुछ हो गई हैं, जिस देश वासियों का परिवार पालन मुख्य धर्म था, जो अतिथि विमुख जाने पर अनिष्ट की आशंका करते थे आज उसी देश के सभी आत्माभिमानी होते जाते हैं क्या यह उन्नति है ?

यद्यपि पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से हम लोग दीक्षित और होते जाते हैं और ज्ञानोन्नति करते जाते हैं पर जिस प्रकार से हमारे पूर्व पुरुष काल व्यतीत करके समाज में सभ्य मान्य समझे गये थे, और विज्ञान में उन्हों ने उन्नति लाभ की थी उस का अणुमात्र भी भाव दिखाई नहीं पड़ता। वर्तमान में बहुतेरे भारत कुलांगार ऐसे भी हैं जो अपनी जन्म दायिनी गर्भ धारिणी माता को पिता की स्त्री कहकर पुकारते हैं और इसी हेतु उपेक्षा भी करते जाते हैं।

दरिद्र होकर भी प्रति दिवस विलास के दास होते जाते हैं, हम लोग जितना आधुनिक उन्नति सोपान पर चढ़ते हैं उतनी ही ऐहिक भोग

विलासों की दुर्भावना बढ़ती जाती है। हमारे पूर्वज एक सामान्य उपाय के सहारे से दश मनुष्यों का भरण पोषण करने में समर्थ थे किन्तु हम शिक्षिताभिमानी उन की अपेक्षा प्रचुर धन उपार्जन करके भी दश जनों का पालन करना तो दूर रहा किन्तु अपना भी पेट सुख पूर्वक नहीं भर सकते और न अपनी प्रतिदिनोपयोगी वस्तुओं की और आवश्यकता को दूर कर सकते हैं। तो भी हमारी वेशभूषा और भोग विलासोपयोगी पदार्थों की आवश्यकता अभी तक चरम सीमा को नहीं पहुंची।

अंगरेज़ सौदागर विलायत से अप्रयोजनीय और सुखकरसी दीखने वाली नई २ चीज़ें हम लोगों के विलास के लिये लाते जाते हैं और हम ग्लेश संचितद्रव्य इङ्गलैण्ड को ले जा रहे हैं जिन सब वस्तुओं की कोई आवश्यकता नहीं है और न ज[illegible] का आमाच्छादन से कोई सम्बन्ध है, तो भी न मालूम कि किस मोहनी शक्ति के प्रभाव से हम उन्हें अपना असंख्य धन व्यय करके भी खरीदते जाते हैं, परन्तु यह अनुमान कर सकते हैं कि अरुचि भेद ही हमारे अनिष्ट का मूल है जो हो यह सब संसार की बातें थीं इन्हें जाने दीजिये किन्तु आज कल हम लोगों की एक इच्छा और भी बलवती होती जाती है, वह यही है कि चाहे जितनाही रुपया क्यों न फूंक दिया जाये परन्तु समाज में मान रक्षा अवश्य करनी चाहिये। परन्तु सच पूछिये तो हमें इस बात से कुछ भी अभिज्ञता प्राप्त नहीं हुई, कि मान किस से रहता है बस इसी लिये हम अपना सर्वस्व स्वाहा कर रहे हैं और अनेक बार अविमृष्य कारिता के कारण हमें पछताना भी पड़ता है पर हम इन सब कार्यों को यदि परिणाम पर दृष्टि रखकर करते तो कदापि असम्भव नहीं था कि अब तक हमें इससे अव्याहति न मिलती, परन्तु यह भी क्यों होता जब कि बाह्य पदार्थों को देखने के लिये हमें चश्मों का सहारा लेना पड़ता है तब भीतर की दृष्टि का कहनाही क्या है ?

हमारा समाज इन दिनों जिस अवनति के स्रोत में बह रहा है, जिस पाश्चात्य सभ्यता के वशीभूत होकर समस्त भारत वर्तमान जर्जरित हो गई है, उस विषय-व्याधि से इन लोगों की मुक्ति न होगी, यह अनुमान करना भी अनुचित नहीं हो सकता, क्यों कि एक तो हमारा समाज

बन्धन ही शिथिल हो गया है, दूसरे जातीय प्रेम में हमारी शक्ति हो गई तीसरे शिक्षाभिमानी अंगरेज़ों का दोर्दंड प्रताप हमें उठने ही नहीं देता तब ऐसी अवस्था में भारत सन्तान कितने दिन तक अपनी पुरानी लीकों को पीट पीट कर और धर्म के डंके बजाकर मर्यादा में स्थिर रह सकती है, अंगरेज़ी राज्य की शिक्षा के कारण विलायत जात द्रव्यों में हमारी स्टडाही नहीं बढ़ती जाती किन्तु उन के भरोसे हम अपना सर्वस्व छाड़ बैठे हैं। यदि विलायत से दिया सलाई की आमदनी न हो तो दीपक जलाना कठिन पड़ जाता है, गर्मी और ज़ाड़ों के कपड़े यदि विदेश से न आवें तो नंगा रहना पड़े। पिलम और मिक्सचर यदि अमेरिका और इंग्लैंड के डाक्टरों के बनाये हुए न हों तो बीमारी को आराम नहीं पहुंचे, ऐसी अवस्था में हमें वह कष्ट भोगना पड़े जो कि धनिक को पथका भिखारी होने पर भोगना पड़ता है, क्यों कि अपने देश जात द्रव्यों को तो हम घृणाकर के छोड़ ही बैठे और अंत को फिर उन्हीं का सहारा लेना पड़ा।

हम पूर्व ही लिख चुके हैं कि हम में अब स्वजाति प्रेम नहीं रहा, इसी से इतनी शोचनीय दशा हो रही है, नहीं तो देशीय कारीगर उत्साह हीन होकर और अपना अपना व्यापार छोड़ कर क्यों दूसरी २ वृत्तियों का अवलम्बन करते विदेशीय पदार्थों में जितनी हमारी अभिलाषा बढ़ेगी, उतनाही समझना चाहिये कि हम लोग उन्नति के मूल में कुठाराघात करते चले जावेंगे ! हमारी कल्पना भी उन बातों तक नहीं पहुंचती जिन के होने से देश का धन देश में रहे और भारतवासी भीतर ही भीतर निर्धन न हो जायें हमारे पूर्वज कदापि उन पदार्थों के लिये समय नष्ट नहीं करते थे जिन के न होने पर भी संसार का सब कार्य्य उत्तमता पूर्वक चल सक्ता है नहीं तो उन्हें भी पद पद में हमारी भांति विषादवदन होना पड़ता। वह अहर्निश इसी चिन्ता में लगे रहते, कि आज बूट टूटा कल कोट फटा परसों पतलून की सिलाई खुलगई पहलेदिन मखमली टोपी नशे के कारण कीचड़ में गिर पड़ी, इन ही का प्रबन्ध करते जीवन पूरा हो ज

न्याय और सांख्य विचारने का क्षण भर भी इस राक्षसी निरर्थक वासना से विश्राम नहीं मिलता।

यद्यपि हमारे ऋषिगण भी उन्नति के लिये सदैव सचेष्ट रहते थे और उन्नति की प्राप्ति में कदापि सन्तुष्ट न रहते थे किन्तु उन की वह चेष्टा वाह्याडम्बर से परिपूर्ण न थी वह बहुत करके थोड़ा कहते थे अपनी उन्नति के साथ दूसरों की उन्नति के लिये कटिबद्ध होते थे क्यों कि जब तक अपनी उन्नति करके न देखलेगा तो उसे यह किस प्रकार विदित हो सकता है कि उन्नति किस प्रकार होती है पर इन की कुछ विलक्षणता को लिये हुए है कि घर में भूंजी भांग नहीं, दो चार फ़ज़ूल खर्च के कारण कर्ज़ों का देना हो गया है तो भी उन्नति के पीछे डंडा लिये फिरते हैं उन से हम केवल यही पूछते हैं कि उपरोक्त सब बातों का नाम उन्नति है वा अवनति ?

पहला लेक्चर।

गवांर लोग तो आंख की पीड़ा को देवी की खीझ या किसी पीर शहीद की नाराज़गी से जानते हैं, परंतु बहुधा श्वेत वस्त्र धारी विद्वान पुरुषों को भी देखने में आया है कि आंखों की पीड़ा चाहे जितनी बढ़ जाये परंतु उसका यथार्थ इलाज नहीं कराते, कोई घेड़ा लगाता है, कोई किसी बाबाजी की पोटली या सलाई लगाता है, कोई कहता है फ़लानी बुढ़िया आंखों की दवा अच्छी जानती है इस लिये पूर्व विद्वानो ने आंखों की रक्षा के अनेक यत्न बनाये।

(१) जब तक भले प्रकार यह निश्चय न हो जाये कि पीड़ा खाटी, शीत, उष्ण, इन तीनों में से किस प्रकार की है, विद्वान पुरुष भी हाथ न डाले।

(२) आवश्यकता पड़ने पर कोमल और थोड़ी औषधि लगावे और जल्दी भूल कर भी नहीं करे।

(३) पीड़ित आंख में ऊपर से दवा लगाना ठीक है, सलाई से आंख में कोई दवा न डाले।

(४) दूध वा मिश्री के पानी में आंखों की औषधि पीसना लाभ कारी है।

(५) पलकों में पीड़ा हो तो औषधि लगाकर सीधा सो जाने से आराम होता है।

नेत्रों की रक्षा के इतने उपाय करने चाहिये।

[१] निर्मल और मिठे जल में नहाना।

[२] शुद्ध रक्त पैदा करने का यत्न करना।

[३] कोमल और मिष्ट निर्विकार भोजन।

[४] स्वरूपवान वस्तु को देखना।

[५] कभी कभी अबीफल आदि माजून मुनासिबका सेवन करना।

अब हम विद्यार्थीयों को भी कुछ लाभ कारी उपदेश दिया चाहते हैं।

[१] मेरे मित्र! थोड़े उजाले में मत पढ़ना।

[२] ऐसे उजाले में पढ़ो जो एक तरफ से हो। आगे से हो चाहे पीछे से।

[३] निर्बलता, पीड़ा और खेद के समय मत पढ़ो।

[४] फ़स्द और जुल्लाब के समय भी पढ़ना हानिकर है।

[५] बीमारी के पीछे भी जब तक शरीर में निर्बलता बनी रहे पढ़ना भला नहीं।

[६] पड़े पड़े पढ़ना नेत्र का शत्रुवत है।

[७] लगातार बराबर पढ़ना और मध्य में चुप न होना भी नेत्रों को भला नहीं।

[८] सम्पूर्ण मादिक वस्तु अफ़ीम, चरस, गांजा, मदक, भंग, पोस्त तम्बाकू न खाओ, न पीओ और न किसी कार्य्य में लाओ जो तुम को आंख प्यारी है।

[९] प्रातः और सन्ध्या दोनो काल खुले मैदान (जंगल) की वायु लिया करो।

[१०] अधिक स्त्री सहवास से नेत्रों की हानि है।

[११] अधिक भूखा रहना भी बुरा है।

[१२] शरीर और बुद्धि की खाकी मत छोड़ो जो जिसका काम है उससे अवश्य लो।

[१३] प्रातः समय उठ कर थोड़ा बहुत भोजन किये बिना कुछ भी मत पढ़ो।

[१४] शीत काल में पांव गरम रक्खो।

[१५] चलती रेल बग्गी पालकी गाड़ी आदि में भी पढ़ना नहीं चाहिये, छोटी सी आंखों के बड़े बड़े यत्न करने विद्वानों ने बतलाये हैं यदि सब विषय एक ही स्थान पर लिखा जाये तो एक बड़ा भारी ग्रंथ बन जावे।

जब इस मनुष्य की अवस्था पूरी पैंतालीस (४५) वर्ष की हो जाती है तो उसको निकट रक्खी वस्तु के देखने में बड़ा कष्ट होता है परन्तु दूर की वस्तु भले प्रकार दिखलाई देती हैं, सो यह भी एक रोग

ही है, अंगरेज़ी में इसको लौंग साइट कहते हैं, जब आठ इंच के अंतर पर रक्खी वस्तु स्पष्ट दिखलाई नहीं देवे तो यह रोग समझ लेना चाहिये, तुमने बहुधा वृद्ध अवस्था वाले पुरुषों को देखा होगा कि जब कोई वस्तु वे ध्यान से देखें तो हाथ बढ़ा कर दूर पर रख कर देखते हैं, लौंग साइट वालों को कुछ पढ़ना हो तो काग़ज़ को दूर करके पढ़ तो लेते हैं परन्तु उनका पढ़ना भला मालूम नहीं होता, तुच्छ वस्तु को दूर रख कर देखेंगे तो वह यथार्थ दृष्ट ही नहीं पड़ेगी। अन्य मनुष्य कहेंगे लो साहब बुड्ढे हो गये यह सुन कर कुछ लज्जा उत्पन्न होगी परन्तु बहुधा तो इसका ख़याल नहीं करते। कोई कहता है कि लाओ अंजन रोज़ लगाया करें, कोई कहता है आंख पर नज़ला गिरा अक्षी फल खांये, परन्तु वैद्य, हकीम, डाक्टर, कहते हैं, यह रोग अंजन या अक्षी फल से अच्छा न होगा, हां चश्मा लगाना लाभ कारी होगा इससे चश्मा लगाना भी नेत्र रक्षा समझनी चाहिये।

अब हम चश्मे के गुण दोष वर्णन करते हैं, जों जों अवस्था बढ़ती जाती है उतनी ही चश्मा लगाने की आवश्यकता होती जायेगी, इसलिये पांचवें वर्ष चश्मा बदलना पड़ता है, बहुधा चालीस वर्ष की अवस्था में चश्मा की आवश्यकता हो जाती है, उस समय मन माना चश्मा बाज़ार से ख़रीद कर लगा लेना बहुत ही बुरा है, यह भूल कर नहीं करना चाहिये।

बहुधा नवीन विद्यार्थी और उन की देखा देखी अन्य लोग बिना आवश्यकता भी चश्मा लगाने लगते हैं, यह बहुत बड़ी भूल है, आवश्यकता के समय भी चश्मा किसी ऐसे वैद्यराज की सम्मति से ख़रीदो जो चक्षु रोग का पूरा पूरा जानकार हो।

कर्माधीन कोई ऐसा जानता विद्वान न मिले तो इतना तो तुम भी विचार कर चश्मा ख़रीद किया करो कि जो आठ इंच के दूर की वस्तु को ठीक ठीक दिखलावे, वह चश्मा ठीक है। क्यों कि चक्षु की यथार्थ शक्ति आठ ही इंच देखने की है, और जो चौदह इंच के अंतर तक दिखलावे वह भी उत्तम समझनी चाहिये, एक और बात भी तुम को बतला दी जाती है कि लौंग साइट के अतिरिक्त (जिसका

वर्णन ऊपर किया गया है) और किसी प्रकार के चश्मे की आवश्यकता हो तो खयाल रखना चाहिये कि जो कम ज्यादा नहीं पर ठीक ठीक दिखलावे वही खरीद करना उचित है। यदि प्रथम ही से अधिक दिखलाने वाला चश्मा लगाने का अभ्यास करोगे तो वृद्ध अवस्था में तुम को पश्चात्ताप करना पड़ेगा, इस लिये चश्मे पर टुकड़ा कागज़ का लगा हुआ होता है उस पर नम्बर लिखे रहते हैं, सो तुम प्रथम ही सब से बड़ा नम्बर २० या २२ की चढ़े लगाओ, कुछ वर्ष व्यतीत होने पर यह चश्मा भी व्यर्थ हो जावेगा जब इससे भले प्रकार दिखलाई नहीं देवे उससे एक या दो नम्बर कम का दूसरा खरीद लो और जब जब इस प्रकार बदलने की आवश्यकता हो बदलते रहो, यदि कोई मनुष्य प्रथम ही से पन्द्रह (१५) नम्बर का चश्मा लगाते हैं तो थोड़े ही काल में आंखें खो बैठते हैं, और जो चश्मा लगाना नहीं जानते उनको भी हम समझा देते हैं कि इसके लगाने की रीति भी याद रखनी चाहिये, भावार्थ यह है कि अत्यंत तुच्छ वस्तु के देखने अथवा अंधेरे में पढ़ने का समागम हो जाये तब ही चश्मा लगाना ठीक है, यह नहीं चाहिये कि हर काम में लाओ मेरी पालकी, जो मनुष्य बिना चश्मे के देख सकते हैं, और तब भी चश्मा लगाते हैं, तो वे बिना चश्मे बिल्कुल अन्धे हो जाते हैं, चश्मे की कमानी को चतुराई से खोलना और बन्द करना चाहिये, अधिक वा झटके से खोलने में कमानी ढीली हो जाती है बहुधा टूट भी जाती हैं। बहुधा लोगों को आदत पड़ जाती है कि बार बार मोटे कपड़े से चश्मा साफ़ करते हैं, और ऐसा करने से चश्मे की आब (चमक) जाती रहती है, और यह आब ही का खेल है जो जुदे जुदे नम्बर हो जाते हैं, मल मल कर खराब करना न चाहिये। यदि चमक कम हो जाये तो थोड़ासा सीडा या साफ़ की हुई खड़िया पानी में मिला कर लगा दो, फिर धुनी हुई रूई से धीरे धीरे साफ़ करलो। यह उपरोक्त बार्ता एक बहुत बड़े विद्वान की बतलाई हुई हैं जिसने अनेक बार परीक्षा करली है, उनका बचन है कि मल मल कर हमने अपने चश्मे का बिगाड़ दिया। ठीक लोग साइट के विमुख जो

रोग है उसका नाम शौर्ट साइट है, सो इस रोग का रोगी निकट रक्खी हुई वस्तु ही देख सकता है दूर की नहीं, और इसका इलाज यही है कि खोखला चश्मा लगावे केवल इतना कह देना ही बस नहीं है कि खोखला चश्मा लगाओ, क्यों कि कोई बीस इंच के अंतर की वस्तु देख सकता है, कोई दस इंच की इत्यादि। बस जान लेना चाहिये कि बीस इंच वाले के लिये बीस और दस इंच वाले के लिये दस, छ इंच वाले के लिये छ इंच के अंतर का दिखलाने वाला चश्मा चाहिये। यह रोग कभी एक आंख में कम और एक में अधिक हो जाता है, ऐसे अवसर पर आंख आंख के लिये जुदे ताल का चश्मा लगाना चाहिये, नेत्र में यदि सूजन या दर्द हो तो चश्मा नहीं लगाना चाहिये, बहुधा रोगों का जुदा जुदा चश्मा वैद्य लोगों ने नियत किया है, बस आवश्यकता के समय विद्वान पुरुष की सम्मति लेवें। यह आंख एक उत्तम प्रतिष्ठित अंग है, इसके रोग को छोटा समझना हानि कारक है।

दूसरा लेक्चर।

भक्ष्यपदार्थों के भोजन करने से शरीर का पालन पोषण और बल पराक्रम की वृद्धि होती है। इस शरीर का जीर्ण मल जो अपना गुण दिखला कर व्यर्थ हो चुका है शरीर से भिन्न हो कर उसके स्थान पर नवीन भोजन जाकर इकट्ठा हो जाता है। जब यह सिद्ध हुआ कि हमारे शरीर के सम्पूर्ण भागों में नवीन भोजनांश को स्थान मिल कर पहिला जीर्ण भाग जुदा हो जाता है तो हमें उसी ही वस्तु को भोजन करना चाहिये जिस के गुण भी हमारे शरीर स्वभावानुकूल ही हों। जब तक हम अपने शरीर के गुण दोष से भेदी अर्थात् जानकार न होंगे उस के लिये उत्तम और सानुकूल भोजन तलाश नहीं कर सकेंगे। जानना चाहिये कि भोजन एक आवश्यकीय और गुणकारी वस्तु है, हर एक शब्द से (जो शरीर से बंधी जिह्वा से हम बोलते हैं) और हर एक कार्य्य से जो हम कुछ न कुछ करते ही रहते हैं, हमारे शरीर का कुछ कुछ भाग भी इस में खर्च होता रहता है। यह स्वांस लेने वा दिल धड़कने से जाना

जाता है, बस जो भाग इस प्रकार कम होता रहता है, वह भक्ष्य पदार्थों से पूरा होता रहता है, भोजन करने से हमारा शरीर उष्ण रहता है।

हृदय में अग्नि मन्द मन्द भाव से जलती है अधिक प्रज्वलित नहीं होती उस की सहायता से जल का एक पात्र उष्ण हो सक्ता है। भोजन करने से परिश्रम करने का बल उत्पन्न होता है, आहार से शरीर को वही लाभ है जो रेल के एंजिन को कोयले और जल से मिलता है। भोजन के पदार्थों में देश भेद मत भेदादि से भी अनेक अंतर पड़े हुए हैं जैसे उत्तरा खंड में जहां बर्फ़ (पाला) पड़ने के कारण वनस्पति पैदा नहीं होती तो वहां के रहने वाले मनुष्य केवल मांस पर ही आसक्ति रहते हैं, भारत वर्ष में आधे से अधिक ऐसे मनुष्य हैं जो केवल अन्न पर ही निर्भर रहते हैं, मांस मदिरा का सेवन नहीं करते। और अन्य यवन अंग्रेज़ आदि आधी प्रजा भारतवर्ष की तथा सम्पूर्ण प्रजा अन्य देशांतर की, मांस अन्न वनस्पति सब ही का भक्षण करते रहते हैं।

भोजन के पदार्थ दो प्रकार के हैं, जिन में एक पत्थर नमक मिट्टी जल इत्यादि, दूसरे अन्न वनस्पति आदि आदि। पहले प्रकार में पत्थर जिस से चूना बनता है, और चूना जल लवण से हड्डी बनती अर्थात् पुष्ट होती है, लोहा रुधिर में रक्तता उत्पन्न करता है, इत्यादि अनेक लाभ हैं, अब दूसरी प्रकार के भी दो भेद हैं। एक वह जिस से मांस बनता है, दूसरी वह जिस से बल पराक्रम और उस की शक्ति उत्पन्न होती है सो मांस पैदा करने वाली वस्तु में वायु का एक तीव्र भाग जिस को अंग्रेज़ी में नाइट्रोजन कहते हैं मिश्रित होता है, प्रथम मटर और चने में मांस पैदा करने वाली शक्ति का विशेष भाग है, इतना ज्वार बाजरे गेहूं में नहीं है। चावल सर्व अन्नों से हलका अन्न है, बहुधा निर्धन मनुष्य चाहते रहते हैं कि धनाढ्यों के समान हम भी केवल चावल और घृत पर ही गुज़र करें परंतु ऐसा नहीं हो सकता। उन मनुष्यों के शरीर के बल पराक्रमानुसार यह वस्तु नहीं है, चावल में पुष्टि कारक गुण नहीं होता, आरारूट में चावल का सत होता है, सो शरीर के लिये यह दोनों ही लाभ कारी हैं, परंतु इन का अधिक सेवन करने से विशेष हानि हो जाती है।

गऊ का दूध अन्य सर्व दूधों से उत्तम होता है दीन मनुष्यों को जो मिले उसी पर संतोष धर बैठ रहते हैं, लेकिन भाग्यवान मनुष्य अपनी इच्छानुसार नाना प्रकार के व्यंजनों को भोजन करते और काम में लाते हैं, यह भोजन के गुण दोष नाम मात्र लिखने में आये इन का सविस्तर कथन किसी अगले दिन समयानुसार किया जायेगा इस समय इतना और भी कह दिया जाता है कि नित्य एक ही भोजन करना उचित नहीं क्यों कि एक वस्तु के लगातार सेवन करने से अरुचि उत्पन्न होकर अनेक रोगों के फल भोगने पड़ते हैं।

तीसरा लेक्चर।

जब इस संसार में आये तो चाहिये कि इसे अच्छी रीति से बितावें, इस लिये हमें उचित है कि उन उन उपायों को खोजें कि जिन से यह जीवन भली भांति व्यतीत हो सके। उन सब उपायों में से आरोग्य रक्षा बहुत आवश्यक उत्तम और लाभ दायक है, क्यों कि जिस एक ही के न रहने से कुछ भी नहीं हो सकता वरन सब प्रकार की हानि होती है। प्राचीन तथा वर्तमान काल में जितनी सभ्य जाति हैं सब आरोग्य रक्षा की ओर विशेष ध्यान देती आई हैं, और अब देती हैं। जब हम यह कहते हैं कि आधे से अधिक मनुष्य बिना मृत्यु रोगाधीन मरते हैं, तो हमारे इस वाक्य पर अनेक लोग यह तर्क करेंगे कि बिना मौत कोई मरता ही नहीं यदि यही निश्चय माना जाये तो वैद्यक विद्या का अभाव हो जावे और फिर कोई इस के पढ़ने में अपना नाहक व्यर्थ समय क्यों बितावें ? परंतु यह मूढ़ चर्चा है, इस को हम इस समय इसी जगह छोड़ कर अब उन बातों का वर्णन करते हैं जो प्राणी मात्र के हितकारी हैं।

नियत समय पर काम का करना भी आरोग्यता का एक लक्षण है, जो प्राणी अपना काम नियत समय पर करते हैं उन को कोई रोग भी नहीं होता। अब इस को यह बतलाना आवश्यक हुआ कि किस काम को किस समय करना चाहिये इस विषय में पूर्व विद्वानों ने अत्यंत ही उत्तम प्रबन्ध बतलाये हैं जैसे प्रातः समय सोकर उठना, मल मूत्र त्याग

करना। सूर्य्योदय के समय वायु में एक प्रकार की तीक्ष्णता उत्पन्न हो जाती है जो सोये हुए प्राणी के स्वास्थ्य में खलल पहुंचाती है। इस लिये जो मनुष्य सूर्य्योदय से पीछे तक सोये पड़े रहते हैं वे हमेशा किसी न किसी रोग में फंसे ही रहते हैं, और थोड़ी ही अवस्था में मृत्यु का मुख देखते हैं। इस का तात्पर्य्य यह है कि सूर्य्योदय से पीछे तक सोना अवस्था घटाता है, इस लिये अनेक विद्वानों का यही उपदेश है कि सूर्य्योदय से पहिले निद्रा त्याग सचेत हो जाना चाहिये, और मल मूत्र का त्याग कर अरुणोदय तक अपने इष्ट देव का ध्यान करे क्यों कि जो मनुष्य सूर्य्योदय तक मीठी निद्रा में सोये पड़े रहते हैं तो यह तो प्रगट ही देखने में आता है कि उन के शरीर में सुस्ती (शिथिलता) उत्पन्न हो जाती है। इस शरीर पर जितने रोम [बाल] हैं उतने ही छोटे छोटे छेद हैं मट्टी आदि से उन के मुंह बन्द हो जाते हैं, उन के मुख खोलने और शरीर को सचेत रखने के लिये प्रतिदिन प्रातःकाल में खुली वायु के समागम में परिश्रम भी इतना करना चाहिये कि जिस से शरीर में पसीना हो जावे। इस से शरीर में जो एक प्रकार का विष होता है वह निकल जाता है प्रतिदिन दो तीन घड़ी भर शुद्ध खुली वायु में टहलना चाहिये, और निर्मल जल से स्नान अवश्य करना उचित है। अब हम को यह बतलाना भी अवश्य है कि निर्मल वायु किसको कहते हैं, और निर्मल जल क्या होता है, परंतु सब से प्रथम मल मूत्र के त्यागने की रीति वर्णन करते हैं।

यदि हम यह कह दें कि सूर्य्य के सन्मुख मल मूत्र का त्यागना बुरा है तो केवल धर्म रसिक मनुष्य ही यह समझते हैं कि सूर्य्य देवता है इनका अविनय होता है परंतु जो मनुष्य धर्म्म शास्त्र के पूरे विश्वासी नहीं उन को हमारे कहने पर अवश्य ध्यान देना चाहिये कि सूर्य्य के सन्मुख बैठ कर मल मूत्र त्यागना बुरा है, और जो मनुष्य हमेशा ऐसा करते रहते हैं उन को जो जो रोग उत्पन्न हो जाते हैं उन का वर्णन हम अब करेंगे।

डाक्टर हकीम वैद्य और विद्यावान चतुर मनुष्य यह भली भांति जानते और मानते हैं कि सूर्य्य की किरणों का स्वभाव पृथ्वी से जल वायु

को ऊपर खींचने का है तथा चंद्र सूर्य्य की शीत उष्णता द्वारा अनेक प्रकार के हानि लाभ प्राणी मात्र को होते हैं। सो जो मनुष्य सूर्य्य अथवा चंद्रमा के सन्मुख बैठ कर मल मूत्र त्याग करते हैं उन को अनेक रोगों से भेंट करनी पड़ती है। जैसे एक प्रकार का शीशा होता है जब उस को सूर्य्य के सन्मुख लगा नीचे नीला वस्त्र रखते हैं तो वह वस्त्र आप से आप जलने लगता है, इसी प्रकार सूर्य्य की किरणों द्वारा उष्णता सब स्थानों में फैलती रहती है, परंतु जहां इस को फैलने का स्थान मिले वहां कुछ विशेष हानि नहीं करती जहां यह छोटे छिद्र द्वारा रुक कर जाती है वहां अत्यंत हानि कारक होती है। जैसे दीपक की ज्योति सम्पूर्ण स्थान में उजाला तो करती ही है, परंतु जहां उस की ज्योति का वेग होता है वह स्थान कज्जल द्वारा काला हो जाता है, और जितनी हानि दूरदर्शी दीपक की ज्योति द्वारा प्रगट रूप से नेत्रों को उत्पन्न होती है निकट होने पर नहीं होती, इसी प्रकार सूर्य्य चंद्रमा की किरणों के द्वारे शीत उष्णता के प्रवेश को जानो।

आप लोगों को एक यह बात भी अवश्य याद रखनी चाहिये कि जब कोई वस्तु ऊपर से नीचे को गिरती है तो नीचे की वायु का वेग ऊपर को हो जाता है क्यों कि सांसारिक सम्पूर्ण चेतन पदार्थों का ऊर्द्धगामी स्वभाव है, सो जब यह प्राणी सूर्य्य के सन्मुख बैठ कर मल मूत्र का त्याग करता है तो सूर्य्य की किरणों का तार उस प्राणी के मलीन मार्गों के द्वारा बन्ध कर शरीर के खेदोत्पन्न का कारण हो जाता है, यद्यपि सूर्य्य चंद्रमा की किरणों का वेग मुख नाक आंख कान इन चार इन्द्रियों में भी प्रवेश करता है परन्तु प्रथम तो कान और आंख से ऐसा कोई मल नहीं निकलता जिस के द्वारा चंद्र सूर्य्य की किरणों का वेग सम्पूर्ण शरीर में फैले दूसरे मुख और नाक से सासोस्वास का गमनागमन होने के कारण कोई विकार हो नहीं सक्ता। यह तो केवल मल मूत्र का मार्ग ही विकार उत्पन्न होने का हेतु है, जो मनुष्य सूर्य्य के सन्मुख बैठ कर मूत्र त्याग करते हैं, उनकी बुद्धि पर मलिनता का भार होने लगता है, रवि में खोटे स्वप्न दृष्टि पड़ने लगते हैं, शरीर में औचाट, मस्तक में दर्द, भोजन में

अरुचि और कुछ काल पाकर एक प्रबल रोग उत्पन्न ही कर प्राणी को बावला कर देता है, और जिस प्रकार सूर्य्य के सम्बन्ध से बुद्धि के भ्रष्ट करने वाले उष्ण रोग उत्पन्न होते हैं, चन्द्रमा के सम्बन्ध से शीतल रोग पैदा होता है, जो शून्य लकवा अर्द्धांग धनुष्य तंद्रिका आदि नामों से प्रसिद्ध और महा अशुभ व्याधि हैं, शीत उष्ण पाषाण लोहा पृथ्वी, कीच, जल, अग्नि, हरी घास आदि में भी मल मूत्र का त्यागना भला नहीं, जहां किसी रोगी मनुष्य ने पहिले मल मूत्र त्याग किया हो वहां भी आप मल मूत्र न त्यागे, जिस स्थान में धूवां वा अंधेरा वा विशेष दुर्गंध तथा हाड़ चाम की राशि हो वहां भी मल मूत्र का त्याग उचित नहीं, एक मनुष्य ने बिना बुझे चूने पर मूत्र किया था उस का शरीर फूट निकला इसी प्रकार एक मनुष्य ने बिना बिचारे एक उपदंस रोगी के मूत्र पर मूत्र कर दिया था उस को थोड़े ही दिनों में उपदंस [गर्मी] रोग हो गया, एक लड़का जूतियों में तथा चमड़े पर ही मूत्र किया करता था कि थोड़ेही दिनों में उसकी इन्द्री सड़ कर कीड़े पड़ गये, जल में मूत्र त्यागने से मनुष्य वीर्य हीन हो जाता है पाषाण पृथ्वी लोहा जब यह उष्ण हों और कोई मनुष्य भूल कर भी पेशाब कर दे तो मधु प्रमेह, जलन चिनगारी आदि रोग होते हैं, घास तृण धान्यादि पर मल मूत्र त्यागने से पत्थरी बवासीर आदि व्याधि उत्पन्न होती हैं इस लिये मनुष्य मात्र को उचित है कि स्वच्छ और निर्मल भूमि देखकर दिन पश्चिम या उत्तर में रात्रि पूर्व या दक्षिण में मुख कर इस तरह पर मल मूत्र त्यागे कि सूर्य्य सदा पीठ पीछे रहे।

जो प्राणी पाप पुण्य स्वर्ग नर्क यह लोक परलोक कुछ भी नहीं जानते सो सुख दुःख को तो वे भी जानते ही हैं, और ऐसा तो संसार में कोई भी नहीं जो सुखाभिलाषी न हो सो सच्चा सुख इसी का नाम है कि शरीर सदा सर्वदा निरोग बना रहे।

सब से पहला सुख वही, काया रहे निरोग।
बर में मावा पूर हो, दूजा सुख संयोग॥
दारा अरु सन्तान सुख, तीजो चौथो ज्ञान।
यश को पंचम कहत हैं, या विध कियो बखान॥

चौथा लेक्चर ।

यह सब कोई जानते हैं कि ग्रीष्म ऋतु में जब बहुत सा ताप होता है तो स्वांस बड़ी कठिनता से लिया जाता है। परंतु इसका कारण यह है कि जिस पदार्थ में ताप लगता है उसके परिमाणु अलग अलग हो जाते हैं, इस लिये जब सूर्य्य का ताप वायु पर लगेगा तो इस के भी परिमाणु अवश्य अलग अलग हो जावेंगे। तो अब जानना चाहिये कि जो जिसका स्वभाव होता है यदि वह उसके विरुद्ध करे तो वह अवश्य दण्ड पावेगा। इस लिये हम सदा जितनी वायु सांस लेते हैं यदि वह उससे घट बढ़ हो जाये तो अवश्य हमें हानि पहुंचेगी। इस कारण ग्रीष्म में सूर्य्य के ताप से वायु के पतली हो जाने से अर्थात् उसके परिमाणु अलग हो जाने के कारण हम को हानि पहुंचती है यानी हमारा स्वांस रुक जाता है, पृथ्वी से ऊपर ४५ मील तक वायु ने इस को घेर रक्खा है, इस वायु मंडल के बीच ही प्राणी तथा वनस्पति बढ़ते हैं। इस के बिना आग जल नहीं सक्ती, जल बह नहीं सक्ता, दीपक स्थिर नहीं रह सक्ता यदि वायु में दुर्गंध मिला हो तो मन कैसा अप्रसन्न सा हो जाता है, और उस दुर्गन्ध वायु के सेवन में कितनी कठिनता होती है, इसी तरह सुगंधित वायु के सेवन से मन प्रसन्न भी अत्यंत होता है। इस लिये निर्मल वायु सेवन करना उत्तम है, जैसे सूर्य्य का ताप लगने से वायु के परिमाणु फट जाते हैं, शीत काल में हिम के मिलने से वेही परिमाणु कठिन और वर्षाऋतु में मलीन हो जाते हैं, वायु का यह स्वभाव है कि जिस वस्तु से टकरा कर चलती है उसकी सुगंन्ध वा दुर्गन्ध को शीघ्र ग्रहण कर लेती है, और जब पहिली वस्तु से आगे बढ़ दूसरी वस्तु से टकराती है, उसका गुण ग्रहण कर लेती है। और इसी प्रकार जिस जिस वस्तु से मिले उसी का गुण ग्रहण करती हुई जब कुछ दूर खुले मैदान में पहुंचती है तो बिल्कुल साफ हो जाती है, इस लिये खुले मैदान में की वायु ही उत्तम और निर्मल होती है, पूर्व विद्वानों ने बड़े परिश्रम और खोज पर यह निश्चय किया है कि जैसी वायु पृथ्वी से चार कोस अर्थात् एक योजन ऊंचे पर है यदि ऐसी वायु पृथ्वी पर बनी रहे तो

संसार में किसी प्रकार का रोग ही क्यों हो क्यों कि ऊपर यह वायु अत्यंत निर्मल रहती है। जब नीचे उतरती है इस में वृक्ष फल फूल वनस्पति के परिमाणु मिल कर इस को मलीन कर देते हैं, इस लिये बाग वन पर्वत में टकराई हुई वायु भी निर्मल नहीं है, इस को केवल ग्रीष्म ऋतु में भी इस लिये ग्रहण किया है कि वृक्षों से टकराने से वायु की उष्णता दूर हो कर शीतलता आ जाती है, परंतु रात्रि के समय वृक्षों से एक प्रकार का विष गिरता है इस लिये दिन के तुल्य वृक्ष की साया रात्रि की गुण के बदले उलटा हानि कारक है, जो मनुष्य विशेष कर वृक्षों तले ही रात्रि व्यतीत करते हैं उन को अनेक प्रकार के रोगों में फंसा हुआ देखा गया है, वृक्षों की छाया में धूप के ताप से बचाने के अतिरिक्त और कोई विशेष गुण नहीं है, किंतु अनेक वृक्षों की छाया दिन में भी हानि कारक होती है, और वट नीम पीपल आम आदि कुछ वृक्ष ऐसे भी हैं जिन से रात्रि में विष नहीं गिरता सो यह वृक्ष यदि कुछ हानि कारक नहीं तो कुछ गुणकारी भी नहीं और इन वृक्षों का विशेष भाग जो औषधियों में लिया गया है तो यह न समझना चाहिये कि इस के लेने वाले मूर्ख थे। अनेक रोग ऐसे भी होते हैं जिन में विष ही औषधि है, यह कहने से हमारा यह तात्पर्य है कि यह वृक्ष तो गुण सहित ही हैं परंतु इन के साये में कोई गुण नहीं है जिस से वायु को गुण मिले।

वायु पर किसी किसी वनस्पति का कैसा असर होता है इस सम्बन्ध में तुलसी के पौधे का हाल कहा जाता है।

हिन्दू लोग तुलसी के पौधे को अति पवित्र मानते हैं और एक घंडली में अपने घरों में रखना धर्म समझते हैं, यहां हम इस पौधे के विषय उन लाभों का वर्णन करते हैं कि जिन के कारण पहिले विद्वान कह गये हैं कि कैसा ही छोटे से छोटा घर हो उस में एक पौधा तुलसी का अवश्य हो।

जानना चाहिये कि एक प्रकार का ज्वर जिस को अंग्रेजी में मेलिरिया फीवर, कहते हैं बहुधा हिन्दुस्थानियों को हो जाता है, यह ज्वर एक तरी भ्रष्ट और मलीन हवा से उत्पन्न होता है कि जो कीचड़ दल दल

और बदबूदार जगहों से निकलती है, पस जब यह हवा मनुष्य के शरीर में व्यापती है तो यह ज्वर उत्पन्न करती है और उस को बीमार कर देती है, परंतु वह हवा जब तुलसी के पौधों से टकराकर निकलती है तब उस के पत्तों और टहनियों का कड़वापन इस हवा में मिल जाता है, तब यह हवा साधारण हवा से भारी हो जाती है, और वह गुण इस हवा में आ जाता है जो कि मेलेरियास फीवर उत्पन्न करने वाली को हटाता है, और जिस ओर को यह हवा [जो कि तुलसी के पत्तों में हो कर चलती है] फैलती है, उसी ओर यह हवा उस मलीन हवा को हटाती चली जाती है, और इस हवा में उस मलीन हवा का गुण कदापि नहीं व्यापता और यह हवा झोंकों से इधर उधर फैल जाती है, और सदा घर और घर के इर्द गिर्द दश पांच गज़ पर रहती है, वह हवा जो कीचड़ और दल दल से उत्पन्न हो कर उपरोक्त ज्वर उत्पन्न करती है सदा इस प्रकार पवित्र होती रहती है, और ज्वर का भयानक गुण नहीं प्रगट होने देती।

तुलसी के घर और बगीचों में लगाने से केवल घर और बगीचों के स्वामी ही का भला नहीं होता किंतु उस से संसार का भला है, क्यों कि जो हवा तुलसी के पत्तों और टहनियों से टकराकर आवेगी वह और हवा को पवित्र करेगी, उस से पास पड़ोस के घरों में और बगीचों के इर्द गिर्द मेलेरियस फीवर उत्पन्न करने वाली हवा भी न ठहरने पावेगी।

देखिये किस उपकार दृष्टि से हमारे पूर्वजनों ने इस का कोटे से कोटे घर में भी रखने का उपदेश किया था, पर उन्हों ने उस समय के अनुकूल इस को पारिलौकिक धर्म्म में मिला दिया कि जिस से लोग इस का पूजन करने लगें और जो वैदिक सुख उस में थे उन को भूल गये पस हमारे भाइयों को चाहिये कि हर काम के सिद्धांत को समझ कर अपना काल और धन अच्छे अच्छे कामों में लगावें।

पांचवां लेक्चर ।

जब हमने इस संसार में जन्म लिया तो हमारा मुख्य धर्म्म यह है कि शरीर रक्षा पर विशेष ध्यान रखे रहें ।

वैद लोग इस पर सम्मत हैं कि छोटी हड़े (अमृतां) का एक वर्ष जो निम्न लिखित रीति से सेवन किया जाय तो नाना प्रकार के रोग नष्ट होकर सदैव काल आरोग्यता बनी रहती है, सो रीति यह है कि चैत्र वैसाख में अर्थात् मार्च व अप्रैल में चार माशे हड़े छोटी सुरबे की चासनी के साथ (मुरब्बा बीह वा सेव का होना चाहिये) और ज्येष्ठ आषाढ़ अर्थात् मई जून में बराबर की मुनक्का के साथ और श्रावण भाद्र पद में तथा जौलाई अगस्त में सिन्धु लवण के साथ और आश्विन कार्तिक में वा सितम्बर अक्टूबर में बराबर की ही मिश्री के साथ और मार्गशिर्ष व पौष वा नवम्बर डिसम्बर में बराबर ही सोंठ के साथ और माघ फाल्गुण तथा जनवरी फरवरी में तीन (३) छोटी पीपल के साथ प्रातः काल मूत उठ मुख धो स्नान क्रिया से अवकाश पाय सदा सर्वदा सेवन किया करे ।

भा० प्राणी मात्र की आवश्य है कि अपना स्वास्था शुद्ध रखने का यत्न करता रहे, अर्थात् हानि कारक वस्तुओं का त्याग करके लाभ कारी पदार्थों का ही ग्रहण करे, किसी भक्ष पदार्थ पर विशेष प्रीति न करे, शरीर की दुर्बलता और रोग के समय पुष्ट और कठिन वस्तु नहीं खाय । परंतु थके हुए शरीर में दुग्ध का सेवन अवश्य करे, खान पान में लोभ करना और मन को मलीन कर लेना भी दुखदाई है, परंतु किसी एक ही वस्तु का लगातार खाना ठीक नहीं है क्यों कि यह भी एक प्रकार का रोग है, अपने शरीर को प्रमादी आलसी रखना यह भी एक रोग में गिनति करना है, इस लिये यथा योग्य उद्यम परिश्रम व्यायाम भी अवश्य करते रहना चाहिये, जब कभी शरीर में किसी प्रकार का खेद हो जाय बहु परिश्रम भूल कर भी नहीं करे । जिस रोगमें भोजन ही लाभ करी हो उस में औषधि व्यवहार नहीं करे और जहां एक औषधि से काम चल सके वहां दो और दो के स्थान तीन का सेवन नहीं करे, जब औषधि की

आवश्यकता होवे तो थोड़ी थोड़ी और हलकी दवाई से प्रारंभ करे, जिस्में गुण दोष की परीक्षा और लाभ दोनों का सम्भव है।

संसार के सम्पूर्ण वैद्य हकीम डाक्टर का यही कहना है कि प्राणी के रक्त में जल, लवण के अतिरिक्त बहुत सी लाल फुटकियां होती हैं जो खुर्दबीन से दिखलाई देती हैं, और असल में इन का श्वेत वर्ण है, केवल देखने ही में लाल दिखलाई देती हैं। जब किसी रोग के अधिक दिन ठहरने या विशेष स्त्री संहवास या अन्य प्रकार की अधिक मिहनत से या थोड़ी खुराक खाकर बहुत परिश्रम करने से, लालच के आधीन हो शरीर की सुध न रखने से आदमी कमज़ोर हो जाता है तो यह फुटकियां रूखी और चमक रहित नीलता लिये हो जाती हैं और खुर्दबीन में देखने से बिल्कुल सफ़ेद दिखलाई देती हैं, जिस से शरीर का रंग पीला, रूखा, क्रांति रहित हो जाता है, सिर पांव, कमर में दर्द कलेजे में धड़क आंखों में मन्दता कभी कभी मूर्छा हो जाती है। तात्पर्य तो यह है कि शरीर में रक्त और रक्त में जीव आत्मा इस प्रकार मिश्रित है जैसे दुग्ध में घृत। सो रक्त में न्यूनता वा बिकार होने से, आंख, कान, नाक, दिल, दिमाग़ कलेजा वुद्दि सब निर्बल होकर अपना अपना काम अच्छी तरह से नहीं कर सकते हैं। इसी कारण पाचन शक्ति देखना, सुनना, सूंघना, धारण शक्ति घट जाती है। मन, चित्त, बुद्दि सम्पूर्ण इन्द्रियों में अंतर पड़ जाता है। जब यह निश्चय हो गया कि रक्त ही मिश्रित जीवात्मा है तो रक्त का कम हो जाना मृत्यु का संदेशा है, निर्बल प्राणी को नाना प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं, निर्बल प्राणी किसी काम का नहीं रहता, परन्तु पूर्व विद्वानों ने उपाय सब के रचे हैं, निर्बल मनुष्य को उचित है कि किसी देशी विलायती वैद्य, हकीम, डाक्टर के झूठे और कल्पित विज्ञापन को देख अपना द्रव्य व्यर्थ खराब न करे इन लोगों की कोई दवा लाभकारी नहीं है निर्बलता दूर करने के लिये नीचे लिखे उपाय के समान और विशेष कोई उत्तम दवा नहीं है।

निर्बल मनुष्य को स्त्री संहवास खटाई लाल मिर्च, तेल, आदि का [illegible] और गौ दूध का सेवन करना चाहिये

एक बोतल गंगा जल में एक तोला सफ़ेद कली का चूना कपड़े में छान कर उस में डाल दे जब तमाम रात्रि उस में पड़ा हुआ नितर कर साफ़ हो जाये तब जल को दूसरी बोतल में निथार के भर ले इसी प्रकार एक बार के डाले हुए चूने को तीन दिन बराबर निथारे जब जल साफ़ हो जाये बोतल ही में रख छोड़े, और उस में से दो तोला जल २० तोला गौ दुग्ध में डाल कर दो तोला मिश्री मिला पीया करे।

४० तोला नया धनियां लेकर उस की गिरी निकाल बराबर का गौ घृत उतनी ही सफ़ेद चीनी, एक तोला छोटी इलायची के बीज, आधे तोला बंश लोचन, सब को एकत्र कर रख छोड़े और दो तोला प्रतिदिन सन्ध्या समय खाये। हजामत कराने के बाद बादाम रोगन तालू पर मलना और फुलवारी में जाकर मन बहलाना, थोड़ा काम करना, भोजन में निर्मल नरम शीघ्र पाचन, मन भावता अभक्ष्य रहित शुद्ध पदार्थ ग्रहण करना।

बादाम पिस्ता दोनों को कील कर गिरी निकाल जल में भिगो पिट्ठीवत पत्थर पर पीसना फिर गौ घृत में भून पुनः पीसना ५ सेर गौ दुग्ध को कड़ाही में चढ़ा खोया करना जब गाढ़ा होने पर आवे उस में भूने हुए बादाम पिस्ते और तीन तीन माशा दारचीनी, केशर बंशलोचन एक एक तोला छोटी इलायची के बीज काली मिर्च पीस कर डाले चांदी के वर्क मिलाय मोदक या पेड़े बना डाले और तीसरे पहर दिन में ४ तोले खाना लोह का असली सार ग्रहण कर। इत्यादिक उपायों से शरीर का गया हुआ बल पुनः प्राप्त हो जाता है, यह प्रमाणिक चुटकले हैं जिन की अनेक बार परीक्षा हो चुकी है और इस में विशेष खर्च भी नहीं है।

श्री हरि: १०८ छूटी लूटी लूटी बिना दाम कौड़ी की पत्रिका लूटो श्री हरि: १०८

"संक्षिप्त"

"जगत्पत्रिका"

"वार्षिक मूल्य डाकव्यय सहित २)"

विदित हो कि उक्त नाम का पुस्तकाकार साप्ताहिक समाचार पत्रिका १ली जनवरी सन १८८५ शहर छपरे से प्रकाशित होना प्रारंभ होगा इस पत्रिका में उचितवक्ता, भारतजीवन, बंगवासी, सरस्वतीप्रकाश पत्र, आर्य्यावर्त, हिन्दुस्तान, प्रयागसमाचार, भारतमित्र, चम्पारनचंद्रिका, शुभचिन्तक, भारतभ्राता, मित्रविलास, राजस्थान, बिहारबंधु, जगत्मित्र, प्रजाहितैषणी, भारतबंधु, सर्वहित, मारवारगज़ट, देवनागरीगज़ट, सारनसरोज, द्विजपत्रिका, ब्राह्मण, क्षत्रियपत्रिका, देशीव्यापारी इत्यादि समाचार पत्रों से नवीन नवीन समाचार निकालकर प्रकाशित की जावेगी इस पत्र में सिवाय समाचार और विज्ञापन के और कुछ नहीं प्रकाशित होगा इस पत्र का आयिम मूल्य सन १८८४ के अन्दर जमा करने वाले ग्राहकों के लिये पांचवर्ष से ऊपर और पचास वर्ष से नीचे का मूल्य १) एक रुपया साल के हिसाब से रखा गया है जो महाशय १) एक रुपया साल देकर उक्त पत्रिका लेना चाहते हैं उन महाशयों को एक रुपया १) मनिआर्डर के साथ नीचे लिखे हुए ठिकाने पर दरखास्त भेजने से ग्राहक श्रेणी में नाम लिखा जायगा उक्त पत्र का नमूना सन १८८४ पहली जनवरी को प्रकाश करके ग्राहक महाशयों के निकट भेजी जायगी।

जिन महाशयों को किताब, दवा, घड़ी, कागज, छाता, इत्यादि जिन चीजों की जरूरत हो उन महाशयों को पांच आने रुपये डाकमहसूल वगैरह खर्च का आयिम भेजने से चीजें सूची पत्र साथ उचित मूल्य पर भेजी जायगी।

आप का कृपा कांक्षी
बाबू जगत्पति नारायण
मौजे महराजगंज
पो० आ० गुलटेनगंज
सारन।

545

Printed at the Khadgavilas Press, Bankipur

"आयुर्वेदोक्त-पत्रिका"

"मासिकपत्र"

विदित हो कि उक्त नाम का वैद्यक-शास्त्र विषयक पुस्तकाकार मासिक-पत्रिका "भारतेश्वरी-औषधालय" महराजगंज से प्रकाशित हुआ करेगी। जिस में ऐसे२ सुगम उपाय लिखे जायंगे कि जिस के अनुसार चलने से मनुष्य जन्म से लेकर मरणपर्यंत तक सहज ही में प्रसन्न और आरोग्य रह सकेंगे। इस के अतिरिक्त इस पत्र में आयुर्वेदोक्त रीति से विस्तारपूर्वक सर्व रोगों की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न और परीक्षित२ औषधियों के बनाने की क्रिया लिखी जायगी। और इस पत्र में धर्म्मशास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, कर्म्मकाण्ड, न्याय शास्त्र, इत्यादि की आवश्यकीय २ विषय जो मनुष्यों को जन्म से लेकर मरणपर्यंत तक आवश्यक है विस्तारपूर्व्वक लिखी जायगी। इस के सिवाय इस पत्र में नाना प्रकार की पाक, पुरी, लड्डु, पेड़ा, बरफी, जलेबी, मोहनभोग इत्यादि नाना प्रकार की मिठाई और दाल, भात, रोटी, तरकारी, सालन, शोरुवा, कबाब, अचार, चटनी, शोकी, मुरब्बा, अर्क, तिजाब इत्यादि बहुत प्रकार की चीजें बनाने की सहज तरकीब लिखी जायगी, जिस को अमीर और गरीब सब तरह के मनुष्य बनाकर लाभ उठावेंगे इन सब के सिवाय इस पत्र में पक्का साबुन, स्याही, मलाई, जर्म्मनसिलवर, केमिकल-गोल्ड, आतसबाजी, सब रंग का कपड़ा रंगना इत्यादि बहुत तरह की कारीगरियां लिखी जायगी इस पत्र में इतना विषय होने पर इस का वार्षिकमूल्य डाक व्यय सहित २) है तिस पर भी ग्राहक महाशयों के विश्वास होने के हेतु २) की दवा बिना मूल्य ३) की V. P. पारसल कर के भेज दी जायगी।

भारतेश्वरी-औषधालय—विदित हो कि इस औषधालय में सब प्रकार की प्रशंसनीय और परीक्षित २ औषधियां बिकने को तैयार रहती हैं जिस की सूचि-पत्र छप रही है छपने पर ग्राहक महाशयों को भेज दीजायगी। इसी औषधालय से जगत्पत्रिका, आयुर्वेदोक्तपत्रिका के ग्राहकों को दवा भेजी जायगी।

पत्रव्यवहार इस पते से करना चाहिये
मिस्टर, जे,पी, नारायण, महराजगंज
P.O. गुलटेनगंज,
छपरा

Apply to,
Mister, J. P. NARAYAN.
Mahraja ganj, P.O. Gulten-ganj,
Chupra.

जगत्पत्रिका के ग्राहक महाशयों को २) की दवा बिना मूल्य दी जायगी

भाग्यं फलति सर्वदा ।

किसी गांवमें एक अति दरिद्र ब्राह्मण रहते थे । वह अत्यन्त धार्मिक और निष्ठावान थे, बड़े कष्ट से किसी तरह जीवन बिताते थे। भाग्य पर ब्राह्मण का अटल विश्वास था "भाग्य में जो है वही होगा किसी ढंग से वह टल नहीं सकता।" यह विश्वास उनका किसी तरह दूर नहीं होता था। यही कारण था कि सांसारिक कामों में उदास हो कर सदा भगवान के ध्यान ही में मग्न रहते थे। संसार के सैकड़ों सहस्रों दुख उन पर आते थे पर चित उनका कभी विचलित नहीं होता था।

पर उनकी ब्राह्मणी बड़ी लड़ाकी और क्रोधी थी। दरिद्रता के दुख से पीड़ित हो उठते बैठते—सदा ब्राह्मण को दस बात कहा करती थी। ब्राह्मण भी साधारण मनुष्य न थे दिव्य ज्ञान के कारण कोई दुख उन पर असर नहीं करता था इससे अपने सहधर्मिणी का कठोर व्यवहार बिना कोई दुख प्रगट किये सहते जाते थे। मुंहसे एक शब्द भी न निकाल कर इष्ट देवता के आगे सब अपना दुख मनही मन कहते थे।

* * * * * *

एक दिन दो पहर रात ढल चुकी थी, रात अंधेरी थी, अपनी जीर्ण कुटी में ये दोनों प्राणी सोये थे। नींद किसी की आंखों में न थी दोनों अपने सुख दुख की चिन्ता कर रहे थे कि ऐसे समय में एक चोर चुपचाप किसी तरह घुस आया। अंधेरा खूब था चोर ने टटोल कर देख लिया कि कुछ है नहीं—दो एक टूटी हांडी और घड़ा पड़ा है दोनों खाली ही मिला। कुल मिहनत बेकार समझ जीही निकलना चाहता

था कि ब्राह्मणी अपने पति से कहने लगी—"अच्छा तब एक काम क्यों नहीं करते? परमेश्वर पर तुम्हारी अचल भक्ति है तो उन की आज्ञा क्यों नहीं मानते?"

ब्राह्मण ठंढी सांस खींच कर बोला—यदि भाग्य में होगा तब तो होवेगा उस के लिये हम कष्ट क्यों उठावें?

ब्राह्मणी—(तिरस्कार के भाव से) परमेश्वर क्या तुम्हारे घर आकर रत्न आदि दे जायेंगे? तो फिर हाथ पैर उन्हों ने किस लिये दिया है?

ब्रा०—क्या करोगी? मुझे तो ऐसा ही विश्वास है कि जिस दिन उन की दया होगी घर बैठे ही आप से आप वह धन मुझे मिलेगा।

ब्राह्मणी—भला स्वप्न कैसा है ज़रा सुनें तो।

ब्राह्मण—(लम्बीसांस खींच कर) गांव के बाहरी ओर एक बड़ का वृक्ष है उस के जड़ में एक बड़ा भारी सोने का घड़ा गड़ा है। उस में बहुत सी अशरफी और रुपये भरे हैं। हमारे दुख को देख हम को ऐसा मालूम होता है जैसे भगवान कह रहे हों—"देख! तू हमारा बड़ा भक्त है तू ने जब मुझ ही को अपना मन प्राण सौंपा है तो अब तेरा यह दुख न रहेगा। अब से तेरा भाग्य खुला। उस स्थान पर जा कर गुप्त धन ले ले।"

संक्षेप में स्वप्न का हाल कह कर बोला। देखो! महीनों से यह स्वप्न रोज़ हम को होता है पर हाय भाग्य अच्छा न होने के कारण देवता भी हम से छल करते हैं।

इस बात से ब्राह्मणी को कुछ धीरज हुआ और कुछ लोभ में आ कर बोली अच्छा तो आप ही जाकर क्यों नहीं देखते? न तो बहुत दूर ही है न श्रम ही बहुत करना है। परीक्षा करके देख लो तो उस में बुराई क्या है? कोई कोई स्वप्न तो इस तरह फलते हुए देखे भी गये हैं।

ब्रा०—नहीं, कुछ करना न होगा। यदि सच ही देवता हम पर प्रसन्न हुए हों यदि सच ही हम सब के भाग्य खुले हों तो घर बैठे ही गुप्त धन पहुंच जायेगा।

ब्राह्मणी (क्रोध से)—ऐसा कोढ़ी तो हम ने जन्म भर कहीं नहीं देखा! लोग पेट के लिये जल और जंगल में प्रवेश करते हैं और तुम यह सामान्य काम नहीं कर सकते!

धीर गम्भीर ब्राह्मण (हंस कर)—अरे पगली यदि हमारे भाग्य में यह गुप्त धन होगा तो किस का अख्तियार है कि ले लेगा। जितने दिन का भोग्य बदा होगा उसे कौन कम करेगा? जिस दिन जिस मुहूर्त में हमारा अंग ज़ोर करेगा उसी दिन, उसी क्षण, घर बैठे मैं यह सब धन लाभ करूंगा। कोई उसे टाल न सकेगा और जब तक हमारे भाग्य बुरे हैं तब तक किस का अख्तियार है कि मेरा दुख दूर करे?

* * * * * *

ब्राह्मण ब्राह्मणी का—स्त्री पुरुष में कच कच होते ही रहा इधर चोर ने जब देखा कि मेरा मतलब कुछ न निकला—कुछ मिलेगा भी नहीं तो धीरे धीरे चुप चाप वहां से खिसका। पर खिसकने के पहले ब्राह्मण ब्राह्मणी की सब बातें आप के कान में घुस चुकी थीं।

आप (चोर) ने विचारा—भला ब्राह्मणी की बात एक बार कर तो देखें। सम्भव है कि ये धन रत्न सब हमारे ही घर में रह जायें। इस में कोई कष्ट भी तो नज़र नहीं आता। सेंध मारने का (सेनमरनी) भी तो हमारे पास ही है परीक्षा लेने में नुक़सान क्या है?

यह सोच वह बुद्धिमन्त चोर ब्राह्मण के स्वप्न वृत्तान्त के अनुसार उस स्थान पर पहुंचा और वृक्ष के जड़ में धीरे धीरे खोदने लगा। थोड़ा ही सा खोदने पर उस को मालूम हुआ कि परिश्रम व्यर्थ नहीं हुआ—एक धात के पात्र में (सेन मरनी) लग रही है। फिर क्या पूछना है दूने उत्साह के साथ अशरफ़ी का घड़ा उसने उखाड़ा। पर अच्छी तरह देखने से मालूम हुआ कि घड़ा ताम्बे का है! "खैर भीतर क्या है देखा

जाये । " यह सोच कर जों ही ढकना खोल कर फेकना चाहता था कि तों ही क्या देखता है कि भयंकर सर्प उस में कई हैं और फन खड़ा कर काटना चाहते हैं। चोर भय के मारे चकित हो हट कर खड़ा हुआ उस का अन्तरात्मा कांपने लगा। पल भर में अपनी बुद्धि से सब समझ गया। ब्राह्मण ब्राह्मणी ने यह जान कर कि चोर आया है मेरा प्राण लेने के लिये एक झूठा स्वप्न वृत्तान्त रचा था। इस का और कोई कारण नहीं हो सकता। उन का मतलब यही था कि चोर इस धन का हाल सुन खोज में जायेगा और वहां जायेगा तो खूब छकेगा। हम चोरी करने को यहां आये हैं यह ब्राह्मण जानता था इस लिये मेरे मारने का यह उद्योग उस ने किया था। स्वप्न देखना, देवता की आज्ञा और अशरफियों की प्राप्ति यह सब ब्राह्मण ब्राह्मणी की बात बनौअल मात्र थी।

असल मतलब उस का यह था कि जिस में मेरा प्राण जाये। उस के बाद वह सोचने लगा कि चालाक को जब न छकाया तो तारीफ क्या ? हीन बुद्धि ब्राह्मण ब्राह्मणी ने जिस उपाय से मुझे मारना चाहा था अब मैं भी उसी उपाय से उन का प्राण लूं तब हमारा बदला चुकेगा।

यह सोच, चोर, किसी तरह घड़े का मुंह पहले के ऐसा बंद कर सिर पर रख उस ब्राह्मण की कुटी की ओर चला।

उस समय ब्राह्मण ब्राह्मणी सोये थे। चोर ठिकाने पर पहुंच कुटी पर चढ़ गया। छप्पर पर फूस कम थी इस से रास्ता सहज ही में बन गया। चोर ने धीरे धीरे उस रास्ते से अति सावधानता के साथ ढकना खोल इस हिसाब से घड़ा उलट दिया कि जहां दोनों प्राणी सोये थे वहीं उन के शरीर पर काले सर्प गिर पड़े। हे परमेश्वर यह क्या !!! काले सर्प तो नहीं हैं—यह तो अशरफी और रुपयों की आवाज़ है ! उस आवाज़ को सुन ब्राह्मण और उन के स्त्री की नींद टूट गई और भी उस आवाज़ से चौंका—एकाएक वह घड़ा भी सोने का हो कर उस के हाथ से छूट गिरा और ब्राह्मण की कुटी में चला गया।

रोशनी जला कर ब्राह्मण और ब्राह्मणी विस्मित और चकित हुए। यह क्या सच मुच स्वप्नकी बात फली दोनों एक दूसरेका मुंह देखने लगे।

इस बीच में चोर भी धीरे से नीचे चला आया। एकाएक धन मूर्ति को देख वे दोनों कुछ डरे, चोर ने धीरे धीरे सब हाल कहा। तब ब्राह्मण हंस कर ब्राह्मणी से कहने लगे "क्यों अदृष्ट का फल तुम ने देखा?"

ब्राह्मणी ने बिना कुछ कहे सुने बड़े भक्ति के साथ ब्राह्मण के पैरों की धूल अपने सिर चढ़ाई।

चोर सब बात कहने के बाद भी निर्लज्जता के साथ कुछ मांगने की इच्छा प्रगट करने लगा। ब्राह्मण ने ज़रा हंस कर कहा—लो बाबू! थोड़ा तुम भी लो कोई चिन्ता नहीं,—पर सर्प दंश का कुछ अंश लेने को क्या तुम राज़ी थे।

* * * * * *

इस के बाद क्या हुआ? इस के बाद चोर क्या मेरा क़िस्सा तमाम हुआ।

काशीवासाष्टकं ।

लीजिये प्रणाम नाम मन्त्र मोहिं दीजिये ।
विश्वनाथ पाप मे॰ विमुक्त मोहि कीजिये ॥
क्यों विलम्ब होत नाथ शीघ्र दुःख छीजिये ।
आपनी पुरी निवास मोहि शंभु दीजिये ॥ १ ॥
हे भुजंग अंग धारि भंग को उघारिये ।
गंग के तरंग शीश बीच भूति धारिये ॥
मोर मोह काम क्रोध दूर आशु कीजिये ।
आपनी पुरी निवास मोहि शंभु दीजिये ॥ २ ॥
मैं न कीन पुण्य पाप जाल मोर नाशिये ।
दीन हीन मैं मलीन बुद्धि मो प्रकाशिये ॥
भुक्ति मुक्ति शक्ति दान नाथ आप कीजिये ।
आपनी पुरी निवास शंभु मोहि दीजिये ॥ ३ ॥

कोटि कोटि सूर्य्य के प्रकाश तें प्रकाशिये ।
हे महेश मोर क्लेश शीघ्र क्यों न नाशिये ॥
दास मैं न त्रास और पास क्यों न लीजिये ।
आपनी पुरी निवास मोहि शंभु दीजिये ॥ ४ ॥
मोर चित्त वित्त मत्त ताहि आशु शासिये ।
अर्म्म कर्म्म दान दत्त क्यों न प्रेम फासिये ॥
आप क्यों न ही दयाल आशु ही पसीजिये ।
आपनी पुरी निवास मोहि शंभु दीजिये ॥ ५ ॥
नित्य बिल्व पत्र भार मोर आप लीजिये ।
मोहि मोह-हीन और भक्ति-लीन कीजिये ॥
आशुतोष क्यों न क्षिप्र नम्र देखि रीझिये ।
आपनी पुरी निवास मोहि शंभु दीजिये ॥ ६ ॥
और दान भो दयाल मोहि नाहिं चाहिये ।
भक्तिदान श्री कृपाल नेम यों निबाहिये ॥
मैं हुं दीन दुःख छीन भक्तिपीन कीजिये ।
आपनी पुरी निवास शंभु मोहि दीजिये ॥ ७ ॥
मध्यजटजूट गंगधारिकीर्ति गाइये ।
देवराजबास सो पुरी सुवास पाइये ॥
सद्गिरंद के पवित्र गान प्रेम भीजिये ।
आशुतोष की पुरी निवास आशु लीजिये ॥ ८ ॥
काशीकानिवास आठ पद्य नित्य गाई हैं ।
शंभु के समीप जो निवास लौं मनाई हैं ॥
दीन हीन हो "बिहारि" भक्ति चित्त लाइ हैं ।
काशि बास ईश भक्ति सो अवश्य पाइ हैं ॥ ९ ॥

इति बिहारी लाल चतुर्वेद कृतं
काशिवासाष्टकम्

शिशु मनरंजन।

एक कुंजड़ा और उसका बेटा।

एक कुंजड़ा अक्सर रात को अंधेरे में दूसरे के खेत में से चीज़ें चोराया करता था। एक दिन फूलकोबी चोराने के लिये अपने आठ बरस के एक लड़के को साथ लेता गया। कुंजड़ा टोकरी लड़के को देकर आप यह देखने को चला गया कि कोई आस पास में है तो नहीं? हाते पर चढ़ कर चारो ओर झांक कर देख आया और चोरी में उसने हाथ लगाया।

इतने में लड़के ने कहा "सब तरफ़ तो आपने देखा पर एक ही ओर आप भूल गये।" कुंजड़े ने समझा कि किसी को आते हुए इसने देखा है इस लिये झट जो फूल उसने उखाड़े थे गिरा दिये और पूछा "किधर बेटा?" लड़के ने कहा "ऊपर देखना तो भूल ही गये कि परमेश्वर देखता है या नहीं।" कुंजड़े ने कहा "ठीक ठीक यह तो हम भूल ही गये थे"

लड़के की इस बात का ऐसा असर उसके दिल में हुआ कि जो फूल उसने तोड़े थे वहीं छोड़ चला आया और फिर चोरी पर कभी उसने नीयत नहीं की। बराबर उसने याद रक्खा कि परमेश्वर की आंखें सदा सब कुछ देखती रहती हैं।

धीरज

राबर्ट ब्रूस स्काटलैन्ड देश का राजा था जब दिन उसके बुरे आये तो राज हाथ से जाता रहा। कई बार उसने राज फिर पाने की कोशिश की पर सब वृथा हुई। आखिर उसका जी इतना छूट गया कि फिर कोशिश करना व्यर्थ मालूम हुआ।

इसी सोच विचार में आगे पीछे करता हुआ अपनी चारपाई पर पड़ा पड़ा छत की ओर देख रहा था कि नज़र एक मकड़े पर जा पड़ी जो अपने ही तागे पर एक कड़ी पर से दूसरे पर जाल लगाने के लिये उद्योग कर रहा था।

वह कीड़ा बार बार उद्योग करता था पर सफल नहीं होता था। अन्त को ब्रूस ने गिना कि छ बार उसने कोशिश की पर एक बार भी पार न पा सका।

यह देख कर उसे अपनी छ लड़ाई का याद आ गया और बेचारा मकड़ा भी उसी दशा मे था जब बार उसने कोशिश की उतनी ही बार असफल हुआ।

तब ब्रूस ने सोचा कि अब समझ नहीं पड़ता क्या करें इसी मकड़े को देखता हूं अगर यह कीड़ा अपनी इच्छा पूरी कर सकेगा तो मैं भी सातवीं बार स्कौटलैन्ड पर अपनी किस्मत आज़माऊंगा। यदि मकड़े की इच्छा न पूरी होगी तो मैं कहीं चला जाऊंगा फिर अपने जन्म भूमि को मुंह कभी नहीं दिखलाऊंगा।

ब्रूस इधर तो मन में यह विचार ठान रहा था उधर मकड़ा साहस की फेंट बांध फिर कोशिश करने लगा, जो बात इतनी देर से नहीं हो रही थी इस बार हो गई दूसरी कड़ी पर जाल लग गया।

मकड़े का उद्योग सफल हुआ देख ब्रूस ने फिर एक कोशिश की और अपना राज्य प्राप्त कर लिया, अब तक जैसे उसने एक भी लड़ाई न जीती थी इस उद्योग के बाद वह कोई लड़ाई न हारा।

छोटी श्यामा और दैत्य।

छोटी श्यामा बहुत ही प्रसन्न रहा करती थी! दिन भर गाती और प्रसन्नता में दौड़ी फिरती थी। सदा वह मगन ही रहती थी किसी बात से उसे दुख नहीं होता था। एक दिन श्यामा के मन में आया कि घर से थोड़ी दूर जाकर बन की सैर करूं। गाती सीटी बजाती वह आनन्द से बन में पहुंची। उसके गाने से बन गूंज उठा।

बनकी शोभा देखते देखते नदी तट पर पहुंची। प्यास भी लग आई थी इसने जल पीने के लिये बैठ गई। जल पीना जोंही समाप्त हुआ था कि एका एक पीछे से आकर किसी ने पकड़ लिया। घूम कर क्या देखती है कि मैं अपने से सो गुन बड़े और लम्बे दैत्य के हाथ में हूं। दैत्य ने उसको बहुत ही आनन्द के साथ देखा तब अपने थैले में उसे रख चला।

बेचारी श्यामा थैले के बाहर निकलने का बहुत उद्योग किया पर सब व्यर्थ हुआ। वह रोई, चिल्लाई, छटपटाई, थैला फाड़ने का उसने उद्योग किया, पर दैत्य ने उसकी यह सब लीला देख हंसता रहा और मज़बूती से पकड़ कर चला ही गया।

आखिर वह अपने मकान पर आया—अजीब तरह का देखने में था चारो ओर बड़ी बड़ी दीवारें थीं, पेड़ फूल का वहां दर्शन भी नहीं था। भीतर जाकर किवाड़ बंद करके उसने श्यामा को थैले से निकाला। बेचारी श्यामा ने समझा कि अब मेरे दिन पूरे हुए क्यों कि चारो ओर नज़र उठाने पर क्या देख पड़ा कि आग लहर रही है और दो जीव अपने से बहुत बड़े दैत्य के भोजन के वास्ते पकने के लिये रक्खे हैं। पर दैत्य ने श्यामा को नहीं मारा बलकि एक पींजड़ा खास जो उसी के लिये उसने मंगवाया था उसी में रख दिया। बड़ा अंधेरा था चारो ओर कुछ नगे हुए थे। खाने के लिये सिर्फ सूखी रोटी और एक प्याला जल इतना ही था। श्यामा ने अपना सिर उन कड़ों पर बहुत दे मारा पर कुछ न हुआ। किसी ने भी कुछ ध्यान न दिया।

दूसरे दिन दैत्य ने आकर श्यामा को देखने लगा। जब उसने देखा कि श्यामा ने रोटी कुछ नहीं खाई तो सिर पकड़ कर थोड़ा सा उसके गले में ठूंस दिया। बेचारी श्यामा को भय के मारे कहां खाना पीना सूझता था।

दूसरे दिन भी अंधेरेही में वह छोड़ दी गई। वह दिन बड़े दुख में बीता। बेचारी अपने घर बार, संगी साथी, नाते गोते, धूप, पेड़, पत्ते, फल फूल सब का खयाल करती रही और तब उसने चिल्ला कर चाहा कि लोहे के छड़ के बीच होकर निकलें इसीमें उसको बड़ी चोट आई।

फिर दैत्य आया। श्यामा का बन में का गाना सुन वह मोहित हो गया था वह चाहता था कि पींजड़े में भी वह उसी तरह हंसे खेले और गीत गावे। उसने कहा "गाओ गाओ!" पर श्यामा इतनी उदास थी कि गाना उसे नहीं सूझता था। कैदखाना तो गीत गाने की जगह नहीं है। आखिर दैत्य रंज हो गया उसने जबरदस्ती गीत

खाने के लिये क़ैद खाने से श्यामा को खींच निकाला। श्यामा बहुत ज़ोर से चिल्लाई छटपटाई और तब उसने प्राण छोड़ दिया।

यह सच्ची कहानी है—बेचारी श्यामा एक छोटी चिड़िया थी और दैत्य एक निर्दयी लड़का था।

कमलू की भूल।

"वाह! क्या अच्छा है कि आज सनीचर है!"—इतना कह कर छोटा कमलू कूदता फांदता अपनी माता के पास गया जो उस की छोटी बहिन के लिये कनझप्पा टोपी सी रही थी। "कैसी खुशी की बात है कि आज सनीचर है आज दो ही बजे छुट्टी हो गई। स्कूल जाने का कोई फ़ायदा नहीं, मेरा तो जी चाहता है कि फिर किताब खोल कर मुझे नहीं देखना पड़ता।" इतना कह कर कमलू एक एक दफ़े दो दो सीढ़ी टपता हुआ दरवाज़े ही पर रूपा हलवाइन की दूकान थी उसी में चला गया।

हलवाइन का हाथ आटे में डूबा हुआ था वह कचौरी बना रही थी; कमलू ने जाकर कहा कि हम भी मदद देंगे। रूपा उसके मदद देने की बात सुन कर हंसी, पर वह कमलू को बहुत चाहती थी। इस से कमलू के कपड़ों को लपेट सपेट कर पीछे रूमाल से बांध दिया, बाल जो मुंह पर झुके आते थे उनको कान के पीछे अंटका कर एक उथली कटोरी में आटा और पिट्ठी उसने अलग दे दिया कि बैठ कर बनावे। कमलू रूपा को देखता जाता था और जैसे जैसे वह करती थी उसी तरह वह भी करता था, पिट्ठी भर कर जब एक छोटी कचौरी बना चुका तो उसने ऊपर मुंह करके कहा—

"रूपा! मैं भी तुम्हारा ही सा होता; तो खूब मिठाई बना बना कर खाता। मेरी इच्छा थी कि काम पर जाता और उस वाहियात स्कूल को आंख उठा कर कभी भी नहीं देखता।"

रूपा ने कोई जवाब नहीं दिया; पर मुंह फेर कर कई एक कचौरी ले कर भरने से उसने तल डाली। इसी बीच में कमलू ने रूपा को ठंढी सांस खींचते सुना।

कमलू—क्या हुआ रूपा? क्या कचौरी बिगड़ गई। बहुत भारी तो नहीं हो गई?

रूपा—नहीं, पर मेरा दिल भारी है। मैं सोच रही हूं कि मुझे पढ़ना लिखना कैसे आता। मेरा भाई छेदी कलकत्ते में रहता है—बहुत दिन उससे भेंट हुए हो गई आखरी भेंट जब उससे मुझ से हुई थी तब मैं उस पीपे के बराबर थी। बाप मा तो मर गये; छेदी के वास्ते मेरा जी छटपटाता है कमलू! वह तो बराबर चीठी लिखता है पर मैं ही ऐसी हूं कि उसका एक शब्द भी नहीं पढ़ सकती। जब मैं लाला मोदन लाल से चीठी पढ़वाती हूं तो उससे ठीक मतलब नहीं खुलता। और फिर एक ही बार चीठी पढ़ने से तो नहीं होता बार बार पढ़ने की इच्छा होती है। इसी से चीठी हाथ में ले कर, बच्चा, मैं बार बार उलट पुलट किया करती हूं—पर रूपा के लिये काले अक्षर भैंस बराबर का हाल है। यही कारण है कि छेदी की चीठी पाकर अक्सर मुझे घंटा रुलाई आती है! और तब मैं उनका जवाब नहीं भेज सकती;—क्यों कि मुझे लिखना नहीं आता—और फिर छेदी को चीठी लिखने के लिये अपने मन की बात सब से कहना मैं नहीं चाहती। इस से देखो बेटा! आदि से अन्त तक मेरे लिये सिर भुकौवल ही है।" इतना कह कर उस ने आंच चूल्हे से खींच ली और साड़ी के एक कोने से अपनी आंख पोंछ डाली।

कमलू प्रेम से पूर्ण छोटा सा लड़का था। उस से रूपा का रोना नहीं देखा गया! अपना आंटा छोड़, एकाएक कोई खयाल दिल में आ गया बस दौड़ कर कोठे पर चढ़ गया और जहां उस की माता दो स्त्रियों से बातें कर रही थी वहां पहुंच गया।

कमलू को याद न रहा कि मेरे मुंह, हाथ, बाल और कपड़ा तमाम आंटे से भरा है झट कमरे में पहुंच कहने लगा—

"अय मा! रूपा से मैं बातें कर रहा था; और रूपा—इतनी बड़ी रूपा—पढ़ना लिखना नहीं जानती। सिवा छेदी के और कोई उसे नहीं है; और वह भी कलकत्ते में है। और जब वह पीपे के बराबर थी तब से छेदी को उस ने देखा भी नहीं है! जब वह चीठी लिखता है तो वह नहीं पढ़ सकती; उस का जवाब भी नहीं देती क्यों कि उस को लिखना

नहीं आता। वह बहुत दुखी रहती है! मा! एक क-ख की किताब नहीं मंगवा दोगी—जिस में रूपा को पढ़ना लिखना मैं सिखला दूं?" इतना कह कर कमलू रुक गया—इस लिये नहीं रुका कि कुछ कहना अब नहीं था—लेकिन दौड़ कर आया था इस से दम लेने लगा।

कमलू की माता मुस्कुराई और बोली—"घंटे भर की बात है कि एक छोटा सा लड़का—ठीक तुम्हारे ही बराबर—यहां था वह कहता था कि स्कूल जाने का क्या नफ़ा; और चाहता था कि जन्म भर कोई किताब खोल कर देखना नहीं पड़ता तो अच्छा होता। क्या उस को तुम ने देखा है कि किधर गया?"

कमलू का मुंह शर्म से लाल हो गया तब बोला—"अब मा! अब मैं ऐसी मूर्खता न करूंगा। अब मुझे मालूम हो गया कि छोटेपन में पढ़ना लिखना नहीं सीखने से कैसी खराबी होती है।"

क-ख-की किताब खरीदी गई—और कमलू जब रूपा को एक एक अक्षर पर हाथ रख कर बतलाता था तो बड़ी हंसी आती थी। यह काम बहुत बक्र का था इसमें सन्देह नहीं; पर कमलू की धीरज था—उस का दिल बहुत ही अच्छा और दयालु था। जब रूपा केदी की चीठी पढ़ने लगी तो कमलू को बड़ी खुशी हुई! और जब जवाब भी लिखने लगी तब तो और भी खुशी हुई! तब से कमलू ने कभी भी नहीं कहा कि "स्कूल जाना बिलकुल बेफ़ायदा है।"

केदार नाथ।

जाड़े का दिन था सनीचर को एक बजे स्कूल से छुट्टी हो चुकी थी। सब लड़के प्रसन्न थे पर श्री कान्त घर पर आकर स्लेट पटक खिड़की से लग कर बैठ रहा। माता ने उस का मिज़ाज ठिकाने न देख कुछ नहीं कहा पर श्री कान्त से नहीं रहा गया उस ने समझा था कि माता कुछ हाल चाल पूछेगी जब उस ने कुछ नहीं पूछा तो बोला "केदार नाथ के ऐसा बुरा लड़का हम ने कभी नहीं देखा बड़ा उस्सठ रूखा अकृतज्ञ लड़का है।"

माता—केदार नाथ कौन है उस ने क्या किया है?

श्री कान्त—एक नया लड़का है सिर्फ़ पन्द्रह ही दिन हुए कि भर्ती हुआ है। वह चला जाये तो अच्छा। ही में उस का मुंह नहीं देखना चाहता। आज नव बजे मैं ने उस से गेंद मांगा कि थोड़ी देर खेलूं, तो उस ने नहीं दिया और कहा कि स्कूल में तुम को देर होगी। भला उस को इस से क्या गरज़ कि मुझे देर होगी या सबेर होगा, मैं ने गेंद मांगा उस को देना चाहता था। फिर जब स्कूल में हिसाब का घंटा आया तो मुझे हिसाब नहीं बना था मैं ने कहा कि लाओ नक़ल कर लें तब उस ने कहा कि यह बात ठीक नहीं होगी पर मेरे दिल में यह आता है कि उस का मतलब था कि खूब बेशी नम्बर जिस में मुझ ही को मिले और मेरी तारीफ़ ही इसी से उस ने नहीं दिखलाया।

माता ने उस वक़्त कुछ नहीं कहा पर रात को जब उस का क्रोध उतर गया और वह सोने को जाता था तब बहुत ही प्रेम के साथ दिन की बात उस ने निकाली उस समय अच्छी तरह समझा दिया कि यदि केदार नाथ गेंद देता तो खेलते खेलते उस का जी नहीं चाहता कि छोड़ें इस से देर ज़रूर स्कूल में हो जाती, और अगर हिसाब नक़ल करने देता तो यह भी बड़ी अनुचित बात होती उस को फिर इसी तरह आदत पड़ जाती। यह भी माता ने श्रीकान्त से कहा कि रंज होने और बुरी बात कहने के बदले तो तुम को केदार नाथ की तारीफ़ करके उसे धन्यवाद देना चाहिये कि आज दो बुराइयों से उस ने तुम को बचाया। फिर माता ने श्रीकान्त से प्रतिज्ञा करा ली कि अब जब गेंद का काम पड़े तो खेलने के समय में मागना और जब हिसाब में मदद का काम पड़े तो केदार ही नाथ से पूछना (दूसरे का बनाया हुआ हिसाब स्लेट से नक़ल करना बड़ी बेजा बात है।)

श्रीकान्त ने सोने के पहले इस को बहुत बिचारा तो भी सन्देह नहीं गया कि उस का स्वभाव खराब है पर दूसरे दिन उस की परीक्षा फिर लेने का बिचार किया। दूसरे दिन श्रीकान्त को एक मुश्किल हिसाब मिला था जो उस से नहीं बनता था। वह सीधा केदार नाथ के पास चला गया उस ने जहां तक मालूम था हिसाब बतला दिया और

पढ़ने में भी मदद दी तब बोला "श्रीकान्त मुझे इस बात का सन्देह लगा हुआ है कि कल तुम ने हम को समझ लिया होगा कि यह चिड़चिड़ाहा लड़का है पर मैं ने जो वास्तव समझा था वही कहा था वास्तव करने में बात बहुत कठिन हो जाता है। तो भी मैं सदा इस का खयाल रखता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि लड़के पहले मुझ से बहुत नाखुश होंगे पर थोड़े ही दिनों में मालूम हो जायेगा कि यथार्थ में मैं उन को बहुत चाहता हूं। पर वैसी बातें नहीं सुनता जिस का करना मैं बुरा समझता हूं। अब आज श्रीकान्त तुम चाहो मेरा गेंद ले जाओ दिन भर काम में लाओ, यह मुझे मालूम है कि कल तक तुम्हारा गेंद नहीं मरम्मत होगा।

कई महीनों के बाद श्रीकान्त की माता ने पूछा "कहो केदार नाथ से और तुम से आज कल कैसा बनता है?" श्रीकान्त ने कहा "क्या बतावें हम के ऐसा संसार भर में दूसरा कोई लड़का अच्छा न होगा। जिन कामों से समझता है कि ईश्वर प्रसन्न होगा ऐसे ही कामों को करता है। पहले तो लड़के हम को गाली देते थे चिढ़ाते थे पर अब तो उस से लोग मोहित हो गये यद्यपि वह बहुत ही नेक और स्वभाव का धीमा है पर फुर्सत के वक्त में या स्कूल के बाद ऐसा खेल करता है कि क्या कहें; जब हम लोग अपना पाठ समझने का उद्योग कर लेते हैं और नहीं समझ पड़ता तब सब को मदद देता है। पर जब तक हम लोग कोशिश नहीं कर लेते तब तक नहीं मदद देता—जब से वह आया है स्कूल के लोग बहुत खुश रहते हैं और किसी तरह का उपद्रव नहीं होता। वह ऐसा अच्छा है कि किसी ने उस का नाम नहीं बिगाड़ा सब उस को पूरे नाम से पुकारते हैं।"

सब लड़के केदार नाथ की तरह अच्छा काम करने और सच बोलने की कोशिश करते तो कैसा अच्छा होता। पहले पहले कभी कभी कठिन मालूम होगा, पहले सब कोई उन को कुछ और समझ लेंगे, शायद हसेंगे भी पर अन्त को सब साथी प्यार करेंगे, स्कूल शान्त हो जायेगा इन सब के अलावे वही जब बड़े होंगे तो सच्चे और मान मर्यादा वाले आदमी होंगे।

जीव जन्तु।

सिंह।

अपने बल और साहस के कारण सिंह पशुओं का राजा कहलाता है। अफ्रिका के बहुत से भाग और एशिया खंड के दक्षिण भाग में पाया जाता है। तीन से चार फुट तक ऊंचा और छ से नव फुट तक लम्बा होता है।

यह बहुत ही बलवान होता है। घोड़े की खोपड़ी अपने पंजे की चोट से तोड़ देता है। गुडहीप अन्तरीप के पास एक सांढ़ को वे परिश्रम मुंह में लिये हुए, खाई तड़प कर जाते हुए लोगों ने देखा था।

शान्ति की अवस्था में बहुत ही गम्भीर और रोबदार मालूम होता है; क्रोध की दशा में बहुत ही भयावना देख पड़ता है, इतने ज़ोर से गरजता है कि दूर से बिजली की कड़क का धोखा होता है।

यह बहुत दिनों तक जीता रहता है। लंडन नगर में प्रौम्पी नाम का सिंह सत्तर वर्ष की उम्र में मरा था। जब तक भूख से लाचार नहीं होता किसी पर यह उदार जानवर नहीं टूटता। इसकी उदारता के बहुत से किस्से हैं। कई वर्ष हुए कि लंडन के टावर नाम किले में सिंह रक्खे जाते थे। उसके खाने के लिये एक दिन छोटा सा काला कुत्ता निर्दयता से किसी ने उसके पोंजड़े में डाल दिया। कुत्ता तो मारे डर के थर थर कांपने लगा और पंजा ऊपर उठाने लगा मालूम होता था कि जैसे दया प्रार्थना करता हो। सिंह ने उसको खाने के बदले पहले पंजे से किनारे हटा दिया। जब उसके खाने का आया तो वह अलग ही रहा और कुत्ते को भी खाने के लिये उसने बुलाया। उस दिन से सिंह और कुत्ते में दृढ़ प्रीति हो गई। साल भर में वह कुत्ता बीमार पड़ कर मर गया।

पहले तो ऐसा मालूम हुआ कि सिंह अपने प्यारे को समझे हुए था कि सोया है। पर जब जगाने का सब यत्न उसने वृथा पाया तो

बेचैनी से पींजड़े ही में इधर से उधर टहलने लगा। प्रीत के साथ उसकी ओर देखता और तब सिर उठा कर ज़ोर से गरजता था। रक्षकों ने बहुत चाहा कि कुत्ते को फेंक दें पर सब यत्न वृथा हुआ। शोक से अत्यन्त आतुर हो वह अपने साथी के पास लेटा और अपना पंजा उसके शरीर पर रख छाती से लगाया। पांच दिनों तक आहार छोड़ कर वह कमज़ोर होता चला अन्त को एक दिन सुबह को अपने मृत मित्र के शरीर पर उठगा हुआ, मरा पाया गया, दोनो साथ ही गाड़े गये थे।

अन्ड्रोकलीस और सिंह की कहानी।

अन्ड्रोकलीस एक ऐसे निर्दयी कठोर आदमी के हाथ गुलामी में बिका कि वह सदा उस पर ज़ुल्म और ज़ियादती करता रहता था यहां तक कि उसने अपने मन में भागने का विचार किया और अच्छी तरह सोच लिया कि जो पकड़ा भी जाउंगा तो फांसी पाकर इस नित्य की आपत्ति से छुट जाउंगा। निदान वह वहां से निकल दिन भर तो किसी कटीले जंगल में चारो ओर दौड़ता और भटकता फिरा और सांझ के समय थका मांदा भूखा प्यासा एक बड़ी सी मांद के मुंह पर पड़ रहा।

बेचारा आसमान का मारा अन्ड्रोकलीस अभी उस मांद के आगे जाकर लेटा ही था कि एक ओर से सिंह की भयावनी आवाज़ सुनाई दी तब तो बहुत डरा और चाहा कि भागें परन्तु वह सिंह सामने ही आ पहुंचा। मांद उसी सिंह के रहने की थी। जब अन्ड्रोकलीस ने देखा कि अब भागने की राह किसी ओर न रही अपनी जान से हाथ धो बैठा। परन्तु सिंह बेचारा बिपत का मारा उससे कुछ भी न बोला वरन धीरे धीरे उसके सामने बढ़ता चला आया और कुछ कराहने और रोने की सी आवाज़ करने लगा कि मानो उसको कुछ दुख दर्द है और दूसरे की सहायता चाहता है अन्ड्रोकलीस को इस दशा के देखने से मन में ढाढ़स बंधी और विचार किया तो जान पड़ा कि यह सिंह लंगड़ा कर चलता है और पैर उसका एक घाव हो जाने के कारण बहुत ही सूज रहा है। तब तो यह बेधड़क उस सिंह के पास चला गया और उसके पैर की डाक्तरों की

तरह हाथ में उठा कर देखा। उसके पंजे में एक बड़ा सा कांटा चुभ गया था उसी कारण से वह इतना सूजा था निदान अन्ड्रोकलीस ने जब जाना कि यह सिंह कुछ नहीं बोलता बरन बहुत प्यार से अपनी पूंछ हिलाता है तो उसने वे खटके कांटा खींच लिया और पंजे को दबा कर जो कुछ पीप उसमें इकट्ठी हुई थी सब बाहर कर दी। जब कांटे के निकलने से सिंह को आराम मिला तो वह अन्ड्रोकलीस के आगे हर तरह से अपनी खुशी और इंसानमन्दी की बातें दिखाने लगा, कभी उछलता कूदता कभी अपनी पूंछ हिलाता और कभी अन्ड्रोकलीस के हाथ पैर चाटता निदान उस दिन से यह अन्ड्रोकलीस उस सिंह का मेहमान हुआ, जो शिकार लाता अन्ड्रोकलीस के सामने रख देता। यह उसी शिकार से अपना पेट भरता, कई महीने इसी रीत से बीत गये अंत को हाकिम के पियादों ने जो अन्ड्रोकलीस के पकड़ने के लिये छूटे थे जंगल में ढूंढ़ते ढूंढ़ते एक दिन उसे पकड़ लिया। उस देश का दस्तूर था कि जो गुलाम अपने मालिक के पास से भाग जाता उसको सिंह के सामने डाल देते थे अन्ड्रोकलीस के वास्ते भी यही हुक्म हुआ और मामूल बमूजिब एक सिंह को जंगल से पकड़ लाकर उसके खिलाने के लिये कई दिन पिंजरे में भूखा बन्द कर रक्खा गया।

जब वह समय जो इस काम के लिये ठहरा था आ पहुंचा और हजारों आदमी इस भयंकर तमाशे को देखने के लिये इकट्ठे हुए, अन्ड्रोकलीस को खाली हाथ एक बड़े से हाते में जो इस काम के लिये बना था लाकर खड़ा कर दिया और फिर थोड़ी देर के पीछे वह भूखा सिंह भी पिंजरे में से छोड़ा गया। यद्यपि पहले तो वह सिंह बहुत ही गरजा और तड़पा और पूंछ उठाये क्रोध में भरा अन्ड्रोकलीस के सामने आया। परन्तु अन्ड्रोकलीस की सूरत देखते ही तुरत आग से पानी हो गया जैसे कोई अपने बच्चे को देख कर खुश हो जाता है इसी तरह वह सिंह भी खूब पूंछ हिलाने लगा, झुक झुक कर उसका तलवा चाटने लगा क्यों कि यह वही सिंह था जिसके पांव से अन्ड्रोकलीस ने कांटा निकाला था निदान सब लोग यह दशा देख बहुत ही अचरज में आये और हाकिम ने अन्ड्रोकलीस से इस अचम्भे की बात का भेद पूछा।

एन्ड्रीकलीस ने उस सिंह के पांव से कांटा निकालने और बहुत दिनों तक उसके यहां मेहमान रहने का सारा अहवाल अच्छी तरह से कह सुनाया। जितने आदमी उस जगह जमा थे सब के सब इस बात के सुनने से कि पशु भी आदमी का एहसान मानता है और उसके मन में भी धन्यवाद की जगह है, बहुत ही खुश हुए और सब ने मिल कर हाकिम से एन्ड्रोकलीस के अपराध की क्षमा चाही। हाकिम ने उसका अपराध भी क्षमा किया और वह सिंह भी उसके हवाले किया।

—सैन्डफोर्ड मर्टन।

लड़का और शेर ।

बहुत दिन हुए कि चार आदमी और एक दस वर्ष का लड़का, शहद की खोज में नाव पर सवार होकर जंगल में जाने के लिये चले। दोनों तीर पर बड़े बड़े पेड़ और घनी जंगल झाड़ियां थीं। जाते २ ऐसी जगह पहुंचे जहां उतरने का मुनीता था, डेंगी की निगहबानी के लिये लड़के को छोड़ वह चारो आदमी शहद की खोज में गये। लेकिन डेंगी को पहिले उन लोगों ने कीचड़ से भरे तीर पर खींच लिया था। सूर्य की गर्मी बहुत ही थी और तमाम शान्ति विराज रही थी उस सुनसान जगह में कोई आवाज नहीं सुन पड़ती थी। लड़का डेंगी में घन्टों बैठा २ थकता गया था और चाहता था कि सब साथी जल्दी आ जावें। एका एक उस की नजर डेंगी के पास तीर ही पर आते हुये एक बड़े भारी शेर पर पड़ी। जब कि उस लड़के ने उस भयंकर जानवर को अपनी ओर गुरगुरा कर देखते हुये और अपने ऊपर कूदने की तैयारी में ज़मीन से सट कर चलते हुये देखा होगा तो उसकी कैसी दशा हुई होगी!

लड़का डर तो बहुत गया था पर उसकी बुद्धि ठिकाने थी। नाव के पाटन के तख्ते के नीचे वह घुस कर चला गया। ठीक उसी समय एक तड़पान में बाघ पहुंच गया उसके बोझ से एक पैर दो तख्तों के बीच में घुस कर जहां लड़का था ठीक उसी के ऊपर जैसे फंदे में एंस गया हो, फंस गया। झट लड़के ने डोरी से जो उस के पास ही में थी उसके पांव को

बान्ध एक गिरह दे दिया और कस कर डोरी पकड़े रहा शेर खींचता रहा गुर्राता रहा पर अपना पैर नहीं निकाल सका। लड़का अच्छी तरह से जानता था कि डोरी को खूब खींच कर रखने ही में कल्याण है इस से भर जोर उस डोरी को वह पकड़े रहा। बाघ खींचता था और लड़का भी बड़ी देर तक मजबूती से खींचता रहा। आखिर बाघ चुपचाप वहीं पड़ा रहा। एक छोटा सा कैद तख्ते में था उसी में उस जानवर का बड़ा सिर उसको देख पड़ता था। शाम होते होते चारो आदमी लौटे और पहिली चीज़ उनलोगों ने यही देखा कि बाघ पसरा हुआ नाव पर पड़ा है; लेकिन लड़का कहां था? वे जोर से चिल्लाये। शेर जाग उठा और एक कोशिश पूरी करने के बाद पैर उसका निकल आया और एकही तड़पान में डेंगी से साफ निकल गया लेकिन डेंगी के चारों ओर पांका था, हर एक उद्योग में वह उसी में डूबने लगा।

अवसर अच्छा देख लाठी लेकर आदमी लोग दौड़े और उनलोगों ने शेर के सिर पर इतनी लाठी लगाई कि फिर कुछ डर उस से नुकसान का नहीं रहा। पर उस वक्त के उन आदमियों के आनन्द का कौन बर्णन कर सकता है जब कि उन में से एक का लड़का डेंगी के नीचे से निकल आया। यद्यपि वह निर्विघ्न रहा पर मिहनत और भय से थक कर उस का बदन चूर चूर मालूम होता था।

शेर या बाघ का किस्सा ।

कई वर्ष हुए बहुत से साहब लोग शिकार को निकले। दिन भर शिकार करने के बाद जब वे डेरे पर लौटे आते थे तो जंगल में एक शेर का बच्चा मिल गया जो पन्द्रह दिनों से ज़ियादे दिन का न होगा।

उस को साथ तम्बू में लेते आये और उस के गले में कुत्ते का पटा और सिकरी देकर खीमे के खंभे में बांध दिया। वहीं वह बिल्ली की तरह खेलने और कूदने लगा सब देख कर उस को बड़े खुश हुए।

दो घंटों के बाद ठीक जब अंधेरा हुआ आता था खीमे में सब हंस बोल रहे थे कि एकाएक ऐसी आवाज़ सुन पड़ी जिस के सुनने से बड़े बड़े वीरों का कलेजा भी दहल उठता।

वह शेर की गरज थी। बात की बात में वह बड़ा शेर का स्वभाव दिखलाने लगा सामर्थ भर जंज़ीर तोड़ने की कोशिश करने लगा और उस गरज की आवाज़ का जवाब उस ने ज़ोर से रीने की आवाज़ में दिया। सब आदमी काँठ हो गये किसी को कुछ न समझ पड़ा कि क्या किया जाये गरज का ऐसा ही प्रभाव था।

एकाएक खीमे के बीच में बड़ी भारी शेरनी कूदी। किसी आदमी की ओर न देख बच्चे को गला पकड़ उस ने उठाया और एक ही झटके में जंज़ीर तोड़ खीमे के दरवाज़े की ओर मुड़ी और बड़े ज़ोर से चली गई। सब के सामने बीर माता अपने बच्चे को ले गई और किसी ने बंदूक न छोड़ी इस का किसी को पछतावा नहीं हुआ।

२

जब छोटेपन ही से जिया जाये तो शेर पीस मानता है। इस देश में अक्सर ऐसे फ़क़ीर देखने में आये हैं जो अपने साथ शेर या चीता बाँधे फिरते हैं पर वह बहुत ही भयानक बात है।

एक साहब का हाल सुनने में आया है जिन्हों ने शेर पाला था और जिस से जान जाने का सामान हो गया था।

चौमारे में कुर्सी पर बैठे बैठे वह साहब एक किताब पढ़ रहे थे और शेर पास ही बैठा था। एक हाथ में उन की किताब थी और दूसरा हाथ नीचे लटक रहा था।

शेर साहब का हाथ चाटने लगा और थोड़ी देर तक ऐसा ही करता रहा। धीरे धीरे उस के गुर्राने की आवाज़ सुन साहब ने सिर फेर कर नीचे देखा तो अपना हाथ खून से तर पाया! रुखड़ी जीभ से चाटते चाटते उन के हाथ से खून निकल आया था।

साहब ने देखा कि उस की स्वाभाविक खून की चाट जाग उठी अगर हाथ खींचता हूं तो शेर तुरत हम पर टूटेगा। थोड़ी ही दूर पर नौकर था उस को साहब ने पुकारा और कहा बंदूक भरी हुई रक्खी है आहिस्ते से लाकर पास आकर उस को मारो।

कुछ न बोले। शेर की धीरे धीरे घुमाने और अपने हाथ टमे दिया। एक एक पल उन को बरस सा मालूम हो रहा ।कर तुरत ही बंदूक ले ऐसा ऐसा चुप चाप धावा कि जिस ने ध्यान न खींचे ठीक निशाना करके उस ने शेर के सीने में गोली कि वह वहीं फटपटा कर मर गया।

साहब को धीरज न होता और वह घबड़ा जाते तब तो उन का भाग जा ही चुका था।

२

शेर का शिकार अक्सर हाथी ही पर किया जाता है। घोड़ा भी सामने उस के ले जाने से जा सकता है पर यों घोड़ा नहीं जाता। पर हाथी धीरता से खड़ा रहता है और सवार लोग ऊपर से शेर पर निशाना मारते हैं।

कभी कभी जब शिकार होता है हाथी पर शेर झपटता है और अपने दांत और पंजे उस के गले या कंधे पर गड़ा देता है। तब हाथी अक्सर झुक कर अपने बोझ से उस को पीस देता है नहीं तो दोनों ज़मीन पर लोटते हैं उस वक्त बड़ी भारी लड़ाई होती है पर लियाटे शेर ही मारा जाता है। कभी हाथी अपने ज़ोर से उसे मार देता है या शिकारी के बन्दूक की गोली उस का प्राण लेती है।

भालू।

एक आदमी अपने भालू के साथ बड़ी निर्दयता का व्यवहार करता था कुछ मन में उसके आया इसमें उसने पल्टन के अफ़सर के हाथ भालू को बेच डाला। लेने के बाद ही उस को बड़ा पछतावा हुआ कि अब इसे लेकर क्या करेंगे कहां रक्खेंगे। किसी तरह उसने उसको गाड़ी में बिठा लिया और उसके खाने के लिये सकोय बहुत सी लेकर रख ली कि रास्ते को खाता हुआ चलेगा। भालू ने बड़ी नम्रता से फली को ले लिया और छील कर खाने लगा। पर भालू इतना जल्दी जल्दी खा गया कि

अब अफ़सर डरने लगा कि अब कहीं उस ही को न नौ
नहरी जल्दी कानपुर में पहुंचा तब उस के जी में जी आया।

गाड़ी से उतरते ही इतने लाल कोट वाले सिपाहियों
हुआ और अपने मालिक के पास भागा। संयोग ऐसा हुआ कि
का खाना टेबल पर रक्खा जा रहा था और अफ़सर कपड़ा पहर तुरत
कमरे में आया था। पीछे पीछे भालू भी था। टेबल के पास एक कुर्स
खाली थी झट वहां भालू जा गया और आहार की जो सामग्री थी उस
की ध्यान जमा कर देखने लगा। जौं हीं एक थाली पर से उस ने ढ-
कना इस चालाकी से उठाया जिस से जान पड़ता था कि इन बातों की
इसे आदत थी कि झट कर्नेल साहब भीतर आये। इस अनोखे को कुर्सी
पर बैठा देख बहुत रंज हुए और पूछने लगे कि इस जानवर को कौन
यहां लाया है? अफ़सर ने कहा कि "वह मेरा दोस्त ही है आप से
मुलाक़ात कराना मैं भूल गया उस दिन से फ़ौज में सब उसे बहुत प्यार
करते हैं। और उस की अस्तबल की गाड़ी पर संत्री का काम किया गया।
इस में संदेह नहीं कि वह पूरी रखवाली करता था पर अत्यन्त सब बुरा
होता है। क्यों कि एक दिन गाड़ी उस के पहरे में थी और एक सिपाही
ने चोरी से कुछ निकालने के लिये गाड़ी में हाथ डाला। भालू ने देख
कर ऐसे ज़ोर से दांत लगाया कि जन्म भर के लिये हाथ बेकार हो गया।
इसी घटना के थोड़े दिन बाद किसी सिपाही के बेटे ने भी उसी तरह
चोरी का उद्योग किया था; भालू ने देख लिया अपने पहरे से चीज़ चोरी
होना उस ने बदनामी समझ उस लड़के को ऐसा कस कर पकड़ा कि वह
मर गया। लोगों ने देखा कि कहीं खून की चोट न लगे इस लिये उस
को प्राणदंड की आज्ञा दी गई पर फ़ौज भर के आदमियों को इस बात
का पछतावा रहा।

CLEMENT'S TONIC

मरीज़ों के ख़िदमत में,

क्लेमेन्ट साहब की दवा मक़व्वी।

एक जल्द असर करने वाला क़ानिक एतबार इलाज है वास्ते नीचे लिखे हुए मरज़ों के—

पट्ठों की कमज़ोरी नुक़सान जिस्मानी फुर्ती की कमी और हर तरह की कमज़ोरी सलबी ताक़त की कमी जिरियान और मनी और परदल वग़ैरह वग़ैरह क्लेमेन्ट साहब की मक़वी इमेज़ा के लिये क़ानिक तौर पर जिस्मी फुर्ती को बहाल और बरक़रार रखती है और पट्ठों की ताक़त को ज़ियादे करती है और जवानी की पुरदिली और शबाब की पुर शोख़ी को ताज़ा कर दिखाती है जिस्मानी और अलाय रहसां की हरकाती ताक़त को उन मर्द और औरतों के ताज़े कर देती है कि जो कमज़ोर ज़ईफ़ सुस्त और सुस्ता और मांदा हो गये हैं क्लेमेन्ट साहब की मक़वी एक बख़्शाइस इल्म ही है हर तरह से इन्सान के हक़ में इस की अजीब हैरत बख़्श ताक़त ज़ाहिर होती है इसके इस्तेमाल के बाद ही और बाबत में ताकीदी शहादत उन लोगों की जो इस की इस्तेमाल में ला चुके हैं वैसे निहायत और बेशुमार हैं वह लोग बयान करते हैं कि वह हर एक मोताद की तासीर की नफ़े और फ़ायदे पहुंचाने वाली बातें हैं फ़िल हक़ीक़त यह एक ऐसी पुर तासीर मोक़वी है कि जिस से पट्ठों को ताक़त पहुंचाती है और जो हर एक रग रो पै में जिस्म के पट्ठों के ज़रिये से ताक़त बख़्श और ताज़ा करने वाला असर को पहुंचाती है हर हालत में ख़ाह जिस्मानी ताक़त बसबब मर्ज़ शदीद के कम की गई हो या सुस्ती और तकलीफ़ और मेहनत सख़्त के या किसी क़िस्म के ज़रर पहुंचाने वाली नाचक़वत अन्देशी के सबब से हो ख़ाह वो घटी हुई हालत किसी

तरह की ही जब कि पट्ठों की कमज़ोरी पाई जाये या किसी किस्म
ख़ास कमज़ोरी या हर तरह की कमज़ोरी हो जब कि सुस्ती या ज़ोफ़ य
कम ताक़ती उस मर्ज़ का बाइस हो इन हालतों में क्लीमेन्ट साहब की
मुक़व्वी ही सिर्फ़ इलाज है। जो लोग कि बदनी या क़लबी शदीद मिह-
नत के नतीजों के सबब तकलीफ़ पाते हैं या कि सख़्तियों से और सर्दी
या गर्मी बरदाश्त करने के सबब से या कि किसी नामालूम सदमे के सबब
या हिर्स वो तमें के सबब या जो लोग दानिस्त वो नादानिस्त इरकाम-ए-
क़ुदरत को न मान कर अपने को तकलीफ़ में डाले हुए हैं वह लोग क्ली-
मेन्ट साहब की मुक़व्वी को एक ऐसा इलाज पावेंगे जिस से कि यक़ीनी
उन को तकलीफ़ से नजात मिलेगी। यह मुक़व्वी बहुत ही जल्द हर
क़िस्म के ज़हूर तरक़्क़ी जिस्मी नातावती को दूर कर देती है और फुर्ती के
घटती को उस की असली ताक़त और दुरुस्तगी तक पहुंचा देती है। जब
जब कमज़ोरी बाज़ार रईस को ज़ाहिर हो या कि पट्ठों की कमज़ोरी और
घट जाना जिस्मी या क़लबी हरकत का नमूद हो या कि घबराहट खयाली
की या सुस्ती एतमाद का, या चिड़ चिड़ाहट मिज़ाज की, मालख़ौलिया,
सुज़दिली, घुटनों की या पीठ की कमज़ोरी, दिल की धड़क, सिर का दर्द
कमर का दर्द, बढ़ा रहता हो, पीठ का दर्द, दांत का दर्द, जो माहूद
वक़्त पर हुआ करे बाज़ा शिकमी, जोड़ का दर्द, बेख़्वाबी दर्द भरी, सुबह
के वक़्त सुस्ती तबीयात और जोड़ों का दर्द सोज़िश मसाना, वो गुर्दों की
सोज़िश, गदला पेशाब जो पीच की तरह छुआ करता है, ज़रर पहुंचाने
वाला और नामालूम नुक़सान जिस्म का या कि दूसरे अलामात जिस के
नतीजे हैं दिमाग़ी या जिस्मी ताक़त को नुक़सान ज़ाहिर हो मर्द और औरतों
की कामयाबी के मुक़ाबिल में एक रोक पैदा करे और उन की ज़िन्दगानी
की वाजिबात के और ज़रूरी कामों के अंजाम देने में कासिर बनावे तब
तब ऐसी हालतों में क्लीमेन्ट साहब की मुक़व्वी सिर्फ़ एक ही पुर तासीर
इलाज है और आज तक होती आई है। नौजवान लोग जो ज़िन्दगानी
के जोलानगाह में दाख़िल हुआ चाहते हैं और अपनी क़ाबलियतों पर
क़ब्ज़ा या इख़्तियार अच्छी तरह रखते हैं और कामयाबी के हद तक
अपनी मुरादों के ले जाने पर क़ादिर हो क़ायल हैं और वे अस्ल अज़्मी

और क़ाबिल सहसीन और फ़रह दिलाने वाले नुर्ती के नतीजों को हासिल करने चाहते हैं क्लेमेन्ट साहब की मुक़ब्बी उन के वास्ते पहली सीढ़ी उन के मुराद तक पहुंचने की है।

अधेड़ लोग जिनकी ढिलती हुई फुर्तियां बतलाती हैं वक़्त से आगे जवानी की तनज़ुली का आना और जो मालूम करते हैं कि रफ़्त रफ़्त वे एक बेर हम दुश्मन के हवाले में जाने को हैं और जिनकी ज़िन्दगी के ख़ज़ाने में बड़ी बड़ी हुंडियां दाख़िल की जाती हैं ताकि बचपन के क़र्ज़ सब अदा किये जावें या कि जिनके जख़ीरे फुर्ती के मर्ज़ के बायस कम हो गये हैं या सुस्ती और लापर्वाही और ज़िन्दगानी की मिहनत के सबब घट गये हों या कि किसी और और तरह से अपनी ताक़त को ज़ाया किये हों उनके हक़ में क्लेमेन्ट साहब की मुक़ब्बी एक दोस्त है जो मुसीबत के वक़्त पर दस्तगीरी करेगा और एक पुरज़ोर मदद है और एक दुरुस्त करने वाला बुरी हालतों का है जो कभी नहीं चूकेगा और वे इससे एक नई ज़िन्दगी हासिल करेंगे और बदनी ताक़त भी हासिल करेंगे और सब तरह की हालत जो फुर्ती ताज़ा कामिल तौर पर हो जावेगी।

बूढ़े लोग इस मुक़ब्बी के इस्तेमाल से इनहिज़ाज़ की पेशक़दमी को रोकते हैं और ताक़त की तनज़्ज़ुली से बच रहते हैं और अपने शबाब को दोबारा हासिल करते हैं ताक़त बदनी पाते रहते हैं और दोबारा अपनी क़ाबलतियों पर क़ाबिज़ और क़ादिर हो जाते हैं और अपनी फुर्ती और क़ाबिलियत को हमेश बहाल और बरक़रार रखते हैं।

नौजवान औरतें क्लेमेन्ट साहब की मुक़ब्बी को एक निहायत ही पुरतासीर इलाज पावेंगी जो सहलुल वसूल है। इससे हर क़िस्म की कमज़ोरी जो ख़ास कर औरतों को हुआ करती है इलाज पज़ीर होती है और दफ़ा हो जाती है इसके मुक़ाबिल में और इलाज औरतों की कमज़ोरी दूर करने का नहीं है। और नाज़ुक और नहीफ़ बदन छोटी लड़कियों के हक़ में यह बतौर आला के काम करती है और यक़ीनी पुरज़ोर ज़नाना तबियत पैदा करती है यह पुरतासीर इलाज उन बीमारियों को पैदा करती है जिसके ज़रिये से क़रर पहुंचानेवाले जरासीमों को पैदा होने से रोका जाता है और पुरज़ोर ख़ाहिशात नफ़सानी

की दबाया जा सकता है और फुर्ती की हालत के नुक़्सान का जब्र कर देता है और आज़ाय रईस के हरकात की बद इन्तज़ामी को दुरुस्त किया जाता है और पतदान पर लाया जा सकता है खलल पहुंचे हुए दीमाग़ को और मालिखोलिया और ख़याल्लात फ़ासिद के बहशत को दूर किया जाता है और ख़ुशनुमा मज़हर ख़ुदा की हमारी ख़िलक़त के हलाकत और तबाही से बचा लेता है इसके इस्त्यमाल से बराबरी दरमियान नुक़्सान औरजब्र नुक़्सान के बरकरार रक्खा गया है, नुक़्सान बेजा रोका गया है ज़रर पहुंचा हुआ को दुरुस्त किया गया है कमज़ोर किया हुआ और सिकुड़ा हुआ रगों को ताक़त असली और दुरुस्तगी दी गई है बेवक़ूफ़ी औ नादानी औ ग़लती के नतीजे दुरुस्त किये गये हैं और ग़ायत दर्जे के ज़लील और इबृत देने वाले मरीज़ अपनी तकलीफ़ों से मुख़लिसी पाये हैं और आदत पकड़े हैं मरदाना सिफ़तों से, और हिम्मत में और फुर्ती और बदनी ताक़त से। क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी से जितने लोग चंगे हुए हैं उनका एक दफ़्तर मौजूद है और जो जो बेहतरियां इस दवा ने ज़ाहिर की है वैसी ख़ूबियां हज़रत आदम के जमाने से किसी और दवा ने आज तक ज़ाहिर नहीं की। मांग भेजने से हम लोग तफसील कामिल और सनदें वग़ैर किसी ख़र्च के हर कहीं भेज सकते हैं मरीज़ों को चाहिये कि बहुत ख़बरदारी से इस दवा को ख़रीदें क्यों कि हर जगह पर नक़ली दवा बिक रही है और उनको बड़ी ख़बरदारी करनी चाहिये जिसमें उन्हें सिर्फ़ क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी मिले। और यह भी ख़याल रहे कि अक्सर नक़ली या जाली दवा भी असलकश्ल के निस्बत ज़ियादा ज़रर पहुंचाती है।

क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी तलब करो हर एक दवा फ़रोश इसको बेचता है।

J. M. Clements

यह दस्तख़त—हर एक दवा के बीतल पर है।

न्यूटाउन, सिडनी
आस्ट्रेलिया
} मरीज़ों के ख़िदमत में।

बिहार-बन्धु सम्बन्धी कायदे।

१। बांकीपुर में बिहार-बन्धु की पेशगी सालाना कीमत १॥) एक रुपया दस आना मुफ़स्सिलमें भी एक रुपया दस आना, पर डाक महसूलका ।) छ आना अलग लगता है। इससे मुफ़स्सिलमें कुल २) दो रुपया हुआ। छ महीनेका सवा रुपया और तीन महीने का बारह आना राजा महाराजाओंसे कुछ नियम नहीं इस को सहायतार्थ जो देंगे स्वीकार होगा।

२। बिहार-बन्धु के प्रति खंड का नक़द दाम अभी नव पैसा रक्खा गया है।

पेशगी कीमत।

३। बिना पेशगी दाम पाये किसी को नहीं भेजा जाता। गाहकों को मनीऑर्डर द्वारा रुपया भेजना चाहिये। इस में नाम ठिकाना, डाकघर, ज़िला साफ़ साफ़ लिखना चाहिये।

४। जिन को मनीऑर्डर भेजने में अधिक सुभीता न होतो उनसे डाकघर के मार्फ़त इस रुपये वसूल कर लेंगे। पर इस में दो आना गाहकों को अधिक देना होगा। मतलब यह है कि यदि गाहक लोग मनीऑर्डर के ज़रिये रुपये भेज दें तो हम को सुभीता है। डाकघर के मार्फ़त वसूल करने में हम लोगों को बहुत झंझट उठाना पड़ता है और भूल चूक होने का भी भय है।

चार बिहार-बन्धुमें एक बंशी।

५। यदि कोई इकट्ठा एक नाम से चार बिहार-बन्धु लें तो उन को एक बिहार-बन्धु बतौर नज़र के मिलेगा।

लड़कों के लिये।

६। स्कूल में पढ़ने वाले लड़के अगर छापाख़ाना में आकर ले जायें तो उन को फुटु नम्बर का नक़द सात पैसा और पेशगी दे जायें तो एक रुपया चार आना साल भर का देना होगा।

७। दूसरे शहर के लड़के यदि अपने पंडित वा मास्टर से चीठी लिखवा कर पेशगी रुपया भेजेंगे तो उन को भी किफ़ायत में मिलेगा ही पर छ आना महसूल का अलग लगेगा यानी एक रुपया दस आना देने से मिलेगा।

विज्ञापन का नियम।

८। मासिक पत्र के साथ का विज्ञापन बहुत दिनों तक रहता है। इस में विज्ञापन छपवाने वालों को विशेष लाभ की संभावना है।

पहलीबार	प्रति पंक्ति	।/)
दो महीने तक का	,,	॥/)
तीन महीने तक का	,,	॥)
चार महीने तक का	,,	।/)
पांच महीने तक का	,,	।/)
छ महीने तक	,,	।/)

एक बरस या इस से बेशी दिनों तक एक पेज इश्तिहार का ७) महीना

इश्तिहार यदि आधा पेज से कम होगा और बरस दिन या ज्यादे दिनों तक छपेगा तो।) प्रति पंक्ति लिया जायगा।

हर हालतमें इश्तिहार की कीमत पेशगी भेजना चाहिये पर बरस दिन या बशी दिनों तक इश्तिहार छपवाने वालों से ४ महीने तक का पेशगी दाम मिलने में भी काम चलेगा।

९। विज्ञापनमें ब्लौक या तस्वीर भी छप सकती है। मैनेजर

बिहार-बन्धु छापाख़ाना बांकीपुर।

Health Wealth and rPosperity.
Established 1880.

जी० बी० नायक और कंपनी

बिजली की अंगूठियां, पुतलियां, कड़े, कलम, गलपट्टे,

१००००० हरएक चीज पर

से अधिक बिकीं,  जी० बी० अन० (G.B.N.

खोटा माल लेना नहीं देख लीजिये,

गुडरक्त मनुष्य का जीवनाधार तथा विद्युल्लता रक्त का जीवनाधार है अत्यन्त सस्ती इस छोटीसी बटरी से शरीर का खून दूषित होने के कारण उत्पन्न होनेवाले अनेक रोगों को आराम होता है कमजोरी, सन्धिवात, शिरोगत वायु अर्द्धवायु पेट में वायु पीड़ा होना, शरीर में चमक और तीव्र पीड़ा हड्डियों में पीड़ा, नपुंसकता कमर दुखना, फोड़ा, बरम पैदा होना, जी घुमना, मृगी, हाथ पैर गलना, स्त्रियों का प्रसूत इत्यादि कलेजे की पीड़ा, सब प्रकार के बुखार अर्द्ध कपाली माथे की पीड़ा कबजियत छाती की जलन गले का बरम सब प्रकार की बवासीर पेट की कमजोरी निन्द्रनाश मूत्राशय के रोग दमा खांसी गलकर्ण त्वचा विकार प्रमेह और दूसरे रोग इस बैटरी के धारण करने से आराम हो जाते हैं सो जगत प्रसिद्ध है बिजली के गलपट्टे छोटे २ बालकों के दांतसुगम रीति से निकलने का उपाय बिजली के कलम जिन की धारण शक्ति घट गई हों उन को या जिन का हाथ लिखने में कांपता हो उन को इस कलम का और अंगूठी का गुण देखना उचित है अवश्य लाभ उठाइये।

बिजली के माल का भाव।

पीतल की अंगूठी	१॥)	पीतल की पुतली	१)
चांदी की "	३)	चांदी की "	३)
सोने की "	१०)	सोने की "	२२)
धातू की कलम	१॥)	हाथ के दंड का कड़ा	१।)
गलपट्टा	१॥)	कैमीकल अंगूठी	२)

एक साथ १२ नग लेने वालों को एक नग ज्यादा मिलेगा नकद दाम आने पर वा वेल्यु-पेबल पार्सल में मंगाने से माल भेजा जायगा। उधार नहीं नकद व थोक माल खरीदने वालों से पार्सल कराई न ली जायगी सब वस्तु पर (G. B. N.) ये अक्षर रहा करते हैं अंगूठी या कड़े के लिये मंगाने के साथही अंगूठी या दंड का नाप जरूर भेजना चाहिये यानें अंगुल या दंड का गोलाकार अथवा बारीक सूत की अंगूठी अवश्य भेजना चाहिये, डाक महसूल १ से ६ तक ।≠) अलग देना पड़ेगा सब प्रकार की चिट्ठी पत्री नीचे लिखे पते से आना चाहिये। हमारा) माल फक्त हमारी ही दूकान पर मिलेगा। मंगानेवाले अपना नाम अंगरेजी वा हिन्दी में गांव डाकखाना और जिला वगैरह साफ लिखे।

जी० बी० नायक ऐन्ड कम्पनी,

भावनगर गुजरात।

THE

BEHAR-BANDHU

बिहार बन्धु

A MONTHLY HINDI JOURNAL

NOVEMBER 1893 VOL. XXII—NO 11

मासिक पत्र।

नवंम्बर १८९३। बाईसवां भाग—नम्बर ११

१ प्रभुभक्त बीरों का साहस।
२ रोहतास गढ़।
३ छोटा नागपुर का राज।
४ रेलगाड़ी गुरुगुरू।
५ शिशु मन रंजन।।
६ जीव जन्तु।
७ इतिहार।

बांकीपुर

"बिहार-बन्धु" छापाखाना

१८९३।

प्रभु भक्त बीरों का असाधारण साहस।

सन १८२० ईस्वी और श्रावण का महीना। महाराव किशोरी सिंह कोटा के सिंहासन पर बैठे। नगर में चारो ओर आनन्द फैला। हाथी घोड़े आदि सज सज कर राज सभा के एक ओर खड़े हैं सवार लोग जंगी पोशाक में अपूर्व वीरत्व महिमा का परिचय दे रहे हैं। महाराव किशोरी सिंह सज धज कर सभा में जड़ाऊ सिंहासन पर बैठ गवर्नर जनरल के प्रतिनिधि से राज धर्म पालन के विषय में प्रतिज्ञा कर चुके हैं। हर कुलोत्पन्न बीर राजपूतों की जय ध्वनि से पुण्य भूमि हरवती पूर्ण हो उठी।

यह आनन्द लेकिन बहुत दिनों तक नहीं रहा प्रजाने अपने नये राजा पर जो प्रीति दिखलाई थी वह बहुत दिन तक कोटा में न रही। क्यों कि थोड़े ही दिनों बाद राज में विरोध फैला। कोटा के प्रधान मंत्री राज राणा ज़ालिम सिंह और किशोरी सिंह में विरोध हुआ। ज़ालिम सिंह किशोरी सिंह के पिता उमेद सिंह के शिक्षक स्वरूप थे। राजकाज सम्बन्धी भी बहुत सी बातें उनके हाथ थी। अब इस बूढ़े मंत्री और महाराव किशोरी सिंह में मनमुटाव हुआ। पुरानी प्रीति और एकता की जगह डाह और अनैक्यता आ घुसी। यहां तक कि दोनों लड़ाई के मैदान में जा डटे। आपस की लड़ाई में हरवती का आदमियों के खून से रंगे जाने का सामान हुआ।

एक दिन ज़ालिम सिंह की फौज एक छोटी नदी के किनारे किनारे होकर महाराव से भिड़ने को जा रही थी। तीर पर की भूमि बहुत ऊंची पर्वत की तरह आकाश की ओर उठी हुई थी। इसी ऊंचे तीर पर हो कर प्रायः आठ हज़ार सेना बीस तोपें ले कर धीरे धीरे जा रही थी। एका एक इनकी गति रुकी। नदी तीर के पास ही किनारे पर एक ऊंचे मिट्टी के टूहे पर से गोली पर गोली आने लगी और इस फौज के सिपाही गिरने लगे। गोली की वर्षा रुकती नहीं। तड़ातड़ गोलियां आकर अगली फौजके बहुतोंको घायल करने लगी बहुत

से तो गिरे और पड़ेही रह गये। फौज अचम्भे में आकर मिट्टी के ढूहे को देखने लगी, जकथक हो गई क्या देखती है कि कुल दो मनुष्य बीरों ही ने राह रोकी। दो बीरों में से एक ढूहे के पीछे से बंदूक में गोली भर कर देता है और दूसरा बेचूक निशाने से गोली बरसा कर शत्रुओं का नाश कर रहा है। एक ओर आठ हज़ार फौज और बीस तोप और दूसरी ओर कुल दो बीर पुरुष जिनके पराक्रम से इतनी फौज रुक गई और उनके गोली के भय से खड़ी हो गई। ये बीर दोनो महाराज किशोरी सिंह के प्रभु भक्त सिपाही थे। पुण्य भूमि हरवती के हर कुलोत्पन्न बीर्यवन्त क्षत्रिय थे। आज इन बीरों ने इतनी फौज से मुक़ाबला कर अपूर्व बीरता और प्रभु भक्ति दिखलाई।

इन बीरों की गोली से रुक कर लाचार हो विपक्षियों ने उनके सामने दो तोपें लगाईं। तोप की आवाज़ सुनते ही दोनो बीर उसी ऊंचे ढूहे पर चढ़ गये और अत्यन्त साहस और गम्भीरता से अपनी तेजस्विता के उचित सन्मान के लिये विपक्षियों को उन्हों ने अभिवादन किया। विपक्ष सेना से गोली बरसने लगी। गोली की चोट से दोनो बीरों का शरीर घायल हो गया। इस तरह घायल होने पर भी वे दोनो शत्रुओं के संहार करने से न रुके। यद्यपि इनके आक्रमण से विपक्ष दल की बहुत हानि हुई थी तोभी उस सेना के अफ़सर लोग बहुतेरे असाधारण बीरता और साहस के लिये उनको जीता रखना चाहते थे। तुरत गोली की वर्षा बन्द करने की आज्ञा हुई। सेना आज्ञा पालन कर धीरे धीरे चलने लगी। इसको हुक्म था कि केवल दो सिपाही उन दो सिपाहियों से लड़े। यह सुनते ही दो जवान रोहिला आगे बढ़े। ये दोनो बीर तो गोली की चोट से घायल हो रहे थे, बराबर लोहू के बहने से उनका बल घट गया था तो भी इस मुक़ाबले से हट न सके। अत्यन्त साहस से लड़ कर दोनों उसी ऊंची जगह पर गिर गये फिर उनको होश न हुआ आज कल के समय में भी हरवती के हरबोर ऐसे बीर और सपूती थे। ऐसा साहस और बीरता दिखला कर उन दोनो ने अपनी जन्मभूमि की कीर्ति बढ़ाई थी।

रोहतास गढ़ ।

ज़िले शाहाबाद में रोहतास गढ़ बहुत पुराना स्थान है। सूर्य्य-वंशीय राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व के नाम से किले का नाम रक्खा गया है। किले के भीतर सूर्यदेव की मूर्ति एक बड़े मंदिर में स्थापित थी और नित्य बड़े समारोह से वहां की अर्चना होती थी पर दुष्ट बादशाह औरंगज़ेब ने उसे तोड़ डाला। हरिश्चन्द्र के समय से सन ईस्वी ११०० तक किले का कुछ हाल नहीं मिलता पर सन ११०० में प्रताप धावला नाम एक हिन्दू राजा के हाथ में यह किला था और इन ही के बेटा रोहतास गढ़ के आखिरी हिन्दू राजा हुए। सन १५३८ में पठान शेर शाह ने किला अपने हाथ लिया। शेरशाह तो भारत वर्ष के इतिहास में बड़ा नामी हो गया है यही हुमायूं बादशाह को कर्मनाशा नदी के तीर पर चौसा की लड़ाई में हरा कर दिल्ली का बादशाह हो गया। शेरशाह ने किला दखल करते ही उसका संस्कार करना आरम्भ किया पर पास ही एक बढ़िया किला बनाने लायक जगह मिल जाने के कारण अपने नामसे शेर गढ़ नाम एक किला बनाया।

राजा मानसिंह जब बंगाला और बिहारके सूबेदार हुए तो रोहतास गढ़में रहने लगे। आज तक भी जो हवेलियां देख पड़ती हैं सभी उनकी बनवाई हैं। यह बात संस्कृत और फ़ार्सी भाषा में लिखी है। मानसिंह के मरने पर जब जो बादशाह का वज़ीर होता था उसी के आधीन यह रहता था और वही यह किला किसी के सपुर्द कर देता था। सन १६४३ ईस्वी में बादशाह का लड़का शाह जहान जब बापसे बिगड़ा तो रोहतास गढ़ के अधिपति ने उसके परिवारों को आश्रय दिया था। अधिपतिके आधीन किलेका एक रखवारा भी मुकर्रर होता था वह किलादार कहलाता था। किले की रक्षा के खर्च के लिये चौदह ज़मीदारियां निकाल दी गई थीं। तहसील के लिये एक दीवान नियत था। चार पांच सौ किले के रखवारे थे इनके अलावे किले में हज़ारी (सरदार जिसके आधीन हज़ार सिपाही हों) अपने सिपाह के साथ रहता था। हज़ारी का पद खानदानी आदमियों को और पहले पहले राजपूतों को मिलता था पर १८१० ईस्वी में इस काम पर मुसलमान मुकर्रर हुआ। किले के निकट ही नगर में सिपाहियों के परिवार रहते थे। इनके अलावे चार हज़ार बन्दूक वाले पहाड़तली के भिन्न भिन्न भागों में रक्षा करने के लिये नियुक्त थे। सन

१७६४ ईस्वी में मीर क़ासिम उदय नाला की लड़ाई में जब हारा तो उसने अपने स्त्री और दूसरी स्त्रियां लड़के लड़कियां (कुल १७०० मनुष्य) और बहुत सा धन सब को लाला नौवत राय के पास रोहतास गढ़ में भेज दिया। उनके पहुंचनेके कुछ दिन बाद नौवत रायके मरनेपर शाह मलन को किले का भार मिला। बक्सर की लड़ाई में जब मीर क़ासिम हारा तो शाह मलन ने प्रधान स्त्री को धन रत्नादि के साथ स्वामी के पास भेज दिया। मीर क़ासिम ने दीवान को जब अंगरेज़ों के हाथ क़िला देने को लिखा तो थोड़े दिनों तक कर्नल गोडार्डने क़िलेको अपने दखलमें रक्खा।

क़िला पूर्व पश्चिम दो कोस, उत्तर दक्खन ढाई कोस और घेरमें चौदह कोस है। अब बहुतसा स्थान खुला हुआ है और पत्थरों से भरा है। क़िले में चढ़ने के लिये तिरासी राह हैं उनमें प्रधान चार कोस घाट और बाक़ी को घाटी कहते हैं। सबसे सीधा राज घाट है पर तो भी चढ़ने में बड़ा कष्ट होता है। क़िले का एक भाग अजय करनेके लिये खाई खोदने में हाथ लगाया गया था पर खोदने के समय एक स्थान में पत्थर से खून निकला इससे काम बंद कर दिया गया। इस स्थान की हिन्दू लोग पूजा करते हैं।

क़िले में हिन्दू राजाओं की कीर्ति प्रायः सभी लोप हो गई है। हवेली के निकट बान राजा, गौर राजा और चन्द्रभान राजा नाम तीन तालाब हैं। पहाड़की तराई के पूर्व दक्षिण कोने पर रोहिताश्व का बनाया "डोरी" नाम पुराना मंदिर औरंगज़ेब ने ध्वंस किया। मंदिर एक पहाड़की चोटी पर स्थापित है पर्वत पर चढ़ने से सोन नदी के पार बहुत दूर तक देख पड़ता है। मन्दिर पुराना होने पर भी पहाड़ पर चढ़नेकी सिढ़ियां जो राजा मान सिंह की बनवाई सी मालूम होती हैं आज भी वैसी की तैसी हैं। मंदिर के पास औरंज़ेब ने एक मस्जिद बनवाया था। सीढ़ीके नीचे मान सिंह का बनवाया एक छोटा पर अति सुन्दर एक मन्दिर है। राज घाटके पास क़िला के अधिपति की हवेली का खंडहर है वहां दो मंदिरों को छोड़ और कुछ नहीं है। उन में मान सिंह के मंदिर की तरह सुन्दर और कहीं नहीं देखने में आता। दूसरा जैनियों का तीर्थ मंदिर है।

महल उत्तर दक्षिण बना हुआ है और पश्चिमकी ओर सिंह द्वार है। द्वार बहुत बड़ा और दोनो बाजू हाथी की मूर्ति है। जहां राज काज होता था वह स्थान देखने में बहुत सुन्दर है। उसका नाम बारहदरी है।

छोटा नागपुर का राज।

इस देश का नाम छोटा नागपुर क्यों पड़ा, यहां के महाराज की कौन वंश के हैं यह जानने के लिये बहुत से लोग उत्सुक होंगे। रांची से एक कोस पूर्व "चुटिया" नाम एक छोटा सा गांव है। नाग वंशीय छोटे नागपुर के राजाओं का इसी गांव में वास स्थान था। "चुटिया नागपुर" का अपभ्रंश "छोटा नागपुर" है। गांव के नाम से देश का नाम पड़ा। पहले देश का नाम भी नागपुर नहीं था। जब इस भागमें मनुष्यों की बस्ती नहीं हुई थी, देश जंगलों से ढंका था तब उसका नाम झाड़खंड [जंगल महाल] था। धीरे धीरे मुंडा और उड़ावन [धांगड़] जाति आकर बास करने लगे। ये आदिम निवासी एक एक गांव में एक एक परहा या सरदार के आधीन बास करते थे। काल क्रम से छोटा नागपुर के महाराज से परहा लोग हार गये याने उन लोगों ने आधीनता स्वीकार कर ली। नागवंशीय छोटा नागपुर के राज वंश की उत्पत्तिके सम्बन्ध में जो प्रवाद है वह अब कहा जाता है।

राजा जनमेजय के सर्प यज्ञ से सर्पराज ने छुटकारा पाकर मनुष्य का आकार धारण कर काशी की यात्रा की और वहां पार्वती नाम एक ब्राह्मण कन्यासे उन्होंने विवाह किया। सर्पने मनुष्य देह धारण तो किया पर वह सर्प की दो जीभ बदल न सका। एक दिन उसकी स्त्रीने यह देखा। स्त्री से जीभ की बनावट का कारण छिपाने के लिये दोनोंने उड़ीसा में श्री क्षेत्र की यात्रा की। लौटने के वक्त वे मुण्डा, उड़ावन की बस्ती और झारखंड देश होकर चले आते थे। सुतियाम्बा पर्वत के पास जब पहुंचे तो पार्वती को प्रसव पीड़ा हुई। इस संकट के समय में पार्वतीने फिर अपने पतिसे जीभ की बात पूछी। अपना वृतान्त कहनेसे तुरत उसी क्षण अपना देह धारण कर स्त्री को त्याग करना होगा यह जान कर भी प्रसव कालमें स्त्री की इच्छा अपूर्ण रखना अनुचित समझ सब भेद उसने कह दिया। पार्वती को अपना परिचय दे नाग राज उसी क्षण पास ही के जलाशय में शयन हो गया। अपने दोष से इस महाविपद

को होते देख पार्वती अधीर हो गई। रोते और सन्ताप करते करते उसे पुत्र पैदा हुआ। पुत्र का मुंह देख सुखी न हो उसी दम चिता बना स्वामी का अनुगमन उसने किया। इसी समय एक ब्राह्मण वहां आये। उनके पास सूर्यदेव की एक मूर्ति थी। प्यासे ब्राह्मण जलाशयसे जलपान कर जोड़ी देव मूर्त्ति फिर उठाने लगे तो किसी तरह वह भूमि से अलग न हुई। अचरज में आकर चारो ओर नज़र घुमाने पर क्या देख पड़ा कि पास ही में एक तुरत का उत्पन्न लड़का सोया है और उस पर एक अजगर सांप फन उठाये छुप रक्षा कर रहा है। उस बड़े सर्पने ब्राह्मण को अपना परिचय देकर कहा कि हमारा पुत्र यही तुरत का जन्मा लड़का इस देश का राजा होगा, देश का नाम नागपुर कहलायेगा और राजा का नाम फणिमुकुट राय कहलायेगा ब्राह्मण राजपुरोहित और वह देव मूर्त्ति राज विग्रह होगी। काम पड़ने पर हम फिर दर्शन देंगे यह कह कर नागराज लड़का ब्राह्मण को सौंप जंगल में गायब हो गया। इसी प्रवाद के अनुसार नागपुरके महाराज और नागवंशीय प्रधान लोग इस तरह पगड़ी बांधते हैं मानो सांप छिपा कर ललाट पर फणा उठाये हैं। महाराज की राज मुहर में एक मनुष्य का मुख बना रहता है और उसपर एक सर्प फणा उठाये रहता है इसके अलावे और और राज चिन्ह भी रहते हैं। ब्राह्मणने मदुरा नाम क मनुष्य को शिशु पालन का भार दिया। लड़का जब बारह वर्ष का हुआ तो छोटे छोटे राजा [सरदार] मदुरा ने और और सरदारों को बुलाया। सरगूजा और पाटकुम के राजा बुलाये गये। सबने स्थिर करके फणीमुकुट राय को छोटा नागपुर का राजा बनाया। उस समय में उड़ाइन लोग (धांगड़) छोटा नागपुर के उत्तर भाग में रहते थे। आज कल के पांचेट राजा के पुरखा शिखर भूप राजा की कन्या से फणी-मुकुट का विवाह हुआ। विवाह में फणी मुकुट के जन्म वंश और परिचय आदि के विषय में पांचेट ब्राह्मणों ने बड़ा गड़ बड़ मचाया। सर्प राज ने फिर दर्शन देकर उसका निवटारा कर दिया। विवाह में मुंडा और धांगड़ों ने शराब पी कर अन्त की लड़ाई दंगा कर आनन्द में विघ्न डाला। मदुरा का वंश आज तक वर्त्तमान है।

आज कल उनकी अवस्था हीन है तो भी आदि राजा के प्रतिपालक होने के कारण उनका विशेष सन्मान होता है। जहां जहां नागवंशीय राजाओं ने वास किया था वहां "इन्द्र पर्व" नाम मेला होता है। उस मेले में मदुरा का छत्र छोटा नागपुरके महाराजके छतके पहले उठाया जाता है।

नागवंशीय राजाओं का राज्य और प्रताप जितना बढ़ने लगा उतना ही वे असभ्य प्रजाओं पर घृणा दिखलाने लगे। असभ्यों ने देखा कि राज वंश पहला उपकार भूल कर अकृतज्ञ हो गया इस से वे विद्रोही हो गये। राजा लोग भी दूसरे देश से आदमी बुलाकर उनको दमन करने लगे। बढ़न्ती के साथ राजा भी हिन्दू हो गये। राज में बहुत क्षत्रिय और ब्राह्मण जागीर पाकर बस गये। बहुतसे आदिम निवासी जनेऊ का आदर मान देख धीरे धीरे हिन्दू देव देवियों को मानने लगे। पर अधिकांश मुण्डा और धांगड़ पहले ही के से हैं। यहां ज्येष्ठता के अनुसार लड़का राज का अधिकारी होता है। पर राजवंश के लड़कों को भरण पोषण के लिये जागीर मिलते है। इन में यदि कोई निर्वंश हो गया तो यह जागीर राजमें मिल जाती है।

छोटानागपुर दुर्गम होने के कारण मुसलमानोंके हाथ नहीं आया। अकबर शाह की अमलदारी में पहले पहले छोटा नागपुर ने यवनों की आधीनता स्वीकार की। अकबरनामा में लिखा है कि ९८३ हिजरी में [१५७५ ईस्वी] शाहबाज़ खां ने कम्बु कोकर पर चढ़ाई की थी उड़ीसा और दक्षिण के बीच के देश कोकरा में उस समय मधु सिंह राजा थे। राजा ने समझा था कि हमारे देश में चढ़ाई करना कठिन है इस लिये उसने आधीनता नहीं स्वीकार की। इस लिये बादशाह की फौज ने देश में प्रवेश कर लूट लिया। अन्तको राजाने मालगुज़ारी देना और दिल्ली के आधीन होना स्वीकार किया। ४ बरसोंके बाद कोकरा के राजा मधु और लक्ष्मी राय इसुफ़ चक कश्मीरी के आधीन फौजमें भर्ती हो और और राजाओं के साथ दक्षिण बिहार की मुसलमानी सेना के सहित झाड़खंडके बीच होकर मेदिनी पर की ओर गये वहां उड़ीसा देश जीतने को बादशाही [illegible]ये, उनसे जा मिले।

छोटा नागपुर का राज.

एक कारण और है जिससे छोटानागपुर का नाम सबके मुंह से सुनने में आता है। इस देश में अब तो रेल बन गई और सोना मिलता है इस से हाल में एक कम्पनी कायम हुई थी। यह बात बिलकुल बेमूलक नहीं है कि छोटानागपुर में कीमती रत्न पाया जाता है। सोना नदी के किनारे आज भी सोना पाया जाता है। और यह बात जहांगीर बादशाह लिख गया है कि इस देश में हीरा भी मिलता है। बिहार के सूबेदार इब्राहीम खां ने बादशाह को लिखा था कि हमने कोकड़ा (छोटानागपुरका अंश) पर चढ़ाई करके वहां के हीरे की खान पर दखल जमाया है। शंख नदी के तीर पर हीरा पाया जाता है। जब नदी का जल सूख जाता है तो उस समय बहुत से गोराडा (स्तूप) और आड टल्ला (गहड़ा) निकल आता है। हीरा निकालनेवाले अच्छी तरह जानते हैं कि जिस ढूहे पर भींगारा म का कीड़ा इधर उधर फिरता है वहीं हीरा मिलता है। वे उस जगह के कुल पत्थरों को इकट्ठा करके हथौड़ीसे तोड़ हीरा इकट्ठा करते हैं। कभी कभी एक एक हीरा लाख लाख रुपये की कीमत तक का मिल जाता है। इब्राहीम खां ने जब चढ़ाई की थी (१६१६ ईस्वी) शंख नदी और उसके आस पास के देश दुर्जन शालके आधीन था। पहले बिहार के मुसलमान सूबेदार जब कोकड़ा पर चढ़ाई करते थे तो राजा उन लोगों को दो एक कीमती हीरा नजर में देकर सन्तुष्ट कर वापस कर देता था। जब बादशाह जहांगीर ने इब्राहीम को सूबेदार बनाकर भेजा तो यह हुक्म दे दिया था कि बिहार पहुंचते ही कोकड़ा पर चढ़ाई करो। बादशाह की आज्ञानुसार इब्राहीम ने जब कोकड़ा पर चढ़ाई की तो राजा ने कई हीरा और हाथी भेजा। पर इब्राहीम इस पर कुछ ध्यान न देकर फौज के साथ आगे बढ़ा। राजा को अपनी रक्षा की सुहलत न मिली इससे एक गुफा में जाकर छिपे। पर इब्राहीम की फौज ने पता पाकर राजा, राजा की माता और विमाता और राजा के भ्राता को पकड़ कर उनके पास जितना हीरा था सब छीन लिया। इसके अलावे २३ हाथी उनके हाथ लगे। इस तरह यह देश बादशाह की अमलदारी में आया और नदी से जितना हीरा निकलता था सब दिल्ली में पहुंचाया जाता था।

कर्नल डैल्टन के क़लमी वृत्तान्त से लिकर मिस्टर ब्लोकमैन साहब ने लिखा है कि छोटा नागपुर के महाराजा दुर्जनशाल महाराज ने जब कई बरस तक दिल्ली के बादशाह को कर नहीं भेजा तब नवाब इब्राहीम खांने दो हज़ार सवार और दूसरी फौज के साथ दुर्जनशाल को हरा कर कैद किया। महाराज ने अपने को छुड़ाने के लिये चौरासी करोड़ की क़ीमत का रत्न, सोना और चांदी देना स्वीकार किया था तो भी नवाब ने न छोड़ा और दिल्ली भेज दिया। वहां से बेड़ी डाल कर ग्वालियर के क़िले में राजा भेजे गये। इस अवस्था में बारह बरस बीत गये। एक बार दो हीरे बादशाह के पास आये, जौहरियों ने परख कर अच्छे को दाग़ी बतलाया और खराब को अच्छा ठहराया। दुर्जनशाल को हीरे की परख खूब थी इस लिये बादशाह ने उनको बुलवाया और हीरा परखने को कहा। दुर्जनशाल ने हीरे में दाग़ दिखला कर अपनी बात साबित करने के लिये दोनो हीरे एक भेड़ की सींग में बांध एक दूसरे भेड़े से उसे लड़ा दिया। दागी हीरा टूट कर दो टुकड़ा हो गया पर दूसरे का कुछ न हुआ जैसा तैसा रहा। बादशाह ने बहुत खुश हो दुर्जनशाल को कैद से रिहाई की आज्ञा दी और साथ ही उसके धनरत्न भी वापस करनेका हुक्म दिया। बिदा होते समय बादशाह ने राजा को एक वर देना चाहा तब राजाने हाथ जोड़ ग्वालियरके क़िलेमें दूसरे दूसरे और जो राजा कैद थे उनके रिहाईकी प्रार्थना की। बादशाहने मंजूर करके और एक प्रार्थना मन्जूर करना चाहा। तब राजा ने अपना पूर्व पद और बादशाह के सामने बैठने का अधिकार मांगा। बादशाह ने राजा की प्रर्थना पूरी की। तबसे कोकड़ा के राजा का सालाना छ हज़ार रुपया कर मुकर्रर हो गया।

रेल गाड़ी शुरू शुरू।

उन्नीसवीं सदी के शुरू में एंजिन की पैदाइश हुई। सब से पहले जौर्ज स्टीफ़न्सन ने एंजिन की मदद से माल की आमदनी और रफ़्तनी की चाल निकाली। पर स्टीम एंजिन से कोई चीज़ खींची जा सकती है यह बात १८०८ ईस्वी में डार्ट में काम करने वाले ट्रेविथिक नाम एक

रेल गाड़ी शुरू शुरू।

आदमी ने पहले पहल निकाली। लन्डन नगर में आज कल जहाँ युस्टन स्क्वायर है उसी के पास उस समय न्यूरोड नाम एक सड़क थी उसी के किनारे एक बड़ा भारी मैदान था। ट्रोविथिक ने इसी मैदान में चक्कर की तरह रेल बिछा कर अपनी ईजाद की हुई चीज़ दिखलाई थी। एक एंजिन एक गाड़ी को घंटे में १२ मील के हिसाब से खींच कर ले गया था। जिस दिन यह तमाशा दिखलाया गया था उस दिन वहाँ मनुष्यों की भीड़ और तमाशा देखने वाले मोहित से हो गये थे। उसके बाद १८१३ ईस्वी में ईडली साहब ने "पैकिंग बिली" नाम की एक एंजिन तइयार की। इस एंजिन के पहिये में बहुत कुछ तरक़्क़ी की गई थी। इस वक़्त में एंजिन से धूंआं निकालने का कोई ठीक बन्दोबस्त न था। एंजिन में धूंआं निकलने का जो नल था उससे आपसे आप सिर्फ़ धूंआं निकलता था। इस धूंएं से सड़क पर चलने वाले गाड़ी घोड़े भड़कते थे। गाय बैल डर कर भ. थे इससे एंजिन चलने के समय लोगों के रोज़गार में बहुत हर्ज होता था। अन्त को धीरे धीरे धूंआं निकालने का भी उपाय निकला। १८१५ ईस्वी में जौर्ज स्टीफ़न्सन ने "लोकोमोशन" नाम एंजिन बनाया। यह घंटे में १६ मील के हिसाब से चलता था और १८२५ ईस्वी में स्टौकटन और डारलिंगटन के बीच खान से निकाली हुई चीज़ों को भेजने के लिये रेल की लाईन बिछी थी उसी पर पहले ही पहल चलाया गया। इस एंजिन की कलों में बहुत कुछ उन्नति दिखलाई गई थी। यह वज़न में प्रायः ८ टन था (एक टन प्रायः २८ मन का होता है) एंजिन चलने के समय नल बराबर धूंआं निकलने के कारण गर्म हो कर लाल रंग का हो जाता था। उस समय एंजिन की गाड़ी पर लोग आते जाते न थे। अन्त को १८३० ईस्वी में लिवरपुल से मैनचेस्टर तक जो रेल की सड़क तइयार हुई उसी पर मुसाफ़िरों की गाड़ी पहले पहल चलाई गई।

इसी समय कई आदमियों ने अपनी अपनी अक़्ल लड़ा कर बहुत से एंजिन बनाये थे। और सभी से काम लिया जाता था। आख़िर लोगों की सलाह यह ठहरी कि सब एंजिनों में कौन उम्दा है इसका

निश्चय करने के लिये परीक्षा होनी चाहिये। १८२८ ईस्वी में रेनहिल नाम स्थान में दो मील लम्बी जगह ठहराई गई। इस पर लाईन बिछा कर सब एंजिनों की परीक्षा ली गई। चार एंजिन परीक्षा देने को मुस्तैद हुए। नियम यह बना कि दिन भर हर एंजिन को घंटे में दस मील के हिसाब से २० बार आना जाना पड़ेगा। एक तो घंटे में छ मील से बेशी न जा सका इस लिये परीक्षा से रोक दिया गया। बाक़ी तीन में दो इतनी तेज़ी से चलने ही में टूट गया। बाक़ी जो परीक्षा में ठहर गया वह जौर्जस्टीफ़न्सन का बनाया "रौकेट" था वज़न भी जिसका ४॥ टन था। यह परीक्षा देने के समय एक गाड़ी और तीस मुसाफ़िरों को ले कर घंटे में ३० मील के हिसाब से आया गया था। एक बार और भी किसी दूसरे एंजिन से मुक़ाबला करने के समय "रौकेट" ४॥ मिनिट में चार मील चला गया था। आज कल जो एंजिन देखने में आता है पहले ऐसा आकार नहीं रहता था। धीरे धीरे १८३८ में आज कल की आकार को पहुंचा था लेकिन तो भी कलों की हालत ऐसी न थी।

जिन दिनों एंजिन की उन्नति के लिये इंग्लिस्तान में ऐसा यत्न हो रहा था उन दिनों वहां के लोगों के ख़याल और तरह के थे। लोग कहते थे कि एंजिन चलने के वक़्त इसके ऊपर होकर जो पक्षी उड़ कर जायेंगे वे इसके धूंए से मरेंगे। कैपाती लोग सोचते थे कि धूंए के साथ जो आग कि चिनगारियां निकलती हैं वे कभी न कभी हमारे माल अस्बाब पर गिरेंगी और सब जल जायेगा। गाड़ीवान सोचते थे कि राह चलते एंजिन की आवाज़ से घोड़े भड़केंगे उससे बहुतेरों पर विपद आ सकती है। गोवाले कहते थे कि एंजिन की आवाज़ से गऊओं के डर जाने से फिर उनको दूध न होगा। किसान कहते थे कि खेत के पास होकर एंजिन के आने जाने से हमारा ग़ल्ला बरबाद होगा। इसके अलावे लोगों को यह सन्देह होता था कि आंधी पानी में, बर्फ़ गिरने के समय एंजिन की गति बंद हो जायेगी और वह फट जायेगा, अंवार लोग एंजिन को भूत की ताक़त रखने वाला

बड़ा ज़बर राक्षस समझते थे। लोगों को समझाने के लिये एंजिन चलानेवाले कहते थे कि यद्यपि इन विपदों के होने की संभावना है तो भी रेल की सवारी में तुम को समुद्र की पीड़ा नहीं भोगना होगा। बौयलर के फट जाने से जल में गीता खाकर नहीं मरना पड़ेगा या एक टुकड़ा लकड़ी के सहारे पल पल में प्राण की आशा त्यागते हुए समुद्र में तैरना नहीं पड़ेगा क्यों कि रेल की सवारी करोगे तो भी तुम लोग ज़मीन ही पर रहोगे। यदि विपद आ जायेगी तो ज़मीन ही पर रहोगे। अपनी या अपनों की मदद से विपद से उद्धार पा सकोगे। और एक घंटे में २०। २५ मील दूर के स्थानों में रहने वाले अपने सगानों से मिलने के लिये रोज़गार धंधे के लिये जा आ सकोगे। पर इतना समझाने पर भी उनके मन का संस्कार दूर न कर सके। अन्त को डारलिंगटन स्टौकटन के बीच लाईन बिछ गई उसी पर मुसाफ़िरों के लिये इक्के की तरह घोड़े की गाड़ी खींचने का बन्दोबस्त हुआ और माल के लिये एंजिन काम में लाया जाने लगा। पर लोगों का साहस बढ़ाने के लिये हर रोज़ एक एंजिन मुसाफ़िरों की गाड़ी लेकर जाता आता था और लोगों की हिम्मत क़ायम रखने के लिये एक घुड़सवार इस गाड़ी के साथ जाया करता था।

इन दिनों अख़बार वाले शौक़ से रेल की सैर करते थे और अपने अपने सैर का हाल अपने अपने अख़बारों में छाप कर लोगों का ध्यान खींचते थे। रेल की सैर का हाल देख कर अख़बारों के ग्राहक बढ़ते थे। इस हाल को पढ़ने से मालूम होता है कि रेल की सवारी उन दिनों एक बड़े हिम्मत के काम में समझा जाता था और सब कोई डर डर कर इस पर चढ़ते थे।

बनवारी और उस के छोटे छोटे नौकर।

बनवारी एक छोटे लड़के का नाम है, उस का काम करने के लिये चार छोटे छोटे नौकर मुक़र्रर हैं। जहां वह कहता है वे जाते हैं, जो वह कहता है वे करते हैं। रात दिन उन से काम लेता रहता है जब वह सोता है तभी तो उन को चैन मिलता है। जब वह जागा तो वे भी जाग जाते हैं ग़रज़ हुक्म तामील करने को सदा तय्यार ही रहते हैं। कैसे अच्छे नौकर वह हैं? हां वह अपने मालिक के से ठीक हैं। अगर बनवारी अच्छा लड़का है तो वे भी अच्छे हैं क्यों कि नौकर का अक्सर दस्तूर यही होता है कि अपने मालिक के मन सा काम करना चाहते हैं।

नाम भी उन का कह ही दिया जाता है। एक का नाम दहना हाथ है और वह खूब काम करता है। दूसरे का नाम बायां हाथ है वह कभी वे सब हो जाता है। बाकी दोनों का नाम पैर है। ये बहुत ही परिश्रमी हैं। सब मिला कर चार हुए। यदि तुम्हारी यह जानने की इच्छा हो कि बनवारी कैसा लड़का है तो सिर्फ़ तुम को इतना ही देखना चाहिये कि उस के छोटे छोटे नौकर कैसा काम करते हैं। यदि दहना हाथ दूसरे की चीज़ लेता है, तोड़ता है, फेंक देता है, बकोट लेता है, चींवटी काटता है, धक्का देता है तो समझना चाहिये कि बनवारी बुरा लड़का है जिन के साथ रहने में बहुत दुख होता है। यदि वह [illegible] को खेलाता है, माता पिता की सहायता करता है, सचेत हो कर [illegible] को हाथ में लेता है, ग़रीबों को खाने को देता है, खेलता है और [illegible] साफ़ रहता है तो समझना चाहिये कि बनवारी अच्छा लड़का है।

उसी तरह यदि दोनों पैर भागते हों, कुचलते हों, लात चलाते हों, [illegible] से भाग जाते हों तो उन का मालिक कैसा लड़का समझा जाये? [illegible] पैरों से काम लेने का यह तरीक़ा नहीं है। उन को अच्छी [illegible] चाहिये।

किताबें। 58

[illegible] की और अच्छी अच्छी बातें लिखी रहती हैं [illegible] होकर पढ़ना चाहिये। हज़ारों किताबें

हैं, उन में या तो परमेश्वर के बनाये संसार का वर्णन है या मनुष्यों के वे विचार उन में हैं जिन को परमेश्वर ने उन की बुद्धि द्वारा उत्पन्न कराया है। किसी में पृथ्वी, पत्थर, भूमि जल, या हवा और मेघ, या मनोहर सूर्य, चन्द्र और तारों का हाल है। किसी में उन असंख्य छोटी छोटी काई और घास से ले कर बड़े बड़े पेड़ों के जंगल तक चीज़ों का वर्णन है जो पृथ्वी पर उत्पन्न होते हैं। किसी में मक्खी, कीड़े, मकोड़ियां, चिड़ियां और चौपाये आदि जीते जानवरों का वर्णन रहता है। और किसी में जिन की गिनती बहुत है मनुष्य, उन के विचार और करतूतों का वर्णन रहता है।

मनुष्यों के विषय के पुस्तक हम लोगों के लिये मुख्य है, क्यों कि संसार भर में परमेश्वर के बनाये कुल जीवों में से मनुष्य ही बड़ा अद्भुत है। इसी को उस पर प्रीति करने की और उस की आज्ञानुसार काम करने की शक्ति है। इस के अलावे हम लोग ही ऐसे जीव हैं जो किताबों से मालूम कर सकते हैं कि हम लोगों को क्या करना, सोचना चाहिये और कैसा होना चाहिये। किसी में इस बात का हाल है कि पहले के आदमी कैसे होते थे और किस देश में रहते थे। उन ही पुस्तकों को पढ़ने से मालूम होता है कि आज कल के हम लोगों में और इसी भारतवर्ष के पुराने रहने वालों में क्या भेद है। ऐसे ऐसे कारीगर थे जिन्हों ने आगरे के ताज महल से अद्भुत मकान और पटने गोल सी चीज़ बनाई है। किताब ही से यह भी मालूम होता है कि रोम यूनान के लोग कैसे थे।

इन बातों के अलावे किताबों ही से हम जान सकते हैं कि [illegible] क्या कहता है? पुराने ऋषि लोग क्या कह गये हैं किस बात से [illegible] बढ़ती होती है। इस से विद्वान होने के लिये और बुद्धि [illegible] के लिये किताबों से बहुत सहायता मिलती है। यहां [illegible] जानने से परमेश्वर की बहुत सी बातें मालूम हो

लिखने का हुनर।

बहुत कम ऐसे आदमी होंगे जो लिखने के हुनर से आश्चर्य में आते होंगे। तो भी संसार में मनुष्यों ने यह एक ऐसी चीज़ निकाली है कि अपना जोड़ नहीं रखती। बहुत सम्पर्क रहने के कारण अब हम लोगों को इस से आश्चर्य नहीं होता। पर जंगली और बिन पढ़े हुए मनुष्यों की एक तरह का जादू सा मालूम होता है। पहले पहले लिखने का फल देख मारे आश्चर्य के उन की अक्ल गुम हो जाती है।

इस तरह के आश्चर्य का एक हाल जो दक्षिण समुद्र के टापू में हुआ था मिस्टर विलियम्स साहब ने लिखा है। वहां के लोगों के लिये एक गिर्जाघर वह बना रहे थे। एक दिन वह काम पर आये लेकिन अपनी बटाम दिखानी बंगले ही पर छोड़ आये। जब उस का काम पड़ा तो एक चीप उठा कर कोयले से उन्हों ने लिख डाला और पास ही जो आदमी खड़ा था उस को देकर उन्हीं ने कहा कि, "दोस्त ज़रा इसे हमारे बंगले पर ले जाओ और मेम साहब को दे देना।" बड़े आश्चर्य से उस आदमी ने पूछा कि "ले जायें। वाह चीप देख कर तो वह मुझे मूर्ख कहेंगी।" साहब ने कहा "नहीं वह मूर्ख नहीं कहेंगी। जाओ जल्दी ले जाओ। जब उसने देखा कि साहब हंसी नहीं करते हैं सच ी कह रहे हैं तो चीप ले कर उस ने पूछा कि "उन से कहेंगे क्या?" ब ने कहा—"तुम को कुछ नहीं कहना पड़ेगा जो मेरी इच्छा है र से कह देगा।" आश्चर्य और घृणा से उसे उठा कर उस ने यह बोल सकता है? इस को मुंह है?"

र पहुंच मेम साहब को चीप उस ने जाकर दे उसे पढ़कर फेंक दिया और चीज़ों की संदूक ने दे दिया। बटाम पाकर उस ने मेम से क्या कि साहब यही मांगते हैं?" मेम लाकर मुझे दिया न? आदमी ने हम ने नहीं सुना।" मेम

इतना होने के बाद वह मकान के बाहर कूद कर चला आया। एक हाथ में चीप दूसरे में बटाम ले दोनों हाथों को ऊंचा किये हुए अपनी बस्ती से होता हुआ और यह शोर करता हुआ चला कि "इन अंग्रेजों की चलाकी देखो वे चीप से बात कराते हैं!" मिस्टर विलियम्स ने जहां तक बना उन्हों ने सब भेद उस को समझाया। तो भी उस गंवार को इस बात से ऐसा अचरज हुआ कि चीप को एक डोरी में बांध उसे गले में उस ने पहन लिया और कुछ दिनों तक पहने रहा।

एक दूसरा हाल मैरिनर साहब ने टौंगा टापू के विषय में लिखा है वह भी कम नहीं है:—

एक कागज़ पर कुछ लिखा हुआ देख कर उस टापू के राजा फिन्नो ने समझने की बहुत कोशिश की पर जब कुछ नहीं समझ पड़ा तो उस ने मैरिनर साहब को बुला कर कुछ लिखने को कहा। साहब ने पूछा "क्या लिखें?" राजा—"मुझे ही लिख डालो।" इसी अनुसार साहब ने अंग्रेज़ी में "फिन्नो"—यही लिखा। राजा ने दूसरे अंग्रेज़ को जो वहां नहीं था बुला भेजा, और मैरिनर साहब को कहा कि पीठ फेर लो। और दूसरे अंग्रेज़ को कागज़ देकर कहा कि "पढ़ो"। उस ने कागज़ देखते ही ज़ोर से राजा का नाम उच्चारण किया; इस पर राजा ने कागज़ उस के हाथ से छीन, आश्चर्य के साथ उसे उलट पुलट कर अच्छी तरह देखा। आखिर बोला कि "यह न तो मेरे ही ऐसा और न किसी दूसरे का सा है! हमारे पैर कहां हैं? तुम ने कैसे कि मैं ही हूं?"

तब इसी तरह फिर उस ने मैरिनर साहब को [illegible] को कहा और इसी तरह तीन बार छोटों तक, मनुष्यों का नाम लिखवाता रहा और दूसरे अंग्रेज़ से [illegible]

ज्ञान [illegible]

साथी तक ही सभी स[illegible]

आवेगी। यह ज्ञान के विषय में ठीक घटती है। चाहे कैसा भी ज्ञान हो पर एक न एक दिन अवश्य तुम्हारे काम आवेगा।

एक किस्सा है कि जिस में एक आदमी की जान इसी कारण बची कि वह कीड़ों का हाल जानता था। यह आदमी किसी बादशाह का वज़ीर था, जिस इल्म से उस की जान बची वह गोबरीले की आदत का इल्म था।

बादशाह की रंजगी में पड़ने के कारण उसे किले के सब से ऊंचे वाले मीनार पर जन्म भर क़ैद की सज़ा मिली। एक दिन रात को उसकी स्त्री नीचे आकर रोने लगी। वज़ीर ने कहा "रोना बंद करो घर लौट जाओ और ये चीज़ें लेकर आओ—एक लोटा गोबरीला, थोड़ा सा घी, बढ़िया रेशम की पोलिया, रील का तागा, सूतकी डोरी और बड़ा मोटा रस्सा।" उस रात को तो स्त्री सब चीज़ें लाने के लिये लौट आई और दूसरे दिन सब लेकर मीनार के नी[illegible] आकर खड़ी हुई।

तब वज़ीर ने कहा कि गोबरीले के बदन में रेशम का एक छोर बांध कर कीड़े के सिर पर घी का ज़रा हाथ लगा दो और मीनार की दीवार पर सिर ऊपर की ओर करके छोड़ दो। उस ने ऐसा ही किया। अब समझ करने की बात है कि यह कीड़ा जिधर से सुगन्ध आती है उधर ही सीधा जाता है। इस तरह उस के सिर पर घी लगा था वह समझता था कि कहीं ऊपर घी है इसी से सीधा ऊपर को चला; जाते [illegible]ीर की खिड़की के पास पहुंचा। इस तरह से रेशम का एक छोर [illegible]र आया। तब उस ने स्त्री से कहा कि रेशम के दूसरे छोर [illegible] बांध दो। तब उस ने रील का तागा भी खींच लिया। [illegible] ने सूत की डोरी पाई और फिर सूत की डोरी से [illegible] हाथ किया। रस्सी को खिड़की के जंगले में [illegible]ीर चला आया। इस तरह गुबरीले की [illegible] की जान बची।

छोटी चीज़ें।

हम लोग सब कोई खेल रहे थे, आखें खुशी से सब की चमक रही थी मुंह लाल हो रहा था कि एक लम्बा आदमी डाक्टर साहब के मकान से गली लांघ कर हम लोगों के पास आया। उस के चेहरे पर मुस्कुराहट विराज रही थी और यद्यपि हम लोगों को खुश देख वह प्रसन्न था तो भी वह बीच में डूबा हुआ देख पड़ता था।

स्कूल के दरवाज़े की सीढ़ी पर खड़े हो कर हमलोगों की ओर उसने इशारा किया; एक या दो मिनिट में हम लोग उसके आगे और पहुंच गये। बड़ा सा ऊदार कुर्त्ता वह पहने हुए था और सफ़ेद बाल उसके हवा में हिल रहे थे। हमलोगों ने पहले उसका नाम भी नहीं सुना था तो भी पहले ही से हमलोगों की उस पर प्रीति हो गई। उस के चेहरे पर इतनी दया और मधुरता प्रगट होती थी। वह क्या कहना चाहता [illegible] हम लोग नहीं कह सकते थे।

"सुनो! सुनो!" उसने कहा "एक बात है जो तुम्हारे बाल हृदय में मैं बैठा देना चाहता हूं। छोटी चीज़ों से घृणा मत करो। जो चीज़ एक समय में छोटी है दूसरे में बड़ी हो सकती है क्यों कि छोटे छोटे ही से आरंभ होकर बड़े में समाप्त होना है। जितनी बड़ी चीज़ें हैं छोटी ही छोटी चीज़ों की बनी हैं। समुद्र जल के बूंदों ही का बना है; ऊंचे ऊंचे पहाड़ मिट्टी के कणों ही से बने हैं; समय भी एक एक पल का बना हुआ है। याद रक्खो, तब कि जब समय बीत जाता है फिर हाथ नहीं लगता इस लिये छोटी चीज़ों का विशेष ध्यान रक्खो।

"तुम लोगों में से सभी ने काग़ज़ की नाव बनाई [illegible] भी कल एक नाव बनाई थी और उसे जब बहते झरने [illegible] वह मज़े में बहती चली। वह नाव बहते बहते [illegible] से साता हो गया था; एक धार तो फूल [illegible] थी और दूसरी जाते जाते चट्टान पर से [illegible] गिरती थी। कुछ देर तक मैं निश्च [illegible] होकर नाव जायेगी [illegible]

एक छोटे से तिनके में लग कर वह चटान वाली धार में चली गई। तेज़ी से जाते जाते वह चटान के पास पहुंची और गिर कर नुक़सान हो गई। उसकी नुक़सानी का कारण सिर्फ़ वह तिनका ही हुआ, और ऐसी ही एक छोटी चीज़ से तुम्हारा भी नुक़सान हो सकता है। इस लिये होशियार हो जाओ। समझ गये न? होशियार हो जाओ! जब कि चारोंओर चिन्ता तुम को घेरे रहे तब भी तुम छोटी चीज़ों पर विशेष ध्यान रक्खो।"

पल भर वह लम्बा आदमी खड़ा होकर इस लोगों की ओर इस इरादे से देखने लगा कि देखें उसकी बातों का हमलोगों के मन में असर होता है या नहीं; तब फिर उसने शुरू किया—नदी के तीर पर बांध में एक चूहे ने बिल खोदा। छेद छोटा था इससे जल धीरे धीरे बूंद बूंद करके उस में जाने लगा। जल के जाने से छोटा छेद जल्दी ही बड़ा हो गया, उतनी बूंदों से धारा बन गई। धारा को धीरे धीरे बल मिला, यहां तक कि किनारा टूट गया और पानी जो रेल कर उधर से घुसा तो आस पास की झोपड़ियां बह गईं चारो ओर तमाम जल ही जल हो गया। सूखी घास की पुंज पर बैठ कर एक आदमी तम्बाकू पी रहा था, संयोग से एक चिनगी उसमें गिरी थी। तो एक चिनगी ही से सारा खलिहान जल गया। हवा चली, आंच बढ़ी, यहां तक कि उसी चिनगी की बढ़ी हुई आग से आस पास का सब मकान जल कर भस्म हो गया। यदि एक छोटे से छेद से नदी किनारे का बांध टूट सकता है, एक छोटी सी चिनगी से खलिहान और मकान जल सकता है तो इसी लिये तुम को होशियार हो जाना चाहिये कि ज़रा सी किसी ग़लती के कारण तुम किसी बुराई में न पड़ जाओ। जब हर दिन बुराई का खटका लगा हुआ है तो इसी लिये छोटी चीज़ों पर विशेष ध्यान रक्खो।

इतना कहने के बाद फिर वह चुप हो गया। जैसे कि उस की इच्छा हो कि उसका कहा हुआ हम लोग सोचें। फिर उसने कहना शुरू किया—

595

"क्या तुम लोग अपने जी का हाल जानते हो? नहीं। संसार में बहुत सी बुरी चीज़ें हैं पर दिल सब से बुरा है। मनुष्य का हर एक

बुरा सवाल बुरा शब्द, बुरा काम उसके दिल ही से होता है। सामने जो बड़ का पेड़ है उसको देखो; इतना बड़ा है पर ज़रा सा बीया ही पहले था। ज़रा सा बीज से पेड़ जितनी देर में निकलता है उससे जल्दी बुरा सा पाप दिल में बढ़ता है। मैं देखता हूं कि तुम्हारे स्कूल में फुलवाड़ी भी है मुझे पूरा विश्वास है कि वह निकाया भी ज़रूर ही जाता था। जैसे फुलवाड़ी निकाई जाती है उसी तरह अपने दिल को भी निकाया करो। एक लड़के को मैं जानता हूं उसके दिल में एक मोथा निकल आया था, उसको उसने जड़ से खोद कर नहीं साफ़ किया— एक बुरा खयाल उसके दिल में पैठा उसको रोकने की कोशिश उसने न की। वह अपने मा बाप को बिन कहे भाग गया और समुद्र में चला गया। पहले उसके मन में विचार मात्र ही हुई थी तब वह इच्छा हुई और अन्त को दृढ़ संकल्प हो गया। समुद्र में वह गया, अनगिनती दुख उसने झेला आखिर क्या हुआ? अपने माता पिता की आज्ञा भंग करने से उनको बड़ा दुख हुआ अन्त को इसी दुख में उनकी मृत्यु हुई, आंधी की पलने जहाज के पड़ने से उसकी भी मृत्यु समुद्र में डूब कर हुई। याद रक्खो जब दिल बुराई की ओर झुके, छोटी छोटी चीज़ों पर विशेष ध्यान रक्खो।"

लम्बे आदमी ने देखा कि हमलोग सब कोई जी लगा कर उसकी बात सुन रहे हैं। हम सब की आखें उसी के मुंह पर थीं एक बात भी ऐसी वह न बोला जो हम लोगों को न सुन पड़ी हो। तब फिर उसने कहा—

"किसी दिन तुम लोगों में से बहुत से सौदागरों की दूकानों में, सरकारी दफ़्तरों में ताईदी करोगे। ताईदी को छुट्टी में ज़रा आनन्द करने का शौक़ होता है। पर वही ज़रा आनन्द उसको बुरी राह से ले जाता है। पहली तातील आनन्द में कटी, दूसरी आई उसमें भी यही हाल रहा, आखिर होते होते आदत पड़ी। बुरे साथियों से मेल हुआ, उन्हों ने और भी ज़्यादे बुराई की राह दिखलाई होते होते उनका सर्वनाश हो जाता है। वह झूठ बोलना सीखते हैं, क़सम खाना सीखते

भाल की साथ एक घटना।

हिन्दुस्तान में दो तरह के भाल होते हैं। वह जो घाट के पहाड़ों पर रहते हैं शेर या लकड़ बग़ैरह की तरह बहुत भयानक होते हैं; और दूसरा किस्म जो अवध के और दूसरे जंगल में पाया जाता है उस की अपेक्षा कम नुक़सान करता है और कुछ धीमा होता है।

हाल ही एक साहब को पहाड़ी भाल से काम पड़ गया था उस का हाल जो उन्हों ने लिखा है उस से मालूम हो जाता है कि साहब के साथ उस देश के आदमी जो थे उन्हों ने कैसा साहस धीरज और बुद्धि का परिचय दिया था।

"पहाड़ी पर चढ़ने के बाद एक भाल जो झाड़ी में छिपा हुआ था हम लोगों पर चोट करने के लिये बड़ी तेज़ी से बढ़ा। मेरी इच्छा हुई कि बन्दूक छोड़ें पर एक साथी ने मना किया और कहा कि कोई काम नहीं है मैं बिना हथियार ही के उसे मार डालूंगा।

"पहाड़ी की खड़ी ओर पर एक बड़ा ऊंचा पेड़ था, डाल भी उस की लम्बी लम्बी और चिमड़ी थी। पहाड़ी आदमी ने भाल के पास के अर मेरी ओर से उस की अपनी ओर फेर लिया और झट पेड़ पर चढ़ गया भाल भी पीछे लगा। ऊपर वाली डाल जिस पर खड़ा था उस में एक मज़बूत रस्सी बांध दूसरा सिरा नीचे छोड़ दिया जिसे एक दूसरे आदमी ने पकड़ लिया और शक्ति भर डोरी खींच कर डाल को जहां तक झुकी झुकाया। झुकाने पर पेड़ पर वाला पहाड़ी उस डाल पर जितनी दूर तक जा सका गया। लेकिन जिधर जिधर वह जाता था पीछे पीछे उस के भाल भी जाता था, जब पहाड़ी ने देखा कि शत्रु झुकी डाल पर आ गया तो तुरत रस्सी के सहारे नीचे उतर पड़ा।

"एका एक अपने शिकार को हाथ से गया देख भाल ने वापस जाकर नीचे उतरने की कोशिश की। जो ही फिरने के लिये वह पहला स्थान छोड़ दूसरी जगह पकड़ना चाहता है कि झट पहाड़ी ने डोरी काट दी। झुकी हुई डाल बात की बात में अपनी पहली जगह चली गई। एका एक झटका लगने से वह कुछ जानवर अपने स्थान से अलग हो

कर ऐसे ज़ोर से ऊपर फेंका कर नीचे पत्थर पर गिरा कि चूर हो गया और नीचे गिर कर मांसाहारी पशु पक्षियों का आहार हो गया।

बिसन यानी अमेरिका की भैंस।

यह जानवर उत्तर अमरिका के मध्य प्रान्त में रहता है ये दस दस हज़ार की झुंड बांध कर मैदानों में या बर्फ़ से ढके मैदानों में घूमा करते हैं।

बिसन की आंख लाल लाल जलते कोयले सी रहती हैं सिर गला और बदन का अगला भाग घुटनों तक बड़े बड़े बालों से भरा रहता है।

इस तरह की कुढंगी और भारी शक्ल में दूर से देखने में ऐसा नहीं मालूम होता कि वह बहुत ही तेज़ और जल्दी से चलने वाला है और बहुत दूर तक बड़े झोंक से जा सकता है। पैर उस का ऐसी ऐसी जगहों में जमता है जहां घोड़ा नहीं जा सकता, पैर उस के बहुत ही सरहरे और बदन ऐसे अन्दाज़ का है कि वैसा ऊपर बालों के भरे रहने से वैसा तेज़ नहीं मालूम होता।

उन घने बालों से वह सर्दी से बचता है इस के अलावे उस को चौड़ी मज़बूत और बिगड़ी नाक होती है जिससे वह बर्फ़ खोद कर नीचे से घास निकाल खा सकता है।

अमरिका के बहुत से रहने वाले बिसन के भरोसे अपनी ज़िन्दगी रक्खे हुए हैं। भोजन, तम्बू का सरंजाम और ज़रूरी बरतन सब इसी से उन को मिल जाता है। यहां तक यहां के लोगों का यह जीव आश्रय है कि अगर यह जीव निर्बीज हो जाये तो वहां के रहने वाले भी मर जायेंगे।

उन का मुख्य आहार उस का मांस ही है। लम्बी लम्बी धज्जी काट धूप में सुखा कर जब कूटा और कड़ा हो जाता है तब उसे बना कर और जानवर की चर्बी के साथ पीस कर एक तरह की चीज़ बनाकर वे बहुत दिनों तक रखते हैं जो कई बरसों तक अच्छा बना रहता है।

वहां वाले उस की खाल को बहुत काम में लाते हैं। बालों को छील कर पकाने से खीमे का चंदवा बनाते हैं और उसी की तंगी भी बनती है जिस में उन का मांस भी रक्खा जाता है।

जब होशियारी से तइयार किया जाता है तो बहुत ही मुलायम हो जाता है और पानी उस में असर नहीं करता दिन को उसे पहनते और रात को बिछाते हैं। मोटे चमड़े की ज़ीन और डोरी बनती है और ढाल भी ऐसी बनती है जिस पर तीर रोकी जाती है और बंदूक की गोली भी उस पर से फिर जाती है। इस के अलावे अंग्रेज़ों के हाथ बेच कर बहुत नफ़ा उठाते हैं और इस के बदले में अंग्रेज़ों से छुरी, बंदूक, कम्बल और दूसरी काम की चीज़ें लेते हैं।

सींग का पानी पीने का प्याला बनता है, बारूद रखने की बारूद-दानी और भी दूसरी दूसरी चीज़ें बनाई जाती हैं। नसों से तीर की डोरी बनाते हैं और तागे का भी काम लेते हैं पतली पतली हड्डियों से सूई बनाते हैं जो चौड़ी हड्डी होती है उस की खुरपी बनती है और पसुलियों की बहुत मज़बूत धनुष बनाते हैं।

शेमोय ।

यह जानवर युरप के डैन्यूब नदी के दोनों ओर सभी पहाड़ों में पाया जाता है। इस को सर्द हवा बहुत अच्छी मालूम होती है इस से यह स्विज़रलैन्ड में विशेष करके रहता है।

साधारण रीति से देखने में इस से और बकरे से कुछ भेद नहीं मालूम होता। लेकिन है क्या कि इस का गला ज़ियादे पतला और दाढ़ी नहीं होती, सींग सीधे और काले होते हैं नोक पर ज़रा झुके हुए रहते हैं।

इस को तेज़ी की तारीफ़ नहीं है बल्कि पैर भी इस का खूब जमता है। प्याले जैसे गहरे और तेज़ नोक वाले खुर विशेष करके पहाड़ों ही के लायक़ बने हुए मालूम होते हैं जिन से उस को प्रीति है। खड़े खड़े चटानों के ऊपर झट से चढ़ और उतर जाता है। चार पैर नज़दीक नज़दीक रखने की उस की जगह मिले तो निर्भय हो कर खेला जाता है और नाचे तड़प जाता है।

स्विस लोग उस का मांस बड़ा उत्तम समझते हैं और उस का चमड़ा भी पकाने पर बड़ा मुलायम होता है जिस की युरपियन साहब लोग बहुत बड़ाई करते हैं।

शेमोय का शिकार करना स्विज़रलैन्ड में बहुत शौक़ की बात समझी जाती है। इसी के पीछे शिकारियों को दिन रात पहाड़ों पर बिताना पड़ता है। बहुत ही विकट और खड़े पहाड़ों पर उसे चढ़ना होता है अक्सर इसी में शिकारियों की जान भी जाती है।

इस को अपने बच्चे से बड़ी प्रीत होती है खटके के अवसर में उन की रक्षा का उपाय करने में अपूर्व बुद्धि का प्रकाश करता है।

एक शिकारी ने दो बच्चों सहित एक शेमोय देखा बच्चे पास ही उछल और खेल कूद कर रहे थे। उस की इच्छा हुई कि एक बच्चा जीता पकड़ें तो ठीक हो। जों ही मादीन ने शिकारी को देखा कि उस की इच्छा हुई कि सीध से हमला करके चटान के नीचे गिरा दें। शिकारी ने भी बच्चों के भागने के डर से उसे सिर्फ़ भगा दिया पर बंदूक़ नहीं छोड़ा।

शिकारी को मालूम था कि आगे एक बहुत ही गहरी खाई है जिस से वह भाग नहीं सकेगा। पर यह ख़याल उस का ग़लत था। मादीन ने क्या किया कि खाई के इस पार दो पैर उस ने रक्खा और बाक़ी दो पैर दूसरी ओर रक्खा, खासा अपने बदन का पुल उस ने बना दिया। और अपने बच्चों को पुकारा वे एक एक करके आये और उस के पीठ पर चढ़ नाले के उस पार चले गये! वह भी तड़प गई और झट शिकारी की गोली की चोट के बाहर हो गई। शिकारी बेचारा देख कर दांती उंगली काटने लगा।

साहिल।

साहिल एक मज़बूत और छोटा जानवर करीब एक फ़ुट के लामा होता है उस का पैर छोटा दुम छोटा और थुथना काला होता है इस का सिर पीठ और तमाम बदन तेज़ कांटों से भरा रहता है और नीचला हिस्सा मोटा और सफ़ेदी लिये हुये भूरे रंग के बालों से छिपा रहता है इस की

मांद जंगल झाड़ी आदि एकान्त जगहों में होती है। ऐसे ही जगहों में नींद में यह दिन बिताता है और संयोग ही में दिन को देख पड़ता है शाम के वक्त कीड़े मकोड़े आदि छोटे जानवरों की खोज में खाने के लिये निकलता है चाल इस की अजीब तरह की और दौड़ ज़रा तेज़ी की होती है।

इस जानवर को लोग बावर्चीखाने में दिक करने वाले कीड़े झींगुर आदि को नष्ट करने के लिये लन्दन और दूसरे बड़े २ शहरों में कभी ले जाते हैं इन घिनावने जानवरों को दूर करने में यह बड़ी फुरती दिखलाता है।

किड़े के अलावे साहिल दिमक घींघे आदि खाता है पर बेंग धामन चूही और सांप भी इस से नहीं बचने पाते।

अगर कोई खटका मालूम हुआ तो साहिल नहीं भागता पर अपनी सिर और पैर भीतर छिपा कर इस तरह गेंद सा हो जाता है और चारो ओर अपना कांटा खड़ा कर देता है इस से वह बहुत मजे में अपने को बचा लेता है।

अगर कहीं खड़ी या ढालुआं जगह से अपने को गिरता हुआ पाता है तो तुरत गेंद सा बन करके पन्द्रह या बीस फुट की ऊंचाई से नीचे आता रहता है तो भी उस को ज़रा भी चोट नहीं लगती।

साहिल अपने बच्चों के लिये काई और पत्तियों की होशियारी के साथ ऐसी मान्द बनाता है जिस से उस में पानी नहीं जाने पाता इस के छोटे २ बच्चे तीन इंच लांबे सुफेद और आंख बन्द किये रहते हैं उन के पीठ पर बहुत मोलायम मोलायम और छोटा छोटा कांटा रहता है जो दूर से बिन कांटो ही के बच्चे देख पड़ते हैं।

यह जाड़े के लिये सूखे पत्तियों का मान्द विशेष करके झाड़ी या दरख्तों के खोंखले में या चट्टान और दिवार की सुराख में भी बनाते हैं। ऐसी जगह में कुल जाड़ा वह सोई कर लिया देता है गरमी आते आते जाग उठता है और फुर्ती से बहुत दिन की घटी पूरी कर लेता है।

इस को बन्द करके रखने से, अगर दया के साथ बर्ताव हुआ तो साहिब बहुत जल्दी पीश मान लेता है और कुत्ते बिल्ली आदि घरेलु जानवरों की तरह बहुत खुशी से रहता है।

लोमड़ी सियार।

सियार की बहुत कहानी हम लोगों के देश में लोग कहते हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्यों कि बहुत ही चालाक जानवर ये होते हैं और अस्ट्रेलिया का टाप् छोड़ तमाम पाये जाते हैं। सब काम ये छिप कर करते हैं रात को घूमा करते हैं, जितना बन पड़ता एक बार खा लेते हैं बाकी छिपा कर रख छोड़ते हैं। छोटे छोटे जानवर और पोसाव चिड़ियों का बहुत ही नुक़सान करते हैं। चालाकी और फुर्ती इस जानवर की ऐसी होती है कि पकड़ना मुश्किल होता है। कहीं कहीं उनके पकड़ने के लिये फंदा लगाया जाता है पर इंग्लिस्तान में घोड़े पर चढ़ शिकारीकुत्तों को साथ ले उनका शिकार किया जाता है। बीस पचीस कोस तक भागने के बाद तब कहीं पकड़े जाते हैं। साहस कभी कम नहीं होता और अक्ल हमेशा ठिकाने रहती है। जब भागा नहीं जाता तब अख़ीर दम तक अपने को बचाते हैं बड़े ज़ोर से काटते हैं और बिना चूं किये प्राण दे देते हैं।

सेंट जौन साहब ने नीचे लिखी कहानी उसकी चालाकी के विषय में कही है। "एक दिन गर्मी में तड़के ही एक हरिन के शिकार को मैं गया। हरिन ने खेत में बहुत नुक़सान कर डाला था। सूर्योदय होतेही क्या देखता हूं कि एक बड़ा सा सियार खेत के सिवाने पर जहां मैं छिप कर बैठा था वहीं चुपचाप आया। कई खरगोश वहां चर रहे थे, पगार के ऊपर झांक कर उसने देखा उसकी इच्छा एकाद को पकड़ कर मारने की थी।—उसको मालूम था कि दौड़ कर पार नहीं पावेंगे। थोड़ी देर तक सोचने के बाद तदबीर उसने ठीक कर लिया। थोड़ी दूर कमर भर की दीवार भी थी। उस दीवार में कई सूराख थे। उन सूराखों की तजवीज़ करने पर उसने देखा कि एक सूराख से बहुत खरगोश आते

जाते हैं। बिल्ली जिस तरह चूहे की ताक में बैठती है उसी तरह वहां जाकर चिपक रहा। चालाक रहने पर भी अपनी दाव घात में वह ऐसा लगा था कि यह वह नहीं देख सका कि भरी बंदूक लिये हुए बीस गज़ के भीतर मैं भी मौजूद हूं। मैं उसकी ऐसी गफ़लत देख बहुत खुश हुआ। मुझे देख कर अगर वह भागने की कोशिश करे तो उस वक्त के लिये मैंने अपनी बंदूक तइयार रक्खी।

"तब तक उसकी तदबीरों को मैं देखता रहा। पहले चुपचाप बड़ी होशियारी से उसने अपने छिपने के लिये ज़मीन में एक छोटा सा गड्ढा खोदा; और बीच बीच में ठहर ठहर कर सुनता था और चालाकी से खेत में झांकता भी था। यह सब करने के बाद शिकार पर झपटने की तइयारी किये निश्चल होकर बैठा रहा। जब सूर्य खूब उग गया तो एक एक करके खरगोश आने लगे। तीन आ गये पर उसके पास होकर नहीं गये। एक उससे बीस गज़ से कम ही पर था पर सिवा और भी सट रहने के उसने और कुछ नहीं किया। तुरत ही दो, और उसकी ओर आये। यद्यपि उसने ऊपर देखने का साहस नहीं किया पर उसके कानों के हिलने से मुझे मालूम हो गया कि वह उनके आने का हाल जानता है। दो खरगोश साथ ही उस सुराख़ के पास आये, बिजली की तेज़ी से कूद कर लोमड़ी ने एक खरगोश को पकड़ा और मार डाला। तब वह अपना शिकार उठा कर भागा जाता था कि मेरी बंदूक ने उसे रोका, मैंने जाकर उसे मार डाला। यह देख कर मेरा अचरज जाता रहा। आज तक मैं बड़ी चिन्ता में रहता था कि जो जानवर लोमड़ी से भी तेज़ सब बात में होते हैं उनको यह कैसे पकड़ लेता है।"

बीवर।

एक बार इनका हाल लिखा जा चुका है पर विशेष हाल एक अंग्रेज़ी किताब में इन का यों लिखा है—कि पृथ्वी के परिश्रमी और चालाक जानवरों में यह एक समझे जाते हैं। लम्बाई उन की तीन फुट नाक से दुम तक होती है और ऊंचाई एक फुट होती है। इसकी गिनती

चूहे के क़िस्म में हो सकती है ; वे जल में तैर भी सकते हैं और सूखे पर भी रहते हैं। भविष्यत का इनको बहुत ख़याल रहता है गर्मी ही में जाड़े के ऋतु के लिये आहार संचय करके रखते हैं।

बहुत तरह के पेड़ों की छाल और पत्तियां इनका आहार है कोई के फूल की जड़ इन्हें बहुत पसंद है। खाने के समय अगले हाथों में आहार रख कर गिलहरी की तरह खाते हैं। मुख की दुम तो बालों से भरी रहती है पर इन की मछली की तरह चौंयटे से भरी रहती है। पर यही उनको बहुत काम देती है।

उत्तर अमरिका में ये बहुतायत से होते हैं। जून जूलाई के महीने में दो दो तीन तीन सौ की झुंड में रहने की जगह के खोज में बीवर निकलते हैं। तालाब इनको खाने लायक वृक्षों से घिरा बहुत पसंद आता है। यदि ऐसा स्थान न मिला तो नदी किनारे की जगह चुन कर आप ही तालाब बना लेते हैं। जो काम उन्हों ने उठाया उसको पूरा करने के लिये परिश्रम से नहीं भागते जब तालाब बनाने का काम पड़ता है तो क्या करते हैं कि—

नदी किनारे बंध के लायक स्थान चुन पास के जंगलों में छितर बितर हो जाते हैं और पांच या छ फुट की लकड़ी लम्बी लम्बी जमा करते हैं। ज़रूरत के लायक जब जमा हो गई तो नदी के भीतर ज़मीन में गाड़ना शुरू करते हैं। पार पार गाड़ देने के बाद पेड़ की डालों से बीनना शुरू करते हैं और बीच की जगह में कींचड़ पत्थर और बालू से भर कर पीट कर कड़ा बना डालते हैं इस बांध की मोटाई दस से बारह फुट तक जल के भीतर होती है। एक ओर खड़ा होता है और दूसरी ओर ढाल चला जाता है ऊपर आकर सिर्फ़ दो तीन ही फुट मोटा रह जाता है। लम्बाई इस बांध की कभी कभी सौ फुट तक की होती है। ढालुए तरफ़ घास आदि डाल कर उसे और भी मज़बूत बना डालते हैं। बांध इसी लिये वे बनाते हैं जिस में जल रुक कर तालाब बन जाये।

जब तालाब बन चुका तब तीर ही पर मकान बनाने में हाथ लगाते हैं। मकान बड़ी चतुराई से बनाते हैं दीवार दो फुट मोटी होती है

मिट्टी पत्थर और लकड़ी यही उसकी सामग्री रहती है। बाहर का भाग गुम्बज सा रहता है और भीतर ऐसी उम्दा कारीगरी की हुई रहती है जिससे मालूम होता है कि राज भी लगाये गये होंगे। कोई एक ही खंड का रहता है और किसी किसी में तीन तीन खंड भी रहते हैं। एक एक मकान में दो सौ बत्तीस जीव तक रहते हैं। प्रायः ऊपर वाले ही मकान में वह रहा करते हैं और नीचे वाले में भंडार का काम लिया जाता है जैसे जैसे काम पड़ता है वहां से ऊपर लाकर वे खाया करते हैं। दस बीस मकानों का इनका एक एक गांव होता है। आहार का भी सुभीता रहा, स्थान भी अच्छा रहा, और कोई दिक् भी करने न गया तो एक ही तालाब पर कई बरसों तक रह जाते हैं। पर आलसी नहीं रहते मकान बनाते ही चले जाते हैं इसी से कोई गांव बहुत बड़ा कोई छोटा देखने में आता है। जब आहार पूरा नहीं मिलता तब दूसरी जगह की खोज में निकलते हैं। गर्मी में मकान छोड़ जंगल झाड़ी में घूमते हैं जल के किनारे झाड़ी वगैरह में पड़ रहते हैं। कोई कोई संत्रियों की तरह पहरा देते रहते हैं जब कोई खटका हुआ तो खास तरह की आवाज़ बोल कर सबको उस से आगाह कर देते हैं। सुनते ही बेचारे झट जल में कूद अपनी रक्षा करते हैं। जाड़े में सर्दी से बाहर नहीं निकलते बैठे ही बैठे खाने को बारी आती है इससे बहुत मोटे हो जाते हैं।

यद्यपि जाड़े में शक्ति भर वे अपने आराम का सामान कर लेते हैं पर इसी ऋतु में उन पर बड़ा भय लगा रहता है। शिकारी लोग इस ऋतु में इन परिश्रमी जीवों के गांव की खोज में निकलते हैं। इनमें पकड़ने के दो उपाय हैं। जलकी ओर का जो द्वार रहता है उसके मुंह को लकड़ी गाड़ कर वे बंद कर देते हैं और सूखे की ओर उनके मकान की दीवार में कुत्ते के जाने लायक छेद करते हैं। कुत्ते को तालीम पूरी रहती है वे भीतर घुस कर दांतों से बीवर को पकड़ते हैं और शिकारी कुत्ते की दोनों पिछली टांग पकड़ कर साथही बाहर खींचते हैं। हडसन की खाड़ी के किनारे रहनेवाले दूसरी तरकीब करते हैं। बीवर के मकान के चारी ओर का जल निकाल कर ऊपर से जाल दे

देते हैं। इतना करके तब उन घरों को तोड़ते हैं। डरे हुए जीव बेचारे जल में भागने का उद्योग करते हैं जोंही दरवाज़े से निकले जालमें फंस गये। शिकारी लोग पकड़ कर ज़रा दया नहीं करते तुरत मार कर इसकी खाल निकाल लेते हैं जो जाड़े में बहुत सुख देता है। जाड़े में इतने जीव मारे जाते हैं कि कान में नहीं समाता।

ये जीव बड़े प्रसन्न चित्त होते हैं क्यों कि वे केवल परिश्रमी और फुर्तीले ही नहीं होते पर जल्दी हिल मिल जाते और प्रेम दिखलाते हैं। दो बच्चे बीवर के वहीं रक्खे गये थे। कुछ दिन तक तो दोनों अच्छी तरह से रहे पर एक संयोग से मर गया। दूसरे को बड़ा दुख हुआ मित्रके मरने के कारण उसको आनन्द जाता रहा खाना उसने छोड़ दिया आखिर दुबला होते होते मर गया।

यह जन्तु आज कल विशेष करके कनेडा देश और उत्तर अमरिका के दूसरे भागों में पाया जाता है। यह बड़ा भारी कारीगर होता है। सिर्फ़ घर ही नहीं बनाता पर लकड़ी भी खूब काट सकता है इस को बड़ा चतुर इंजिनियर समझना चाहिये।

गर्मी में एक एक बीवर अपनी मांद झील या नदी के किनारे बना कर अकेला रहता है। जब जाड़ा आता है तो यह स्थान छोड़ सब के साथ मिल अपना जाड़े के लिये घर बनाता है। वे अक्सर सौ से तीन सौ की एक एक झुंड बना कर रहते हैं। जब सब मकान बन जाते हैं तो खासा छोटा सा शहर हो जाता है।

अपने शहर के लिये स्थान नदी या झील के किनारे या किसी टापू में चुनते हैं। पर विशेष कर वह नदी ही पसंन्द करते हैं क्यों कि बहती धार में जो लकड़ी वे काटते हैं उसे लाने में सुभीता होता है।

औज़ार नहीं पर अपने चोखे दांतों से वे दरख़्त शीघ्र ही काट गिराते हैं। अगर दरख़्त जल के तीर पर रहा तो ऐसी चालाकी से काटते हैं कि जिस में धार ही में गिरे। इस ढंग से बिलकुल पेड़ उपलाने लगता है। अगर तीर से कुछ दूर पर पेड़ रहा तो टुकड़ा टुकड़ा करके उसे जल में खींच लाते हैं।

जब लकड़ी पूरी जुम गई तब काम शुरू होता है। पहले नदी में वह बांध बांधते हैं। इस से धार रुक जाती है और जल तीर की ओर बहुत जमा हो जाता है। यह बांध लकड़ी के कुंदे और डालों को गाड़ कर वे बनाते हैं।

बीच की जगह पत्थर मिट्टी से वे भर देते हैं और शक्ति भर उसे मज़बूत बनाते हैं। जहां जहां काम पड़ता है दरख़्त की दांतों से खींच कर वे ले जाते हैं पर मिट्टी पत्थर वे अजीब तौर से अपने दोनों पंजे और ठुड्डी के बीच में ढोते हैं।

जब तक बीवर काम में लगे रहते हैं तो इधर उधर जाते आते रहते हैं और मिट्टी को अपने पंजे से चिकनाते हैं और अचरज यह है कि ये जानवर अपना सब काम रात ही को करते हैं।

बांध को मज़बूत बनाने का वह पूरा उद्योग करते हैं जब कोई भाग उस का टूट जाता है तो बिना मरम्मत किये वह नहीं रहते। हमेशा ख़बरगीरी रखते हैं। उस देश के आदमी यह बात जानते हैं जब उन को बाहर निकलना होता है तो बांध तोड़ देते हैं। फिर मरम्मत करने के लिये बेचारों को निकलना पड़ता है जहां निकले कि वे पकड़ लेते हैं।

जब बांध तइयार हो गया तो वे अपना छोटा शहर बनाना शुरू करते हैं। मकान भी उन ही चीज़ों से बनता है जिन से बांध बन्धता है। सब तीर ही पर बनते हैं और ज़मीन ही के भीतर ही चारो ओर राह बनी रहती है।

बीवर के मकान का दरवाज़ा जल के प्रायः ३।४ फुट नीचे रहता है। और कहीं भी कुछ नहीं खुला रहता। और और राहें उस मांद को रहती हैं जहां बीवर शत्रु से अपने को बचा सकते हैं।

पक्षी और मधुमक्खियों की तरह बीवर को भी परमेश्वर ने जैसा उन को सिखलाया वैसा ही मकान बनाते हैं। उन को मनुष्य की सी बुद्धि नहीं होती पर जन्म ही से और जीवों को अपनी रक्षा और आराम ठीक करने की शक्ति रहती है। 607

घड़ियाल का शिकार ।

शाम का वक्त था आकाश लाल हो रहा था सूर्य्य पहाड़ के पीछे अस्त हुये जाते थे। आगे बड़ी सी नदी बह रही थी और उस के तीर पर जल पीने के लिये हरिन ने पैर डुबाया था।

नदी से थोड़ी दूर एक चट्टान पर एक बड़ा भारी घड़ियाल पड़ा २ धूप खा रहा था और आंख उस की आधी बंद थी। एका एक जंगल के बीचसे दो आदमी बड़े लम्बे चौड़े बर्छा लिये हुये निकले। चुप चाप वे धीरे २ दबे पांव उस जानवर के सामने पहुंचे और धीरे ही से पानीमें उतर गये।

हमारे मण्डली में सिवाय एक अरब के सभी अचरज में आ गये। याद रखना चाहिये कि घड़ियाल यद्यपि सूखे पर ज़रा धीरे चलता है पर जल में बहुत ही तेज़ी उस को आ जाती है। उस देश की चाल के अनुसार वे आदमी बहुत बे परवाह होते हैं इस के अलावे उन को उस का चमड़ा लेना था।

धीरे २ और होशियारी के साथ वे उस की ओर पहुंचे जब तक की वे उस से बीस गज की दूरी के भीतर नहीं गये थे तब तक उस ने कोई चिन्ह ऐसा नहीं दिखलाया जिस से मालूम हो कि वह उन के आने का हाल जानता है यहां तक कि न उस ने आधा खुला हुआ अपना मुह ही हिलाया या आंख भी मटकाई तब वह एका एक फिरा और हम लोगों को उन दोनों साहसी बरछे वालों के प्राण का भय मालूम होने लगा।

पर जों ही वह घूमा घड़ियाल का गला और सीना उन के सामने पड़ा। तुरत ही उन के हाथों से बर्छी इस तरह छूटी जैसे धनुष से तीर छूटती है और उस जानवर के हृदय में पैठ गई।

अगर उस के दिल में पहले अपने शत्रुओं पर हमला करने का विचार हो भी तो अब वह विचार बिलकुल उस ने छोड़ दिया और बिलकुल ध्यान उस का अपनी रक्षा पर गया। खून निकलता हुआ उस के शरीर का उछलना कूदना देखना बड़ा भयानक था, जल बिलकुल उस के झटपट करने के कारण फेन से भर गया। उन आदमियों ने खूब खींच कर झटका दिया और उस के बाद तीर पर जल्दी जल्दी तैर कर चले आये।

वे चमड़े लम्बे और मज़बूत थे और बर्छियां खूब धंस गई थीं आधे घंटे के बाद उस बड़े जानवर को खींच लाये और उस के बाद उसे खसियाने लगे ।

रेनडियर या बहुसिंघा ।

यह जीव प्रायः साढ़े चार फुट ऊंचा होता है विशेष करके पृथ्वी के उत्तर प्रान्त के सर्द देशों में पाया जाता है । इस की सींघ पतली पतली लम्बी और बहुत डाल वाली होती है । नर के सींघ बड़े बड़े होते हैं । रंग इस का ऊपर भूरा और नीचे पेट के पास सफ़ेद होता है । जों जों पुराना होता जाता है तों तों रंग में भूरेपन के साथ सफ़ेदी आ जाती है । लैपलैन्ड देश वालों के लिये यह सब कुछ है यह जानवर घोड़ा, गाय, भेंड़ी, बकरी—चारो का काम उनको देता है । जीते जी और मरने के बाद दोनो अवस्था में उनके काम आता है । मरने के बाद इसकी हड्डी से चमच बनाते हैं, सींघ का सरेस, नसों का तागा और धनुष की डोरी चमड़े की पोशाक और मांस का भोजन होता है । जीते जी इसके दूध का खोआ बनता है, बर्फ़ के मैदानो में अपने मालिक को एक जगह से दूसरे जगह पहुंचाता है । इसकी तेज़ी ऐसी प्रसिद्ध है कि नाव की सी बे पहिये की गाड़ी में दो को जोत देने से ये एक दिन में बर्फ़ पर पचास साठ कोस तक जाते हैं । उस गाड़ी में मुसाफ़िर लड़कों की तरह बांध दिया जाता है । जिसको अभ्यास न हो वह अगर उनको हांकने की कोशिश करे तो गाड़ी तुरत उलट जाये उस देश के अमीरों के पास अक्सर हज़ार से ज़ियादे (रेन डियर) रहते हैं ।

गर्मी में ये बहुत तरह के छोटे छोटे पौधे खाते हैं और ऊंचे ऊंचे पहाड़ों पर चले जाते हैं । अगर नीचे रहें तो डंस उनको काट खाते हैं और इसी के रोयें में बच्चा देते हैं । सारे शरीर में छेद छेद हो जाता है और इसी से बहुत मर भी जाते हैं । जाड़े में उनका आहार विशेष करके काई का होता है जिसे वे सींघ और पैरों से खोद कर बर्फ़ के नीचे से निकालते हैं । जब बर्फ़ की तह इतनी मोटी रहती है कि

खोदी नहीं जा सकती तो वहां के पेड़ों पर एक तरह का कुछ लटकता है उसी से निर्वाह करते हैं। जब बर्फ़ और जाड़ा बहुत पड़ता है तो वहां वाले अपने झुंड को खिलाने के लिये हजारों पेड़ काट डालते हैं। अंग्रेजों ने बहुत कोशिश की कि इंगिलस्तान में रेन डियर लाकर रक्खा जाये और उसकी बढ़न्ती हो पर अब तक सब उद्योग वृथा हुए।

खरहा और खरगोश।

सभी जानवरों को शत्रु होते हैं। बड़े बड़े भयानक जानवरों का शत्रु आदमी है इस के अलावे वह आपस में भी लड़ा करते हैं। पर खरहे को जितने शत्रु हैं उतने किसी को नहीं। कोई जाल और फंदा लगा कर कोई कुत्तों को लेकर उन का शिकार करते हैं लोमड़ियां और शिकारी चिड़ियां सदा उन के पीछे लगी रहती हैं।

इस के अलावे बिचारों की इतना बल भी नहीं होता कि अपनी रक्षा के लिये लड़ सकें भागने का एक उपाय अगर है तो यही कि भय का पता जल्दी से लगा लेना और भाग जाना।

निसन्देह खरगोश बहुत तेज़ दौड़ सकते हैं। अगर यह खरगोश हमारे पास से पूरी तेज़ी से दौड़ कर भागें तो जब तक हम कहें "यह देखो खरगोश है" तब तक उस का पता भी नहीं लगेगा कि कहां चला गया। खाली यही बात नहीं है कि वह तेज़ दौड़ता है बल्कि अच्छी राह चुन कर अपने पीछा करने वालों से बचने के लिये हर तरह की तदबीर निकालता है लोमड़ी बहुत चालाक जानवर कहलाता है पर वह भी खरगोश सी चालाक नहीं होती।

जब कुत्ते उस का पीछा करते हैं तो जब तक सामने रहता है तब तक सीधा भागता है नज़र के बाहर होने पर कुत्तों को छकाने के लिये पहले कुछ दूर पीछे आ कर और तीन या चार बार आगे पीछे कूद कर बिलकुल एक नये रास्ते से भाग जाता है कभी कभी वह दिवार पर चढ़ कर ऊपर ही ऊपर कई गज तक दौड़ता है या थोड़ी दूर उस दिवार से जाकर लौट आता है और तब होशियारी से लौट कर वहां कूद पड़ता

है फिर होशियारी से वहीं चुप चाप छिप रहता है और कुत्ते भूक कर चू की साथ साथ चले जाते हैं इस तरह पर अपने शत्रु से भाग कर बच जाता है इस में सन्देह नहीं कि ऐसी हालत में खरहा से ज्यादे मज़बूत जानवरों को उस की तरह बचना बहुत कठिन पड़ जायेगा।

यद्यपि खरहा अपनी पीछा करने वाले शत्रु से भाग कर बच जाता है तौ भी यह शान्त जीव नहीं होता। इस का स्वभाव अच्छा नहीं होता अपने मेल के जानवरों के अन्दाज से इस को साहस भी बहुत है।

खरहे आपस में बड़ी भयानक लड़ाई लड़ते हैं उस वक्त अपने पीछले पैरों पर खड़े हो जाते हैं। बचपन में पाले जाने से यह बहुत सहज में पोस मानते हैं ऐसा बहुत सा दृष्टान्त देखा गया है जिस में इन लोगों ने अपने मालिक पर बहुत प्रेम दिखलाया है। खरहा जंगल झाड़ी में रहता है और खरगोश ज़मीन खोट कर मान्द में। खरगोश झुंड के साथ रहते हैं पर खरहा नहीं। खरगोश का जब पीछा होता है तुरत मान में घुस जाता है पर खरहा भाग कर के बचना चाहता है।

खरगोश सूखी पत्ति जमा करके इसी पर बच्चों को सोलाता है और खरहा खाली ज़मीन पर अपनी बच्चों को जंगल झाड़ी में रखता है।

चांदनी रातमें खरगोश जब अपने बीलसे निकल कर जमा होते हैं तो बड़ा सुन्दर तमाशा होते हैं छोटे बड़े सैकड़ों खरगोश कभी इधर कभी उधर कोई बीलमें घुसता है कोई बाहर निकला आता है और कोई झांकी मार फिर घुस जाता है। यह लोग दिनको बाहर निकलना नहीं चाहते हैं शाम होते २ ये चरने के लिये और कुद फांद करने के लिये निकलते हैं।

हर साल हज़ारों खरगोश शिकारी लोग मारते हैं। अगर यह न होता तो उन की गिनती और उपद्रव इतना बढ़ जाता कि सब का जीव घबड़ाने लगता।

छुछुन्दर।

छुछुन्दर एक छोटा सा जानवर है जो ज़मीन के नीचे रहने के कारण बहुत कम देखने में आता है इस का छोटा मोटा शरीर पांच से

८ इंच तक लम्बा होता है इस की दुम और पैर छोटे होते हैं पर मुंह लम्बा नोकीला सूअर के बच्चे का सा होता है। इस के बदन पर भूरे रंग का रोयां चूहे के ऐसा तमाम भरा रहता है इस के देह से बड़ी बद बू आती है इस की आंखे इतनी छोटी होती हैं कि संयोग ही से देख पड़ती हैं। कान इस के ऊपर नहीं होते पर श्रवण शक्ति बड़ी तेज़ होती है विशेष करके अपने सूंघने ही की शक्ति से ये अपना आहार ढूंढ़ लेते हैं ये ज़मीन के नीचे ही रहते हैं और तेज़ी से ज़मीन खोदने ही पर इन को बदने का भरोसा है अगला पैर जिन से वे ज़मीन खोदते हैं मज़बूत चौड़े और कुदार के से चिपटे पंजे के होते हैं इन ही से अपने प्रिय भोजन की खोज में बड़ी तेज़ी से बील खोदते हैं आहार इन के अन्न के अलावे दीमक चूंटी कीड़े मकोड़े—ऐसे ही ऐसे चीज़ हैं छुछुन्दर अपना मकान ज़मीन के नीचे बड़ी कारीगरी से बनाते हैं जगह इस के लिये बहुत बचाव के पहाड़ी के नीचे दरख़्तों के जड़ में नदी के तीर पर या और कोई दूसरी बचाव की जगह वह चुन लेते हैं बील अक्सर गोल मेहराब की तरह यह बना रखते हैं जिस में मिट्टी न भड़क कर गिरे मेहराब के ऊपर नीचे दो गोल राह रहती है ऊपर वाली छोटी रहती है और दोनों में आने जाने के लिये पांच रास्ते बने रहते हैं इन्हीं गोल राहों के बीच रहने का ठिकाना रहता है और ऊपर वाली राह से यह तीन जगह मिली रहती है जब कि इस को सोने के लिये जाने की इच्छा होती है पहले ऊपर चढ़ कर नीचे उतर जाता है इस जगह में दूसरी राह भी बनी रहती है जो पहले थोड़ी दूर नीचे जा कर फिर ऊपर उठ बील में आने जाने की सदर राह से मिली रहती है बड़ी राह से आठ या नौ रास्ते लगे रहते हैं लेकिन इतना घूम घुमउआ होने पर भी सदर राह में मिली रहती है सदर राह बील से थोड़ी दूर तक बहुत सिधी रहती है जो अगल बगल वाले राहों से मिली जुली रहती है उसी से होकर उन की आहार खोजने में बहुत सुबीता होता है खोदने के वक्त यह जगह जगह पर मिट्टी की ढेर लगा देते हैं।

जहाज़ पर जैक नाम एक बन्दर ।

इंगलिस्तान जाने वाली जहाज़ पर सेनिगल देश के एक बन्दर का हाल एक मेम ने लिखा है। जिस जाति के बन्दर का यहां बर्णन होता है वह सुरखी लिये हुये भूरे रंग का और सिर्फ़ डेढ़ फुट लम्बा होता है।

पहली पहल मुझ से जैक से यों भेंट हुई। कई दिनों तक जहाज़ पर चढ़ने के बाद मैं बाहर निकल कर पढ़ने में लगी थी कि एका एक किच मिच करने की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी जब तक मैं सिर उठा कर देखूं के अधर से आवाज़ आती है कि एक भारी जानवर मेरे कन्धे पर कूद कर चढ़ आया और अपनी दुम से उस ने मेरा गला लपेट लिया।

मुझ को मालूम हो गया कि यह वही उपद्रवी जैक है जिस की चाल से मुझे इच्छा न रहने पर भी कई बार हंसी आई पर जिस से मैं सदा दूर रहती थी।

चाहे डर से हो या और कोई कारण हो मैं नहीं कह सकती पर मैं चुप चाप बैठी रही। एक या दो मिनट में जैक ने अपना सिर झुका कर मेरा मुंह देखा और कुर्सी से बोल कर मेरे गोद में आकर बैठ गया और मेरे हाथों को देख कर उंगलियां गिनने लगा और अंगूठी उतारने की कोशिश करने लगा। जब मैंने उस को थोड़ा सा बिस्कुट दिया तो मेरी गोद में चुप चाप पड़ रहा।

उस घड़ी से हम लोगों में मेल हो गया बन्दरों से मेरी घिन दूर हो गई और तब से मैं उन की रक्षा करने में, उन का हाल चाल पढ़ने में और उन का काम देखने में बड़ा आनन्द पाती हूं। जहाज़ पर बहुत से बन्दर थे पर जैक सब से अच्छा था।

पहले पहल जैक जब आया था तो डोरी से बान्ध कर रक्खा गया था लेकिन जैसे जैसे वह पोसाव हुआ उस की बजादी दी गई। यहां तक कि कप्तान और मुसाफिरों का भाग छोड़ कर वह तमाम घूमने पाता था।

भोर होते ही पहला काम उस का यह था कि भंडारी के तोते का पींजड़ा उलटा देता था कि जिस में उस के भीतर बिखरी बगैरह जो कुछ रहे गिर जाये। उस की सदा यह कोशिश रहती थी कि तोते का

दुम पकड़ कर खींचे लेकिन वह जिधर जैक रहता था उधर ही अपनी जीभ तैयार रखता था। इस से जैक को लाचार अपना पंजा अलग ही रखना पड़ता था।

उसी समय और को पैर की बड़ी तेज़ आहट सुन पड़ती थी मुझे मालूम हो जाता था कि जैक कुछ उपद्रव कर रहा है। अक्सर वह अगले भाग में जाकर जहाज़ियों की टोपी छीन लेता था और छुरी आदि औज़ार लेकर भाग जाता था। अगर जल्दी पीछा नहीं किया जाता था तो उन चीज़ों को कभी कभी समुद्र में फेंक दिया करता था।

जब नाश्ते की तइयारी होती थी तो जैक एक कोने में बैठा रहता और जब बावर्ची पीठ फेरता तो कोई न कोई चीज़ वह उठाकर छिपा देता था।

हफ़्ते में दो दिन सूअर के बच्चे भी जो जहाज़ में थे चलने फिरने के लिये छोड़ दिये जाते थे तब तो जैक की खुशी का कुछ ठिकाना नहीं रहता था। किसी पीपे के पीछे छिप कर बैठ जाता और एका एक उन में से एक को पीठ पर उछल बैठता। फिर तो सूअर का बच्चा मारे डर के भागा फिरता और वह उसी पर सवार रहता था। इस खेल में जब जैक गिर पड़ता तो सब जहाज़ियों ने अगर हंस दिया तो अचरज में आये हुए कि शक्ल बना कर इस ढब से देखता था जिस से मालूम होता था कि पूछ रहा है "इस में हंसने की क्या बात है?"

जैक के अलावे जहाज़ पर तीन बंदर और थे जिन का बदन लाल और चेहरा नीला था। जैक अक्सर उन को पीठ पर चढ़ा जहाज़ भर घुमाये फिरता था। जब मैं उन को प्यार करने लगी तो उसे डाह हो गई इस से दो को समुद्र में उस ने फेंक दिया।

एक जो बच गया उस के साथ उस ने बड़ी मस्खरी की। जहाज़ के एक भाग में रंग फेरा जा रहा था, रंगसाज़ों ने ऊपर ही रंग वग़ैरह छोड़ दिया था। जैक ने उस बन्दर को फुसला कर पकड़ लिया और एक हाथ से उस को पकड़ दूसरे से रंग की कूंची से उस का मुंह और सारा शरीर रंग दिया।

पतवार पर जो आदमी बैठा था उस के हंसने से मेरा ध्यान खिंचा जब जैक ने देखा कि लोगों ने देख लिया तो रंगीन बंदर को छोड़ रस्सा थाम्ह मस्तूल पर चढ़ गया। और वहां जाकर देखने लगा कि नीचे क्या हो रहा है। वहां से नीचे उतरने में डरता था पर तीन दिन की भूख से लाचार हो नीचे उतरा।

जब कि मैं बाहर जहाज में बैठी थी उसी वक्त उस ने उतरना निश्चय किया। रस्सी को पकड़ झट मेरी गोद में कूद पड़ा और इस तरह देखने लगा मानो क्षमा मांगता हो मुझे बहुत दया मालूम हुई मैं ने ही उसे सिर्फ क्षमा न किया बल्कि औरों को भी उसे सजा देने से रोका।

थोड़े ही दिनों के बाद मैं दूसरे जहाज पर चढ़ी तब से मुझ से फिर जैक से भेंट न हुई।

जीराफ़।

यह जानवर देखने में सुन्दर और स्वभाव का [illegible] होता है। जब सिर और गला सीधा करके खड़ा होता है तो सोलह या अठारह फुट ऊंचा होता है। सिवा चरने के समय छोड़ कर हमेशा गला सीधा ही रखता है। विशेष करके पेड़ों का पत्ता जब सहज में मिलता है तो खाता है पर घास चरने के समय अपना अगला पैर अलग अलग कर लेता है लेटने के वक्त यह ऊंट की तरह पैर मोड़ लेता है। जब कोई पीछा करता है तो ऐसा तेज दुलकी भागता है कि घोड़ा नहीं पा सकता। और जानवर दौड़ने में जल्दी थक जाते हैं पर यह बहुत देर तक दौड़ सकता है।

अफ़रिका में मिलता है, कभी कभी सिंह बाघ आदि इस पर हमला भी करते हैं; पर बड़े पैर देखने में मालूम होता है कि इस को अपनी रक्षा का उपाय नहीं है पर लोग कहते हैं कि सारे जानवरों के शत्रु जीराफ को भी साहस हीन कर देता है और यह भाग जाता है। सिंह छोटे छोटे इसे होते हैं इस से क्या करता है नहीं मालूम है। [illegible]

बर्ची के मांस की बड़ी बड़ाई करते हैं। हौटेनटार लोग खाने के लिये इस का शिकार करते हैं। पर डाक्टर लिविंस्टोन ने इस का और दूसरे जंगली जानवरों का मांस खराब कहा है यहां तक कि बर्बर भी उसे खाने लायक नहीं समझते।

यह सुन्दर जानवर कलकत्ते के पशुशाला में है। बड़ा सूधा होता है समाज में रहना इस को अच्छा लगता है थिबो साहब कहते हैं कि एक जीराफ को मैं ने देखा था जो आदमी उस की सेवा में रहते थे उन को न देखने के कारण रोता था।

बिल्ली का अपूर्व प्रेम।

एक बिल्ली जो किसी कुटुम्ब में पाली गई थी एक लड़के से बड़ा प्रेम रखती थी। वह लड़का भी उस के साथ बहुत खेलता था। भले लड़के भी जानवरों का दिक् किया करते हैं। यह छोटा भला लड़का भी यदि उस की [illegible] रीति से दिक् करता तो वह सब सह लेती। बिल्ली जब कभी चूहे पकड़ती तो जीता ही अपने मित्र के पास ले आती; यदि लड़का उस से चूहा लेने की इच्छा प्रगट करता तो बिल्ली चूहे को छोड़ कर देखती थी कि लड़का पकड़ सकता है या नहीं। अगर वह नहीं पकड़ सकता तो बिल्ली आप दौड़ कर उसे पकड़ती और लड़के के सामने लाकर रख देती; इसी तरह जब तक लड़का खेल करने की इच्छा प्रगट करता रहता तब तक बिल्ली छोड़े रहती थी।

अचानक से लड़का बीमार पड़ा; शुरू में बिल्ली ने कभी उस की चारपाई नहीं छोड़ी, पर जब बीमारी बहुत बढ़ गई तो बिल्ली को हटा कर लोगों ने बैठ कर दिया। अन्त को लड़का मर गया। किसी तरह बिल्ली छूट गई तो झट उस कमरे में पहुंची जहां उस आशा थी कि लड़के से भेंट होगी। वहां से निराश हो बहुत ही घबराहट और दुःख के साथ रोती कर उसने सारा घर ढूंढ़ डाला अन्त को वहां पहुंची जहां लाश थी। वहां वह चुपचाप दुखी हो पड़ी रही, फिर लोगों ने बैठ कर दिया। जब लड़का दफन कर दिया गया तो बिल्ली

छोड़ दी गई, पन्द्रह दिनों तक उसका पता न रहा उसके बाद बहुत दुबली पतली हो कर उसी कमरे में पाई । खाने को दिया गया तो उसने नहीं खाया और जल्दी ही कलप कर चली गई । आखिर भूख से लाचार हो रोज़ वह भोजन के समय पर आ जाती थी पर जो कुछ मिला खा कर घर के बाहर चली जाती थी । किसी को पता नहीं लगता था कि कहां चली जाती है एक दिन किसी ने कब्रिस्तान की दीवार के नीचे अपने प्यारे की कब्र के पास बैठी हुई देखा मृत मित्र से उस का प्रेम ऐसा दृढ़ था कि पांच बरस तक लोगों ने उसे यही देखा कि कब्र के पास दिन काटती है और जब जाड़े आदि से बहुत कष्ट होता था तब वहां से टलती थी । यह भी एक आश्चर्य ही की बात है कि और लड़कों को वह अपने साथ खेलने देती थी पर उन में से किसी खास के लिये उतना प्रेम उस ने नहीं दिखलाया जितना कि उस लड़के के लिये दिखलाती थी ।

सील ।

यह नाम अंग्रेज़ी है और उस जानवर का है जो उत्तर समुद्र में बहुतायत से पाया जाता है । यदि यह जानवर उस प्रान्त में न होता न जाने ग्रीनलैन्ड वालों का दिन कैसे कटता क्यों कि इसके शरीर की सब चीज़ें उनके काम आती हैं । मांस इसका उनलोगों का मुख्य भोजन है और चर्बी जाड़े की बड़ी अंधेरी रातों में चिराग़ के लिये तेल का काम देती है । उसकी खाल से बिछावन, खीमा और पोशाक वहां वाले अपने और बाल बच्चों के लिये बनाते हैं । सिलाई करने के लिये डोरा का काम उसी के नसों से चलता है । ग्रीनलैन्ड वालों की सब से बड़ी इच्छा और बड़ा हौसला सील को पकड़ कर मार लाने ही में है । इस काम की तालीम वहां वालों को बचपन ही से दी जाती है ।

यद्यपि यह जानवर वहां वालों के बहुत काम का है पर बहुत ही बदसूरत होता है । सिर इसका बड़ा और गोल होता है छोटे छोटे पैर बत्तखों के से झिल्लीदार रहते हैं । कोई इसे पालना नहीं चाहेगा पर

बचपन में पकड़ा जाये तो पीस मानते है। नाम रख दिया जाये तो पुकारने पर मालिक के पीछे पीछे कुत्ते की तरह आता है।

कई बरस हुए कि एक सील का बच्चा समुद्र में थोड़ी दूर पर पकड़ा गया था और लोने जल से भरे हुए नाद में रक्खा गया था, पर कभी कभी वह मकान के आस पास फिरता था और आग के पास भी आकर बैठता था। सील का स्वाभाविक आहार ही उसे दिया गया था। वह ऐसा पल गया कि यद्यपि हर रोज उसे समुद्र में ले जाते थे और डेंगी से उतार कर जल में छोड़ देते थे पर वह भागता नहीं था डेंगी के पीछे पीछे तैरा करता था, जब उसको फिर डेंगी में ले लिया जाता तो वह कुछ नहीं बोलता चला आता था।

यह जानवर जल में भी और सूखे पर भी रहता है। समुद्र के किनारे पत्थर के चटानों की खोह में इस की मांद रहती है और हमेशा सिर निकाल कर जल में तैरा करता है गर्मी में चटान पर धूप खाना उसे अच्छा मालूम होता है।

स्कौटलैन्ड देश में फोर्थ की खाड़ी के पास एक किसान रहता था। एक दिन वह तीर पर के चटानों में मछली और किकोड़े की खोज में गया था क्या जाने कुछ मिला या नहीं पर सील का एक बच्चा मिल गया उसी को घर पर लेता आया। दूध रोटी उसे खाने को दी गई जो उसे बहुत अच्छी लगी। इस तरह उसने तीन दिनो तक खिलाया। पर किसान की स्त्री को वह जानवर अच्छा न लगा बल्कि उसने निकाल देने की प्रार्थना भी की। कई पड़ोसियों को साथ ले कर किसान ने सील को ले जाकर समुद्र में छोड़ दिया। कई बार जल में छोड़ा गया पर सील हमेशा उन के पास चला चला आया। आखिर यह सलाह ठहरी कि सब से लम्बा आदमी जितनी दूर जा सके जल में जा कर इस को छोड़ आवे और बाकी लोग पत्थर के टीले के पीछे छिप रहें, ऐसा ही कियागया पर सील को अपने मालिक पर ऐसी प्रीत हो गई थी कि फिर वह तैर कर तीर पर चला आया और सब को ढूंढ़ कर उसने देख लिया। आखिर उसकी धीरज ने किसान को जीत लिया, इससे किसान उसे फिर ले आया।

ऐसे जीव बहुत कम देखने में आते हैं जिन पर दया की गई और वे कृतज्ञ न हुए हों या जिसने दया की उसका गुन मान कर उन्होंने प्रीत न दिखलाई हो। यदि प्रेम और कृतज्ञता पशुओं में है तो जिन को बुद्धि है उनको कितना बेशी होना चाहिये।

भेंड़ो।

जब मैं कीटा था तो एक मित्र के साथ अकसर बाहर निकल जाता था। वह अकसर तस्वीर उतारा करता था। एक दिन हम लोग ऐसी जगह गये जहां का दृश्य अति सुन्दर था। जाते ही झाड़ी के नीचे आराम से बैठे। एक किताब हमारे साथ थी उसे मैं पढ़ने लगा और मेरा मित्र तस्वीर उतारने लगा।

बहुत देर नहीं बीती थी कि झाड़ी की दूसरी ओर अजीब खड़ खड़ की आवाज़ सुन पड़ी। एका एक हम लोगों के सिर पर से एक भेड़ी तब दूसरी तीसरी, झाड़ी तड़प तड़प कर आने लगी।

मैं कूद कर भागा चाहता था कि मेरे मित्र ने मना किया और कहा सीधे मत खड़े होओ लेकिन रेंग कर एक किनारे हो जाओ क्यों कि अब बिलकुल झुंड की भेंड़ी इस तरह तड़पेंगी।

जब किनारे हो गये तो देखा कि जहां हम लोग बैठे थे वहां तीस भेड़ियां उसी तरह कूदीं। उधर आने की कोई खास वजह न थी। एक भेड़ी उस तरफ़ कूद कर आई थी इसी लिये बाकी भी टप आईं। अगर हम लोग वहां बैठे ही रह जाते तो सभी हमारे ऊपर हो कर जातीं।

भेंड़ सब नक़ल करना खूब जानती है उन का भेड़िया समान मज़दूर है जो एक भेड़ी करेगी उसे बेसमझे बूझे सब करेंगी। कहीं पुल पर हो कर जाना पड़ा और एक कहीं कुराह जाकर पानी में गिरी, तो यह देख कर भी जरूर सब उसी ओर जायेंगी।

थोड़े दिन हुए एक बहुत हंसी की बात हुई थी। सड़क पर एक झुंड जा रहा था जाते जाते उस ओर चला गया जिधर से चले जाना उचित न था। झुंड के साथ का एक लड़का उन को रोकने के लिये सिर पर लकड़ी रख रास्ता रोक खड़ा हो गया।

एक भेड़ी तो कुएं समेत उसमें टप गई फिर क्या था एक के बाद एक झुंड की बाकी भेड़ियों ने वही खेल शुरू किया इसी तरह सब टप गईं। पहले तो जड़ को नहीं समझ पड़ा कि क्या करें इतना घबरा गया पर पीछे खेल ही के लिये खड़ा ही रह गया। इन बातों के रहते भी जो जानकार हैं वह उन को बेवकूफ नहीं समझते पर हां यह कहा जा सकता है कि घोड़े या कुत्तों सी उन में बुद्धि नहीं है।

विलायत में बहुत तरह की भेड़ें होती हैं। साउथ डाउन वाली के ऊन बहुत ही उम्दा और उस की कदर बहुत होती है। फलालैन और ऊनी कपड़े उस के बहुत बनते हैं। सुकुमार होने के कारण उस को बड़ी सेवा की जाती है सेवा कम होने से वह खराब हो जाती है।

काले मुंह वाली पहाड़ी भेड़ें बड़ी दगाठी होती हैं। कम और खराब खाना भी न मिले तो बहुत चिन्ता नहीं करतीं पहाड़ी मुल्कों में जब आंधी के साथ बर्फ गिरता है तो वह भी बेतरह सम्हाल लेती हैं। सब से बढ़िया ऊन शायद मेरीनो भेंड़ी की होती है उन का यह नाम इस लिये पड़ा है कि वह एक ठिकाने नहीं रहतीं इधर उधर घूमा करती हैं यह शब्द स्पेन देश का है। असल पैदाईश इन भेड़ियों की स्पेन ही है वहां से और और देशों में लोग उन को ले गये हैं। आष्ट्रेलिया में इन भेड़ियों की अब बहुत ऊन आती है।

हमारे देशमें भेड़ीकी ऊनके कपड़े पंजाब और कश्मीर के बहुत प्रसिद्ध हैं।

तितली की कहानी।

यह क्या बात है कि गर्मी में चारो ओर जिधर देखो उधर ही मैदान और पेड़ों पर तितलियां उड़ती फिरती देख पड़ती हैं। बाकी दिनों में वह कहां थीं? बसन्त ऋतु के आते ही ये सुन्दर सुन्दर रंग बिरंगी जीव एक बारगी कहां से आ गये? यदि वे पहले न थे तो क्या थे?

हम लोग सब कोई जानते हैं कि प्रत्येक वृक्ष, फूल और घास का जन्म बीज से होता है। यह भी हम लोग जानते हैं कि चिड़ियों का जन्म भी सुन्दर सुन्दर उजले, भूरे और नीले रंग के अंडों से होता है। पर तितलियां कहां से आती हैं।

SEIGEL'S SYRUP

सब चाढ़ाई तमाशे को छटा देती है। नं० २

"यह आदमी देखो, नशे में है" मैं जब रास्ते में अथड़ाता था तब मेरे विषय लोग ऐसा बोलते थे, और पहिले देखने से आपका मत भी ऐसाज होगा परंतु सब भूल करते थे, मैं रास्ते पर इस वक़्त सीधा चल सकता नहीं था, उसका कारण सुनने में आपको खुशी होगी उस वास्ते मेरी ज़िन्दगी का थोड़ा वर्णन करनेकी ज़रूर है ।

जिस वक़्त की बात करता हूं उस वक़्त तक दूसरे मनुष्य निरोगी और आनन्दी है तैसाज मैं भी था, परन्तु पांच अथवा छ बरस पर मेरी तबियत बिगड़ी ऐसा मालूम पड़ा, अचलकी क्षुधा कमी हो गई। अन्नकी ज़रूर थी परंतु जब खानेका विचार करता था तब पेट यह विचार विरुद्ध होता था एकदा गोश और रोटी के बदले सीसे की माफिक खोराक पेटमें वज़नदार मालूम पड़ता था, और सोने का वक़्त गुज़र जाने से अपने को सुस्ती होती है तैसेही सुफ़्ती होती थी पीछेसे जाना कि रात्रिमें निद्रा बदल गई है शरीर हलका और आरोग्य होने बदल अफीम और निद्रा जनक औषधि खाया होवे तैसा शून्य हो जाता था। पीछेसे देखा की मेरी जिव्हा पर घर था। और रोज़गारमें उद्योग करनेकी अभिलाषा उड़ गई बाजू और पीठमें दरद होता था, और कभी भुजायमें भी होता था, दर्पण में देखा तो मेरी आंखें पीली थीं और दांतों पर चिकना पदार्थ था, और मुखमें बेस्वादी थी, जो पानीसे धोने से अथवा दूसरे कोई उपाय से नहीं मिटती थी।

बहुत बंध कुष्टी और खराब उडकार आते थे, ऐसे समय में कैसा दुःखी था उसकी विस्मृति होनेवाली नहीं, कभु दुर्बलता से और कभु चक्करसे खुले रस्ते पर अथड़ाता था और ज़मीन पर गिर जाता था परंतु खड़ा रहने का प्रयत्न हो सके इतना करता था, और चक्कर शीघ्र मिट जाती थी और फिर उस रोज़ नहीं आती थी, ऐसी मेरी अवस्था थी मित्र और वैद्य जो औषधि बोलते थे सब मैं खाता था परंतु दिन प्रति दिन दुर्बलता इतनी बढ़ती गई कि ऊंचियामें रहने में जितना राज़ी था उतना आज दुनियां छोड़ने में था।

मुझे आराम कैसे हुआ वह जानने का आपका हक है इस वास्ते थोड़े शब्दों में कहता हूं। लंडन का एक सद गृहस्थ के पास मेरा वृतान्त कहा तब वह बोला कि "मदर सीजल के क्युरेटिव सिरप" से तुमको बहुत फ़ायदा होगा। उसके कहने पर विश्वास नहीं आया, परंतु एक बाटली खरीद करी और थोड़े दिन में मुझको टेका मिला। अन्न अच्छी तरह खाने लगा और निद्रा भी आने लगी। इस से मेरे को ऐसी खुशी भई कि एक चार बाटली पी गया तब तक छोड़ा नहीं। पांछे मैं आरोग्य हुआ, यह चमत्कार माफिक मालूम पड़ेगा ऐसा मैं जानता हूं, परंतु गोस्पेल माफिक सत्य है, तन्दुरस्ती फिर आरोग्य होनेसे मुझे अत्यंत आनन्द हुआ, हर एक मनुष्य के माफिक कभी अजीर्ण होता है तो यह औषधि थोड़ी पीने से थोड़े घंटे में आराम हो जाता है इतनी तरह से रोग दूर होता है कि मैं जादूई तमाशे देखे हैं वह याद आते हैं, मात्र "मदर सीजल का क्युरेटिव सिरप" की क्रिया में बिलकुल ढोंग नहीं है। मेरे अनुभव के लिये मैं जानता हूं कि बहुत काल की बदहजमी और अजीर्ण चाहे ऐसा खराब होवे तो भी मिट जाता है।

आपका अति आभारी

जे० जी० सीम्सन।

२१, हेनोवर स्ट्रीट, न्युकासल-अन्डर-लाइम,

स्टाफर्डशायर इंग्लंड

B. T.

चार घंटे की टेर हो गई। न० ३

"ओ, ईश्वर! चार घंटे गये उसको पीछे बुला सकूं तो कैसा अच्छा देखो एक पल में मनुष्य कैसी विपत्ति में पड़ जाता है।"

मिस्टर जेम्स कुर्टिस और मिस्टर सी० एस० बेनेट दोनो सान फ्रान्सिसको के वतनी थे और दिलजान दोस्त थे, गये साल की उष्ण ऋतु में परस्पर का दोष निकाल के पहिली वक्त झगड़ा किया। बिचार चतुर लोगों ने दोनों को समझाया परंतु बनी न बनी हो सकती नहीं।

स्मरण शक्ती की स्लेट पर इसकी नींव हो चुकी थी। परस्पर का समागम बने तहां लग नहीं करते थे। परंतु पड़ोसमें रहने से कोई समय मिलना भाग्य होता है। दोनों की भेंट रास्ते में भई। झगड़ा फिर शुरू हुआ कठिन शब्द झपाटे के साथ निकले और क्रोधके आवेश में ज्ञान भूल गया था ऐसा जो कुर्टीस उसने बंदूक खैंच के बेनेट को तत्काल गोली से मार डाला। थोड़े वक़्त पीछे अपना तिरस्कार और अफ़सोस सहित ऊपर लिखे हुए शब्द बोला। परंतु कैसे निरुपयोगी, कैसे निरास कैसे व्यर्थ।

परन्तु क्या पल में विपत्ति आती है ऐसा कुर्टिस का बोलना सत्य है? बारंबार यह सत्य दिखता है, परंतु क्या इस से विशेष गुह्य बात आगे देखने में न आवे ऐसी कोई नहीं है? विपत्ति कौन सी जात की है कह कुछ उपयोग की नहीं है। इस वास्ते इसी तत्व पर दूसरी बिना है उसका ख़्याल करेंगे।

एक विचारवान स्त्री लिखती है:—सन १८८० के ओक्टोबर मासमें मुझे ५ । बिमारी हुई कि आराम होने की आशा नहीं थी, और बिछौने पर सोने की ज़रूरत पड़ी रोगी के प्याले से पतली खोराक मुझे खिलाते थे, कारण कि बैठने की शक्ति नहीं थी। मेरी छाती धड़कती थी उसकी आवाज़ तकिय पर होती थी, और भाले के प्रहार समान वेदना होती थी, केवल निराधार हो गई और प्रश्वास लेने में बहुत कष्ट होता था। एक वैद ने महीना रोज़ दवा की परंतु दुर्बलता बढ़ती गई कभी रात समय ऐसी बीमार हो जाती थी कि प्रातः काल तक बचने की उसको फिकिर रहती थी। सलाह पूछने वास्ते दूसरे वैद को बुलाया और दोनों का ऐसा मत हुआ कि मेरी हालत बुरी है सजीवन रखने के वास्ते मुझे मदिरा पिलाते थे, मेरा पति और पुत्री निरन्तर मेरे पास बैठते जो जो औषधि खाया उसमें से किसी से आराम हो नहीं सका और मैं मरण तुल्य हो गई।

इस वक़्त, क्लोमय के नज़दीक मोटली गांव है वहां के मिसीस क्रिलिंग ने "मदर सीजल का सीरप" करके औषधि है वह अज़माने का आग्रह किया। मैंने एक शीशी लिया, और थोड़े दिन पीछे शक्ति आवे इतना खोराक हज़म करने को समर्थ हुई, और खराब चिन्ह कमती हो

गये, सीरप की छ शीशी खर्च हुई तब पूर्ण आराम हुआ और अगले तीस बरस में जैसी तन्दुरुस्ती थी उस से अच्छी मालूम पड़ी। इस औषधि से मेरी दो पुत्रियोंका अजीर्ण मिट गया है। कोई सवाल का उत्तर खुशीसे दूंगी।

(सही) मिसीस लुइ जाकसन, मिलडर्स आर्मस होटेल, वूलरीड डेमरस्मिथ, लंडन, जनवरी तारीख १४ सन १८९२।

जिस पत्र में मि जार का विषय लिखा उसमें मिसिस जाकसन और लिखती है कि सन १८९० के ओक्टोबर महीने के पहले बीस बरस तक कलेजे में और पेट में वेदना से बीमार रहती थी। मुख में बे स्वादी, मंद धुवा, और अन्न खोराक से घृणा होती थी, शून्य और थकावट हो गई थी, और पेट खाली हो गया होवे ऐसा मालूम पड़ता था, छाती धड़कती थी, चक्कर आते थे, और बारंबार रास्ते में गिर जाती थी तब दूसरे का आश्रय ले कर घर को पहुंचती थी।

इस पर से अपने को मालूम होता है कि यह स्त्री की बीमारी का जो कारन बहुत काल चल रहा था उस कारन का परिणाम ऐसा भयंकर हुवा कि वह स्त्री का जीव जोखिम में था, इतीश ऐसा होता है, अपने को कारन की पहचान होवे अथवा न होवे, बैर और धिक्कार के विचार अकस्मात उसके मन में आते थे जिस लिवे मनुष्य हत्या होवे ऐसी स्थिति अवश्य हुई उस कारन से कुटिल ने गुनहा किया इस से जुदे जुदे को बिना स्त्री के रोग की है जिसने शरीर के दुश्मन अजीर्ण और बदहजमी थी जिसका परिणाम भयंकर हो गया।

मारांश एकही है, बुराईके आरंभकी सम्हाल रखना और अनायास से मर्यादा में रह सके तब तक अटकाना।

E. H.

न० ४

असंख्य मनुष्य को दुःख देनेवाला भयंकर रोग।

रोग के आरंभ में पेटमें बिगाड़ होता है, और सावधान न होनेसे अल्प काल में कलेजे में, मस्तिष्क में और शरीर के जोड़वाले भागों में

पसर के, सब शरीर में रोग फैल जाता है, जब तक दुःख मे मुक्त नहीं तब तक दुःखी अवस्था में आयुष्य व्यतीत करनी पड़ती है, इस रोग को लोग भूत से दूसरा रोग समझते हैं, परंतु पढ़ने वालों को नीचे लिखे हुए प्रश्न पूछने से निश्चय होगा कि अपने को क्या रोग हुआ है, क्या भोजनके पीछे श्वास ग्रहण करने में कुछ कष्ट, इच्छा, और तकलीफ़ होती है ? क्या आलस्य होता है ? शरीर बोझा समान मालूम पड़ता है ? और सोने की इच्छा होती है ? क्या मुख में बे स्वाद और दांत और दांत के चमड़े पर चिकास युक्त पदार्थ प्रातः काल में होता है ? क्या आंखों का रंग पीला है ? क्या जीभ पर मैल है ? बाजू और पीठ पर दरद होता है ? क्या क़ब्ज़ियत है ? क्या सीधे आसन पर उठने के समय चक्कर आते हैं ? क्या पायखाना अल्प और रंगदार आता है ? क्या खाने के बाद शीघ्र उबाल आते हैं और उसके साथ डकार आते हैं ? क्या छाती बारंबार धड़कती है ? इस नाना प्रकार की चिन्ह एक समय कदापि देखाई नहीं पड़ते, परंतु जैसा जैसा रोग वृद्धि पाता है तैसा तैसा रोगी की बेचैनी बढ़ती जाती है। बहुत दिनों के बाद रोग होवे तो सूखी खांसी और स्वासकी खांसी आती और थोड़े काल पीछे उसके साथ बलगम निकलता है। जब दरद बहुत बढ़ता है तब चमड़े का रंग मैला भूरा हो जाता है और हाथ पैर पर ठंडा और चिकना पसीना होता है। जब कलेजा और मलाशय में रोग वृद्धि पाता है तब संधि का दरद प्रगट होता है, और हमेश को औषधि से इस भयानक दरद को बिलकुल आराम नहीं होता। बदहजमी अथवा अजीर्ण इस रोग का मूल कारण है, और आरंभ में थोड़ी सी उपयुक्त औषधि खाने से यह रोग दूर होता है। रोग की प्रथमावस्था में योग्य उपाय जल्दी करने से अल्प औषधि से आराम हो जाता है, और कभी रोग दृढ़ हो गया होवे तो जब तक रोग का प्रत्येक चिन्ह नाश न होवे, सुधा न लगे, और पाचन इन्द्रियां आरोग्य स्थिति में आवे, तब तक योग्य उपाय यत्न पूर्वक करना इस कष्टदायक रोग की सबसे विस्वासी और गुण कारक औषधि "सदर सीजलका क्युरेटीव सिरप" है। यह औषधि वनस्पति से बनी है और जगत के सब रसायनी

और गंधियों के पास मिलती है। यह "सीरप" रोग के मूल तक पहुंचके शरीर में से रोग को जड़मूल से निकाल देता है।

A, A.

न० ५

बाढ़कापका चतुर प्रयोग।

अमेरिका का एलची वियेनामें है उसने अपनी सरकार को बाढ़कापका जानने लायक प्रयोग थोड़े दिन पर करने में आया उसका वर्णन भेजा है। वियेना का प्रोफ़ेसर बिलरोथ ने यह प्रयोग किया तब एक आदमी के पेट का एक तृतियांश भाग निकाल डाला था और अजीर्ण यह है कि रोगी को आराम हुआ। ऐसा प्रयोग कभी सफल भया नहीं था। जो रोग वास्ते यह प्रयोग किया वो पेटका भगंदर था। उसके चिन्ह ऐसे होते हैं। क्षुधा क्षीण होवे, पेट में खालो हो गया होवे ऐसी विचित्र वेदना होवे, दांत पर चिकना पदार्थ जमा होता है, विशेषत: प्रभात में, और वे स्वादी होती है। यह इजा अन्न से मिटती नहीं, परंतु बढ़ती है। चक्षुका रंग पीला हो जाता है और अन्दर बैठ जाती है। हाथ पैर थंड पसीने के लिये थंडे और चिकने हो जाते हैं। सदा थकावट मालूम हो ऐसा रोगी को मालूम पड़ता है और निद्रा से विश्रान्ति मिलती नहीं। थोड़े काल पीछे रोगी का मिज़ाज तंतुविकारी, तामसी, और उदास होता है, और उसके मन में बुरे भविष्य की फ़िकिर रहती है। स्वस्थासन से जल्दी से उठने लगे तो चक्कर आती है, घुमड़ी मालूम पड़ती है, गिर पड़े, नहीं इस वास्ते कोई वस्तु को दृढ़ पकड़ने की फ़रज पड़ती है। बंध कुष्ट और कोई कोई समय चमड़ी सुखी और गरम होती है। लोही नाड़ी और जड़ होती है और बराबर फिरती नहीं। थोड़े काल पीछे दरदी अन्न खावे तो खट्टे अथवा मीठे उबाल पाके बाहर निकल आता है। बारंबार छाती धड़कती है और छाती का दरद में डूबा है ऐसा रोगी को डर लगता है। आखिरदरदी के पेट की अंतरेन्द्रियों के द्वार बंध होने से पेट में अन्न बिलकुल रह सकता नहीं। यह रोग

भयंकर है तो भी ऊपर लिखे हुए लक्षण वाले रोगी को घबराना नहीं चाहिये कारन कि हज़ार में नवसौ निनानवे को पेट का भगंदर नहीं होता परंतु केवल अजीर्ण होता है और उपयुक्त औषधि करने से आराम हो जाता है। इस रोग का सब से निर्भय और उत्तम उपाय "मदर सीजल का क्युरेटिव सिरप" है। यह औषधि वनस्पति से बनी है और जगतके सब रसायनी और दवा खानों में मिलती है। यह "सिरप" रोग के मूल तक पहुंच के जड़ मूल से शरीर में से निकाल डालती है।

S. O.

न० ६

अपनेको मालूम न पड़े इस रीतसे रातके समय चोरकी माफिक यह रोग अपने पर चला आता है बहुत मनुष्यों की छाती और बाजूमें और कोई वखत पीठमें दुःख होता है आलस्य और सोने की इच्छा होती है। क्षुधा मंद होती है। पेटपर भारी बोझ होवे ऐसा मालूम पड़ता है। कभी पेट खाली हो गया होवे ऐसा होता है और अन्न से तृप्ति होती नहीं आंखें धस जाती हैं और हाथ पैर शीतल और चिकने होते हैं। थोड़े काल पीछे सूखी खांसी आती है और उसके साथ थोड़े महीने पीछे नीले रंगवाले बलगम निकलते हैं। रोगी सदा थका सा होता है और निद्रा से विश्रांति मिलती नहीं। थोड़े काल पीछे दरदी मिज़ाज तंतुविकारी, तामसी, और उदासी हो जाती है, और उसके मनमें बुरे भविष्य की फिकर रहती है। सीधे आसन पर से उठने के समय चक्कर आते हैं। बंध कृष्ट होती है। कोई कोई वखत चमड़ी सूखी और गरम होती है। कोढी झाड़ी और जड़ हो जाती है। आंखों के स्वेत भाग पीले हो जाते हैं। मुख श्याम और रंगदार आता है, और थोड़ी देर रखने से नीचे कचरा बैठ जाता है। वारंवार उबाल आते हैं उसका स्वाद कोई वखत खट्टा और कोई वखत मीठा होता है, और उसके साथ छाती धड़कती है। नजर कम हो जाती है। अति भरनीउत्साह और दुर्बलता मालूम पड़ती है। ये सब चिन्ह एक पीछे एक आते हैं। ऐसा

कहते हैं कि यह रोग विविध रूपसे अपनी प्रजाका एक तृतियांश भागको सताता है। ऐसा मालूम पड़ा है कि वैद्य लोग यह रोगको दूसरा रोग समझते हैं कोई कलेजे के दरद की दवाई देते, अथवा कोई मलाशय के रोग पर दवा करते। परंतु नाना प्रकार की औषधि में से कोई औषधि सफल होती नहीं, कारन ऐसी औषधि होना चाहिये कि जिसका असर शरीर के प्रत्येक भाग पर और पेट पर एक सा होवे; कारन अजीर्ण जो खरा रोग है उसमें हरेक भाग बिगड़ जाते हैं और हरेक भाग पर एकी वखत एक सा असर करे ऐसे उपाय की जरूरत है। इस जात के रोगको "मदर सीजलका क्युरेटिव सीरप" जादु मंत्र की माफिक मिटाता है और शीघ्र आराम करता है। "मदर सीजलका क्युरेटिव सीरप" सब दवायनो और गंधियों के पास मिलता है।

W. D.

CLEMENT'S TONIC

मरीज़ों के ख़िदमत में,

क्लेमेन्ट साहब की दवा मक़्वी।

एक बहुत असर करने वाला क़ाबिल एतबार इलाज है वास्ते नीचे लिखे हुए मरज़ों के—

पट्ठों की कमज़ोरी नुक़सान जिस्मानी फुर्ती की कमी और हर तरह की कमज़ोरी सलबी ताक़त की कमी जिरियान और मनी और पेशाब वग़ैरह वग़ैरह क्लेमेन्ट साहब की मक़्वी इमेज़ा के लिये क़ामिल तौर पर जिस्मी फुर्ती को बहाल और बरक़रार रखती है और पट्ठों की ताक़त को ज़ियादे करती है और जवानी की पुरदिली और शबाब की पुर शोख़-लगी को ताज़ा कर दिखाती है जिस्मानी और अज़ाय रईसां की हरकाती ताक़त को उन मर्द और औरतों के ताज़े कर देती है कि जो कमज़ोर ज़ईफ़ सुस्त और ख़स्ता और मांदा हो गये हैं क्लेमेन्ट साहब की मक़्वी एक बेमिसाल इल्म है हर तरह से इन्सान के हक़ में इस की अजीब मेहनत बख़्श ताक़त ज़ाहिर होती है इसके इस्तेमाल के बाद ही और बाबत में ताकीदी शहादत उन लोगों की जो इस को इस्तेमाल में ला चुके हैं वैसे निहायत और बेशुमार हैं वह लोग बयान करते हैं कि हर हर एक मोताद की तासीर की नफ़े और फ़ायदे पहुंचाने वाली बातें हैं फ़िल हक़ीक़त यह एक ऐसी पुर तासीर मोक़्वी है कि जिस से पट्ठों को ताक़त पहुंचाती है और जो हर एक रग ओ पे में जिस्म के पट्ठों के ज़रिये से ताक़त बख़्श और ताज़ा करने वाला असर को पहुंचाती है हर हालत में ख़ाह जिस्मानी ताक़त बसबब सख़्त शदीद के कम की गई हो या सुस्ती और तकलीफ़ और मेहनत सख़्त के या किसी क़िस्म के ज़रर पहुंचाने वाली नाचक़वत अन्देशी के सबब से हो ख़ाह वो घटी हुई हालत किसी

तरह की हो जब कि पट्ठों की कमज़ोरी पाई जाये या किसी किस्म की ख़ास कमज़ोरी या हर तरह की कमज़ोरी हो जब कि सुस्ती या ज़ोफ़ या कम ताक़ती उस मर्ज़ का लाज़िम हो इन हालतों में क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी ही सिर्फ़ इलाज है। जो लोग कि बदनी या क़लबी शदीद मिहनत के नतीजों के सबब तकलीफ़ पाते हैं या कि सख़्तियों में और सर्दी या गर्मी बरदाश्त करने के सबब से या कि किसी नामालूम सदमे के सबब या हिर्स वो तमें के सबब या जो लोग दानिस्ता वो नादानिस्ता इहकाम-ए-क़ुदरत को न मान कर अपने को तकलीफ़ में डाले हुए हों वह लोग क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी को एक ऐसा इलाज पावेंगे जिस से कि यक़ीनी उन को तकलीफ़ से नजात मिलेगी। यह मुक़व्वी बहुत ही जल्द हर क़िस्म के ज़हूर तरक़्क़ी जिस्मी नातावती को दूर कर देती है और फुर्ती के घटती को उस की असली ताक़त और दुरुस्तगी तक पहुंचा देती है। जब जब कमज़ोरी आज़ार रईस को ज़ाहिर हो या कि पट्ठों की कमज़ोरी और घट जाना जिस्मी या क़लबी हरकत का नमूद हो या कि घबराहट ख़यालों का या सुस्ती पतसाद का, या चिड़ चिड़ाहट मिज़ाज का, मालिख़ोलिया, बुज़दिली, घुटनों की या पीठ की कमज़ोरी, दिल की धड़क, सिर का दर्द कमर का दर्द, कड़ा रखना हो, पीठ का दर्द, दांत का दर्द, जो माहूद वक़्त पर हुआ करे आज़ा शिकमी, जोड़ का दर्द, रेखाबी दर्द सरी, सुबह के वक़्त सुस्ती कयालात और जोड़ों का दर्द मोज़िश मसाना, वा गुर्दा की मोज़िश, मटला पेशाब जो पीच की तरह हुआ करता है, ज़रर पहुंचाने वाला और नामालूम नुक़्सान जिस्म का या कि दूसरे अलामात जिस के नतीजे हैं दिली या जिस्मी ताक़त को नुक़्सान ज़ाहिर हो मर्द और औरतों की कामयाबी के मुक़ाबिल में एक रोक पैदा करे और उन को ज़िन्दगानी की बाज़िबात के और ज़रूरी कामों के अंजाम देने में क़ासिल बनावे तब तब ऐसी हालतों में क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी सिर्फ़ एक ही पुर तासीर इलाज है और आज तक होती आई है। नौजवान लोग जो ज़िन्दगानी के मैदान में दाख़िल हुआ चाहते हैं और अपनी क़ाबलियतों पर क़ब्ज़ा या इख़्तियार पक्की तरह रखते हैं और कामयाबी के हद तक अपनी सवारी के ले जाने पर क़ादिर हो क़ायल हैं और वे भूल अज़मी

और क़ाबिल शहीन और फ़रह दिलाने वाले नतीजों को हासिल करने चाहते हैं क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी उन के वास्ते पहली सीढ़ी उन के मुराद तक पहुंचने की है।

अधेड़ लोग जिनकी ढिलती हुई फुर्तियां नतलाती हैं वक़्त से आगे जवानी की तनज़ुली का पाना और जो मालूम करते हैं कि रफ़्त रफ़्त वे एक बेर इस दुश्मन के हवाले में जाने को हैं और जिनकी ज़िन्दगी के ख़ज़ाने में बड़ी बड़ी हुंडियां दाख़िल की जाती हैं ताकि बचपन के क़र्ज़ सब अदा किये जावें या कि जिनके ज़ख़ीरे फुर्ती के मर्ज़ के बाइस कम हो गये हैं या सुस्तगी और जांफ़िशानी और ज़िन्दगानी की मिहनत के सबब घट गये हैं या कि किसी और और तरह से अपनी तन्दुरुस्ती को ज़ाया किये हैं उनके हक़ में क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी एक दोस्त है जो मुसीबत के वक़्त पर दस्तगीरी करेगा और एक पुरज़ोर मदद है और एक दुरुस्त करने वाला सुस्ती हालतों का है जो कभी नहीं चूकेगा और वे इसमें एक नई ज़िन्दगी हासिल करेंगे और बदनी ताक़त भी हासिल करेंगे और सब तरह की हालत जो फुर्ती ताज़ा कामिल तौर पर हो जावेगी।

बूढ़े लोग इस मुक़व्वी के इस्तेमाल से दूनहिज़ाज़ की पेशक़दमी को रोकते हैं और ताक़त की तनज़ुली से बच रहते हैं और अपने शबाब को दोबारा हासिल करते हैं ताक़त बदनी पाते रहते हैं और दोबारा अपनी क़ाबलतियों पर क़ाबिज़ और क़ादिर हो जाते हैं और अपनी फुर्ती और शाइस्तियत की हमेश बहाल और बरक़रार रखते हैं।

नौजवान औरतें क्लेमेन्ट साहब की मुक़व्वी को एक निहायत ही पुरतासीर इलाज पावेंगी जो सहलुल वसूल है। इससे हर क़िस्म की कमज़ोरी जो ख़ास कर औरतों को हुआ करती है इलाज पज़ीर होती है और दफ़ा हो जाती है इसके मुक़ाबिल में और इलाज औरतों की कमज़ोरी दूर करने का नहीं है। और जइफ़ुल क़वा नाज़ुक और नहीफ़ बदन छोटी लड़कियों के हक़ में यह बतौर बाला के काम करती है और यक़ीनी पुरज़ोर जनाना तबियत पैदा करती है यह पुरतासीर इलाज उन बदक़िस्मतों को फ़ैदा करती है जिसके ज़रिये से ख़ून पहुंचानेवाले नलीका तबलीलात की पर्दों के रोका जाता है और पुरज़ोर ख़ाहिशात नफ़्सानी

को दबाया जा सकता है और फुर्ती की हालत के नुक़सान का जब्र कर देता है और आज़ाय रईस के हरकात की बद इन्तज़ामी को दुरुस्त किया जाता है और एतदाल पर लाया जा सकता है ख़लल पहुंचे हुए दीमाग़ को और मालिख़ोलिया और ख़यालात फ़ासिद के बहशत को दूर किया जाता है और ख़ुशनुमा मज़हर ख़ुदा को हमारी ख़िलक़त के हलाकत और तबाही से बचा लेता है इसके इस्तेमाल से बराबरी दर्मियान नुक़सान और जब्र नुक़सान के बरक़रार रक्खा गया है, नुक़सान बेजा रोका गया है ज़रर पहुंचा हुआ को दुरुस्त किया गया है कमज़ोर किया हुआ और सिकुड़ा हुआ रगों को ताक़त असली और दुरुस्तगी दी गई है बेवक़ूफ़ी की सादानी की ग़लती के नतीजे दुरुस्त किये गये हैं और ग़ायत दर्जे के ख़लीज और इज़्ज़त देने वाले मरीज़ अपनी तकलीफ़ों से मुख़लिसी पाये हैं और आदत पकड़े हैं मरदाना सिफ़तों से, और हिम्मत से और फुर्ती और बदनी ताक़त से। क्लेमेन्ट साइब की मुकब्बी से जितने लोग चंगे हुए हैं उनका एक दफ़्तर मौजूद है और जो जो बेहतरियां इस दवा ने ज़ाहिर की हैं वैसी ख़ूबियां हज़रत आदम के ज़माने से किसी और दवा ने आज तक ज़ाहिर नहीं की। मांग भेजने से हम लोग तफ़सीलवार कामिल और सनदें बग़ैर किसी ख़र्च के हर कहीं भेज सकते हैं मरीज़ों को चाहिये कि बहुत ख़बरदारी से इस दवा को ख़रीदें क्यों कि हर जगह पर नक़ली दवा बिक रही है और उनको बड़ी ख़बरदारी करनी चाहिये जिसमें उन्हें सिर्फ़ क्लेमेन्ट साइब की मुकब्बी मिले। और यह भी ख़याल रहे कि अक्सर नक़ली या जाली दवा भी अलकहल से निस्बत ज़ियादा ज़रर पहुंचाती है।

क्लेमेन्ट साइब की मुकब्बी तलब करो हर एक दवा फ़रोश इसको बेचता है।

T. M. Clements

यह दस्तख़त—हर एक दवा के बोतल पर है।

न्यूटाउन, सिडनी
आस्ट्रेलिया

मरीज़ों के ख़िदमत में।

बिहार-बन्धु का नियम।

बिहार-बन्धु सम्बन्धी कायदे।

१। बांकीपुर में बिहार-बन्धु की पेशगी सालाना कीमत १॥) एक रुपया दस आना सुफ़स्सिलमें भी एक रुपया दस आना,-पर डाक महसूलका ।) छ आना अलग लगता है। इससे सुफ़स्सिलमें कुल २) दो रुपया हुआ। छ महीनेका सवा रुपया और तीन महीने का बारह आना राजा महाराजाओंसे कुछ नियम नहीं इस की सहायतार्थ जो देंगे स्वीकार होगा।

२। बिहार-बन्धु के प्रति खंड का नक़द दाम अभी नव पैसा रक्खा गया है।

पेशगी कीमत।

३। बिना पेशगी दाम पाये किसी को नहीं भेजा जाता। गाहकों को मनी-ओर्डर द्वारा रुपया भेजना चाहिये। इस में नाम ठिकाना, डाकघर, ज़िला साफ़ साफ़ लिखना चाहिये।

४। जिन को मनीओर्डर भेजने में अधिक सुबीता न हो तो उनसे डाकघर के मार्फ़त इस रुपये वसूल कर लेंगे। पर इस में दो आना गाहकों को अधिक देना होगा। मतलब यह है कि यदि गाहक लोग मनीओर्डर के ज़रिये रुपये भेज दें तो हम को सुबीता है। डाकघर के मार्फ़त वसूल करने में इस लोगों को बहुत झंझट उठाना पड़ता है और भूल चूक होने का भी भय है।

चार बिहार-बन्धुमें एक बेशी।

५। यदि कोई एकश्रा एक साथ ले चार बिहार-बन्धु लें तो उन को एक बिहार-बन्धु बतौर नज़र के मिलेगा।

लड़कों के लिये।

६। स्कूल में पढ़ने वाले लड़के अगर छापाख़ाना में आकर ले जायें तो उन को फुट नम्बर का नक़द सात पैसा और पेशगी दे जायें तो एक रुपया चार आना साल भर का देना होगा।

७। दूसरे शहर के लड़के यदि अपने पंडित वा मास्टर से चीठी लिखवा कर पेशगी रुपया भेजेंगे तो उन को भी किफ़ायत में मिलेगा ही पर छ आना महसूल का अलग लगेगा यानी एक रुपया दस आना देने से मिलेगा।

विज्ञापन का नियम।

८। मासिक पत्र के साथ का विज्ञापन बहुत दिनों तक रहता है। इस में विज्ञापन छपवाने वालों को विशेष लाभ की संभावना है।

पहलीबार	प्रति पंक्ति	।/)
दो महीने तक का	,,	।/)
तीन महीने तक का	,,	॥)
चार महीने तक का	,,	।/)
पांच महीने तक का	,,	।/)
छ महीने तक	,,	।/)

एक बरस या इस से बेशी दिनों तक एक पेज इश्तिहार का ७) महीना

इश्तिहार यदि आधा पेज से कम होगा और बरस दिन या ज्यादे दिनों तक छपेगा तो ।) प्रति पंक्ति लिया जायेगा।

इस हालतमें इश्तिहार की कीमत पेशगी भेजना चाहिये पर बरस दिन या बेशी दिनों तक इश्तिहार छपवाने वालों से ४ महीने तक का पेशगी दाम मिलने से भी छापा जायेगा।

९। विज्ञापनमें ब्लोक या तस्वीर भी पड़ सकती है। मैनेजर

बिहार-बन्धु छापाख़ाना बांकीपुर।

Health Wealth and rPosperity.
Established 1880.

जी० बी० नायक और कंपनी

बिजली की अंगूठियां, पुतलियां, कडे, कलम, गलपट्टे,

१००००० हरएक चीज पर

से अधिक बिकीं, जी० बी० अन० (G.B.N.

खोटा माल लेना नहीं  देख लीजिये,

शुद्धरक्त मनुष्य का जीवनाधार तथा विद्युल्लता रक्त का जीवनाधार है अत्यन्त सस्ती इस छोटीसी बटरी से शरीर का खून दूषित होने के कारण उत्पन्न होनेवाले अनेक रोगों को आराम होता है कमजोरी, सन्धिवात, शिरोगत वायु अर्द्धवायु पेट में वायु पीड़ा होना, शरीर में धमक और तीव्र पीड़ा, हड्डियों में पीड़ा, नपुंसकता कमर दुखना, फोड़ा, बरम पैदा होना, जी घूमना, मृगी, हाथ पैर गलना, स्त्रियों का प्रसूत इत्यादि कलेजे की पीड़ा, सब प्रकार के बुखार अर्द्ध कपाली माथे की पीड़ी कब्जियत छाती की जलन गले का बरम सब प्रकार की बवासीर पेट की कमजोरी निन्द्रनाश मूत्राशय के रोग दमा खांसी गजकर्ण त्वचा विकार प्लीह और दूसरे रोग इस बैटरी के धारण करने से आराम हो जाते है सो जगत प्रसिद्ध है बिजली के गलपट्टे छोटे २ बालकों के दांतसुगम रीति से निकलने का उपाय बिजली के कलम जिन की धारण शक्ति घट गई हो उन को या जिन का हाथ लिखने में कांपता हो उन को इस कलम का और अंगूठी का गुण देखना उचित है अवश्य लाभ उठाइये।

बिजली के माल का भाव।

पीतल की अंगूठी	१॥)	पीतल की पुतली	१)
चांदी की "	३)	चांदी की "	४)
सोने की "	२०)	सोने की "	२५)
धातू की कलम	१॥)	हाथ के दंड का कड़ा	१॥)
गलपट्टा	१॥)	केमीकल अंगूठी	३)

एक साथ १२ नग लेने वालों को एक नग ज्यादा मिलेगा नकद दाम आने पर वा वेल्यु-पेबल पार्सल में मंगाने से माल भेजा जायगा। उधार नहीं नकद व थोक माल खरीदने वालों से पार्सल कराई न ली जायगी सब वस्तु पर (G. B. N.) ये अक्षर रहा करते हैं अंगूठी या कड़े के लिये मंगाने के साथही अंगूठी या दंड का नाप जरूर भेजना चाहिये यानी अंगुल या दंड का गोलाकार अथवा बारीक सूत की अंगूठी अवश्य भेजना चाहिये, डाक महसूल १ से ६) तक ।=) अलग देना पड़ेगा सब प्रकार की चिट्ठी पत्री नीचे लिखे पते से आना चाहिये। इमामी) माल फक्त हमारी ही दूकान पर मिलेगा। मंगानेवाले अपना नाम अंगरेजी या हिन्दी में लांबे डाकखाना और जिला वगैरह साफ लिखे।

जी० बी० नायक ऐन्ड कम्पनी,

भायखला, बम्बई।

REGISTERED NO 22

THE BEHAR-BANDHU

बिहार-बन्धु

635

A MONTHLY HINDI JOURNAL

DECEMBER 1893 VOL. XXII—NO 12

मासिक पत्र।

दिसेम्बर १८९३। बाईसवां भाग—नम्बर १२

१ शेकहैन्ड अर्थात हाथ मिलौवल
२ प्राप्ति स्वीकार और समालोचना
३ सम्वाद दाता।
४ महाराज दलीप सिंह।
५ शिशु मन रंजन।।
६ जीव जन्तु।
७ इतिहार।

दानापुर

"बिहार-बन्धु" छापाखाना,

१८९३।

प्रति खंड का नक़द दाम नव पैसा।

635

शेकहैन्ड अर्थात हाथ मिलौवल।

यह चाल कब समाज में जारी हुई इसका निर्णय करना कठिन है। जाति भेद से सदा ही से मनुष्यों में कोई न कोई सम्भाषण की पद्धति प्रचलित होती चली आई है। इतिहास के समय के पहले असभ्य जातियों में चूमना और नाक घस कर सम्भाषण करने की चाल थी। सुनने में आया है कि इसके द्वारा वे शत्रु मित्र को अनायास पहचान लेते थे। पौलिनेशियन, मंगोलियन और मलाया के रहने वाले असभ्यों में आज तक नाक घसने की चाल जारी है। युरप में यह चाल नहीं है पर वहां चूमने और हाथ मिलाने की रीत बहुत दिनों से है। बल्कि इंगलिस्तान में यह चाल कम नहीं पर बढ़ती हुई देख पड़ती है। हाथ मिलाने की चाल का यही मतलब मालूम होता है कि "मैं तुम्हारा मित्र हूं मुझसे तुमको विपद का कोई डर नहीं है" इस बात की दहना हाथ बढ़ा कर प्रगट कर दिया। काफ्री जातीय मनुष्यों में इसी तरह की एक रीति प्रचलित है। सामना सामनी होते ही अपने हाथ का अस्त्र शस्त्र वे दूर फेंक देते हैं और शायद कपड़ों में कोई अस्त्र छिपा हो इसका सन्देह दूर करने के लिये आधे शरीर पर से सब पोशाक निकाल डालते हैं। प्राचीन हिन्दू और रोमवालों में भी हाथ मिलाने की चाल थी। इस देश में दो आदमियों में भेंट होने पर छोटा बड़े की सिर झुका कर और पैर छूकर अभिवादन करता है। अब अंगरेज़ी सभ्यता जहां जहां प्रवेश कर चुकी है वहां कुरुचि पूर्ण समझ कर यह प्रथा उठती जाती है। केवल भारतवर्ष ही क्यों पूर्व के सभी देशों में गले गले मिलना और भूमि में सिर झुका कर अभिवादन करने का नियम है। यह चाल अंगरेज़ों को और उनके चेलों को बड़ी घृणा युक्त मालूम होती है। किसी किसी अंगरेज़ लेखक को इस चाल की काफ्री आदि असभ्यों की रीति से तुलना करने में ज़रा भी संकोच नहीं होता। पश्चिमीय सभ्यता की आंखों में पूर्वीय असभ्यों का दोष तो डेम डेम भर पर नज़र आता है यह आज की नई बात नहीं है।

शेकहैन्ड अर्थात हाथ मिलौवल ।

जिस पूर्वीय देशों से ईसाई, महम्मदी, हिन्दू और बौद्ध ये चार धर्म के सोते बह कर सारे जगत में फैल रहे हैं, जिस देश में बनज व्यापार पश्चिमीयों के धन कमाने का द्वार स्वरूप हो रहा है और जिसके लिये पश्चिम के बड़े बड़े राज्यों में बराबर प्रतिद्वन्द्विता हो रही है, जिस देश में पहले ही ज्ञान बीज का अंकुर निकला और बड़े यत्न से वृक्ष हो जिसने जगत में अमृतमय फल फूल छितराया वही पुराना अक्षय ज्ञान का भंडार धर्मार्थ काम को आदेश भूमि पूर्वीय देश, आज विज्ञान की सीढ़ी पर चढ़े हुए सभ्यताभिमानी वज़ेदारों का खरीदा गुलाम हो रहा है। सूक्ष्मदर्शी पश्चिमीयों के विचार में अति घृणा के योग्य नीच जंगलियों से पूर्ण निकृष्ट यह देश समझा जा रहा है। पर दुख का विषय यही है कि बिना इस जंगली देश और जंगली मनुष्यों के, सभ्य महापुरुषों का घड़ी भर भी काम नहीं चलता। काल ही का यह प्रभाव है कि वही अशिक्षित पश्चिमीय लोग विद्या बुद्धि के बल से अपनी वीरता कीर्तन कर रहे हैं और उसी काल के माहात्म्य से मरण तुल्य लुटा हुआ पूर्वीय देश पश्चिमीयों के भय से ज्ञान शून्य हो, दीनता के साथ कातर हो सिर झुका उनका आश्रय चाहता है। जिस भारतवर्ष ने एक समय में विद्या बुद्धि और वीर्य के बल से अपना यश गौरव दिग दिगान्त में फैलाया था, जिसकी वदान्यता सत्यता, न्याय और असीम साहस से यूनानी वीर सिकन्दर भी मुग्ध हो गया था, देश विदेश के यात्री जिसके राजनीति, समाज नीति और धर्म नीति की उत्तमता और पराक्रम का यश स्वीकार कर गये हैं वही ऐतिहासिक भारतवर्ष आज अपने पुराने स्वाधीनता को त्याग दासत्व की डोरी में झुका हुआ इस बड़े पृथ्वी में किसी तरह जगह पाने के लिये दूसरे का आसरा देखता है। काल की गति टाले नहीं टलती इस लिये उसको संतुष्ट चित्त से सहना ही वीरता है। इस लिये अब पश्चिमीय महाराजा हमारी रीत नीति की हंसी ही करें या हमको काफ़िरों की तरह असभ्य ही कहें सिवा सह लेने के दूसरा उपाय नहीं है। पर आश्चर्य यह है कि जो आज कल उन्नीसवीं सदी में उन्नति और सभ्यता के हद पर अपने

की पहुंचा हुआ कहते हैं और अपने रीत नीति की बड़ाई का डंका बजाते हैं उनका सामाजिक चरित्र कैसा है! वे ज़बानी तो कहते हैं कि उन्नति की हद पर हम पहुंच गये पर रोज़ उसमें संशोधन होता है। नित्य नया फ़ैशन नई चाल, नई रीति, नई नीति सभ्यता और फ़ैशन में अंगरेज़ ही लोग आज कल बढ़े हुए समझे जाते हैं। उनही में हाथ मिलाने की प्रथा का नया एडिशन (आवृत्ति) निकला है। कोई कोई तो हाथ मिलाने से बिलकुल नाराज़ होते हैं कोई ख़ातिरन हाथ मिलाते हैं। आज कल मेमों में एक नई तरह की हाथ मिलौवल प्रथा निकल रही है। वह अब सब से हाथ नहीं मिलातीं संभव है कि एक ही समय बहुत लोगों से हाथ मिलाने में कष्ट हो। यह लोग आज कल बहुत चुस्त कपड़ा पहनती हैं उससे रक्त संचालन भी शरीर का बंद होता होगा ऐसी अवस्था में जहां तक हाथ ऊपर उठ सका उतना उठा कर कब्ज़ा सीधा रख कर उंगलियों को बड़ी नज़ाकत से झुका कर फैलाये रखती हैं। युवती ने जब इस तरह हाथ उठाया तो कठिन काम युवा के लिये अब पहुंचा। उनको फ़ौरन अत्यन्त दक्षता के साथ हाथ उठा कर मेम साहबा की कोमल उंगलियों में या हाथ में चोट न लगे (इसी लिये) बहुत सावधान होकर उनके सिरीस फूल सरीखे कोमल उंगलि को छू कर अपने को कृतकृत्य और अति भाग्यवान समझना पड़ता है। अहा! कैसी उम्दा आविष्कार शक्ति है! उन्नति का कैसा उम्दा हद है! धन्य विलायत! अपूर्व तेरी माया है!

प्राप्ति स्वीकार और समालोचना।

हम धन्यवाद पूर्वक स्वीकार करते हैं—

रोज़नामचा सन १८८४—इसकी समालोचना हम गत वर्ष में कर चुके हैं इस में इस वर्ष पहले से बहुत कुछ उन्नति की गई है आकार तो जैसा था वैसा ही है पर काम की बातें जैसे चिट्ठियों पर डाक महसूल की शरह, पार्सल या ख़त के बीमा कराने में ख़र्च, मनी ओरडर और तार के ज़रिये रुपया भेजने का ढंग, सेविंग बंक में रुपया जमा कराने का

प्राप्ति स्वीकार और समालोचना ।

नियम डाकघरों की तातील, तार की खबरों के भेजने का महसूल, कोर्ट फ़ी स्टाम्प का हाल यानी कितने रुपये की दावी करने के लिये कितना स्टाम्प होना चाहिये, नौकरों की तनख़ाह चुकाने का नक़शा, नष्ट वस्तु प्रश्न, पन्था प्रश्न, जन्मकाल का शुभा शुभ फल लड़के को पाठशाला में बिठाने का मुहूर्त खेती के लिये मुहूर्त, नया तालाब कूआ खुदवाने का मुहूर्त उपनयन और विवाह के मुहूर्त चन्द्रग्रहण सूर्य ग्रहण आदि संक्षेप में काशी—महल्ला दूध विनायक—के रहने वाले बी० एल० पावगी रबर स्टाम्प मेकर और कमीशन एजन्ट ने इस छोटेसे रोज़नामचे में इस बार दिया है। कागज़ भी परसाल की अपेक्षा इस बार अच्छा है। हर पन्ने में अंगरेज़ी और हिन्दी की तारीख़ सिरे पर छपी है और सबसे ऊपर कहावतें भी जो प्रति दिन के बोल चाल में व्यवहार में आती हैं दी गई हैं यह छोटी सी वस्तु हमेशा पास रखने लायक़ है। पास की यह वस्तु प्रायः सभी प्रान्तों में लोग रखते हैं इनहीं हिन्दी जानने वालों में इसका अभाव देखने में आता है हम आशा करते हैं कि लोग मंगवा इसे एक बार देखेंगे और इसको काम में लायेंगे—मूल्य पांच आने महसूल एक आना।

पता—बी० एल० पावगी

दूध विनायक बनारस सीटी।

गंगा लहरी—श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी प्रणीत—पाठकों को स्मरण होगा कि देवी स्तुति शतक नाम ग्रन्थ बसन्त तिलका छन्द में हमारे पास बहुत दिन हुए आया था और जिसकी समालोचना भी की गई थी वह इनहींमहाशय का बनाया हुआ था। आपने अब पंडित राज जगन्नाथ राय विरचित गंगा लहरी का भाषान्तर पद्य और गद्य में मूल सहित छापा है यह परमोत्तम स्तुतियों में गिना जाता है इसके भाषान्तर से द्विवेदी जी ने हिन्दी भाषा भंडार में एक उत्तम रत्न भेंट दिया। मूल्य भी चार ही आना है। और पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदीजी जनरल ट्रफिक मैनेजर्स ओफिस इन्डियन मिडलैन्ड रेलवे झांसी को पत्र लिखने से मिलेगा।

प्राप्ति स्वीकार और समालोचना।

देशोपकारिणी सभा कालाकांकर की प्रथम वात्सरिक रिपोर्ट सन १८८२-८३।—इस में इस सभा में जो स्पीच दिये गये हैं उनका समावेश है। अच्छे अच्छे उपयोगी लेख इसमें हैं। यदि इस रिपोर्ट के देखने की लालसा हो तो सभाके सेक्रेटरी ठाकुर रामदयाल सिंह को पत्र लिखना चाहिये।

चिल्लांगदा—बाबू गोपाल राम गहमर निवासी रचित।

चिक्रमपुर साप्ताहिक पत्र।

भारत प्रकाश—हिन्दी भाषा का नवीन मासिक पत्र—विद्याभूषण प्रेस मुरादाबाद से अक्टूबर महीने में सनातन धर्म सम्बन्धी लेखों से पूर्ण हो निकला है इसके तीन अंक मिले इनके पढ़ने से अपने धर्म पर श्रद्धा अवश्य अधिक हो जाती है। उत्तम विषयों से पूर्ण है।

विजय दशमी राज डुमरांव—इस पैम्फलेट में विजयदशमी के उपलक्ष में श्री मान् महाराजा बहादुर डुमरांव श्री युत कमिश्नर साहब पटना, श्री दीवान साहब बहादुर और राजभक्त अनेक प्रजा गणों की दी हुई वक्तृतायें छपी हैं और इसी अवसर पर दरबार जो वहां हुआ उसकी शोभा और धूम धाम का संक्षिप्त विवरण है सब यहां लिखने की अपेक्षा उस पुस्तक ही की मंगा कर पढ़ना अच्छा होगा जो डुमरांव में श्री नकछेदी तिवारी जी के पास मिलेगा पर तो भी हम यहां श्री मान महाराजा साहब बहादुर डुमरांव श्रीयुत कमिश्नर साहब और श्री दीवान साहब बहादुर की वक्तृता का सारांश पठकों के अवलोकनार्थ देते हैं जिससे दीवान साहब की सुयोग्यता स्वामी भक्ति और बुद्धि मत्ता आदि अनगिनत गुण प्रगट होते हैं और महाराज साहब बहादुर की भी इनकी गुण ग्राहकता प्रसन्नता आदि प्रगट होती है और यह सिद्ध होता है कि हिन्दू मुसलमानों के दंगे जो अक्सर हुआ करते हैं उससे उच्च श्रेणी के लोग सहानुभूति नहीं रखते।

डुमराँव में विजय दशमी के उत्सव का संक्षिप्त विवरण जो हमारे सम्वाद दाता ने भेजा है वह भी अन्यत्र छापा गया है

श्री १०८ महाराजा साहब बहादुर की वक्तृता।

"इस रियासत के कर्मचारियों, सम्बन्धियों और प्रजाओं को विदित हो कि इन दिनों कई एक स्थानों पर हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य आपस में धर्म विषय पर घोर लड़ाइयां हो गई हैं जिन के कारण गवर्नमेन्ट को कष्ट और श्रम उठाना पड़ा है। इस प्रकार के झगड़े लड़ाइयां अंगरेजी गवर्नमेन्ट में जो कि हिन्दुओं और मुसलमानों दोनो को बराबर समझती है और दोनों के साथ कृपापूरित बरताव करना चाहती है महा अनुचित और हानिकारक हैं। इन में दोनों जातियों की हानि होती है और गवर्नमेन्ट को भी इनके शान्त करने में कष्ट उठाना पड़ता है। यह रियासत सदैव से गवर्नमेन्ट की शुभचिन्तक रही है और अब भी है और आगे भी रहने का दृढ़ विश्वास करती है अतएव हम यह बात कदापि नहीं चाहते कि इस रियासत का कोई कर्मचारी, प्रजा, अथवा किसी प्रकार का सम्बन्धी, चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, कोई ऐसा कार्य करे कि जिसमें गवर्नमेन्ट को श्रम उठाना और उसको दण्ड भुगतना पड़े। हम ईश्वर को कोटिशः धन्यवाद देते हैं कि यद्यपि इधर उधर कई स्थानों पर इस प्रकार की उपद्रवें हो गई हैं तथापि उसके अनुग्रह से आज पर्यन्त हमारे किसी इलाके में कोई झगड़ा लड़ाई इस प्रकार का नहीं हुआ और न इस रियासत का कोई किसी भांति का सम्बन्धी ऐसे विषय के अपराध का भागी हुआ। हम चाहते हैं कि आगे भी इस रियासत के लोग इन बातों पर भली भांति ध्यान रक्खें कि कोई ऐसा घृणित और निन्दनीय कार्य न करें जिससे कि गवर्नमेन्ट तथा इस रियासत को कष्ट उठाना पड़े। यदि हिन्दू और मुसलमान दोनों में से कोई एक जाति अत्याचार करना चाहे कि जिससे दूसरी जाति के चित्त पर आघात पहुँचने की सम्भावना हो तो इस दूसरी जाति के लोगों को उचित है कि उसकी शिकायत गवर्नमेन्ट और रियासत की दें, पर कभी किसी प्रकार

आपस में लड़ाई झगड़ा न करें बरन यदि कहीं ऐसे झगड़े लड़ाई की सम्भावना भी हो तो यथा शक्ति उसके शान्त करने में कटिबद्ध हों।

हम इस रियासत के सब छोटे बड़े कर्मचारियों, प्रजागणों और सम्बन्धियों को सुनाये देते हैं कि हमारे कहने पर ध्यान दें और आपस में मिलजुल कर रहें। यदि कोई इस कहने के विरुद्ध आचरण करेगा और ऐसे झगड़े लड़ाइयों में पड़ेगा या ऐसे बलवे करने की शिक्षा देगा, तो वह व्यक्ति गवर्नमेन्ट तथा रियासत की ओर से भी दण्डनीय होगा। उसको जहाँ तक हमसे हो सकेगा हम स्वयं दण्ड देंगे और यदि उसको दण्ड देना हमारे अधिकार से बाहर होगा तो गवर्नमेन्ट के अधिकारी हाकिमों से उसको उचित दण्ड दिलावेंगे।"

इस प्रकार की बातें कह कर और प्रजागण को भली भाँति समझाकर महाराजा साहब बहादुर फिर अपनी गद्दी पर सुशोभित हुए। कमिश्नर साहब बहादुर तथा और साहब लोगों ने तालियाँ बजाकर अपनी परिपूर्ण प्रसन्नता प्रगट की और लोगों को भी अति आनन्द प्राप्त हुआ।

* * * * * * *

इस के पश्चात कमिश्नर साहब बहादुर ने निज अपने मुखार विन्द से इसी विषय पर कुछ कहा जिसका आशय नीचे लिखा जाता है:—

"यह जो झगड़े लड़ाई हिन्दुओं और मुसलमानों में हो रहे हैं इनका परिणाम किसी प्रकार शुभ नहीं हो सकता। जैसा कि अभी महाराजा साहब बहादुर ने कहा है अंगरेज़ी गवर्नमेन्ट किसी की पक्षपाती नहीं, प्रत्यकधर्मावलम्बियों के साथ एक सा बर्ताव रखना चाहती है और प्रजागण में शान्ति और मेल का व्यवहार फैलाना अपना मुख्य करतव्य समझती है; इस प्रकार के झगड़े लड़ाइयों को कदापि भी नहीं पसन्द करती। इस विषय में गवर्नमेन्ट का और इस रियासत का एक ही ख़याल है, सब हिन्दुओं और मुसलमानों को चाहिये कि आपस में मिलजुल कर रहें, और महाराजा साहब बहादुर के कहने पर ध्यान दें। यदि एक ओर से कुछ ज़्यादती हो तो दूसरी तरफ़ वालों को चाहिये कि

अदालत में उसकी धाराओं करें। इसके विरुद्ध करने में बुराई ही है। "ध्वाथ" के बलवे में देखो क्या हुआ। पुलिस बढ़ा दी गई जिसका खर्च रईयत को देना पड़ा। इन सब बातों पर ध्यान देकर झगड़ा लड़ाई न करना चाहिये इत्यादि।"

कमिश्नर साहब बहादुर के पश्चात आनरेबल दीवान राय जय प्रकाशलाल साहब बहादुर सी० आई० ई० ने एक अति उत्तम और शिक्षा पूरित स्पीच नीचे लिखे हुए अभिप्राय की दी:—

"यह जो झगड़े लड़ाइयां स्थान स्थानों पर हिन्दुओं और मुसलमानों में आज कल हो रहे हैं इनका परिणाम बड़ा ही भयानक और हानिकारक है। कितने दुरबुद्धि स्वार्थी और उपद्रव प्रिय लोगों के बहकाने में लोग बिना समझे बूझे ऐसे कार्य कर डालते हैं और पीछे अपनी ना समझी का कटु फल पाते और पछताते हैं। यह समझना कि गवर्नमेन्ट किसी जाति विशेष की पक्षपाती है सर्वथा भूल और निर्मूल है। गवर्नमेन्ट को किसी का भी पक्ष नहीं। अपराधियों को, चाहे वह हिन्दू हों अथवा मुसलमान, गवर्नमेन्ट निस्सन्देह दण्ड देगी। इस विषय में इस रियासत का और गवर्नमेन्ट का एकही ख़याल है जैसा कि अभी कमिश्नर साहब बहादुर ने स्वयं कहा है। गवर्नमेन्ट तथा यह रियासत प्रजा मंडली में शान्ति और मेल का प्रचार करना चाहती है। हिन्दू और मुसलमान सैकड़ों वर्ष से इस देश में साथ साथ रहते आये हैं। इन का हेलमेल यहां तक हो गया है कि हिन्दुओं के पड़ोस में मुसलमानों के और मुसलमानों के पड़ोस में हिन्दुओं के घर जिस शहर में देखिये पाये जाते हैं। हिन्दुओं की शुभाशुभ कार्य में मुसलमान और मुसलमानों के शुभाशुभ कार्य में हिन्दू आने जाने और सहायता देने लगे हैं। हिन्दुओं के बहुत से कार्य मुसलमानों से और मुसलमानों के बहुत से कार्य हिन्दुओं से निकलते हैं। ऐसे अवसर में जब कि आपस का बरताव इस श्रेणी तक पहुंचा हुआ है फिर से छेड़ छाड़ करके विरोधानल को प्रज्वलित करना और लड़ाई झगड़ा मचाना दोनों समाजों में से किसी को भी लाभ नहीं दे सकता। इस में सिवाय हानि के

645

दुश्तिहार।

SEIGEL'S SYRUP

किसी दिन भी वह भाग जा सकता था।

धर्म के मतभेद वास्ते जुलमगार सरकारने एक आदमी को पकड़ के कैद में डाला था। बंदीखाने की पत्थर की मज़बूत दिवालों को देख के यह एकांत और उदास जगह में बाकी ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ेगी ऐसा उसने अनुमान किया। ज़ुल्म के लिये सज़ा मिली थी परंतु न्यायी कायदे का उलंघन करने वास्ते नहीं था ऐसा विचार आने से इस दुर्दशा में भी उसको दिलासा मिलता था। तथापि बाहर निकल सकता तो खुशी साथ निकल आता कारण उसका एक था।

तो भी सोलह वर्ष दुःख दायक स्थिती में रहा। इस मुद्दत के अंत समय उसको ऐसा विचार आया कि एक पत्थर जो बाहर निकला था उस पर चढ़के ऊपर की बारी में से देखें। उसने देखा तब मालूम पड़ा कि लोहे के कड़ हट सकें ऐसे थे, और बारी का चौकठ लज़ा नहीं था। भाग जाने का खयाल उसके मन में आया। बारी खोल कर छ फुट नीचे ज़मीन पर गिर पड़ा और शीघ्र प्रांत कीड़ के भाग गया। कभी उसका मन जास्ती विचारवान था, और जो तपास करने के सिवाय अनुमान नहीं किया था तो दीर्घ वास के अन्दर किसी दिन भी भाग सकता था।

धर्म प्राण त्यागी की बिनासमान और उलटी दूसरी बिना है उसके समान कारन स्वतंत्र क्रिया से रहित, उससे उलटी कारन दुःखी पुरुष कैद में नहीं था।

टूंके और टुके शब्द वाले पत्र हम हमेशा पसंद करते हैं उस जात के एक पत्रमें यह वृतांत एक स्त्री ने लिखा है। वह लिखती है कि, "सोलह बरस हुए पित्त और दुर्बलता में मैं बिमार रहती थी। सदा श्रमित और खिन्न स्वभाववाली थी। क्षुधा लगती नहीं थी, और मेरे आगे अन्न रखे जाते थे उसका स्पर्श नहीं कर सकती थी। बहुत दिन तक बिलकुल भोजन नहीं कर सकती थी। कोई कोई वक्त पेटमें उकाला होता था और मुख से चिकना रस निकलता था। छाती में वेदना, और त्रासदायक खांसी हुई थी, और स्वास लेने से तकलीफ होती थी। मैं बहुत शशक्त हो गई और दूकान में अथवा दूकान से बाहर फिर नहीं सकती थी मेरे

645

ग्राहक "मदर सीजलका क्युरेटिव सिरप" की प्रशंसा करते थे, वह औषधि सन १८८१ के डिसेम्बर महीने में खाने का आरंभ किया। थोड़े भाग मात्र खाने से आराम मालूम पड़ा, और औषधि खाते पंद्रह दिन हुए उतने में मुझको ऐसा आराम हुआ कि जैसा बरसों में नहीं हुआ था। इस तरह उत्तेजन मिलनेसे मैं पूर्ण आरोग्यता पाई तब तक औषधि खाती थी। मेरा पुत्र आरथर को भोजन के पीछे पेटमें भार और इजा होती थी। "मदर सीजल का क्युरेटिव सिरप" खाने की उसकी इच्छा भई, उसका परिणाम मेरे जैसाज हुआ। दूसरी सब औषधि निष्फल होने पीछे "मदर सीजल के क्युरेटिव सिरप" से आराम हुआ है ऐसे बहुत लोगोंको यह प्रांत में प्रछानती हूं। मेरे जैसे पीड़ित लोगोंको फ़ायदा होगा ऐसा जो आपकी समझ में आवे तो मेरा पत्र छपाने की परवानगी देती हूं।

(सही) (मिसिस) जेम वार्ड, ११४ इकस्टन रोड, राडफर्ड, नोटिंघाम, तारीख १ एप्रिल सन १८८१।

संताप कारक और भयंकर रोग से मुक्त हुई उसके वास्ते मिसिस वार्डको मुबारकबादी देते हैं सुलभ और खातिर पूर्वक आराम किस तरह से होता है, उसकी खबर वह स्त्री की जल्दी मिली नहीं यह कैसी दिलगिरीकी बात है। आयुष्य के सोलह बरस मन और तन के दुःख में गुजारना पड़े यह बहुत भारी बला है। थोड़े लोग धनवान होते हैं, परंतु आरोग्यता का सुख सब को समान होता है। आरोग्यता होवे तब उसको संभालने की और रोग मिटाने की रीत सबको मालूम होवे तो सब आरोग्य रहे।

इस स्त्री की पाचन शक्ति का रोग अजीर्ण और अग्नि मान्द्य था। यह रोग लोही मार्गमें अपने जेर की प्रत्येक जगह पर पसर के सब शरीर में फैल जाता है। सर्व दरद यह फलद्रुप रोग के परिणाम और चिन्ह है जिसको भिन्न भिन्न नाम से बोलते हैं। जिस औषधि से इस स्त्री को आराम हुआ उसकी कीर्ति जानने वाले को स्त्री के आराम की खबर से आश्चर्य नहीं होगा। इससे भी खराब रोग यह औषधि से मिट जाते हैं।

बाहर निकलने के सुलभ मार्ग की अज्ञानता से हमारा धर्मप्राणत्यागी मित्र त्रासदायक बंदिखानें में रहा। जो पढ़नेवाला कोई रोगका बंदिवान होवे तो आज पीछे कैद में रहने का कारण नहीं है। छोटे और प्रमाणिक पत्र में हमारे पत्र लिखनेवाले ने खुला द्वार दिखा दिया है।

H. D.

और क्या रक्खा है। प्राण की हानि, मान की हानि, शान्ति की हानि, धन की हानि, और उद्यम की हानि सभी इसमें होती हैं। कारागार का कष्ट भी धरा ही हुआ है। गवर्नमेन्ट को आप लोग किसी प्रकार से असावधान और दण्ड देने में असमर्थ मत समझिये। वह पूर्ण रीति से ऐसी उपद्रवों को शान्त और अपराधियों को दण्ड देने पर सुस्तैद बैठी है। देखिये; दो एक जगहों के बलवों के परिणाम पर ध्यान दीजिये। बलिया में बलवा होने के पश्चात प्रजा को कैसा कष्ट उठाना पड़ा। कितने लोगों को कारागार वास करना पड़ा और कितने घरों का सत्यानाश हो गया। इसी प्रकार से आजमगढ़ इत्यादि के बलवे भी ध्यान देने के योग्य हैं। अतएव यह आप लोगों को भली भांति ध्यान में रखना चाहिये कि जिस कार्य का ऐसा अशुभ परिणाम हो उसके करने का कभी स्वप्न में भी विचार न करें।

यह रियासत सदैव से गवर्नमेन्ट की शुभ चिन्तक चली आई है और अब भी है और आगे भी रहेगी जैसा कि महाराजा साहब बहादुर ने अपनी कृपा पूरित स्पीच में कहा है और अपनी परम प्रशंसनीय गवर्नमेन्ट ही की भांति हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को बराबर समझती है अतएव चाहती है कि इस के प्रजागण, कर्मचारी, और सम्बन्धी लोग चाहे हिन्दू हों या मुसलमान मिलजुल कर रहें और कभी कोई ऐसा कार्य न करें जो गवर्नमेन्ट के कानून के विरुद्ध हो और जिसके कारण गवर्नमेन्ट तथा इस रियासत को कष्ट और श्रम उठाना पड़े। मैं इस रियासत के सब छोटे बड़े कर्मचारियों, प्रजागण और सम्बन्धियों को गवर्नमेन्ट की ओर से तथा महाराजा साहब बहादुर की ओर से और निज अपने ओर से भी, क्यों कि मैं इस रियासत का दीवान हूं और मुझे गवर्नमेन्ट की ओर से और रियासत की ओर से उपद्रव शान्त करनेका अधिकार मिला है, भली भांति समझाये देता हूं कि वह लोग कभी किसी ऐसे झगड़े लड़ाई में न पड़ें, शान्ति की रक्षा करें और जानबूझ कर अपने को दण्ड पाने का अधिकारी न बनावें।"

647 c

दीवान साहब बहादुर ने ऊपर लिखे हुए अभिप्राय की स्पीच देने के पश्चात गत वर्ष के बन्दोबस्त के परिणाम का एक रिपोर्ट पढ़ा जिस में कि आमदनी और खर्च इत्यादि की तफ़सील थी। जिसको सुन कर महाराजा साहब बहादुर बहुत प्रसन्न हुए और नीचे लिखा हुआ आशय प्रगट किया।

"मैं अपने दीवान साहब बहादुर के प्रबन्ध, स्वामी—भक्ति और ईमान्दारी से बहुत सन्तुष्ट और प्रसन्न हूं। वास्तविक में हमारे दीवान साहब बहादुर बहुत ही सुयोग्य और अपने पद का गौरव बढ़ानेवाले हैं। यह इन्हीं के उद्योग, परिश्रम और बुद्धिमत्ता का सुपरिणाम है कि आज दिन रियासत में सब प्रकार की उन्नतियां दिखाई पड़ती हैं। गवर्नमेन्ट और गवर्नमेन्ट के कर्मचारियों को इन्हीं ने शुभ चिन्तकता और आज्ञापालन द्वारा प्रसन्न रक्खा; दफ़्तर, खज़ाने और खर्च का अति उत्तम प्रबन्ध किया, आमदनी बढ़ाई और ऋण का बोझ उतारा, ये बातें वर्तमान और पूर्व के दफ़्तर के मिलान करने से भली भांति विदित हैं। मुकद्दमों की पैरवी इन्हों ने ऐसी उत्तम रीति से की कि कृतकार्य ही होते रहे और रियासत के वैरियों और अशुभ चिन्तकों को भली भांति दबाया और शान्त किया। इन्हीं के उद्योग, सुप्रबन्ध और बुद्धिमानी से रियासत को रीवां के सम्बन्ध का गौरव प्राप्त हुआ। इसके पहले हमारे कुल में किसी फूडिटरी रियासत के साथ सम्बन्ध नहीं हुआ था। श्री बबुई साहबा के विवाह तथा शुभागमन में ऐसा बन्दोबस्त किया कि रियासत की किसी प्रकार की हेठी न होने पाई, दोनों ओर के लोगों को प्रसन्न रक्खा और पाहुनों का यथार्थ आदर सत्कार किया। प्रदर्शिनी का इन्तज़ाम इसी प्रकार से बड़ी बुद्धिमानी और सुधारता से किया। तिस पर सब से बड़ी बात यह हुई कि ऐसे बड़े बड़े कार्य करने और व्यय उठाने पर भी रियासत को ऋण के भार से बचाये रक्खा। मुहर्रम के औसर पर जब मीरजापुर में हिन्दुओं और मुसलमानों में कुछ लड़ाई झगड़ा हो जाने की संभावना हुई तो दीवान साहब बहादुर ने उसके रोकने और शान्ति रखने में बड़ा उद्योग किया। साहस करके

निडर केवल एक सवार के साथ उस स्थान पर चट खबर पाते ही जा पहुंचे और अपने रोब और बुद्धिमानी द्वारा दोनों दलों को समझा बुझा कर ठण्ढा किया। यदि विचारा जाय तो यह भी कोई साधारण बात नहीं थी। बलिया में जब बलवा हो गया था तो उसके शान्त करने के हेत भी दीवान साहब ने अति उत्तम प्रबन्ध करके गवर्नमेन्ट को बड़ी सहायता दी और उसकी दृष्ट में इस रियासत का गौरव और भी बढ़ाया।"

डुमरांव में विजयादशमी।

इस हर्ष पूर्वक पाठकों को यह शुभ समाचार सुनाते हैं कि आज यह डुमरांव नगर अपने भाग्य को सराहता हुआ अभूत पूर्व आनन्द के सोते में बह रहा है इसका यह कारण है प्रथम तो आप लोग जानते ही होंगे कि इस समय हिन्दुस्थान भर में प्रायः सब ही जगह हिन्दू मुसलमानों में लड़ाई झगड़ा हो रहा है और सारे देश के सब ही लोग परस्पर एक दूसरे से मुंह मोड़े फिरते हैं परन्तु यहां पर क्या बरन इस रियासत भर में हमारे परम सुयोग्य दीवान आनरेबल राय जयप्रकाश लाल बहादुर सी० आई० ई० के सुप्रबंध से उन्हीं हिन्दू मुसलमानों में झगड़ा फसाद का नाम तक नहीं सुन पड़ता यद्यपि गत मोहर्रम के दिन भोजपुर में कुछ झगड़े का गोला सुनने में आया था पर उसी दिन उक्त दीवान साहब की अपूर्व बुद्धिमानी तथा उत्तम कार्य्यवाही से ऐसा मिट गया कि वे लोग अब आपस में भाई२ के समान हिलमिल रहे हैं और ऐसे सर्व लोक प्रिय सुचतुर पुरुष को अपना मालिक बना देख आनन्द मना रहे हैं।

इस विजया दशमी (तौजी) के उत्सव में राज्य भरके तहसीलदार गांवदार, पटवारी असामी, ठीकेदार प्रायः सब ही प्रजा लोग इकट्ठे थे, उन में हिन्दू मुसलमान सब लोग थे, उन लोगों का परस्पर मेल मिलाप देख कर किसके हृदय में हर्ष का संचरण न होता होगा। तौजी के चौथे रोज़ अर्थात तारीख २३ अक्टोबर को श्री मान दीवान साहब के बाग में गार्डन पार्टी का उत्सव था बाग ऐसा सजा गया था के नन्दन बन भी देख कर लज्जित होवे उसमें कलकत्ता बोर्ड आवरेविन्यु के मेम्बर

(सदर बोर्ड) पोष्टल डिपार्टमेन्ट के कंट्रोलर जनरल, पटने के कमिश्नर तथा प्रधान प्रधान कई अंगरेज़ लोग निमंत्रण में उपस्थित थे। स्वयं श्री मान विविध बिरदावली बिराजमान श्री १०८ महाराज सर राधा प्रसाद सिंह बहादुर के० सी० आई० ई० डुमरावाधिपति भी बिराजमान थे। प्रधान प्रधान मुसाहिब, रईस, गवैया, ज़मींदारोंकी तो गिन्ती ही न थी, प्रायः ८००० लोग उपस्थित थे, बैंड बाजा बज रहा था सर्कस का तमाशा होता था रास मंडल का नाच अलग ही अपना रंग जमाये था एक अलग शामियाने में बनारस की वेश्यायें अपने नृत्य गान से इन्द्रपुरी का सुख दिखा रही थीं। यानी जो जहां था वहीं आनन्द लूट रहा था। इस उत्सव के एक रोज़ पहले क़िला में बड़े समारोह से एक बड़ाभारी दर्बार करके हमारे महाराज साहब बहादुर और कमिश्नर साहब बहादुर दोनो आदमियों ने प्रसन्नता पूर्वक परस्पर मिल कर श्री मान दीवान साहब की कार्य्य कुशलता तथा प्रभु परायणताके पुरस्कारमें एक उत्तमोत्तम तलवार देकर यथार्थ उदारता और गुण ग्राहकता प्रगट की। कमिश्नर साहब ने यह भी कहा कि महाराज बहादुर आपको तलवार देकर सुशोभित करते हैं और हम भी गवर्नमेण्ट की तरफ़ से आपको हुक्म देते हैं कि इस तलवार को आप अपने काम में लाकर यथार्थ रीतिसे प्रजा पालन कीजिये। इस दर्बारमें महाराज साहब, कमिश्नर साहब, दीवान साहब तथा गांव के कई हिन्दू और मुसलमान सज्जनों ने हिन्दू मुसलमानों की एकता के विषय में उत्तम उत्तम वक्तृतायें दीं महाराज बहादुर और कमिश्नर बहादुर की इस उचित कारर्वाईको देख कर सम्पूर्ण मंडली के लोग मारे आनन्द के गद्गद हो गये, चारो ओर से आनन्द ध्वनि होने लगी।

श्री मान दीवान साहब को कायस्थ कान्फ्रेन्स ने तो पहले ही से एक ढाल देकर सुसज्जित कर रक्खा था अब महाराज साहब ने स्वयं अपने हाथ से तलवार देकर यथार्थ में दीवान साहब को बहादुर बना दिया, इस ख़ुशी से प्रजा मात्र फूले नहीं समाते।

उस रोज़ अर्थात् गार्डनपार्टी के दिन साहब लोगोंका तवाज़ा था दूसरे दिन रियासत के अमला लोगों का तवाज़ा हुआ इस दिन भी पहले

दिन से कुछ कम तय्यारी न थी। दीवान साहब स्वयं घूम घूम कर सब लोगों को बड़ी खातिरदारी और ताकीद से भोजन कराते थे। फिर क्रमशः कायस्थ, पटवारी, महाजन, मुसलमान सब लोगोंका तवाज़ा हुआ, अन्तमें सब कर्म्मचारियों को यथायोग्य पुरस्कार बांटा गया। किसी को शाल किसी को बनात किसी को पगड़ी इसी प्रकार सब लोगों का सनमाने हुआ और रियासत के सब नौकरों को एक माह की तनख़ाह—इनाम देने का हुक्म हुआ इन सब कार्रवाइयों को देख कर राज्य भर की प्रजा आनन्दित हो रही है और ईश्वर से ऐसे सुयोग्य दीवानको अपना मालिक सर्वदा बने रहने के लिये प्रार्थना करती है।

बलिया ज़िले में कार्तिक की पूनों को बड़ा भारी मेला लगता है इसमें हाथी घोड़े गाय बैल आदि उसी तरह बिकने को लाये जाते हैं जैसे हरिहर क्षेत्र में। हिन्दू मुसलमान का झगड़ा इस साल ऐसा रहा और इस लगाव से पुलिस की भयानक कार्रवाइयों से डर कर लोगों का इस साल मेला लगाने का विचार न था लोग समझते थे कि कौन मेले में जाकर पुलिस के हाथ पड़ अपनी इज़्ज़त बरबाद करे। इस मेलेसे सरकार को भी ४०००) रुपयों की साल में आमदनी है यह आमदनी भी सरकार की प्रजा के भयभीत होने से मारी जाती थी कि संयोग से यह समाचार श्री मान राय जयप्रकाश लाल बहादुर सी० आर० ई० के कानों तक पहुंचा। इन्होंने देखा कि एक तो हिन्दुओं का पुराना मेला उखड़ा जाता है दूसरे सरकार को भी हानि हुआ चाहती है झट स्थान पर पहुंच गये और समस्त प्रजा को समझा बुझा दिया कि प्राचीन मेला है इसे मत उखाड़ो बल्कि यथा सम्भव इसका अधिक जमाना ही उचित है। न जाने दीवान साहब की बातों को सुनते ही प्रजा के मन क्या प्रभाव हो गया कि मेला तुरत ही ऐसा जम गया कि मानो दस पन्द्रह दिन से लगा हो किसी बात की कसर न रही। यह उक्त महोदय की अद्भुत शक्ति का प्रबल दृष्टान्त है।

सम्वाददाता काशी।

सम्प्रति यहां श्री वैष्णव लोगों का मुख्य स्थान श्री गोपाल मन्दिर में बड़ी धूम धाम और तैयारी है। उक्त मन्दिर के स्वामी श्री १०८ महाराज जीवन लालजी के पुत्र होने वाला है। इस महोत्सव में श्री १०८ महाराजा ब्रजकृष्ण लालजी कांकरौली, श्री १०८ महाराज गोपाल लालजी मथुरा, और श्री १०८ महाराज गिरधर लालजी बिराजमान हैं। और लोगों की तरफ़ से जो अच्छे लोगों का सत्कार किया जाता है उसके लिखने में तो एक किताब बन जायगी पर उनमें से एक महाराजा कांकरौली की यह सूरत है कि कवि पंडित गुणी आदि की भीड़ लग रही है सब लोग अपना २ गुण दिखाते हैं और सत्कार पाते हैं। इन महाराज की गुण ग्राहकता देख तथा सुन कर प्रायः काशी बासी लोगों के जी में पुराने उदार महाराजों का ख्याल ताजा हो जाता है। आज कल इस उत्सव के कारण दूर २ के गुणी लोग भी अपना परिचय देने के लिये काशी में भरे देख पड़ते हैं। जब से महाराजा साहब यहां आए हैं तब से अच्छे २ लोगों को हजारों रु० शाल दुशाले बांट चुके। यह भी सुनने में आया है कि उक्त महाराज साहब काशिस्थ पंडितों की एक भारी सभा करेंगे जिस में उचित दक्षिणा दी जायेगी। ईश्वर करे ऐसे ही श्री मान गुण ग्राही लोगों का शुभागमन इस काशी में हो, जिन से हजारों गुणी लोगों का उपकार है।

महाराज दलीप सिंह ।

लाहोर के बहुत दासदासियों से पूर्ण राजभवन में सन १८३८ ई-वी के ४ थी सेप्टेम्बर को दलीप सिंह का जन्म हुआ था और फ्रांस देश के मामूली होटल के निर्जन कमरे में उस जीव का स्वांस निकल गया ! परमेश्वर की लीला अपूर्व है ।

रणजीत सिंह के चार बेटों में सब से छोटे यही दलीप सिंह थे राजपुत्र होने पर भी राजसिंहासन पर बैठने की उनको आशा न थी ।

जिस वर्ष इनका जन्म हुआ उसी वर्ष के मध्य में रणजीत सिंह ने मानव लीला समाप्त की । उनके बड़े बेटा खडग सिंह लाहोर के सिंहासन पर बैठे । सिक्खों का सौभाग्य रणजीत सिंह के साथ गया । खडग सिंह के भाग्य में पांच ही महीने राज्य भोग बदा था । इनसे छोटे शेर सिंह तब गद्दी पर बैठे । चार ही वर्ष के भीतर शेर सिंह की हत्या से फिर सिक्ख सिंहासन सूना हो गया । उस समय १८४३ में खालसा ने तारा सिंह को न मान कर दलीप सिंह को महाराज माना ।

दलीप सिंह राजा तो हुए पर राज्य का उपद्रव न शान्त हुआ । इसी आपस के विवाद के कारण सूबीता देख पंजाब के सिंहासन पर अंग्रेजों ने पैर बढ़ाया । पहली सिक्ख लड़ाई के बाद लाहोर में अंग्रेजों का झंडा फहराया । लौर्ड हार्डिंज ने बालक महाराज की वश्यता स्वीकार कर उस राज को अंग्रेजों के आधीन एक काउन्सिल के सपुर्द किया ।

दो वर्ष भी बीतने न पाये थे कि फिर विद्रोह की आग भड़क उठी । अंग्रेज महाराज के मित्र थे इनको उचित तो यही था कि जब तक महाराज बड़े न हुए थे, राजकाज का बन्दोबस्त इनके हाथ था ही, उस विद्रोह को शान्त करते । पर अंग्रेजों ने यह न किया विद्रोह का तेज बढ़ गया । अन्त को उसका प्रभाव लाहोर तक पहुंचा । तब अंगरेज़ों की आंख खुली । इन्हीं ने सारी सिक्ख प्रजा को अपराधी ठहराया । सिक्ख दरबार को अशक्त और अंगरेजों का शत्रु स्थिर किया । आप ही मुद्दई और आपही जज विचार में कितनी देर लगती है । दूसरी सिक्ख लड़ाई के शान्त होते पंजाब को अंगरेजों ने अपने राज

में मिला लिया। दलीप सिंह अंगरेज़ों से पेन्शन पाकर फ़र्रुखाबाद में रहने लगे। उनकी अभागिनी जननी रानी झिन्दन ने पहले काशी तब चुनार के क़िले में कुछ दिन तक क़ैद रह कर अन्त को भिखारिन के रूप में नेपाल राज में जाकर आश्रय लिया।

दलीप सिंह का राज्य गया, धन दौलत अंगरेज़ों के हाथ गया, उनके पिता के गौरव की वस्तु मणियों में श्रेष्ट मणि "कोहनूर" महारानी विक्टोरिया के मुकुट का भूषण हुआ और यह निश्चय हुआ कि दलीप को अपने परिवार आदि के पालन के लिये कमसे कम ४ लाख और अधिक से अधिक ५ लाख की वार्षिक पेन्शन मिलेगी।

लोगिन साहब दलिप सिंह के रक्षक नियत हुए। इनकी अवस्था उस समय ग्यारह वर्ष की थी। थोड़े ही दिनों में इनकी प्रवृत्ति ईसाई मत की ओर झुकी। एक तो रक्षक ईसाई दूसरे अपनी ही अवस्था के अंगरेज़ लड़कों के साथ रहने आदि से अपने धर्म त्याग करने का मुख्य कारण हुआ। तीन वर्ष के बाद वह खुलम खुला ईसाई धर्म में दीक्षित हुए।

दलीप सिंह के दीक्षा के समय एक बूढ़ी दासी इनकी उपस्थित थी। ईसाई बनाने के समय जौर्डन नदी का जल सिर पर ढाला जाता है जब उसे मालूम हुआ कि इनके लिये भी जल की आवश्यकता है तो वह चली गई और अपना जलपात्र गंगाजल से पूर्ण कर ले आई। महाराज दलीप सिंह ने पवित्र गंगाजल से अभिषिक्त हो यह म्लेच्छ धर्म ग्रहण किया।

बहुत दिनों से दलीप सिंह को युरप देखने की लालसा थी पर लौर्ड डलहाउसी के स्वीकार न करने से इच्छा न पूर्ण होती थी। इनके ईसाई हो जाने पर उनकी राय बदल गई फिर उनही की अनुमति से दलीप सिंह ने लोगिन आदि के साथ १८५४ में इंगलैन्ड की यात्रा की।

महारानी विक्टोरिया और उनके पति ऐलबर्ट दलीप सिंह का सम्मान उनके पद के अनुसार ही करने लगे। राजकुमार और राजकुमारियां उनके साथ भाई बहिन सा व्यवहार रखने लगे। यह भी बड़े उल्लास से अंगरेज़ों की तरह जीवन बिताने लगे।

महाराज दलीप सिंह।

इधर लोगिन साहब भी पहले की अपेक्षा महाराज की शिक्षा में बहुत जी लगाने लगे। यहां तक कि उन्होंने अंगरेज़ी, फ़रासीसी, जर्मन और इटाली की भाषा सीख ली। काशी के एक पंडित भी ईसाई हो गये थे वही महाराज के संस्कृत अध्यापक होकर विलायत गये थे इनसे दलीप सिंह ने अपने देश की सब भाषा सीखी।

इसी तरह दो वर्ष से अधिक इंगलैन्ड और युरप में बीतने पर दलीप सिंह अपने देश में लौटने की तइयारी करने लगे। पर इसी बीच में सन १८५७ के बलवे से अंगरेज़ों का सिंहासन डोल गया। दलीप सिंह का भारतवर्ष में आना भी बन्द हुआ।

पंजाब ही की तरह कुर्ग देश भी अंगरेज़ों ने ले लिया था। दलीप सिंह की तरह वहां के राजा भी पेन्शन पाकर अंगरेज़ी राज में रहते थे। और इनकी दो अति सुन्दरी कन्या थीं। दलीप सिंह जब फ़तह गढ़ में थे तब ये काशी में विद्याभ्यास करती थीं। बड़ी राजकुमारी संस्कृत और अंगरेज़ी खूब पढ़ गई थी। दलीप सिंह के इंगलैन्ड जाने के पहले ही कुर्ग के राजा अपनी बड़ी कन्या के साथ वहां गये थे। वहीं राजकुमारी गौरी आम्मा ईसाई हुई। अंगरेज़ राजपुरुषों की राय थी कि उसी के साथ दलीप का विवाह हो पर उधर उनका मन न झुका।

भारतवर्ष का बलवा शान्त हो जाने के बाद सन १८६१ में एक बार दलीप सिंह यहां आये थे। पर कलकत्ते तक ही आने पर उनको इस देश के जल वायु में ऐसी विरक्ति जान पड़ी कि थोड़े ही समय में फिर वह इंगलिस्तान को लौट गये। रानी झिन्दन अब तक जो नैपाल में थीं वहां से चली आईं और अपने पुत्र के साथ विलायत गईं। वहीं उनकी मृत्यु हुई। माता के वियोग के थोड़े दिन बाद दलीप सिंह माता का अस्थिभस्म लेकर भारतवर्ष में लौट आये। राह में मिस्र देश की राजधानी अलेग्ज़ेन्ड्रिया में एक अनाथ बालिका विद्यालय में उनसे अपनी भावी उस पत्नी से भेंट हुई। कलकत्ते से लौट कर उन्हीं ने उससे विवाह किया। बालिका की माता मिस्रदेश की और पिता युरपवासी था। विवाह के समय वरनी कोई भाषा नहीं जानती थी और अवस्था केवल सोलह

वर्ष की थी। दलीप सिंह ने उसे इंग्लिस्तान में ले जाकर बहुत सी भाषा सिखलाई थी। दलीप सिंह की रानी यद्यपि मिस्र देश की थी तो भी अपने चरित्र बल से अंगरेज़ राज परिवार और अंगरेज़ समाज की प्रीतिपात्र हो गई थी। आज छ वर्ष उनके देहान्त होने को हो गये। सन १८८८ में दलीप सिंह ने फिर विवाह किया था।

जवान होने के थोड़े ही दिन बाद से दलीप सिंह ने अंगरेज़ी सरकार से अपना धन आदि देने का अनुरोध करना आरम्भ किया था। १८५३ में इसी कारण से मनमुटाव हुआ—मरते मरते तक इनके उस बात की सफ़ाई न हुई। इसमें सन्देह नहीं कि धनके अभाव से और अंगरेज़ी सरकार के अविचार से भग्न हृदय हो अन्त में, जीवन की शेष दशा में बहुत सी पागलपन के काम उन्हीं ने किये, अंगरेज़ी सरकार का आश्रय छोड़ रूस से आश्रय उन्हीं ने चाहा और भारतवर्ष में आने का उद्योग कर अयथा रूप से वह लांछित और अपमानित हुए पर इस दुर्गति के लिये वह दोषी नहीं हैं। दलीप सिंह के क्लेशों का तो अन्त हो गया पर उनके साथ व्यवहार में अंगरेज़ों पर ऐसा दाग़ लगा है कि इतिहास के पृष्ठों से कभी दूर नहीं हो सकता।

यह सब जानते हैं कि दलीप सिंह में बहुत से दोष थे तो भी वह रणजीत सिंह के पुत्र थे और सिक्खों के प्रिय थे। दलीप जब रूस के आश्रित अंगरेज़ों के ताड़ित पैरिस नगर में अपमानित और अनाहार से पीड़ित थे उस समय भी उनका चित्र सिक्ख सभा में पूजित हुआ है। इसके पहले जब थोड़े दिन के लिये दलीप सिंह कलकत्ते के एक होटल में उतरे हुए थे उस समय बर्मा की लड़ाई से लौटे हुए सिक्ख सिपाही उनको देखने के लिये उत्साह से उन्मत्त हो कर होटल के हाते में घुस गये थे। अंगरेज़ी सरकार को सिक्ख लोग प्राण से भी अधिक चाहते हैं तो भी दलीप सिंह का मृत्यु समाचार सुन सभी सिक्ख चाहे कहीं हों, किसी काम में हों, एक ठंडी सांस अवश्य ही खींचेंगे और एक बून्द गर्म आंसू का अवश्य ही टपकायेंगे।

हैं फिर चोरी करना भी सीखते हैं। वही शुरू का उसका जरा आनन्द उसके ऊपर घनघिनती बड़े दुख ले आया। इसी लिये मेरी बातों से होशियार हो जाओ! जब आनंद तुम्हारे मन को मोह ले तब भी छोटी छोटी चीज़ों पर ध्यान रक्खो।"

हमलोगों ने समझा था कि लम्बा आदमी अपनी बात खतम कर चुका पर खयाल हमारा गलत था थोड़ी देर के बाद उसने फिर आरंभ किया—

"हमलोगों की ज़िन्दगी एक एक पल की बनी हुई है, पल बहुत थोड़े समय का होता है, तो भी उसको थोड़ा समझ कर नीची नज़र से मत देखो क्योंकि क्या जाने, इन में से कितने तुम्हारे अपने होंगे। जब तक एक आदमी बूढ़ा होकर मरता है तब तक कितने जवानी ही में मर जाते हैं। कोई मृत्यु से नहीं बच सकता; न भीरु, न वीर न बूढ़ा न जवान। ज्ञानी का मरण ज्ञान ही में होता है मूर्ख का मूर्खता में, धनवान का धन में, दरिद्र का दरिद्रता में। इसी लिये मृत्यु का खयाल सदा अपने मन में रख कर बुरी बातों से बचे रहो। हाल ही की बात है कि मैं एक बादशाह की कब्र देखने को गया था। न उसकी दौलत और न उसका राज ही उसको बचा सका। इस लिये एक एक पल का ध्यान रक्खो; इन छोटे ही छोटे पलों से तुम्हारा जीवन बना है! यदि समय और मृत्यु राजाओं को भी वश में कर लेता है तो छोटी छोटी चीज़ों पर विशेष ध्यान रखना चाहिये।"

इतना कहने पर उसने अपनी बात समाप्त की, हम लोगों के साथ साथ मैदान में घूम कर वह बाग में टहला और दया से बात चीत करके बहुत सी छोटी छोटी किताबें बांटी, सब को आशीर्वाद दे चला गया। क्या जानें वह हम लोगों को भूल गया या याद रखता है; पर मैं तो शायद उसे कभी न भूलूंगा।

जहाज़ और जहाज़ी।

यद्यपि समुद्र में बहुत खटका रहता है तो भी और समय में जहाज़ियों को अच्छा मालूम होता है। सब चिन्ता और सोच को तीर ही पर छोड़ कर ये जहाज़ पर निश्चिन्त ही बैठते हैं। मुखड़े पर

सदा हंसी और मुंह में सदा गीत बिराजता है। यद्यपि देखने में गंवार और उजड्ड मालूम होते हैं पर वह सचाई और उदारता के लिये मशहूर हैं।

जहाज़ियों को अपने जहाज़ पर बड़ी प्रीत होती है। छोड़ने के समय अक्सर रो देते हैं, और जहाज़ से लौटने पर संयोग ही से आनन्द नहीं प्रगट करते। जहाज़ की प्रत्येक चीज़ पर उनकी प्रीति हो जाती है। हर एक लंगर, हर एक मस्तूल, हर एक पाल, हर एक तोप—सब का कुछ न कुछ इतिहास उनके पास रहता है। मुलाक़ात होने पर कहना शुरू करेंगे कि "इसी लंगर के कारण फ़लाने टापू के पास जहाज़ बच गया था।" "वह मस्तूल जो अब रंगा गया है गुडहोप अन्तरीप के पास तूफ़ान में टूट गया था।" वह तोप फ़लाने टापू में ऐसे ज़ोर से छूटी थी कि तीर पर के सब लंगली भाग गये थे।

उनकी भाषा भी और लोगों से मिलती नहीं है, उनकी बात चीत ऐसी होती है कि जिसके सुनने से ज़मीन पर के रहने वालों को कुछ आनन्द नहीं मिलता। "बालू घड़ी ठीक नहीं चलती पानी बरसेगा।" "आंधी आयेगी।" "मस्तूल पर एक चिड़िया आकर बैठी है—हम लोग ज़मीन के पास हैं" ऐसी ही ऐसी बातें उनके मन और मुंह में रहा करती है।

जहाज़ियों को तारों की खूब पहचान रहती है। रंग ढंग देख पहले ही कह देते हैं कि ऋतु कैसा रहेगा। अपने भाग का पूरा भरोसा ये रखते हैं। शाम होते ही उस तरह शान्ति के साथ सोते हैं जैसे कि गद्दीदार बिछावन पर राजा भी नहीं सोता होगा।

जहाज़ भी मनुष्य की बुद्धि का अपूर्व नमूना है। सवार के इशारे को जिस तरह घोड़ा समझ लेता है उसी तरह मांझी के पतवार पकड़ते ही इच्छानुसार जहाज़ फिर जाता है। कभी उलटी हवा में चलता है कभी हवा गंव की मिल जाती है उसी के बल पर सन सन उड़ा जाता है। कभी फेन से भरे तरंग इसके पिछले भाग में धक्का मारते हैं, कभी इसके बीच में आ जाने से तरंग टूट जाते हैं। जब

कि बड़ा ऊंचा जहाज़ तरंगों को काटता हुआ, अपनी झंडियां फहराता हुआ आता सामने देख पड़ता है और सफ़ेद सफ़ेद पाल धूप में चमकते हैं तो उस समय भी एक निराली छटा देखने लायक़ ही रहती है।

जल की राह में न पेड़, न नगर, न मील के पत्थर, कुछ नहीं मिलता पर जब दूसरा जहाज़ मिल जाता है अजब खलबली मच जाती है सब उत्सुक हो कर क्या मुसाफ़िर क्या जहाज़ी बाहर निकल खड़े हो जाते हैं। जब दो जहाज़ आपस में एक दूसरे को दूर से दूरबीन के द्वारा देखते हैं तो दोनों ऐसे ढब से जहाज़ को मोड़ते हैं कि जिसमें भेंट हो। जोंही जहाज़ नज़दीक पहुंचे कि झंडियां खड़ी कर दी जाती हैं पाल लपेट लिये जाते हैं। अन्त को दोनों के कप्तान अपने अपने जहाज़ के पिछले भाग में बात चीत करने का सिंघा लिये रहते हैं और ये सब आपस में प्रश्न करते हैं कि—"कौन जहाज़ है?" "कप्तान का नाम क्या है?" "किस बन्दर से आता है?" "कहां जाता है?" "कितने दिनों से समुद्र में है?" "सलाम!" तब पाल फैला दिये जाते हैं और हवा उसमें भर जाती है एक जहाज़ पर के आदमी दूसरे पर के लोगों को टक टक देखते ही रह जाते हैं, और हर एक अपनी राह से चला जाता है।

आलसी लड़का स्कूल जाता है।

अह! सबक़ याद करना भी क्या मुश्किल काम है। देखो एक नहीं दो नहीं—बल्कि पृष्ट का पृष्ट ही है और सब शब्दों को माने के साथ कंठस्थ करना। यदि शब्दों का अर्थ नहीं रहता तो अच्छा होता। अच्छा अब याद करें—"पी-आर-आई-एस = प्रिज़, ओ एन = ऑन, प्रिज़न माने क़ैदख़ाना।" "अहा! एक दम से स्कूल ही क्यों नहीं कह देते? स्कूल तो अवश्य ही क़ैदख़ाना है।" पी-यू-एन = पन, आई-एस-एच = इश, पनिश माने सज़ा देना—यह याद करने का काम नहीं है जिन से काम पड़ता है सभी यह देते हैं। बिना याद किये याद हो गया। ओह! बड़ा कठिन पाठ है मुझ से कभी नहीं याद होगा! एच-ए पी = हैप, पी-आई = पी,

एन-ई-डब्ल-एस = नेस, हैपीनेस = आनन्द। आनन्द तो हिंडोला झूलना, मिश्री खाना, बुलबुल उड़ाना और लड़की के साथ अंधाधोपी खेलने ही में मिलता है। यदि नरोत्तम सुन पावे तब वह तो कहेगा कि नई किताब में आनन्द मिलता है। पढ़ो, पढ़ो, पढ़ो—और मुझे पढ़ने से चिढ़ है! जब मैं बड़ा होऊंगा तो कभी नहीं किताब खोलूंगा और एक काला घोड़ा मोल लूंगा। नहीं भूरे रंग का और लम्बी दुम वाला अच्छा होगा। चढ़कर बाज़ार की सैर किया करूंगा। अभी तुरत बड़ा हो जाता तो क्या अच्छा होता!"

आलसी लड़का बड़ा हुआ।

हां, अब मैं बड़ा हुआ; और लड़कपन की मूर्खता के लिये कितना पछताता हूं! किताब से चिढ़ा करता था और पाठ को याद करने की अपेक्षा भूलने ही में अधिक उद्योग करता था। स्पेलिंग बुक भी मुझ से नहीं याद होती थी। मेरे पिता सदा कहते "देखो बिन्दु! सबक याद करो नहीं तो बड़े होने पर तुम किसी काम के नहीं रहोगे। हे बेटा किताब पर जी लगाओ, नहीं तो लोगों से तुम को अपना बेटा कहते मुझे बड़ी लज्जा होगी।" अब एक नरोत्तम है उस को भी खेलना खूब अच्छा मालूम होता था पर पढ़ने में ज़ियादे जी लगाता था। स्कूल के बाहर मुझ से अधिक समय पाठ याद करने में बिताता था। अब वह भी हमारी तरह जवान हो गया, बड़े बड़े बुद्धिमान और इज़्ज़तदार आदमी उस के दोस्त हैं मैं वहां नहीं जाने पाता। मंडली भर की काम की बातें बतलाता है और मुझे या तो चुप ही रहना पड़ता है या पानी कैसा बरसा, कहां मारपीट हुई, पड़ोसी कैसे हैं—बस यही सब बातें करनी पड़ती हैं मित्र को एक चीठी लिखने में मुझ से बहुत भूल हो जाती है। अब अपनी भूल देख वृथा पछताता हूं, अब कुटुम्ब पालन की भीड़ पड़ी, पढ़ना होता है कैसे?

लड़कपन की आलस का फल देखो!

मैला रूमाल ।

दस बज चुका था, सब लड़के अपने अपने जगह पर बैठे थे, सब कमरा भरा हुआ था। दो चार लड़के बहुत बात कर रहे थे उनको मिसी ने कहा "चुप चुप देखो मास्टर आये। मास्टर एक बूढ़ा आदमी था, सिर के बाल भूरे थे बीच में चंदला भी था चेहरे से दया भाव झलक रहा था पर साथ ही उसके दृढ़ता भी थी। मास्टर ने आतेही झुक कर एक मैला रूमाल उठाया और पूछा कि "किसका रूमाल है ?" "कैसे तुम लोगों को समझायें कि होश से रहा करो। यहां हर चीज़ के लिये जगह बनी हुई है और मेरी यही इच्छा है कि सब चीज़ें अपने ठिकाने रक्खी जायें।" इस बीच में शर्माता हुआ विन्ध्याचल अपना रूमाल लेने के लिये आगे बढ़ा उससे मास्टर ने कहा "इसे ठिकाने पर रख दो ऐसा न हो कि इसके लिये फिर मुझे कुछ कहना पड़े।

ज़रा ठहर कर मास्टर ने कहा—याद रक्खो लड़को! मेरी यही इच्छा केवल नहीं है कि सिर्फ़ पढ़ना लिखना सिखा कर तुम लोगों को बिदा करें पर अच्छी आदत भी लगे। पिछली बार इस विषय पर जब मैंने कुछ कहा था तब से देखता हूं कि तुम लोगों में से कई होशियार हो गये हो। मुझे पूरा विश्वास है विन्ध्याचल भी इस विषय में अवश्य कुछ उन्नति करेगा। मैं समझता हूं कि तुम लोग साफ़ सुथरे रहोगे और अपनी अपनी चीज़ें होशियारी के साथ ठिकाने से रक्खोगे, फिर भी मैं चेता देता हूं कि अपनी मैली आदत छोड़ो। यह आदत बहुत ही शीघ्र बढ़ती है जहां एक लगी कि दस और आकर इकट्ठा हो जाती हैं। मैले आदमी अक्सर आलसी होते हैं। जो अपने शरीर की सुध नहीं रखता वह अपने काम की भी सुध नहीं रक्खेगा; जो लड़का अपनी टोपी या रूमाल की खबर नहीं लेता वह अपने काम की वस्तुओं की भी खबर नहीं लेगा। जिसके हाथ सदा मैले रहते हैं उसकी किताब भी अवश्य ही मैली रहेगी। यदि आप बेहोश रहें तो दूसरों का होश कैसे रख सकेंगे। यदि छोटी छोटी चीज़ों पर हम लोग ध्यान न देंगे तो बड़े का बंदोबस्त कैसे कर सकेंगे मैली आदत

से बढ़न्ती में बाधा पड़ती है क्यों कि मैली आदत वाले को सिलसिला नहीं रहता। जिसके कामों में सिलसिला नहीं है उसके बुद्धिमान होने में सन्देह होता है। बेपर्वा लड़का अपनी चीज़ें खो देता है और जब काम पड़ता है तो उसे नहीं मिलती—इसमें समय नष्ट होता है या मिली भी तो बुरी गत में इससे पैसे की बरबादी होती है। हम कहां तक कहें जितना मैं कहूंगा उसमें बेशी तो तुम ही लोग सोच कर साफ़ आदत रखने के पक्ष में कारण बतला सकोगे अच्छा देखें सब से अच्छा कारण कौन बतलाता है?

एक बड़ा लड़का जिसको पहले से मास्टर का कहा हुआ कुछ याद था बोला—क्यों कि इससे अपना मान बना रहता है।

दूसरा लड़का (इसको भी पहले का कुछ याद था)—क्यों कि किसी के पास साफ़ सुथरे होकर जाने से उसकी इज़्ज़त होती है।

तीसरा लड़का—क्यों कि मैले लड़के को कोई अपने पास नहीं बैठने देता।

चौथा लड़का—क्यों कि इससे शरीर निरोग रहता है।

पांचवां लड़का—(धीरेसे) इससे चित्त प्रसन्न होता है।

इतने में शंकर ने कहा—मास्टर साहब पंडित जी कहते थे कि "सफ़ाई के बाद ही दिव्यता आ जाती है।"

एक और लड़का—यह अच्छी बात है।

तब सन्नाटा कर गया कोई कुछ नहीं बोला तब मास्टर ने कहा—हां ये सब बातें ठीक हैं यदि सोचोगे तो और भी मालूम होंगी। अब मालूम होता है कि तुम लोग सब कोई इसका लाभ समझ गये हो इससे आशा है कि सब इस पर ध्यान रक्खोगे। अब मैं कुछ नहीं कहूंगा। अब पाठ आरम्भ करना चाहिये।

दरवेश और ऊंट।

विद्या प्राप्त करने का मुख्य ढब यही है जो बातें सामने आ जायें उनको खूब ध्यान से देखना और उस पर अपनी राय क़ायम करना।

नीचे वाली किस्से से मालूम होगा कि खूब ध्यान देकर विचारने का क्या लाभ है। यह ऐसी शक्ति है जो हम लोगों में सब को है जिसे अपने चारो ओर की चीज़ें जैसे वस्तुओं का आकार, रंग, जीवों के गुण उनकी आदतें, और मनुष्यों का ढंग आदि की तज़वीज़ कर व्यवहार में ला सकते हैं बल्कि लाना चाहिये।

एक किस्से में वर्णन है कि एक मुसलमान फ़कीर जिसे दरवेश कहते हैं मरु भूमि में अकेला चला जाता था। जब वक्त होता तो वहीं बालू पर नमाज़ भी पढ़ लेता। जाते जाते सौदागरों की एक मंडली मिली। उन लोगों ने कहा "बाबा साहब हमारा ऊंट खोया गया है।"

दरवेश ने पूछा—दहनी आंख का अंधा और बायें पैर का लंगड़ा था न?

सौदागर—हां हां।

दर०—उसका एक दांत भी टूटा है न?

सौदागर—जी हां।

दर०—भला उस पर एक तरफ़ गेहूं और दूसरी ओर शहद भी था न?

सौदागर—(आश्चर्य से) ठीक है! ठीक है!

दर०—तब—मैंने तुम्हारा ऊंट नहीं देखा है।

यह सुन कर सौदागरों के क्रोध का ठिकाना न रहा कहने लगे कि "तुम ज़रूर ऊंट का पता जानते हो" और सन्देह हो गया कि ऊंट पर रुपया पैसा और बहु मूल्य रत्न सब लदे थे ज़रूर दरवेश ने ले लिया है। इसी लिये उसे पकड़ कर सब से नज़दीक के शहर में ले गये और काज़ी के सामने उन सौदागरों ने उसे हाज़िर किया।

काज़ी ने सौदागरों से सब हाल सुन कर समझा कि दरवेश ऊंट और चोरों का हाल जानता है पर बतलाना नहीं चाहता इस लिये हुक्म दिया कि इसको नीचे गिरा कर पैर के तलवे पर मारो। पर सज़ा

देने के पहले क़ाज़ी ने कहा कि सौदागरों का जो बयान है उसका तुरन्हा पास क्या जवाब है ?

तुमको कैसे मालूम हुआ कि ऊंट एक आंख का काना है ?

दर०—मैंने उसे काना इस लिये समझा कि उसने एक ही ओर की घास चरी थी।

क़ाज़ी—यह कैसे जानते हो कि बायें पैर का लंगड़ा है ?

दर०—उसके बायें पैर का लंगड़ा होना इस तरह मालूम हुआ कि उस पैर का दाग़ और पैरों से कम बालू पर उखड़ा था।

क़ाज़ी—एक दांत के टूटने का हाल कैसे मालूम हुआ ?

दरवेश—जहां जहां वह चरा था बीच में थोड़ी थोड़ी घास बराबर जों की तों थी और बाक़ी कुतरी हुई थी।

सौदागर—यह तुम को कैसे मालूम हुआ कि उस पर क्या लदा है ?

दरवेश—यह कोई मुश्किल बात नहीं है एक तरफ़ मैं चीवटी की दौड़ और दूसरी ओर मक्खी के रहने से मालूम हुआ कि अन्न और शहद उस पर लदा है। इसके अलावे दोस्तो ! मेरे समझ में तो आता है कि ऊंट सिर्फ़ बहक गया है किसी ने चोराया नहीं है क्यों कि आगे पीछे आदमी के पैर का कोई दाग़ नहीं था। लौट जाओ और ऊंट की खोज करो।

क़ाज़ी—तुम लोग जा कर ऊंट को ढूंढ़ो।

सौदागरों ने वैसाही किया और जहां ऊंट खोया गया था वहां से कई मील ही आगे पर मिल गया।

ब्राह्मण और घड़ियाल।

यमुना किनारे आस्तिक नाम ब्राह्मण रहता था। तीर्थ करने के लिये वह गंगा तीर को चला। रास्ते में एक नदी मिली उसी में स्नान करने को उतरा। जोंही जल में उसने पैर डाला कि एक घड़ियाल ने उससे पूछा कि कहां जाते हो, मालूम होने पर उसने पवित्र नदी में ले चलने की मिनती की क्यों कि वहां विशेष सुख से रहने में आवेगा। ब्राह्मण की दया आ गई उसने अपने बेग में उसे रख लिया और कंधे पर रख तीर्थ को चला।

गंगा तट पर पहुंच यात्री ने बेग खोल कर घड़ियाल को नदी दिखला कर कहा कि चले जाओ। पर घड़ियाल जरा भी न डोला उसने कहा कि मैं बहुत थका हूं यदि गहरे जल में चल कर छोड़ दो तो बड़ा गुण मानूंगा। निशंक होकर दया से ब्राह्मण जहां तक बना, गया और जल में छोड़ आया। लौटने लगा तो झट घड़ियाल ने दांतों से ब्राह्मण का पैर पकड़ा और अधिक जल में खींच कर ले जाने की कोशिश करने लगा। अपनी दया का यह बदला देख ब्राह्मण क्रोध में आकर बोला "अरे विश्वासघाती! क्या भलाई का पलटा इसी तरह बुराई करके देता है? यही तेरा धर्म है? मैंने तेरे लिये जो इतना परिश्रम किया उसका प्रतिफल क्या मुझे यही मिलना चाहिये?"

घड़ियाल—अच्छा कहा, धर्म आदि तुम क्या बक रहे हो? आज कल कृतज्ञता इसी में है कि जो तुम्हारे काम आये हों और उनसे आगे कोई काम नहीं निकलने वाला हो तो उनको मार डालना चाहिये।

ब्राह्मण—अच्छा कपटी, जरा मुझे छोड़ दे और तीन पंच के बीच इसका फैसला किया जाये; देखें कितने लोग तुम्हारी राय से मिलते हैं।

घड़ियाल इस बात पर राज़ी हुआ। पहले आम के पेड़ के पास, तब गाय के पास दोनो गये। दोनो घड़ियाल ही की राय से मिले और बोले कि भलाई के पलटे बुराई इसी तरह तो मनुष्य हम लोगों के साथ व्यवहार करते हैं और जब काम हो गया तो नष्ट होने के लिये दोनो छोड़ दिये जाते हैं।

घड़ियाल बड़ा खुश हुआ और ब्राह्मण चारो ओर एक ऐसे पंच की खोज में देखने लगा जो जान बचाये। एक लोमड़ी को देख आने का इशारा ब्राह्मण ने किया; आने पर वही प्रश्न उससे भी किया गया जो गऊ और आम के पेड़ से किया गया था। सियार ने कहा कि "मुझे सब हाल मालूम होना चाहिये"; तब ब्राह्मण ने जो उपकार उस घड़ियाल का किया था और उसका पलटा जो विश्वास घात घड़ियाल ने किया सब हाल कह सुनाया। लोमड़ी की इच्छा हुई कि पहले घड़ियाल ही का पक्ष करें पर जब यह याद आया कि हमारा भी शत्रु है तो अन्त को बोला कि "निर्णय करने के पहले मैं यह देखना चाहता हूं कि तुम दोनो यहां किस ढंग से आये।"

कपट का सन्देह न करके घड़ियाल ब्राह्मण के थैले में घुस गया, और ब्राह्मण ने तुरत कंधे पर उसे उठा लिया और सियार के पीछे पीछे चला। जहां सियार ने इशारा किया वहां उसने थैला नीचे उतारा। ब्राह्मण के नीचे रखते ही सियार ने एक पत्थर उठा कर ऐसे ज़ोर से उस पर फेंका कि घड़ियाल का सिर चूर हो गया।

तब ब्राह्मण से उसने कहा—हे मूर्ख जिस विपत्ति में आज पड़े थे उससे शिक्षा लो। आज जो बात हुई है उससे यह सीखो कि दुष्ट जन के साथ कभी नहीं रहना या मेली करना चाहिये।

यह कह सियार चला गया और ब्राह्मण तीर्थ करने के लिये आगे बढ़ा।

जोगा आंटि वाला।

जोगा आंटि वाला स्वभाव ही से लालची था। उससे बढ़ कर धन का आदर दूसरा कोई नहीं करता था और न बढ़ कर प्रेम ही दिखलाता था। जब दस आदमी जमा होकर अमीरों की बात निकालते थे तो जोगा कहता कि मैं उसे जानता हूं, मुझ से उससे बहुत दिनों से जान पहचान है।

पर यदि किसी गरीब आदमी का नाम लिया जाता तो उसको नज़र भी नहीं जानता था। बहुत आदमियों से मेल वह नहीं करता था चुने

चुने आदमियों ही की मंडली बनाता था। धन के लिये इतना व्यग्र रहने पर भी वह ग़रीब का ग़रीब ही रहा। सिवा पनचक्की की आमदनी के उसके निर्वाह का कोई दूसरा तौर न था। पनचक्की उस चक्की का नाम है जो जल के ज़ोर से चलती है और उसी से आटा पिसता है। यद्यपि आटे की पिसाई की आमदनी कम थी पर पक्की थी, जब तक चक्की चलेगी लोग आटा पिसवायेंगे और उसको खाने का हर्ज न होगा—यही बात थी। अपने किफ़ायत के कारण हर रोज़ उसे कुछ बचता ही जाता था जिसे कभी कभी गिन कर मन ही मन प्रसन्न होता था। पर जितनी उसकी इच्छा रहती थी उतना नहीं बचता था; उसका ज़रूरी काम सब निकलता चला जाता था पर वह चाहता था कि खूब बचे। एक दिन इसी चिन्ता में था कि किसी ने आकर कहा कि तुम्हारे पड़ोसी को एक गगरा अशरफ़ी गड़ी हुई मिली है तीन दिन बराबर इस का स्वप्न हुआ। यह ख़बर क्या उसने सुनी कि कलेजे में छुरी बैठी। कहने लगा कि कई गंडे पैसे के लिये मैं तो सवेरे से रात तक मिहनत करता हूं और पड़ोसी मेघू चुपचाप सोया और स्वप्न देख कर उसने हज़ारों का माल भोर को पाया। उसके ऐसा स्वप्न मुझे भी होता तो क्या अच्छा होता। कैसी ख़ुशी से गगरा मैं उखाड़ता! और कैसी चालाकी से उठा कर घर ले जाता! मेरी स्त्री भी नहीं देख सकती। और फिर कोहनी तक अशरफ़ी की ढेर में हाथ घुसाने से कैसा आनन्द होता!'

ऐसी ऐसी ही बातें सोच कर जीगा दिन दिन दुखी होता गया अपने रोज़गार में भी ढीली करने लगा, थोड़ी आमदनी से उसका चित्त बहुत उदास हो गया था, उसके गाहक भी छोड़ने लगे। हर रोज़ वही इच्छा उसकी होती और हर रात को स्वप्न देखने के लिये वह सोता। नसीब जो इतने दिनों से अप्रसन्न मालूम होता था आख़िर प्रसन्न हुआ, बहुत दिन से जिस स्वप्न के देखने की लालसा लगी थी देख पड़ा—वह यह कि चक्की की नेव में बड़ा भारी पत्थर है उसी के नीचे सोना और जवाहिरात से भरा हुआ एक मटका है। इस ढंग के स्वप्न को अक्सर लोग छिपाते हैं वैसा ही उसने भी किया। किसी से भी इसका हाल

नहीं कहा सच्चा स्वप्न है या झूठा है इसके दरियाफ़्त करने की आस में रहा, दो रात को फिर वही स्वप्न देख पड़ा। तब तो उसको पूरा निश्चय हो गया।

अब तो सन्देह की कोई जगह न रही तीसरे दिन एक कुदाल लेकर अकेला अपने चक्की की उस भीत को खोदने लगा जहां स्वप्न ने कहा था। पहला शगुन तो यह हुआ कि एक टूटी अगूंठी मिली, ज़ियादे दूर खोदने से ईंट उसने उखाड़ डाला। अन्त को बहुत खोदने के बाद वह पत्थर भी मिला जो इतना बड़ा था कि एक आदमी से नहीं हिल सकता था। देखते ही फूला न समाया मारे आनन्द के आप ही आप बोल उठा "देखो इसके नीचे तो बड़ा भारी जवाहिरात का मटका होगा। चल कर स्त्री से सब हाल अब कहना चाहिये दोनो मिल कर इस पत्थर को उखाड़ डालें।" इस हाल को सुन कर उसके आनन्द का भी ठिकाना न रहा, मारे खुशी के जोगा के गले में जाकर लिपट गई। पर इस आनन्द से वह चिन्ता न गई कि कितना माल है। जहां जोगा ने खोदा था दोनो आये तो गड़ा खज़ाना तो नहीं मिला पर देखते क्या हैं कि एक ही अवलम्ब उनकी चक्की, गिर कर टूट गई।

घिस जाना अच्छा पर ज़ंग लगना नहीं अच्छा।

एक छोटी सी तेज़ आरी ने अपने पड़ोसी बड़ी आरी से कहा कि बड़ा मुश्किल है, बड़ी मुश्किल बात है कि मुझे इतना अधिक परिश्रम करना पड़ता है, काटते, काटते, काटते मुझे गर्म मालूम होता है और मेरी पीठ बेतरह दुखती है।

बड़ी आरी ज़ियादा दिन की थी सब हाल उसका जानती थी यह भी उसे मालूम था कि तजरिबा से जो विद्या मनुष्य प्राप्त करते हैं उसकी बहुत कदर होती है और ज़ियादा दिनों तक याद रहती है इस लिये उसने कहा—

कुछ पर्वा नहीं; काम के दीने के कारण तो तुम को खुश होना चाहिये; बल्कि काम करने से तो तुम और भी सुन्दर मालूम होती हो;

पहले तो ऐसी चमाचम और ऐसी तेज़ तुमको मैंने कभी नहीं देखा था। मुझे तो बहुत आराम मिल चुका, मेरी काम करने की पारी आवे तो मैं बहुत खुश हूंगी, आज कल तो मैं भद्दी मालूम होती हूं बल्कि मुझ दिखलाते लज्जा मालूम होती है।

संयोग ऐसा हुआ कि बढ़ई की दूसरे तरह का काम आ गया और बड़ी लकड़ी ही का काम होने लगा इससे छोटी आरी बेकार ही रही। इसमें किनारे डाल दी गई और सब उसे भूल गये। यह अवसर देख छोटी आरी बोली "कैसी अच्छी कुर्सी मालूम होती है न जाने बड़ी आरी काम करना कैसे भला समझती है।"

बहुत दिन बेकार बैठे बैठे छोटी आरी जब घबरा गई तो एक दिन अपने मालिक की खोज करते सुन बहुत खुश हुई। ढूंढ़े जाने पर पता लगा रोशनी में लाई गई। अय हय! कितनी बदल गई! अफ़सोस अब तो न उसमें चमक ही थी और न तेज़ी ही थी लेकिन ज़ंग से भरी और भोथी थी। बल्कि जिस काम के लिये निकाली गई थी उसके लिये बेकार समझ कर नई आरी से काम लिया गया। यह देख कर उसे बड़ा दुख हुआ क्यों कि अपने मालिक के काम करने का उसे शौक था। पहले जो उसने शिकायत की थी उसमें कुछ घमंड भी था, इससे अपने बदले में दूसरे को देख डाह भी बढ़ा।

बढ़ई की वह आरी बड़ी प्यारी थी उससे उसका हाथ खूब चलता था इस लिये उसे साफ़ करके काम लायक बना डाला अब जिसका जी चाहे देखे वैसी ही चमकती है और खर्र खर्र खुशी से काम करती है। अब जब कभी ज़ियादा मिहनत से उसकी पीठ दुखती है तो बार बार यही गीत गाती है कि "घिस जाना अच्छा पर ज़ंग लगना नहीं अच्छा।"

एक मुसाफ़िर की अद्भुत देश की सैर।

जाड़े का दिन था शाम को कप्तान कम्पस अपने मकान में बैठे थे। लड़कों ने जब बहुत दिक़ किया तो उन्होंने यह क़िस्सा कहना शुरू किया—

एक दफ़ा मैं ऐसे देश में जा पड़ा जहाँ सर्दी बहुत पड़ती है और वहाँ के बेचारे निवासियों को भूख से बचने के लिये बड़ा बड़ा उपाय करना पड़ता है। वे पोशाक कुछ तो चमड़े की और कुछ मछली कद के चौपाये के आवरण से बनाते हैं जिसे वे निर्दयता के साथ उसके जीते जी ही काट लेते हैं।

वे ऐसी मकानों में रहते थे जिस का कुछ हिस्सा ज़मीन के नीचे था। मकान की सामग्री में पत्थर और आग से कड़ी की हुई मिट्टी—यही दो चीज़ें लगी थीं। उस देश में आँधी पानी ऐसे ज़ोर से आता है कि बहुत से लोग अपने घर की छत पर पत्थर बिछाते हैं। मकान की दीवारों में रोशनी आने के लिये उन्होंने सूराख़ बना रक्खा था; पर जिस में सर्दी और ठंढी हवा न आवे इस लिये बालू आदि कई चीज़ मिला कर एक तरह का ऐसा पत्थर उन्हीं ने बना कर लगा दिया था जिसमें बाहर की चीज़ साफ़ दीख पड़ती थी। लकड़ी बहुत कम वहाँ मिलती है हम नहीं जानते कि वह आग कैसे जलाते अगर पृथ्वी के भीतर से अजीब तरह का पत्थर ढूढ़ कर नहीं निकालते जो जब जलती लकड़ी में डाल दिया जाता है तो आग को थाम लेता है और मशाल की तरह जलने लगता है।

उनका खाना भी अजीब तरह का था। कोई मछली को धूएँ में लटका और कड़ी करके खाते थे; और उसके साथ या तो जड़ी आदि नहीं तो एक तरह के पेड़ की छाल पीस कर उसी की मोटी मोटी काली रोटी बना कर खाते थे। यह ग़रीबों का आहार था। पर जो अमीर थे वह सफ़ेद रोटी खाते थे जिसके ऊपर चर्बी सी चीज़ लगा कर खाने का उनको बहुत शौक़ था, यह चर्बी सी चीज़ वह एक बड़े से जानवर से निकालते थे। इस चर्बी को हर तरह के भोजन में वह व्यवहार में लाते थे और जब टटका रहता था तो बेस्वाद नहीं होता था।

इसके अलावे जब मिलता था तब बहुत तरह की चिड़िया और जानवरों का मांस खाते थे, पेड़ों की पत्तियाँ और और दूसरी वनस्पति जो वहाँ पैदा होती थी सब खाते थे, कोई तो कच्चा ही चिबा जाते थे कोई आग पर भून कर खाते थे।

दूध का दही जमा कर निमक मिला कर एक चीज़ बना कर खाते थे। इसकी ऐसी बू आती थी कि कमज़ोर आदमियों से ज़रा नहीं बरदाश्त होता था। पीने के लिये अक्सर जल ही खर्च करते थे पर एक तरह की पत्ती उसमें मिला देते थे। पूछने पर मालूम हुआ कि ये पत्तियां वहां बहुत दूर से जाती हैं। इसके सिवाय एक छोटे छोटे पेड़ की सी घास की बीजसे वह एक तरह का अर्क तय्यार करते हैं उसमें एक तरहकी कड़वी बूंटी डाली जाती है। मुझे लोगोंने ज़बरदस्ती चखाया, पहले तो बड़ा बदबू मालूम होता था पर पीछे अच्छा मालूम होने लगा।

जब छ महीने उस ठंढे देश में रह चुका तो देखा कि सर्दी दूर हो गई और बहुत अच्छी ऋतु वहां की हो गई तमाम हरियाली छा गई और जहां तहां सुहावना दृश्य मालूम होने लगा। पेड़ और जंगल झाड़ियों में बहुत से फल फले जिनको वहां वाले खाते हैं। मुझे एक तरह का फल बहुत अच्छा मालूम हुआ, गुच्छे में फलता है कोई सफ़ेद कोई लाल होता है स्वाद में भी मधुर खट्टा था ऐसा कागज़ी था कि बीच की बीया साफ़ देख पड़ती थी। वहां खेत का खेत सुगन्ध फूलों से भरा था लोगों से मालूम हुआ कि इन फूलों के बाद उसमें ऐसी फली निकलती है जिससे मनुष्य और चौपाये दोनों का शरीर बलवान होता है। जंगल झाड़ियों में बहुत सी चिड़ियां थीं, एक को देख कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ जो ज़रा सिखला देने से तोते की तरह साफ़ बोलती थी।

मनुष्य वहां के भले और सभ्य थे और संसार में काम आने लायक बहुत से हुनर जानते थे। जाड़े की पोशाक उनकी रंग बिरंग की होती थी। बहुत से तो एक तरह का पेड़ बोया जाता था उसी के रेशे का बना हुआ एक तरह का कपड़ा पहनते थे। पहले पेड़ों की डाँट को पानी में भींगा कर मुंगड़ों से पीटते थे। झाड़ियों में फलों के भीतर से एक तरह का ऊन निकाल इसी का कपड़ा बना कर पहनते थे। पर सब से अजीब एक बहुत ही चिकना कपड़ा विशेष करके अमीर लोग इस काम में लाते थे मुझे मालूम हुआ कि एक तरह के कीड़े के बाल से लोग बनाते हैं। इस तरह का कपड़ा इतना मैंने देखा कि हमारी

अक्ल चकरा गई कि कितने कीड़ों के जाले से कपड़ा बना होगा, कीड़ों की बिसात ही क्या?

उस देश की पोशाक अजीब तरह की होती है विशेष करके स्त्रियों की। बहुत सी चीज़ें ऐसी होती हैं जिनका वर्णन करना कठिन है और सब को पहन कर अजीब ढंग से अपना परमेश्वरीय शरीर का ढांचा बदल देती हैं। हां कोई कोई तो साफ मालूम होती है पर बाकी और का तो मुक़ाबला हौटनटाट देश के लोग भी नहीं कर सकते। सिरके बालों के दुरुस्त रखने का ढंग तो बस हद है सूअर और दूसरे दूसरे जानवरों की चर्बी कई रंग की बुकनी में फेंट कर लेप करके लड्डा बना डालती हैं। अमरिका के पुराने रहनेवालों की तरह सिर में पर भी खोंसती है। एक बात से मुझे बड़ा अचरज हुआ वह यह कि घर में शेर की जाति का एक जानवर पाला करते हैं। उसके दांत और पंजे बड़े भयंकर होते हैं पर छोटे से छोटे बच्चे भी निर्भय होकर उनके साथ खेला करते हैं।

एक लड़का—मैं तो कभी नहीं उसके साथ खेलता।

कप्तान—ठीक ही बात है। हमेशा बेमौका नक्कीड़ा लग जानेका डर है। परदेसी आदमियों की उनकी भाषा बड़ी रूखी और गड़बड़ मालूम होती है पर आपस में वे अच्छी तरह बोलते और समझते हैं। उनमें सलाम करने का अजीब तौर है। चाहे जाड़ा हो या पानी पड़ता हो कैसी भी ऋतु क्यों न हो पर वे सिर खोल देते हैं और बड़ा आदर दिखलाना हुआ तो कुछ देर तक खुला रखते हैं।

जैक—यों यह तो हम लोग जैसे टोप उतार लेते हैं वही बात है।

बेटसी—अह हा! बाबा, मैं बूझ गया तुम तो हमही लोगों का हाल इतनी देर से हम सब को सुना रहे हो।

जैक—पर हम सब तो पत्थर नहीं जलाते न चर्बी न बीया की बुकनी खाते हैं, न चमड़ा और जाला पहनते हैं न शेर के साथ खेलते हैं।

कप्तान—नहीं? तब कोयला क्या है पत्थर ही न? और मक्खन क्या चर्बी नहीं है, अनाज क्या बीया नहीं है, जूता चमड़ा नहीं है, और रेशम एक कीड़े का क्या जाला नहीं है, और बिल्ली क्या शेर के किस्म का जानवर नहीं है?

ये छोटी छोटी तितलियां जो चिड़ियों की तरह उड़ती हैं वह भी चिड़ियों ही की तरह अन्डे से जन्म लेती हैं। पर सब से छोटी चिड़ियों का जो अंडा लोगों ने देखा है वह भी तितली के अंडे से पचास गुन बड़ा होता है।

इतना छ टा होने पर भी जब उन को आतशी शीशे से देखा जाये तो वह चिड़ियों के अंडे से कहीं बढ़ कर सुन्दर देख पड़ते हैं। शक्ल भी उन की बहुत तरह की होती है। किसी में ऊंची ऊंची लकीरें देख पड़ती हैं, कोई पहलुदार होता है और कोई कोई ऐसा देख पड़ता है जैसे टोकरी की बिनावट देख पड़ती है।

तितलियां ऐसे पत्तों पर अंडे रख कर उड़ जाती हैं जिन को वह समझती हैं कि जन्म लेने पर बच्चे खा सकते हैं। गर्मी पाकर अंडों में से थोड़े ही दिनों में एक कीड़ा निकल आता है। पर तितली नहीं! यह क्या बात है?—इतना पतला वह कीड़ा होता है कि कोई उसे देख नहीं सकता।

पर सदा वह छोटा ही नहीं रहता। गौर से देखो तो वह पत्तों में छेद करने लगता है। उस की भूख बड़ी तेज़ रहती खा खा कर रोज़ रोज़ बढ़ता चला जाता है कई बार अपना चमड़ा बदलते बदलते अंगुल भर का बड़ा सा कीड़ा हो जाता है फिर तो वह पेड़ों ही पर इधर से उधर अपने शरीर को घसीटता फिरता है।

यह कीड़ा तितली सा नहीं होता पर उस की यही दशा सदा न रहेगी जब वह पूरा बढ़ जाता है तो बड़ा भारी हेर फेर उस में होता है। तब वह न तो कुछ खाता ही है न चलता ही फिरता है। पत्ती की डंटी, या पत्ती का निचला भाग, दीवार या कटघरा—ऐसी ऐसी किसी आड़ की जगह में अपने मुंह से रेशमी तागा निकाल अपने को लपेट कर सट कर पड़ा रहता है।

देखने में तो वह मरा ही हुआ देख पड़ता है। सिर नीचे लटका रहता है। पर इस हालत में भी सदा वह नहीं रहता है। जब खूब गर्मी पड़ती है तो अपना बंधन तोड़ धूप में आकर रेंगना शुरू करता है। यही उस की आखरी हालत होती है इस के बाद पूरा हो जाता है।

अब वह उतना बड़ा कीड़ा नहीं रहता पर समझना चाहिये कि छोटी तितली की दशा रहती है। और जहां पहले पहल हवा लगी कि उस के दोनों छोटे छोटे डैने खुल जाते हैं और बढ़िया रंग देख पड़ने लगते हैं।

दो एक बार रंगीन डैना हिलाते ही यह ऊपर चढ़ जाता है और जा कर अपने साथियों में मिल जाता है। इन तितलियों को दूर से देखने में उड़ते हुए फूल का धोखा होता है। ये एक फूल से दूसरे पर बैठी मधु चूसती फिरती हैं—इन के जीने का उद्देश्य सिर्फ़ यही मालूम होता है कि थोड़े दिन हंसी खुशी में दिन बिताना और अंडा देकर मर जाना!

कपड़े के कीड़े।

गर्मी के दिनों में शाम को अक्सर देखने में आता है कि छोटे छोटे कीड़े जिन की सफ़ेद सफ़ेद पर रहते हैं चिराग़ की घेर लेते हैं और घूमते घूमते उसी में जल मरते हैं।

यही कपड़े के कीड़े रहते हैं। उन का एक काम यही है कि अपना अंडा रखने के लिये उम्दा ऊनी कपड़ा ढूढ़ते फिरते हैं। यह विशेष करके ऐसा ही कपड़ा पसंद करते हैं जो उन के बच्चों के हक़ में बहुत अच्छा होगा। जब मिल गया तो उसी में अंडा रख चल देते हैं उस में से कुछ दिनों के बाद बच्चे निकल आते हैं जिन का काम बराबर खाना और कपड़ा पहनना यही रहता है।

सुन कर अचरज होगा कि पैदा होते ही कीड़े अपना कपड़ा बनाना शुरू करते हैं। जिन का जन्म ऊन पर होता है वह ऊन चुन कर मुंह से काट अपने सुलायम रेशम के साथ नाली के ऐसा कपड़ा बनाना शुरू करते हैं जो दोनों ओर खुला रहता है और लम्बा इतना रहता है कि सिर से दुम तक ठीक छिप जाये। तमाशा यह कि जिस चीज़ का कपड़ा बनाते हैं उसी को खाते भी रहते हैं।

इन कीड़ों में अचरज की यह भी बात है कि जों जों शरीर उन का बड़ा होता है तों तों उन का कपड़ा भी बढ़ता जाता है। वे उस

में सूत निकाले रखते हैं और छेद भी रखते हैं पर इतना बड़ा नहीं कि जिस में उस के नाजुक बदन में सर्दी लगे। इस ढंग से कीड़े अपने मुटाने की गंध भी रखते हैं। लम्बाई जब अपने कपड़े की कम हो जाती है तो सूत जो निकला रहता है उसी में ज़ियादा तागा जोड़ और भी अपना कपड़ा बढ़ा लेते हैं।

इन कीड़ों की अजीब बात यह है कि चाहें जो काम में लावें और चाहे कपड़ा कितना भी काट डालें पर वह उस का वह रेशमी ही डोरा निकाल रंग असली ही बनाये रखते हैं। अगर किसी को खेल करना ही और चाहें कि कीड़े का कपड़ा भी रंग बिरंग का हो तो सिर्फ़ इतना ही करना होगा कि कीड़े की एक रंग के कपड़े पर फिर दूसरे रंग के कपड़े में रख दे तो कीड़ा जो कपड़ा अपने बदन में बना कर लपेटे रहता है वह भी उतने ही रंग की धारी का होगा।

मकड़े की चालाकी ।

एक आदमी को कीड़े मकोड़े की आदत को जानने का बहुत शौक था। तालाब के किनारे उनको एक मकड़ा मिला। एक बांस ले उस पर उन्हींने उस को चढ़ा लिया और जहां तक बना हाथ बढ़ा कर जल में बांस को सीधा गाड़ दिया और बैठ कर देखने लगे कि क्या करता है।

मकड़ा पहले बांस ही पर जल तक उतरा। जब वहां से भागने का मौका न मिला तो फिर ऊपर गया इसी तरह तीन चार बार ऊपर नीचे बांस के चारो ओर घूम कर भागने की जगह न देख वह ऊपर जाकर खड़ा हो गया। थोड़ी देर के बाद उसने महीन तागे की एक पोलिया निकाली जिस की लम्बाई इतनी थी कि बांस से तीर तक पहुंच सके। इसके बाद एक ओर उस बांस में फंसा कर छोड़ दिया। डोरा हवा में उड़ने लगा जब हवा तीर की ओर की चलने लगी तब धीरे धीरे डोरे ही से उतर कर कुछ देर हवा ही में लटकने के बाद तीर पर उतर घर चला गया।

दीमक ।

एक और भी छोटा जानवर होता है जिसको मकान बनानेकी ऐसी विलक्षण बुद्धि है कि उसका वर्णन किये बिना रहा नहीं जाता ।

वह और कुछ नहीं सिर्फ़ अफ्रिका की दीमक है; हम लोगों के देश में जैसे सफ़ेद सफ़ेद ये कीड़े होते हैं यह भी वैसे ही पर अपना खोता अजीब बनाते हैं। यह खोता दस बारह फुट ऊंचा और शिवाले के ढब का बनाते हैं। उन में भी एक जाति के यही कीड़े पास ही पास और ऐसे मज़बूत मकान बनाते हैं कि अपनी मामूली ऊंचाई के आधे ही तक पहुंचते हैं तो लोग उस पर खड़े हो जाते हैं और कुछ नहीं बिगड़ता। मिस्टर स्मिथ मैन कहते हैं कि चार आदमी एक बार उस पर चढ़ गये—इसी से समझना चाहिये कि कैसा मज़बूत वह खोता होता होगा।

हम लोगों के देश में जिस चीज़ का बनता है उससे वहां के खोते में बहुत भेद है। बालू और पांकी इसी को मिला कर उनका खोता बना रहता है और देश की ऋतु ऐसी अच्छी होती है कि उस पर तुरत ही घास जनम जाती है और दूरसे घास का पुंज सा मालूम होता है। क्या भीतरी और क्या बाहरी दोनों बनावट को ख़याल करने से और बीवर के घर का ख़याल करनेसे बहुत ही भेद मालूम होता है। साहब अन्दाज़ करते हैं कि यदि आदमी की मामूली ऊंचाई ६ फुट समझी जाये तो दीमक का खोता और दीमक में वही हिसाब मालूम होगा कि जो मनुष्य और बड़े से बड़े मकान की चौगुना करनेसे जैसा मालूम होगा। बाहर का ख़याल करनेसे तो यही अचरज जान पड़ता है कहां इतना छोटा कीड़ा और कहां इतना बड़ा खोता।

भीतर की बनावट को ख़याल करनेसे और भी ताज्जुब होता है मनुष्य के अकल की बराबरी होने में थोड़ा ही रह जाता है। सब भीतर का हाल कहां जाये तो नक़्शा बनाना पड़ेगा और बहुत बात बढ़ जायेगी पर एक बात कह दी जाती है। उसमें दो खंड होता है एक ऊपर का और एक नीचे का, और दीवार में चारो ओर सीढ़ी सा रहता है जिसमेंसे

होकर उसी के उस भाग में जानेका रास्ता है जो भंडार सा रहता है या जहां अंडे उनके रक्खे रहते हैं।

घुम घुमौआ राहें वे जिसमें न जाना पड़े इसलिये खोते की ज़मीन से छत तक एक तरह का पुल सा बना लेते हैं जिसमें झट ऊपर पहुंचने का सुभीता होता है। वहां पहुंचने पर हर भाग में जाने के लिये वहींसे राह लगी है। इस ढंग से आहार की सामग्री और अंडे को ढो कर बहुत घूम कर नहीं जाना पड़ता।

मधुमक्खियों में कोई रानी रहती है कुछ काम नहीं करती कोई काम ही करती है इसी तरह ये भी अलग अलग दरजे में बटे रहते हैं पर इसके अलावे एक दर्जा इन में ऐसा है जो किसी में नहीं देखने में आया। उनका नाम साहब ने सिपाही या चौकीदार रक्खा है। काम करनेवाले दोमकों की अपेक्षा उनकी गिनती बहुत ही कम होती है जैसे सौ में एक इसी हिसाब से सिपाही रहते हैं। उनका काम यही है कि खोते पर कोई हम्ला करे तो उसे बचाना। उनको लम्बे लम्बे और पतले पतले कल्ले होते हैं। जब क्रोध में आकर काटते हैं तो चाहे हबशी हो या जो हो सब भागते हैं—अंग्रेज़ों को पायतावे के ऊपरसे भी उनके काटने से बहुत खून बहता है। किसीने थोड़ा भाग उस खोते का तोड़ कर देखा था कि उस वक्त में उनकी कैसी दशा होती है वही लिखते हैं कि—एक सिपाही बाहर आकर देखता है कि शत्रु गया या है और किधर से हम्ला हुआ है। उसके बाद दो तीन और निकल आते हैं इसके बाद झुंडको झुंड निकल आती है और जब तक हम्ला होता रहता है तब तक उनकी गिनती बढ़ती ही रहती है। उस समय वे बड़ी चंचलता में पड़ जाते हैं। थोड़ेसे मकान में इतना शोर करते हैं जो २ या ४ फुट से सुन पड़ता है। जब हम्ला रुक गया तब वे सिपाही भीतर चले जाते हैं और जल्द ही निकल आते हैं। साथमें तब उनके साथ एक झुंड रहती है जिनका नाम मज़दूर रक्खा जा सकता है। जहां खोता टूटा रहता है वहां तुरत कीचड़ लेकर सब मौजूद हो जाते हैं और टूटा भाग तुरत मरम्मत कर लेते हैं। चौकीदारी के काम के अलावे मालूम होता है कि

वह ओवरसियरका भी काम करते हैं क्यों कि एक एक की तेनाती कसी या आठवीं मज़दूरों पर रहती है। एक जिसे सेनाध्यक्ष कह सकते हैं दीवार के पास खड़ा रहता है जहां उसने खोते की दीवार पर चोट दिया कि सब के सब जो भीतर रहते हैं सिसकारी की आवाज़ में जवाब देते हैं और और मज़दूर उस आवाज़ को सुन कर दूने उत्साह मे काम करने लगते हैं।

लाक्षा (लाह)

करुणा मय परमेश्वर ने अपने विश्वराज्य में कितने प्रकार के कीड़े सिरजे हैं कौन उसकी गिनती कर सकता है ?

आज लाह नामक छोटे कीड़े का हाल कहते हैं इसी कीड़े के द्वारा लाह या लाख जिसकी चूड़ियां बनती है जो चीठी पर चपकाई जाती है प्रस्तुत होती है।

बिहार प्रान्त में ये कीड़े बहुत से स्थानों में देख पड़ते हैं। ये बड़े बड़े वृक्षों का आश्रय लेकर रहते हैं। पीपल, बड़, पलाश, बबूल आदि पर इन कीड़ों को बहुतों ने देखा होगा।

जिन पेड़ों पर इनका बास हुआ वह थोड़े ही दिनों में नष्ट हो जाता है क्यों कि लाह का कीड़ा सब वृक्षों की जड़ में या और बड़े भाग में नहीं रहता, वृक्ष की फुनगी की छोटी छोटी डालों में या पत्तों के नीचे संकीर्ण स्थानों में रहा करता है। इनही के बास स्थानों से लाह तइयार होती है। लाही लगी हुई डालों को बराबर तोड़ते जाने से वृक्ष कय दिन बच सकता है ?

और समयों की अपेक्षा साल में दो बार ये कीड़े बहुत बढ़ते हैं। जब वे बढ़ते हैं तो उस समय तो बहुत छोटे छोटे, लाल लाल एक तरह के कीड़े से देख पड़ते हैं। उनमें से एक कीड़े की अलग देखना मनुष्य के लिये सहज बात नहीं है। पर जब लाखों लाही एक जगह अपना बास स्थान बनाती है, उसी समय उनका बास स्थान देख पड़ता है चैत में जो बास स्थान ये बनाते हैं लोग उनको जेठ के महीने में तोड़ कर उससे लाह बनाते हैं इस लिये उसका नाम "बैसाखी लाह" कहलाता है। पर एक प्रकार के और कीड़े होते हैं उनका

नाम "रंगीन लाही" है। भादो में लाह का कीड़ा जो वास स्थान बनाता है उसे कार्तिक में तोड़ कर जब बनाया जाता है वही रंगीन लाह कहलाती है। इसका दूसरा नाम कार्तिकी लाह भी है। बैसाख वाली से इसमें रंग ज़्यादा रहता है।

जो हो, पहले कहा गया है कि साल में दो बार इनका वंश बढ़ता है। जब वे वास स्थान बनाते हैं तो उसके तीन महीने बाद उसमें से निकलते हैं। उस समय लोग कहते हैं कि "लाह फूटा"। पर फूटे हुए वास स्थान से लाह नहीं तइयार होती इसी लिये फूटने के पहले सब इकट्ठा किया जाता है। अब यह सुन कर और भी विलक्षण मालूम होगा कि उन कीड़ों के सहित जो वास स्थान रहता है उससे लाह तइयार होती है पर उन कीड़ों का जीवन नहीं नष्ट किया जाये तो लाह न हो। लाह का काम करने में बहुत से जीव नष्ट होते हैं इसी लिये बहुतों की इस काम के करने में प्रवृत्ति नहीं होती। पर अपनी सीमा के भीतर जिन वृक्षों पर इन कीड़ों को देखते हैं उनकी डाल शाखा साल में दो बार तोड़ कर इस काम के करने वाले कोठी वालों के हाथ बेच देते हैं। जिस कोठी में लाह का काम बहुत होता है उसे लाह की कोठी कहते हैं।

पश्चिम बंगाला में कई कोठियां इसकी हैं, सब में बैसाखी लाह उत्पन्न होती है। दो प्रकार के लाह के अलावे और एक तरह की लाह होती है उसको कुसुम लाचा कहते हैं। यह सब स्थानों में उत्पन्न नहीं होती, जहां कुसुम वृक्ष होता है वहीं यह लाह भी पैदा होती है। कुसुम कोई फूलका वृक्ष नहीं है यह एक तरह की जंगली लकड़ी होती है। पश्चिम में मिर्ज़ापुर झालदह आदि स्थानों के निकटवर्ती वन जंगलों में बहुत से कुसुम वृक्ष देखने में आते हैं इस लिये उनहीं दोनों स्थानों में बहुत कुसुम लाचा होती है। इसका दूसरा नाम "मिर्ज़ापुरी लाह" है।

जिन प्रदेशों में बैसाखी या रंगीन लाह, मिर्ज़ापुरी लाह उत्पन्न होती है उसके कीड़े बचा कर रक्खे नहीं जाते आप ही आप ये वृक्ष

से उत्पन्न होती हैं। और एक वृक्ष से दूसरे पर चले जाते है। यह गमनागमन भी बड़ा अद्भुत है। जब ये कीड़े वास स्थान से फूट कर निकलते हैं तभी वृक्ष के एक भाग से दूसरे में जाते हैं। जाने के समय यदि उसी वृक्ष की डाल या शाखा पर किसी पक्षी को बैठा हुआ देखते हैं तो तुरत धीरे धीरे जाकर उस पक्षी के पैर में सट जाते हैं पक्षी को खबर नहीं रहती है वह जब दूसरे वृक्ष पर गया तो पैर छोड़ कर वृक्ष में लग जाते हैं। ये कीड़े न उड़ ही सकते हैं और न एक स्थान से दूसरे में शीघ्र जा ही सकते हैं इससे यह ढंग न करें तो उनको काम ही न चले।

इन कीड़ों के मुंह में एक प्रकार की लार होती है उसीसे अपना वास स्थान बनाते हैं और वृक्ष की छाल खा कर जीवन धारण करते हैं पक्षी के पैरों की सहायता से बहुत से वृक्षों पर चले जाते हैं। पर जिस वृक्ष पर पहुंचे उस के सब अंश को छोटी छोटी डाल और शाखा के नीचे वास स्थान बना कर रहते हैं। जब स्थान भर जाता है और जगह नहीं मिलती तो दूसरे वृक्ष पर चले जाते हैं। इससे यदि एक वृक्ष पर इनका डेरा पड़ा तो काल क्रम से वहां के सभी वृक्षों को ये खा लेते हैं। इसी लिये इन देशों में दूसरी फ़सल के लिये इन कीड़ों को बचा कर नहीं रखना होता पर आसाम में इसे रखना पड़ता है कहना चाहिय कि वहां इसकी खेती होती है।

आसाम वाले, लाह के कीड़ों के फूट कर बाहर निकलने के पहले ही उनको संग्रह कर किसी बरतन में रखते हैं। और उस पर एक टोकरी ढक देते हैं। उस टोकरी पर टुकड़ा टुकड़ा करके महीन कपड़ा ओढ़ा देते हैं। जब लाह फूटा तो कीड़े कहीं भागने की जगह नहीं पाकर टोकरी के छिद्रों से निकल उसी ओढ़ाये हुए कपड़े में आश्रय लेते हैं। जब बस्त पर आ गये तो उनहीं टुकड़े कपड़ों को लेकर जिस वृक्ष पर उनको बसाना हुआ उसी पर एक टुकड़ा बांध आते हैं। इसी तरह वहां लाहा के कीड़े एकपेड़ पर से दूसरे पर पहुंचाये जाते हैं।

सीप।

अमरिका के मध्य पनामा डमरू मध्य के दोनों ओर पहले इतने मोती निकलते थे कि एक वर्ष में सिविल नगर में साढ़े आठ मन मोती आया था। उन दिनों में वह प्रान्त स्पेन देश के आधीन था। कोई कोई मोती उनमें के बहुत सुन्दर थे।

धन के लोभ से स्पेन वालों की निर्दयता इतनी बढ़ गई कि वहां वालों का प्राण उन लोगों ने तृण समान समझा और उनके देश को उजाड़ कर दिया। उन लोगों को पूरा आहार नहीं मिलता था और ज़बरदस्ती उनसे सीप निकलवाई जाती थी। बहुतों की यह दशा हुई कि जो डूबी उन लोगोंने लगाई तो फिर पता न लगा नीचे ही नीचे भूखे मगर उनको खा गये। बराबर तीर परसी मोती निकालने के कारण वहां की बिलकुल सीप खतम हो गई। तब और थल स्पेन वासियों के लोभ से बिलकुल उजाड़ हो गया।

लेकिन ऐसा एशिया में नहीं है। ईरान की खाड़ी में अभी भी सीप से मोती निकाली जाती है। सालमें जिससे पचीसों लाखकी आमद होती है।

सिंहल द्वीप (सिलोन) में खूब सीप निकाली जाती है इस टापू को रोम के प्लीनी ने बहुत बढ़ चढ़ कर बड़ाई की है। यहां तक कि उसे खालिस सोना और बेजोड़ मोतियों में पूर्ण बतलाया है।

किस साल कहां से सीप निकाला जावेगा यह मुक़र्रर है उस टापू और भारतवर्ष के बीच में स्थान ठीक किये हुए हैं। इन स्थानों से मुख्य सिंहल द्वीप से दस कोस पर है। साल भर वीरान रहता है पर फ़रवरी और मार्च के महीने में मोती के रोज़गारी आते हैं। सभी देशके आदमी क्या काले, क्या गोरे, क्या अमीर, क्या ग़रीब, भांति भांति की भाषा बोलने वाले बहुत से देशों से आ कर तीर पर झुन्ड के झुन्ड घूमा करते हैं और सभी मोती की खोज में रहते हैं।

कोई रोज़गार की नीयत से कोई तमाशा देखने की लालसा से आते हैं उस भीड़ में तीन तरह के लोग रहते हैं कुछ सौदागर, कुछ मुसाफ़िर और कुछ सीप निकालने वाले मज़दूर।

शाम के वक्त बंदूक छूटी कि डेंगी जल में छोड़ी जाती है हर एक में बीस आदमी रहते हैं—दस खेवने के लिये और दस गोता लगाने के लिये। पांच पांच आदमी एक एक दफ़ा गोता लगाते हैं। रात बीतने पर भोर होते ही गोता लगाना शुरू होता है।

हर एक नाव में पांच बड़े बड़े लाल पत्थर रहते हैं। उनमें छेद कर रस्सी बंधी रहती है। हर एक गोता खोर अपना दहना पैर पत्थर पर रख और दहने हाथ से रस्सी को पकड़ पत्थर के बोझ से तुरत जलमें चला जाता है। सीप रखने के लिये या तो टोकरी या जालीदार थैली अपने गले में बांधे रहता है। जों ही वह पेंदेमें पहुंचा जितनी सीपें मिलीं झट पट इकट्ठा कर लेता है। जानवरों के डरसे देर तक जल में नहीं रहता। बस एक दो मिनिट में दहने हाथ से रस्सी को जहां उसने ज़रा हिलाया कि लोग उसे ऊपर नावमें खींच लेते हैं।

दिन भर में एक आदमी ४० | ५० गोते लगाता है। और हर दफ़े सौ सौ सीप लाता है। पर एक ही दो चार पांच मिनिट जल के भीतर रहनेमें मनुष्य के शरीर की बड़ी भयानक गति हो जाती है। जब वह बाहर निकलता है तो नाक मुंह और कान से सिर्फ़ जल ही नहीं पर खून कभी कभी निकलने लगता है। इसकी वे कुछ भी पर्वा नहीं करते। डर उनको रहता है तो सिर्फ़ एक मगर वा घड़ियाल ही का रहता है।

जब जुआरका समय होता है फिर तोप छूटती है तब झंडा उड़ाते अपना सजाना लिये नावें तीर पर लौट जाती हैं। सीप जीती रहती है इस से बंद रहती है और इसको चीरनेसे मोती के नुक़सान होने का भय रहता है।

एक गड्ढा खोदा जाता है उसमें चटाई बिछाकर सीपें उसी में डाल दी जाती हैं। सड़ने पर आप ही आप उनका ढकना खुल जाता है इस से सहज में मोती निकल आती है।

गौरइया।

यह भी एक बड़ा अचरज है कि चिड़िया पेड़ों पर रहने के बदले मकानों में रहना भला समझे। कीड़े मकोड़ों के बदले जो अन्न हमारे यहां हो—रोटी के टुकड़े, भात, चावल दाल खाना पसंद करे।

तौभी यह बात गौरइया में देखने में आती है कि बस्ती ही में रहना इनको पसंद है। यह ऐसी ढीठ होती हैं कि हमलोग आते जाते रहें तौ भी मुंह में उड़ कर इधर से उधर चली जाती हैं और फिर तुरत ही पहुंच जाती हैं। ज़रा भी नहीं डरतीं।

सब कोई जानते हैं कि ये छोटी मोटी चंचल और शोर करनेवाली होती हैं यद्यपि इनके पर रंगीन और बहुत बढ़िया नहीं होते तब भी अपनी अवस्था में पूरी संतुष्ट प्रसन्न और मगन रहा करती हैं।

हमेशा देखा गया है कि ये अकेली नहीं रहतीं बल्कि अपने झुंड में रहा करती हैं और एक ही जगह बसेरा देती हैं लेकिन ज़रा कुछ हुआ कि झट उड़ कर अलग अलग जाती हैं। इनके घोंसले मोटी मोटी चीज़ों के होते हैं जैसे बिचाली, दरख़्तों की सूखी टहुनिया, चीथड़े, तागे का टुकड़ा पर या और भी जो कुछ मिल गया। घोंसले की जगह इनकी बहुत साफ़ होती है—छप्पर में दीवार की दरार में पत्थरों में खोता बनते हैं। अहर की रहनेवाली गौरइया के खोता बनाने की जगह का कुछ ठिकाना नहीं है।

नैनीताल में दो ग़रीब औरतें रहती थीं उनकी गौरइयों को देखने में बड़ा आनन्द और सुख मिला था। उनका घर वहां की एक गली में था और वे कोठे पर रहती थीं। उनके कमरे में एक ऐसी खिड़की थी जहां से और घरों की छत मालूम होती थी! भला वैसी खिड़की से उनको क्या खुशी मिलती होगी। पर नहीं, वहीं उनको बड़ी खुशी मिलती थी। और वह भी इनही गौरइयों से।

एक औरत बहुत बूढ़ी थी पर इधर उधर चल सकती थी। दूसरी बहुत छोटी थी पर पैर उसके बेकाम थे इससे सदा चारपाई पर पड़ी रहती थी।

जब वह बुढ़िया खिड़की से झांकती थी तो उसे बहुत सी गौरइया कुलेल करती देख पड़ती थीं उनका कूदना फुदकना उड़ना बैठना देखने में उसका जी पहरों लग जाता था ।

दूसरी भी उनकी आवाज़ सुन बहुत खुश रहती थी बल्कि उसने अपनी सारणाई तमाशा देखने के लिये खिड़कीके पास रखवा ली थी ।

जब जाड़ा आया, चिड़ियों को ठंढा मालूम हुआ और खाने को कहीं नहीं मिलने लगा तो वेही दोनों खिलाने लगी । छोटी औरत खाने का बनाती और बुढ़िया खिड़की में रख देती थी झुंड की झुंड खिड़की के पास देख वह बहुत प्रसन्न रहा करती थी ।

काग ।

काग बड़ी गम्भीरता से काली पोशाक पहने बैठा रहता है । जिस वक्त वह चुप चाप बैठा रहता है तो कुछ न कुछ सोच रहा है ऐसा जान पड़ता है । कभी कभी उसके अनुसार काम करता भी देख पड़ता है ।

बिलायत के हाइडपार्क में पुल के पास एक काग कूदा फिरता था उसे सब जानते थे । एक मेम उसी पुल पर से एक दफ़ा जा रही थी । संयोग से उसके हाथ की पहुंची गिर पड़ी जब वह लेने के झुकी तो उसके हाथ न मिला । वही काग पास ही खड़ा था, जो कुछ हुआ उसने सब देखा । मेम के झुकने के पहले ही अपनी चोंच में उसने उठा लिया और पलक के मारते नज़र से बाहर हो गया ।

थोड़ी देर में लौट आया पर पहुंची उसके पास न थी । जहां वह अपना खज़ाना रक्खा करता था वहीं रख आया था किसी को पता न लगा ।

यह पक्षी अपने नातेदार कउवे से बड़ा होता है । मज़बूत चोंच और चंगुल से शिकारी चिड़ियों ही में इसकी गिनती हो सकती है । इसका रंग बिलकुल काला होता है पर नीले पन की आभा उसके साथ वैसी ही होती है जैसे इस्पात लोहे के रंग की होती है ।

यह बहुत ही चालाक और बहुत ही होशियार होता है। इसको सहज में नहीं फंसाया जा सकता क्यों कि सदा सतर्क रहा करता है। जब कभी लोमड़ी, भेड़िया या और किसी को फंसाने के लिये फंदा लगाया जाता है तो बहुत जी लगा कर चुप चाप देखा करता है। जब तक कोई बेवकूफ जानवर नहीं फंस लेता तब तक धीरज और गंभीरता के साथ बैठा रहता है फिर अवसर देख कर वही चारा खा जाता है। यह दूसरों चिड़ियों का खोता भी लूट लेता है।

कउवे की तरह काग भी मुर्दा और मरे जानवरों को खाता है इसी लिये अपवित्र भी समझा जाता है। जब जो मिल जावे खा लेता है किसी एक आहार के आधीन नहीं रहता। बकरी, चिड़िया, अंडा—यह सब भी उसको बुरा नहीं मालूम होता। स्वभाव ही से काग कुछ न कुछ बुराई करता ही रहता है इसी से अपने मित्र को भी दिक् किया करता है।

एक ज़मीदार को चिड़ियों का बहुत शौक था। उसने एक काग भी पाला था। बड़ा एक कुत्ता भी पला हुआ था। कुत्ता और काग दोनों में बड़ी मित्रता हो गई थी। तो भी वह कुत्ते के साथ चुहपना किया करता था। गर्मी में खाने के बाद जब कुत्ता छाया में लेट कर अपना हाथ पैर सीधा करता था तो काग भी पास ही मानो अगोरने को बैठा रहता था।

जब उसकी आँख लगी कि एकाएक बिजली की तरह काग कुत्ते को ठोकरा देता था। कुत्ता उठ कर गुर्राता था कि और चारो ओर देखता था। और पास ही काग इस गंभीरता से बैठ रहता था कि कोई नहीं जान सकता था कि इसी का दोष है।

फिर जब कुत्ता सो जाता तो तुरत एक ठोकर देकर काग उसको जगा देता जिससे वह चिड़चिड़ा जाता। इस बार वह कागकी ओर देखता। पर काग पर उसे क्यों सन्देह हो? उसका तो एक पर भी नहीं डोला था।

यह खेल बहुत देर तक होता रहता था अन्त को कुत्ता घबरा कर सोने का विचार छोड़ दूसरी जगह चला जाता।

हम हम करने वाली शहद खोरी चिड़िया ।

वृक्ष की छाया में एक डाल पर छोटा सा अंडा लटक रहा है । हवा में झूल रहा है, पर कैसा इनका और साफ सुथरा है । उसमें दो अंडे मटर के बराबर और बर्फ से उजले रक्खे हुए हैं।

थोड़ी देर तक ठहर कर देखो कि किस चिड़िया ने यह खोता बनाया है। उसके आने में देर नहीं होगी क्यों कि वह सिर्फ फूलों का रस ही चूसने को गई है। कैसा सुहावना स्थान है! हवा फूलों की सुगन्ध से भरी हुई है। क्या घना बन है छोटा बड़ा हर तरह का अजीब अजीब फूल चारो ओर खिला है । कोई मधुमक्खी से, कोई तितली सरीखे फूल हैं, ये फूल हमारे देश के से गर्म देशों में बहुतायत से होते हैं पर इतने इंगलिस्तान में नहीं होते।

देखो वह चिड़िया आ रही है । इससे छोटी दूसरी चिड़िया नहीं होती। इसकी देह अखरोट से बड़ी नहीं है । पंख इसके अत्यन्त सुन्दर है वर्णन नहीं हो सकता। सिर पर हरे रंग की कलगी है जो टूर से तारे की तरह चमकती है। बदन पर का रंग कहीं हरा, कहीं सोनहला, कहीं बैंगनी है ।

आस पास में ऐसी चिड़िया बहुत हैं ये गर्म मुल्कों में, अमरिका और हिन्दुस्तान के जंगलों में बहुत रहती हैं। इनके उड़ने से हम हम की बहुत आवाज आती है इसी लिये अंगरेजों ने इसका नाम हमिंग चिड़िया रक्खा है। इनके रहने से कुंज और बन बहुत ही सुहावना रहता है। छोटा धनुष सा रंगीन शरीर इधर उधर चमकता उड़ता रहता है। उनको देखने से जी कभी नहीं ऊबता यही जी चाहता है कि देखा करें।

जब मादीन अंडा सेवते सेवते थक जाती है तो नर सेवता है तब वह उड़ कर जंगलों में जाकर उन फूलों पर बैठती है जिनमें शहद रहता है।

हवा में इतना जल्द डैने हिलाती है कि कुछ देख नहीं पड़ता। वह अब कीड़े मकोड़े के ध्यान में लगी है, फूल के नीचे ही बहुत हैं।

देखते ही लम्बी जीभ निकाल सब को चख जाती है, जीभ उसकी ऐसी रहती है कि सब चीज़ें सट जाती है। एक तरह का लासा जीभ में रहता है। भर पेट कीड़े मकोड़े खाकर वह फूलों में से शहद निकाल उसके बाद चाट लेती है और फिर अपने घोसले में चली जाती है।

तोता या सुग्गा।

हमारे देश के अलावे यह पक्षी दक्षिण अमरिका के जंगलों में बहुतायत से होता है। ये अपना खोता जंगलों ही में बनाते हैं क्यों कि गर्मी में शीतल छाया प्राप्त होती है। अगर जंगलों में जाने का किसी को मौका होता है तो सिर के ऊपर डालों पर उनकी चहचहाने की आवाज़ ऐसी सुन पड़ती है कि ताज्जुब हो जाता है कि बात क्या है। ऊपर सिर उठा कर देखने से बहुत से तोते देख पड़ते हैं।

ये विशेष करके अन्न और फल बहुत खाते हैं। जंगलों में उनके लायक़ बहुत फल मिलते हैं। चोंच से ये कड़ी कड़ी चीज़ें काट डालते हैं। धार उसकी तेज़ और टेढ़ी रहती है। सच पूछो तो चोंच छुरी का काम करती है जो चीज़ चाहे अपने पैर से पकड़ लेता है। जो काम आदमियों का हाथ से चलता है वही उसके पैर से होता है सब उँगलियां उसकी अलग अलग मनुष्यों ही की सी होती हैं। जोड़ उसके इतने लचदा होते हैं कि जिधर चाहे उधर उनको वह झुका सकता है। यदि ऐसा न होता तो पेड़ पर बैठना उसको कठिन होता। पहले अपनी चोंच से डाल पकड़ लेता है और तब ऊपर अपनी को खींच पैरों से डाल पकड़ लेता है इसी तरह वह अक्सर चढ़ा करता है।

इनको नहाने का बहुत शौक़ रहता है। उड़ कर किसी निर्मल जल के कुंड या सोते पर चले जाते हैं और जी भर कर आनन्द उठाते हैं, गोता लगा लगा कर परों पर जल छींटते हैं। स्नान से जब जी ऊब जाता है तो धूप में बैठ परों को सुझराते और सुखाते हैं।

दो पहर को धूप बहुत कड़ी होती है तब मनुष्य छाया में आकर बैठते हैं और सोते हैं। चहचहाना बंद हो जाता है जंगल में सन्नाटा छा जाता है पर तीसरा पहर को फिर बेहिसाब शोर करते हैं।

फलों का गूदा खा कर फिर स्नान करने को जाते हैं परों को दुरुस्त करते हैं और रात के लिये आराम लेते हैं दिन को जैसे सोये थे उस तरह रात को नहीं सोते। रात को पेड़ों के खोखले में जाकर सो रहते हैं। जितने उसमें घुस सकते हैं घुस जाते हैं बाकी छाल में अपने चंगुल और चोंच फंसा कर लटक कर सो रहते हैं।

मादीन अपने अंडे इनहीं पेड़ों के खोखले में देती है और खोता नहीं बनाती। झुंड के सभी अपने अंडे उसी पेड़ में देती है।

यह पक्षी बात करना बहुत जल्दी सीख लेता है दोहा चौपाई अच्छी तरह पढ़ता है।

SEIGEL'S SYRUP

सब जादूई तमाशे को हटा देती है। न० २

"यह आदमी देखो, नशे में है" मैं जब रास्ते में अथड़ाता था तब मेरे विषय लोग ऐसा बोलते थे, और पहिले देखने से आपका मत भी ऐसाज होगा परंतु सब भूल करते थे, मैं रास्ते पर हर वक़्त सीधा चल सकता नहीं था, उसका कारण सुनने से आपको खुशी होगी उस वास्ते मेरी ज़िन्दगी का थोड़ा बर्णान करनेकी ज़रूर है ।

जिस वक़्त की बात करता हूं उस वक़्त तक दूसरे मनुष्य निरोगी और आनन्दी है तैसाज मैं भी था, परन्तु पांच अथवा छ बरस पर मेरी तबियत बिगड़ी ऐसा मालूम पड़ा, असलकी क्षुधा कमी हो गई। अन्नकी ज़रूर थी परंतु जब खानेका विचार करता था तब पेट यह विचार विरुद्ध होता था अच्छा गोश और रोटी के बदले सीसे की माफ़िक़ खोराक पेटमें वज़नदार मालूम पड़ता था, और सोने का वक़्त गुज़र जाने से अपने को सुस्ती होती है तैसेही मुझको होती थी पीछेमें जाना कि रात्रिमें निद्रा बदल गई है शरीर इलका और आरोग्य होने बदल अफीम और निद्रा जनक औषधि खाया होवे तैसा शून्य हो जाता था। पीछेमें देखा की मेरी जिह्वा पर थर था। और रोज़गारमें उद्योग करनेकी अभिलाषा उड़ गई बाजू और पीठमें दरद होता था, और कभी भुजाओंमें भी होता था, दर्पण में देखा तो मेरी आंखें पीली थीं और दांतों पर चिकना पदार्थ था, और मुखमें बे स्वादी थी, जो पानीसे धोने से अथवा दूसरे कोई उपाय से नहीं मिटती थी।

बहुत बंध कुष्टी और खराब उडकार आते थे, ऐसे समय में कैसा दुःखी था उसकी विस्मृति होनेवाली नहीं, कबु दुर्बलता से और कबु चक्करसे खुले रस्ते पर अथड़ाता था और ज़मीन पर गिर जाता था परंतु खड़ा रहने का प्रयत्न हो सके इतना करता था, और चक्कर शीघ्र मिट जाती थी और फिर उस रोज़ नहीं आती थी, ऐसी मेरी अवस्था थी मित्र और वैद्य जो औषधि बोलते थे वह मैं खाता था परंतु दिन प्रति दिन दुर्बलता इतनी बढ़ती गई कि दुनियामें रहने में जितना राज़ी था उतना आज दुनियां छोड़ने में था।

मुझे आराम कैसे हुआ वह जानने का आपका हक है इस वास्ते थोड़े शब्दों में कहता हूं। लंडन का एक सद गृहस्थ के पास मेरा वृतान्त कहा तब वह बोला कि "मदर सीजल के क्युरेटिव सिरप" से तुमको बहुत फायदा होगा। उसके कहने पर विश्वास नहीं आया, परंतु एक बाटली खरीद करी और थोड़े दिन में मुझको टेका मिला। अन्न अच्छी तरह खाने लगा और निद्रा भी आने लगी। इस से मेरे को ऐसी खुशी भई कि एक चार बाटली पी गया तब तक छोड़ा नहीं। पीछे मैं आरोग्य हुआ, यह चमत्कार माफिक मालूम पड़ेगा ऐसा मैं जानता हूं, परंतु गोस्पेल माफिक सत्य है, तन्दुरुस्ती फिर आरोग्य होनेसे मुझे अत्यंत आनन्द हुआ, हर एक मनुष्य के माफिक कभी अजीर्ण होता है तो यह औषधि थोड़ी पीने से थोड़े घंटे में आराम हो जाता है इतनी तरह से रोग दूर होता है कि मैं जादूई तमाशे देखे हैं वह याद आते हैं, मात्र "मदर सीजल का क्युरेटिव सिरप" की क्रिया में बिलकुल ढोंग नहीं है। मेरे अनुभव के लिये मैं जानता हूं कि बहुत काल की बदहजमी और अजीर्ण चाहे ऐसा खराब होवे तो भी मिट जाता है।

आपका अति आभारी

जे० जी० भीम्सन।

२१, हेनोवर स्ट्रीट, न्युकासल-अन्डर-लाइम,

स्टाफर्डशायर इंग्लंड

B. T.

चार घंटे की देर हो गई। न० ३

"ओ, ईश्वर! चार घंटे गये उसको पीछे बुला सकूं तो कैसा अच्छा देखो एक पल में मनुष्य कैसी विपत्ति में पड़ जाता है।"

मिस्टर जेम्स कर्टिस और मिस्टर सी० एस० बेनेट दोनो सान फ्रान्सिसको के वतनी थे और दिलजान दोस्त थे, गये साल की उष्ण ऋतु में परस्पर का दोष निकाल के पहिली वक्त झगड़ा किया। विचार वान लोगों ने दोनों को समझाया परंतु बनी न बनी हो सकती नहीं।

स्मरण शक्ती की स्लेट पर इसकी नोंध हो चुकी थी। परस्पर का समागम बने तहां लग नहीं करते थे। परंतु पड़ोसमें रहने से कोई समय मिलना भाग्य होता है। दोनों की भेंट रास्ते में भई। झगड़ा फिर शुरू हुआ कठिन शब्द झगाटे के साथ निकले और क्रोधके आवेश में ज्ञान भूल गया था ऐसा जो कुर्टीस उसने बंदूक खैंच के बेनेट को तत्काल गोली से मार डाला। थोड़े वक़्त पीछे अपना तिरस्कार और अफ़सोस सहित ऊपर लिखे हुए शब्द बोला। परंतु कैसे निरुपयोगी, कैसे निरास कैसे व्यर्थ।

परन्तु क्या प्रत्न में विपत्ति आती है ऐसा कुर्टिस का बोलना सत्य है? बारंबार यह सत्य दिखता है, परंतु क्या इस से विशेष गुप्त बात आगे देखने में न आवे ऐसी कोई नहीं है? विपत्ति कौन सी जात की है वह कुछ उपयोग की नहीं है। इस वास्ते इसी तत्व पर दूसरी विना है उसका ख़्याल करेंगे।

एक विचारवान स्त्री लिखती है:—सन १८८० के ओक्टोबर मासमें मुझे ऐसी बिमारी हुई कि आराम होनेकी आशा नहीं थी, और बिछौने पर सोने की ज़रूरत पड़ी होगी के प्याले में पतली खोराक मुझे खिलाते थे, कारण कि बैठने की शक्ति नहीं थी। मेरी छाती धड़कती थी उसकी आवाज़ तकिये पर होती थी, और भाले के प्रहार समान वेदना होती थी, केवल निराधार हो गई और श्वास लेने में बहुत कष्ट होता था। एक वैद्य ने महीना रोज़ दवा की परंतु दुर्बलता पढ़ती गई कभी रात समय ऐसी बीमार हो जाती थी कि प्रातः काल तक बचने की उसको फ़िक्र रहती थी। सलाह पूछने वास्ते दूसरे वैद्य को बुलाया और दोनो का ऐसा मत हुआ कि मेरी हालत बुरी है सजीवन रखनेके वास्ते मुझे मदिरा पिलाते थे, मेरा पति और पुत्री निरन्तर मेरे पास बैठते थे जो जो औषधि खाया उसमें से किसी से आराम हो नहीं सका और मैं मरण तुल्य हो गई।

इस वक़्त, क्लीमथ के नज़दीक सोटली गांव है वहां के मिसीस किलिंग ने "मदर सीजल का सीरप" करके औषधि है वह अज़माने का आग्रह किया। मैंने एक शीशी लिया, और थोड़े दिन पीछे शक्ति आवे इतना खोराक हज़म करने को समर्थ हुई, और खराब चिन्ह कमती हो

गये, सीरप की छ शीशी खर्च हुई तब पूर्ण आराम हुआ और अगले तीस बरस में जैसी तन्दुरुस्ती थी उस से अच्छी मालूम पड़ी। इस औषधि से मेरी दो पुत्रियोंका अजीर्ण मिट गया है। कोई सवाल का उत्तर खुशीसे दूंगी।

(सही) मिसीस लुइ जाकसन, विल्डर्स आमेस होटेल, बृनरीड हेमरस्मिथ, लंडन, जनवरी तारीख १४ सन १८८२।

जिस पत्र में से ऊपर का विषय लिया उसमें मिसिस जाकसन और लिखती है कि सन १८८० के औक्टोबर महीने के पहले बीस बरस तक कलेजे में और पेट में वेदना से बीमार रहती थी। मुख में बे स्वादी, मंद क्षुधा, और अल्प खोराक से इंधा होती थी, शून्य और थकावट हो गई थी, और पेट खाली हो गया होवे ऐसा मालूम पड़ता था, छाती धड़कती थी, चक्कर आते थे, और बारंबार रास्ते में गिर जाती थी तब दूसरे का आश्रय ले कर घर को पहुंचती थी।

इस पर से अपने को मालूम होता है कि यह स्त्री की बीमारी का जो कारन बहुत काल चल रहा था उस कारन का परिमाण ऐसा भयंकर हुआ कि वह स्त्री का जीव जोखिम में था, हमेश ऐसा होता है, अपने को कारन की पहचान होवे अथवा न होवे, वैर और धिक्कार के विचार अहोनीश उसके मन में आते थे जिस लिये मनुष्य हत्या होवे ऐसी स्थिति अक्य हुई उस कारन मे कुटिल ने गुनहा किया इस से जुदी जात की बिना स्त्री के रोग की है जिसमें शरीर के दुश्मन अजीर्ण और बदहजमी थी जिसका परिणाम भयंकर हो गया।

सारांश एकही है, बुराईके आरंभकी सम्भाल रखना और अनायास से मर्यादा में रह सके तब तक अटकाना।

E. H.

न० ४

असंख्य मनुष्य को दुःख देनेवाला भयंकर रोग।

रोग के आरंभ में पेटमें बिगाड़ होता है, और सावधान न होनेसे अधिक काल में कलेजे में, मस्ताश्रय में और शरीर के जोड़वाले भागों में

पसर के, सब शरीर में रोग फैल जाती है, जब तक दुःख से मुक्त नहीं तब तक दुःखी अवस्था में आयुष्य व्यतीत करनी पड़ती है, इस रोग को लोग भूख से दूसरा रोग समझते हैं, परंतु पढ़ने वालों को नीचे लिखे हुए प्रश्न पूछने से निश्चय होगा कि अपने को क्या रोग हुआ है, क्या भोजनके पीछे श्वास ग्रहण करने में कुछ कष्ट, इच्छा, और तकलीफ़ होती है ? क्या आलस्य होता है ? शरीर बोझा समान मालूम पड़ता है ? और सोने की इच्छा होती है ? क्या मुख में बे स्वाद और दांत और दांत के चमड़े पर चिकास युक्त पदार्थ प्रातः काल में होता है ? क्या आंखों का रंग पीला है ? क्या जीभ पर थर है ? बाजू और पीठ पर दरद होता है ? क्या कबज़ियत है ? क्या सीधे आसन पर उठने के समय चक्कर आते हैं ? क्या पायखाना अल्प और रंगदार आता है ? क्या खाने के बाद शीघ्र उबाल आते हैं और उसके साथ डकार आते हैं ? क्या छाती बारंबार धड़कती है ? इस नाना प्रकार की चिन्ह एक समय कदापि देखाई नहीं पड़ते, परंतु जैसा जैसा रोग बृद्धि पाता है तैसा तैसा रोगी की बेचेनी बढ़ती जाती है। बहुत दिनों के बाद रोग होवे तो सूखी खांसी और स्वासकी खांसी आती और थोड़े काल पीछे उसके साथ बलगम निकलता है। जब दरद बहुत बढ़ता है तब चमड़े का रंग मैला भूरा हो जाता है और हाथ पैर पर ठंडा और चिकना पसीना होता है। जब कलेजा और मलाशय में रोग बृद्धि पाता है तब संधि का दरद प्रगट होता है, और इमेज़ की औषधि से इस भयानक दरद को बिलकुल आराम नहीं होता। बदहज़मी अथवा अजीर्ण इस रोग का मूल कारण है, और आरंभ में थोड़ी सी उपयुक्त औषधि खाने से यह रोग दूर होता है। रोग की प्रथमावस्था में योग्य उपाय जल्दी करने से अल्प औषधि से आराम हो जाता है, और कभी रोग दृढ़ हो गया होवे तो जब तक रोग का प्रत्येक चिन्ह नाश न होवे, क्षुधा न लगे, और पाचन इन्द्रियां आरोग्य स्थिति में आवे, तब तक योग्य उपाय यत्न पूर्वक करना इस कष्टदायक रोग की सबसे विस्वासी और गुण कारक औषधि "सदर सीज़नका क्युरेटीव सिरप" है। यह औषधि वनस्पति से बनी है और जगत के सब रसायनी

और गंधियों के पास मिलती है। यह "सीरप" रोग के मूल तक पहुंचके शरीर में से रोग की जड़मूल से निकाल देता है।

A, A.

नं० ५

बाढ़कापका चतुर प्रयोग।

अमेरिका का एलची वियेनामें है उसने अपनी सरकार को बाढ़काप का जानने लायक प्रयोग थोड़े दिन पर करने में आया उसका वर्णन भेजा है। वियेना का प्रोफेसर बिलरोथ ने यह प्रयोग किया तब एक आदमी के पेट का एक तृतियांग भाग निकाल डाला था और अजीर्ण यह है कि रोगी को आराम हुआ। ऐसा प्रयोग कभी सफल भया नहीं था। जो रोग वास्ते यह प्रयोग किया वो पेटका भगंदर था। उसके चिन्ह ऐसे होते हैं। क्षुधा क्षीण होवे, पेट में खाली हो गया होवे ऐसी विचित्र वेदना होवे, दांत पर चिकना पदार्थ जमा होता है, विशेषत: प्रभात में, और से स्वादी होती है। यह इज्जा अन्न से मिटती नहीं, परंतु बढ़ती है। चक्षुका रंग पीला हो जाता है और अन्दर बैठ जाती है। हाथ पैर थंड पसीने के लिये थंडे और चिकने हो जाते हैं। सदा थकावट मालूम हो ऐसा रोगी को मालूम पड़ता है और निद्रा से विश्रान्ति मिलती नहीं। थोड़े काल पीछे रोगी का मिज़ाज तंतुविकारी, तामसी, और उदास होता है, और उसके मन में बुरे भविष्य की फिक्र रहती है। खटियासन से जल्दी से उठने लगे तो चक्कर आती है, घुसड़ी मालूम पड़ती है, गिर पड़े नहीं इस वास्ते कोई वस्तु को दृढ़ पकड़ने की फरज पड़ती है। बंध कुष्ट और कोई कोई समय चमड़ी सुखी और गरम होती है। खोटी नाड़ी और जड़ होती है और बराबर फिरती नहीं। थोड़े काल पीछे दरदी अन्न खावे तो खट्टे अथवा मीठे उबाल आके बाहर निकल आता है। बारंबार छाती धड़कती है और छाती का दरद में डूबा है ऐसा रोगी को डर लगता है। आखिरदरदीके पेट की अंतरेन्द्रियों के द्वार बंध होने से पेट में अन्न बिलकुल रह सकता नहीं। यह रोग

भयंकर है तो भी ऊपर लिखे हुए लक्षण वाले रोगी को घबराना नहीं चाहिये कारन कि हज़ार में नवसी निनानवे को पेट का भगंदर नहीं होता परंतु केवल अजीर्ण होता है और उपयुक्त औषधि करने से आराम हो जाता है। इस रोग का सब से निर्भय और उत्तम उपाय "मदर सीजल का क्युरेटिव सिरप" है। यह औषधि वनस्पति से बनी है और जगतके सब रसायनी और दवा खानों में मिलती है। यह "सिरप" रोग के मूल तक पहुंच के जड़ मूल से शरीर में से निकाल डालती है।

S. O.

न० ६

अपनेको मालूम न पड़े इस रीतसे रातके समय चोरकी माफ़िक यह रोग अपने पर चला आता है बहुत मनुष्यों की छाती और बाजूमें और कोई वखत पीठमें दुःख होता है आलस्य और सोने की इच्छा होती है। क्षुधा मंद होती है। पेटपर भारी बोझ होवे ऐसा मालूम पड़ता है। कभी पेट खाली हो गया होवे ऐसा होता है और अन्न से तृप्ति होती नहीं आंखें धस जाती हैं और हाथ पैर शीतल और चिकने होते हैं। थोड़े काल पीछे सूखी खांसी आती है और उसके साथ थोड़े महीने पीछे नीले रंगवाले बलगम निकलते हैं। रोगी सदा थका सा होता है और निद्रा से विश्रांति मिलती नहीं। थोड़े काल पीछे दरदी मिज़ाज तंतुविकारी, तामसी, और उदासी हो जाती है, और उसके मनमें बुरे भविष्य की फ़िकर रहती है। सीधे आसन पर से उठने के समय चक्कर आते हैं। बंध कुष्ट होती है। कोई कोई वखत चमड़ी सूखी और गरम होती है। जोड़ी जाड़ी और जड़ हो जाती है। आंखों के स्वेत भाग पीले हो जाते हैं। मुख अल्प और रंगदार आता है, और थोड़ी देर रखने से नीचे कचरा बैठ जाता है। वारंवार उबाल आते हैं उसका स्वाद कोई वखत खट्टा और कोई वखत मीठा होता है, और उसके साथ छाती धड़कती है। नज़र कम हो जाती है। अति भ्रमोत्साह और दुर्बलता मालूम पड़ती है। ये सब चिन्ह एक पीछे एक आते हैं। ऐसा

कहते हैं कि यह रोग विविध रूपसे अपनी प्रजाका एक तृतियांश भागको सताता है। ऐसा मालूम पड़ा है कि वैद्य लोग यह रोगको दूसरा रोग समझते हैं कोई कलेजे के दरद की दवाई देते, अथवा कोई मलाशय के रोग पर दवा करते। परंतु नाना प्रकार की औषधि में से कोई औषधि सफल होती नहीं, कारन ऐसी औषधि होना चाहिये कि जिसका असर शरीर के प्रत्येक भाग पर और पेट पर एक सा होवे; कारन अजीर्ण जो खरा रोग है उसमें हरेक भाग बिगड़ जाते हैं और हरेक भाग पर एकी वखत एक सा असर करे ऐसे उपाय की जरूरत है। इस जात के रोगको "मदर सीजलका क्युरेटिव सीरप" जादु मंत्र की माफिक मिटाता है और शीघ्र आराम करता है। "मदर सीजलका क्युरेटिव सीरप" सब रसायनी और गंधियों के पास मिलता है।

W. D.

CLEMENT'S TONIC

मरीज़ों के ख़िदमत में,

क्लेमेन्ट साहब की दवा मक़वी।

एक जल्द असर करने वाला क़ाबिल एतबार इलाज है बातें नीचे लिखे हुए मरज़ों के—

पट्ठों की कमज़ोरी नुक़सान जिस्मानी फुर्ती की कमी और हर तरह की कमज़ोरी सुस्ती ताक़त की कमी ख़िरियान और मनी और परदल वग़ैरह वग़ैरह क्लेमेन्ट साहब की मक़वी हमेशा के लिये क़ायम और जिस्मी फुर्ती को बढ़ाने और बरक़रार रखती है और पट्ठों की ताक़त को ज़ियादे करती है और जवानी की पुरदिली और शबाब की पुर जोश-सगी को ताज़ा कर दिखाती है जिस्मानी और अज़ाय रईसां को हरकाती ताक़त को इन मर्द और औरतों के ताज़े कर देती है कि जो कमज़ोर ज़ईफ़ सुस्त और ख़स्ता और मांदा हो गये हैं क्लेमेन्ट साहब की मक़वी एक बख़शादस इलम की है हर तरह से इन्सान के हक़ में इस की अजीब सेहत बख़श ताक़त ज़ाहिर होती है इसके इस्तेमाल के बाद ही और बाबत में ताक़ीदी इफ़ादत इन लोगों को भी इस की इस्तेमाल में ला चुके हैं वैसी निहायत और बेशुमार हैं बहुत लोग बयान करते हैं कि बहुत हर एक मीताद की तासीर की नफ़े और फ़ायदे पहुंचाने वाली बातें हैं फिल हक़ीक़त यह एक ऐसी पुर तासीर मीक़वी है कि जिस से पट्ठों की ताक़त पहुंचाती है और जो हर एक रग ओ पै में जिस्म के पट्ठों के ज़रिये से ताक़त बख़श और ताज़ा करने वाला असर को पहुंचाती है हर हालत में ख़ाह जिस्मानी ताक़त बसबब मर्ज़ शदीद के कम की गई हो या सख़्ती और तकलीफ़ और मेहनत सख़्त से या किसी क़िस्म के ज़रर पहुंचाने वाली नाक़ाबिल अन्देशी के सबब से हो ख़ाह वो मरी हुई हालत किसी

तरह की हो जब कि पट्ठों की कमज़ोरी पाई जाये या किसी किस्म की ख़ास कमज़ोरी या हर तरह की कमज़ोरी हो जब कि सुस्ती या ज़ोफ़ या कम ताक़ती उस मर्ज़ का बाइस हो इन हालतों में क्लीसेन्ट साइब की सुकब्बी ही सिर्फ़ इलाज है। जो लोग कि बदनी या क़लबी शदीद मिहनत के नतीजों के सबब तकलीफ़ पाते हैं या कि सख़्तियों से और सर्दी या गर्मी बरदाश्त करने के सबब से या कि किसी नामालूम सदमे के सबब या किसी ज़ख्म के सबब या जो लोग दानिस्ता वो नादानिस्ता इरकाम-ए-क़ुदरत को न मान कर अपने को तकलीफ़ में डाले हुए हों वह लोग क्लीसेन्ट साइब की सुकब्बी को एक ऐसा इलाज पावेंगे जिस से कि यक़ीनी उन को तकलीफ़ से नजात मिलेगी। यह सुकब्बी बहुत ही जल्द हर किस्म के जबूर तरक़्क़ी जिस्मी नाताक़ती को दूर कर देती है और फुर्ती के घटती को उस की असली ताक़त और दुरुस्तगी तक पहुंचा देती है। जब जब कमज़ोरी आज़ार रईस को ज़ाहिर हो या कि पट्ठों की कमज़ोरी और घट जाना जिस्मी या क़लबी हरकत का नमूद हो या कि घबराहट ख़याली का या सुस्ती एतमाद का, या चिड़ चिड़ाहट मिज़ाज का, माफ़ीख़ोलिया, बुज़दिली, घुटनों की या पीठ की कमज़ोरी, दिल की धड़क, सिर का दर्द कमर का दर्द, कड़ा रहना हो, पीठ का दर्द, दांत का दर्द, जो माहूद वक़्त पर हुआ करे आज़ा शिकनी, जोड़ का दर्द, बेख़ाबी दर्द सरी, सुबह के वक़्त सुस्ती कैफ़ियात और जोड़ों का दर्द सोज़िश मसाना, वो गुर्दों की सोज़िश, गदला पेशाब जो पीच की तरह हुआ करता है, ज़रर पहुंचाने वाला और नामालूम नुक़्सान जिस्म का या कि दूसरे अलामात जिस के नतीजे में दिली या जिस्मी ताक़त को नुक़्सान ज़ाहिर हो मर्द और औरतों की कामयाबी के मुक़ाबिल में एक रोक पैदा करे और उन की ज़िन्दगानी की वाजिबात के और ज़रूरी कामों के अंजाम देने में क़ासिर बनावे तब तब ऐसी हालतों में क्लीसेन्ट साइब की सुकब्बी सिर्फ़ एक ही पुर तासीर इलाज है और आज तक होती आई है। नौजवान लोग जो ज़िन्दगानी के जोकारज़ार में दाख़िल हुआ चाहते हैं और अपनी क़ाबलियतों पर अज़्मा यो इस्तिक़लाल अच्छी तरह रखते हैं और कामयाबी के हद तक अपनी मुरादों के ले जाने पर क़ादिर या क़ादिर हैं और वे मौजूद अज़्मी

और क़ाबिल मह्सीन और फ़रह दिलाने वाले नुस्ख़ों के नतीजों को हासिल करने चाहते हैं क्लेमेन्ट साहब की मुक़ब्बी उन के वास्ते पहली सीढ़ी उन के मुराद तक पहुंचने की है।

अधेड़ लोग जिनकी ढिलती हुई फुर्तियां बतलाती हैं बुढ़ापे से आगे जवानी की तनज़ुली का आना और जो मालूम करते हैं कि रफ़्त रफ़्त वे एक बेर हम दुश्मन के हवाले में जाने को हैं और जिनकी ज़िन्दगी के ख़ज़ाने में बड़ी बड़ी हुंडियां दाख़िल की जाती हैं ताकि बचपन के क़र्ज़ सब अदा किये जावें या कि जिनके ज़ख़ीरे फुर्ती के मर्ज़ा के बायस कम हो गये हैं या सुस्ती और जांफ़िशानी और ज़िन्दगानी की मिहनत के सबब घट गये हैं या कि किसी और और तरह से अपनी ताक़त को ज़ाया किये हैं उनके हक़ में क्लेमेन्ट साहब की मुक़ब्बी एक दोस्त है जो मुसीबत के वक़्त पर दस्तगीरी करेगा और एक पुरज़ोर मदद है और एक दुरुस्त करने वाला बुरी हालतों का है जो कभी नहीं चूकेगा और जे इससे एक नई ज़िन्दगी हासिल करेंगे और बदनी ताक़त भी हासिल करेंगे और सब तरह की हालत जो फुर्ती ताज़ा कामिल तौर पर हो जावेगी।

बूढ़े लोग इस मुक़ब्बी के इस्तेमाल से इनहिज़ाज़ की पेशक़दमी को रोकते हैं और ताक़त की तनज़ुली से बच रहते हैं और अपने शबाब की दोबारा हासिल करते हैं ताक़त बदनी पाते रहते हैं और दोबारा अपनी क़ाबलतियों पर क़ाबिज़ हो क़ादिर हो जाते हैं और अपनी फुर्ती जो क़ाबिलियत की हमेश बहाल हो बरक़रार रखते हैं।

नौजवान औरतें क्लेमेन्ट साहब की मुक़ब्बी को एक निहायत ही पुरतासीर इलाज पावेंगी जो सहलुल वसूल है। इससे हर क़िस्म की कमज़ोरी जो ख़ास कर औरतों को हुआ करती है इलाज पज़ीर होती है और दफ़ा हो जाती है इसके मुक़ाबिल में और इलाज औरतों की कमज़ोरी दूर करने का नहीं है। और लतीफ़ुल क़वा नाज़ुक और नहीफ़ बदन छोटी लड़कियों के हक़ में यह बतौर आला के काम करती है और यक़ीनी पुरज़ोर जनाना तबियत पैदा करती है यह पुरतासीर इलाज इन ख़ूबियों को पैदा करती है जिसके ज़रिये से ज़रर पहुंचानेवाले बेमौक़ा तकलीफ़ात को पहले से रोका जाता है और पुरज़ोर आइन्दा नफ़ाती

को दबाया जा सकता है और फुर्ती की हालत के नुक़सान का जब्र कर देता है और आज़ाय रईस के हरकात की बद बदतज़ामी की दुरुस्त किया जाता है और पतदान पर लाया जा सकता है अज़ा पहुंचे हुए दीमाग़ को और मालिखोलिया और ख़यालात फ़ासिद के बहज़त को दूर किया जाता है और ख़ुशनुमा बज़ाहर ख़ुदा की हमारी ख़िलक़त के हलाकत और तबाही से बचा लेता है इसके इस्तेमाल में बराबरी दरमियान नुक़सान और जब्र नुक़सान के बरकरार रक्खा गया है, नुक़सान बेजा रोका गया है ज़रर पहुंचा हुआ को दुरुस्त किया गया है कमज़ोर किया हुआ और सिकुड़ा हुआ रगों को ताक़त असली और दुरुस्तगी दी गई है बेवक़ूफ़ी और नादानी और ग़लती के नतीजे दुरुस्त किये गये हैं और ग़ायत दर्जे के बख़ील और इनृत देने वाले मरीज़ अपनी तकलीफ़ों से मुख़लिसी पाये हैं और आदत पकड़े हैं मरदाना सिफ़तों से, और हिम्मत में और फुर्ती और बदनी ताक़त से। क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी से जितने लोग चंगे हुए हैं उनका एक दफ़्तर मौजूद है और जो जो बेहतरियां इस दवा ने ज़ाहिर की हैं वैसी ख़ूबियां हज़रत आदम के ज़माने से किसी और दवा ने आज तक ज़ाहिर नहीं की। मांग भेजने में हम लोग तफ़सील कामिल और सतदें वग़ैर किसी ख़र्च के हर कहीं भेज सकते हैं मरीज़ों को चाहिये कि बहुत ख़बरदारी से इस दवा को ख़रीदें क्यों कि हर जगह पर नक़ली दवा बिक रही है और उनको बड़ी ख़बरदारी करनी चाहिये जिससे उन्हें सिर्फ क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी मिले। और यह भी ख़्याल रहे कि अक्सर नक़ली या जाली दवा भी अलकहल के निस्बत ज़्यादा ज़रर पहुंचाती है।

क्लेमेन्ट साहब की मुकब्बी तलब करो हर एक दवा फ़रोश इसको बेचता है।

F. M. Clements

यह दस्तख़त—हर एक दवा के बोतल पर है।

न्यूटाउन, सिडनी
आस्ट्रेलिया
} मरीज़ों के ख़िदमत में।

बिहार-बन्धु सम्बन्धी कायदे।

१। बांकीपुर में बिहार-बन्धु की पेशगी सालाना कीमत ॥८) एक रुपया दस आना मुफ़स्सिलमें भी एक रुपया दस आना, पर डाक महसूलका ।८) छ आना अलग लगता है। इसलेमुफ़स्सिलमें कुल १) दो रुपया हुआ। छ महीनेका सवा रुपया और तीन महीने का बारह आना राजा महाराजाओंसे कुछ नियम नहीं इस की सहायतार्थ जो देंगे स्वीकार होगा।

२। बिहार-बन्धु के प्रति खत का मजमून लिख भेजो पैसा रवाना किया है

पेशगी कीमत।

३। जिना पेशगी दाम पाये किसी को नहीं भेजा जाता। गाहकों को मनीआर्डर द्वारा रुपया भेजना चाहिये। इस में नाम ठिकाना, डाकघर, जिला साफ़ साफ़ लिखना चाहिये।

४। जिन को मनीआर्डर भेजने में अधिक सुबीता न हो तो चलते डाकघर के साधारण डाक रुपये वसूल कर लेंगे। पर इस में दो आना गाहकों को अधिक देना होगा। मसलन यह है कि यदि गाहक लोग मनीआर्डर के जरिये रुपये भेज दें तो इस को सुबीता है। डाकघर से साधारण वसूल करने में इस लोगों को बहुत झंझट उठाना पड़ता है और भूल चूक होने का भी भय है।

चार बिहार-बन्धुमें एक बेशी।

५। यदि कोई इकट्ठा एक नाम से चार बिहार-बन्धु लेंगे तो उन को एक बिहार-बन्धु बेशी नजर से मिलेगा।

लड़कों के लिये।

१। स्कूल में पढ़ने वाले लड़के अगर छापाखाना में आकर ले जायें तो उन को कुछ मजूरी का मजूद नहीं। पैसा और पेशगी ले जायें तो एक रुपया चार आना साल भर का देना होगा।

२। दूसरे शहर के लड़के यदि अपने पंडित वा मास्टर से चीठी लिखवा कर पेशगी रुपया भेजेंगे तो उन को भी किफायत में मिलेगा जो पर छः आना महसूल का अलग लगेगा यानी एक रुपया दस आना देने से मिलेगा।

विज्ञापन का नियम।

८। मासिक पत्र के साथ का विज्ञापन प्रायः तीनों तक रहता है। इस में विज्ञापन छपवाने वालों को विशेष लाभ की संभावना है।

एकबार	प्रति पंक्ति	।८)
छः महीने तक का	,,	।८)
तीन महीने तक का	,,	।)
चार महीने तक का	,,	।८)
पांच महीने तक का	,,	।८)
छः महीने तक	,,	।)

एक मजमून या दस से बेशी दिनों तक

[illegible] इश्तिहार का ८) महीना

इश्तिहार यदि साधारण पेज में [illegible] दो बरस दिन या ज्यादे दिनों तक [illegible] हो।) प्रति पंक्ति लिया जायेगा।

[illegible] इश्तिहार की कीमत [illegible] भेजना चाहिये पर बरस दिन या बेशी दिनों तक इश्तिहार छपवाने वालों से ३ महीने बाद का पेशगी दाम मिलने से भी काम चलता।

९। विज्ञापनमें नक्शे या तस्वीर भी छप सकती है।

बिहार-बन्धु छापाखाना, बांकीपुर।

Health Wealth and Prosperity.
Established 1880.

जी० बी० नायक कंपनी.

बिजली की अंगूठियां, पुतलियां, कड़े, कवच, गलपट्टे,

१,००००

हरएक चीज पर

से अधिक बिकी,

जी० बी० नं० (G.B.N.

छोटा माल लेना नहीं



देख लीजिये,

मुसलमान मनुष्य के जीवनाधार नेचर सिक्स्थ्स्त्रा ब्लड को जीवनाधार से अत्यन्त अशक्त बड़ बादाम बरसा से शरीर का खून दूषित होने से आंख उत्पन्न होनेवाले अनेक रोगों की आंख झांवा है कमजोरी, अनिद्रा, सिरदर्द वायु पर्व गठिया, पेट में वायु पीड़ा होना, शरीर में दाह और तीव्र पीड़ा, हड्डियों में पीड़ा, नपुंसकता कमर दुखना, पीड़ा, वीर्य पेशाब होना, जी घबराना, मूर्छा, आंख पैर गलना, स्त्रियों का प्रसूत इत्यादि कष्टों की पीड़ा, मल पचार के बुखार एवं अजीर्ण आदि को पीड़ा, कनजिनल खांसी को तुरन्त नष्ट कर बराबर सब प्रकार की कमजोरी सिरदर्द, अनिद्रा, मुखाग्नि व शीघ्र वीर्य पतन, बहुत दिन की पुरानी से पुरानी शक्तिहीनता, वीर्य विकार आदि और दूसरे दीर्घ रोग रहने वाले कारण को नष्ट करने के आराम की जाती है जो जगत प्रसिद्ध है बिजली के गहनई छोटे २ आकार के हैं इसलिए रीति से लिखने का उपाय बिजली के कवच जिन की शरीर अंगुलि सट जाई हो उन की या जिस का हाथ बिछने में आपका हो उस की दम कवच का और अंगूठी का गुण देखना उचित है सबसे लाभ उठाइये।

बिजली के माल का भाव।

एलक की अंगूठी	(१)	पीतल की पुतली	१)
चांदी की "	१)	चांदी की "	२)
सोने की "	१०)	सोने की "	१५)
धातु की कवच	१५)	हाड़ के हड्डा कड़ा	१५)
गलपट्टा	१५)	डेमीकल की मूर्ती	१)

एक बात ध्यान में रखने योग्य है कि एक नया ग्राहक मिलना सहज काम नहीं पर हमारे ग्राहक बनाने में लाभ भी बहुत है। हमारे यहां सहज ही लाभ उठाने वाले जी० बी० नं० (G. B. N.) से अवश्य लिखा करते हैं अंगूठी या कड़े में छिद्र मिलाने के लिये अंगूठी या कड़े का नाप अवश्य भेजना चाहिये। नाप सदृश्य १ से १ इंच (१) अवश्य देना पड़ेगा यह प्रकार की चिट्ठी पत्री नाप लिखे पत्र में जाना चाहिये। (प्रकार) नाप अवश्य बनाई की दुकान पर मिलेगा। मंगानेवाले अपना नाम मंगरेजी या हिन्दी में लिखें आवश्यक और जिला और रेल साफ लिखें।

जी० बी० नायक एन्ड कम्पनी,

अम्बाला, डाकखाना।

बिहार-बन्धु की पूर्ती।

कारनामा राय बहादुर

अर्थात

श्री मान सारेबुल जयप्रकाश लाल

राय बहादुर सी० आई० ई० सुयोग्य

दीवान रियासत डुमराव के उत्तमोत्तम प्रबन्धों

तथा कार्य्यों का सविस्तर वर्णन

जिसे

मुन्शी उदितनारायण लाल वर्मा वकील

कलक्टरी गाज़ीपुर ने उर्दू भाषा से शुद्ध हिन्दी में

अनुवाद किया।

पटना

"बिहार-बन्धु" कार्य्यालय बांकीपुर।

705

कारनामा राय बहादुर।

भूमिका।

प्रश्न यह है कि प्रारब्ध और पुरुषार्थ में क्या भेद है? कोई कहता है कि प्रारब्ध ही मुख्य है, इस के बिना संसार में किसी व्यक्ति को हानि, लाभ, सुख, दुख, उन्नति, अवनति नहीं प्राप्त होती, इस के भिन्न दूसरा कहता है कि पुरुषार्थ कर्तव्य कार्य्य है, इसी पुरुषार्थ से मनुष्य विद्या, धन, मान, मर्य्यादा, सभी कुछ प्राप्त कर सकता है, लोक परलोक तक सुधार सकता है। अब यह निश्चय होना चाहिये कि वास्तव में मुख्य प्रारब्ध है वा पुरुषार्थ? भूतपूर्व्व पण्डितों और विद्वानों ने इस विषय में जहां तक निर्णय किया है और अब भी जहां तक विचार किया जाता है तो मुख्य पुरुषार्थ ही जान पड़ता है क्यों कि इसी पुरुषार्थ का फल जो लोक परलोक में प्राप्त होता है वही प्रारब्ध कहा जाता है। यदि पुरुषार्थ न हो तो मनुष्य चलने फिरने खाने पीने सुकर्म कुकर्म सभी से रहित हो जावे फिर तो न कोई कर्म करेगा न उस का फल पावेगा। इस से निश्चय हुआ कि पुरुषार्थ मनुष्य का मुख्य धर्म है, देखिये विश्वामित्र राजा गाधि के पुत्र क्षत्री हो कर अपने पुरुषार्थ से ब्रह्मर्षि हो गये, इस को क्या केवल प्रारब्ध ही कहियेगा? नहीं २ यह पुरुषार्थ का फल है।

जिस तरह दिन के साथ रात, और फूल के साथ कांटों का होना अवश्य है उसी प्रकार जब कोई मनुष्य अपने यत्न, उद्योग और पुरुषार्थ से धन, धर्म, श्रेष्टता, गौरव, मान मर्य्यादा इत्यादि प्राप्त करता है उस समय उस के प्राकृतिक द्वेषी भी उत्पन्न हो जाते हैं। यद्यपि उस द्वेष से उस पुरुषार्थी और उद्योगी मनुष्य को कोई हानि नहीं पहुंचती वरन उस का पुरुषार्थ, उद्योग प्रति दिन बढ़ता जाता है और उस का उत्तम २ फल भी मिला करता है तथापि ईर्षागण अपने घृणित कार्य्य से मुंह नहीं मोड़ते और उन का परिश्रम निष्फल होता है।

अब मैं अपने पाठक गणों को कल्पित लेख का एक उदाहरण दिखलाया चाहता हूं जिस को मैं ने मुंशी कासता प्रसाद सादर कायस्थ

सरिश्तेदार मतब: आली जाह व औनरेरी एडिटर कायस्थहितकारी ग्वालियर के "कारनामः रायबहादुर" नामक पुस्तक से उद्धृत किया है अथवा उसी की कापी लिया है। उक्त पुस्तक का अभिप्राय अंग्रेज़ी उर्दू समाचार पत्रों, और पुस्तकों, प्रमफ्लेटों में प्रायः प्रकाश हुआ है किन्तु हिन्दी भाषा में इस का अभाव था अतएव हिन्दी भाषा में इस का लिखना मैं ने उचित समझा और यद्यपि मैं फारसी जानता हूं और इसी भाषा से निशि दिन मुझे काम पड़ा रहता है क्यों कि सम्प्रति कचहरियों में यही भाषा प्रचलित है और मैं वकालत करता हूं तो यवन भाषा के अतिरिक्त कार्य्यवाही होना कठिन है किन्तु "सतीनाटक" "दीपनिर्वाण" को बंगभाषा से मैं ने हिन्दी भाषा ही में अनुवाद किया है जो मुद्रित भी हो चुकी हैं।

इस लेख से मेरा तात्पर्य्य यह नहीं है कि मुझे अर्थलाभ हो अथवा मुझे कोई नौकरी चाकरी मिले बरं केवल यह अभिप्राय है कि अपने कायस्थजाति के एक ऐसे कुलभूषण का इतिहास लिखूं जिस की बुद्धिमानी, पुरुषार्थ और उद्योग का अनुकरण कायस्थजाति बरं अपर जाति भी करें उन के शुभ चरित्र से शिक्षा ग्रहण करें और उन को पूरा विश्वास हो कि मनुष्य को पुरुषार्थ, उद्योग, ईमान्दारी औ प्रभु भक्ति का फल ऐसा ही मिलता है।

आनरेब्ल राय बहादुर जैप्रकाश लाल साहब जिन का शुभचरित्र मैं इतिहास स्वरूप में लिखना चाहता हूं वे व्यक्ति हैं जो इस समय राज रियासत डुमरांव के दीवान के पद पर सुशोभित हैं।

जब उक्त महोदय ने अपने पुरुषार्थ, बुद्धिमानी और उद्योग द्वारा अपने प्रभु, अपने स्वामी को उन्नति के उच्च शिखर पर पहुंचाया और बुद्धिमान, न्यायी भोज वंशावतंस प्रभु श्रीयुत श्री १०८ महाराजा सर राधाप्रसाद सिंह साहब बहादुर के० सी० आई० ई० डुमरांवनरेश ने प्रसन्न हो कर भूतपूर्व्व महाराजाओं के रीत्यनुसार दीवान साहेब को पुरस्कार में भूमि मीकरारी प्रदान किया और अंग्रेज़ी गवरमिन्ट से उक्त महोदय के उपयोगिता के अनुसार थैंक्स २ उपाधि प्रदान होने लगी तब तो ईर्षियों के हृदय विदीर्ण होने लगे। गोसाईं तुलसी दास जी ने सच कहा है कि "परहित हानि लाभ जिन केरे। उजरे हर्ष बिषाद बसेरे" अट दिवान साहेब के अनिष्ट साधन में तत्पर हो गये।

सन् १८८० ई० में कुछ ईर्षियों ने समाचार पत्रों के द्वारा दीवान साहेब की प्रतिष्ठा व नेकनामी पर आक्रमण करना प्रारम्भ किया किन्तु उन खलों का व्यर्थ परिश्रम निष्फल हुआ। पबलिक (सर्व्व साधारण) ने सभाओं व्याख्यानों, समाचार पत्रों द्वारा उन को ऐसा लज्जित किया कि फिर वे सिर न उठा सके और दीवान महोदय का गौरव, प्रतिष्ठा, मान, मर्य्यादा और भी अधिक उन्नति को प्राप्त हुआ अर्थात् प्रथम वे केवल राय बहादुर थे तो इस साल सी० आई० ई० की उपाधि से भी भूषित किये गये। यह प्रारब्ध, नहीं २ पुरुषार्थ का सुन्दर फल है—आओ भाई ईर्षियो! और भी ईर्ष करो।

पाठकगण, आप लोगों पर यह भी प्रगट हो कि यह पद अर्थात् "दीवान" वा "मन्त्री" वा "वज़ीर" का हमारे कायस्थ जाति में आज नवीन वा पहिले पहिल नहीं है। जमुनास्तम्भ जो दिल्ली में है जिस को महाराज पृथ्वी राज ने बनवाया था, जिस को अब कुतुब साहेब की लाठ कहते हैं उस पर संस्कृत में जो लेख है उस्से विदित होता है कि राजा बेलदेव साखम्भरी देश के दीवान माधवलाल गौड़ कायस्थ के पुत्र श्रीपति थे। महाराज पृथ्वीराज के दीवान उदयकरण कायस्थ श्रीवास्तव्य थे जिन के कार्य्यों पर महाराज ने सन्तुष्ट होकर ५० हज़ार वार्षिक आय की भूमि जागीर प्रदान किया और चौधरी की उपाधि दी। कनौजाधिपति राजा जैचन्द के दीवान भी चतुर्भुज कायस्थ श्रीवास्तव्य थे इसी भांति महाराजा टिकैतराय आसिफुद्दौला के नायब थे, व राजा नौलराय अवध के नवाब सआदत अलीखां के नायब रहे; कहां तक गिनाया जावे यही समझ लीजिये कि भारतवर्ष जब आर्य्यमहीपों के आधीन था उस समय में और फिर जब मुसलमान बादशाह हुये उस समय भी और आज लों हमारे कायस्थ कुल के लोग अपनी शूरता, वीरता, विद्वानी, बुद्धिमानी, ईमानदारी, स्वामिभक्ति द्वारा उच्चपदाधिकारी होते आये और पुरस्कार में भूमि, धन, उपाधि इत्यादि पाते आये। हां इस उनीसवीं शताब्दि में जो लोग इतिहास से अनभिज्ञ हैं वे निस्सन्देह कहेंगे कि श्री महाराजा डुमराव ने दीवान साहेब को सीकरी दिया है सो नई बात है क्या इस राज रियासत के भूतपूर्व महाराजाओं ने अपने सुयोग्य दीवानों को पुरस्कार नहीं दिया है?

क्या उन ईर्षियों की दृष्टि उस तरफ नहीं जाती ? जो कुछ हो हम को इससे कोई तात्पर्य नहीं हम एक बुद्धिमान,, पुरुषार्थी, उद्योगी और सुयोग्य कायस्थकुलकमलदिवाकर का संक्षेप जीवन चरित्र इस हेतु लिखते हैं कि हमारे कायस्थ जाति के युवकगण इस को देख शिक्षा ग्रहण करें।

श्रीयुत दीवान साहेब बहादुर की समाजिक (सोशियल) योग्यता।

रायबहादुर दीवान साहेब मौज़: अपहर के एक प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित कुल से हैं। जो लोग मौज़: अपहर से अभिज्ञ हैं वे भली भांति जानते हैं कि दीवान साहेब के कुल में सनातन से लोग उच्च पदों पर सुशोभित होते आये हैं जिससे इस कुल को पूर्ण रूप से गौरव वा श्रेष्ठता प्राप्त है।

जिस समय भारतवर्ष मुसलमान बादशाहों के अधीन था उस समय भी दीवान साहेब के प्रपितामह पितामह इत्यादि उच्च २ पदों पर नियुक्त थे जिस का प्रमाण उन जेलों से होता है जो बादशाहों ने प्रसन्नता पूर्वक उक्त महोदय के बंशधरों को प्रदान किया है और श्रीमान का विवाह भी राय बहादुर मुन्शी आनन्दी प्रसाद साहेब बैकुंठवासी मिम्बर कौन्सिल रीजन्सी ग्वालियर की पौत्री से हुआ है।

नीति निपुण, सरल स्वभाव दीवान साहेब का बरताव राज रियासत के समस्त कर्मचारियों, सेवकों, के साथ ऐसा रहता है कि सब कोई उक्त महाशय के शुभचिन्तक बने रहते हैं, कभी किसी के मुख से किसी प्रकार की निन्दा सुनने में नहीं आई, विशेष प्रशंसा की बात तो यह है कि दीवान साहेब से उन के स्वामी, महाराजा साहेब सन्तुष्ट, गौरमेन्ट प्रसन्न, प्रजा कृतार्थ, सर्व्वसाधारण राज़ी, फिर एक राज रियासत के प्रधान मन्त्री की इस से अधिक नेकनामी और खुशक़िस्मती क्या होगी ? जिस का परिणाम यह है कि सर्व्वसाधारण धन्यवाद सहित आशीर्वाद देता है, स्वामी ने पुरस्कार में जागीर प्रदान किया, गौरमेन्ट ने उपाधि और तमगे से भूषित किया — गौरमेन्ट के हुक्काम औ अफ़सरान कृपा दृष्टि रखते और प्रशंसा करते हैं।

दीवान साहेब पक्षपातरहित मनुष्य हैं किसी धर्म किसी जाति का कोई क्यों न हो सब के साथ समभाव रखते, और सब के सत्व पर सम दृष्टि रखते हैं, निज स्वार्थ को जानते नहीं कि किस चीज का नाम है।

परमार्थ को अपना मुख्य धर्म समझते हैं। अभिमान, अहंकार उन के शरीर में लेशमात्र नहीं है। दीनता, नम्रता आप में इतनी है कि प्रत्येक छोटे बड़े से मिल भाव रखते हैं।

सहन शीलता के सुमेरु हैं, क्रोध का नाम तक नहीं जानते, सब कामों को विचार कर करते, सब का परिणाम पहिले ही से सोच समझ लेते हैं।

ऐसे बड़े अधिकार पाने पर भी कभी किसी प्रकार से किसी मनुष्य पर अनुचित क्रुद्ध नहीं हुये, यदि कोई अधीनस्थ कर्मचारी उन के मत से किसी विषय में असम्मत हुआ तो उस से असन्तुष्ट नहीं होते बरं उस पर न्यायपूर्व्वक पूरा पूरा विचार कर यदि उस का मत उचित जान पड़ा तो उस को सादर ग्रहण करते हैं इस को अत्यन्त न्यायशीलता कहना चाहिये।

अद्यापि किसी प्रजावर्ग वा किसी कर्मचारी से एक पैसे की भी कोई वस्तु भेट में स्वीकार नहीं की।

वर्त्तमान समय के अमीरों और रईसों की भांति आप को ऐश, आराम पसन्द नहीं है सर्व्वदा उद्यम में प्रवृत रहते हैं, मेहनत से मुंह नहीं मोड़ते, प्रातःकाल से आधी रात तक बराबर राज रियासत का कार्य्य करते हैं, प्रत्येक कामों को स्वयं जांचते हैं, जहां जाने की अवश्यकता पड़ती है स्वयं जाते हैं, चित में किञ्चित मात्र भी आलस्य नहीं है—अभी दूर देश की यात्रा से वापस आये हैं हाथ मुंह भी नहीं धोया और कोई तार कहीं से आया तुरन्त वहां चले गये, कचहरी से आती समय यदि रास्ते ही में कहीं जाने की आवश्यकता मालूम हुई तो बाहरही बाहर वहीं चले गये।

अपने स्वामी के आज्ञा पालन में, राज रियासत के प्रबन्ध में जो कुछ कठिनाइयां उपस्थित होती हैं उस को सहर्ष, सहनशीलता के साथ समापन करते हैं।

तिथि १६ जून सन् १८८२ ई० के कायस्थ हितकारी ग्वालियर के पृष्ठ १८ में निम्न लिखित लेख प्रकाश हुआ था।

सुखदायक सम्बाद।

बड़े हर्ष का औसर है कि हमारे कायस्थकुलकमलदिवाकर अर्थात् प्रथम कायस्थ कान्फ्रेंस लखनऊ के प्रेसीडेंट श्रीयुत आनरेबुल राय बहादुर जैप्रकाश लाल साहेब दीवान राजरियासत डुमरांव की श्रीमहाराणी राजराजेश्वरी कैसरहिन्द के निकट से वर्धगांठ के उपलक्ष में तिथि २४ मई सन् १८८२ ई० को श्रीमान गौर्नरजेनरल हिन्द के द्वारा "कम्पानियन और्डर आफ् दी इन्डिअन एम्पायर—(सी० आई० ई०) की उपाधि प्राप्त हुई।

उक्त महोदय ने कायस्थ कान्फ्रेंस के दृढ़, चिरस्थाई, सफल मनोर्थ होने में जो सहायता किया था जिस के बदले में कौम के लोगों ने अन्तःकरण से आशीर्बाद दिया था केवल इसी के प्रभाव से नहीं बरन दीवान साहेब के दियानतदारी, ईमान्दारी, सुप्रबन्ध राजरियासत डुमरांव का यह फल है कि ऐसे उपाधि से भूषित हुये, परमेश्वर आप को इस्से भी अधिक उच्चपदाधिकारी बनावे जिस से स्वजाति, स्वदेश की उन्नति सम्भावित है विशेषतः इस में कायस्थजाति की अति प्रतिष्ठा है।

रिसालः कायस्थहितकारी श्रीमान दीवान साहेब और उन के मित्रों, सम्बन्धियों, की सेवा में अन्तःकरण से मौबारकबाद निवेदन करता है।

दूसरी बार फिर उसी पत्र में तिथि १ जुलाई सन् १८८२ ई० नं० १३ में यह आर्टिकिल (मज़मून) प्रकाशित हुआ था।

श्रेष्ठ उपाधि।

हमारे प्रथम कान्फ्रेंस के प्रसिद्ध प्रतिष्ठित प्रेसीडेण्ट श्रीयुत आनरेबुल राय बहादुर जैप्रकाशलाल साहेब दीवान राज रियासत डुमरांव को हमारे अहर्निश के आशीर्बाद के प्रभाव से श्रीमती राजाराजेश्वरी कैसरहिन्द की अपार कृपा और प्रसन्नता, गुणग्राहकता से वह श्रेष्ठ उपाधि प्रदान हुई है कि जो अद्यापि हमारी जाति में प्राप्त नहीं हुई थी—यह प्रथम बार है कि हम बाईस लाख कायस्थों में एक प्रसिद्ध प्रतिष्ठित महाशय को सी० आई० ई० की उपाधि से आभूषित देखते हैं।

हम को स्मरण है कि एक बार हम ने किसी कौमी समाचारपत्र में एक बृहत आर्टिकिल लिखा था, जिस में करुणामय वाक्यों में प्रकाश किया

था कि २२ लाख कायस्थों में एक भी सी० आई० ई० नहीं है—ईश्वर को धन्यवाद देने और हर्ष का स्थल है कि आज हम इस कहने के योग्य हुये कि २२ लाख कायस्थों में एक भद्र पुरुष सी० आई० ई० है।

निस्सन्देह उक्त दीवान साहेब इस उपाधि के उपयुक्त थे क्यों कि उन की योग्यता, गुण, और सत्यता, राजप्रबन्ध की धूम केवल भारतवर्ष ही में नहीं वरं इंगलेण्ड में भी है—आप जब सामाजिक कार्य्यों में उदारता के साथ सहायता पर ध्यान देते हैं तो सेकड़ों हज़ारों प्रदान करते हैं।

कायस्थकान्फ्रेन्स पटना में १०५०) रु० बोर्डिंगहाउस के बनाने में प्रदान किया और इतना ही कायस्थ यथनालीजी के मुद्रित कराने में व्यय किया था, जो कान्फ्रेन्स पटने में बिना मूल्य वितरण हुई थी—आप ने कई बार कान्फ्रेन्स की और उपदेशकों की सहायता में बहुसंख्यक अर्थ प्रदान किया है और जिस जातीय सभा में शरीक हुये द्रव्य द्वारा उस की यथोचित सहायता की।

कान्फ्रेन्स के प्रारम्भ में यदि उदारतापूर्व्वक आप सहायता न किये होते तो निस्सन्देह हमारी जातीय सफलता बड़ी कठिनाइयों में पड़ जाती।

ऐसे शुभ अवसर में कि हमारी जाति में एक पुरुष को ऐसी श्रेष्ट उपाधि मिली, जिस्से कायस्थ जाति मात्र का गौरव है, उचित है, कि हमारी क़ौम खुशी मनाये, ईश्वर की धन्यवाद दे, दीवान साहेब की सेवा में मीबारकबाद प्रेषित करै, जैसा कि रेयासत ग्वालियर के समस्त सभाओं की ओर से लश्कर की सदर सभा ने धन्यवाद पत्र भेजा है।

परमेश्वर करै कि यह उपाधि आप को और कौम को मीबारक हो और वह समय सीघ्र आवै कि हम लोग दीवान साहेब के तीर्थों की सलामी का आनन्दसम्वाद सुनें।

हर्ष पत्र।

समस्त स्थानीय सभा रेयासत ग्वालियर श्री कायस्थ सदर भाषा लश्कर की ओर से श्रीयुत आनरेबुल रायबहादुर जैप्रकाश लाल साहेब दीवान हुमरांव स्टेट की सेवा में सी० आई० ई० उपाधि के उपलक्ष में।

महाशय,

हम लोग मेम्बर औ कर्मचारीगण स्थानीय कायस्थ सभाओं और सदर कायस्थ सभा रेयासत ग्वालियर के इस सूबः (प्रांत) के कायस्थ जाति के प्रतिनिधि की भांति आप की सेवा में सी० आई० ई० उपाधि प्राप्त होने के उपलक्ष में यह हर्षवाद पत्र (बधाई का पत्र) उपस्थित करते हैं अन्तः-करण से परमेश्वर से प्रार्थना है कि लोमश की आयु तक आप इस उपाधि से भूषित वा सुखी रहें—और प्रतिदिन आप के धन, ऐश्वर्य्य, मान और यश की उन्नति होती रहे—महाशय ! आप को इस गौरव के प्राप्त होने से हम लोगों को बड़ा हर्ष हुआ जो कि श्रीमती राजराजेश्वरी कैसरहिन्द समरजीजयीनी के निकट से अत्यन्त गुणग्राहकता और अपार कृपासंयुक्त प्रदान हुआ है।

हमारी भाग्यमान जाति को इस उत्तम और उच्च उपाधि लाभ होने का यह प्रथम औसर है। इस उपाधि से २२ लक्ष कायस्थों की जो प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है वह सोने के रोशनाई से जातीय इतिहास में लिखने के योग्य है।

जहां तक ध्यान किया जाता है इस श्रेष्ट उपाधि का प्राप्त होना निस्सन्देह दीवान साहेब के उन शुभ कार्य्यों, उद्योगों और पुरुषार्थों, का फल है जो कि उक्त महोदय ने नीतिज्ञता, सुहृदयता, बुद्धिकुशलता, के साथ अपने स्वामी श्रीयुत महाराजा साहेब डुमरांव की हितैषिता, उन्नति, राज्य, धन, मान, मर्य्यादा के बढ़ने में किया है, जो संसार को भली भांति विदित हैं।

इस उच्च उपाधि के मिलने से राज रेयासत डुमरांव की श्रेष्ठता पर जो प्रभाव हुआ है उस के लिये हम श्री महाराज साहेब की सेवा में धन्यवाद निवेदन करते हैं।

हम कृतज्ञता के साथ स्वीकार करते हैं कि हमारे जाति के साथ आप का उपकार बहुत है इस लिये आप की उन्नति से मानो कायस्थ जाति की उन्नति है।

अन्त में हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि जहां तक मनुष्य को मान, मर्य्यादा, पद पदार्थ प्राप्त होना इस संसार में सम्भव है, श्रीयुत महाराजा साहेब को प्राप्त हो।

"कायस्थहितकारी" जिल्द १ नम्बर ८ तिथि १ अगस्त सन् १८८१ ई० में निम्न लिखित (आर्टिकिल) लिखा गया था।

श्रीयुत रायबहादुर जैप्रकाश लाल साहेब बहादुर दीवान राज रैयामत डुमरांव की सत्यता (दियानतदारी) और उत्तम कार्य्यवाही का प्रत्यक्ष प्रमाण।

उक्त राय साहेब महोदय की उदारता और जातीय कार्य्यों में सहानुभूति प्रसिद्ध है, आप ही प्रथम कायस्थ जातीयसभा (कान्फ्रेन्स) लखनऊ के सभापति थे और अत्यन्त उत्तमता, बुद्धिमानी, से प्रशंसा योग्य इस महत् कार्य्य को समापन किया था, आप की उत्तम कार्य्यवाही से प्रथम कान्फ्रेन्स सफलता के साथ समाप्त हुआ और विशेष प्रशंसा की बात यह है कि जो २ समाजिक सुधार कान्फ्रेन्स द्वारा अभीष्ट थे उन सुधारों की जड़ दृढ़ हो गई, प्रथम कान्फ्रेन्स के बाद आपने सैकड़ों हज़ारों रुपये कान्फ्रेन्स के अभिप्राय और प्रस्तावों और जातीय पुस्तकों के प्रकाश में व्यय किया, असमर्थ विद्यार्थियों की द्रव्य और पुस्तकों द्वारा सहायता की, बहुत से अनाथ और दीन का पालन किया, बहुत से जीविका रहित स्वजातियों के जीविका का उद्योग किया कान्फ्रेन्स पटना में एक हज़ार रुपया सहायतार्थ प्रदान किया, अर्थात् प्रत्येक समय आपने तन, मन, धन, से स्वजातीय सहायता को मुख्य धर्म्म समझा, निस्सन्देह इसी उदारता से आप का नाम, मान, और यश, प्रकाश हुआ है।

कायस्थहितकारी जिल्द १ नम्बर ११ तिथि १ सितम्बर सन् १८८२ ई० में निम्नलिखित टिप्पणी लिखी गई थी।

सच तो यह है कि इस समय श्रीमान दीवान साहेब सर्व साधारण के साथ ऐसा उपकार करते हैं जैसे मेघ पृथ्वी के साथ, वा सुधा मृतक के साथ करता है। आप का अमूल्य रत्न शरीर परमार्थ में नेवछावर हो रहा है, सच है "उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्"।

श्रीमान् दीवान साहेब बहादुर ने धन का एक बड़ा भाग स्वजातीय हितार्थ में व्यय किया, भारतवर्ष में आप के नामवरी और उदारता का पताका फहरा रहा है। देशी समाचारपत्रों ने आप की नामवरी, उपयोगिता, उ-

दर्शता, दूर दर्शिता, और सु प्रबन्ध की प्रशंसा कई बार किया है। भारत-वर्ष के राजनीतिज्ञ और दूरदर्शक समाज में आप को एक प्रकार की श्रेष्ठता प्राप्त है। एक बार रियासत काश्मीर के लिये आप दीवान तजवीज़ किये गये थे किन्तु महाराजा साहेब डुमरांव ने स्वीकार नहीं किया।

क़ौम के साथ उदारतापूर्वक जो सहायता करते हैं उस को कदापि प्रकाश करना नहीं चाहते किन्तु उदारता कब छिपी रह सकती है चित्र-गुप्तवंशीय कायस्थों को आप के श्रेष्ट नाम, और उदारचरित होने से आभ्यन्तरिक हर्ष पहुंचाने वाली प्रतिष्ठा प्राप्त है।

परमात्मा प्रतिदिन आपकी उन्नति वर्द्धन करे जिस्से हम लोगों का गौरव अपर जातियों के मध्य में चिरस्थाई हो।

कायस्थहितकारी जिल्द १ नम्बर ६ जून सन् १८८३ ई० निम्नलिखित समाचार प्रकाश हुआ था।

"इन्डियन मिरर कलकत्ता तिथि ७ वीं जून से ज्ञात हुआ कि २७ वीं मई को आनरेबुल रायबहादुर जैप्रकाशलाल साहेब दीवान राज रियासत डुमरांव ने बलिया इन्स्टिटिउट और कायस्थसभा और सर्व्व साधारण का स्वागत किया, सहस्रों मनुष्य का समारोह था, दूसरे दिन दीवान साहेब ने इन्स्टिटिउट और सभा की अवलोकन किया, अभिनन्दनपत्र पढ़ा गया, उस के उत्तर में दीवान साहेब ने एक सुललित और प्रभावशाली वक्तृता के बाद दो सौ मुद्रा इन्स्टिटिउट और दो सौ कायस्थ सभा की पांच रुपया मासिक वेतन नियत किया—इस दान का यश चिरकाल तक स्थाई रहैगा।

श्रीमान दीवान साहेब का राजनीतिज्ञतागुण।

श्रीमान दीवान साहेब की राजनीतिज्ञता की उन्नति एक पम्फ्लेट के द्वारा मैं वर्णन करता हूं जिस की मौलवी महम्मद अबदुस्समद साहेब वकील और आनरेरी मजिस्ट्रेट व बाइस चेयरमेन गाज़ीपुर ने जो राज डुमरांव के निकट है तारीख २६ वीं अक्तूबर सन् १८८० ई० की डुमरांव के एक महती सभा में पढ़ा था। यह सभा श्रीयुत महाराजा साहेब के आदेश से हुई थी, जिस के सभापति स्वयं महाराजा साहेब थे और उस महती सभा में लगभग चार पांच सहस्र सज्जनों का समारोह था। उस में प्रतिष्ठित २

715

रईस, अमीर, प्रजा वर्ग के लोग थे। यह सभा इस लिये हुई थी कि उन दिनों कतिपय ईर्षियों के कारण बिहार प्रान्त के बाज़ समाचारपत्रों ने रियासत डुमराँव और दीवान साहेब पर कुछ आक्षेप किया था उन ईर्षियों का अभिप्राय यह था कि श्रीयुत महाराजा साहेब और दीवान साहेब बदनाम हों जिससे ईर्षियों का अभीष्ट सिद्ध हो, किन्तु रईस और दीवान दोनों बुद्धिमान और सावधान थे अतः उन मूर्खों का कुछ बश न चला; चतुर्दिक से उन का बिगाड़ होने लगा अन्त में उन ईर्षियों को मुंह लुकवाना पड़ा।

मैं संक्षेपतः उस पम्फ्लेट से कुछ विषय उद्धृत करता हूं जिससे भली भांति प्रगट औ प्रमाणित हो जायगा कि श्रीमान दीवान साहेब की राजनीतिज्ञता में कहां तक योग्यता प्राप्त है, और इस के लिये इस पुस्तक (पम्फ्लेट) से जिस का प्रकाश पांच सहस्र सज्जनों में हुआ दूसरा उत्तम प्रमाण क्या हो सकता है?

प्रगट हो कि उक्त दीवान साहेब बीस वर्ष से राजरियासत के कर्मचारी हैं, और अपनी सत्यता, प्रभुभक्ति, नीतिज्ञता और कुशलता से बराबर उन्नति को प्राप्त होते रहे यहां तक कि आज उक्त कर्मचारी दीवान के पद पर सुशोभित हैं और जो गौरव प्रतिष्ठा, नाम, यश उक्त महोदय ने प्राप्त किया है भूतपूर्व्व दीवान को नहीं प्राप्त हुआ था।

सम्प्रति राज रियासत डुमराँव के अधीश्वर श्री १०८ सर महाराजा राधाप्रसाद सिंह साहेब के० सी० आई० ई० हैं। इस के पहिले मिस्टर चार्ल्स फाक्स साहेब बहादुर इस रियासत के दीवान और मेनेजर थे। जब उस समय उत्तमता के साथ रियासत का कार्य्य नहीं चला तब वर्तमान दीवान साहेब के हाथ में इस पद का अधिकार दिया गया जिससे रियासत को भारी लाभ हुआ यहां तक कि ताअलुकेदारी से अब रियासत कहलाने लगी जिस समय उक्त दीवान साहेब के हाथ में यह अधिकार आया रियासत पर कर्ज़ का बोझा था, कोष शून्य (ख़ाली) था, रियासत का प्रबन्ध अवनति दशा को प्राप्त था, परन्तु जब से दीवान साहेब का अधिकार हुआ, रियासत को जो जो लाभ हुये हम उन को नीचे लिखते हैं।

१—पूर्व्व दीवान साहेब के समय में रियासत की वार्षिक आमदनी साढ़े सात लाख थी और अब चौदह लाख है।

715

२—पहिले सेवकों अर्थात् कर्मचारियों की संख्या कम थी, और उन का मासिक वेतन भी कम था तौ भी समय पर मासिक वेतन लोगों को नहीं मिलता था, किन्तु अब मासिक वेतन उचित रीति से है और कर्मचारियों को समय पर मिल जाता है।

३—रेयासत के कन्धे से ऋण का बोझा बिल्कुल उतर गया और कोष भी पूर्ण है।

४—बैंक में रुपया जमा होता है, गैर आबाद भूमि आबाद की जाती है, लाखों के नये इलाके खरीद होते हैं, प्रजा संतुष्ट, रईस प्रसन्न, गवर्मिन्ट राजी, और कोष का प्रबन्ध पूर्णतया गवर्मिन्ट कोष की भांति है, कोई रकम बिना जांच परतालु के न तो कोई ले सकता न किसी को दिया जा सकता, न किसी को छल द्वारा कोई रकम खा जाने का अवसर मिल सकता है, हिसाब के दफ्तर का पूरा प्रबन्ध है, वार्षिक (आयव्यय का लेखा) बजट तय्यार होता है उस के अनुसार आयव्यय का प्रबन्ध रहता है।

५—पहिले रेयासत के मोकद्दिमात में दफ्तर व इलाकःजात के काग़जात ठीक २ न रहने के कारण बहुत कठिनाइयां होती थीं प्रायः जितने का दावा होता था उस की संख्या से अधिक खर्च हो जाता था, बरं रेयासत का धन अनुचित रीति से नष्ट होता था, प्रजा और राजा के सत्वों का ठीक २ पता नहीं चलता था परन्तु अब समस्त दफ्तर गौर्न्मिन्ट की भांति नियमानुसार है किसी बात में कोई कठिनाई नहीं है।

६—डुमरांव में न राजपथ (सड़क) अच्छा था, न पाठशाला (स्कूल) का प्रबन्ध था, न अस्पताल (चिकित्सालय) था न रेयासत में तार (तड़ित) वा डाकघर था, न टेलीफोन था न सदाव्रत वा दान देने का कोई उचित प्रबन्ध था किन्तु अब इस समय यह सब कुछ है।

७—दीवान साहेब ने शिल्प और कृषी की उन्नति के हेतु और गाय बैल के पोषण पालन के निमित्त डुमरांव में एक बड़ी प्रदर्शनी स्थापन किया है, जिस में अनेक प्रकार के, प्रत्येक समाज के लोग, बड़े २ न्यायाधीश (हुक्काम) शरीक हुये, बड़ी धूम धाम औ तय्यारी के साथ प्रदर्शनी की सफलता हुई, जिस्से प्रजावर्ग और रेयासत ने बहुत कुछ लाभ उठाया।

८—दीवान साहेब के उद्योग से डुमरांव में मिउनिसपैलटी कायम हुई जिस के प्रेसिडन्ट स्वयं दीवान साहेब हैं, इस से नगर की स्वच्छता, और स्वास्थ्य विषयक बातों की बड़ी उन्नति हुई।

९—एक समय श्री १०८ महाराजा साहेब बहादुर डुमरांव गङ्गा-स्नान के निमित्त काशी में गये थे उस समय दीवान साहेब ने उक्त स्थान पर एक सन्यासी सेवं कायम किया जिस का व्यय रियासत की ओर से दिया जाता है, काशी में पण्डितों की एक भारी सभा हुई जिस में उदारतापूर्वक बहुत कुछ दान दक्षिणा दिया गया।

१०—पहिले कभी कोई कलक्टर, मजिस्ट्रेट जिला का भी आगमन डुमरांव में नहीं होता था और अब श्री मान नवाब सर ऐशली ईडन साहब बहादुर तथा श्री मान सर रिवर्स टामसन साहब बहादुर भूत पूर्व्व लेफ़्टिनेन्ट गवरनर और श्री मान नवाब सरइस्टुआर्ट बेली साहब बहादुर वर्तमान लेफ़्निनेन्ट गवरनर अपने अपने पदाधिकार के समय में प्रसन्नता पूर्वक रियासत के पाहुन (मेहमान) हुये और रईस के साथ मैत्री भाव का बर्ताव रक्खा, रियासत की ओर से उत्तमता के साथ आदर सत्कार किया गया जिसकी प्रशंसा उन महाशयों ने स्वयं किया और सर्वदा प्रत्येक श्रेणी के उच्च उच्च कर्मचारी रियासत के पाहुन हुआ करते हैं और रियासत के सुप्रबन्ध की प्रशंसा करते हैं यहां तक कि श्री मान हिज़ एक्सलन्सी नवाब गवरनर जनरल बहादुर बाईसराय किंगवर हिन्द भी रईस के पाहुन हुये, अब इससे अधिक उच्च कर्मचारियों और गवर्नमेन्ट की प्रसन्नता क्या होगी ?

११—श्री मान महाराजा डुमरांव के राज्याभिषेक (गद्दीनशीनी) में एक धूमधामी दरबार हुआ जिसमें श्री मान लेफ़्टिनेन्ट गवरनर बहादुर और हज़ारों युरोपियन और हिन्दुस्थानी कर्मचारी और रईस, बड़े बड़े हुक्काम रियासत के मेहमान (पाहुन) हुये और उन सब महाशयों के आदर सत्कार का प्रबन्ध स्वयं दीवान साहब बहादुर ने किया जो अत्यन्त कठिन कर्य्य था, सब सज्जन प्रसन्न रहे, प्रशंसा करते रहे, रियासत के समस्त सेवकों, कर्मचारियों, सम्बन्धियों के साथ विशेष रूप से सलूक किया गया, पारितोषिक और पुरस्कार दिया गया, दीवान साहब ने इन सब कार्य्यों को अति साहस और उदारता से समापन किया।

१२—रईस की गवर्नमेन्ट से श्रेष्ठ उपाधि प्राप्त हुई, जो इससे पहिले डुमरांव के किसी रईस को नहीं प्राप्त हुई थी, और स्वयं दीवान साहब बहादुर को भी उनकी बुद्धिमानी, सत्यता, राजानीतिज्ञता और सुप्रबन्ध के पुरस्कार में राय बहादुर की उपाधि प्रदत्त हुई और इसी योग्यता के प्रभाव से श्री मान लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर बेंगाल ने अपनी कानूनी कौन्सिल का मेम्बर नियुक्त किया, और दीवान साहब के नाम के साथ आनरेबुल का शब्द प्रयोग होने की आज्ञा दी और दरजा दोयम का अख़्तियार मजिस्ट्रेटी भी प्रदान किया।

यह सब प्रतिष्ठा पहिले किसी दीवान को नहीं प्राप्त हुई थी।

१३—एक ख़ास अभिवीग में गवर्नमेन्ट ने दीवान साहब को कमिश्नर नियुक्त किया था।

इसी भांति और भी बहुत से बड़े बड़े कार्य्यों की गवर्नमेन्ट ने दीवान साहब की योग्यता के अनुसार उनको सौंपा था जिससे इस बात का अनुभव किया जा सकता है कि गवर्नमेन्ट और उच्च कर्मचारी गण दीवान साहब का विश्वास, और योग्यता कहां तक समझते थे।

१४—कुछ वर्ष व्यतीत हुये कि रियासत कश्मीर के लिये दीवान साहब मंत्री (वज़ीर) तजवीज़ किये गये थे जिसके मासिक वेतन की संख्या बहुत अधिक थी किन्तु दीवान साहब ने अपने पुराने रईस का साथ छोड़ना पसन्द नहीं किया, न रईस ने अपने सुयोग्य, ईमानदार, सुप्रबन्ध कर्त्ता दीवान की जुदाई स्वीकार किया।

१५—२१वीं अगस्त सन १८८० ई० को श्रीमान सर स्टुअर्ट बेली साहब बहादुर लेफ़्टिनेन्ठ गवर्नर बहादुर बेंगाल ने रियासत में पदार्पण किया था, म्युनिसिपैलीटी डुमरांव ने अभिनन्दन पत्र दिया उसके उत्तर में श्रीमान ने अपने मुखारविन्द से जो उच्चारण किया उसकी हम नीचे लिखते हैं।

" मुझको बीस वर्ष में जो परीक्षा से ज्ञात हुआ है उसके अनुसार मुझ को आनरेबुल राय बहादुर दीवान साहब की दीयानतदारी, दीवान साहेब की कार्य्यवाही, दीवान साहेब की योग्यता, और रियासत के प्रबन्ध पर दृढ़तापूर्वक विश्वास है।"

१६—महाराजा साहेब ने, जो एक सुशिक्षित रईस हैं, दीवान साहेब की दियानत, योग्यता, सुप्रबन्ध, शुभचिन्तना, हितैषिता में अर्थात् हर प्रकार से भली भांति परीक्षा ले लिया, जिस समय उक्त महोदय को राजा की उपाधि गवर्मेन्ट से प्रदान हुई उस समय १४००) सौ रुपया आमदनी की जागीर मोकर्री की तौर पर अपने दीवान को प्रदान किया, उस के पश्चात् जब दीवान साहेब के सुप्रबन्ध से रियासत की आमदनी में उन्नति हुई, और रईस की गवर्न्मेण्ट से महाराजा की उपाधि प्रदान हुई उस वक्त फिर रईस ने १२०० बारह सौ रुपया वार्षिक आय की जागीर और भी मोकर्री की तौर पर अपने दीवान को दिया, उस के पश्चात् दीवान साहेब बहादुर के सुप्रबन्ध से जब रियासत की आमदनी लगभग १४ लक्ष की हुई और दीवान साहेब बहादुर के उद्योग और यत्न से रईस की शुभचिन्तना (खैर ख्वाही) औ अधीनता (तबैयत) जो कि विद्रोह (गदर) की समय से शंकायुक्त थी, गवर्न्मेण्ट के निकट भली भांति प्रमाणित हो गई और गवर्न्मेण्ट ने योग्यता अनुसार सर महाराजा साहेब बहादुर के० सी० आई० ई० की उपाधि प्रदान किया, और डुमरांव नगर में श्रीमान नवाब लफनन्ट गौरनर बहादुर का बड़ा धूम धाम से दरबार हुआ, और रईस की आशातीत नेकनामी प्राप्त हुई, और अपने दीवान की कारगुज़ारी प्रमाणित हुई उस समय रईस ने अपनी संतुष्टता और प्रसन्नता से छः हज़ार वार्षिक आय की जागीर और भी अपने दीवान को मोकर्री की भांति पर प्रदान किया, कुल आठ हज़ार आठ सौ वार्षिक आय की भूमि दीवान साहेब को प्रदान हुई जो काग़ज़ात सरकारी से प्रगट है और दफ्तरखानः रियासत, में भी इस के काग़ज़ात मौजूद हैं किन्तु कुल जागीरों की जमा भी मोकर्रर है।

१७—अत्यन्त शुभचिन्तकता, और हितैषिता दीवान साहेब की यह है कि रियासत के विशेष आवश्यकतावश साढ़े तीन वर्ष तक अपना मासिक वेतन नहीं लिया न जागीरवाली भूमि की आमदनी लिया यह सब रियासत के कोष में जमा होती थी और उक्त महोदय ऋण इत्यादि से अपना कार्य्य निर्वाह करते थे, और महाराज साहेब को इस का समाचार भी नहीं जनाया, जब किसी प्रकार महाराजा साहेब को इस का पता लगा तो दाम दाम दीवान साहेब का पावना चुका दिया।

१८—अगिले दीवान साहेब के अधिकार में वार्षिक दो लाख से अधिक आमदनी का इलाका था किन्तु वर्तमान दीवान साहेब के अधिकार में केवल लगभग अठारह हज़ार वार्षिक आय का इलाका है।

आप की सावधानी पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि इस समय ऐसे सत्प्रकृति के मनुष्य बहुत कम हैं।

१९—नबाब लफ्टनन्ट गौरनर बहादुर बेंगाल और गौरन्मिन्ट हिन्द के आदेश से दीवान साहेब पथ का कठिन कष्ट सहकर बर्ह्मा गये और एक लाख बीगहा सागौन का जंगल भूमिसहित सौ १०० वर्ष के लिये बहुत कम जमा पर रेयासत के वास्ते लिया है, उस भूमि में उपज शक्ति बहुत अच्छी, और बड़े लाभ की आशा है, जंगल के लकड़ियों का दाम विशेष प्राप्त होगा इस के अतिरिक्त जिस समय सब भूमि आवाद हो जावेगी तो एक राज के बराबर आमदनी प्राप्त होगी, मानो महाराज को एक और दूसरा राज्य प्राप्त हो गया, फिर तो थोड़े ही दिनों में लाखों रुपया वार्षिक लाभ की दृढ़ आशा है और सौ वर्ष के पश्चात् भी यह भूमि महाराज ही के अधिकार में रहेगी किञ्चित दाम बढ़ाना पड़ेगा, दीवान साहेब को धन्यवाद देना चाहिये, प्रभुभक्त ऐसे ही पुरुष को कहते हैं।

दीवान साहेब की इस खैरख्वाही और दूरदर्शिता का यह फल प्राप्त हुआ कि गौर्न्मिन्ट आफ् इन्डिया ने महाराज साहेब बहादुर को धन्यवाद दिया और श्रीमान प्रिन्स अल्वर्ट विक्टर साहेब बहादुर ने भी साक्षात् के समय महाराजा साहेब को धन्यवाद दिया—क्यों न हो सोना और सुगन्ध की कहावत है कि महाराजा साहेब को बहुसंख्यक धन भी प्राप्त हो और गवर्मेन्ट के शुभचिन्तक भी बनें। दीवान साहेब बहादुर की यह कार्य्यवाही भारतवर्ष के इतिहास में अद्वितीय है।

२०—शाहाबाद के साहेब कल्क्टर बहादुर ने १७ वीं अप्रैल सन् १८८१ ई० को दीवान साहेब बहादुर पर इन्कमटैक्स कायम करती समय १५००) रु० मासिक वेतन के अनुसार टैक्स लगाया जिस्से लोगों का धोखा और सन्देह निवृत्त हो गया।

२१—पटना मान्तके श्रीयुत कमिश्नर साहेबने सन् १८८०—८१ ई० की रिपोर्टमें रेयासत दुमरांवके विषयमें निम्नलिखित बातें (रिमार्क) लिखी हैं।

721

हम इस बात को कह सकते हैं कि उस समय की अपेक्षा जब हम पहिले सब डविज़नल आफ़िसर मोकाम बगसर जिलाशाहाबाद के थे, और जन्टमजिस्ट्रेट मोकाम आरा में थे और अब बहुत दिनों के बाद हम डुमरांव फिर गये तो हम को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसी आशातीत उन्नति वहां के प्रबन्ध में किस भांति हुई। हम जहां तक विचारते हैं, अवश्य यह उन्नतियां श्री मान् महाराजा साहेब के सुहृदयता और दीवान राय जैप्रकाश लाल साहेब बहादुर की योग्यता, सुप्रबन्ध और उद्योग से हुई हैं।

इस रिपोर्ट पर हिज़ आनर नवाब लफटनेन्ट गवरनर बहादुर कलकत्ता ने जो रिमार्क लिखा है वह कलकत्तेके गौर्न्मेन्ट गज़ट तिथि ३०वीं सितम्बर सन् १८८१ ई० पृष्ट १५५१ में प्रकाश हुआ है जिस का सारांश यह है।

"साहेब कमिश्नर अपनी रिपोर्ट में विशेषतः अत्यन्त आश्चर्य्य के साथ यह बात लिखते हैं कि "जब मैं बहुत दिनों के बाद इस प्रांत में फिर वापस आया तो मैं ने डुमरांव के प्रबन्ध में अत्यन्त उन्नति देखी निस्सन्देह यह महाराजा साहेब बहादुर की सुहृदयता और बाबू जैप्रकाश लाल साहेब उन के दीवान की योग्यता और सुप्रबन्ध के कारण हुई है"।

२२—तिथि २६ अक्तूबर सन् १८८० ई० की जो सभा (जलसा) डुमरांव में हुई थी उस में श्रीमहाराजा साहेब बहादुर ने निज मुखारविन्द से निम्नलिखित वक्तृता दी थी, उस समय प्रतिष्ठित २ सज्जन पं० अयोध्यानाथ साहेब बैकुण्ठवासी वकील हाईकोर्ट और बा० योगीन्द्रनाथ राय साहेब वकील इत्यादि के सदृश उस सभा में सुशोभित थे। इन महाशयों ने दीवान साहेब की योग्यता, उत्तम २ कार्य्यों, सत्प्रकृति, उद्योग इत्यादि गुणों पर प्रभावशाली व्याख्यान दिये, तत्पश्चात् श्रीमान महाराजा साहेब की सुललित वक्तृता हुई।

श्रीयुत महाराजा साहेब बहादुर डुमरांव के निज मुखारविन्द की वक्तृता।

जो कुछ मौलवी महम्मद अबदुस्समद साहेब ने मेरे रियासत के प्रबन्ध और दीवान साहेब की कार्य्यवाही के विषय में वर्णन किया है उस से अधिक वर्णन की आवश्यकता नहीं है किन्तु चूंकि यह मण्डली सर्वसाधारण की है और बहुत से प्रतिष्ठित २ सज्जन इस महती सभा में सुशो-

721

भित हैं इस लिये मुझ को भी अपना अभिप्राय (ख़यालात) प्रगट कर देना आवश्यक है।

इस में सन्देह नहीं है कि मेरे कुल में भूतपूर्व्व महाराज लोग सब योग्य थे, और उन के समय में उन के दीवान भी योग्य थे परन्तु देखने से यह बात प्रगट है कि जिस उत्तमता से हमारे दीवान साहेब के समय में सुप्रबन्ध है ऐसा इस के पहिले कभी नहीं था, अपने कर्तव्य कार्य्य को दीवान साहेब भली भांति, सत्यता, और अपने ऊपर कष्ट उठा कर बुद्धिमानी के साथ समापन करते हैं, उन की हितैषिता, प्रभुभक्ति, और कार्य्यवाही के जानने का जितना मुझे अवसर मिलता है दूसरे लोग नहीं जान सकते।

यह रियासत ऋण में डूबी हुई थी, दीवान साहेब के सुप्रबन्ध द्वारा बिना किसी प्रकार की कठिनाई के रियासत ऋण से उऋण हो गई, उस में विशेषता यह है कि किसी कार्य्य में ऐसी न्यूनता (किफ़ायत) नहीं की गई कि रियासत के किसी धूमधाम में कुछ त्रुटि हो, अथवा किसी को कुछ तकलीफ़ हुई हो। के० सी० आई० ई० उपाधि की प्रतिष्ठा मुझे उन्हीं के उद्योगों से प्राप्त हुई।

कार्निकल (याने पृष्ठाघात) का जब घातक रोग मुझे हुआ था और मेरी जीवनदशा शंकायुक्त थी उस समय मेरी आरोग्यता और मेरे सुख के यत्न में जो अत्यन्त उद्योग और मेहनत दीवान साहेब ने किया उस को मेरा हृदय ही जानता है।

इस रियासत को उन्हीं ने अपने प्रबन्ध से बहुत बढ़ाया है और प्रत्येक विषयों में उन्नति किया है, कोष पूरा किया है, अदालती झगड़ों को मिटाया है, गौर्न्मेन्ट के निकट इस रियासत को पूरे तौर पर शुभचिन्तक प्रमाणित किया है—प्रजा को संतुष्ट रक्खा है, और मुझ को सर्व प्रकार सुख दिया है। ऐसी दशा में जिस क़दर मोक़र्री और ठीका मैं ने उन को दिया है वह प्रसन्नता पूर्व्वक केवल उन की सेवा के पुरस्कार में नज़द के बदले दिया है, उन की सेवा की अपेक्षा यह मोक़र्री और ठीका मेरे जानने में कम है, और यह कोई नई बात नहीं है, बरं इस रियासत में सनातन से यह बात चली आती है। जो ठीका मैं ने दिया है वे वैसी इलाक़े हैं कि जो पूर्व्व दीवान को उसी भांति से और उसी अवधि (मि-

याद) के लिये उस पदाधिकार के पुरस्कार में दिये गये थे क्यों कि उन इलाकों में से चौथा हिस्सा अब तक पहिले दीवान के उत्तराधिकारी को दिया गया है—जो कुछ दिया गया है वह केवल सेवा का पुरस्कार है, पारितोषिक (इनाम) नहीं है।

इस रियासत के कुछ पदच्युत कर्मचारी जो इधर हैं उन लोगों ने जो झगड़ा उत्पन्न करनेवाला लेख समाचार पत्रों में छपवाया है वह सर्वांग मिथ्या और निर्मूल है, सत्यता का उस में लेशमात्र नहीं है, वरं यह कार्य्य उन लोगों का स्वार्थपरता और ईर्षा से है, उस को मैं ने संक्षिप्त लिखवा दिया है, जिस को मुन्शी मथुरा प्रसाद मेरे मीरमुन्शी आप लोगों के सामने पढ़ेंगे"।

सर महाराजा साहेब बहादुर डुमराँव की लिखित वक्तृता जिस को मुन्शी मथुरप्रसाद ने पढ़ा था।

आप सब महाशयों पर विदित ही कि मौलवी मुहम्मद अबदुस्समद साहेब और दूसरे महाशयों ने जैसा वर्णन किया है, वास्तव में रियासत के कुछ अशुभचिन्तकों ने झगड़ा फ़साद मचाया था और वे ही इस के मूल कारण थे, और वे लोग जिन का पीछा पालन हुआ था, जो लूटते थे वा लूटना चाहते थे उन के सहायक हुये, कारण इस का यह है कि राय बहादुर दीवान साहब के सुप्रबन्ध से उन के स्वार्थ, मनोरथ, में हानि पहुंची नहीं तो दीवान साहब प्रायः रियासत के अधीनस्थ कर्मचारियों, सेवकों, और प्रजावर्ग के साथ जिस उत्तमता से बर्त्तते हैं सो सब पर प्रसिद्ध है। सुप्रबन्ध में सफलता हुई, जिस से हमारी प्रसन्नता हुई, और इस से वा और प्रसन्नता के पुरस्कार में रियासत की ओर से दीवान साहब के साथ रियासत की गई, इस का ईर्षा उन झगड़ालुओं को हुआ और प्रगट रीति से अशुभचिन्तना में वे सब कटिबद्ध हुये। जब जाना कि हमारे निकट उन का कल नहीं निबहैगा क्यों कि हम दीवान साहब की हितैषिता से भली भांति अभिज्ञ थे, तब उन लोगों ने यह चाल चलना आरम्भ किया कि

हाकिमों और सर्वसाधारण की दृष्टि में दीवान साहब की न्यूनता थी। प्रथम सभा (कमेटी) किया तद् पश्चात् समाचार पत्रों में निन्दा छपवाना, गुप्त रीति से गवर्न्मेन्ट में निवेदन पत्र भेजना प्रारम्भ किया, इस के अतिरिक्त और भी बहुतसी अनुचित ढिठाई किया। यद्यपि प्रकाश में दीवान साहब की निन्दा किया, किन्तु वास्तव में वह रियासत की निन्दा थी, क्यों कि जिस रियासत के दीवान लालची और स्वार्थी होंगे उस रियासत में कुप्रबन्ध कहा जावेगा, और उस का विश्वास सर्व साधारण में कैसे हो सकता है ? सच तो यह है कि सब निन्दा उन की मिथ्या थी, क्यों कि दीवान साहब की सत्यता और हितैषिता की परीक्षा का अवसर हम को प्राप्त है दूसरे किसी को नहीं प्राप्त हो सकता, श्री मान नवाब सर स्टुआर्ट बेली साहेब बहादुर लफ्टनेन्ट गवरनर बंगाल ने जब कि दुमरांव में आये थे अपने मुखारबिन्द से दीवान साहब की योग्यता और सत्याचरण की प्रशंसा की थी, और दर्जा दोयम के मजिस्ट्रेटी का अधिकार प्रदान किया था, इस से स्पष्ट प्रगट है कि गवर्मेन्ट के प्रधान कर्मचारियों के हृदय में इस रियासत के सुप्रबन्ध के विषय में उत्तम ध्यान (ख्याल) है, प्रत्येक श्रेणी, प्रत्येक समाज के लोगों ने जिन में (कर्मचारी गण और प्रजावर्ग भी शामिल थे) सभा करके अपनी प्रसन्नता का धन्यवाद दिया है, जिस उत्तमता से दीवान साहब ने १५ वर्ष से अपने पद (दीवानगरी) का कठिन कार्य्य सम्पादन किया है उस को भली भांति हम जानते हैं, और बुद्धिमानों की मण्डली उस को समझ सकती है, वे सब कार्य्य प्रसिद्ध हैं, बीस वर्ष के समय में अनेक प्रकार के कार्य्य उक्त महाशय ने उत्तमता और सत्यता से किये हैं, पन्द्रह वर्ष के पहिले जिस समय दीवानगरी का पद उक्त महाशय को सौंपा गया उस समय रियासत में बहुत सी कठिनाइयां उपस्थित थीं, जिन का निवारण उत्तमता और सरलता से उन्हीं ने किया जिन का वर्णन नीचे किया जाता है।

१—रियासत के दफ्तर के कागज़ात अस्तव्यस्त थे उन को बड़ी मेहनत और व्यय से ठीक और एकत्र कर नियम साथ रक्खा।

२—आज्ञाकारिता और अध्यवसाय से गवर्न्मेन्ट और प्रधान कर्मचारियों की प्रसन्नता प्राप्त किया।

३—इस समय रियासत कच्ची थी, कच्ची की दशा कैसी व्यय होती है सो प्रसिद्ध है, ऐसे अवसर में भी किसी कार्य्य में न्यूनता (किफायत) नहीं की गई बरं रियासत के नेकनामी के लिये जब जहां कोई अवसर पड़ा उदारता के साथ कार्य्य किया, तो भी रियासत के कन्धे से ऋण का बोझा उठा दिया, अब रियासत और कोष की उन्नति प्रति दिन होती जाती है।

४—इस रियासत में कई कारणों वश आमदनी से खर्च अधिक था जिस का घटाना बिना कष्ट बहुत कठिन था किन्तु उक्त महाशय ने बिना किसी प्रकार की व्यग्रता के बड़ी सावधानी के साथ व्यय को घटाया।

५—प्रजा को उचित कर (लगान) देने की आदत नहीं थी क्यों कि इस रियासत की अधिकांश रियाया ब्राह्मण, क्षत्री, भुंईहार हैं वे हठ-धर्म्मी और ढिठाई करते थे जिस्से कर (मालगुज़ारी) वसूल करने में बड़ी कठिनाई उपस्थित होती थी उन को उक्त महाशय ने कोमलता और बुद्धि-मानी से अपने आधीन बनाया और अब प्रतिवर्ष पहिले की अपेक्षा द्विगुण कर (मालगुज़ारी) वसूल होता है तौ भी प्रजा प्रसन्न और सन्तुष्ट है।

६—सेवकगण अपने सेवा का धर्म नहीं समझते थे और रियासत के लाभ से निज लाभ को श्रेष्ट जानते थे, उक्त महाशय ने ईमान्दार और योग्य सेवकों की रक्षा और कार्य्य करने का ऐसा प्रबन्ध किया कि जिस्से चोरी और रिश्वत एकबारगी बंद हो गई।

७—अदालती झगड़े इतने फैले थे कि जिस्से रियासत में हानि पहुंचने की आशंका थी, केवल उन्हीं के उद्योगों से निवारण हुये और प्रतिदिन होते जाते हैं बरं आशातीत रियासत विस्तीर्ण होती जाती है।

८—प्रायः हमारे स्वजातीय प्राचीन काल से समय समय पर रियासत के प्रबन्ध में विघ्नकारक होते आये हैं, उस को उक्त महाशय ने अपनी दूरदर्शिता और चतुराई से बचाया है और सफलता प्राप्त किया है।

९—पहिले रियासत का प्रबन्ध मिस्टर चार्ल्स फाक्स साहब के हाथ में दिया गया था, जो लोगों से दुखी होकर अलग हो गये ऐसी औसर में एक हिन्दुस्तानी कर्मचारी के हाथ से सफलता प्राप्त होना कैसा कठिन था? आप सब महाशय अनुभव कर सकते हैं कि अंग्रेज मनेजर के साथ जो सहानुभूति जो विश्वास अंग्रेज़ी हाकिमों की है वह हिन्दुस्तानी के साथ

725

असम्भव है, गवर्मिन्ट से जो सहायता चीफ़ जनेजर की सुगमता से मिल सकती है, वह हिन्दुस्तानियों को बहुत कठिन है, तौ भी दीवान साहब ने अपनी अधीनता और सेवा से गवर्मिन्ट और प्रधान कर्मचारियों को प्रसन्न किया जिस्से प्रबन्ध में सफलता प्राप्त है।

१०—गवर्मेन्ट की कृपा से इस रियासत का अधिकारी बंगाल, बिहार, ओड़ेसा, प्रान्त में प्रथम श्रेणी (फ़ौव्वलदर्जा) का माना गया, यद्यपि कोई २ महाशय अपनी योग्यता और धन के बल से अग्रगण्य हुआ चाहते थे, किन्तु उक्त महाशय के उद्योग से गवर्मिन्ट के निकट सम्मान और गौरव बढ़ता गया।

११—हम अकेले हैं, और यह रियासत कई एक ज़िलों में फैली हुई है, और यहां के लोग हकूमतपसन्द हैं इस लिये हमारे पूर्वाधिकारी महोदय गण दीवान के रहने पर भी परस्पर विभाग करके रियासत का कार्य्य सम्पादन करते थे, कि जिन में से अब कोई जीवित नहीं हैं। ऐसी दशा में कब सम्भव है कि जिस कार्य्य को कई एक सरदार मिल कर सम्पादन करते थे उस को हम स्वयं सम्पादन करें, ? अतएव आवश्यक हुआ कि दीवान पर कार्य्य का बोझा अधिक हो तौ भी उक्त महाशय सावधानी और अध्यवसाय द्वारा उत्तमता से कार्य्य करते हैं जिस्से हम को भली भांति संतोष है।

अर्थात् जिस तरह कि उक्त महाशय ने रियासत के दफ्तर की तरतीब दिया, गवर्मिन्ट को प्रसन्न रक्खा, स्वधर्म निर्वाह किया, अमित ख़र्च को बन्द किया, प्रजा को सुख दिया, सेवकों को आधीन रक्खा, अटाकती झगड़ों को मिटाया, रियासत के ईर्षियों और शत्रुओं को पराभूत कर रियासत को नेकनाम किया, रियासत का सुप्रबन्ध किया, और हमारे मान मर्य्यादा की उन्नति में उद्योग किया, इन कार्य्यों से हम प्रसन्न और संतुष्ट हुये और इन्हीं उत्तम कार्य्यों के पुरस्कार में भली भांति सोच विचार कर अपने हितैषियों की सम्मति से मोकर्री दिया, और दो वर्ष से मासिक वेतन के बदले ठीका दिया, ऐसे औसर में यदि हम ने वे ही सलूक किये जो कि हमारे पूर्वाधिकारी महाराज लोग पूर्व दीवानों के साथ करते आये तो क्या अनुचित किया ? क्या यह रियासत को उचित नहीं है कि अपने उक्त कर्म-

चारी की आवश्यकतानुसार पुरस्कार देवे ? और अपने ऐसे मीलाड़िस का आदर करे ?

चूंकि यहां के लोग हकूमत पसन्द हैं इस लिये इस रियासत के दीवान को वह सामान रखना पड़ता है जो दूसरी रियासत के दीवान को आवश्यक नहीं है,—दीवान का पद इस रियासत में प्रतिष्ठित है, और नायब रियासत होने के कारण से दीवान को बहुत सा व्यय करना पड़ता है जिसकी आवश्यकता अंगरेज़ मनेजर को नहीं पड़ती इसी विचार से हमारे पूर्वाधिकारियों ने बहुत परीक्षा कर और सोच विचार दीवान की मोकर्री का देना या ठीका देना उचित समझा है, उसी तौर पर यदि उक्त महाशय को दिया गया और उन्होंने स्वीकार किया तो क्या अनुचित हुआ ? उक्त महाशय ने अपनी तरक्की के लिये कदापि मुझ से निवेदन नहीं किया, किन्तु मैं कैसे ऐसी निठुरता करता कि इतने दिनों की सेवा का पुरस्कार न देता अतएव हमने पुरस्कार दिया जिससे दूसरे कर्मचारियों की प्रभुभक्ति में उत्साह बढ़े।

हम आशा करते हैं कि दीवान साहब इन दे वियों की अशुभ चिन्ता, और व्यर्थ निन्दा पर ध्यान न देंगे और जो सलूक उनके साथ हुआ है उसको स्वीकार करेंगे, और सन्तोष के साथ अपने पद सम्बन्धी सेवा को वैसेही उत्साह पूर्वक सम्पादन करेंगे जैसा कि करते आये, जिससे हम की सन्तोष बना रहे—इति।

२३—२२ फरवरी सन १८८२ ई० की थी महाराजा साहब डुमराव की कन्या का विवाह थी महाराजा साहब रीवां के साथ हुआ जिनकी अवस्था विवाह के समय १५ वर्ष की थी। विवाह के धूम धाम का समाचार तारीख ५ मार्च सन १८८२ ई० के एडीस व रैय्यत नामक समाचार पत्र कलकत्ता और २८ फर्वरी सन १८८२ ई० के भारतजीवन बनारस में सब अच्छी तरह प्रकाश हुआ है, विवाह बड़े धूमधाम, बड़े उत्साह बड़ी उदारता से हुआ जैसे महाराजाओं के यहां होता है, राजा महाराजाओं, देशी रईसों, युरोपियनों, अमीरों और सर्व साधारण का बड़ा समारोह था, दान दहेज़ बहुत कुछ दिया गया, सब का आदर सरकार उचित रीति से

हुआ, महाराजा साहब ने महती सभा में सर्व साधारण के मध्य में अपने भाग्य की सराहना किया, और इस सौभाग्य का मूल कारण अपने सुयोग्य दीवान साहब के उद्योग और हितैषिता को ठहराया और कहा कि दीवान जैप्रकाशलाल साहब ने राजपुताने के रत्नवन्त राजाओं के मोकाबले में जिनके यहां से महाराजा रीवां के विवाह की बात चीत थी, अपने मालिक का जयलाभ बड़े उत्तमता से प्राप्त किया।

इस विवाह का धूमधाम समाचार पत्रों द्वारा समस्त हिन्दुस्तान में प्रकाश हुआ था।

पाठकगण आप लोग स्वयं न्याय पूर्वक विचार कर लेवें कि आज तक दरबार आम में किसी रईस ने अपने दीवान की योग्यता और उद्योग पुरुषार्थ, और सुप्रबन्ध इत्यादि पर इस भांति से धन्यवाद दिया है जैसे कि सर महाराजा साहब बहादुर डुमरांव ने अपने सुयोग्य दीवान को धन्यवाद दिया? सच तो यह है कि जैसे साधु चरित, धर्मात्मा, उदार प्रकृति, के महाराजा साहब हैं वैसे ही उन्होंने सुयोग्य, साहसी, उद्योगी राजनीतिज्ञ, पुरुषार्थी, बुद्धिकुशल और प्रभुभक्त दीवान भी पाया है।

जब कि स्वयं सर महाराजा साहब अपने सुयोग्य दीवान साहब की उत्तम सेवा और सदा चरण को स्वीकार करते हैं तो ईर्षियों के मिथ्या अपवाद लगाने से क्या हो सकता है?—इति।

उपसंहार।

अब मैं इस लेख को समाप्त किया चाहता हूं किन्तु पाठक गण के निकट उल्लिखित लेख के प्रमाणतः सिद्ध होने के लिये कुछ थोड़ा सा और भी लिखता हूं वह यह है कि पाठकगण आप लोग इस बात पर भलीभांति ध्यान देकर विचार करें कि जहां तक देखने में आया है कोई स्वामी भक्त, सत्याचारी भला मनुष्य अपने स्वामी का कार्य उससे अधिक तन मन धन लगा कर नहीं करता जितना कि वह स्वयं अपना निज कार्य कर सकता है, और यदि कोई मनुष्य इस प्रकार स्वामी का कार्य अपने कार्य के बराबर समझ कर करता है तो वह उत्तम श्रेणी में गिना जाता है। अब मैं यह पूछता हूं कि यदि कोई मनुष्य कोई ऐसा कार्य

जो अपने लिये नहीं कर सकता और उस कार्य को अपने स्वामी के लिये करे तो क्या आप लोग उस मनुष्य को अद्वितीय भक्त पुरुष नहीं कहेंगे ? अवश्य कहेंगे, निस्सन्देह कहेंगे ।

दूसरी बात यह है कि जो जिस पद से सम्बन्ध रखता है यदि कोई व्यक्ति उस सम्बन्धी सेवा के अतिरिक्त अपने हार्दिकोत्साह से अपने स्वामी के हितार्थ अपने स्वामी के मान और यशोवर्द्धनार्थ दूसरा कार्य्य भी करे जिसके न करने से उसकी निन्दा नहीं हो सक्ती तो ऐसा पुरुष क्यों नहीं स्वामीभक्त, ईमान्दार और हितकारी कहा जावेगा ।

अब मैं इन दोनों उपरोक्त बातों को श्रीयुत् आनरेबुल राय बहादुर जैप्रकाशलाल साहेब दीवान राज रियासत डुमरांव में प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध करता हूं यद्यपि उक्त महोदय ने ऐसे २ अनेक कार्य्य किये हैं किन्तु निदर्शन (नमूने) की भांति केवल एक ही कार्य्य का वर्णन करता हूं, वह यह है कि भारतवर्ष में जब से स्वयम्बर की प्रथा उठ गई तब से राजा प्रजा सब में यह नियम प्रचारित है कि जब किसी मनुष्य की कन्या ब्याह योग्य हुई तो नाई ब्राह्मण पुरोहित तथा गुरुकुल के लोग वर खोजने जाया करते हैं किन्तु स्वामिभक्त दीवान साहेब बहादुर ने श्रीमान सर महाराजा साहेब डुमरांव की शुभवती कन्या के लिये स्वयं देश विदेश, राजपुताने के प्रत्येक राजधानियों में भ्रमण कर श्रीमान्धवेश महाराजा वेंकटरमणप्रसाद सिंह रीवांनरेश को वरण किया और ऐसी बुद्धिमानी और चातुरी किया कि जैपुर जोधपुर उदयपुर इत्यादि समस्त राजपुताने के राजाओं की प्रार्थना अस्वीकार कर श्रीमान महाराजा डुमरांव की सौभाग्यवती कन्या से विवाह करना बान्धवेश ने स्वीकार किया, क्या दीवान साहेब अपनी कन्या के लिये भी वर खोजने कहीं जा सकते हैं ? कदापि नहीं—क्या यह कार्य्य दीवानगरी के पदसम्बन्धी है ? अर्थात् वर खोजना दीवान का कर्तव्य कार्य्य है ? कभी नहीं कदापि नहीं लाखवर्ष नहीं, यह केवल दीवान साहेब की स्वामिभक्ति और हितैषिता है ।

पाठकगण, न्यायपूर्वक विचार कीजिये तो उपरोक्त लेख से प्रमाणित हो गया कि दीवान साहेब ने अपने स्वामी का वह कार्य्य किया कि जो अपने लिये भी नहीं कर सकते, जिसका करना उनका पदसम्बन्धी कार्य्य भी नहीं है फिर ऐसे अवसर में क्यों नहीं सुशिक्षित बुद्धिमान, महाराजा साहेब डुमरांव ऐसे हितैषी कर्मचारी का आदर करेंगे ? क्यों नहीं ऐसे शुभचिन्तक सेवक को पुरस्कार में ठीका, मोकरी प्रदान करेंगे ? क्यों नहीं सभ्य सभा के मध्य में ऐसे योग्य नीतिज्ञ कर्मचारी की प्रशंसा करेंगे और अनुगृहीत करेंगे ?

हे देश के सुशिक्षित नवयुवक ! हे बन्धुगण ! विशेषतः कायस्थ भाइयों, आप लोगों से निवेदन है कि ऐसे सत्पुरुष का अनुकरण करो। ऐसे भद्रपुरुष को, ऐसे कायस्थकुलकमलदिवाकर को अन्तःकरण से आशीर्वाद दो।

१३—१४ फरवरी सन् १८८३ ई० की शबनीत्सव में श्रीमान् बान्धवेश रीवांधिपति का डुमरांव में आगमन हुआ था, इस महोत्सव के उपलक्ष में १० फर्वरी से १५ तक डुमरांव राज में बड़ीही धूमधाम थी, बंगाल बिहार पश्चिमोत्तर प्रान्त के प्रतिष्ठित २ सज्जन एकत्रित हुये थे, उक्त प्रान्तों के यूरोपियन कर्मचारियों, हिन्दुस्तानी रईसों, साहुकारों, वकीलों, मोख्तारों, अमलों, जमीदारों, और प्रजावर्गों का बड़ा भारी समारोह था, सब के ठहरने के लिये खेमे शामियाने कतार के कतार खड़े कराये गये थे, इहुत लोग बंगलों में ठहरे थे श्रीमान् बान्धवेश की बारात महाराज के बड़े बाग में ठहरी थी, राह बाट सड़क, वीथी, गली, कूंचा सब परिष्कृत, पोखरा तालाब पानी से पूर्ण, रोशनी की लालटेनें चतुर्दिक लगाई गईं उस समय डुमरांव नगर भूतल में अपूर्व शोभा को प्राप्त था। मैं भी निमन्त्रण द्वारा गया था नगर की शोभा देखनेही योग्य थी उस समय श्रीमान् बान्धवेश के आगमन से डुमरांव नगर जनकपुर प्रतीत होता था। ऐसे धूमधाम, ऐसे समारोह, ऐसी भीड़ भाड़ में, हमारे सुयोग्य दीवान साहेब की यह दशा थी कि प्रत्येक खेमे, शामियाने, बंगलों बागों में स्वयं जाकर सब प्रबन्धों की निरीक्षण करते और सब से यथोचित बार्तालाप कर सब को सन्तुष्ट करते थे।

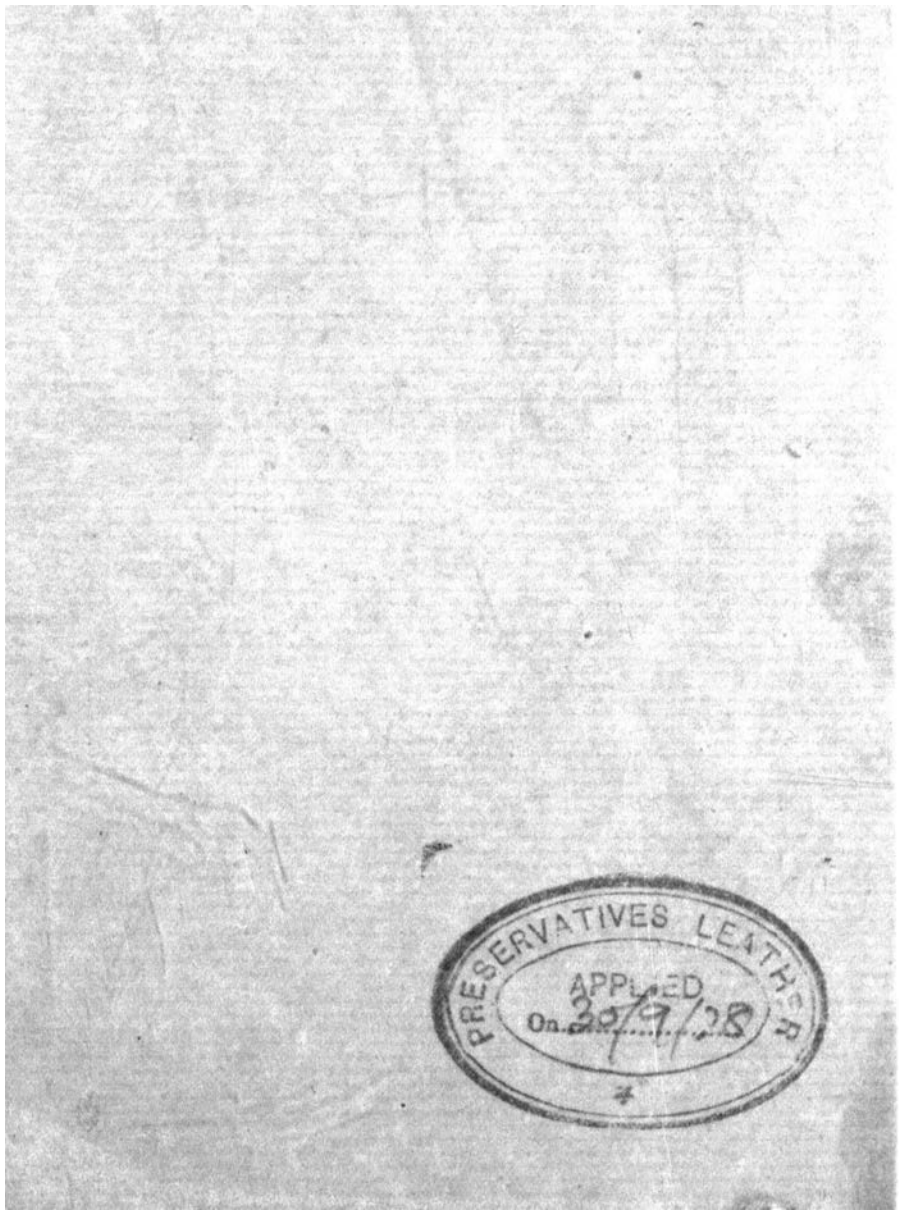
यद्यपि सबके भोजन, शयन इत्यादि का प्रबन्ध पृथक् २ व्यक्तियों को सौंपा गया था तथापि स्वयं भी असावधान न थे।

इधर मेहमानों (पाहुनों) का यथायोग्य सत्कार करना, उधर रनिवास में महाराजा साहेब की पुत्री के विदा होने के कारण जो शोक उत्पन्न हो रहा था वहां जाकर सन्तोष देना अर्थात् अहर्निश कार्य्य में व्यस्त रहना श्रीमान् दीवान साहेब ही का कार्य्य था, दूसरे से ऐसा सुप्रबन्ध होना असम्भव नहीं तो कठिन तो अवश्य है। इसको विस्तारपूर्वक लिखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इस सब शुभसम्वाद, और सुप्रबन्ध की प्रशंसा २० फर्वरी सन् १८८३ ई० के भारतजीवन पत्र बनारस में बाबू रामकृष्णवर्मा सम्पादक ने भली भांति प्रकाश कर दिया है।

शुभमस्तु।

END

अकलू लाल ने छाप कर प्रकाश किया।


PRESERVATIVES LEATHER
APPLIED
On 29/9/28
4